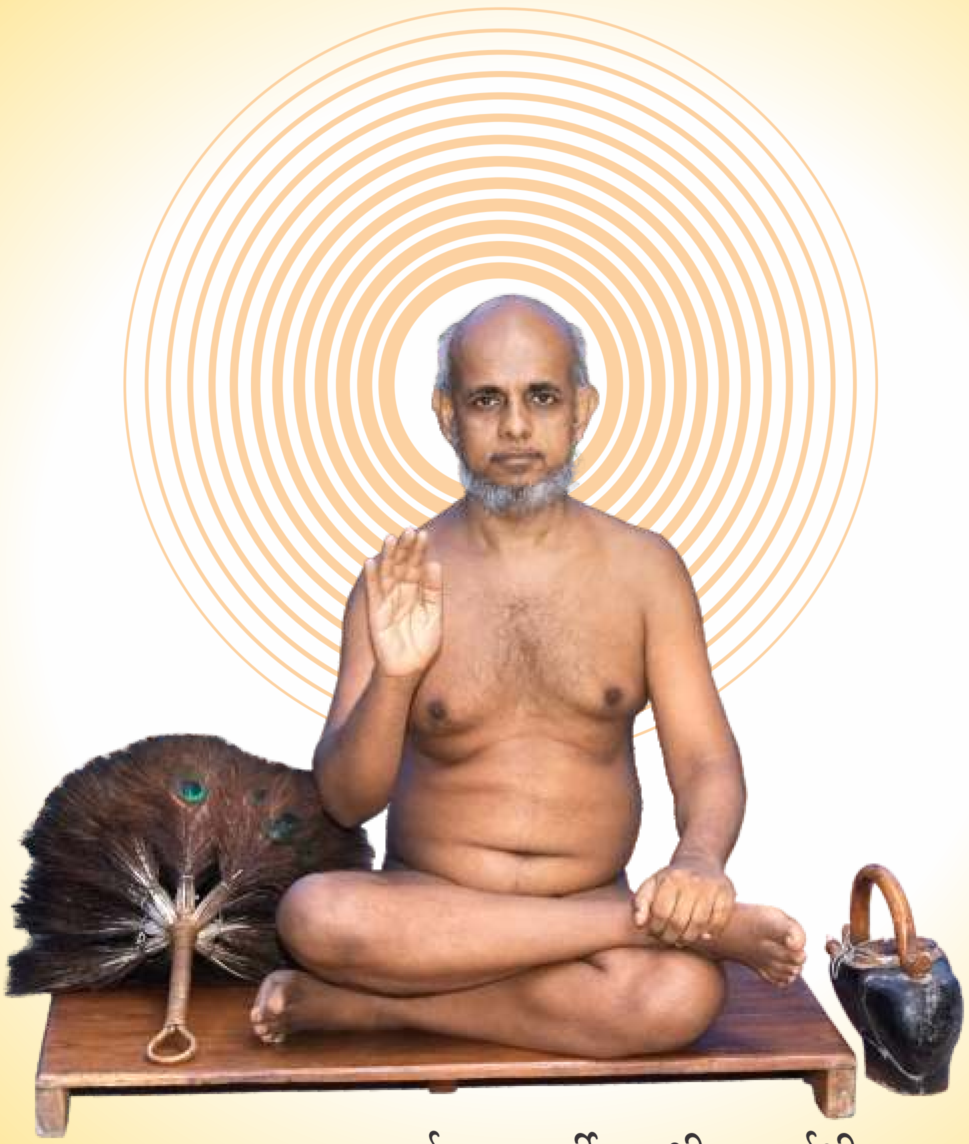

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

मुनि सभाचन्द एवं उनका पद्मपुराण

लेखक
डॉक्टर कस्तूरचन्द कासलीवाल

प्रकाशक
श्री महावीर ग्रन्थ अकादमी
जयपुर (राजस्थान)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

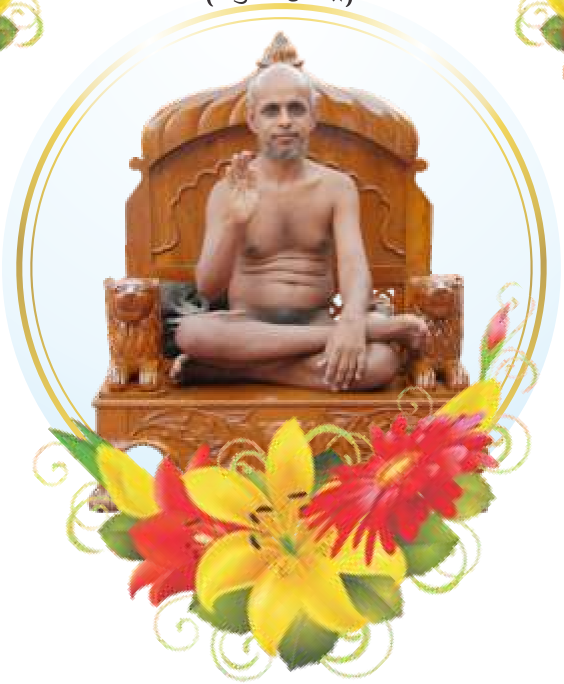

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

श्री महावीर ग्रंथ अकादमी—अष्टम पुष्प

मुनि सभाचन्द एवम् उनका पद्मपुराण

(जैन रामायण)

(संवत् १७११ में मुनि सभाचन्द द्वारा छन्दोबद्ध हिन्दी का प्रथम जैन पद्मपुराण—विस्तृत प्रस्तावना सहित)

लेखक एवं सम्पादक

डॉ० कस्तूरचन्द कासलीवाल

एम. ए. पी-एच. डी., शास्त्री

□

प्रकाशक

श्री महावीर ग्रंथ अकादमी, जयपुर

प्रथम संस्करण—अक्टूबर १९८४, (वीर निर्वाण-सं. २५१०) [मूल्य—८०.००

प्रस्तावना

जैन ग्रन्थागार हिन्दी साहित्य के विशाल भण्डार है। इनमें संग्रहीत पाण्डुलिपियों की खोज अभी आधी भी नहीं हो सकी है। राजस्थान के प्रमुख शास्त्र भण्डारों की यद्यपि पांच भागों में सूची प्रकाशित हो चुकी है लेकिन अभी तक राजस्थान में भी कितने ही ऐसे भण्डार हैं जिन्हें कभी देखा नहीं जा सका। ऐसे ही भण्डारों में एक टोंक जिले में स्थित डिग्गी कस्बे के दिगम्बर जैन मन्दिर का शास्त्र भण्डार है जिसको देखने का मुझे गत वर्ष अगस्त८३ में सौभाग्य मिला और उसी समय कितनी ही अचर्चित कृतियों की प्राप्ति हुई। ऐसी अचर्चित कृतियों में मुनि सभाचन्द्र विरचित हिन्दी पद्म पुराण का नाम विशेषत: उल्लेखनीय है।

जैन साहित्य में राम के जीवन पर सभी राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक भाषाओं में विशाल साहित्य मिलता है। वस्तुत: राम जिस प्रकार महाकवि वाल्मीकि एवं तुलसीदास के आराध्य रहे हैं उसी प्रकार वे विमलसूरि, स्वयंभू, रविषेणाचार्य एवं पुष्पदन्त जैसे महाकवियों के काव्यों के नायक है। राम ६३ शलाका महापुरुषों में ८ वें बलभद्र हैं जो उसी भव से मोक्ष जाते हैं।

रामकथा का उद्भव एवं विकास :—

वेदों में रामकथा का कोई महत्वपूर्ण स्रोत अथवा उल्लेख नहीं मिलता नहीं मिलता। ऋग्वेद में इक्ष्वाकु (१०।६०।४) एवं दशरथ (१।१२६।४) नामों का उल्लेख अवश्य मिलता है लेकिन वे रामकथा के अंगभूत नहीं है। इसी प्रकार शतपथ ब्राह्मण (१०।६।१।२) तैत्तरीय ब्राह्मण (३।१०।६) जैमनीय ब्राह्मण (१।१६।२।६३) छान्दोग्योपनिषद (५।११।४) बृहदारण्यकोपनिषद (३।१।१) में जनक का जो उल्लेख मिलता है वह रामकथा के उत्स फूटते भर मालूम पड़ते है। संस्कृत भाषा में वाल्मीकि रामायण का जो वर्तमान रूप उपलब्ध है वह सभी उपलब्ध राम कथा काव्यों में प्राचीनतम है। लेकिन विदेशी विद्वान् डा० वेबर के मत में राम कथा का मूल रूप दशरथ जातक में सुरक्षित है[1] इसी तरह डा० सेन के

---

१. ए. वेबर—आन दि रामायण पृष्ठ ११

मतानुसार राम कथा के मुख्य स्रोत दशरथ जातक एवं रावण सम्बन्धी आख्यान है।[2]

लेकिन राम कथा को जितनी लोकप्रियता वाल्मीकि रामायण ने प्रदान की उतनी लोकप्रियता इसके पूर्व कभी प्राप्त नहीं हुई। वाल्मीकि रामायण के रचनाकाल पर विद्वानों के विभिन्न विचार हैं उनमें वेल्वलकर ई० पू० ३०० तक, चिन्तामणि विनायक वैद्य ने ईसा पूर्व १२०० में २०० ईस्वी पश्चात् तक, फादर बुल्के ने ६०० ईसा पूर्व तक, कीथ ने ४०० ई० पूर्व तक, विंटरनिट्ज ने ३०० ईसा पूर्व तक, ... ने ५०० ईसा पूर्व तक तथा महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने १५० से २०० ईसा पूर्व तक माना है। राम कथा के विद्वानों के मतानुसार इतना अवश्य कहा जा सकता है कि महर्षि वाल्मीकि की रामायण ईसा के ४००-५०० वर्ष पूर्व ही लोकप्रिय बन चुकी थी लेकिन उनकी इस रामायण के वर्तमान रूप को प्राप्त करने में उसे अवश्य ही ७००-८०० वर्ष लगे होंगे और ईसा पूर्व द्वितीय शताब्दि तक उसे वर्तमान स्वरूप प्राप्त हो गया होगा।

जैन धर्म में राम का स्थान :—

भगवान राम आठवें बलभद्र हैं जो २० वें तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ के शासनकाल में हुए थे। लेकिन राम का जीवन मुनिसुव्रतनाथ के शासन काल से लेकर भगवान महावीर तक मौखिक रूप से ही चलता रहा और किसी ने लिपिबद्ध किया भी हो तो उसका कोई उल्लेख नहीं मिलता। भगवान महावीर के निर्वाण के बाद जब ग्रन्थों के लिपिबद्ध करने का निर्णय लिया गया और प्राकृत भाषा में सिद्धान्त ग्रन्थों को सूत्र रूप में लेखबद्ध किया जाने लगा। लेकिन रामकथा का प्राकृत भाषा में पउमचरियं के रूप में काव्यबद्ध करने का श्रेय आचार्य विमल सूरी ने प्राप्त किया। पउमचरियं महाराष्ट्री प्राकृत का सुन्दरतम महाकाव्य है जिसकी रचना वीर निर्वाण संवत् ५३० में हुई थी। पूरा काव्य ११८ संधियों में विभक्त है।

पंचेव वाससया दुसमाए तीस वरस संजुत्ता।
वीरे सिद्ध मवगये तओ निबद्धं इमे चरियं॥

तिलोयपण्णत्ति प्राकृत भाषा का महान ग्रंथ है इसमें २४ तीर्थंकरों ९ नारायण, ९ प्रतिनारायण, ९ बलभद्र एवं १२ चक्रवर्तियों के जीवन के प्रमुख

---

१. दिनेशचन्द्रसेन—द० बंगाली रामायण पृष्ठ ३, ७, २६-४१ आदि

सम्पादकीय

देश के जैन ग्रंथागार हिन्दी ग्रंथों की पाण्डुलिपियों के लिए जितने समृद्ध भण्डार हैं उतने दूसरे ग्रंथागार नहीं है। इन ग्रंथालयों में ५० प्रतिशत से भी अधिक संग्रह हिन्दी ग्रंथों का रहता है जो विगत ४००-५०० वर्षों में लिखा गया है इसीलिए किसी भी ग्रंथ भण्डार की शोध खोज एवं सूचीकरण का परिणाम अचर्चित एवं अज्ञात कृतियों की प्राप्ति होती है। मैंने अभी विगत वर्ष एवं इस वर्ष में जितने शास्त्र भण्डार देखे हैं उनमें प्रत्येक में हिन्दी की अचर्चित कृतियां अवश्य मिली है।

प्रस्तुत पद्मपुराण की उपलब्धि भी सन् १९८३ में डिग्गी (राजस्थान) के शास्त्र भण्डार को देखते समय हुई थी। जब पद्मपुराण की पाण्डुलिपि मिली तो आनन्द से मन उछल पड़ा और अपूर्व प्रसन्नता छा गयी। पाण्डुलिपि को बहुत समय तक देखता रहा कि कहीं देखने में भ्रम तो नहीं हो रहा है। इसी शास्त्र भण्डार में मुझे धनपाल कवि के ऐतिहासिक गीत, भ. महेन्द्रकीर्ति के आध्यात्मिक पद भी उपलब्ध हुए हैं जो इसके पूर्व अज्ञात एवं अनुपलब्ध माने जाते थे। वास्तव में राजस्थान, देहली एवं आगरा मंडल के जैन कवियों ने हिन्दी की जितनी सेवा की है वह साहित्यिक इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से लिखने योग्य है लेकिन उनकी शुद्ध साहित्यिक सेवाओं को भी साम्प्रदायिक नाम देकर उसे हिन्दी साहित्य के इतिहास में अविवेच्य घोषित कर दिया गया। जिसका परिणाम जैन कवियों द्वारा निबद्ध हिन्दी साहित्य के साथ उपेक्षा का व्यवहार होता रहा है। श्री महावीर ग्रंथ अकादमी की स्थापना के पीछे यही एक भावना रही है कि शास्त्र भण्डारों में संग्रहीत रचनाओं को प्रकाश में लाया जावे और उनमें भी अब तक अज्ञात एवं अचर्चित कवियों एवं उनकी रचनाओं को प्रमुखता दी जावे। मुझे यह लिखते हुए प्रसन्नता है कि अब तक प्रकाशित आठ भागों में आये हुए अधिकांश कवि अज्ञात एवं अचर्चित हैं जिनमें ब्रह्म रायमल्ल, भट्टारक त्रिभुवनकीर्ति, बूचराज, छीहल, ठक्कुरसी, गारवदास, चतुरूमल ब्र. जिनदास, भ. रत्नकीर्ति, कुमुदचन्द्र, आ. सोमकीर्ति, ब. यशोधर, ब्र. गुलाबीचन्द, बुलाकीदास, हेमराज, बाई अजीतमति, धनपाल, देवेन्द्र व महेन्द्रकीर्त्ति एवं मुनि सभाचन्द के नाम विशेषतः उल्लेखनीय है। लेकिन निरन्तर खोज एवं शोध के कारण हिन्दी भाषा के जैनकवियों

की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है जो वस्तुतः स्वागत योग्य है लेकिन संख्या में वृद्धि के कारण उन्हें २० भागों में समेटना कठिन प्रतीत होने लगा है।

पद्मपुराण कथानक एवं भाषा की दृष्टि से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। हिन्दी में मुनि सभाचन्द द्वारा विरचित प्रस्तुत पद्मपुराण पुराणसंज्ञक प्रथम कृति है इसलिये इस पुराण कृति का महत्त्व और भी बढ़ गया है। पद्मपुराण–पउमचरिय–पउमचरिउ–पद्मचरित–पद्मपुराण संज्ञक कितनी ही कृतियां विभिन्न विद्वानों ने लिखी हैं। वैष्णव धर्म के १८ पुराणों में पद्मपुराण भी एक पुराण है। आचार्य रविषेण प्रथम जैनाचार्य हैं जिन्होंने ७वीं शताब्दि में ही पद्मपुराण जैसा ग्रंथ निबद्ध करने का गौरव प्राप्त किया जिसका अनुसरण आगे होने वाले कितने ही कवियों ने किया और विभिन्न नामों से पद्मपुराण के कथानक को छन्दोबद्ध किया।

प्रस्तुत पद्मपुराण पर राजस्थानी भाषा का सबसे अधिक पुट है। सामाजिक रीति-रिवाजों के विशेष अवसरों पर मिष्ठान्न एवं खाद्य सामग्री के नामों का उल्लेख, जोधपुर एवं उदयपुर जैसे नगरों के उल्लेख इस बात का द्योतक है कि कवि का राजस्थान वासियों से अधिक सम्पर्क था। यह भी सम्भव है कि वह स्वयं भी इन नगरों में जाकर शोभा बढ़ायी हो।

पद्मपुराण एक कोश ग्रंथ के समान है जिसमें विभिन्न शब्दावलियों के अतिरिक्त वनस्पतियों, विभिन्न प्रकार के फूलों, ग्राम एवं नगरों के नामों का जो उल्लेख हुआ है वह अपने आप में अद्वितीय है। पुराण में विभिन्न पात्रों के इतने अधिक नाम हो गये हैं कि उनको याद रखना भी कठिन प्रतीत होता है लेकिन सभी पात्र इतने आवश्यक भी हैं कि उनके बिना कथानक अधूरा ही प्रतीत होने लगता है। पुराण में ऋषभदेव एवं महावीर के जीवन पर अच्छा इतिवृत्त दिया गया है। २०वें तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ का जीवनवृत्त तो पद्मपुराण कथानक का एक भाग ही है क्योंकि पुराण के नायक राम, लक्ष्मण, सीता हनुमान, राजा जनक, सुग्रीव एवं प्रति नायक रावण, कुम्भकरण, खरदूषण तथा अंजना, पवनंजय, लव कुश सभी उन्हीं के शासन काल में हुये थे। सगर चक्रवर्ती एवं भरत बाहुबली का व्यक्तित्व भी पद्मपुराण में अंकित है। जिसके अभाव में पद्मपुराण का इतिवृत्त पूरा भी नहीं हो पाता।

पद्मपुराण में विद्याओं के सहारे अधिक लड़ाई होती है और बिना विद्याओं की सहायता के निर्णायक युद्ध नहीं लड़ा जा सकता है। रावण को अपनी विद्याओं पर बड़ा गर्व था किन्तु यही गर्व उसे ले बैठता है क्योंकि यह भी सही है कि पुण्यशाली व्यक्तियों पर विद्याओं का कोई असर नहीं होता है। संबुक को १२ वर्ष की साधना के पश्चात् भी सूर्यहास प्राप्त नहीं हो सका जबकि लक्ष्मण को वह स्वतः ही प्राप्त हो गया। रावण के साथ युद्ध के उत्कर्ष काल में राम लक्ष्मण को

देवों ने दिव्य वस्त्र प्रदान किये। रावण द्वारा चलाया गया चक्र लक्ष्मण के हाथ में आ गया और फिर उसी से रावण की मृत्यु हुई।

पद्मपुराण जैन धर्म का प्रमुख कथानक पुराण है जिसका विगत १२००-१३०० वर्षों से अत्यधिक स्वाध्याय होता रहा है। पद्मपुराण के पश्चात् हरिवंश-पुराण एवं महापुराण की रचनाएं हुई जो प्रथमानुयोग ग्रंथों के विषय विवेचना का आधार बना। इन ग्रंथों के अध्ययन से श्रावकों को त्रेसठ शलाका पुरुषों के जीवन की एवं दूसरे पुण्यशील व्यक्तियों के जीवन की जानकारी मिलती है जो जीवन को नया मोड़ देने में समर्थ है

प्रस्तुत भाग में पद्मपुराण की एक मात्र पाण्डुलिपि के आधार पर ही मूल पाठ दिया गया है। पाठ भेद अन्य प्रतियों के अभाव में नहीं दिये जा सके लेकिन एक मात्र उपलब्ध पाण्डुलिपि बहुत ही स्पष्ट एवं शुद्ध लिखी हुई है। इस पुराण के रचयिता मुनि सभाचन्द काष्ठासंघ भट्टारक परम्परा के सन्त थे। वे काव्य रचना में अत्यधिक कुशल थे इसलिये पद्मपुराण जैसे महाग्रंथ के कथानक को अपने पद्म-पुराण में समेट लिया। उन्होंने दोहा, चौपई, सोरठा जैसे लोकप्रिय छन्दों का प्रयोग करके अपनी कृति को और भी जन-जन की कृति बना दी।

पद्मपुराण के सभी प्रमुख पात्रों के पूर्वभव का भी वर्णन किया गया है जिसका प्रमुख उद्देश्य पूर्वकृत कर्मों के प्रभाव को बतलाना है। यही नहीं विशिष्ट वर्तमान जीवन में शुभ अशुभ अथवा इष्ट वियोग एवं अनिष्ट का संयोग बिना कर्मफल के नहीं होता। राम, लक्ष्मण, सभी प्रमुख पात्रों के पूर्व भवों का वर्णन किया है जिसके कारण उन्हें वर्तमान जीवन में विभिन्न कष्टों का सामना करना पड़ा है। इस प्रकार के प्रसंगों से पाठकों के मन पर गहरी चोट लगती है और वे शुभ कार्यों की ओर प्रवृत्त होते हैं।

अन्त में कविवर कविवर सभाचन्द ने पद्मपुराण की प्रशंसा करते हुये लिखा है जो कोई भी पद्मपुराण को पढ़ेगा उसके मिथ्यात्व का नाश होगा और अन्त में स्वर्गलाभ होगा।

> ऐसा है यह पदम चरित्र, मिथ्या मोह मिटै भव सत्र।
> पढ़ै पढ़ावै कहै बखान, पावै स्वर्ग देव विमान ।। ५७४५ ।।

पद्मपुराण की पाण्डुलिपि को प्रकाशन के लिए देने हेतु मैं दिगम्बर जैन मन्दिर झिगी के व्यवस्थापकों का एवं विशेषतः श्री माणकचन्दजी सेठी का आभारी हूं आशा है अन्य शास्त्र भण्डारों के व्यवस्थापकों का भी इसी प्रकार सहयोग मिलता रहेगा जिससे साहित्य प्रकाशन का कार्य व्यवस्थित रूप से होता रहे।

अन्त में मैं अकादमी के संरक्षक माननीय श्री कमलचन्दजी सा. कासलीवाल का आभारी हूं जिन्होंने पुस्तक पर एवं अकादमी की योजना पर दो शब्द लिखे है। श्री कासलीवाल जी नगर के उद्योगपति ही नहीं है किन्तु प्रमुख समाज सेवी भी हैं। इसी तरह मैं अकादमी के अध्यक्ष माननीय श्री शांतिलाल जी जैन कलकत्ता का भी आभारी हूं जिन्होंने अपना संक्षिप्त वक्तव्य लिखा है। आप युवा व्यवसायी हैं तथा धार्मिक एवं साहित्यिक क्षेत्र में बराबर योगदान देते रहते हैं।

जयपुर
२ अक्टूबर १९८४

डा. कस्तूरचन्द कासलीवाल

अकादमी--प्रगति पथ पर

'मुनि सभाचन्द एवं उनका पद्मपुराण' को पाठकों एवं माननीय सदस्यों के हाथों में देते हुए अकादमी के निदेशक मंडल को अत्यधिक प्रसन्नता है। अकादमी का यह आठवां पुष्प है और इसी के साथ सम्पूर्ण योजना की क्रियान्विति में ४० प्रतिशत सफलता प्राप्त कर ली गयी है। यद्यपि अभी ६० प्रतिशत कार्य बाकी है लेकिन अगले पांच वर्षों में हमारी योजना पूर्ण हो जावेगी ऐसा हमारा पूर्ण विश्वास है।

वैसे सभी हिन्दी जैन कवियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को 20 भागों में पुस्तक बद्ध कर लेना अत्यधिक कठिन कार्य है क्योंकि खोज एवं शोध में नये-नये कवि मिलते रहते हैं जिन्होंने हिन्दी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। ऐसे कवियों को हम इस योजना में प्रथम स्थान देना चाहते हैं। मुनि सभाचन्द, बाई अजीतमति, धनपाल, भ.महेन्द्रकीर्ति, सांगु, बुलाखीचन्द, गारवदास, चतुरुमल, ब्रह्म यशोधर आदि कुछ ऐसे ही कवि हैं जिनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों ही सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य की थाती है।

अष्टम पुष्प में केवल एक ही कवि एवं उसके पद्मपुराण को ही दे सके हैं लेकिन यह एक ही कवि कितने ही कवियों के बराबर है और उसका पद्मपुराण हिन्दी की अमूल्य कृति है। अब तक हिन्दी पद्मपुराण का इतिहास पं. खुशालचन्द काला से प्रारम्भ होता था जिन्होंने संवत १७८३ में पद्यबद्ध पद्मपुराण की रचना की थी लेकिन प्रस्तुत पद्मपुराण के प्रकाशन से उसका इतिहास ७२ वर्ष पूर्व चला जाता है। जो एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

सप्तम पुष्प का विमोचन अहमदाबाद नगर में अप्रैल ८४ में पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव पर आयोजित समारोह में वहां के प्रमुख व्यवसायी एवं धर्मनिष्ठ श्री राधेश्यामजी सरावगी द्वारा किया गया था। इसके लिये हम आपके एवं महोत्सव के संयोजक डा. शेखर जैन के आभारी हैं। विमोचन के अवसर पर अकादमी के संरक्षक एवं अ. भा. दि. जैन महासभा के अध्यक्ष माननीय श्री निर्मल कुमार जी सेठी ने अकादमी को अपनी शुभकामनाएं देते हुए महासभा की ओर से ५,००० रु. की

आर्थिक सहायता की भी घोषणा की थी। सेठी सा. की प्रेरणा से ही कलकत्ता के प्रमुख व्यवसायी श्री शांतिलाल जी जैन ने अकादमी के अध्यक्ष पद को स्वीकारा है। अकादमी के प्रति सेठी सा. के महत्वपूर्ण सहयोग के लिए हम आभारी हैं। इसके पूर्व अकादमी का छठा पुष्प "बुलाखीचन्द बुलाकीदास एवं हेमराज" महामहिम राष्ट्र पति श्री ज्ञानी जैलसिंह जी द्वारा विमोचित हुआ था जो संस्था के इतिहास में एक महत्वपूर्ण आलेख रहेगा।

नये सदस्यों का स्वागत

सप्तम भाग के विमोचन के पश्चात् जयपुर के प्रसिद्ध रत्न व्यवसायी श्री नानगराम जी जैन जौहरी अकादमी के संरक्षक बने हैं। श्री जैन नगर के प्रसिद्ध समाज सेवी, उदारमना एवं धर्मनिष्ठ व्यक्ति हैं। जैनाचार्य मुनि श्री विद्यानन्द जी महाराज के संघ को देहली से जयपुर लाने, जयपुर में चातुर्मास की व्यवस्था करने में आपने यशस्वी कार्य किया था। आपकी पत्नी एवं सभी पुत्र आपके पदचिह्नों पर चलने वाले हैं। अकादमी के सहसंरक्षक के रूप में हम आपका हार्दिक स्वागत करते हैं।

अकादमी के सह संरक्षक सदस्य बनने वालों में जयपुर के ही श्री कपूरचन्दजी भौंसा के हम पूर्ण आभारी है तथा अकादमी परिवार के रूप में हम उनका हार्दिक स्वागत करते हैं। श्री कपूरचन्दजी भौंसा नगर के सम्माननीय व्यक्ति हैं तथा सभी सामाजिक संस्थाओं को अपना सक्रिय सहयोग देते रहते हैं। सह संरक्षक सदस्यों में आदरणीया पद्मश्री पंडिता सुमति बाईजी शहा का हम किन शब्दों में धन्यवाद ज्ञापित करें। पंडिता सुमति बाईजी महाराष्ट्र की ही नहीं समस्त देश की गौरव शालिनी महिलारत्न हैं जिन्होंने अपना समस्त जीवन शिक्षा प्रसार समाज एवं साहित्य सेवा में समर्पित कर रखा है। आप जैन समाज में एक मात्र महिला हैं जिनको सरकार ने पद्मश्री की उपाधि से सम्मानित किया है। हम आपका हार्दिक स्वागत करते हैं।

अकादमी के उपाध्यक्ष के रूप में हम देहली के माननीय श्री मदनलालजी जैन घण्टेवाला का स्वागत करते हैं। श्री मदनलाल जी देहली के प्रसिद्ध समाज सेवी एवं धर्मप्रेमी महानुभाव हैं तथा घण्टेवाला के नाम से देहली में ही नहीं सर्वत्र प्रसिद्ध हैं। आपकी माताजी का धर्म-प्रेम दर्शनीय एवं अनुकरणीय था। ९५ वर्ष की वृद्धा होने पर भी आप नियमित मन्दिर जाती थी एवं जिन भक्ति में अपने आपको समर्पित कर देती थी।

अकादमी के सम्माननीय सदस्यों में सर्व श्री शीलचन्द जी वृन्दावनदास जी

अहमदाबाद, मुलायमचन्द जी जैन जबलपुर, सिघई शीलचन्द जी जैन जबलपुर, माणकचन्द जी बेलाला मद्रास, पंडिता विद्युल्लता जी शहा सोलापुर, डा. श्री जे. कासलीवाल सोलापुर, पंडिता गजा बहिन बाहुबली, माणकचन्द अयकुमार जी चंवरे शान्तिनाथ पाटील जयसिंगपुर, स्वस्ति श्री भट्टारक लक्ष्मीसेनजी कोल्हापुर, एम बाई मिरजी चिक्कोडी, स्वस्ति श्री देवेन्द्रकीर्ति जी भट्टारक स्वामी जी हुम्मच, कपूरचन्द जी जैन डोड्या जयपुर एवं विमल चन्द जी बैनाडा आगरा का हम हार्दिक स्वागत करते हैं। आशा है समाज का हमें और भी अधिक सहयोग प्राप्त होगा।

सहयोग—अकादमी के सदस्य बनाने में राजस्थानी भाषा के कवि श्री राजमल जी बेगस्या, श्री माणकचन्दजी सा. कसेरा, डा. हरीन्द्र भूषण जी जैन बाहुबली, पं. माणिकचन्दजी चंवरे कारंजा प्रभुलालजी काला एवं उनकी श्रीमती स्नेहप्रभा जी से जो सहयोग मिला है उसके लिये हम उनके पूर्ण आभारी हैं।

अमृत कलश में विद्वानों का स्वागत

सप्तम भाग के प्रकाशन के पश्चात् अर्थात् अप्रेल १९८४ से सितम्बर ८४ तक हमारे अमृत कलश में स्थित अकादमी कार्यालय में जिन विद्वानों ने पधार कर हमारे खोज शोध के कार्य को देखा तथा देखकर शुभकामनाएं एवं शुभाशीर्वाद दिया उनमें रूपायन संस्था बरूंदा के निदेशक श्री कोमल कोठारी, जैन वाङ्मय के मनीषी डा. दरबारीलाल जी कोठिया, बम्बई के प्रसिद्ध लेखक एवं साहित्यकार डा. जगदीश जैन, साहू रिसर्च इन्स्टीट्यूट कोल्हापुर के निदेशक डा. विलास संगवे, अकादमी के संरक्षक माननीय श्री डालचन्दजी सा. जैन सागर, कुचामन के श्री राजमल जी छाबड़ा श्रीचन्दजी जैन सोनगढ़, श्री नन्दलाल जैन दिवाकर एडवोकेट गंज बासोदा, भगवान दास जी जैन अध्यक्ष अखिल विश्व जैन मिशन गंज बासौदा, पं सत्यन्धर कुमार जी सेठी उज्जैन एवं श्री निर्मल कुमार जी सेनानी विदिशा के नाम उल्लेखनीय है। हम अमृत कलश में पधारने के लिये सबके आभारी हैं।

८६७ अमृत कलश
बरकत नगर, किसान मार्ग
टोंक फाटक, जयपुर,

डा. कस्तूरचन्द कासलीवाल
निदेशक एवं प्रधान सम्पादक

संरक्षक की कलम से

श्री महावीर ग्रंथ अकादमी के अष्टम पुष्प "मुनि सभाचन्द एवं उनका पद्मपुराण" को पाठकों के हाथों में देते हुए मुझे अतीव प्रसन्नता है। सप्तम पुष्प के प्रकाशन के छह महिने पश्चात् अष्टम पुष्प का प्रकाशित होना निश्चय ही स्वागत योग्य है। प्रस्तुत पुष्प में प्रथम बार हिन्दी भाषा में निबद्ध पद्मपुराण का पूरा पाठ एवं उसका सम्यक् अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। पद्मपुराण जैन समाज में अत्यधिक लोकप्रिय ग्रंथ माना जाता है। इसलिये प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत एवं हिन्दी सभी भाषाओं में विभिन्न आचार्यों ने पुराण ग्रंथ निबद्ध किये हैं। प्रस्तुत पद्मपुराण जैन सन्त मुनि सभाचन्द की कृति है जिसकी खोज निकालने का श्रेय डा० कस्तुरचन्द कासलीवाल को है। जिन्होंने इसे सम्यक् रूप से सम्पादित करके प्रकाशित भी किया है। वस्तुतः डा० कासलीवाल ने अब तक पचासों अज्ञात एवं अचर्चित ग्रंथों को प्रकाश में लाने का जो महत्वपूर्ण कार्य किया है उसके सम्पूर्ण साहित्यिक समाज उनका सदैव आभारी रहेगा।

अकादमी की हिन्दी के जैन कवियों को उनका ऐतिहासिक अध्ययन के आधार पर बीस भागों में प्रकाशित करने की योजना एक ऐसी योजना है जिसकी किसी से तुलना नहीं जा सकती। जैन कवियों द्वारा निबद्ध हिन्दी का विशाल साहित्य है जिसका अता पता पाना भी दुष्कर कार्य है। प्रारम्भ में जब डा० कासलीवाल ने मुझे अकादमी का परिचय कराया तथा अपनी योजना रखी तो मुझे स्वयं को विश्वास नहीं हो रहा था कि उन्हें इतनी सफलता मिल जावेगी और एक के पश्चात् दूसरा भाग प्रकाशित होता रहेगा लेकिन जब अष्टम भाग पर दो शब्द मुझसे लिखने के लिये कहा गया तो स्वतः ही मन प्रसन्नता से भर गया। वास्तव में जैसा कि गत १५–२० वर्षों से मैंने डा० कासलीवाल को देखा है उन्हें एक समर्पित सेवाभावी लेखक एवं सम्पादक के रूप में पाया हैं। साहित्य सेवा एवं इतिहास की खोज ही उनके जीवन का एक मात्र मिशन है जिसका मूर्त रूप अब तक प्रकाशित उनकी ५० से भी अधिक पुस्तकें एवं विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित उनके सैकड़ों खोज पूर्ण लेखों में देखा जा सकता है।

डा. कासलीवाल द्वारा स्थापित श्री महावीर ग्रंथ अकादमी का संरक्षक बनने में मुझे अत्यधिक प्रसन्नता है। मैं चाहता हूं कि अकादमी द्वारा जैन हिन्दी कृतियों को 20 भागों में प्रकाशित कराने के पश्चात् अथवा उसके पूर्व ही जैन

तथ्य संग्रहीत हैं। इन्हीं के आधार पर एवं गुरु परम्परा से प्राप्त कथानकों के आधार पर जैन पुराणों की रचना की गई है। नवीं शताब्दि में शीलंकाचार्य ने चउपन्न महापुरिस चरिय लिखा जिसमें राम लक्खण चरिय भी दिया हुआ है। यह कथा विमलसूरि के पउमचरिय से प्रभावित है इसी तरह भद्रेश्वरकृत कहावली के अन्तर्गत रामायणाम एवं भुवनतुंग सूरि कृत सीया चरिय तथा राम लक्खण चरिय कथायें प्राप्त होती हैं।

संस्कृत भाषा में आचार्य रविषेण का पद्मचरितम् (पद्मपुराण) रामकथा से सम्बन्धित प्राचीनतम रचना है जिसकी रचना वीरनिर्वाण संवत् १२०४ तथा विक्रम संवत् ७३४ में की गई थी। यह पुराण १२३ पर्वों में विभक्त है तथा१८००० श्लोक प्रमाण की बड़ी भारी कृति है। रामकथा का ऐसा सुन्दरतम वर्णन संस्कृत भाषा में प्रथम बार किया गया है। १२ वीं शताब्दि में आचार्य हेमचन्द्र ने त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र में रामकथा का अच्छा वर्णन किया है। १५ वीं शताब्दि में ब्रह्म जिनदास ने पद्मपुराण की रचना करने का गौरव प्राप्त किया। यह पुराण ८३ सर्गों में विभक्त है तथा १५००० श्लोक प्रमाण है। पुराण की भाषा सरल एवं आकर्षक है। १६ वीं शताब्दि में भट्टारक सोमसेन ने वैराट नगर (राजस्थान) में रामपुराण की रचना समाप्त की थी तथा १७ वीं शताब्दि भट्टारक धर्मकीर्ति ने पद्मपुराण की 1612A.D. में रचना करके रामकथा को और भी लोकप्रियता प्रदान की। मुनि चन्द्रकीर्ति द्वारा रचित पद्मपुराण की रचना आमेर शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है। अपभ्रंश भाषा में महाकवि स्वयम्भू ने पउमचरिउ की रचना करने का यशस्वी कार्य किया। पउमचरिउ एक विशाल महाकाव्य है जो पांच काण्डों—विद्याधर काण्ड, अयोध्या काण्ड, सुन्दर काण्ड, युद्ध काण्ड एवं उत्तर काण्ड में विभक्त है। पांच काण्ड एवं ९०संधियों में काव्य बद्ध है। स्वयम्भू ८ वीं ९ वीं शताब्दि के महान् कवि थे जिसे महा पण्डित राहुल सांकृत्यायन ने हिन्दी का प्रथम कवि स्वीकार किया है। १५ वीं शताब्दि में महाकवि रइधू हुए जिन्होंने अपभ्रंश में विशाल काव्यों एवं पुराणों की रचना की। इन्होंने बलभद्रपुराण (पद्मपुराण) की रचना करने का गौरव प्राप्त किया था।[1]

लेकिन जब हिन्दी का युग प्रारम्भ हुआ तो जैन कवि इस भाषा में भी रामकथा को काव्य रूप में निबद्ध करने में सबसे आगे रहे। सर्वप्रथम

---

१. प्रशस्ति संग्रह—संपादक डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल पृष्ठ संख्या २०

२. वहीं पृष्ठ संख्या ११६

महाकवि ब्रह्मजिनदास ने राम सीतारास (रामरास) की रचना करके रामकथा को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। रामरास की रचना संवत् १५०८ (सन् १४५१) में की गई थी।[1] रामरास विशाल महाकाव्य है जिसकी पाण्डुलिपि में ३०० से भी अधिक पत्र हैं। ब्रह्म जिनदास के समान ही उनके शिष्य ब्र० गुणकीर्ति ने भी रामसीतारास की रचना करने का श्रेय प्राप्त किया।[2] लेकिन ब्र० गुणकीर्ति के पश्चात् करीब २०० वर्षों तक किसी भी भट्टारक अथवा विद्वान ने राम कथा पर लेखनी नहीं चलायी। यह आश्चर्य की बात है। इसके पश्चात् अब तक जिन कवियों की रचनाओं की खोज हो चुकी है उनमें निम्न रचनाओं के नाम उल्लेखनीय हैं:—

रचना	लेखक	रचनाकाल
सीताचरित्र[3]	रामचन्द्र अपरनाम बालक	संवत् १७१३
सीता हरण[4]	ब्रह्म जयसागर	संवत् १७३२
पद्मपुराण भाषा (पद्य)[5]	पं खुशालचन्द काला	संवत् १७८३
पद्मपुराण भाषा (गद्य)[6]	पं०दौलतराम कासलीवाल	संवत् १८२३
पद्मपुराण भाषा	भगवानदास	संवत् १७५५

उक्त कृतियों में पं० दौलतराम कासलीवाल द्वारा निबद्ध पद्मपुराण भाषा सबसे अधिक लोकप्रिय माना जाता है। इसी का समाज में सबसे अधिक स्वाध्याय हुआ है और आज भी यह पुराण सर्वत्र पढ़ा जाता है। दौलतराम ने इसकी जयपुर में रचना की थी। इसकी भाषा एवं शैली दोनों ही आकर्षक है। इसके अतिरिक्त शेष सभी राम काव्य अभी तक अपने प्रकाशन की प्रतीक्षा में खड़े हैं।

१. संवत पन्नर अठोतरा मांगसिर मास विशाल।
   शुक्ल पक्ष चउदिसि दिनी रास कियो गुणमाल।।
२. राजस्थान के जैन सन्त — व्यक्तित्व एवं कृतित्व पृष्ठ संख्या १८६
३. प्रशस्ति संग्रह— पृष्ठ संख्या २६६
४. वही २६७
५. राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रन्थ सूची द्वितीय भाग पृ. सं. २१५
६. वही २१५
७. वही २१६

लेकिन अभी गत वर्ष सन् १९८३ में ही मुझे एक और पद्मपुराण की खोज करने में सफलता प्राप्त हुयी है। प्रस्तुत पद्मपुराण महाकवि ब्रह्मजिनदास एवं ब्र. गुणकीर्ति के बाद की रचना है लेकिन उक्त पांचों कृतियों से प्राचीन है। इस प्रकार पद्मपुराण नाम से निबद्ध हिन्दी की सभी रचनाओं में प्रस्तुत पद्म-पुराण सर्वाधिक प्राचीन है जिसका विस्तृत परिचय निम्न प्रकार है—

ग्रन्थकर्ता— प्रस्तुत पद्मपुराण के रचियता मुनि सभाचन्द हैं जिनका पुराण के प्रारम्भ में निम्न प्रकार उल्लेख हुआ है—

सभाचन्द मुनि भया आनन्द, भाषा करि चौपई छन्द।
मुनि पुराण कीना मंडाण, मुनि जन लोक सुनु दे कान ।।३५।।

पुराण की समाप्ति पर लिखी गयी प्रशस्ति में उन्होंने सुभचन्द सेन के नाम का प्रयोग किया है जो उनके सेन गणीय भट्टारक परम्परा के मुनि होने का संकेत है। वे दिल्ली मंडल के मुनि थे जिनके पट्ट में और बहुत से मुनि हुए। ये कवि भी उसी परम्परा के मुनि थे। वे कुमारसेन भट्टारक मुनि के शिष्य थे। कवि ने ने अपनी गुरु परम्परा का निम्न प्रकार उल्लेख किया है।—

दिल्ली मंडल का मुनि राई, जिसके पट्ट भया बहु ठाई।
धरम उपदेस घणां कुं भया, पूजा प्रतिष्ठा जामै नया ।।४१।।

पंडित पट धारी मुनि भए, ग्यानवंत करुणां उर थए।
मलयकीत्ति मुनिवर गुणवंत, तिनकै हिरै ध्यान भगवंत ।।४२।।

गुणकीत्ति पर गुणभद्रसेन, गुणवाद प्रकासैं जैन।
भानकीरति महिमा अति घणी, विद्यावंत तपसी मुनि ।।४३।।

कुमरसेन भट्टारक जती, क्रिया श्रेष्ठ उजल मती।
उनके पट सुभचन्द्रसुसेन, धरम बखानि सुणावैं बैन ।।४४।।

इस प्रकार मुनि मलयकीत्ति, गुणकीत्ति, गुणभद्रसेन, भानुकीत्ति, कुमरसेन मुनि भट्टारक उनकी गुरु परम्परा थी। पद्मपुराण समाप्ति के पश्चात कवि ने अपना नाम मुनि सभाचन्द इस प्रकार उल्लेख किया है—

इति श्री पद्मपुराण सभाचन्द कृत संपूरनं।

रचना स्थान

इस प्रकार सभाचन्द कवि मुनि थे तथा वे काष्ठासंघीय सेन गण के मुनि थे। दिल्ली मंडल उनका केन्द्र था इसलिए ऐसा भी प्रतीत होता है कि सभाचन्द मुनि

देहली में ही रहते थे और उन्होंने पद्मपुराण की रचना भी देहली में रहते हुये की थी।

कवि के समय में देहली में मूलसंघी भट्टारकों की भी गादी थी। इस गादी के भट्टारक मुनि रत्नकीर्ति थे जो गंभीर ज्ञान के धारक थे। तपस्वी थे तथा इन्द्रियों का निग्रह करने वाले थे। उन्हीं के पट्ट में रामचन्द्र मुनि हुए जो पण्डिताचार्य थे जो सूक्ष्म व्याख्याता थे तथा रामकथा सुनने में रुचि रखते थे।

> श्री मूलसंघ सरस्वती गच्छ, रतनकीरत मुनि परम का पच्छ।
> तारन तरण ग्यान गंभीर, जाणै सकु प्राणी की पीर ।।४५।।
>
> तप संयम ते आतम ग्यान, धरम जिनेस्वर कहै बखांन।
> छुटै मिथ्यात उपजे ग्यांन जै निसचै धरि मनमैं आन ।।४६।।
>
> गुरू के बचन सुणि निसचै धरैं ते जीव भवसागर को तिरैं।
> श्री रतनकीर्ति तज्या संसार, पहूंचे स्वर्ग लोक तिह बार ।।४७।।
>
> उनके पट्ट रामचन्द्र मुनि आचारिज पण्डित बहु गुनी।
> कहैं ग्यान के सूक्ष्म भेव भई बुधि उनकी सेव ।।४८।।

रामकथा के विचित्र रूप:—

जैन साहित्य में राम कथा की दो धारायें मिलती हैं एक आचार्य रविषेण के पद्मपुराण की तथा दूसरी गुणभद्र के उत्तरपुराण की। आचार्य रविषेण की राम कथा विमलसूरि के पउमचरियं एवं स्वयम्भू के पउमचरिउ पर आधारित है। लेकिन गुणभद्राचार्य की राम कथा आचार्य रविषेण के कथानक से भिन्न है। हिन्दू धर्म की राम कथाओं में वाल्मीकि रामायण सबसे प्राचीन है जिसका प्रभाव उत्तरकालीन सभी राम कथाओं पर पड़ा है। महाभारत ब्रह्मपुराण, पद्मपुराण, अग्निपुराण, वायुपुराण आदि सभी में कुछ सामान्य परिवर्तन के साथ राम कथा को लिपिबद्ध किया गया है। इसके अतिरिक्त अध्यात्म-रामायण, अद्भुतरामायण आनन्दरामायण के नाम से भी कई रामकाव्य लिखे गये हैं। इन्हीं के आधार पर तिब्बती तथा खेतानी रामायण, हिन्देशिया की रामायण काकाबिन जावा का आधुनिक "सेरतराम" तथा हिन्द चीन, श्याम, ब्रह्मदेश, तथा सिंहल आदि देशों की रामकथाएं मिलती हैं। बौद्ध जातक "जातकट्ठवण्णना" में रामकथा मिलती है। जो संक्षेप में निम्न प्रकार है —

दशरथ महाराज वाराणसी में धर्म पूर्वक राज्य करते थे। इनकी ज्येष्ठा महीषी के तीन सन्तान थी— दो पुत्र (राम पण्डित और लक्खण) और एक पुत्री

(सीता देवी)। इस महिषी की मृत्यु के पश्चात् दूसरी को ज्येष्ठ महिषी के पद पर नियुक्त किया। उसके भी एक पुत्र (भरत) उत्पन्न हुआ। राजा ने उसी अवसर पर उसको एक वर दिया। जब भरत की अवस्था सात वर्ष की थी तब रानी ने अपने पुत्र के लिए राज्य मांगा। राजा ने स्पष्ट इन्कार कर दिया। लेकिन जब रानी अन्य दिनों में भी पुनः पुनः इसके लिए अनुरोध करने लगी तब राजा ने उसके षड्यंत्रों के भय से दोनों पुत्रों को बुलाकर कहा "यहां रहने से तुम्हारा अनिष्ट होने की सम्भावना है इसलिए किसी अन्य राज्य या वन में जाकर रहो और मेरे मरने के बाद लौट कर राज्य पर अधिकार प्राप्त करो"। उसी समय राजा ने ज्योतिषियों को बुलाकर उनसे अपने मरने की अवधि पूछी। बारह वर्ष का का उत्तर पाकर उन्होंने कहा—"हे पुत्रों! बारह वर्ष के बाद आकर छत्र उठाना" पिता की वन्दना कर दोनों भाई चलने वाले थे सीतादेवी पिता से विदा लेकर उनके साथ हो गयी। तीनों के साथ बहुत से अन्य लोग भी चल दिये उनको लौटाकर तीनों हिमालय पहुंच गये और वहां आश्रम बना कर रहने लगे। नौ वर्ष के पश्चात् दशरथ पुत्र शोक के कारण मृत्यु को प्राप्त हो गये। रानी ने भरत को राजा बनाने प्रयास किया। स्वयं भरत एवं अमात्यों के विरोध के कारण वह भरत को राजा बनाने में सफल नहीं हो सकी। तब भरत चतुरंगिनी सेना लेकर राम को ले आने के उद्देश्य से वन में चले जाते हैं। उस समय राम अकेले ही हैं। भरत उनसे पिता के देहान्त का सारा वृतान्त कह कर रोने लगते हैं परन्तु राम पण्डित न तो शोक करते हैं और न रोते हैं।

संध्या समय लक्ष्मण और सीता लौटते हैं। पिता का देहान्त सुनकर दोनो अत्यन्त शोक करते हैं। इस पर राम पण्डित उनको धैर्य देने के लिए अनित्यता का धर्मोपदेश सुनाते हैं। उसे सुनकर सब शोक रहित हो जाते हैं। बाद में भरत के बहुत अनुरोध करने पर भी राम पण्डित यह कह कर वन में रहने का निश्चय कहते हैं—"मेरे पिता ने मुझे बारह वर्ष की अवधि के अन्त में राज्य करने का आदेश दिया है अतः अभी लौट कर मैं उनकी आज्ञा का पालन न कर सकूंगा। मै तीन वर्ष बाद लौट आऊंगा।"

जब भरत भी शासनाधिकार अस्वीकार करते हैं तब राम पण्डित अपनी तिणपादुका (तृण पादुका) देकर कहते हैं कि मेरे आने तक ये शासन करेंगी तृणपादुकाओं को लेकर भरत, लक्ष्मण सीता तथा अन्य लोगों के साथ वाराणसी लौटते है। अमात्य इन पादुकाओं के सामने राजकार्य करते हैं। अन्याय होते ही वे पादुकाएं एक दूसरे पर आघात करती और ठीक निर्णय होने पर शान्त होती थी।

तीन वर्ष व्यतीत होने पर राम पण्डित लौटकर अपनी बहिन सीता से विवाह करते हैं। सोलह सहस्र वर्ष तक राज्य करने के पश्चात् वे स्वर्ग चले जाते

हैं। जातक के अन्त में महात्मा बुद्ध जातक का सामंजस्य इस प्रकार बैठाते हैं— उस समय महाराजा शुद्धोदन महाराज दशरथ थे। महामाया (बुद्ध की माता) राम की माता, यशोधर (राहुल की माँ) सीता, आनन्द भरत थे और मैं राम पण्डित था।"[1]

इसी तरह "अनामकं जातकम्" में राम के जीवन वृत्त से सम्बन्धित कथा मिलती है। चीनी त्रिपिटक के अन्तर्गत "त्सा–पौ–त्सिंग–किंग में १२१ अवदानों का संग्रह मिलता है। यह संग्रह ४७२ई. में चीनी भाषा में अनूदित हुआथा इसमें एक 'दशरथ कथानम्" भी मिलता है जिसमें राम कथा का उल्लेख किया गया है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें सीता या किसी अन्य राजकुमारी का उल्लेख नहीं हुआ हैं। दशरथ की चार रानियों का वर्णन आता है उनमें प्रधान महिषी के राम, दूसरी रानी के रामन (रोमण-लक्ष्मण) तीसरी रानी के भरत और चौथी रानी के शत्रुघ्न उत्पन्न हुये थे।

अद्भुत रामायण में रामकथा का दूसरा ही रूप मिलता है जिसमें सीता को मन्दोदरी द्वारा अपने गर्भ को जमीन में गाड दिए जाने के पश्चात् उत्पन्न हुआ माना गया है जो हल जोतते समय वह गर्भजात कन्या राजा जनक को मिली और उन्होंने उसका लालन पालन किया। लेकिन राम कथा का व्यापक एवं लोकप्रिय रूप बाल्मीकि रामायण का रहा जो सर्वत्र समादृत है।

जैन कथा के दो रूप

जैन साहित्य में रामकथा के जो रूप मिलते हैं उनमें गुणभद्राचार्य द्वारा रचित उत्तरपुराण एवं रविषेण के पद्मपुराण में सुरक्षित है। दोनों ही आचार्य जैनधर्म के अधिकृत विद्वान थे। आचार्य रविषेण ने विक्रम संवत् ७३४ (६७७ ई.) में पद्मपुराण की रचना समाप्त की थी जबकि आचार्य गुणभद्र ने ६ वीं शताब्दि के अन्त में उत्तर पुराण की रचना करने का गौरव प्राप्त किया था। इस प्रकार आचार्य रविषेण का पद्मपुराण आचार्य गुणभद्र के समक्ष रहा होगा ऐसा अनुमान किया जा सकता है क्योंकि ऐसा महापुराण लिखने वाले आचार्य जिनसेन एवं गुणभद्र अपने पूर्वाचार्यों की अधिकृत ग्रंथों को ओझल अथवा अनदेखा नहीं कर सकते। गुणभद्र आचार्य जिनसेन के शिष्य थे। जिनसेन आदि पुराण की रचना करने से पूर्व ही स्वर्गवासी हो गये इसलिए आदिपुराण के अवशिष्ट भाग एवं उत्तरपुराण की रचना करने का कार्य उनके सुयोग्य शिष्य गुणभद्र ने ही किया। उनके द्वारा उत्तरपुराण में प्रतिपादित रामकथा आचार्य रविषेण से भिन्न है जिसमें सीता को जनक की पुत्री न मानकर रावण-मन्दोदरी की पुत्री माना है।

पं० पन्नालाल जी साहित्याचार्य ने उत्तरपुराण का संक्षिप्त कथानक अपने पद्म पुराण की प्रस्तावना में निम्न प्रकार दिया है।

"वाराणसी के राजा दशरथ के चार पुत्र उत्पन्न होते हैं–राम सुबाला के गर्भ से, लक्ष्मण कैकयी के गर्भ से और बाद में जब दशरथ अपनी राजधानी साकेत में स्थापित करते हैं तब भरत और शत्रुघ्न भी किसी अन्य रानी के गर्भ से उत्पन्न होते हैं। यहां भरत एवं शत्रुघ्न की माता का नाम नहीं दिया गया है दशानन विनमि विद्याधर वंश के पुलस्त्य का पुत्र है। किसी दिन वह अमित वेग की पुत्री मणीमति को तपस्या करते देखता है और उस पर आसक्त होकर उसकी साधना में विघ्न डालने का प्रयत्न करता है। मणिमति निदान करती है कि मैं उसकी पुत्री होकर उसे मारूंगी"। मृत्यु के बाद वह रावण की रानी मन्दोदरी के गर्भ में आती है। उसके जन्म के बाद ज्योतिषी रावण से कहते हैं कि यह पुत्री आपका नाश करेगी अतः रावण ने भयभीत होकर मारीच को आज्ञा दी कि वह उसे कहीं छोड़ दे। कन्या को एक मन्जूषा में रख कर मारीच उसे मिथिला देश में गाड़ आता है। हल की नोक से उलझ जाने के कारण वह मन्जूषा दिखाई देती है और लोगों के द्वारा जनक के पास पहुंचाई जाती है। जनक मन्जूषा को खोलकर देखते हैं और उसका सीता नाम रख कर पुत्री की तरह पालन करते हैं। बहुत समय बाद जनक अपने यज्ञ की रक्षा के लिए राम और लक्ष्मण को बुलाते हैं। यज्ञ के समाप्त होने पर राम और सीता का विवाह होता है। इसके बाद राम अन्य सात कुमारियों के साथ विवाह करते हैं और लक्ष्मण पृथ्वी आदि १६ राजकन्याओं से। दोनों दशरथ की आज्ञा लेकर वाराणसी में रहने लगते हैं।

नारद से सीता के सौन्दर्य का वर्णन सुनकर रावण उसे हर लाने का संकल्प करता है। सीता का मन जानने के लिए शूर्पणखा भेजी जाती है लेकिन सीता का सतीत्व देख कर वह रावण से यह कह कर लौटती है कि सीता का मन चलायमान करना असम्भव है। जब राम और सीता वाराणसी के निकट चित्रकूट वाटिका में विहार करते हैं तब मारीच स्वर्णमृग का रूप धारण कर राम को दूर ले जाता है। इतने में रावण राम का रूप धारण करके सीता से कहता है कि मैंने स्वर्णमृग महल भेजा है। और उसको पालकी पर चढ़ने की आज्ञा देता है। यह पालकी वास्तव में पुष्पक विमान है जो सीता को लंका ले जाता है। रावण सीता का स्पर्श नहीं करता है क्योंकि पतिव्रता के स्पर्श करने से उसकी आकाशगामिनी विद्या नष्ट हो जाती।

दशरथ को स्वप्न द्वारा मालूम हुआ कि रावण ने सीता का हरण किया और वह राम के पास यह समाचार भेजते हैं। इतने में सुग्रीव और हनुमान बालि

के विरुद्ध सहायता मांगने के लिए पहुंचते हैं। हनुमान लंका जाते हैं और सीता को सांत्वना देकर लौटते हैं (लंका दहन का कोई उल्लेख नहीं मिलता) इसके बाद लक्ष्मण द्वारा बालि का वध होता है और सुग्रीव अपने राज्य पर अधिकार प्राप्त करता है। अब वानरों की सेना राम की सेना के साथ लंका की ओर प्रस्थान करती है। युद्ध के विस्तृत वर्णन के अन्त में लक्ष्मण चक्र से रावण का सिर काट देते हैं। इसके बाद लक्ष्मण दिग्विजय करके और अर्धचक्री नारायण बनकर अयोध्या लौटते हैं। लक्ष्मण की सोलह हजार रानियां और राम की आठ हजार रानियां है। सीता के आठ पुत्र होते है (सीता त्याग का उल्लेख नहीं मिलता) लक्ष्मण एक असाध्य रोग से मर कर रावण वध के कारण नरक में जाते हैं। राम लक्ष्मण के पुत्र पृथ्वी सुन्दर को राज पद पर और सीता के पुत्र अजीतंजय को युवराज पद पर अभिषिक्त करके दीक्षा लेते हैं और मुक्ति पाते हैं। सीता भी अनेक रानियों के साथ दीक्षा लेती है और अच्युत स्वर्ग में जाती है।[1]

हिन्दी में राम काव्य—

प्राकृत संस्कृत एवं अपभ्रंश पुराण रचनाओं के पश्चात् जब हिन्दी राजस्थानी में ग्रन्थ रचना होने लगी तो जैन कवियों द्वारा इन भाषाओं में सभी तरह के ग्रन्थों का गद्य एवं पद्य में लिखा जाने लगा या फिर मूल ग्रंथों के भावों को लेकर स्वतंत्र रूप से भी काव्य लिखे गये। हिन्दी-राजस्थानी में रामकथा को काव्य रूप में निबद्ध करने का सर्व प्रथम श्रेय महाकवि ब्रह्म जिनदास को दिया जा सकता है क्योंकि उन्होंने संवत् १५०८ में ही विशाल काव्य 'रामरास' की रचना करने का गौरव प्राप्त किया। 'रामरास' यद्यपि रविषेणाचार्य के पद्मपुराण के आधार पर निबद्ध किया गया है लेकिन वह कवि की मौलिक एवं स्वतंत्र रचना के रूप में है। संवत् १७२८ में देउल ग्राम में लिपिबद्ध इस काव्य की एक प्रति डूंगरपुर के भट्टारकीय शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है इस पाण्डुलिपि में १२"×५" आकार वाले ४०५ पत्र हैं। कवि ने अपने काव्य के रचना काल का निम्न पद्य में उल्लेख किया है—

संवत पनर अठोत्तरा, मगसिर मास विशाल।
शुक्ल पक्ष चउदसी दिनी, रास कियो गुणमाल॥

पद्मपुराण संरचना

विक्रम की १७ वीं शताब्दि के तृतीय/चतुर्थ चरण में मुनि सभाचन्द हुए। उनके समय में तुलसी का रामचरितमानस (रामायण) लोकप्रियता प्राप्त करने लगा था और उत्तर भारत की अधिकांश जनता में उसे पढ़ने की ओर रुचि बढ़ रही थी। वैष्णव धर्म में फैल रही रामायण के प्रति आसक्ति को देख कर

---

१. पद्मपुराण भूमिका पृष्ठ संख्या १७—१८

सभाचन्द मुनि को भी आचार्य रविषेण कृत संस्कृत भाषा के पद्मपुराण को सुनने की रुचि पैदा हुई। पद्मपुराण को सुन कर मुनिश्री के हृदय में आचार्य रविषेण के प्रति गहरी श्रद्धा जाग्रत हुई। अपनी रचना पद्मपुराण के प्रारम्भ में इन्होंने रविषेणाचार्य के प्रति जो श्रद्धा एवं भक्ति प्रदर्शित की है वह अत्यधिक संवेदनशील है। इन्होंने रविषेणाचार्य को मति श्रुति एवं अवधि ज्ञान का धारक महामुनीश्वर निर्ग्रंथाचार्य एवं क्रोध मान माया आदि कषायों से रहित होना लिखा है। इन्हीं भावों को कवि के शब्दों में देखिये---

केवल वाणी सुन्यां बखान, पंडित मुनिवर रच्या पुराण।
आचार्य रविषेण महंत, संस्कृत में कीनो ग्रन्थ ॥२०॥
महा मुनीश्वर ग्यांनी गुनी, मति श्रुति अवधि ग्यांनी मुनी।
महा निग्रंथ तपस्वी जति, क्रोध भाव माया नहीं रती ॥२१॥
धारियो वाणी शास्त्र किया, धर्म उपदेश बहुविध दिया।
जिसके भेदा भेद अपार, महामुनीश्वर कहैं विचार ॥२२॥

आचार्य रविषेण के पद्मपुराण को सुनने एवं उसका स्वाध्याय करने के पश्चात् मुनि सभाचन्द के हृदय में उसके हिन्दी रूपान्तर करने के भाव जाग्रत हुये और इन्होंने संवत् १७११ में फाल्गुन शुक्ला पंचमी को हिन्दी में पद्मपुराण जैसे महान् ग्रंथ को छन्दोबद्ध करने का यशस्वी कार्य कर डाला।

संवत सत्रहसै ग्यारह बरस, सुन्यां भेद जिनवाणी सरस।
फाल्गुन मास पंचमी स्वेत, गुरुवार मन में धरि हेत ॥२३॥
सभाचन्द मुनि भया आनन्द, भाषा करि चौपई छंद।
सुनि पुरान कीनां संधान सुनि जग लोक सुनु दे कान ॥२४॥

सर्व प्रथम गौतम स्वामी ने राम कथा को सबको सुनायी। उसके पश्चात् जगसेन केवली ने इसे मौखिक रूप से कहा। फिर कृतांतसेन ने एक करोड़ श्लोक प्रमाण ग्रंथ निबद्ध किया। इसके पश्चात् दूसरे आचार्यों ने पुराणों की रचना करके उन्हें पढ़ा। उनके सवदन गुनि शिष्य हुए। फिर अरहसेन एवं लक्ष्मनसेन मुनि हुए जिन्होंने साठ हजार श्लोक प्रमाण पद्मपुराण लिखा। उसी पुराण को आचार्य रविषेण ने अठारह हजार श्लोक प्रमाण पद्मपुराण नाम सेनिबद्ध किया। कवि ने इनका रचना काल का निम्न प्रकार वर्णन किया है—

सहस्र एक अक दोई से बरस, छह महीने बीते कथा सरस।
महावीर निरवाण कल्याण, इस अंतर है रच्या पुराण ॥

अर्थात् भगवान महावीर के निर्वाण के १२०० वर्ष और ६ महिने व्यतीत होने पर रविषेण ने पद्मपुराण की रचना समाप्त की थी। किन्तु स्वयं रविषेण ने वीर निर्वाण संवत् १२०४ एवं विक्रम संवत् ७३४ में पद्मपुराण की रचना करना लिखा है। इसलिये मुनि सभाचन्द ने अपने रचना काल में ४ वर्ष का अन्तर क्यों कर लिखा इसका कोई औचित्य नहीं बतलाया।

मुनि सभाचन्द भट्टारक कुंवरसेन के शिष्य थे। जो काष्ठा संघ—माथुर गच्छ–सेन गणीय भट्टारक थे। भ० कमलकीर्ति के दो शुभचन्द और कुमारसेन ये दो पट्ट शिष्य हुए।[1] इनके शिष्य थे सभाचन्द जो मुनि अवस्था में रहते थे। कुमारसेन का उल्लेख आमेर शास्त्र जयपुर की एक प्रशस्ति में भी आता है जो हेमकीर्ति के शिष्य एवं भ० हेमचन्द के गुरु थे।[2] मुनि सभाचन्द के नाम का कोई उल्लेख नहीं मिलता है। फिर भी ये भट्टारकीय परम्परा के मुनि थे इसमें कोई सन्देह नहीं है।

जीवन परिचय

मुनि सभाचन्द की गृहस्थावस्था का क्या नाम था। उनके माता पिता कौन थे। उनका जन्म कहाँ हुआ तथा उन्होंने किस अवस्था मुनि दीक्षा प्राप्त की इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता है। सभाचन्द पद्मपुराण (हिन्दी) के अतिरिक्त और कौन २ से ग्रंथों के रचयिता बने इसका भी कोई उल्लेख नहीं मिलता। लेकिन इतना अवश्य कहा जा सकता है कि सभाचन्द अपनी गृहस्थावस्था में अग्रवाल जैन होंगे क्योंकि आपने ग्रंथ प्रशस्ति में अग्रवाल जैनों की उत्पत्ति का वर्णन किया है। कवि के अनुसार अग्रवाल जैन जाति की उत्पत्ति निम्न प्रकार हुई है –

एक बार लोहाचार्य ने अग्रोहा के निकट आकर योग धारण कर लिया। अग्रोहा के सभी नगरवासी उनकी वंदना करने लगे। वहां उन्होंने अग्रवाल श्रावकों को प्रतिबोधित किया और श्रावकों की ५३ क्रियाओं को पालने का उपदेश दिया। पञ्च अणुव्रत, चार शिक्षाव्रत एवं तीन गुणव्रतों के महत्त्व को समझाया। नगर में व्याप्त मिथ्यात्व को दूर किया और जैनधर्म के स्वरूप को सबको बताया। लोहाचार्य के उपदेश से सबने दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय एवं व्रत विधान को अंगीकार किया। जीव दया का पालन होने लगा तथा सबने रात्रि भोजन न करने का नियम ले लिया और चउमंडिया में अगावेड (ब्यालु) की जाने लगी।

---

१. देखिये भट्टारक संप्रदाय–पृष्ठ संख्या २४
२. देखिये प्रशस्ति संग्रह–पृष्ठ संख्या ८५

मुनि सभाचन्द काष्ठासंघी साधु थे। उस समय देहली में मूलसंघ एवं काष्ठासंघ दोनों की गादियां थी। अधिकांश अग्रवाल जैन समाज काष्ठासंघी भट्टारकों के आम्नाय में था। मुनि सभाचन्द अपने समय के प्रमुख सन्त थे। साहित्य सर्जन की ओर इनका विशेष झुकाव था।

छन्दों का प्रयोग—पद्मपुराण विशालकाय ग्रन्थ है जिसमें ११५ विधानक है। तथा दोहा, चौपई एवं सोरठा छन्दों की संख्या ६६०६ है। जैन कवियों ने हिन्दी पद्य में इतना विशाल ग्रन्थ बहुत कम निबद्ध किया है। पुराण में छन्दों की संख्या निम्न प्रकार है—

प्रथम संधि (विधानक)	४६३ पद्य
द्वितीय संधि (विधानक)	७७ पद्य
तृतीय संधि (विधानक)	२११ पद्य
चतुर्थ संधि (विधानक)	८५ पद्य
पंचम विधानक से ११५ विधानक तक	५७७० पद्य
योग	६६०६

उक्त पद्यों में छन्दानुसार संख्या निम्न प्रकार है—

दोहा (दूहा)	१३९
सोरठा	३९
अडिल्ल	२४
कवित्त	२
चौपई	६३९२

विधानक की समाप्ति दोहा, सोरठा, कवित्त एवं अडिल्ल इन चार छन्दों में से किसी एक के साथ की गयी है। लेकिन कहीं-कहीं इसका अपवाद भी है और विधानक की समाप्ति चौपई के साथ भी कर दी गयी है।

भाषा—पद्मपुराण की रचना देहली में की गयी थी इसलिए पुराण की मूल

1. जपोहि निकट प्रभु ठाडे जोग, करे वन्दना सब ही लोग।
अग्रवाल श्रावक प्रतिबोध, त्रेपन क्रिया बताई सोध।।३५।।
पंच अणुव्रत सिख्याव्रत चारि, गुनव्रत तीन कहे अरचारि।
बारहे व्रत बारहे तप कहे, भवि जीव सुणि चित्त में गहे।।३६।।
मिथ्या धरम कियो तहां दूरि, जैन धरम प्रकास्या पुरि।
किमसों दान देई सब कोई, सासत्र भेद सुणि समकिती होई।।३७।।

भाषा खड़ी बोली है जिस पर प्रमुख रूप से राजस्थानी भाषा का प्रभाव दिखाई देता है। कहीं-कहीं उर्दू के शब्द भी आ गये हैं जो उस समय बोलचाल की भाषा में प्रचलित थे। वैसे पुराण की भाषा शुद्ध एवं परिमार्जित है। शब्दों को बिगाड़ करके प्रयोग करने का कवि स्वभाव नहीं है। १७वीं शताब्दी में जैन कवियों ने अपने काव्यों को खड़ी बोली में लिखना प्रारम्भ कर दिया था। प्रस्तुत पद्मपुराण इस धारणा का स्पष्ट प्रमाण है। उन्होंने प्रान्तीयता अथवा भाषावाद के मोह में न पड़कर सर्वत्र प्रदेश में प्रचलित भाषा में काव्य रचना की है।

पुराण की भाषा पर राजस्थानी का पुट है। कहीं-कहीं क्रिया पदों में में राजस्थानी क्रिया पदों का प्रयोग किया गया है तो कहीं-कहीं राजस्थानी शब्दों का प्रयोग बहुतायत में हुआ है।

क्रियापद—(1) पहली दुःख प्रजा कूं द्यूं, मधुसूदन का वैर हूं ल्यूं

३८४/४३३२

यहां द्यूं एवं ल्यूं क्रियायें राजस्थानी भाषा की हैं।

(2) लोग खंदाया उसके पास (१०४/६२६) इसमें खंदाया क्रिया पद ठेठ राजस्थानी भाषा का है जिसका अर्थ भेजा होता है। क्रिया पदों की तरह शब्दों का और भी अधिक प्रयोग हुआ है। राजस्थानी शब्दों में से कुछ शब्द निम्न प्रकार हैं—

उणीहार (३२/४४६) आपोणी (४२/६६) जनवासा (५८/६८) बीजणा (२०७/२००४), तिसाया (२२६/२२७४) लेणकुं (२०६/२२७४), पांणी (२०६/१९९०), भाभी (१९४/१८२७), जान (बरात) (५८/६८), जिनावर (जानवर १५८/१३५०) व्याहुणा (१७१/१५७८)।

राजस्थानी शब्दों के प्रयोग की तरह उर्दू शब्दों का भी पुराण में यत्र-तत्र प्रयोग हुआ है जिसका प्रमुख कारण सभाचन्द मुनि का जन सम्पर्क ही कहा जा सकता है। वकील (२७/१८२), फरमान (६१/४५५), दिलगीर (२०७/२०१३), फरमानो/सलाम (१९२/१८०४) जैसे शब्दों का प्रयोग प्रस्तुत काव्य में देखा जा सकता है। कहीं-कहीं उर्दू के शब्दों का भारतीकरण भी कर दिया है। 'मलहम' शब्द का ह निकालकर मलम (८४/३५४) से काम चला लिया है।

इसके अतिरिक्त ब्रजभाषा का भी पुराण पर स्पष्ट प्रभाव है। तोकूं, मोकूं शब्दों के प्रयोग के अतिरिक्त शब्दों के आगे 'कूं' प्रत्यय शब्द जोड़कर प्रयोग करने की ओर कवि की अधिक रुचि रही है। जैसे—समुद्र कूं (३६२६) मोकूं (३६२८) भानकूं (३६३०), रामकूं (३९३७) शब्दों की पुराण में बहुतायत है।

लेकिन विभिन्न भाषाओं का प्रभाव होते हुए भी पद्मपुराण मुख्यतः खड़ी

बोली की महान् कृति है जो कवि के अगाध भाषा ज्ञान की द्योतक है। हिन्दी भाषा में १७वीं शताब्दी में ही खड़ी बोली की परिष्कृत रचना मिलनी भाषा साहित्य के अध्ययन की दृष्टि से भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

रस एवं अलंकार—

पद्मपुराण शुद्ध सात्विक कृति है जिसका पर्यवसान शान्त रस प्रधान है। इसके प्रमुख पात्र, राम, लक्ष्मण, रावण, हनुमान, विभीषण, सुग्रीव, सीता आदि हैं जिनके जीवनवृत्त के चारों ओर पुराण का कथानक घूमता है। प्रारम्भ में कवि ने भगवान महावीर के पञ्चकल्याणक एवं उनकी दिव्यध्वनि द्वारा निर्गत प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव से लेकर २०वें तीर्थंकर मुनिसुव्रत नाथ के पावन जीवन का वर्णन किया गया है जो एक भूमिका के रूप में है एवं राम के जन्म के पूर्व में होने वाले महापुरुषों की स्मृति मात्र है। इसके अतिरिक्त वानर वंश की उत्पत्ति, हनुमान का जीवन, उनके पिता पवनंजय एवं अंजना का विवाह, विरह एवं मिलन, राक्षस वंश, रावण का जन्म, लंका की स्थिति, रावण का पराक्रमी एवं धार्मिक जीवन, रावण द्वारा लंका की प्राप्ति, वैभव, अपार शक्ति एवं विशाल साम्राज्य आदि का वर्णन भी रामकथा के लिये पूर्व पीठिका का कार्य करते हैं। इसलिये पद्मपुराण की रचना समग्र दृष्टि से पूर्ण है उसमें कहीं पर भी न कोई अंश छूट सका है और न किसी अंश को अनावश्यक महत्त्व दिया गया है। इसलिए पद्मपुराण में कभी तीर्थंकरों का जन्म होता है, कभी भरत बाहुबलीयुद्ध, माली द्वारा लंका पर आक्रमण, वैश्रवन द्वारा युद्ध, इन्द्र और रावण के मध्य युद्ध और अन्त में राम रावण युद्ध होता है जहां वीररस एवं दूसरे रसों का खुल कर प्रयोग हुआ है वहीं दूसरी ओर संसारस्वरूप वर्णन (पृष्ठ ४७), तत्ववर्णन (४३३), राम की तपस्या (५५६३) जैसे वर्णन वैराग्य प्रधान वर्णन हैं जिसमें शान्त रस का प्रवाह होता है।

पद्मपुराण में शृंगार रस का भी बहुत प्रयोग हुआ है। पद्मोत्तर की सुन्दरता, मन्दोदरी का सौंदर्य वर्णन, आदि ऐसे कितने ही स्थल हैं जिनमें सौंदर्य का मुक्त हस्त से वर्णन हुआ है। श्रीकंठ की पुत्री की सुन्दरता का वर्णन देखिए—

रूपवंत ज्यूं पुन्यू चंद, घटे बढे वह सदा अनन्त।
दीरघ नयन श्रवण सों लगे, देख कुरंग बन मांहि भगे ॥५५/१३
दंत चिपके ज्यों हीरों की ज्योत, मस्तक कपोल पृथ्वी उद्योत।
नासा भौंह बनी छवि घनी, वैनी कीर्त न जाय गिनी ॥५५/१४

रावण की रानी मन्दोदरी की सुन्दरता भी देखिये—

कैसे कवि चन्द्रमुखी कहै, वह घटै बधै या समनित रहै।
किम कविराज कहै मृग नैन, वई भय दायक सुख की देन ॥७८/२६८॥

इसी तरह वीर रस से तो पद्मपुराण भरा पड़ा है। पुराण में स्थान स्थान पर युद्ध होते हैं जो वीर रस से पूर्ण हैं। राम रावण युद्ध का एक वर्णन देखिये—

घोड़ा से घोड़ा तब लडै, मैंगल सौं मैंगल प्रति भिडै।
रथ को रथ पर दिया ढ़िया पेल, ऐसैं भिडै ज्यौं खेलत ह्वै मल्ल ॥३२९९॥
दोउधां बरखैं विधा बाण, गोला गोली करैं घमसान।
मारै खडग टूक ह्वै होइ, पीछा पाव न छुटिहै कोइ ॥३३००॥

विभीत्स रस—

युद्ध में योद्धाओं के सिर, हाथ, पाव, कट कट कर गिरने लगे। रक्त की धारा बहने लगी और सारा दृश्य भयानक लगने लगा। इसी का एक वर्णन देखिये—

परबत मुंड भुजा का भया, पडी लोथ पग जाई न दिया।
सोनत नदी बहै तिहा सोय, हाथी घोडे रथ सूर बहोत ॥३७३१॥
जैसे मगरमच्छ जल तिरैं, ऐसैं लोथ रकत मैं फिरैं।
जेता रण जूझ्या दोइ सेन, तिनका कहि न सकै कोइ बैन ॥३७३२॥

शान्त रस—पुराण में यत्र तत्र संसार के विरसता, असारता, तप का महत्व एवं तत्वों का वर्णन मिलता है जिसको पढ़ कर मन को शान्ति मिलती है तथा मन रागादि भावों से दूर हटता है।

जे जीव दृढ समकित धरैं, मिथ्या धरम निवार।
तिसचै पावैं परम पद, भुगतैं सुख अपार ॥४९९१॥
जीव तत्व संसारी दोइ, भव्य अभव्य उभय विध होइ।
अभव्य तपस्या करैं अनेक, काया कष्ट बिना विवेक ॥४९९२॥

रस विधान के समान अलंकारों का भी अच्छा उपयोग हुआ है। इसलिये उपमा, उत्प्रेक्षा जैसे कुछ अलंकार तो यत्र तत्र मिलते हैं।

पुराण का समीक्षात्मक अध्ययन—

पद्मपुराण भारतीय संस्कृति का कोश ग्रंथ है। उसमें संस्कृति एवं समाज का अच्छा वर्णन हुआ है। उसके नायक राम हैं जो भारतीय संस्कृति के प्रेरणा स्रोत हैं। राम की भक्ति एवं उनका गुणानुवाद पुण्य बंध का कारण है। पापों से मुक्ति दिलाने वाला है। राम के गुण अथाह हैं जिनका वर्णन करना भी साधारण कार्य नहीं है—

राम नाम गुन अगम अथाह, ते गुन किस पै बरने जाय।
जा मुख राम नाम नीसरै, सो संकट मैं बहुरि न परै ॥२३॥

जो पढ़ै राम नाम का वास, ताकै पाप न आवै पास ।
जिन श्रवरान राम जस सुने, देवलोक सुख पावैं घने ।।२४।।

इसलिये कवि पद्मपुराण के अन्त में लिखा है कि जो व्यक्ति इस राम काव्य पद्मपुराण को पढ़ेगा, स्वाध्याय करेगा, उसे तीनों लोकों का यश, सम्पत्ति एवं वैभव प्राप्त होगा—

जो कोई सुणै धरम के काज, पावै तीन लोक का राज
धरम ध्यान सुं पाप न रहै, केवल ज्ञान जीव वह लहै ।

१. राम

राम स्वभाव से सरल, उदार, दयालु हैं । माता पीता के पूरे आज्ञाकारी हैं अपने भाइयों से स्नेह रखने वाले हैं । शक्ति बाण द्वारा लक्ष्मण के मूर्छित होने पर वे जिस तरह विलाप करते हैं वह उनके भ्रातृ प्रेम का अनूठा उदाहरण है—

मैं देख्या भाई का मरण, अवर भया सीता का हरण,
काठ संचैल अगनि में जरूं, लक्ष्मण का कैसे दुख भरूं ।।३३१-१।।

राम प्रजावत्सल हैं । प्रजा के दुःख में दुःखी एवं सुख में सुखी होने वाले हैं । प्रजा असन्तोष अथवा सीता के प्रति गलत धारणा के कारण वे गर्भवती होने पर भी सीता का परित्याग करने में किञ्चित् भी नहीं घबराते । इसके अतिरिक्त अग्नि परीक्षा लेते समय भी कठोर हृदय वाले बन जाते हैं इसलिए उन्हें हम उन्हे "वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसमादपि" वाले स्वभाव का कह सकते हैं । राम पद्मपुराण के नायक हैं । पुराण का सम्पूर्ण कथानक उनके पीछे चलता है ।

राम शक्ति के पुन्ज भी है । युद्ध में विजय प्राप्त करना ही उनका स्वभाव था । रावण जैसे शक्तिशाली शासक से युद्ध करने में वे जरा भी पीछे नहीं हटे और अन्त में उस पर विजय प्राप्त करके ही लौटे । लेकिन अकारण युद्ध करना उनका स्वभाव नहीं नहीं था । वे रावण को अन्त तक समझाते रहे और युद्ध को टालते रहे । राम दूरदर्शी राजनीतिज्ञ भी हैं । जो भी उनकी शरण में आ गया वह उनका होकर रह गया । सुग्रीव, हनुमान, नल नील जैसे योद्धाओं को उन्होंने सहज ही अपनी ओर मिला लिया । विभीषण जब प्रथम बार ही उनकी शरण में आया तभी उसे लंकाधिपति कह कर सहज ही में उसे भी अपने पक्ष में कर लिया ।

राम जिन भक्त हैं । जहां भी अवसर मिला इन्होंने जिन मन्दिर के दर्शन किये । देशभूषण एवं कुलभूषण जैसे महामुनियों को आहार देने में कभी पीछे नहीं रहे । वे अनेक विद्याओं के धारी हैं ।

राम जीवन के अन्तिम समय में दीक्षा लेते हैं तथा घोर तपस्या करते हैं ।

वे जब आहार के निमित्त जाते हैं तो लोग द्वारापेक्षण करते हैं और उनको आहार देने में अपना अहोभाग्य समझते हैं।

आतम ध्यान करे रामचन्द्र, वाणी सुनत होई आनन्द।
इनके गुण अति अगम अपार, राम नाम त्रिभुवन आधार ॥५५६६॥
रसना कोटिक करै बखान, उनके गुण का अन्त न मान।
इन्द्र धरणेन्द्र जो अस्तुति करै, ते नहीं बोक अन्त निसरै ॥५५६७॥

राम को केवल ज्ञान होता है और निर्वाण प्राप्त करते हैं।

२. लक्ष्मण

राम के लघु भ्राता हैं लेकिन आठवें नारायण है। छाया की तरह राम की सेवा में रहते हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक वे अपने बड़े भाई का कभी साथ नहीं छोड़ते हैं। यद्यपि वे नारायण हैं, शक्तिशाली हैं, अनेक विद्याओं के अधिपति हैं लेकिन अपने बड़े भाई को देवता तुल्य मानते हैं और उनकी सेवा करने में ही अपने जीवन की सार्थकता समझते हैं। वे चक्रधारी हैं। रावण के चलाए हुए चक्र को वे ग्रहण करते हैं और उसी चक्र से रावण का सिर काट देते हैं लेकिन इसका उन्हें किञ्चित् भी अभिमान नहीं है लेकिन शत्रुओं के लिये वे यम के समान हैं। लक्ष्मण की मृत्यु देखकर राम विलाप ही नहीं करते किन्तु अपने भाई का मृतक शरीर लिये फिरते हैं।

रामचन्द्र देखै निरताई, पीत बरण देखै सब काइ।
किह कारण रूठा इह भ्रात, मुखसों कबहु न बोलै बात ॥५४४२॥
अन्य दिवस मोहि आवत देखि, आदर करता पटाभिषेक।
मेरे साथ बहुत दुख सहे, दण्डक बन मांही जब हम रहे ॥५४४३॥
रावण मारे मेरे काज, रघुवंसी की राखी लाज।
तुम बिन कैसे जीउं आप, कैसे इह मेटो संताप ॥५४४४॥

३. सीता

जनक सुता सीता राम की आदर्श पत्नी है। वह अपने शील के लिये सर्वत्र प्रसिद्ध है। वह भारतीय संस्कृति की जीती जागती मूर्ति है। पति की अनुगामिनी है तथा उनकी आज्ञा पालन ही उनके जीवन की उपलब्धि है। वनवास में वह उनकी छाया की तरह सेवा करती है। अपहरण के पश्चात् वह रावण की अशोक वाटिका में रहती है। रावण उसे फुसलाने का भरसक प्रयत्न करता है लेकिन उसके पतिव्रत के कारण किसी की नहीं चलती। वह हनुमान की बातों पर तब तक विश्वास नहीं करती जब तक वह स्वयं आश्वस्त नहीं हो जाती।

सीता कहै सुणु हनुमान, तुम अन राम कद की पहचान।
मैं तुमकूं नहीं देख्या सुण्या, किस विध उणसो सनबंध बण्या।

उनुं के कारण आये लंक, मन में कछु मन आणी संक ।।३०६८।।
व्यौरा सूं समझायो बात, मिटै संदेह सुणि विरतांत ।
लक्ष्मण तणी कही कुसलात, आप एह पाई किण भांति ।।३०६९।।

सीता को राम वन में छुड़ा देते हैं और अपने भाग्य भरोसे जीने को मजबूर करते हैं फिर भी सीता अपने ही भाग्य को कोसती है और राम को कभी दोष नहीं देती ।

ऐसा कर्म उदय हुआ आय, ते सुख खोसि भेजी इस ठाय ।
कै मैं वच्छ बिछोहा गाय, कै मैं बाल बिछोह माय ।
कै सरवर नैं बिछोहा हंस, कै परवोनीका राख्या अंस ।।४५६७।।

राम सीता की अग्नि परीक्षा लेते हैं और उसमें वह खरी उतरती है । वास्तव में विश्व में यही एकमात्र उदाहरण है—

पंचनाम हिरदै संभाल, जिन चौबीसौं सुमरे तिहूकाल ।
सरब भूषण को करी नमस्कार, मन बच काय सत रहे हमार ।।४६२५।।
अगनि माझ तैं जो ऊबरूं झूंठ कहूं तो त्रिणां परिजलूं ।
पंच नाम पढि चिता मैं पड़ी, सीतल भई अगनि तिह घड़ी ।।४६२६।।

४. रावण

रावण प्रति नारायण है । वह बाल्य अवस्था से ही शूरवीर एवं युद्धप्रिय है । कुंभकर्ण एवं विभीषण उसके लघु भ्राता हैं तथा चन्द्रनखा उसकी बहिन है । जब उसे मालूम पड़ता है कि पहिले उसके पिता लंका के राजा थे जो उनसे छीन ली गयी है तो माता को अपना पौरुष दिखलाता है और फिर विद्याएं सिद्ध करने बैठ जाता है और एक साथ ग्यारहसै विद्याएं प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करता है ।

दसानन ग्यारहसै विद्या लई, जिनके गुण का पार न कही ।२३४/७५

विद्याएं सिद्ध करने के पश्चात् वह सहज ही लंका पर विजय प्राप्त कर लेता है । उसके दस सिर एवं बीस भुजाएं हैं । वह महान् बलवान है जिसे देखते ही बड़े-बड़े योद्धाओं के प्राण सूख जाते हैं । लेकिन वह जिनेन्द्र का भक्त है । जिन पूजा में उसका पूरा विश्वास है । युद्ध के समय भी वह पूजा करना नहीं छोड़ता ।

श्री जिन धरम प्रसाद, वृद्धि भई परिवार की ।
पायो लंका राज, राक्षसवंसी जग तिलक ।।४६५।।

रावण इन्द्र पर विजय प्राप्त करता है तथा अर्धचक्री बन कर समस्त पृथ्वी पर राज्य करता है । वह व्रत नियमों का पालन करता है और उन्हीं के नियमों के पालन में उसमें अपार शक्ति उत्पन्न होती है । वह अनन्तवीर्य मुनि के पास निम्न प्रकार व्रत पालन करने का निश्चय लेता है—

एक भांति व्रत पालौं सही, जे नारी मुझ इच्छै नहीं ।
ताकौं सील न खंडउ जाई, इहै वरत मुख बोलयं राई ।।१०६.३१।।

रावण जीवन में सीता हरण जैसी एक ही गल्ती करता है लेकिन इस एक ही गल्ती ने उसकी सारी कीर्ति धो डाली और वह सदा के लिए कलंकित बन गया। लेकिन हरण के उपरान्त भी वह उससे दूर से ही बात करता है। स्पर्श तक नहीं करता क्योंकि स्पर्श करने से सतित्व भंग होने का डर है। सीता को वापिस करने में उसे अपयश का डर लगता है इसके अतिरिक्त वह अपनी सामर्थ्य के सामने औरों को तुच्छ समझता है।

मेरा बल है प्रगट तिहुं लोक, तू काई चितवै मन सोक।
कहा राम है भूमिगोचरी, जिसका भय तू चित्त में धरी।
उनकी सैना बहबट करूं, राम है बांधि बंदि मैं धरूं।
जे मैं आणी सीता नारि, फेर सकू कैसे इणबार ।।३६४०।।

लेकिन राम के समक्ष रावण का पौरुष समाप्त हो जाता है। उसका चक्र उसके हाथ से छूट कर लक्ष्मण के हाथ चला जाता है और उसकी जीवनलीला समाप्त हो जाती है अनेक विद्यायें भी उसका साथ नहीं देती।

५. हनुमान—

हनुमान वानर वंशी विद्याधर हैं। उसके पिता पवनंजय एवं माता अंजना का चरित्र लोक में प्रसिद्ध है। हनुमान प्रारम्भ में ही वीरता के धनी है पहिले वह रावण का साथ देते हैं लेकिन राम मिलन के पश्चात् वह रावण का विरोधी बन जाते है। हनुमान राम का सन्देश लेकर लंका में जाता है। सीता से भेंट करता है। राम के समाचार कहता हैं। वह पकड़ा जाता है और रावण के समक्ष उपस्थित होता है। लेकिन अपने विद्याबल से मुक्त होकर लंका का दाह करता है। राम लंका पर आक्रमण करते है तो वह सेनापति के रूप में अगली पंक्ति में रहते हैं। लक्ष्मण के मूर्छित होने पर वह अयोध्या जाकर विशल्या को लाते है। जीवन के अन्त तक वह राम के साथ रहते हैं तथा अन्त में तपस्या करते हुए मोक्ष लक्ष्मी को प्राप्त करते हैं। हनुमान का जीवन जैन साहित्य में बहुत लोकप्रिय रहा है इसीलिए सभी भाषाओं में उनके जीवन के सम्बन्ध में कितनी ही कृतियां लिखी गयी हैं।

पद्मपुराण का सामाजिक जीवन—

पद्मपुराण में देव, विद्याधर, भूमिगोचरी, म्लेच्छ जाति के प्राणियों का वर्णन आता है और इन्हीं में से पुराण के प्रमुख पात्र बनते हैं:

देव—देवगति के धारक देव स्वर्ग में रहने वाले होते है। कभी वे तीर्थंकरों के पंच कल्याणकों में आते है तो कभी युद्ध भूमि में वृष्टि करते है। यक्ष एवं यक्षिणी देव जाति में ही गिनी जाती है। देवों के विक्रिया ऋद्धि होती है जिससे वे अपना कुछ भी रूप बना सकते है।

विद्याधर—मनुष्य जाति में ये विद्याधर विशेष जाति के होते हैं जो आकाशचारी होते हैं। विमानों के द्वारा ये आकाश में चलते हैं। अंजना, पवनंजय, हनुमान सभी विद्याधर जाति के मनुष्य थे। इनको विद्यायें स्वतः ही प्राप्त हो जाती हैं। विद्याओं के धारक होने के कारण इन्हें विद्याधर कहा जाता है। भरत की राजसभा में विद्याधर नरेश भी थे। अंजना को पुत्र के साथ विद्याधर नगर ले जाया गया था।

> अंजनी सति विवाण बैठाई, बसंतमाला संग लई चढाइ।
> विद्याधर ले निजपुर चल्या, सुगन मुहूरत साध्या भला।
> बैठा विवाण चले आकास, देख्या रवि बालक आकाश ॥१२२६॥

भूमिगोचरी—भूमिगोचरी का अर्थ मनुष्यों से है जो केवल भूमि पर ही चलते हैं। राम, सीता, लक्ष्मण, जनक, दशरथ आदि सभी भूमिगोचरी कहलाते थे। रावण अपनी शक्ति के सामने भूमिगोचारियों की शक्ति को कुछ नहीं समझता था।

म्लेच्छ—म्लेच्छ खण्ड में रहने वालों को म्लेच्छ कहा जाता था। रावण का प्रदेश म्लेच्छ खण्ड में गिना जाता था। ये म्लेच्छ बड़ी दुष्ट प्रकृति के होते थे और सत्पुरुषों को तंग किया करते थे। रावण यद्यपि राक्षस वंशी था लेकिन उसकी गिनती भी म्लेच्छों में आती थी ये अतिशय शक्तिशाली होते थे। राजा जनक ने दशरथ से म्लेच्छों से छुटकारा पाने के लिए ही राम लक्ष्मण को आमन्त्रित किया था।

> म्लेच्छ मोहि घेरया है आय, थाणा मेरा दिया उठाय।
> पीड़ा परजा कुं दे हैं घनी, देवल ढाहि गऊ तिहां हणी
> साधां कूं देहैं उपसर्ग, जिसकूं तिसकूं मारेल द्रग ॥१८००॥

विवाह वर्णन

पुराण युग में पति पत्नि के रूप में रहने के लिए विवाह बन्धन आवश्यक माना जाता था। पद्मपुराण में विवाह के दो रूप सामने आते है एक स्वयंवर द्वारा, दूसरा सप्तपदी द्वारा बारात लेकर कन्या के पिता के घर जाकर। दोनों प्रकार के विवाह जन समाज द्वारा मान्य थे। अमरप्रभ विवाह के लिए बारात लेकर गये थे। नगर के पास बारात आने पर अगवानी की गयी थी (४८/६७) बारात ने जनवासा किया था। विवाह में कपड़े, गहने, हाथी एवं घोड़े दिये गये थे। बारात को जीमनवार देकर सम्मान किया था।

श्रीमाला का स्वयंवर रचा गया था। कन्या ने अपने पसन्द के वर के गले में माला पहिनायी थी। रावण ने शुभ मुहूर्त में मन्दोदरी के साथ विवाह किया था। (७४/२६८) सीता ने स्वयंवर में राम के गले में माला डाली थी।

जीमनवार

विवाह लगन के पश्चात् विशाल रूप में जीमनवार होता था। पूरे नगर/गांव को जीमनवार दी जाती थी। सीता के स्वयंवर के पश्चात् एक बहुत बड़ी जीमनवार की गयी थी। सोने के थालों में खाना, चांदी के कटोरे में दूध पीना उस समय साधारण बात थी। मिष्ठानों का विवरण पढ़ने योग्य है—

फीणा फीणी अरु बरफी स्वेत, घेवर लाडू परुस्या हेत।
सुरमे सीरा पूरी घनी, बहुत सुवास लनोकी बनी ॥१६४१॥
घोल बडे व्यंजन बहु भांति, हरे जरद बहु गणे न जात।
भात दाल अतिअत सुवास, सिखरण का दौना थार पाति ॥
तामें बूरा लायची लौंग, मेवा मेल्या तिहां मोहनभोग।
मीठा मिरच जीरों का मिल्या, लूण संवारे तिहां घिल्या ॥१६४३॥

जीमने के पश्चात् पान, लौंग, केशर, जावत्री दी जाती थी। विभीषण ने जब राम के स्वागत में विविध पकवान बनाये थे लेकिन उनमें भात दाल दही दूध आदि की रसोई प्रमुख थी—

बहु पकवान अर व्यंजन घने, भात दाल सामग्री मिले।
कनकलघाई सोवन थाल, बैठा जिमैं सब भूपाल ॥३६२६॥
निरमल जल सौं झारी भरी, पीवैं भूपति मानैं रली।
दूध दही जीमैं सब भूप, षट्रस व्यंजन बणे अनूप ॥३६२७॥

स्वप्न दर्शन और स्वप्न फल—

स्वप्न दर्शन भावी घटना के सूचक होते हैं। तीर्थंकर की माता को जो सोलह स्वप्न आते हैं उनसे माता के उदर से तीर्थंकर पुत्र जन्म के साथ उसके दूसरे लक्षण भी प्रकट होने लगते हैं।

होय पुत्र फल मन आनन्द, जानिहं पूरनवासी चन्द।
सुर नर इन्द्र करेंगे सेव, तीन लोक के दानव देव ।६/।७७।
भव सागर का तोडै जाल, धर्म सरीर धर्म प्रतिपाल।
विद्याधर नृपति पशुपती, इनमें अहोत बधावैं रती ॥७८॥

राजा श्रेणिक को पद्मपुराण के कथानक के प्रति आश्चर्य एवं जिज्ञासा स्वप्न में ही प्रतिभाषित हो गयी थी जिसका समाधान भगवान महावीर की दिव्यध्वनि द्वारा हो सका था (१२/१६८-१७८)। मरुदेवी को भी सोलह स्वप्न आये थे जिनका फल तीर्थंकर ऋषभदेव के रूप में पुत्र उत्पन्न होना था। कैकेयी ने पुत्र जन्म के पूर्व तीन स्वप्न देखे थे—

प्रथम सिंघ गर्जा रव करै, हस्ती हुर्ने बहुत मन धरै।
दूजे मंगल देख्या ससी, सरोवर में बहु करता रली ॥७१/१८०॥

कमल उखारि लिया मुख माहि, भानू मेरे मन्दिर आहि ।
लीजे देख्यां पूरण चन्द्र, सुपने देख भया आनन्द ।।७१/१८१।।

इसी तरह लवकुश होने के पूर्व सीता ने भी स्वप्न में निम्न प्रकार देखा था—

रात पाछली घटिका च्यार, सुपिनां निष पाई तिह बार ।
दोई केहरी गर्जत देखे, सायर जल निर्मल पेखे ।।४४८५।।
देव विमाण आवता आणि, आणुं मुख में धर्से आण ।
भए प्रभात जागण के बेर, गावें गुणीजन मधुरी टेर ।।४४८६।।

इसी तरह राम की माता अपराजिता एवं लक्ष्मण की माता सुमित्रा ने भी स्वप्न देखे थे जिनका फल राम और लक्ष्मण जैसे महापुरुष पुत्र के रूप में उत्पन्न होना था ।

शकुन एवं शकुन फल

स्वप्न स्वयं व्यक्ति को आते हैं जबकि शकुन अन्यत्र होते हैं जो शुभ शकुन एवं अपशकुन दोनों तरह के होते हैं । जैसे ही अयोध्या में राम और लक्ष्मण का जन्म होता है रावण के यहां अपशकुन होते हैं—

रावण के घर उलकापात, बिजली परी कांगिर उह जात ।
रात दिवस रोवें मंजार, कूकर रोवें बारम्बार ।।१७११।।
मंगल चारि सुपने मांझि, बोलें काग होइ जब सांझ ।
उल्लू बोलें दिन तिहां घणे, ऐसी चिंता मन रावण तणे ।।१७१२।।

इसी तरह युद्ध के अन्तिम दिन जब रावण आयुधशाला में शस्त्र लेने पहुँचता है तो उसे फिर कुछ अपशकुन होते हैं जिससे उसको बड़ी चिन्ता होती है ।

रावण आवधसाला चल्या, तिहां सुगन खोट सहूं मिल्या ।
दंड सौं छत्र पड्यो भूमि, टूटी धुरी आया रण भूमि ।।३६२०।।
मार्ग होइ निकस्या मांजार, स्वान कान झाड्या तिन बार ।
खोट सुगन रावण को भये, मंदोदरी सोचें निज हिये ।।३६२१।।

राम द्वारा गर्भवती सीता को वन में एकाकी छोड़ने से पूर्व उसकी भी दाहिनी आंख फड़कने लगी थी तब उसने निम्न प्रकार विचार भी किया था—

दच्छण आंखि फरकं सिया, पश्चाताप मन में करै सिया ।
करम उदै वन बेहड़ फिरी, वन मांहि ते रावण अपहरी ।।४५०१।।

युद्ध वर्णन

पद्मपुराण में युद्धों का वर्णन विस्तृत रूप से हुआ है । यह युद्ध राम रावण के मध्य होने वाला तो लोक चर्चित है लेकिन भरत बाहुबली युद्ध, माली द्वारा लंका पर आक्रमण, वैश्रवन राजा द्वारा युद्ध, इन्द्र और रावण के मध्य युद्ध वर्णन भी

पठनीय है। ऐसा लगता है वह युग भी युद्धों का युग था और बिना हार जीत के कोई समस्या नहीं सुलझती थी। लेकिन भरत बाहुबली युद्ध दोनों भाईयों के मध्य होता है उसमें सेना तो खड़ी-खड़ी तमाशा देखती रहती है व्यर्थ के खून बहाने के यह अच्छी बात थी। इन युद्धों में नेजा, बरछी, धनुष, तलवार, चक्र, गदा जैसे हथियारों के अतिरिक्त अग्निबाण, मेघबाण, धुंआबाण, अंधकार बाण, प्रकाश बाण जैसे हथियारों का प्रयोग होता है। युद्ध में नागपासनी विद्या, शक्तिबाण जैसी विद्याओं का भी खुलकर प्रयोग किया जाता था। रावण के अकेले के पास ग्यारह सौ विद्याएं थी और बहुरूपणी विद्या उसने बाद में प्राप्त की थी। कभी-कभी बड़े भयंकर युद्ध होते थे जिनमें जन हानि बहुत हुआ करती थी। ऐसे ही एक युद्ध का वर्णन देखिये—

> परबत मुंड भुजा का भया, पड़ी लोथ पग जाई न दिया।
> सोनत नदी बहै तिहां लोथ, हाथी घोड़े रथ सूर बहोत ॥३७२१॥
> जैसे मगर मच्छ जल तिरै, असे लोथ रकत में फिरै।
> जैता रण झूझा दोउ सेन, तिनका कहि न सकै कोइ बैन ॥३७२२॥

रावण को नलकूबड़ से युद्ध करने में विमान से गोलियां, गोले बरसाना पड़ा था। चार योजन (कोश) तक गोलों की मार होती थी। कवि सभाचन्द के समय में तोप और गोलों से युद्ध होने लगा था। इसलिये उसने इस युद्ध में भी उनका वर्णन कर दिया जो तत्कालीन युद्ध कौशल का परिचायक है। युद्ध में विमानों का प्रयोग होता था। विद्याधर तो विमान से ही आते जाते थे। रावण का पुष्पक विमान का नाम तो सर्वत्र प्रसिद्ध है।

नगरों का वर्णन

पद्मपुराण में अनेक नगरों का उल्लेख आया है। इनमें से कुछ पौराणिक हैं तथा कुछ ऐतिहासिक। वैसे सभी राजाओं के अपने-अपने नगर थे जहां से वे अपने देश का शासन करते थे। सर्वप्रथम कवि ने राजग्रही नगरी का वर्णन किया है जहां सात मन्जिले महल थे जिनमें भित्ति चित्रों की भरमार थी। चौड़े-चौड़े बाजार एवं चौपड़ थी। नगर के चारों ओर से चौड़ी एवं गहरी खाई थी यही नहीं नगर का व्यापार भी खूब तगड़ा था। यहां सराफी, वस्त्र व्यवसाय, लेन-देन आदि होता रहता था।

> ऊंचे मन्दिर हैं सत खिने, सबही सरस राय के बने
> बसैं सघन दीसैं नहीं भंग, लिखे चित्र जिम अति सुरंग ॥
> उज्जल वरण धवल दुर किये, छूभी कलस कनक के दिये ॥१/३७॥

\+ \+ \+ \+

जहां सराफ सराफी करैं, बोलें सति झूठ परिहरैं।
कसैं कसौटी परखे दाम, लेवा देई सहज विश्राम ॥

कुंडलपुर नगर तो स्वर्ग के समान था जहां न कोई दुःखी व्यक्ति था और न दरिद्रता से घिरा हुआ। महलों के पास बाग बगीचे बने हुए थे। यही नहीं झरनों में जल भी बहता रहता था।

कुंडलपुर सिधारथ राव, महापुनीत जगत में नांउ।
सोभा नगर ना जाइ गिनी, सुरगपुरी की सोभा बनी ॥५/५९॥
दुःखी दलिद्रि न कोई दीन, पंडित गुनी सकल परवीन।
हाट बाजार चौहटे बने, सोभा सकल कहां लौ भनें ॥५/६०॥

बाहुबली की राजधानी पोदनपुर की सोभा तो और भी निराली थी जहां सभी मकान समान थे। घरों में रहने वाली स्त्रियां अप्सराओं से कम नहीं लगती थी। बड़ी कठिनता से भरत के वकील को बाहुबली का राजमहल मिला था।

ऊंचे मन्दिर सब इकसार, ढूंढता पहुंचा राजदरबार ॥३८४/८७॥
घर-घर नारी जाणि अपछरा, राजमहल सब तैसी खरा ॥

इसी तरह मिथला नगरी, उज्जयिनी, महेन्द्रपुर नगर,[1] लंका,[2] अयोध्या[3] आदि का पद्मपुराण में वर्णन आया है वह पढ़ने योग्य है।

महावीरवाणी

पद्मपुराण में यत्र तत्र तीर्थंकरों के मुख से एवं मुनियों के द्वारा धार्मिक उपदेश दिया गया है। जीवन पालने के नियम बताए गए हैं तथा चरित्र-निर्माण के कुछ सिद्धान्त प्रतिपादित किये गये हैं इसलिए पद्मपुराण केवल कथानक मात्र न रहकर जीवन-निर्माण का ग्रन्थ भी बन गया है। सामान्य व्यक्ति के लिए निम्न क्रियाओं को आवश्यक बतलाया गया है—

तिहुं काल सामायक करै, सात विसन आठों मद हरै।
सोलहकारन का व्रत धरै, दया धर्म दस विध विस्तरै ॥१०/१३७॥
च्यार दान दे विस समान, औषद अभय अहार समान।
सास्त्र दिया पावे बहु ग्याम, विनयवंत होई तजि अभिराम ॥१०/१३८॥

कवि ने दान पर बहुत जोर दिया है तथा धन होने पर भी दान नहीं देने को अपयश एवं पापबंध का कारण बतलाया है—

---

१. देखिये पद्य संख्या २६८३
२. ,, ,, ३६०५
३. ,, ,, ४०६२

देइ चउविध दान, अर्थ धाम धर्महि करै ।
ते पावैं निरवान, जस प्रगटै तिहुं लोक में ।।११/१५३।।

चउपइ—धन पाया कछु पुन्य न किया, अपजस पोट अपने सिर लिया ।
आपै खाय न खुवावे और, सदा बहै चिंता की ढोर ।।१५४।।
जोडि द्रव्य धरती तल दियो, कैले काहू ने सौंपियो ।
कै वह धन लेवं हर चोर, कै खोया जुवा की ठौर ।।१५६।।
कै वह माल विसन सौं गया, कै रिण दिया तिहां थकी रह्या ।
कैइ राजि नैं लीया दण्ड, निरधन भया जगत में मंड ।।१५७।।

ऐसे लगता है कि कवि के समय में रात्रि भोजन त्याग का नियम कुछ शिथिल हो गया था तथा पानी को छानकर पीने की प्रवृत्ति भी कुछ कम हो रही थी। इसलिए इन दोनों नियमों को दृढता से पालन करने पर जोर दिया है तथा नियमों को नहीं पालन करने वाले की खूब भर्त्सना की गयी है।

भोजन रयण तजै तिहुं बात, ते कहीए मानुस की जात ।
जे नर रयण भोजन खांहि, राक्षस सम जाणिये ताहि ।

दोहा

जे नर निसी भोजन करैं, कंद मूल फल खांइ ।
ते चिहुंगति भ्रमते फिरैं, मोक्षपंथ तिहां नाहिं ।।१०५१।।

इसी तरह बिना छना पानी सेवन करने का निषेध किया है—

अणछाण्यां जो पीवे नीर, करै स्नान मंजन सरीर ।
कंदमूलादिक सब फल खाय, सत संयम पाल्यो नहीं जाय ।।१४३।।
असे जे सेवे मिथ्यात्व, ते नर मर करि नरकै जात ।।

लेकिन भूखे को भोजन देने एवं प्यासे को पानी पिलाने में अपार पुण्य बतलाया है तथा सरल चित्त रख कर दूसरे के दुःख को दूर करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

भूखा भोजन प्यासा नीर, सरल चित्त जानें पर पीर ।
पुन्नि संयोग लहै गति देव, नरपति खगपति उत्तम कुल भेव ।।१६१।।११

पराधीनता

कवि ने पराधीनता को बहुत बुरा बतलाया है।

पराधीन कछु बोल न सके, जिह्वा भेजे तिहां पल नहीं टिकै ।
जैसी आज्ञा सोई होय, ताको वरज सकै नहीं कोइ ।।४५८७।।

सुभाषित एवं सूक्तियां

पुराण में विविध कथानक आये हैं इन कथानकों के प्रसंग में कहीं कहीं कवि ने बहुत सुन्दर सुभाषित एवं सूक्तियां कही है जो सदैव मनन चिन्तन एवं जीवन में

उतारने योग्य है। इन सुभाषितों से काव्य सौष्ठव बढ़ा है तथा वर्णन में मधुरता आयी है। कुछ उदाहरण निम्न प्रकार है—

(1) किसकी पृथ्वी किसका राज, मौ सम बहुत कर गये राज (३०/४२३)
ये शब्द भरत ने ध्यानस्थ बाहुबली को कहे थे जिनके हृदय में एक शल्य था कि वह भरत की पृथ्वी पर तपस्या कर रहा है।

(२) भागे को पीछा न कीजे तात (६५/८६)
युद्ध में जान बचाकर भागने वाले का पीछा नहीं करना चाहिए।

(३) ऐसा यह संसार स्वरूप, नटवत भेष करै बहुरूप (६६/५५५)
संसार की वास्तविक स्थिति बतलायी है जिसमें यह प्राणी नट के समान विचित्र रूप धारण करता रहता है।

(४) जो नारी परपुरुष को रमैं, सो नारी नीची गति भ्रमैं (११८/८१६)

(५) ज्यौं पकडे तीतर नैं बाज (१२४/८६३)

(६) सोग विजोग रहट की घडी, कबही रीती कबही भरी (१७२/१५३१)

(७) होणहार टार्यो किम टरै (१८१/१६६१)

(८) होणहार कैसे टलै, बहुविध करै उपाय।
अणहोणी होणी नहीं, इह निमित्त का भाव ॥१८१/१६६२

(९) बेटी किसके घरै समाय (२०६/२०३५)

(१०) दिन सेती ज्युं भोजन खाय (२२३/२२३४)

(११) जती सन्यासी विप्र अतीव, बाल वृद्ध नारी पसु जीव।
पसु अपाहज मत मारो भूल, इनकी हत्या है अघमूल ॥२२६/२३२१

इस प्रकार और भी बहुत सी सूक्तियां एवं सुभाषित पुराण में से एकत्रित की जा सकती हैं वास्तव में ने कवि पुराण काव्य को सरस एवं रोचक तथा प्रभावी बनाने के लिए इस प्रकार की रचना का अच्छा सहारा लिया है।

पाण्डुलिपि परिचय—

पद्मपुराण की एक मात्र पाण्डुलिपि डिग्गी (राजस्थान) के दि० जैन मन्दिर में संग्रहीत है। इस पाण्डुलिपि में ११८ पत्र है जो १२।। × ६ इंच साइज के है। प्रत्येक पृष्ठ में २८ पंक्तियां हैं। पाण्डुलिपि संवत् १८५६ मिति आषाढ़ बदि १४ सोमवार की लिखी हुई है। लिपिकार प्रशस्ति निम्न प्रकार से है—

इति श्री पद्मपुराण सभाचन्द्र कृत संपूरन। संवत १८ से ५६ मिति आषाढ बदि १४ वार सोमवासरे लिखितं पण्डित मोतीराम लिखायतं साहजी श्री गंगाराम जी की बहु जाति धोराया मांडलगढ़ की उतराय पढाई का अंत मे पण्डित मोतीरामेन दीयो। ग्रंथ संख्या ११ हजार रुपया ७ दीया निजराना का शुभं भवतु।।
पाण्डुलिपि की प्राप्ति श्री माणकचन्द जी सेठी डिग्गी के माध्यम से हुई है। वैसे

मैं एवं श्री हरकचन्दजी चौधरी भूतपूर्व समाज कल्याण अधिकारी राजस्थान अगस्त ८२ में डिग्गी के शास्त्र भण्डार की खोज में गये थे तब मुझे यह पाण्डुलिपि ग्रन्थों की सूची बनाते समय प्राप्त हुई थी। पद्मपुराण की अभी तक यही एक मात्र पाण्डुलिपि प्राप्त हुई है। हो सकता है राजस्थान अथवा देहली आदि के और भी शास्त्र भण्डारों में पाण्डुलिपि मिल जावे। मैं श्री हरकचन्दजी चौधरी का भी आभारी हूँ जिन्होंने दो दिन तक ठहर कर ग्रन्थों की सूची बनाने में सहयोग दिया था।

पद्मपुराण का सार—

चौबीस तीर्थंकरों के मंगलमय स्तवन से पद्मपुराण प्रारम्भ होता है। इसके पश्चात् जिनवाणी के स्वरूप का कथन एवं राम नाम के महात्म्य का वर्णन किया गया है। कवि ने अपने पूर्ववर्ती आचार्य रविषेण के स्मरण के पश्चात् राजग्रही नगरी की सुन्दरता, कुण्डलपुर के राजा सिद्धार्थ के यशोगान के साथ ही त्रिशला माता द्वारा सोलह स्वप्न, भगवान महावीर का जन्म, तप, कैवल्य एवं समवसरण का वर्णन मिलता है। महाराजा श्रेणिक रघुवंश की कथा जानने की इच्छा प्रकट करते हैं। भगवान महावीर की दिव्य ध्वनि खिरती है और गौतम गणधर द्वारा जिनवाणी के अनुसार रघुवंश की कथा का वर्णन किया जाता है।

गौतम गणधर रामकथा कहने के पूर्व भोगभूमि एवं चौदह कुलकरों के उल्लेख के पश्चात् प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के पिता महाराजा नाभिराय एवं महारानी मरुदेवी के गर्भ से ऋषभदेव का जन्म, देवों द्वारा जन्मोत्सव का आयोजन, ऋषभदेव का बाल्यकाल, शारीरिक सुन्दरता, विवाह व सन्तानोत्पत्ति, राज्य प्राप्ति व उनके द्वारा तीन वर्णों (क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) की स्थापना का वर्णन करते हैं। दीर्घकाल तक राज्य सुख भोगने के पश्चात् ऋषभदेव तपस्वी बनकर कैवल्य प्राप्त करते हैं। धर्मोपदेश देते हैं और अन्त में निर्वाण प्राप्त करते हैं। ऋषभदेव के १०१ पुत्र एवं २ पुत्रियां होती हैं। भरत का दिग्विजय के पश्चात् अपने छोटे भाई बाहुबली से युद्ध होता है। युद्ध में यद्यपि बाहुबली की विजय होती है लेकिन उन्हें वैराग्य हो जाता है। भरत सम्राट बनते हैं। भरत द्वारा ब्राह्मण वर्ग की स्थापना की जाती है और उन्हें "सबसे उत्तम ब्रांमण भने" के रूप में स्वीकार किया जाता है।

सम्राट भरत पर्याप्त समय तक राज्य सुख भोगते हैं और अन्त में आदित्य-जन को राज्य भार सौंपकर स्वयं वैराग्य धारण कर लेते हैं। इस कथानक में विद्याधर वंश का वर्णन एवं सत्यघोष की कथा कही गयी है। तृतीय कथानक में अजितनाथ तीर्थंकर के वर्णन के पश्चात् सगर की उत्पत्ति, उसके साठ हजार पुत्रों द्वारा कैलाश पर आकर गंगा को खोदना, धरणेन्द्र द्वारा भीम एवं भागीरथ को छोड़कर सभी पुत्रों को अपनी फुंकार से भस्म करना, पिता द्वारा पुत्रों की मृत्यु पर दुःख प्रकट करने के पश्चात् भागीरथ को राज्य सौंपकर स्वयं जिन दीक्षा ले लेने

है इसी में लंका के राजा महाराक्षस एवं उसके पुत्र अमर राक्षस आदि का वर्णन भी आता है।

चतुर्थ कथानक में श्रेणिक द्वारा वानर वंश की कथा जानने की इच्छा, उसकी उत्पत्ति, मेघपुर नगर में राजा अतेन्द्र अपने पुत्र श्रीकंठ के साथ राज्य करता है। उसकी एक सुन्दर पुत्री को रत्नपुरी के राजा अपने पुत्र पद्मोत्तर के लिये मांगता है लेकिन उसे वह नहीं मिलती है। एक बार जब विद्याधर सुमेरु पर्वत पर जाता है तो पुष्पोत्तर की लड़की की सुन्दरता देख कर मुग्ध हो जाते है। पुष्पोत्तर श्रीकंठ का पीछा करता है वह भाग कर लंका चला जाता हैं। फिर पद्मावती से उसका विवाह हो जाता है। लंका नरेश कीर्त्तिधवल श्रीकंठ को किष्कपुर का राजा बना देता है। वहां वह वर्षों तक राज्य करता है। एक बार उसने अपने पूरे परिवार के साथ मानुषोत्तर पर्वत की यात्रा की तथा वहां देव बनकर नन्दीश्वर द्वीप की यात्रा करने की इच्छा प्रकट की फिर अपने पुत्र वज्रकंठ को राज्य भार सौंपकर स्वयं ने जिन दीक्षा धारण करली। श्रीकंठ राज्य करने लगा। एक बार उसने एक चारण ऋद्धि धारी मुनि से अपने पूर्व भव पूछे। पूर्व भव सुनने के पश्चात् उसे वैराग्य हो गया और अपने पुत्र को राज्य देकर स्वयं मुनि बन गया। इसके पश्चात् कितने ही राजा हुये। इसी परम्परा में होने वाले अमरप्रभ राजा का गुणवती से विवाह हुआ। कवि ने बारात एव जीमनवार का अच्छा वर्णन किया है। अमरप्रभ श्रेयांस तीर्थंकर के शासन काल में हुए थे। इसके पश्चात् जब वासुपूज्य स्वामी का शासन काल आया तो तीन तीन सागर की लम्बी अवधि व्यतीत होने के पश्चात् अमरप्रभ का फिर जन्म होता है।

लंका के राजा विद्युतवेग की श्रीचन्द पटरानी थी। एक बार वे दोनों जंगल में गये हुए थे तो एक बन्दर ने राणी के फूल की दे मारी। राजा ने बाण से बन्दर का वध कर दिया। वानर मरने के पूर्व मुनि के चरणों में आ गिरा। इससे वह मर कर देव हो गया। देव ने मायामयी सेना बना कर विद्युतवेग पर चढ़ाई कर दी। लेकिन दोनों में मित्रता हो गयी। आदित्पुर की रानी वेगवती की पुत्री श्रीमाला का स्वयंवर रचा गया। अरविंद ने श्रीमाला से गुप्त विवाह करके उसे विमान में बैठाकर ले गया।

माली राजा ने लंका पर चढ़ाई करके उसको ले लिया। वह लंका पर राज्य करने लगा। कुछ समय पश्चात् इन्द्रकुमार ने लंका पर चढ़ाई करके और युद्ध के पश्चात् वह लंका का स्वामी बन गया। माली मारा गया। सुमाली की पत्नी कैकसी ने तीन स्वप्न देखे। उसके तीन पुत्र उत्पन्न हुए जो रावण, कुंभकर्ण एवं विभीषण कहलाये। उधर इन्द्र को रावण के जन्म लेते ही दुःस्वप्न आने लगे। वह

चिन्तित हो गया। एक दिन रावण अपनी मां के साथ जा रहा था। तब उसने अपनी मां से राजा और उसके नगर के बारे में पूछा। मां ने लंका के बारे में रावण को सब कुछ बता दिया। इससे रावण को बड़ा क्रोध आया और लंका जीतने का निश्चय किया। उसने मां के सामने ही अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया। फिर तीनों भाईयों ने विद्या प्राप्ति के लिए तपस्या करना प्रारम्भ किया। यक्ष ने बहुत प्रकार के विघ्न उपस्थित किये। देवांगना का रूप धारण करके उन्हें अपने ध्यान से डिगाना चाहा लेकिन कोई भी अपनी साधना से नहीं डिगे। रावण ने एक साथ ग्यारह सौ विद्याएं प्राप्त की।

रावण ने विद्या प्राप्ति के पश्चात् पहिले मन्दोदरी से विवाह किया और फिर लंका भी वैश्रवन राजा से छीन ली। लंका विजय के पूर्व दशानन को मन्दोदरी से इन्द्रजीत की प्राप्ति हुई। लंका राक्षस वंशी रावण की हो गयी। रावण एक बार कैलाश पर जिन वन्दना के लिये गया। मार्ग में उसे बालि मुनि तपस्या करते हुए मिले। रावण ने अपने विद्याबल द्वारा अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया। तपस्या करते हुए बालि ने अपना अंगूठा टेक दिया। रावण उसके भार को नहीं सह सका और चिल्लाने लगा। बालि मुनि को दया आयी तब कहीं जाकर रावण की प्राण रक्षा हो सकी। रावण ने बालि की स्तुति की तथा वैराग्य लेने की इच्छा प्रकट की। तभी धरणेन्द्र ने रावण को वृद्धावस्था में साधु जीवन अपनाने की बात कही तथा रावण को एक शक्तिबाण देकर उसे और भी बलशाली बना दिया। इसके पश्चात् रावण ने सहस्ररश्मि राजा पर विजय प्राप्त की।

इसके पश्चात् वसु राजा की कथा आती है। नारद एवं पर्वत के मध्य चर्चा छिड़ जाती है। पर्वत "अज किया बकु'ठा जाई" में विश्वास करता है। नारद इस विचार का खण्डन करता है। 'अज' शब्द पर दोनों में बहस होती है। वे वसु राजा के पास निर्णय के लिये जाते हैं। वसु राजा पर्वत का पक्ष लेकर अज शब्द का अर्थ बकरा बताता है। इस असत्य निर्णय से वह सिंहासन सहित नरक में जाता है। पर्वत की जब चारों ओर से निन्दा होने लगी तो वह सन्यासी बन जाता है और राजा मारुत को यज्ञ करने का परामर्श देता है। जब रावण को यज्ञ का पता चलता है तो वह राजा मारुत एवं सभी विप्रों को बांध लेता है लेकिन अन्त में नारद दया करके उन्हें छुड़ा देते हैं।

रावण का एक विवाह कनकप्रभा से होता है। उसकी एक कन्या मधु का विवाह मथुरा के राजा हरिवाहन के पुत्र मधु के साथ होता है। रावण के कैलाश पर्वत पर जाने की सूचना पाकर इन्द्र ने नलकूबड़ राजा के भय से मुक्त करने की प्रार्थना की। रावण सहायता के लिए दौड़ा लेकिन नलकूबड़ ने गढ़ के किवाड़

बन्द कर दिये। लेकिन रावण की वीरता एवं अजेयता को सुनकर नलकूबड़ की पत्नी उपारम्भा उस पर आसक्त हो गयी। उसने अपनी दूती को भेजा और सुदर्शन चक्र होने की बात कही। पहिले तो रावण परस्त्री से बात करने के लिए ही मना कर देता है लेकिन वह विद्या प्राप्ति के लोभ में रानी के पास चला जाता है और उससे विद्या प्राप्त कर लेता है और नलकूबड़ पर विजय प्राप्त करता है। नलकूबड़ इन्द्र की सहायता करता है। इन्द्र और रावण में भयंकर युद्ध होता है इन्द्र को अपने बल पौरुष पर गर्व है। रावण सिंहरथ पर सवार होकर लड़ता है तो इन्द्र हाथी पर लड़ता है। दोनों विभिन्न विद्याओं का उपयोग करते हैं। अन्त में दोनों में मल्ल युद्ध होता है और उसमें रावण की विजय होती है। रावण इन्द्र को दण्ड देता है। इन्द्र के पिता सहस्रार द्वारा इन्द्र को छोड़ने की प्रार्थना करने पर रावण इन्द्र को छोड़ देता है इन्द्र को अपनी हार से बहुत पीड़ा होती है। इतने में मुनिचन्द्र का वहां आगमन होता है अपने पूर्व भव का वृत्तान्त जानने के पश्चात् उसे वैराग्य हो जाता है और अन्त में मुनि दीक्षा लेकर निर्वाण प्राप्त करते हैं।

धातकी द्वीप में अनन्तवीर्य मुनि को कैवल्य होता है। देवता गण वहां वन्दना के लिए आते हैं। रावण भी वन्दना के लिए पहुंचता है। भगवान की वाणी खिरती है। छह द्रव्य, सात तत्व एवं नव पदार्थों पर प्रवचन होता है। अणुव्रत, महाव्रत, दश धर्म आदि के पालन के साथ रात्रि भोजन-निषेध का भी उपदेश होता है। लोभदत्त सेठ की कथा भी कही जाती है जिसके अनुसार लोभदत्त नरक एवं सेठ भद्रदत्त अपनी ईमानदारी से जगत में सम्मान प्राप्त करता है। कुम्भकरण रावण आदि सभी व्रत ग्रहण करते हैं। रावण व्रत लेता है कि जो स्त्री उसको नहीं चाहेगी उसका वह शील कभी खण्डित नहीं करेगा।

राजा श्रेणिक ने इसके पश्चात् हनुमान के बारे में जानना चाहा। भगवान की फिर दिव्यध्वनि खिरी और गौतम गणधर ने उसका वर्णन किया। आदित्यपुर के राजा प्रहलाद एवं रानी केतुकी थे। उनके पुत्र का नाम पवनंजय था। उधर वंसपुर देश के राजा महेन्द्र एवं उसकी रानी हृदयवेगा थी। अन्जना उनकी पुत्री थी। अन्जना जब विवाह योग्य हुई तो उसके सम्बन्ध की बात चली। महेन्द्र के एक मंत्री ने रावण का नाम सुझाया और उसके वैभव का वर्णन किया। दूसरे मन्त्री ने श्रीषेण राजा का नाम बताया। तीसरे मंत्री ने पवनंजय के लिए अनुशंसा की। राजा को पवनंजय का नाम पसन्द आया और प्रहलाद के सामने अंजना पवनंजय के सामने प्रशंसा की तो उससे उसका मन खट्टा हो गया। इससे अंजना को भी भारी दुःख हुआ फिर भी दोनों का विवाह हो गया।

उधर रत्नदीप के राजा के साथ रावण का युद्ध छिड़ गया। रावण ने

सहायतार्थ राजा प्रह्लाद को निमन्त्रण भेजा। पवनंजय ने युद्ध में जाने का प्रस्ताव रखा और सेना लेकर वह रवाना हुआ। मार्ग में उसे एक नदी के किनारे चकवा चकवी के विरह को देखकर अंजना की याद आयी। वह सेना वहीं छोड़कर एक रात्रि के लिए अंजना से मिलने चला गया। दोनों में मिलन हुआ। अंजना गर्भवती हो गयी। जब पवनंजय की माता को उसके गर्भ का मालूम पड़ा तो उस पर पुरुष के साथ गमन का दोष लगा कर उसे घर से निकाल दिया। अंजना रोती बिलखती अपने पिता के घर पहुंची लेकिन वहां भी उसे कोई आश्रय नहीं मिला।

कवि ने अंजना का चारों ओर से तिरस्कृत होने का रोमाञ्चकारी वर्णन किया है। उसे अपने पिता के यहां से भी "ढेला ईंट पत्थर की मार, नगर मांहि तैं दई निकार" से तिरस्कृत होना पड़ा। अन्त में अपनी दासी के साथ सघन एवं भयानक वन में एक गुफा में जाकर शरण ली। वहीं उसे एक ध्यानस्थ मुनि के दर्शन हुए। मुनि ने उसे पूर्व भव का स्मरण कराया तथा पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद दिया। उसी समय रत्नचूल राजा का हाथी की खोज में वहां आना हुआ। अंजना ने पुत्र को जन्म दिया लेकिन दुर्भाग्य से शिशु हनुमान विमान से गिर गया लेकिन हनुमान का कुछ भी नहीं बिगड़ा। यह घटना उसके भविष्य में अतिशय शक्तिशाली होने का संकेत मात्र थी।

उधर पवनंजय जब युद्ध से लौटा तब अंजना को न पाकर बहुत दुःखी हुआ। उसके निष्कासन के समाचारों से वह पागल जैसे हो गया। वह तत्काल अंजना को ढूंढने निकला। अंजना के विरह में उसकी दशा दयनीय हो जाती है लेकिन अन्त में दोनों का मिलन हो जाता है और वे सुखपूर्वक रहने लगते हैं। एक बार वरुण ने रावण पर आक्रमण कर दिया। पवनंजय की सहायता मांगी गयी। इस बार स्वयं हनुमान रावण की सहायतार्थ जाते हैं। रावण हनुमान को देखकर बहुत प्रसन्न होता है। वरुण एवं हनुमान में घनघोर युद्ध होता है। रावण वरुण को पकड़ लेता है। कुम्भकरण विजय के पश्चात् लूट मार मचाता है तो रावण उसकी निन्दा करता है। वरुण को छोड़ दिया जाता है। इस युद्ध में हनुमान की वीरता का सबको पता लग जाता है। हनुमान को सुग्रीव अपनी कन्या देता है तथा वे सब सुख से राज्य करते हैं।

20 वें तीर्थंकर मुनिसुव्रत नाथ का माता पद्मा के उदर से जन्म होता है। उनका जन्म कल्याणक देवों द्वारा मनाया जाता है। युवा होने पर उनका यशोमति से विवाह होता है। बहुत वर्षों तक राज्य सुख भोगने के पश्चात् बिजली गिरने की घटना को देखकर उन्हें वैराग्य हो जाता है। तपस्या के पश्चात् पहले कैवल्य होता है और एक लम्बे समय तक धर्मोपदेश देने के पश्चात् निर्वाण प्राप्त करते हैं। वृषभ

नाथ से लेकर मुनिसुव्रत तक हजारों राजा होते हैं। अयोध्या में वज्रबाहु, कीर्तिधर हिरण्यनाभ, नहुष, स्योदास एवं अरण्य आदि एक के बाद दूसरे राजा होते हैं अरण्य राजा के अनन्तरथ एवं दशरथ दो पुत्र होते हैं लेकिन अपने पिता के साथ अनन्तरथ द्वारा दीक्षा लेने के कारण दशरथ राजा बनते हैं। दशरथ के तीन रानियां थी—अपराजिता, कैकयी एवं सुमित्रा।

एक दिन रावण के यहां नारद ऋषि का आगमन हुआ। रावण द्वारा अपने मारने वाले का नाम जानना चाहा तो नारद ने दशरथ के पुत्र लक्ष्मण का नाम बताया तथा जनक की लड़की सीता का कारण बताया। रावण ने तत्काल दशरथ एवं जनक को मारने के लिए दूत भेजे लेकिन वे दूसरों को मार कर उनके सिर रावण के सामने रख दिये। रावण अपने आपको अमर समझने लगा।

कैकयी का विवाह स्वयंवर द्वारा हुआ था। स्वयंवर के पश्चात् कैकयी ने दशरथ का पूरा साथ दिया। दशरथ की विजय हुई। राजा दशरथ ने प्रसन्न होकर कैकयी से यथेच्छ वर मांगने के लिए कहा लेकिन रानी ने भविष्य के लिए सुरक्षित रख लिया। दशरथ सानन्द राज्य करने लगे। अपराजिता, के राम, सुमित्रा के लक्ष्मण एवं कैकयी के भरत का जन्म हुआ। सुमित्रा के शत्रुघ्न पैदा हुए। इनके जन्म होते ही रावण के घर अपशकुन होने लगे। चारों भाई विभिन्न विद्यायें सीखने लगे।

जनक के घर सीता एवं भामण्डल का जन्म हुआ। भामण्डल के पूर्व भव के बैर के कारण जन्म होते ही देवतागण उसे उठा ले गये और रथनुपुर राजा के जिन मन्दिर में बैठा गये। सुदरसणा रानी के कोई सन्तान नहीं होने के कारण उसका लालन पालन उसी ने किया। जनक एवं दशरथ दोनों ने भामण्डल की बहुत तलाश की लेकिन कहीं पता नहीं चला। एक बार जनक की नगरी मिथिला पर म्लेच्छ राजा ने आक्रमण कर दिया। जनक ने दशरथ से सहायता की याचना की। दशरथ के स्थान पर राम लक्ष्मण जनक की सहायता के लिये गये। उन्होंने युद्ध में म्लेच्छों की सेना को भगा दिया। इससे जनक ने राम को सीता देने की इच्छा प्रकट की। इसी समय नारद ऋषि भी राम का पौरुष देखने आये। उन्होंने सीता का रूप देखना चाहा तो सीता नारद को देखकर डर गयी। इससे नारद ने जनक को कराारा उत्तर देना चाहा। वह रथनुपुर के विद्याधर राजा प्रभामंडल के पास गये और सीता के चित्र को उसे दिखाया। प्रभामंडल चित्र को देखते ही उस पर आसक्त हो गया। विवाह के लिये जनक के सामने प्रस्ताव रखा गया। स्वयंवर रचने का निर्णय लिया गया। सीता का स्वयंवर हुआ और राम के साथ सीता का विवाह हो गया। विवाह के अवसर पर जो मिष्ठान्न बने कवि ने उनका बहुत सुन्दर वर्णन किया है। स्वयंवर

के अवसर पर जब राम ने धनुष खींचा तो एक मेघ के समान गर्जना हुई, एक भूचाल सा आया। देवताओं ने आकाश से जय जयकार किया। इसी समय भरत का लोक सुन्दरी से विवाह हुआ। दशरथ, राम आदि परिवार के सभी सदस्य जब अयोध्या लौट आये तो सबने जिन पूजा की और गन्धोदक को सिर पर चढा लिया।

उधर भामण्डल को सीता से विवाह करने की प्रबल इच्छा हुई लेकिन जब उसने सीता के विवाह की बात सुनी तो अपनी सेना लेकर विदेह देश की ओर चला। वहां जाने पर भामण्डल को जाति स्मरण हो गया। वह सीता की याद में मूर्च्छित हो गया। इधर सीताजी को भी अपने भाई की याद आने लगी। दशरथ परिवार सहित मुनि के पास गये और भामंडल के बिछड़ने का कारण पूछा। विस्तृत वृतान्त जानकर उन्हें वैराग्य हो गया। वे चिन्तन करने लगे

शुभ अशुभ का भाव ए, देखो समभि विचार।
सुपना का सा सुख ए, जात न लागैं बार ॥२११२॥

दशरथ ने राम को राज्य देने का निश्चय किया। इतने में ही कैकेयी ने राजसभा में आकर भरत को राज्य देने का वर मांग लिया। कैकयी की बात सुनकर दशरथ बहुत दुःखी हुए लेकिन कोई उपाय नहीं था। भरत ने प्रारम्भ में राज्य लेने का और विरोध किया लेकिन राम स्वेच्छा से राज्य को त्याग कर सीता एवं लक्ष्मण के साथ वन की ओर चले गये और अयोध्या में भरत राज्य करने लगे। दशरथ ने वैराग्य धारण कर लिया।

राम का वन गमन—

राम अपने भाई एवं पत्नी सहित सर्वप्रथम उज्जयिनी पहुंचे। वहां सिंहोदर राजा राज्य करता था। लक्ष्मण ने सहज ही उस पर विजय प्राप्त करली और वे तीनों आगे बढ़े। एक बार सीता की प्यास बुझाने के लिए गए हुए लक्ष्मण को विद्याधर राजा मिला। उसने तीनों का बहुत सम्मान किया। आगे चलकर उन्होंने रुद्रभूत राजा से बालखिल्य को छुड़वाया। वे सब कूबडपुर आये। वहां सिंहोदर एवं वज्रकरण राजा भी मिल गये। वहां से तीनों आगे बढ़े। मार्ग में एक विप्र के घर पानी पिया। लेकिन विप्र ने बहुत क्रोध किया। लक्ष्मण उसे मारने दौड़े लेकिन राम ने उन्हें शान्त कर दिया। फिर तीनों ने एक बस्ती में जाकर मन्दिर में विश्राम किया। मन्दिर का देवता राम से बहुत प्रसन्न हुआ। इनके लिये उसने मायामयी नगरी की रचना की। तीनों ने प्रथम चातुर्मास वहीं व्यतीत किया।

चातुर्मास के पश्चात् वे विजयवन में गये। वहां के राजा पृथ्वीधर की पुत्री वनमाला लक्ष्मण पर आसक्त हो गयी और लक्ष्मण के नहीं मिलने पर अपघात करने लगी। लक्ष्मण ने प्रकट होकर उसे बहुत समझाया और अन्त में पत्नी के रूप

में उसे स्वीकार कर लिया । इसी बीच अनन्तवीर्य राजा ने अयोध्या पर आक्रमण कर दिया । भरत की रक्षा के लिए पृथ्वीधर आदि राजा आ गये । दोनों में भयानक युद्ध हुआ । युद्ध के पश्चात् अनन्तवीर्य ने वैराग्य धारण कर लिया और तपस्या करने लगा ।

वहां से सुलोचना नगर के वन में गये । क्षेमांजलपुर में विश्राम किया । यहां जितपद्मा पर लक्ष्मण ने विजय प्राप्त की । उसके साथ विवाह कर लिया । उसे वहीं छोड़कर वे वंसस्थल नगर पहुंचे । वहां के वन में चार अजगर देवता के रूप में थे । इसी वन में देसभूषण कुलभूषण मुनि पर आये उपसर्ग को दूर किया । उन्हें वहीं कैवल्य हो गया । फिर वे रामगिरि पहुंचे । यहां दो चारण ऋद्धि धारी मासोपवासी मुनियों को आहार दिया । मार्ग और भी मुनियों के उपसर्ग दूर किये । मुनियों देख कर वृक्ष की डाल पर बैठे हुये गृद्ध पक्षी को पूर्व भव का ज्ञान हो गया । उसने व्रत धारण कर लिया ।

राम लक्ष्मण आगे चले । दंडक वन में उन्होंने रहने का निश्चय किया । दंडक वन की विशालता एवं सुन्दरता का कवि ने अच्छा वर्णन किया है । इसी वन में खरदूषण का पुत्र संबुक सूरजहास खड्ग प्राप्ति के लिए घोर साधना कर रहा था । लक्ष्मण को खड्ग की गन्ध आने पर वह भी वहां चला गया । लक्ष्मण को सूरजहास सहज ही प्राप्त हो गया । अब उसने सूरजहास के सामर्थ्य की परीक्षा लेना चाहा तो संबुक का सर कट गया जो १२ वर्ष से उसको प्राप्त करने के लिए तपस्या कर रहा था । वहीं पर लक्ष्मण को देवोपनीत वस्त्रों की प्राप्ति हुई । उधर खरदूषण की पत्नी एवं संबुक की माता चन्द्रनखा घोर विलाप करती हुई लक्ष्मण के पास आयी । पहले उसने लक्ष्मण से विवाह करने का प्रस्ताव रखा, लेकिन उसमें सफलता नहीं मिलने के कारण वह खरदूषण के पास चली गयी ।

संबुक के मारे जाने से खरदूषण को बहुत दुःख हुआ । उसने राम लक्ष्मण से युद्ध करना चाहा लेकिन अपने ही मंत्रियों द्वारा युद्ध की सलाह नहीं देने के कारण वह रावण के पास गया । रावण ने सीता का सौन्दर्य देखकर उसे उठा लाने की ठान ली । करणगुप्ति विद्या द्वारा उपाय बतलाने पर रावण ने बाण द्वारा अंधकार कर दिया । शंखनाद किया जिसको सुनकर राम सीता को अकेली छोड़ कर लक्ष्मण की सहायतार्थ चले गये । इसी बीच रावण ने सीता का हरण कर लिया । और उसे पुष्पक विमान में बिठा कर लंका ले गया । सीता को जटायु पक्षी ने बचाने का प्रयास किया लेकिन रावण ने पक्षी के पंख काट कर उसे जमीन पर गिरा दिया । सीता का हृदय विदारक विलाप सुनकर रावण को भी दुःख हुआ । उसने निश्चय किया कि जब तक सीता उसे स्वयं नहीं चाहेगी वह उसका स्पर्श नहीं करेगा । उधर

लक्ष्मण ने खरदूषण को युद्ध में जीत लिया और सूरजहास से उसका सिर काट दिया।

सीता हरण के कारण राम अत्यधिक विलाप करने लगे। लक्ष्मण भी रोने लगे। विद्याधरों के राजा रत्नजटी को सीता की तलाश करने भेजा। वह रावण के पास गया। उसे भला बुरा कहा। लेकिन रावण ने बाण मारा जिससे वह समुद्र में जा गिरा। णमोकार मंत्र के स्मरण से वह बाहर निकल आया। सीता को अशोक वाटिका में रखा गया। रावण ने सीता को मनाने का बहुत प्रयास किया। रावण की दूतियां उसके पास पहुंची लेकिन सब व्यर्थ गया। रावण के मंत्री मण्डल ने सब परिस्थितियों पर विचार किया लेकिन वे निर्णय पर नहीं पहुंच सके।

सर्वप्रथम राम से किष्कंध नगर के राजा सुग्रीव आकर मिला। सुग्रीव का राज्य चला गया था। राम ने उसको वापिस दिलाने का आश्वासन दिया लेकिन साथ में सीता को ढूंढ कर लाने की भी बात कही। सुग्रीव ने सात दिन का वचन दिया। राम ने तत्काल सेना एकत्रित करके विट सुग्रीव पर आक्रमण कर दिया और उसे पराजित करके सुग्रीव को वापिस राजा बना दिया। राज्य प्राप्ति की खुशी में सुग्रीव ने राम को कन्यायें भेंट की जो सब कलाओं में निपुण थी।

चारों ओर सीता की खोज होने लगी। सुग्रीव विद्याधर रत्नजटी से मिले और उसे राम के पास ले आये। रत्नजटी ने रावण द्वारा सीता का हरण की बात कही तथा उसकी शक्ति, सेना एवं विद्यासिद्धि के सम्बन्ध में बतलाया तथा कहा कि रावण को जीतना आसान नहीं है इसलिये वह दूसरा विवाह कर लेवें। जांबुनद मंत्री ने भी इसका समर्थन किया। उसने कहा कि रावण ने तीन खण्ड पृथ्वी जीत लेने के पश्चात् अपनी मृत्यु के सम्बन्ध में जानना चाहा। उस समय भविष्यवाणी हुई थी कि जो भी कोटिशिला को उठा लेगा उसी के हाथ से रावण की मृत्यु होगी। तत्काल राम लक्ष्मण सुग्रीव कोटिशिला उठाने चले। लक्ष्मण ने जाकर कोटिशिला को उठा लिया इससे सब यह जान गये कि लक्ष्मण नारायण है। प्रति नारायण रावण है जिसकी मृत्यु नारायण के हाथ से होगी। इससे राम लक्ष्मण के पुरुषार्थ की चारों ओर धाक जम गयी।

हनुमान को राम लक्ष्मण के बारे में एवं सुग्रीव को राज्य की प्राप्ति के बारे में समाचार मिले तो वह भी राम की शरण में चला आया। हनुमान ने राम की वन्दना की और राम ने भी उसे गले लगा लिया।

चरण कमल बन्दे हनुमंत, रामचन्द्र भये कृपावन्त।
कंठ लगाई सन्मुख बैठाई, आदरि मनोहारी बहुभाय ।।२६६१–२।।

हनुमान ने सीता को लाने का वचन दिया और शीघ्र वहां से चल दिया।

उसने पहिले अपने ननिहाल के राजा महेन्द्र को आतंकित किया और अपनी सामर्थ्य का परिचय दिया। आगे चल कर दो मुनियों की अग्नि बुझा कर रक्षा की। हनुमान आगे चले। लंका सुन्दरी ने जब हनुमान को देखा तो लंका सुन्दरी उस पर मोहित हो गयी। उसने विवाह सूत्र में बंधना चाहा। हनुमान लंका के लिए आगे बढ़े और लंका में पहुंच गये। वहां सर्वप्रथम हनुमान ने विभीषण से भेंट की और सारी परिस्थिति समझायी। विभीषण ने रावण को समझाने का प्रयास किया लेकिन रावण क्रोधित होकर निम्न बात कही—

> कहा करेगा तपसी राम, मोसुं जीत सके संग्राम।
> जीती है मैं सगली मही, मोकूं किस का ही डर नहीं ॥३०५२॥

हनुमान वानर का रूप धारण कर सीता के पास पहुंच गया और अपने आपको राम का सेवक के रूप में प्रगट किया। सीता ने हनुमान से कितने ही प्रश्न किये। उनका सही उत्तर पाकर सीता को हनुमान पर विश्वास हो गया। इसके पश्चात् मन्दोदरी ने हनुमान को रावण की शक्ति के बारे में बतलाया। राम के तापसी जीवन के बारे में भी कहा लेकिन हनुमान ने सबको निरुत्तर कर दिया। जब उसने मन्दोदरी की एक भी बात नहीं मानी तो उसने अपनी अन्य रानियों के साथ बुरी हालत करली और रावण के पास जाकर शिकायत की। रावण ने अपने सैनिकों से हनुमान को पकड़कर लाने के लिए कहा लेकिन कोई भी हनुमान को नहीं पकड़ सका। अन्त में इन्द्रजीत हनुमान को नागपाश में बांध लाया और रावण के समक्ष उपस्थित किया। रावण को हनुमान द्वारा किये गये सभी कार्यों का ब्यौरा दिया। रावण ने क्रोधित होकर हनुमान को बहुत फटकारा और उसकी गरदन काटने की बात कही लेकिन उसकी एक नहीं चली। हनुमान ने मायावी विद्या के द्वारा सोने की लंका को भस्म कर दिया और फिर किष्किंधपुर नगर में वापिस आ गया।

हनुमान ने आकर राम से पूरी कहानी कही। सीता की चिन्ता, रात दिन राम का स्मरण आदि सभी बातें सुनायी। राम को हनुमान की बात सुनकर गहरी चिन्ता हुई। राम के साथी सभी राजाओं ने युद्ध में रावण को जीतने की बात कही। युद्ध की तैयारी होने लगी। सब विद्याधर राजा एकत्रित होने लगे। अन्त में आसोज सुदी पंचमी के दिन से सेना ने प्रयाण किया और हंस द्वीप जाकर विश्राम किया।

उधर रावण अपनी शक्ति में अन्धा बना हुआ था। उसे अपनी विद्याओं पर गर्व था। राम लक्ष्मण को वह भूमिगोचरी कहता था। सोलह हजार मुकुटबद्ध राजा उसकी सेवा में तत्पर रहते थे। लेकिन योद्धाओं ने रावण को सीता को लौटाने

के लिये समझाया। उसने किसी की नहीं सुनी। विभीषण ने इन्द्रजीत को राम की ताकत के बारे में सावधान किया लेकिन रावण समझने की बजाय उसे मारने को दौड़ा और उसे लंका से निकाल दिया। विभीषण राम की सेवा में चला गया यह राम की पहिली जीत थी। राम ने उसे लंकाधिपति कह कर सम्मान दिया। धीरे-धीरे राम की सेना लंका तक पहुंच गयी।

राम की सेना में अनेक सेनापति थे लेकिन सभी लक्ष्मण राम के साथी थे। दोनों की सेना एक दूसरे के सामने खड़ी हो गयी। युद्ध प्रारम्भ हो गया और प्रथम दिन की लड़ाई में राम के सेनापति नल नील के हाथों से रावण के हस्त प्रहस्त ये दो सेनापति मारे गये। दूसरे दिन फिर घमासान युद्ध हुआ। गोलों एवं गोली की वर्षा होने लगी। दोनों ही ओर के सैनिक मारे गये। तीसरे दिन फिर युद्ध प्रारम्भ हुआ। सुग्रीव आगे बढ़ा लेकिन हनुमान ने उसे रोक कर स्वयं जूझने लगा। दूसरी ओर रावण बढ़ने लगा तो उसके योद्धाओं नें उसे रोक दिया और स्वयं जोर शोर से लड़ने लगे। कुम्भकर्ण ने मूर्छा बाण छोड़ा लेकिन जब नल और नील गदा मारने लगे तो वह वहां से चला गया। इन्द्रजीत त्रैलोकसार हाथी पर चढ़कर लड़ने। मेघनाद और जंबूमाली, कुम्भकरण और हनुमान, सुग्रीव और इन्द्रजीत, मेघवाहन और भामंडल, बज्रकरण और विराधित परस्पर में भिड़ गये। गोलियां चलने लगी। बरछी, गदा, चक्र जैसे शास्त्र काम में लिये गये। हाथी से हाथी, घोड़ा से घोड़ा और पैदल से पैदल लड़ने लगे। इन्द्रजीत ने मेघ बाण छोड़ा उसके उत्तर में सुग्रीव ने बाण छोड़ा। फिर इन्द्रजीत ने अंधकार बाण छोड़ा। नागपाश की विद्या को याद कर सुग्रीव को नागपाश में बांध लिया। भामंडल को भी नागपाश से मूर्छित कर दिया। कुम्भकरण ने हनुमान को पकड़ लिया तथा दांतों से चबाने लगा। दोनों वीर मुर्दे के समान पड़ गये। तभी विभीषण ने आकर राम को दोनों के बारे में बतलाया और तीनों की लाश को युद्ध भूमि में जाकर उठा ले आये।

राम ने बड़े धैर्य से विभीषण को सुना। राम को देशभूषण-कुलभूषण केवली ने ऐसे समय देवों को स्मरण करने के लिए कहा था। राम ने वही किया। तत्काल देव प्रगट हुए और राम को कितनी ही प्रकार की विद्याएं दी। राम और लक्ष्मण दोनों ने देव वस्त्र पहिन लिए। चन्द्रहास तलवार बांध ली और दूसरे अस्त्र शस्त्र सम्भाल लिये। आकाश गामिनी विद्या को स्मरण किया। रथ के स्पर्श से जो हवा चली उससे नागपाश बंधन टूट गया, अंधकार दूर हो गया तथा जो लोग मूर्छित हो गये थे वे सब जिन्दा हो गये। फिर युद्ध होने लगा। रावण और विभीषण परस्पर में लड़ने लगे। बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। रावण ने खेंच कर धनुष बाण चलाया जो विभीषण के कंठ पर लगा। धनुष टूट गया लेकिन विभीषण बच गया।

उधर राम और कुम्भकरण में, लक्ष्मण और इन्द्रजीत में युद्ध होने लगा। लक्ष्मण ने नागपाशनी विद्या से इन्द्रजीत को मूच्छित करके पकड़ लिया। इसी तरह राम ने कुम्भकरण को मूच्छित करके विराधित उसे उठा ले गया।

दूसरी ओर रावण और लक्ष्मण में युद्ध होने लगा। रावण ने लक्ष्मण को शक्तिबाण से मूच्छित कर दिया। राम रावण युद्ध हुआ लेकिन रावण बच के निकल गया। वह लंका में चला गया। उसे इस बात की प्रसन्नता थी कि उसने लक्ष्मण को मार दिया। लक्ष्मण को मूच्छित देख कर राम विलाप करने लगे। उधर मन्दोदरी कुम्भकर्ण एवं इन्द्रजीत के मरने के कारण तथा सीता लक्ष्मण के मूच्छित होने के कारण रोने लगी। उसी समय भामण्डल चन्द्रप्रति नामक वैद्य को लाया जो शक्ति बाण की मूर्च्छा को दूर करने का उपाय जानता था। उसने कहा कि विशल्या के स्नान का यदि जल मिल जावे तो लक्ष्मण की मूर्च्छा दूर हो सकती है। हनुमान एवं अंगद को तत्काल अयोध्या भेजा गया। वहां जाकर भरत की सहायता से विशल्या को साथ लिया। विशल्या लंका आयी और मूच्छित लक्ष्मण के शक्ति बाण के प्रभाव को दूर किया। लक्ष्मण को होश में आने पर मंत्रियों ने रावण को पुनः समझाया लेकिन उसने किसी की बात नहीं सुनी। रावण ने अपना दूत राम के पास भेजा तथा इन्द्रजीत एवं कुम्भकरण को छोड़ने के लिए कहा। राम ने सीता को छोड़ने की बात दोहरायी। दूत ने सीता को भूल जाने को कहा इस पर राम ने दूत को धक्का देकर बाहर निकाल दिया।

रावण पूरा व्रती था। अष्टाह्निका में युद्ध बन्द हो गया। वह विद्या सिद्धि के लिए चला गया और वह ध्यानारूढ़ हो गया। रावण के सामने जब विद्याएं प्रकट हुईं तो उनसे राम लक्ष्मण को बांधने के लिए कहा लेकिन विद्याओं ने अपनी असमर्थता प्रगट कर दी। रावण रणवास में वापिस आ गया। उसने समझा कि उसे विद्या सिद्ध हो गयी हैं। मंत्रियों ने रावण से सीता को फिर छोड़ने के लिए समझाया लेकिन उसने एक भी नहीं सुनी।

रावण अपनी पूरी सेना के साथ फिर युद्ध के लिये उतर पड़ा। लक्ष्मण रावण में युद्ध होने लगा। स्वर्ग के देवता गण भी दोनों के युद्ध देखने के लिए आ गये। रावण का एक सिर टूटता लेकिन उसकी जगह दूसरा लग जाता। जैसे-जैसे लक्ष्मण उन्हें काटता वे दूने हो जाते। आखिर रावण ने लक्ष्मण पर चक्र चला दिया। चक्र की प्रभा से चारों ओर प्रकाश हो गया। सभी योद्धा चकित रह गये लेकिन वह चक्र लक्ष्मण के हाथ आ गया। फिर लक्ष्मण ने उसी चक्र को रावण के ऊपर चला दिया जिससे रावण के हृदय के टुकड़े-टुकड़े हो गये और उसके प्राणों का अन्त हो गया।

विभीषण रावण के पास आकर बहुत रोया। वह कितनी ही बार मूच्छित भी हो गया। राम ने वैद्य को बुलाकर उसका उपचार करवाया। रानियां विलाप करने लगी। तथा छाती पीट-पीट कर रोने लगी। रावण का विभीषण ने दाह संस्कार किया। राम ने कुम्भकरण एवं इन्द्रजीत को छोड़ दिया जिन्होंने वैराग्य धारण कर लिया। उसके पश्चात् राम ने सेना के साथ लंका में प्रवेश किया जहां विभीषण ने उनका जोरदार स्वागत किया। राम सर्वप्रथम सीता के द्वार पर गये जहां सीता अपने दिन काट रही थी। वह दुर्बल देह हो गयी थी। मलिन केश थे। राम से बिछोह के पश्चात् उसने सब कुछ छोड़ दिया था। सीता ने आंखें खोली और राम के हाथ जोड़ कर दर्शन किये। लक्ष्मण ने सीता के चरण छुए। भामण्डल भाई ने सीता से कुशल क्षेम पूछी।

लंका की शोभा निराली थी। वहां कितने ही जिन मन्दिर एवं सहस्रकूट चैत्यालय थे। शांतिनाथ स्वामी की जिन प्रतिमा विराजमान थी। मन्दिरों के सभी ने दर्शन किये। पूजा विधान किया। सभी राजाओं ने राम लक्ष्मण को अपना राजा स्वीकार किया। इसी समय नारद ऋषि का वहां आगमन हुआ। वे इससे पूर्व अयोध्या जाकर आये थे। नारद ऋषि ने राम से अपराजिता के दुःख एवं अयोध्या में उनकी प्रतीक्षा के समाचार सुने तो राम ने शीघ्र ही अयोध्या लौटने का निश्चय कर लिया। पहिले उन्होंने अयोध्या में अपना दूत भेजा जिससे लंका विजय एवं अयोध्या आगमन का सबको समाचार मालूम हो सके। राम ने लंका का राज्य विभीषण को देकर आप सब अयोध्या के लिए रवाना हो गये। वे सभी पुष्पक विमान द्वारा चले। मार्ग में राम ने पुष्पक विमान से वे सब स्थान दिखलाये जहां वे ठहरे थे। अयोध्या में पहुँचने पर उनका जोरदार स्वागत हुआ। भरत एवं शत्रुघ्न ने दोनों के पैर छुए। चारों ओर आनन्द छा गया।

कुछ समय पश्चात् भरत को जगत् से वैराग्य हो गया। परिवार के सभी सदस्यों ने उन्हें बहुत समझाया लेकिन उन्होंने जगत् की नश्वरता की ओर सबका ध्यान आकृष्ट किया। इतने में एक उन्मत्त हाथी ने भरत के पास आकर और अपनी सूंड उठाकर उन्हें नमस्कार किया। हाथी को जाति स्मरण हो गया था। भरत ए हाथी पूर्वभव में साथी थे। हाथी पर चढ़कर भरत ने वैराग्य धारण कर लिया उ हाथी भी भोजन पान छोड़कर खड़े-खड़े तपस्या करने लगा इतने में कुलभूष देशभूषण मुनियों का वहां आगमन हुआ। लक्ष्मण ने हाथी के पूर्व भव के बारे म उनसे जाना। इससे सभी को जगत् की नश्वरता के बारे में और अधिक विश्वास हुआ।

राम एवं लक्ष्मण का विधिपूर्वक राज्याभिषेक सम्पन्न हुआ। राम ने सब

राजाओं को अलग-अलग देश दिया। सुग्रीव को किष्किंध नगर, नल नील को अति नगर, विभीषण को लंका राज्य, हनुमान को श्रीपुर का राज्य, रत्नजटी को किन्नर नगर एवं भावमंडल को रथनुपुर देश का राज्य दे दिया। शत्रुघ्न ने मथुरा का राज्य मांगा लेकिन राम ने कहा कि मथुरा पर रावण का जामाता मधु राज्य कर रहा है जो बहुत बलशाली है। लेकिन शत्रुघ्न नहीं माना। उसने मथुरा पर आक्रमण कर दिया। मधु ने बहुत भयंकर युद्ध किया। उसे युद्ध के मध्य ही वैराग्य हो गया। वह आत्मचिंतन करने लगा तभी शत्रुघ्न ने उसकी गर्दन उड़ा दी लेकिन जब उसे मधु के वैराग्य का पता चला तो उसने हाथी से उतर कर मधु को नमस्कार किया। मधु मर कर पांचवें स्वर्ग में गया।

मधु के मरने के दुःख से उसके व्यंतर मित्रों ने शत्रुघ्न पर आक्रमण कर दिया। धरणेन्द्र ने उसे बहुत समझाया लेकिन उसने किसी की नहीं मानी। सर्वप्रथम उसने प्रजा को दुःख देना आरम्भ किया। शत्रुघ्न मथुरा छोड़कर अयोध्या लौट आया। कुछ समय पश्चात् वहां चारण ऋद्धिधारी मुनियों का आगमन हुआ। जिनके कारण नगर में शान्ति हो गयी। शत्रुघ्न ने वहीं राम लक्ष्मण के साथ आकर मुनि को आहार दिया। चारों ओर अपूर्व शान्ति एवं सुख चैन व्याप्त हो गया।

सीता ने एक रात्रि को दो गर्जन करते हुये सिंह, समुद्र एवं देव विमान देखे राम से स्वप्न फल पूछने पर उन्होंने बतलाया कि उसके दो यशस्वी पुत्र होंगे। सीता की प्रत्येक इच्छा पूरी की जाने लगी। एक दिन सीता का दाहिना नेत्र फड़कने लगा। उससे सीता को बड़ी चिन्ता होने लगी। एक दिन नगर के व्यक्ति मिलकर राम के पास आये। वे कहने लगे कि हमारी पत्नियां बिना हमारी आज्ञा के इधर उधर जाने लगी हैं। यदि हम कहते हैं तो वे सीताजी का उदाहरण देती हैं जो रावण के घर रहकर आयी है। यह सुनकर राम को बहुत दुःख हुआ। उन्होंने तत्काल लक्ष्मण को बुलाया और पूरी बात कही।

राम ने कृतांतवक्र सेनापति को बुलाया और सीता को वन में छोड़ने का आदेश दिया। लक्ष्मण ने इसका घोर विरोध किया। लेकिन राम ने किसी की नहीं सुनी। जब सीता को वास्तविकता का पता चला तो वह पछाड़ खाकर रोने लगी। उसने रोते हुए राम को निम्न सन्देश देने के लिये कहा—

परिजा नैं मे दुखि मत करो, दया समकित चित्त में धरो।

पूजा दान करो दिन राति, तुमारे समरण मैं इह भांति ।।४५८६।।

सीता को अपने स्वयं पर बहुत दुख होने लगा। वह सोचने लगी कि किन पापों के कारण उसे इतना दुःख उठाना पड़ रहा है। कुछ ही समय पश्चात् उस वन में पुंडरीक नरेश वज्रजंघ का हाथी के कारण वहां आना हुआ। उसने सीता का

विलाप सुना और उसके पास आकर जानकारी प्राप्त की। वज्रजंघ के अनुनय विनय करने पर सीता ने अपना परिचय दिया तथा उसे बहिन कहकर घर चलने को कहा। सीता वज्रजंघ के साथ उसके घर चली गयी जहां पत्नि ने उसके चरण स्पर्श करके अपने भाग्य को सराहा। इधर कृतांतवक्र ने बहुत विलाप किया और राम के पास आकर सब कुछ निवेदन किया। राम लक्ष्मण दोनों ही सीता के वियोग में दुःखी रहने लगे।

सीता ने श्रावण सुदी पूर्णिमा को युगल पुत्रों को जन्म दिया। चारों ओर प्रसन्नता छा गयी। वज्रजंघ ने खूब दान दिया। दोनों शिशु से बालक एवं बालक से बड़े हुए। सीता भी अपने बच्चों को पालने में सब दुःख भुला बैठी। शिशु घुटनों के बल चलने लगे। कुछ बड़े होकर गुरु के पास पढ़ने लगे। सभी शास्त्र पढ़े। सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र के मर्म को जाना। धीरे-धीरे दोनों भाइयों ने यौवनावस्था में प्रवेश किया। एक दिन वज्रजंघ ने कुश के लिए पृथ्वीधर से कन्या मांगी। उसके मना करने पर वज्रजंघ ने पृथ्वीधर पर आक्रमण कर दिया। लव कुश भी अपनी माता से आज्ञा लेकर युद्ध के लिए चले गये। युद्ध में उन्हें पूर्ण विजय मिली।

राजा वज्रजंघ की राज्य सभा में नारद का आगमन हुआ। नारद से उनने तीनों लोकों की बात सुनी। इसी बीच नारद ने सारी रामायण कह सुनायी। सीता का अकारण निष्कासन सुनकर लव कुश ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की। उन दोनों भाइयों ने अपनी माता सीता से फिर सारी जानकारी प्राप्त की। लव कुश ने अयोध्या पर अपनी सेना लेकर आक्रमण कर दिया। आस-पास के गांवों को लूटने लगे। जब राम ने इनके बारे में सुना तो उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। राम ने तत्काल अपने सेनापतियों को बुलाया। दोनों में भयंकर युद्ध होने लगा। इधर नारद के कहने से भामण्डल सीता से जाकर मिला। और पूरी कहानी सुनी। फिर दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध हुआ। लक्ष्मण ने चक्र चलाया लेकिन वह भी लव कुश के परिक्रमा देकर वापिस आ गया। इतने में नारद ऋषि ने लव कुश का परिचय राम लक्ष्मण को दिया। दोनों भाइयों ने सीता के सतीत्व की प्रशंसा की और अपने द्वारा किये गये सीता निष्कासन की निन्दा की। जब राम लक्ष्मण लव कुश से मिले तो चारों ओर प्रसन्नता छा गयी।

> पिता पुत्र सौं जब मिले, हुआ अधिक उल्लास।
> चैन भयो सब नगर में, पूजी मन की आस ॥४८३८॥

राम ने सीता को लाने के लिए नल नील, एवं रतनजटी को भेजा। सीता उनके साथ अयोध्या आ गयी। सबने उठ कर सीता का स्वागत किया। लेकिन राम ने

सीता को निष्कासन का कारण बताया। सीता ने अपने सतीत्व के बारे में बात दुहरायी और किसी भी परीक्षा में समर्पित करने की बात कही। सबने सीता के सतीत्व की प्रशंसा की और उसे निष्कलंक बताया। लेकिन राम के आदेश से पृथ्वी खोद कर अग्नि कुंड बनाया गया। भयंकर अग्नि जलायी गयी जिसको देख कर स्वयं राम भी दुःखी हो गये। सीता से अग्नि कुण्ड में कूदने के लिए कहा गया। सीता पंच परमेष्ठी का स्मरण करके अग्निकुण्ड में कूद पड़ी। लोगों में हाहाकार छा गया। लेकिन जब अग्नि कुण्ड के स्थान पर सरोवर एवं उसमें रत्न सिंहासन पर बैठी हुई सीता को देखा तो सब आनन्द विभोर हो गये। देवताओं ने जय-जयकार की तथा आकाश से पुष्प वर्षा होने लगी। सीता को नया जीवन मिला। राम भी सीता की प्रशंसा करने लगे तथा वापिस राजमहल में लौटने की प्रार्थना करने लगे।

राम के आग्रह को सीता ने स्वीकार नहीं किया तथा जगत् की असारता एवं राज्य वैभव के सुखों को धिक्कार दिया तथा पृथ्वीमती आर्यिका से आर्यिका दीक्षा ले ली। इसी अवसर पर मुनि सकल भूषण ने नरकों के दुःखों का, द्वीप एवं समुद्रों का, छह द्रव्य एवं सात तत्वों का विस्तार से वर्णन किया। इस अवसर पर राम लक्ष्मण एवं सीता के जीवन में इतने संकट, युद्ध एवं वियोग किन-किन पूर्व कृत कर्मों के कारण हुए यह जानना चाहा। इसका मुनि ने विस्तार से प्रत्येक के पूर्व भव का कथन किया।

स्वयं राम को जगत् से वैराग्य हो गया। उन्होंने अन्त मे कैवल्य प्राप्त कर मोक्ष लक्ष्मी को प्राप्त किया। इस प्रकार पद्मपुराण महाग्रंथ पूर्ण हुआ। जो इस पद्मपुराण का स्वाध्याय करेगा उसे तीन लोक का सुख स्वयं प्राप्त हो जावेगा।

पदमपुराण कु जे पढ़े, बाच सुणावे और।
तिहुं लोक का सुख लहै, पावै निरभय ठौर ।।५७४६।।

सभाचन्द्र के समकालीन कवि

मुनि सभाचन्द का समय हिन्दी काव्य रचना का स्वर्णयुग था जबकि उस समय चारों ओर हिन्दी रचनायें लिखी जा रही थी। हिन्दी ग्रन्थों का पठन पाठन बढ़ रहा था तथा संस्कृत प्राकृत के ग्रन्थों का हिन्दीकरण हो रहा था। कवि के समकालीन कवियों में आनन्दघन, जगजीवन, पाण्डे हेमराज, पं. मनोहरदास, लालचन्द लब्धोदय, पं. हीरानन्द, पं. रायचन्द (अपरनाम बालक), जिनहर्ष, अचलकीर्ति, जोधराज गोदीका आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन कवियों में पं० रायचन्द का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिन्होंने संवत् १७१३ में सीता चरित्र नामक एक स्वतन्त्र काव्य की रचना की थी। कवि का दूसरा नाम "बालक" भी था। इस काव्य में ३६०० पद्य हैं। चरित्र की कितनी ही प्रतियां जयपुर एवं देहली के

शास्त्र भण्डारों में उपलब्ध होती है। चरित्र का मूल आधार आचार्य रविषेण का पद्मपुराण है जिसका स्वयं कवि ने निम्न शब्दों में उल्लेख किया।

कीयो ग्रंथ रविसेण नैं, रघुपुराण जिय आंण।
यहै अरथ इण में कह्यौ, रायचन्द उर म्राण॥

राम सीता के जीवन पर आधारित एक और काव्य मिलता है जिसके कवि भट्टारक महीचन्द्र के शिष्य ब्रह्म जयसागर थे। इन्होंने "सीता हरण" नामक काव्य के माध्यम से सीता के जीवन पर अच्छा काव्य लिखा है। सीता हरण की पाण्डुलिपि में ११४ पत्र हैं तथा जिसका रचना काल संवत् १७३२ है। प्रस्तुत पाण्डुलिपि आमेर शास्त्र भंडार जयपुर में संग्रहीत है। कवि ने सीता के व्यक्तित्व एवं जीवन पर अच्छा प्रकाश डाला है। पूरा काव्य ६ अधिकारों में विभक्त है।

गोर महीचन्द्र सीष जयसागर, रच्यो सीता हरण नो रास जी।
नर नारी जे भणे छे सुणे छे, तस घर जय जयकार जी॥
संवत सतरह बत्तीसा वरसे, वैसाख सुदी तीज सार जी।
बुधवारे परिपूर्ण म रचयूं सूर समय रयवार जी॥

इस प्रकार पचासों कवियों ने राम के जीवन पर अनेक विभिन्न संज्ञक रचनायें लिखी हैं जो हिन्दी की अमूल्य कृतियां हैं।

24-10-84

डा. कस्तूरचन्द कासलीवाल

विषय-सूची

क्रमांक

१. श्री महावीर ग्रन्थ अकादमी—प्रगति परिचय

२. संरक्षक की कलम से

३. अध्यक्ष की ओर से

४. सम्पादकीय

५. प्रस्तावना

रामकथा का उद्भव एवं विकास, जैन धर्म में राम का स्थान, ग्रन्थकर्ता, रचना स्थान, राम कथा के विभिन्न रूप, जैन कथा के दो रूप, हिन्दी में राम काव्य, पद्मपुराण संरचना, जीवन परिचय, छन्दों का प्रयोग, भाषा, रस एवं अलंकार, पुराण का समीक्षात्मक अध्ययन, राम, लक्ष्मण, सीता, रावण, हनुमान, पद्मपुराण का सामाजिक जीवन, विवाह वर्णन, जीमनवार, स्वप्न दर्शन एवं स्वप्न फल, शकुन एवं अपशकुन, युद्ध वर्णन, नगरों का वर्णन, महावीर वाणी, पराधीनता, सुभाषित एवं सूक्तियां, पाण्डुलिपि परिचय, पद्मपुराण का सार—समकालीन कवि ।

प्रथम विधानक—तीर्थङ्करों का स्तवन, जिनवाणी का स्वरूप २ राम नाम का महात्म्य २ आचार्य रविषेण का उल्लेख ३ रचनाकाल ३ कवि का नाम ३ राजगृही नगरी की सुन्दरता ३ व्यापार उद्योग ३ कुण्डलपुर नगर ५ सिद्धार्थ एवं त्रिशला रानी ५ माता द्वारा सोलह स्वप्न देखना ५ स्वप्नों का फल ६ माता की सेवा ६ महावीर जन्म ७ महावीर द्वारा वैराग्य ८ कैवल्य ९ समवसरण ९ महावीर वाणी १० दान का फल ११ श्रेणिक राजा द्वारा स्वप्न १२ राजसभा १२ समवसरण की ओर १३ रघुवंश कथा जानने की इच्छा १४ रामकथा का महत्व १४ भोगभूमि का वर्णन १५ चौदह कुलकर १५ नाभिराजा १६ मरुदेवी की सेवा १६ सोलह स्वप्न १६ स्वप्न फल १७ ऋषभदेव का जन्म १८ जन्मोत्सव १८ आदिनाथ

हम सरवारथसिधि तैं आय । अजितनाथ बीजो जिनराय ।।
गरभ जनम तप केवल ग्यांन । किये महोछव सुर नर आन ।।१०८।।
चक्री सगर दूसरा भया । छह् षंडि साधि राज भोगिया ।।
बाईस होंय और अवतार । परम प्रगासैंगे संसार ।।१०६।।
चक्रवर्ति हूँ हैं दस और । पाप दुष्ट मारैंगे मोडि ।।
धर्म पुन्य की रक्षा करैं । तीन काल सुमरण दिढ धरैं ।।११०।।

चौबीस तीर्थंकर

ऋषभनाथ प्रथम जिणदेव । जैन धरम प्रकास्या भेव ।।
दुजे अजितनाथ जिणराय । संभव अभिनंदन सुखदाय ।।१११।।
सुमति पदमप्रभू देव सुपास । चंद्रप्रभ मन पूरवै आस ।।
पुष्पदंत सीतल श्रेयांस । वासपूज्य सुमरो जिणहंस ।।११२।।
बंदौं विमलनाथ गुजिणंद । अनंतनाथ चउदहौं मुणिंद ।।
धरमनाथ जिणधरम महंत । शांति कुंथु श्री अरु अरिहंत ।।११३।।
मल्लिनाथ मुनिसुव्रत देव । नमि नेम की कीजे सेव ।।
पार्श्वनाथ कमठ मद हया । वर्द्धमान प्रकासी दया ।।११४।।

दूहा

बाहुबलि का बल अधिक, दूजा अमर मजसेन ।
श्रीधर दरसन भद्र मति । प्रसनचंद्र सुष सेन ।।११५।।
चंद्रवरण चंद्रकला, अगाति, मुकति सनंतकुमार ।।
श्रीवज्रराजा कनकप्रभ, मेघ वरण उनहार ।।११६।।
सांति कुंथ अरु अरह जिण. विजयराज श्रीचंद ।।
नल राजा मुलभद्र मति, हनुमान छह् वंद ।।११७।।

अडिल्ल

बलिराजा वसुदेव सेव बहुतैं करैं
प्रद्युमन रूप अपार ताहि क्यौं मन धरैं ।।
नागकुमार सुदरशन सील पाल्या घरा,
मारयौ दुद्ध सुत सील सुभव सायर तिरया ।।११८।।
चक्रवर्त्ति भयऊ भरथ देश बहु साधिया ।
जीते भूप अनेक जिनौं को बांधिया ।
धरया धरम सौं ध्यान कर्म वसु क्षयकिया ।।
केवल ज्ञान उपाय मुक्ति वासा लिया ।।११६।।

अष्टम विधानक—प्रतिगति का विवाह (१००) सुग्रीव के साथ विवाह। रावण द्वारा इन्द्र से युद्ध करने का विचार १०१ रावण द्वारा जिन पूजा १०२ रावण का सहस्त्ररश्मि से युद्ध, १०३ सतवाहन मुनि द्वारा उपदेश १०३ सहस्त्ररश्मि द्वारा मुनि दीक्षा १०४।

नवम विधानक—यज्ञ भेद की चर्चा १०५ वसु राजा १०६ नारद का आगमन १०७ नारद एवं पर्वत के मध्य चर्चा १०८ स्वस्तिमति द्वारा वसु राजा से वचन मांगना १०६ नारद वचन १०६ परवत द्वारा सन्यास ११० मारुत राजा को संबोधन ११० नारद का जन्म एवं जीवन १११ नारद का उपदेश ११२ नारद पर उपसर्ग ११३ रावण द्वारा नारद को सहायता करना ११३ ऋषभ वर्णन ११४ रावण का कनकप्रभा से विवाह ११५ भाद्रपद के व्रत ११६।

दशम विधानक—रावण की कन्या का मधु के साथ विवाह ११६ मधु का वृतान्त ११६ युद्ध वर्णन ११६ रावण द्वारा विद्या प्राप्ति १२१ रावण की विजय १२१ नलकूबड की राजा से बात १२२ इन्द्र का क्रोध १२३ रावण की सेना १२३ इन्द्र द्वारा युद्ध १२४ इन्द्र और रावण में युद्ध १२५।

११वां विधानक—सहस्रार का रावण के पास जाना १२६ इन्द्र को छोड़ने की प्रार्थना १२६ इन्द्र को छोड़ना १२७ इन्द्र की व्यथा १२८ मुनि चन्द्र का आगमन १२८ इन्द्र के पूर्व भव १२६ इन्द्र का मान भंग का कारण १३६ इन्द्र द्वारा मुनि दीक्षा १३१।

१२वां विधानक—अनन्तवीर्य मुनि को कैवल्य प्राप्ति १३१ रावण द्वारा वन्दना १३२ भगवान की वाणी १३२ लोभदत्त सेठ की कथा १३३ भद्रदत्त सेठ की कथा १३५ कुम्भकरण द्वारा धर्मोपदेश की प्रार्थना १३५ रात्रि भोजन निषेध १३६ रावण द्वारा व्रत ग्रहण १३७।

१३वां विधानक—हनुमान का जीवन १३७ अंजना के विवाह की चर्चा १३८ राजा महेन्द्र एवं राजा प्रह्लाद की भेंट १३६ पवनंजय के साथ विवाह प्रस्ताव १३६ अंजना को देखने की उत्सुकता १३६ दासी द्वारा विद्युत वेग की प्रशंसा १४० पवनंजय की निराशा १४० दंतीपुर पर चढ़ाई १४० पवनंजय अंजना विवाह १४० अंजना का दुःख १४१ रतन द्वीप राजा के साथ रावण का युद्ध १४२ राजा प्रह्लाद के पास संदेश १४३ पवनंजय द्वारा युद्ध में जाने का मानस १४३ अंजना द्वारा पवनंजय को विदाई १४३ पवनंजय द्वारा चकवा चकवी का वियोग देखना १४४ अंजना से मिलने की इच्छा १४४ अंजना पवनंजय मिलन १४४ अंजना को मुद्रिका देना १४६।

१४वां विधानक—अंजना द्वारा गर्भ धारण करना १४६ केतुमति द्वारा पूछताछ १४६ अंजना द्वारा स्पष्टीकरण १४६ अंजना को ताड़ना १४७ अंजना का निष्कासन १४७ अंजना का महेन्द्रपुरी जाना १४८ पिता द्वारा निष्कासन १४८ सब ओर से तिरस्कृत १४९ गुफा में शरण लेना १५० वन में मुनि दर्शन एवं वंदना १५० वसंतमाला द्वारा पति वियोग का कारण पूछना १५१ मुनि द्वारा समाधान १५१ कनकोदरी द्वारा जिन प्रतिमा की चोरी १५२ प्रभु जन्म की भविष्य वाणी १५३ रत्नचूल का आगमन १५३ पुत्र जन्म १५४ खेचर के प्रश्न का उत्तर १५५ खेचर का परिचय १५५ अंजना का विद्याधर नगर जाना १५५ विमान से हनुमान का गिरना १५६ ।

१५वां विधानक—पवनंजय द्वारा रावण से विदा १५६ पवनंजय का आदित्यपुर आगमन, अंजना के निष्कासन के समाचारों से दुखित होना, ससुराल जाना १५७ अंजना की तलाश १५८ पवनंजय का संदेश १५८ अंजना की चिन्ता, पवनंजय की प्राप्ति १५९ अंजना पवनंजय मिलन १६० ।

१६वां विधानक—वरुण द्वारा रावण से युद्ध १६१ हनुमान द्वारा युद्ध में जाने की इच्छा १६१ कुंभकरण द्वारा लूटमार १६२ रावण द्वारा निन्दा १६२ वरुण को पुन: राज देना १62, वानरवंशी राज वर्णन १६३ ।

१७वां विधानक—वीरकसेठ वनमाला वर्णन १६४ राजा की व्याकुलता १६५, पूर्व जन्म १६६ वीरकसेठ की तपस्या १६६ स्त्री को दु:ख देना १६७ मुनि सुव्रतनाथ का जन्म १६८ जीवन १६९ हरिवंसी राजा १७० राजा वज्रबाहु वर्णन १७१, कीर्तिधर राजा वर्णन १७२ ।

१८वां विधानक—कीर्तिधर की तपस्या १७४ राजकुमार द्वारा वैराग्य १७४ कठोर तपस्या १७६ चित्रमाला को पुत्रोत्पत्ति १७७, नघुष राजकुमार को राजा बनाना १७७ स्योदास द्वारा जीव हिंसा पर प्रतिबन्ध १७७ राजा द्वारा मांस खाने की इच्छा १७८ सिद्धसेन का राजा बनना १७८ दशरथ का राजा बनना १७९ ।

१९वां विधानक—दशरथ वर्णन १८० नारद का आगमन १८० नारद द्वारा रावण की वार्ता १८० ।

२०वां विधानक—कैकेयी वर्णन १८१ स्वयंवर रचना १८२ दशरथ द्वारा युद्ध ।

२१वां विधानक—अपराजिता द्वारा स्वप्न दर्शन १८४ सुमित्रा द्वारा स्वप्न दर्शन १८४ लक्ष्मण जन्म १८५ भरत जन्म, राम जन्म १८५ चारों भाइयों द्वारा विद्या सीखने का वर्णन ।

२२वां विधानक—विप्र द्वारा विलाप १८७, राजा द्वारा षड्यंत्र १८७, मुनि दीक्षा १८८, रत्नावली का राजा द्वारा युद्ध १८८, मंत्री द्वारा उपाय १८८, वैराग्य भाव १८६, उपदेश १८६, राजा द्वारा अणुव्रत ग्रहण करना १८६, चित्रोत्सवा द्वारा दीक्षा लेना १८६, सीता का गर्भमें आना १६०, सीता भामण्डल का जन्म १६०, देवता द्वारा बालक का अपहरण १६०, जनक राजा द्वारा विलाप १६१, दशरथ द्वारा खोज १६१, कन्या का नाम सीता रखना १६१।

२३वां विधानक—श्रेणिक द्वारा राम सीता विवाह जानने की इच्छा करना १६१, जनक की नगरी पर आक्रमण १६२, दशरथ के पास सन्देश १६२, दूत का अयोध्याजी आना १६२, रामचन्द्र की जाने की इच्छा प्रकट करना १६२, राम का मिथला गमन १६३, राम द्वारा युद्ध करना १६३।

२४वां विधानक—जनक की इच्छा १६४, नारद द्वारा सीता को देखना १६४, सीता का डरना १६४, नारद का विचार १६४, प्रभामंडल की सीता को पाने की इच्छा १६५, चन्द्रगति द्वारा उपाय सोचना १७५, विद्याधर द्वारा मायामयी अश्व रचना १६६, चन्द्रगति द्वारा सीता के विवाह का प्रस्ताव १६७, जनक का उत्तर १६८, स्वयंवर रचने का प्रस्ताव १६६, मिथिला नगरी १६६, रणवास में राजा जनक १६६, रानी द्वारा चिन्ता २००, सीता स्वयंवर २००, राम द्वारा धनुष खेंचना २०१, सीता द्वारा वरमाला डालना २०१, भरत का लोकसुन्दरी से विवाह २०२, मिष्ठानों का वर्णन २०२।

२५वां विधानक—अयोध्या आगमन, गंधोदक लेना २०१ सुप्रभा रानी की व्यथा, कंचुकी को नृत्य का आदेश, दशरथ पर प्रभाव २४० सर्व विभूति मुनि से, धर्मोपदेश श्रवण २०५

२६वां विधानक- भामंडल की चिन्ता २०६, जाति स्मरण २०६, सीता द्वारा पिता के नाम पर चिन्तन २०७, दशरथ का मुनि के पास जाना २०७, मुनि द्वारा कथन २०८, प्रभामंडल द्वारा प्रश्न करना २०८, भाई बहिन मिलन २१०,

२७वां विधानक—दशरथ द्वारा पूर्व भाव पूछना २१०, पूर्व भव कथन २११-१३ दशरथ का वापिस घर आना २१४ वैराग्य भाव-रामचन्द्र को राज सौंपना २१४ कैकयी का वर मांगना २१५ दशरथ द्वारा विचार २१५ भरत को आमंत्रण २१५ राम लक्ष्मण द्वारा प्रस्ताव २१६ माता के पास जाना २१६ राम का उत्तर २१६ लक्ष्मण द्वारा क्रोध करना २१६ राम का वनवास २१७

२८वां विधानक—वनवास की प्रथम रात्रि २१७ राजाओं का अनुगमन २१८ सबका वापिस आना २१५ दशरथ द्वारा रुदन २१६ भरत का राम

काल लरणं वसि सब भये, जोधा सुभट सुजान ॥
उपजत जोधा इण ओलिया, पः सम कोई न जाने ॥१६०॥

सोरठा

चक्रवर्त्ति मुनि भेष, भोग सोग सब परहरे ।
धरयो ध्यान दिढ जोग, सब संसार मन तें तजा ॥१६१

राजा भागीरथ का वर्णन

दूहा

भागीरथ राजा किया, सगर भीम सहु त्याग ।
दिक्षा ली जिणराय पैं, मनमें धरि वैराग ॥१६२॥

चौपई

पालै प्रजा भागीरथ भूप । मुकट छत्र सिर बने अनूप ॥
राज करत दिन बीते घने । श्रुतसागर मुनि आये सुने ॥१६३॥
नरपति के मन हरष अपार । चले जहां मुनि प्राण अधार ॥
नगरलोक चाले सहु साथ । वनमें ध्यान धरयो मुनिनाथ ॥१६४॥
आए निकट वंदना करी । साठि सहस की पुच्छी चरी ॥
किण कारण एकठे मरे । कहो कथा ज्यों संसय टरे ॥१६५॥
मुनि बोले पिछला संबंध । ताथी हुवा करम का बंध ॥
समेद शिखर चाल्यो इक संघ । दंतपुर गाम देख मनरंग ॥१६६॥
देखत लोग संघ को हंसैं । देखा गांव किमो तहं बसै ॥
कु भकार वरजें तिहूं जात । इण ठां गया जीव नी घात ॥१६७॥
बात कही मीमानी नही । गांव माहिं देही गज गही ॥
पकड पछारे सगले लोग । भींड मांड सब कीन्हे कोक ॥१६८॥
कु भकार मरि वणिवर भया । तप करि बहुरि राज सुत भया ॥
तप करि फिरि पायो सुरथांन । सो तु भयो भगीरथ आंन ॥१६९॥
साठि हजार सिंघ के जीव । सगर भूप सुत उपजें तीव ॥
जात्रा मांहि सब का रह्या ध्यान । राजपुत्र तै हूये थान ॥१७०॥
कारण पाए मुए इक ठोर । अशुभ करम की मिटई न पोर ॥
सुनि भागीरथ कीयो नमस्कार । राज छोड़ली दीक्षा सार ॥१७१॥

लंका का राजा महाराक्षस

महाराक्षस लंका का भूप । वन क्रीडा का देखन रूप ॥
सकल कुटंब लिया नृप संग । वन उपवन गुहु गंभीर उतंग ॥१७२॥

दशा का अनरण्य तपस्वी के पास जाना तपस्वी का कन्या के पास जाना २४८ अनन्तवीर्य मुनि के पास देवों का जाना, दोनों मुनियों को केवल ज्ञान होना २४९ ।

३५वां विधानक—सूरजमल राजा द्वारा राम का स्वागत २४६ राजा राम का आगे गमन, वन जीवन चारण मुनियों को आहार २५० गृद्ध की कथा, मुनि पर उपसर्ग २५१ मुनि के चारों ओर अग्नि जलाना, अचलराय एवं गिर देवी द्वारा मुनि को आहार, सुकेत और अग्निकेतु द्वारा दीक्षा लेना २५२ कन्या का भविष्य, कन्या का वैराग्य भाव २५३ ।

३६वां विधानक—दण्डक वन में पहुंचना, वन शोभा २५४ ।

३७वां विधानक—आवास को सुन्दर बनाना, [illegible] कथा २५५ सूरजहास खड्ग निमित्त से शंबूक की तपस्या, लक्ष्मण द्वारा सूरजहास की प्राप्ति २५७ देव पुनीत आभूषणों की प्राप्ति, चन्द्रनखा द्वारा विलाप, राम लक्ष्मण से भेंट २५८ ।

३८वां विधानक—चन्द्रनखा का खरदूषण के पास जाना, खरदूषण का कुपित होना २५६ रावण के पास दूत भेजना, खरदूषण का दंडकवन पहुंचना लक्ष्मण द्वारा युद्ध रावण का आगमन २५६ सीता को देखना, करण गुप्ति विद्या का ध्यान करना, रावण द्वारा शंखनाद, राम का लक्ष्मण के पास जाना, सीताहरण सीता का विलाप, जटायु द्वारा आक्रमण २६० रावण द्वारा खेद, राम का विलाप २६१ ।

३९वां विधानक—लक्ष्मण खरदूषण युद्ध, लक्ष्मण की विजय २६२ लक्ष्मण का विलाप, विद्याधरों का आगमन, चारों ओर दूत भेजना, रावण के पास जाना २६३ कपि द्वारा देखना अलंकागढ़ में पहुंचना २६५ ।

४०वां विधानक—रावण की सीता के समक्ष गर्वोक्ति, सीता का करारा उत्तर अशोक वाटिका में सीता को रखना २६६ चन्द्रनखा का रावण से निवेदन, मन्दोदरी रावण संवाद, दूती का सीता को समझाने का असफल प्रयास २६७ राम की व्याकुलता, मन्त्रियों द्वारा विचार २६८ ।

४१वां विधानक—राम सुग्रीव मिलन २६९ राम द्वारा सुग्रीव का राज्य देना, सुग्रीव की विजय २७० सुग्रीव द्वारा कन्याओं की भेंट २७१ ।

४२वां विधानक—कन्याओं के हाव भाव, जामवंत द्वारा माला प्राप्ति की खोज २७२ सीता की खोज, रतनजटी सुग्रीव भेंट, रतनजटी द्वारा लंका परिचय २७३ जांबुनद मंत्री का कथन, बंदर मोर कथा २७४ लक्ष्मण का क्रोधित होकर निश्चय करना २७५ रावण की मृत्यु के सम्बन्ध मे भविष्यवाणी, लक्ष्मण द्वारा शिला उठाना २७६ ।

४३वाँ विधानक—लंका से दूत का आगमन २७७ हनुमान द्वारा राम के दर्शन २७८ राम का हनुमान को गले लगाना, पवनपुत्र द्वारा स्तुति २७९।

४४वाँ विधानक—महेन्द्रपुर नगर २८० हनुमान द्वारा महेन्द्र सेन से बदला लेना; परस्पर मिलन २८१।

४५वाँ विधानक—तीन कन्याओं द्वारा तपस्या, हनुमान द्वारा दावानल बुझाना, विवाह की भविष्यवाणी २८३।

४६वाँ विधानक—वज्रमुख एवं हनुमान की वार्ता २८४ लंका सुन्दरी का प्रेम लंकापति का प्रभाव २८४ हनुमान द्वारा समझाना २८४।

४७वाँ विधानक—हनुमान का लंका में पहुंचना, विभीषण से भेंट २८६ रावण का क्रोधित होना, हनुमान का वानर रूप में सीता के पास पहुंचना मन्दोदरी सीता की वार्तालाप २८६ सीता द्वारा राम के सेवक के रूप में प्रकट होने के लिये कहना, सीता के प्रश्न हनुमान का उत्तर २८७ मन्दोदरी का कथन २८८ हनुमान मन्दोदरी संवाद २८९ मन्दोदरी का नाटक, हनुमान का सीता से निवेदन, हनुमान द्वारा भोजन, सीता द्वारा आहार ग्रहण, सीता का चिन्तन २९० सीता के वचन हनुमान का प्रस्थान मन्दोदरी का रावण के पास जाना रावण का क्रोधित होना हनुमान का युद्ध कौशल २९१ इन्द्रजीत द्वारा हनुमान को पकड़ना, हनुमान का परिचय रावण का क्रोधित होना २९२ हनुमान का उत्तर हनुमान का मायावी विद्या द्वारा लंका दहन २९३।

४८वाँ विधानक—हनुमान का राम के पास जाना, राम की चिन्ता २९४, राजाओं द्वारा निवेदन, युद्ध की तैयारी २९५।

४९वाँ विधानक—रावण का चिन्तन, युद्ध की तैयारी २९६ योद्धाओं द्वारा रावण को समझाना विभीषण का इन्द्रजीत से वचन २९७ रावण का विभीषण पर धावा, विभीषण का राम के पास जाना, विभीषण का द्वारपाल से निवेदन मन्त्रियों का परामर्श २९८ विभीषण द्वारा राम दर्शन, सेना के साथ लंका द्वीप में पहुंचना २९९।

५०वाँ विधानक—अक्षौहिणी संख्या, दोनों के सामर्थ्य की चर्चा ३००।

५१वाँ विधानक—युद्ध के लिये सैनिकों का प्रस्थान ३०१।

५२वाँ विधानक—राम की सेना, रावण के हस्त प्रहस्त योद्धाओं की हार ३०३।

५३वाँ विधानक—हस्त प्रहस्त कथा ३०४।

५४वां विधानक—दूसरे दिन का युद्ध ३०५, तीसरे दिन का युद्ध ३०६ विभीषण का राम को परामर्श, देवों द्वारा राम को विद्या प्रदान करना ३०८ ।

५५वां विधानक—राम रावण द्वारा युद्ध की तैयारी, विद्या द्वारा मूच्छितों की मूर्च्छा दूर करना ३०९ ।

५६वां विधानक—दोनों ओर योद्धाओं द्वारा युद्ध, विभीषण रावण युद्ध ३१० लक्ष्मण रावण युद्ध ३११ ।

५७वां विधानक—राम विलाप ।

५८वां विधानक—मन्दोदरी सीता का विलाप, भामण्डल और चन्द्रमति का आगमन ३१३ वैद्य की जीवन कहानी विशल्या की कथा ३१४ वनवास के दु:ख ३१५ ।

५९वां विधानक—हनुमान अंगद को अयोध्या भेजना ३१७ भामण्डल का उत्तर ३१८ विशल्या द्वारा मुर्च्छा दूर करना, लक्ष्मण का होश में आना ३१९ ।

६०वां विधानक—रावण को मंत्रियों द्वारा समझाना ३१९, रावण का मन्तव्य ३२० रावण के दूत का राम के पास आगमन, राम का उत्तर, रावण के दूत का पुन: निवेदन ३२० राम का प्रत्युत्तर, दूत का रावण के पास आना ३२२ ।

६१वां विधानक—रावण द्वारा चैत्य वंदना ।

६२वां विधानक—अष्टाह्निका महोत्सव, रावण द्वारा विद्या सिद्धि का प्रयत्न ३२४ ।

६३वां विधानक—व्रत साधना के कारण युद्ध बन्द होना, बन्दरों द्वारा लंका में उपद्रव, क्षेत्रपाल द्वारा रक्षा ३२५ ।

६४वां विधानक—अंगद का लंका में जाकर स्थिति का अध्ययन, ध्यानारूढ रावण को देखना ३२६ रावण द्वारा विद्या सिद्धि, विद्या का रावण से निवेदन ३२८ ।

६५वां विधानक—रावण का गमन, रावण का मंत्रियों द्वारा पुन: निवेदन ३२९ रावण द्वारा पश्चाताप, रावण का पुन: युद्ध करने का निश्चय ३३० ।

६६वां विधानक—रावण की दैनिक क्रिया, दरबार हाल ३३० अपशकुन होना, मन्दोदरी की चिन्ता, मंत्री का उत्तर, मन्दोदरी द्वारा रावण को समझाना ३३१ रावण का उत्तर, उत्तर प्रत्युत्तर ३३२ रावण का क्रोधित होना, मन्दोदरी का पुन: निवेदन, रावण का उत्तर, रावण की रात्रि, युद्ध के लिए प्रस्थान ३३५ ।

६७वां विधानक—मन्दोदरी से अन्तिम भेंट, राम द्वारा युद्ध की तैयारी ३३६ दोनों की सेनाओं में युद्ध ३३७ ।

६८वां विधानक—देवताओं द्वारा आकाश से युद्ध का अवलोकन, रावण द्वारा चिन्ता करना ३३८ अनेक रूप में रावण का लड़ना, रावण द्वारा चक्र चलाना ३३९ लक्ष्मण द्वारा चक्र प्राप्त करना ३४० ।

६९वां विधानक—रावण का पश्चाताप ३४० विभीषण द्वारा लक्ष्मण को परामर्श, रावण का क्रोधित होना, लक्ष्मण द्वारा चक्र से रावण का वध करना ३४१ ।

७०वां विधानक—विभीषण द्वारा विलाप, रावण की रानियों द्वारा विलाप, श्रेष्ठ मरन ३४३ अरिद्रम की कथा ३४४ ।

७१वां विधानक—रावण का दाह संस्कार ३४५ कुंभकर्ण एवं इन्द्रजीत को छोड़ना ३४६ मुनि का संघ सहित आगमन, केवल ज्ञान प्राप्ति, धरणेन्द्र का आसन कंपित होना, राम द्वारा विचार करना ३४७ राम का मुनि के पास जाना, पूर्वभवों का वर्णन ३४८ ।

७२वां विधानक—राम लक्ष्मण का लंका प्रवेश ३५० सीता की दशा, राम सीता मिलन ।

७३वां विधानक लंका की शोभा, विभीषण द्वारा राम का स्वागत ३५३ विविध व्यंजन, इन्द्रजीत मेघनाद द्वारा निर्वाण प्राप्ति ३५४ ।

७४वां विधानक—नारद का अयोध्या आगमन, अपराजिता से प्रश्न ३५८ राम कथा नारद का लंका में आगमन, राम द्वारा स्वागत ३५९ अयोध्या वर्णन, अयोध्या में राम द्वारा दूत भेजना ।

७५वां विधानक—राम सीता का अयोध्या गमन, मार्ग परिचय, अयोध्या दर्शन, राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न मिलन ।

७६वां विधानक—अयोध्या वैभव, सीता की नगर में चर्चा, भरत के मन में वैराग्य ३६५ राम भरत वार्ता, ३६६ उन्मत्त हाथी का अकस्मात आगमन ३६७ ।

७७वां विधानक—भरत का हाथी पर चढ़ना, हाथी द्वारा तप साधना ३६८ ।

७८वां विधानक—देशभूषण कुलभूषण मुनि आगमन (३६९-७६) भरत के पूर्वभव ३७६ ।

७९वां विधानक—भरत द्वारा वैराग्य, कैकयी का विलाप, कैकयी का वैराग्य ३७७ ।

८०वां विधानक—राम लक्ष्मण द्वारा दुःख प्रगट करना, राम का राज्याभिषेक ३७८ ।

८१वाँ विधानक—शत्रुघ्न को राज देने की इच्छा, शत्रुघ्न द्वारा मथुरा राज्य चाहना, मथुरा पर चढ़ाई ३८० मल्लयुद्ध, मधु द्वारा वैराग्य ३८२।

८२वाँ विधानक—मधुराजा के मित्रों द्वारा आक्रमण, धरणेन्द्र द्वारा समझाना ३८३ प्रजा को दुःख देना ३८४।

८३वाँ विधानक—वैराग्य भावना ३८५।

८४वाँ विधानक—मथुरा में सात मुनियों का आगमन, आहार विधि पंचम काल का प्रभाव ३८६ आशीर्वाद ३९०।

८५वाँ विधानक—मनोरमा विवाह ३९२।

८६वाँ विधानक—राम लक्ष्मण विभव विधानक ३९४।

८७वाँ विधानक—राजमहल, सीता द्वारा स्वप्न दर्शन, सीता का दोहिला ३९६।

८८वाँ विधानक—सीता का नेत्र फड़कना ३९७ राम द्वारा प्रश्न ३९८ प्रतिनिधियों का उत्तर ३९९ राम की व्यथा।

८९वाँ विधानक—राम का कथन, लक्ष्मण का क्रोध, राम का निर्णय ४०१ सीता को यात्रा के बहाने ले जाना ४०२ कृतांतवक्र का वन में अकेलापन, वज्रजंघ का विलाप ४०४।

९०वाँ विधानक—सीता द्वारा परिचय देना, गर्भिणी के दुःख, वज्रजंघ का परिचय ४०७।

९१वाँ विधानक—सीता के साथ वज्रजंघ का आगमन, कृतांतवक्र की व्यथा, राम लक्ष्मण का रुदन ४०९।

९२वाँ विधानक—सीता के पुत्र जन्म, बाल क्रीड़ा, अध्ययन, ४१०-११।

९३वाँ विधानक—कुश के लिए पृथ्वीधर के पास दूत भेजना, पृथ्वीधर का कुपित होना ४१३ वज्रजंघ एवं पृथ्वीधर में युद्ध ४१३ लवकुश का प्रस्थान ४१४।

९४वाँ विधानक—नारद मुनि का आगमन ४१४ लवकुश की प्रतिक्रिया, नारद का पुनः आगमन ४१७ लवकुश द्वारा अयोध्या पर आक्रमण, ४१८।

९५-९६वाँ विधानक—युद्ध वर्णन ४२० नारद द्वारा लव कुश का रहस्य खोलना, पिता की वन्दना ४२१ लवकुश का अयोध्या आगमन ४२२।

९७वाँ विधानक—राम का चिन्तन, सीता को लेने के लिए भेजना ४२३ सीता का आगमन, ४२४ अग्नि परीक्षा ४२५ यक्षिणी द्वारा मुनि पर उपसर्ग ४२७।

९८वां विधानक— राम द्वारा पश्चाताप करना, अग्नि परीक्षा में सफलता ४२९ सीता का उत्तर ४३० नरकों के दुःख वर्णन ४३१ द्वीप समुद्र वर्णन ४३२ सुख की तरतमता तत्ववर्णन ४३३ ।

९९वां विधानक—विभीषण द्वारा प्रश्न, सर्वभूषण द्वारा वर्णन ४३५ मुनि के पास जाना ४४३९ तपस्वी जीवन ४४० ।

१००वां विधानक— सीता प्रव्रज्या ४४५ ।

१०१वां विधानक—सीता की पूर्व कथा ४४८ ।

१०२वां विधानक—प्रद्युम्न संबुकुमार के पूर्वभव ४५२ मधु कीटक भव वर्णन ४५४ ।

१०३वां विधानक— लक्ष्मण पुत्र निष्क्रमण ४६० ।

१०४वां विधानक— भाव मण्डल पर लोक गमन ४६२ ।

१०५वां विधानक—हनुमान निर्वाण ४६३ ।

१०६वां विधानक - संकर सुर संकर कथा ४६४ ।

१०७वां विधानक—लवकुश दीक्षा ४६५ ।

१०८वां विधानक—लक्ष्मण की मृत्यु पर राम का विलाप ४६७ ।

१०९वां विधानक—विभीषण द्वारा संसार स्वरूप वर्णन ।

११०वां विधानक— राम का तीव्र मोह, अयोध्या पर आक्रमण, देव रूप जटायु द्वारा सहायता ४७१ कृतांतवक्र द्वारा राम को समझाने के लिए माया रचना ४७२ राम को वास्तविक ज्ञान प्राप्त होना ४७३ ।

१११वां विधानक- राम का वैराग्य ४७५ वैराग्य ४७६ ।

११२वां विधानक— राम की तपस्या ४७७ सीता के जीव सीतेन्द्र का राम के पास आगमन ४७९ राम को केवल ज्ञान प्राप्ति ४८० ।

११३वां विधानक— बालुका पृथ्वी में रावण, संबुकुमार की दशा वर्णन ४८३ राम केवली के पास देवों का आगमन ४८४ समवसरण ४८४ प्रश्न, राम की वाणी ४८५ लक्ष्मण के प्रति जिज्ञासा ४८७ पद्मपुराण की स्वाध्याय का महत्व ४८८ रविषेणाचार्य द्वारा पद्मपुराण की रचना ४८९ ।

११४वां विधानक—काष्ठासंघ पट्टावली ४९०, मल संघ प्रशस्ति ४९१ ।

अनुक्रमणिका—४९३ से शुद्धि-पत्र ५०६ लेखक परिचय ५०७ ।

———

पद्मपुराण (हिन्दी)

चौपई

तीर्थंकरों का स्तवन

आदिनाथ बंदू जिनराय । चरण कमल सेऊं मन लाय ।।
जैनधर्म कीया परकास । भव्यजीव की पुगी आस ।।१।।

अजित नाथ संसारइ जीत । मोक्ष पंथ की जाणी रीत ।।
संभव जिण भव भ्रमण निवार । उतरे भव सागर तैं पार ।।२।।

अभिनंदन भय कीने दूरि । सेवत सकल रिद्धि रहै पूरि ।।
सुमतिनाथ सुभ मति दातार । सेवत पावै सुष अपार ।।३।।

देव पदमप्रभु सेवा करौं । च्यारौं गति का दुख परिहरूं ।।
देव सुपास पूजो धरि भाव । पूजित उपजै मन को चाव ।।४।।

चन्द्राप्रभु ज्यौं दुतिया चंद । दिन दिन कला बधै आनंद ।।
पुष्पदंत जिन पुष्पनि वास । तजि संसार मुगति किया वास ।।५।।

सीतल नाथ दया सौं ध्यान । सुमरत पावै मोक्ष सुथान ।।
श्रेयांसे स्वामी अरिहन्त । टूटे जनम जरा का अन्त ।।६।।

वासुपूज्य की पूजा करो । भौसागर के दुख परिहरै ।।
विमलनाथ जिन धर्म महंत । भविजन दरस भये भव अंत ।।७।।

अनंतनाथ स्वामी अरिहंत । दरसन पावै सुख अनंत ।।
धर्मनाथ जिन धर्म महंत । भविजन दरस भये भव अंत ।।८।।

सांतिनाथ सुमरौ दिन रैण । बाढै लच्छि होइ सुख चैन ।।
कुंथनाथ अरि कीने दूर । भये मुगति संसार कर चूर ।।९।।
अरहनाथ अरि कीने दूर । सुमिरत रहै सदा रिध पूर ।।
मल्लिनाथ महा सुभट सुवीर । अष्ट करम जीते धरि धीर ।।१०।।

मुनिसुव्रत पूजो परभात । असुभ करम का होवै घात ।।
नमि जिणंद ध्यावो करि जोर । टूटै जनम जरा की डोर ।।११।।

अरिष्ट नेम जादू जग. धुनी । सेवत मतिश्रुत पावै धनी ।।
पार्श्वनाथ पूजो धरि ध्यान । सुमरत पावै पूरन ग्यान ।।१२।।

वर्द्धमान पूजो सब कोइ । मनवंछित फल बहुविध होइ ।।
आदि अंत जे जिन चौवीस । पूजैं सुरनर नावैं सीस ।।१३।।
बंदू मुनिवर मूल केवली । कुमति कलेश सब जाए टली ।।
केवल वाणी सदा सहाय । सुणिया नर्कं सुदुरि पलाय ।।१४।।
दीप अढाई मैं जे साध । उसके गुन हिरदै मैं बाध ।।
निस वासर सुमरण मैं चित्त । ध्यावै श्री जिन चरणं जु नित्त ।।१५।।
गणधर चरण सरण कौं गहौं । गुरु की सेवा भक्ति मैं रहूं ।।

जिनवाणी का स्वरूप

जिनवाणी मैं समरु सदा, मति श्रुति बुद्धि प्रकास तदा ।।१६।।
उज्जल वर्ण गल मोतीहार । कवियनां गुण अगम अपार ।।
सीसफूल दोइ कुंडलकरण । रुणझुण नेवर बाजैं चरण ।।१७।।
करकंकुल अंगुल मुंदडी । मणिमाणिक हीरे सू जडी ।।
मोती मांग बनी छबि घनी । हंस चढी सोभा बहु बनी ।।१८।।
छह दरसन मुष मंडन जान । सुमरत बहु विध पावै ग्यांन ।।
मूरिषतैं पढि होइ सुजान । ता कारण सेऊं धरि ध्यान ।।१९।।
श्री जिन मुष की वानी सही । सरस्वती सम को बीजो नहीं ।।
करि डंडोत कवि करै प्रणाम । मूला अक्षर आंणीं ठाम ।।२०।।

सोरठा

सुमरुं जिण चऊबीस, सारद की सेवा करौं ।
वे त्रिभुवन के ईश, इह दाता बुधि फल तणी ।।२१।।

चौपई

राम नाम का महात्म्य

रामचंद बंदौं जगदीस । साहसवंत महाबल ईस ।।
अनुज वीर लछिमन बलवांन । तीन षंड मे ताकी आंन ।।२२।।
राम नाम गुन अगम अथाह । ते गुन किस पै बरने जांय ।।
जा मुख राम नाम नीसरै । सो संकट में बहुरि न परै ।।२३।।
जा घट राम नाम का बास । ताकै पाप न आवैं पास ।।
जिन श्रवणन राम जस सुने । देवलोक सुष पावैं घने ।।२४।।
संकट विपति पडै जे आय । राम नाम तिहां होइ सहाइ ।।
जल थल वन विहुंब ले नाम । मनवांछित सहु सीझै काम ।।२५।।
चलत विदेस नाम जो लेइ । रामचन्द्र ताकुं फल देइ ।।
जे निश्चै सौं सुमरण करैं । बहुरि न भवसागर मैं फिरैं ।।२६।।

जो सहस रसना करि भरणै । राम नाम गुण जाइ न गिनै ॥
जैसे वृक्ष महा उत्तुंग । जाके फल दीसैं सुभरंग ॥२७॥
बौना देखि देखि ललचाय । वे फल कैसे बौना खाय ॥
वह ऊंचा यह नीची देह । क्यौं वा फल कूं पावै एह ॥२८॥
जे मंगल माने मयमंत । उनौं उखारि डारै जु तुरंत ॥
वे फल बीन बौना नैं लिये । ऐसैं जिनगुण सुगम कर दिये ॥२९॥

आचार्य रविषेण का उल्लेख

केवल वाणी सुण्यां बखान । पंडित मुनीवर रच्या पुरांण ॥
आचार्य रविषेण महंत । संस्कृत मैं कीनौं ग्रन्थ ॥३०॥
महा मुनीस्वर ग्यांनी गुंनी । मति श्रुति अवधि ग्यांनी मुनी ॥
महा निर्ग्रन्थ तपस्वी जती । क्रोध मान माया नहीं रती ॥३१॥
आरिषी वानी शास्त्र किया । धर्म्म उपदेश बहु विध दिया ॥
जिसकै भेदाभेद अपार । महा मुनीस्वर करैं विचार ॥३२॥
जैसे रवि का होइ उदोत । भाजै तिमिर निर्म्मला होत ॥
इस विधि मुनिकै मिटै संदेह । मिथ्या तजि समकित सुं नेह ॥३३॥

रचना काल

संवत सतरहसै ग्यारह बरस । सुण्यां भेद जिनवाणी सरस ॥
फाल्गुन मास पंचमी स्वेत । गुरुवासर मनमैं धरि हेत ॥३४॥

कवि का नाम

सभाचन्द मुनि भया आनन्द । भाषा करि चौपई छंद ॥
सुनि पुरांन कीनौ मडान । गुनि जन लोक सुनुं दे कांन ॥३५॥

राजगृही नगरी की सुन्दरता

जंबूद्वीप में भरत षंड । मगध देस राजग्रही प्रचंड ॥
ऊंचे मंदिर हैं सत खिने । सब ते सरस राय के बने ॥३६॥
बसैं सघन दीसैं नहीं भंग । लिखे चित्र जिमे भले सुरंग ॥
उज्जल बरण धवल हर किये । अग्नी कलस कनक के दिये ॥३७॥
बनी जु बैठक नाना भांति । जिनकी लोग लिगरहे जाति ॥
अति उत्तुंग संवारी पौलि । लगे कवाड बीजै सब ठौर ॥३८॥
झारि झरेखे सोभा भली । देखत उपजै मनकी रली ॥
आगै सूत रच्या बाजार । चौडी नींव लई सुसंवारि ॥३९॥

व्यापार उद्योग

भले भले आये सुनषारि । मंदिर रचे बडे विस्तारि ॥
यहां सराफ सराफी करैं । बोलैं सति झूठ परिहरैं ॥४०॥
कसैं कसौटी परखैं दाम । लेवा देई सहज विश्राम ॥
बीच बाजार रहैं जौंहरी । मणिमाणक हीरा लाल खरी ॥४१॥

मोती लाल पन्ना और चुंनी । राजद्वार महिमा अति घनी ॥
भली वस्तु जो राजा लेई । मुंह मांगिया दाम गिण देइ ॥४२॥
कहीं बजाज बजाजी करैं । सत्य बचन मुख तैं उच्चरैं ॥
कहीं जरबा फजिरी सिकलात । नरमो नारंग नाना भांति ॥४३॥
निरमैथंत करैं व्यापार । अर वेसुरी अर साहुकार ॥
कोठीवाल करैं व्यौहार । जिनके वनिज बढे विस्तार ॥४४॥
टापौं दिपैं जाय जिहाज । ल्यावैं दर्व धर्म के काज ॥
जेते किसबदार हैं और । बैठे सकल विराजैं ठौर ॥४५॥
नगरी निकटैं उपवन घने । कूप बापिका जलहर घने ॥
अति रमणीक मनोहर खरे । जानूं गंगा जल सौं भरे ॥४६॥
मंदिर मांहि बैठिकैं बनी । झरणां झरैं सीतलता घनी ॥
खलखलाट सौं जल नीसरैं । उंचाई उछल भूमि पर परैं ॥४७॥
तिहां बाइठा राजकुमार । गुंनिजन गावैं राग संवार ॥
अब जो [illegible] सुं कहुं । अठ पुराण भार मधि लहुं ॥४८॥
किंचित् कहूं वृक्ष के नाम । गुनि जन समझो नाना भाव ॥
सघन रुंख बहु फूले फले । जानू गुंथ बनाये चले ॥४९॥
पम बंध सौं सोभैं केलि । पाडल चढ़ी चमेली बेलि ॥
अब बिजौरा निंबू नारिंग । दाडिम दाख बेलि बहुचंग ॥५०॥
फलैं फूल उतरैं अति घने । पंछी खाय न बरजई जने ॥
सकल जाति के सौभैं रूख । बास सुगंध लागैं भूख ॥५१॥

सोरठा

कमल सरोवर फूल, सबजी जात अनेक विध ॥
भ्रमर सुरग सुख मूल, राति दिवस निवसैं तिहां ॥५२॥
पंछी तिहां अनेक, बोलैं सबद सुहावने ॥
जहां तहां द्रुम बेल, आइ बसेरा लेत हैं ॥५३॥

चौपई

असा नगर बसैं सुभ थान । श्रेणिक राय तपै ज्यौं भान ॥
चेलणां है रानी पटधनी । मानुं कनक कांमनी बनी ॥५४॥
सीलवंत गुण लक्षण ईस । मानूं इन्द्राणी जीत सचीश ॥
सम्यक् दृष्टि कोमल चित्त । देवगुरु शास्त्र सेवई नित्त ॥५५॥

परजा सुखी बसैं सब लोग । पान फूल रस गोरस भोग ॥
घरि घरि पूजा सुनैं पुराण । घरि घरि सुनिए अर्थ बखान ॥५६॥
श्री जिन मन्दिर बने उतंग । फरहरैं धुजा गगन के रंग ॥
इन्द्र चन्द्र सुर वासा लेहि । सुरगपुरी सम सोभा देइ ॥५७॥

सोरठा

बार बार कर सोच करि, विचार राजा श्रेणिक रहैं ॥
हुवैई जनम बहोरी, कथा सुनु रघुवंस की ॥५८॥

चौपाई

कुंडलपुर नगर

कुंडलपुर सिद्धारथ राव । महापुनीत जगत में नांउ ॥
सोभा नगर न जाइ गिनी । सुरगपुरी की शोभा बनी ॥५६॥
दु:खी दलिद्री कोई न दीन । पंडित गुनी सकल परवीन ॥
हाट बाजार चौहटे बने । शोभा सकल कहां लौ भनें ॥६०॥
बाग बगीचा महल आवास । दीसैं सकल पास ही पास ॥
रितु रितु के फल लागे फूल । तातैं रहैं पथिक जन मूल ॥६१॥

उछलैं जल झरना झरैं । निर्मल नीर सुखै विस्तरैं ॥
बैठे राज सभा तहां ठौर । भूपति तहां विराजैं और ॥६२॥

सिद्धार्थ एवं त्रिशला रानी

महा सुभट छत्री हू सूर । ग्यानी गुनी ग्यान भरपूर ॥
नृप की आग्या सिर पर धरैं । कोई नहीं उपद्रव करै ॥६३॥
प्रजा सुखी करैं बहु भोग । पुन्यवन्त निबसैं सब लोग ॥
च्यार दान दे चित समाज । षट् दर्शन का राखैं मान ॥६४॥
त्रिसला दे राणी गुणवंत । रूप लछिन सोभै बहु भांति ॥
पतिव्रता आग्या मैं खरी । सील वंत गुन लावण्य भरी ॥६५॥
वरनन करि गुन पार न लेइ । सामोद्रिक की सोभा देइ ॥
सुख में सूती सेज मंझार । सुपन सिध पाई एक बार ॥६६॥

माता द्वारा सोलह स्वप्न देखना

सोलह सुपनां नाना भांति । एक महूर्त पाछली रात ॥
प्रथम गयंद इक ऊंची देह । आवत देख्यो अपनो गेह ॥६७॥
दूजे सिंह गर्जना करै । गज मयमंत देष बल हरै ॥
लषमी देखि हरषत भांति । अनंत विभूति सौमैं बहु भांति ॥६८॥

कंचन कलस षीर जल भरे। दोऊ पोर के भीतर धरे ॥
देष्यो सरोवर निरमल नीर। छाया सघन विहंगम तीर ॥६६॥
अरु सूर्य देष्यो उद्योत। तासैं तिमर निर्मला होत ॥
देष्यौ पूरणमासी चन्द। सीतल बरतें मन आनन्द ॥७०॥
फूलमाल देषी बिकसात। मन आश्चर्य करै बहु भांति ॥
सिंघासण मोती मणि जड्यौ। रत्नपुंज देषत मन भर्‌यौ ॥७१॥
देष्या मीन जुगल सर तिरैं। ता चपलाई कौन सर करैं ॥
देव विमान देष गुनवंत। जास चल्या भव सागर अंत ॥७२॥
देषी अगनि धूम निरधूम। जानौं बनी रत्न की भूम ॥
देष धवल धोरी धीरज धीर। पृथ्वी संग धरै बलबीर ॥७३॥
देष्यो वारिध ग्रीषम काल। अति गाजित किल्लोल बिसाल ॥
देष्यो नाग भुवन गुन सही। रात पाछली किंचित रही ॥७४॥
स्वेत गयंद जु बन में गयो। चकत जागि अचंभा भयो ॥
ए षोडस सुपने मनमांहि रहे। प्रिय समीप ध्यौरे सौं कहे ॥७५॥
सिद्धार्थ नृप सुनि प्रिय बैन। हरषित अंतर बिगसत नैन ॥
मन वच क्रम सुपने कुं सुनें। निहचै अष्ट कर्म को हनें ॥७६॥

स्वपनों का फल

होय पुत्र फल मन आनंद। जानहु पूरनवासी चंद ॥
सुर नर इंद्र करैंगे सेव। तीन लोक के दानव देव ॥७७॥
भव सागर का तोडै जाल। धर्म सरीर धर्म प्रतिपाल ॥
विद्याधर नृपति पसुपती। इनमें बहोत चढावें रती ॥७८॥
जांनहु पंचग्यान को धनी। सब परिवार चढावें मनी ॥
सुन प्रिय बचन भया आनन्द। प्रभु के बयन गांठि सो बन्द ॥७९॥
सुदि अषाढ छठि उत्तम घडी। प्रभु ने आइ अभ थित करी ॥
आसन कंपा सुर सुरपती। चिमक्या चित्त बिचारी मती ॥८०॥
जिण चौईसमैं को अवतार। सिद्धारथ घर बीर कुमार ॥
उतरि सिंहासन करि डंडोत। परंपराय ज्यौं पिछली होत ॥८१॥
मातंग जक्ष बुलायो टेर। जाउ कुंडलपुर इतनी बेर ॥
और दैवी कुमारी छपनां। आइ पहुंची देवांगना ॥८२॥

माता की सेवा

आदेश हुवा कुबेर भंडार। रतन वृष्टि करि वारंवार ॥
दीये चितेरा देवकुमार। भले सुघर जु सूत्राधार ॥८३॥
रचना रची मनोहर महीं। चलती बेर सीष यौं कही ॥
कहुं कहुं देव चितेरा करैं। अनहद भांति सुरग की धरैं ॥८४॥

विना जीव जानू बोलै बैन । देखत होइ महा सुख चैन ।।
जा अन्तर मनहर घनघोर । बरसैं रतन डोढ है कोडि ।।८५।।
जय जय ध्वनि छायो आकास । बरषै पहुप सुगंध सुवास ।।
गर्जं पटल बिजुली उद्योत । अंतर मनिक दिवस सा होत ।।८६।।
हरति भूमि जल उपरि तिरै । भरे तलाव मंडि करि फिरै ।।
किन्नर छपन अंत है पुर आइ । नमसकार कर लागी पाइ ।।८७।।
कोई करैं बीजणां आय । सेवा करैं घेरे मनु ल्याय ।।८८।।
तेल फलेल सवारैं केस । कोई सखी बनावैं भेस ।।८९।।
कंचन झारी जल भर ल्याइ । और दांतण करावे आय ।।
कोई डबा धरैं भरि पान । बीडी करि षुवावें आन ।।९०।।
श्रोर जे सेवग ताकी ठोर । सेवा करि बिराजैं श्रौर ।।
जैसे कमल पत्र परि नीर । यौं विरचई सोहसैं धीर ।।९१।।
जांनु भानु बदर छांड्यो । जांनु सीप स्वांति जलदीयो ।।
इह विध सौं नगरी मैं गए । घर घर रली बधाई भए ।।९२।।
पूजा करैं देह नित दांन । श्रैसे भया गर्भ कल्याण ।।

महावीर जन्म

चैत्र सुदी तेरसि कौं रली । नक्षत्र चित्रा विरयां भली ।।९३।।
भयो जनम जान्यौं जब इंद्र । ऐरापति साजियो गयंद ।।
आसण छोडि प्रदिक्षणां दई । चले मुकुटमणि नीची नई ।।९४।।
जै जै सबद करैं कर जोर । किन्नर चले सत्ताइस कोडि ।।
छाय रह्यो आकास विमांण । नृत्य करैं गावैं गुणगान ।।९५।।
बाजैं पटह दुंदुभी घोर । करि करना झन फेरी जोर ।।
मधुरी धुनि बाजैं मृदंग । नृत्य करत मोडैं बहुअंग ।।९६।।
भयो कथलाहल सुनै न कान । आए कुंडलपुरी मीलांन ।।
नृप की पौरि भीर बहु जुडी । इंद्राणी अंतहैपुर बडी ।।९७।।
मांया का करि बालक धर्या । श्री जिनेंद्र इंद्रानी हर्या ।।
नींद उपाई लई चली चोर । आनंद तिण डारि तोडि ।।९८।।
छ्यौ तैं निकलि दियो पति गोद । निरखि रूप पायो मन मोद ।।
इंद्राणी पुंगी मन रली । गावैं मंगल विरयां भली ।।९९।।
बैठ गयंद ले गये मेर । पंडुक सिला थापि तीइ बेर ।।
षीर समुंद इंद्र सुर गए । कंचन कलस नीर भर लिए ।।१००।।
सहस अठोत्तर इंद्र कै हाथ । श्रौर भर भर ले आए साथ ।।
दूध दही रस घृत की धार । श्री जिन पूज्या बारंबार ।।१०१।।

ले आए जहां वीर जिणंद । डारि कलस मन कीया आनंद ॥
लष सूई सौं छेदे कान । काजल नैन सहज मुख पान ॥१०२॥
देव पुनीत वस्त्र सुभ रंग । पहिराये श्री जिनके अंग ॥
रतन जडित कुंडल दोई कान । बाजु बंध ताइत उर आन ॥१०३॥
माला और आभूषण बने । बहुत शृंगार श्री जिनवर वणे ॥
कटि करधनी पाए घुघरा । पहराये फूलों के सेहरा ॥१०४॥
करि आनंद स्तुति बहु करैं । दर्शन देख्या मन सुख बढै ॥
चले देव प्रभु कूं घर लीयें । अति आनन्द परम सुख किये ॥१०५॥

सोरठा

राख्या सबका मान, जो गुन गावें जिन तणे ॥
कीयो जन्म कल्याण, सुरपति सुरथानक गये ॥१०६॥

दूहा

इन्द्राणी किन्नर सहित, कीने बहुत आनंद ।
त्रिसला देई गोद में, श्री दीनां वीर जिणंद ॥१०७॥

सोरठा

वर्ष बहत्तर आव, कही जोतिगी समझिकैं ॥
सप्त हाथ समकाय, श्री जिण सब जग तिलक ॥१०८॥

चउपई

ज्यौं दुतिया शशि चढै कांति । यौं दिन दिन बाढैं जिननाथ ॥
सेवा करैं देवता आइ । बालक रूप धरैं बहु भाइ ॥१०९॥

महावीर द्वारा वैराग्य

अनुक्रम जोबन पदइ भई । पुन्य विभूति चौगुनी लई ॥
बरस तीस बीते बलवीर । सब गुन बढै लेइ सरीर ॥११०॥
सनां सिंघासन कंचन धांम । व्यापा सकल न व्यापा कांम ॥
सहज विचार्यौ लोक स्वरूप । भर्म्यो जीव नाना धरि रूप ॥१११॥
अति वैराग विमल चितकरी । सुर लौकांतिक स्तुति करी ॥
धनि धनि करैं बे जैजैकार । सिवका आन धरी तिण बार ॥११२॥
प्रभु आरूढ भए सुषपाल । छोडि दिया माया जंजाल ॥
सिवका चढि नंदन बन गए । उतरि पालकी ठाढे भए ॥११३॥
सिद्ध नाम ले लुंचे केस । श्री जिन भए दिगम्बर भेस ॥
आए इंद्र अमरपति घने । नदैं विरवै जी जौ मुनि भने ॥११४॥
कीने तप कल्याणक सार । मंगसिर बदि दसमी सुभवार ॥
रत्न पिटारी केस उठाय । लए देवनें समंद सिराय ॥११५॥

कलस पीर जल भर ले आई। डारि नृत्य करि गाय बजाए ॥
अष्ट द्रव्य सौं पूजा करी। मांनू देव सफल भुत घरी ॥११६॥
पुष्प वृष्टि गंधोदिक करें। सीतल पवन तापकौं हरें ॥
सचन बीनती करें डंडोत। नए मुकट ज्यौं पीछली होत ॥११७॥
यौं करि देव गए फिर गेह। तपारूढ भए जिन देह ॥
बारह विध तप आतम ध्यांन। बाहिज अभ्यंतर चित आंनि ॥११८॥
तेरह विध धार्‌या चारित्र। रागद्वेष जीते छै सत्र ॥
द्वादस अनुप्रेक्षा चित ल्याइ। दोष अठारह दिया छुडाय ॥११९॥
दस विध पाली दया का अंग। छांड्या मोह माया का संग ॥
बारह बरस रह्या छदमस्त। धर्‌या ध्यान जिन नासा दृष्ट ॥१२०॥
आनंद चिदानंदसौ चित्त। च्यारि कर्म त्रेसठि परकित्त ॥
टूटे घातिया कर्म कठन। छूटी प्रकृति अैसी उतन ॥१२१॥

कैवल्य

बैसाख सुदि दसमी सुभजांन। उपज्या प्रभु कुं कैवल ग्यान ॥
इंद्रादिक च्यारों विध देव। जे जे धुनि करि कारन सेव ॥१२२॥
पुहप वृष्टि फूलन की वास। गंधोदिक सुर करें उल्हास ॥
ऐरापति साज्यो गयंद। चली अपछरा सूरज चंद ॥१२३॥
जोजन एक रच्यो समोसर्‍ण। गणधर ग्यारह बांणक वर्ण ॥
तीन षातिका गोपुर चारि। पदमाकरि पुहप कति बार ॥१२४॥
मच्छ कच्छ जलचर खग आदि। बैर भाव अंतरि गतिवाद ॥
तीन कोट कंचन के कीये। छत्री कलस रतन जड़ दीये ॥१२५॥
सुर सूत्रधार करे आरम्भ। रच्यो अगाउ मांनसथंभ ॥
देषत मांन प्रकृति को हरें। निरमल मति अंतरगति करें ॥१२६॥
प्रथम असोक सोक कुं दहै। भविजन लोग तमासै रहै ॥
अग्रे भूमि रंगि मन पची। बारह सभा मनोहर रची ॥१२७॥

समवशरण

तीन छत्र की महिमा कहै। तीन धर्म की सोभा लहै ॥
समोसरण थानक कल्यांण। चतुर बदन बइठइ भगवान ॥१२८॥
बीच सभा मंडप शुभ ठौर। सिंघासन कौ राषी ठौर ॥
पंच हजार दंड उत्तंग। अंगुल च्यार रहैं जिन अंत ॥१२९॥
विपुलाचल परबत सुभ थांन। समोसर्‍ण पहुंता तिहां आन ॥
सुनि श्रेणिक पूजा कौं गया। सह परिवार गमन तिन किया ॥१३०॥
दे प्रदक्षिणा लाग्या पाय। बहुत भांति बइठे सुषपाय ॥
बीनती सौं जौरे कर दोइ। कहिए धरम सुने सब कोइ ॥१३१॥

महावीर वाणी

श्री जिनवर की बांनी होइ। बारह सभा सुने सब कोइ।।
गौतम स्वामी कही बषांन। द्वादस सभा सुनै दे कान ।।१३२।।

सप्त तत्व अर पंचास्तिकाय। षट द्रव्य नौ पदारथ थाय ।।
जीव अजीव आश्रव बंध। संवर निर्जरा मोक्ष की रिध ।।१३३।।

जीव तत्व दोइ विध कहे। एक सिध एक संसारी रहे ।।
तां मई दोई भव्य अभव्य। बहु संसार रुलै ए सब्य ।।१३४।।
भव्यनिकर उतरै भव पार। अभव्य रुली चिहुं गति मंझारि ।।
भरम्यौ लष चौरासी जौनि। ते दुष बरन न सकै कवि कौन ।।१३५।।
जनम जरा दुष भुगते घने। श्री जिन वचन तन मन दे सुने ।।
भ्रमत भ्रमत नर देही धरी। साध संगति मति पाई खरी ।।
तीनि रतन सौ उपजी रुच। दर्शनग्यांन चरित्र जु सच ।।१३६।।
तिहुं काल सामायक करे। सात विस्न आठौं मद हरे ।।
सोलह कारन का व्रत धरै। क्षमा धर्म दस विध विस्तरै ।।१३७।।
च्यारदान दे वित्त समांन। औषद अभय अहार समान।
सास्त्र दीयां पावै बहुग्यान। विनयवंत होई तजि अभिराम ।।१३८।।
करमकाटि पहुंचे निरवान। सिवपद पावै सुख सुथान ।।
और जे अंधकूप मैं जीव। तिनुले चिरकाल की नींव ।।१३९ ।।
दया धरम जिनकौं न सुहाय। पूजा दांन नहि ठहराय ।।
सास्त्र सुनत उपहरो अकुलाइ। मिथ्यावाद करै बहु भाइ ।।१४०।।
जिहां होय जीव का बंध। तिसकुं ध्यावै मुरिख अंध ।।
मांचे कूदे करि मिथ्यात्व। भोजन करै दिवस में राति ।।१४१।।
जे कछु करै कर्म अरु अकर्म। जासौ कहै हमारा धर्म ।।
मूंड हलावै पाषंड करै। जीव दया का भेद न धरै ।।१४२।।
अणछाण्यां जो पीवै नीर। करै स्नांन मंजन सरीर ।।
कंदमूलादिक सब फल षाय। सत संयम पाल्यौ नहि जाय ।।१४३।।
औसी जे सेवै मिथ्यात्व। ते नर मर करि नरकै जात ।।
भव भव सहै ते दुष संताप। नर्क निगोद लहै विललाप ।।१४४।।
अइसी समझि मिथ्या परिहरौ। जैन धर्म निश्चै सौं करो।
संयम वर्त्त करो मन ल्याय। सुख संपति बाधै अधिकाय ।।१४५।।

जा प्रसाद बहु लक्ष्मी होइ । पूजा दान करो सब कोइ ।।
सफल लक्ष्मी सोही जांन । दुखित दलिद्री कों दो दांन ।।१४६।।

पूजा दान प्रतिष्ठा करै । देव सास्त्र गुरु मन में धरै ।।
धर्म तीर्थ को चलावै संग । विधसौं पालै धर्म के अंग ।।१४७।।

श्री जिन भवन संवारं भले । दया भाव के मारग चले ।।
पूजा रचना करैं सांतीक । तातैं बढै धर्म की लीक ।।१४८।।

मंदिर कूप बगीचे बाय । तिहां पंथी बैठे सुष पाय ।।
वनवासी मुनि ले विश्राम । सुमरै तिहां श्री जिन नांम ।।१४९।।

छह दर्शन कुं आश्रम देई । आदर भाव विशेष करेई ।।
सज्जन कुटंब सु राषै भाव । दान देयण की मनमैं बहु चाव ।।१५०।।

भूपा भोजन प्यासां नीर । सरल चित्त जानैं परपीर ।।
पुनि संयोग लहै गति देव । नरपति खगपति उत्तम कुल भेव ।।१५१।।

ऊंचे कुल में पावै ठोर । ता सम सुखी न दूजा और ।।
कारण पाय जाय सिव पंथ । धरै भाव मुनिवर निर्ग्रन्थ ।।१५२।।

सोरठा

दान का फल

देहि चउविध दांन, अर्थ पाय धर्महि करै ।
ते पावैं निरवांन, जस प्रगटै तिहुं लोक में ।।१५३।।

चउपई

धन पाया कछु पुन्य न कीया । अपजस पोट अपन सिर लिया ।
आपै खाय न खुवावै और । सदा बहै चिंता की ठोर ।।१५४।।

छह रुति कदे न मानैं सुख । भली वस्तु नवि मेल्है मुख ।।
राति दिवस भ्रमतैं ही जाय । आर्त्त रौद्र में काल विहाय ।।१५५।।

जोडि द्रव्य धरती तल दीयो । कैसे काहूनें सौंपियो ।
कै वह धन लेवैं हर चोर । कै षोया जुवा की ठोर ।।१५६।।

कै वह सात विसन मौं गया । कै रिण दिया तिहां थकी रह्या ।।
कैइ राजिमें लीया दंड । किरपन भया जगत में भंड ।।१५७।।

सब कोई बोलैं मुंह दै गार । पापी लीया पाप का भार ।।
पचि पचि जोड्या अर्थ भंडार । ताकी जात लगी न बार ।।१५८।।

तबै किरपन बहुतो पिछताइ । तबै भुरयां बनै न सुदाइ ।।
मरिकैं भ्रमैं चहुंगति बीच । पावैं गति ओ नीच हि नीच ।।१५९।।

नरय तिरय गति भुगतै आय । जहां न कोई होइ सहाय ।।
लछमी का फल सोई सही । तीन भुवन में जस कीरति लही ।।१६०।।

सदावर्त दीना कर दिया । अपना कारज उनही किया ।
अपने संग सुजस को लिया । उसका नाम जगत में भया ।।१६१।।

दोहा

जे लछमी बहुते जुडै, करै पुन्य नहि कोइ ।।
नरकां का दुख बहु सहै, जाय भवांतर पोइ ।।१६२।।

चउपई

श्री जिनवाणी अगम अगाध । पूजित हैं प्राणी कौं साध ।।
रवि पुहता अस्ताचल ठौर । श्रेणिक आया अपनी ठौर ।।१६३।।

भई रयण ससि का उद्योत । पृथ्वी ऊपरिसों भई जोत ।।
उज्ज्वल बर्णो मंदिर बहु भांति । छूटि रही ससि हर की कांति ।।१६४।।

सोमवंसी फूले बहु फूल । बने सरोवर सुष के मूल ।।
महा सुवास पवन की डोल । दंपति रहै सुष करैं किलोल ।।१६५।।

घर घर कामिन गावैं गीत । तासु वयण सुभ उपजै प्रीत ।।
गोरी अबला तरनी नारी । सब सोहैं ससि की उनहार ।।१६६।।
सौंधा फूल पांन सुषवास । रति रति भोग रमैं अतिहास ।।
श्रेणिक राय सभा संयुक्त । जिनवाणी गण कहै बहुत ।।१६७।।
सुष सेज्या पोढे थे भूप । उत्तम वस्त्र सु महा सरूप ।।

श्रेणिक राजा द्वारा स्वप्न

सुपनें मांहि विचारं ध्यांन । रामचंद्र गुन का व्याख्यान ।।१६८।।

रामचंद्र त्रिभुवन पति राय । लछमन के गुण कह्यां न जाय ।।
लंकापति रावन दस सीस । ताकै भुजा विराजैं बीस ।।१६९।।

कुंभकरण बिभीषण है वीर । महाबली कहिये रणधीर ।।
इन्द्रजीत रावण का पूत । ताका बल कहै बहुत ।।१७०।।

आचार्य रविषेण ने रावण के दस शीष नहीं माने हैं ।

कहै इन्द्र नें हम बसि कीया । आगम्यां बांधी मटक मैं दीया ।
नवग्रह बांधि कराई सेव । स्वर्ग लोक के जीते देव ।।१७१।।

इह आश्चर्य मेरे मन घणां । इसा वचन मिथ्यात का सुण्या ।।
इंद्रदेव का स्वर्ग निवास । नवग्रह रहैं इन्द्र के पास ।।१७२।।

तिहां रावन पहुंचा किस रीत । इन्द्रजीत नें बांध्या जीत ।।
इह पृथ्वीमति भुवि परि रहै । किस विध जाय इन्द्र नें ग्रहैं ।।१७३।।

जो सुरपति कोपै मन मांहि । रावण नें भसम करै छिन मांहि ।।
जा के बल को अंत न पार । वासैं कौन अडै भुभार ।।१७४।।
जे ते लरैं ते सबहू मरैं । तो इह सत्य वचन जिय धरैं ।
नवग्रह कहै स्वर्ग विश्राम । वे केम करैं आइ इहां काम ।।१७५।।
कुंभकरण नें कहैं बहु सूर । नींद छमासी सोवैं सूर ।।
वजै दमामा बहु सरणाय । कैसैं नाव ऊपर ह्वैं जाइ ।।१७६।।
तेल भरया कडाह अवटाइ । दीहु कान में देहो लुराय ।।
तोउ न जागे एण उपाइ । जे उह जागैं किस है भाय ।।१७७।।
भूष षट्मासी कहियन जाय । जोकु दृष्टि पडै सो खाय ।
हाथी घोडे ऊंट मिल जाय । तोउ न क्षुधा उदर की समाइ ।।१७८।।
इह संसै मेरे मन उचै । काचा मांस बाहि किम रुचै ।।
काचा मांस न खावैं बिडाल । केम भषैं प्रथ्वी भूपाल ।।१७६।।
जाग्यो राय विचारैं एह । श्री जिन तैं भाजैं संदेह ।।
बीती निसा उदय भयो भांन । बजे बाजित्र घुरैं निसान ।।१८०।।
सकल लोग उठे प्रभात । करि सनांन सुमरण बहु भांति ।।
अपने अपने उद्दिम लगे । बाल वृद्ध सब ही जगे ।।१८१।।

श्रेणिक की राज सभा

भूपति आभूषण सब साजि । पट्ट बैठा तबै श्रेणिक राज ।।
देस देस के भूपति आइ । नमस्कार करि लाग्या पाउ ।।१८२।।

राजसभा में भूपति घने । नामावली कहां लग गिने ।।
राजा वचन कहै सो प्रमाण । चलौ करन दरसन भगवान ।।१८३।।

समवसरण की ओर प्रस्थान

सह परिवार गमन तब किया । अस्व गयंद बहुत सा लिया ।।
के घोडा के रथ के सुषपाल । हस्ती पर बैठा भूपाल ।।१८४।।

आगे बटोतं किंकर चले । गली सकल गमराई भले ।।
जिहां तिहां हुवा छिडकाउ । ताथई बहुत विराजै ठांउ ।।१८५।।

कोईक आइ अटारी नारि । देखै झांक झरोखा द्वारि ।।
अग्रे नाद बाजै बहोत । हय गय रथ सोभा अति होत ।।१८६।।

सेना साथ राय अति घनी । जिसकी सोभा जाय न गिनी ।।
विन सोभा सोभै बहु भांति । सकल लोग आवै जिन जात ।।१८७।।

समोसरण देखियो नरिंद । उतरि भूप सुमरियो जिनंद ।।
पुहता राय जाइ समोसरन । जीव जंत का पातिक हरन ।।१८८।।

दई प्रदक्षिणा करि डंडोत । श्रेणिक पूछी प्रश्न बहोत ।।

भगवान महावीर से रघुवंश कथा को जानने की इच्छा प्रकट करना

स्वामी कहो कथा रघुवंस । क्यूं संबूक कीया निरहंस ।।१८९।।
षडदूषण मारया किह भांति । विराधित आइ मिल्या रघुनाथ ।।
किम सीता का हुआ हरन । कइसैं हवा रावण मरन ।।१९०।।

कैसे आय मिल्या सुग्रीव । परपंच मारि किया निरजीव ।।
वभीषण किम पायो राज । कुंभकर्ण किया मुक्ति का साज ।।१९१।।

इंद्रजीत अरु अन इंद्रजीति । किम विध किया उसै भयभीत ।।
राजा पवन अंजना विवाह । क्यूं वियोग हुआ बहु ताहि ।।१९२।।

किम उपज्या हणौंमान बलवान । कैसे सुधि सीता की आंनि ।।
रामचंद्र की कीनी सेव । कैसे लंघ्या समुद्र का छेह ।।१९३।।

सीता आंणी दल मंझार । किह कारण सा दई निकार ।।
आदि अंत की पूछी बात । सब ही का संसा मिट जात ।।१९४।।

राम कथा का महत्व

श्री जिननाथ की वांनी हुई । द्वादस सभा सुनैं सहु कोई ।।
गौतम स्वांमी कहैं बखांन । सकल सुनैंहु तुम धरि ध्यान ।।१९५।।

स्वयंभू रमण सायर चहुं ओर । वा सम समंद नहीं को और ।।
ज्यौं कठवत्ती नीर सौं भरै । तामें एक कटोरा धरै ।।१९६।।

इस विध द्वीप समुद्र मझार । तिनका है बहुत विसतार ।।
तामैं समुंद सुं लवणोदधि । जंबुदीप है ताकै मधी ।।१९७।।

मेरु सुदर्शन जाके बीचि । बज्रमई है ताकैं नींच ॥
सो बनमई बहुत बिसतार । कहां कहां बहु रत्न अपार ॥१९८॥
ऊंचा सिखर अकास सुं लागि । अंतर एक बाल सम नागि ॥
जोजन महा इक लाख प्रमांण । केवल वांणी सुण्यां बषांण ॥१९९॥
पंचमेरु अढाई द्वीप । दुगुणे दगुणे कहे समीप ॥
और कहे कुलाचल षटमेर । एक एक षंड ताके मेर ॥२००॥
छह षंड भये एक तई एक । दीर्घ तीइ बिजयार्द्ध अनेक ॥
लघु विजयार्द्ध अनेक जु और । नउदह नदी निकसी गिर पोर ॥२०१॥
अठसठ गुफा कही है तिहां । इक इक मेर कुलाचल तिहां ॥
अकृत्तम चैत्याला तिहां बने । उनके भेद पुराणन भने ॥२०२॥
सत्तरिसौ षेत्र पंचमेरु मांझ । इह विध चित में जानूं सांच ॥

भोगभूमि का वर्णन

सदा सास्वता इक सौ साठ । विनासीक जानूं दोय आठ ॥२०३॥
सोवर्ण मई जानुं भोगभूमि । तामैं कल्पवृक्ष रहे झूमि ॥
जब तैं जुगल हुवैं उतपन्न । भुगतैं सुष जे बंछित मन ॥२०४॥
जैसे स्वर्ग लोक के देव । अइसैं ही जुगलियां का भेव ॥
तो भी श्रेणिक पूछें कर जोडि । किस पुन्य पावैं असी ठौर ॥२०५॥
तबं भगवंत कहै समझाय । दान सुपात्र तणां फल राइ ॥
मन वच काय दीया जिन दान । तातैं रिध लहै असमांन ॥२०६॥
ज्यूं वट बीज तुच्छ प्रमांण । उपज्यां भया बडे उन्मान ॥
ताकी छाया शीतल घणी । बहुत विस्तार कहै क्या गुणी ॥२०७॥
इण परिवधं सुपात्रां दांन । चौविह दीज्यौ चतुर सुजांन ॥
दांन कुपात्र तणां फल एह । बिनु विवेक जो कोई देई ॥२०८॥
सरस बीज बाधैं जो कोई । एक शालि एकेक ज होई ॥

चौदह कुलकर-

कुपात्र दान फल है यह तुछ । इह विध समझै चतुरविचक्ष ॥२०९॥
चौदह कुलकर का व्याख्यान । सुणों गुणी जन सुघड सुजांन ॥
प्रथम प्रतिष्ठ १ दूजा सनमित्त २ । षेमंकर ३ तीजा कुल थित्त । २१०॥
षेमंधर ४ सीमंधर ५ कुल कीया । सीमंकर षष्टम ६ कुल भया ॥
सप्तम बिमल ७ बहु कुलवंत । अष्टमं च चषमान गुनवंत ॥२११॥
कल्पवृक्ष जोति घट गई । वा सुर रयण प्रगट तब भई ॥

तब वे प्रगटे चंदरभांन । आश्चर्य भया सब के मन मांनि ।।२१२।।
बूझै बचन प्रमांन सु बात । अवधि विचार कही बहु भांति ।।
पूरब भव देखि विदेहु खेत्र । इनका प्रथमई परि उद्योत ।।
रवि प्रताप ग्रीषम बहु होई । निशा शीतल शशि ही की लोई ।।२१३।।
तब ते जानौं सूरज चन्द्र । समझया लोग भयो आनन्द ।।
जसावी नवमां ६ दसमां अभिचंद १०। एकादश चंद्राम कुलनंद २१४ ।।
मरुदेव १२ प्रसन्न सेनजित सेव १३। नाभिराय १४ चउदहां कुलदेव ।।
कोई कोई कलप वृक्ष रह्या । नवां नग्र सहज में भया ।।२१५।।

अन्तिम कुलकर नाभिराजा

सोवन मिदर सह्त रतनै जडे । देषत सुपखी गह भरे ।।
नाभिराय जगत भूपति । मरुदेवी राणी सुभमती ।।२१६।।
पंकज चरण अरुण छवि घनी । नख की कांति चंद्र दुति हूनी ।।
अति कोमल कदलीदल जंघ । मानौं मकरध्वज के थंभ ।।२१७।।
नेवर सबद हंस की चाल । मोती जड़ित पदारथ लाल ।।
फुनि कटि षीन सिंघ केहरी । रहै षोह बन में सुधि हरी ।।२१८।।
कंचुग्रो झलकित सोभई ठोर । तिन की पटेतर नाहीं और ।।
कंठ कपोल कंकन मुंदरी । सुंदर निमोलिक मणि जडी ।।२१६।।
कुंडल कर्ण जोति निर्मली । सभा सकल विराजै भली ।।
बदन पटंतर कोई नहीं चंद । दशन जोति जानूं कलिकंद ।।२२०।।
अति सुरंग मुख बिना तांबोल । बानी सरस कोकिला बोल ।।
कीर नासिका बेसर बुनी । मोतिन की सोभा छबि घनी ।।२२१।।
दीर्घ नयन कमल की भांति । तिनकी सोभा कहै किस भांति ।।
सीस फूल सौभै बहु भाय । बेणी की छबी कही न जाय ।।२२२।।
बर्नै कबि गुन पार न लेई । सामुद्रक की सोभा देई ।।
छह मास अगाउ इह भेष । आसन कंप्यो सुरपति देव ।।२२३।।

मरुदेवी रानी की सेवा

अवधि बिचारि समझियो इंद । ह्वै अवतार प्रथम जिणचंद ।।
सोलहै देवि कुमारी टेर । मरुदेवी पं जाऊ इह बेर ।।२२४।।
सेवा कीज्यो नाना भांति । गर्भ सोध कीजो दिन राति ।।

कोई मर्दन करावैं अस्नान । केई आणि खुवावैं पान ।।२२५।।
कंचन भारी भरिकैं नीर । जानों भरया समुद्र जल षीर ।
कोई तेल फुलेलहि आंन । कोई राग सुनावैं तांन ।।२२७।।
केइक कन्या दाबै पाउ । सेवैं अपनी अपनी ठांउ ।।
केई दीवट नीरष बालि । केई आभूषण धरैं संवारि ।।२२८।।
चारा भूषण सोलह सिंगार । मांगै जब देवई तिण बारि ।।
निसवासर सेवा बहु करैं । वचन वचन गुण हिरदै धरैं ।।२२९।।
उत्तम सज्या करी सुवास । सेवा करैं सषी बहु पास ।।

सोलह स्वप्न

मरुदेवी सोवैं सुख चैन । सुपना देखै पछिम रैन ।।२३०।।
हस्ती स्वेत देष्यो गुनवंत । वृषभ एक देष्यो मयमंत ।।
दीष्यो स्यंघ गर्जना करंत । कंचन कलस रतना जडंत ।।२३१।।
पुहपमाल देषी विगसान । सूरज उदय देष्यो परभान ।।
दीठो पुरनवासी चंद । मीन जुगल सौं मन आनंद ।।२३२।।
देष्यो समंद महा गंभीर । सिंहासन निरष्यो मणि हीर ।।
देष्यो सुमेर गिर लषमी सार । देव विमान देष्यो सुरकार ।।२३३।।
देख धरणेन्द्र रत्नमई भूमि । देषी अदधी अग्नि महा निधूंम ।।
अइरापति की उज्वल देह । आवत दीठा अपने गेह ।।२३४।।
ए सुपना सोलह गुणवंत । उठि करि निज पति सुं पुछंत ।।
नाभिराय सुणि तिय की बात । भयो आनंद सुष उपज्यो गात ।।२३५।।
मन वच काय सुपनि फल सुने । निहचैं सयल पाप नैं हने ।।

स्वप्न फल

हुवैगो पूत लक्षण संयुक्त । मानों पृथ्वी पर रवि उद्योत ।।२३६।।
अवर जे सुर अमर पद बसैं । तिनकी मणि चरननी चई घसैं ।।
तोडै भौसागर का जाल । परम सरीर कनक की माल ।।२३७।।
विद्याधर नरपति पसुपति । इनमें बहुत चढावैं रती ।।
इन्द्र फणीन्द्र करैंगे सेव । तीन लोक के दानव देव ।।२३८।।
जानहूं पंच ग्यांन का धनी । सुणि करि वचन उलिसी घणी ।।
आषाढ बदि दोज सुभ घड़ी । प्रभू नै आइ गर्भ थिति करी ।।२३९।।
आसन कंपे सुरपति राय । समझ्या चित्त ग्यांन बहु भाय ।।
सिंघासन तजि नमणि करंत । धनद कुमार बुलायो तुरंत ।।२४०।।

नगर अजोध्या सवारी जाय । बारह जोजन की लम्बाइ ।।
चौडी नव जोजन कै भाय । कनक भूमि की करियो ताय ।।२४१।।

रतनवृष्टि फूलन की गिरेष्ट । बजै दुंदुभि महा सिरेष्ट ।।
कंचन कोट रतनमई सार । मंदिर सस भूमिए संवार ।।२४२।।

ऊंची पउरी चित्र बहु बने । रखवाले तिहां ठाडे घने ।।
चिहुं प्रबर वापिका गंभीर । तामें भरचा निरमला नीर ।।२४३।।

आगें सूत रचे बाजार । चौडी नींव बडे विस्तार ।।
सप्तविरगां मंदिर सब किये । छत्री कलस रतन के दिये ।।२४४।।

करचो चितेरे देव कुमार । सुरग लोक की सी उनहार ।।
प्रजा सुखी बसैं सब ठौर । जे ते किसबदार है और ।।२४५।।

प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का जन्म

चैत्र बदी नौमी सुभ वार । उत्तराषाढ नक्षत्र सु सार ।।
भयो जन्म जब जान्यो इन्द्र । मनमें बहोत किया आनंद ।।२४६।।

आसन छोडि प्रदक्षणा दई । सबने मुकुट मणि नीची नई ।।
जैं जैं सबद भया जब परा । सत्ताईस कोडि चली अपछरा ।।२४७।।

देव विमान छायो आकास । वरषैं पुष्प सुगंध सुवास ।।
नृत्य करैं बहु गावैं गीत । बाजैं पटह दुंदुभी रीत ।।२४८।।
ताल मृदंग बजावैं बीन । गावैं सुर जिन गुण परवीन ।
भयो कोलाहल सुर्णौ न कान । आये नगर अजोध्या थान ।।२४९।।
नृप के द्वारैं भइ अति भीर । इन्द्रानी राज लोक के तीर ।
माया का बालक रचकर राखि । श्री जिन लीया बीनती भाख ।।२५०।।

लीदउं धाई लीया चुराय । इंद्रानी ले चली उठाय ।।
ह्वां तैं निकसि इन्द्र कौ दिया । देष वदन हर्षित अति हिया ।।२५१।।

जन्मोत्सव

सहस नयन करि देषै रूप । तीऊन त्रिपति सुरपति भूप ।।
बइठ गयंद मेरु ले गये । पांडुक सिला महोछव भये ।।२५२।।

षीर समुद्र जल कंचन कलस । भरे नीर जे प्रासुक सर्स ।।
सहस अठोत्तर इन्द्र जु भरे । अवर देव ले कंचन धरे ।।२५३।।

आदिनाथ का बाल्यकाल

दूध दही घृत रस की धार । पूजा रचैं बे बारंबार ॥
ले आए जिहां आदि जिणंद । कलस ढालि मन भयो आनंद ॥२५४॥

वज्र सूई से छेदे करण । पहिराये बहुते आभरण ॥
कज्जल नयन मुख दिया तांबूल । कुंडल रत्न धरा अनमोल ॥२५५॥

बाजूबंध माला ताईत । तातैं होय दूरि भयभीत ॥
कटि करधनी पाय घुंघरा । पहराये पुहपई सेहरा ॥२५६॥

करि आरती असतुति घनी । ते गुण सोभा जांय न गिणी ॥
चले देव प्रभु कुं सिर लिये । बहुत आनंद प्रेम सुख किये ॥२५७॥

मरुदेवी नष दीया जिणंद । तिहुं लोक में भयो आणंद ॥
धनुष पंचसय कंचन काय । लक्ष चौरासी पूरब आय ॥२५८॥

सुरपति करचा जनम कल्याण । पहुंचे सकल आपने थान ॥
दुतिया शशि कांति ज्यों चढ़ै । यौं श्री जिनवर पल पल बढ़ै ॥२५९॥

जननी गोद जब ही लेइ । देष रूप मन सुष धरेइ ॥
लेकर पिता लगावै हियो । बहु आनंद उपजत हिये ॥२६०॥

शारीरिक सुन्दरता

कनक वरन काया अतिबनी । नख की जोति कांति दुति हनी ॥
कोमल चरन केल सम जंघ । कटि सोभै जिम के हरि सिंघ ॥२६१॥

कर पल्लव भुज बने अनूप । हृदं कंठ सोभा अति रूप ॥
दंत होंठ रतन की जोति । सुभ्र कपोल सु अति उद्योत ॥२६२॥

नासा कीर नयन अति बड़े । मस्तक किरण जोति मित चढ़े ॥
कोटि भांन जो करैं उद्योत । तऊ न सर भर जिन की होत ॥२६३॥

स्यांम केश लांबे सुष करण । अति सुगंध नीलांजन वरण ॥
लक्षण सहस अठोत्तर बने । सो मुष गोचर जाहि न गिने ॥२६४॥

बालक रूप देव के पूत । से ले प्रभु ज्यो आये बहुत ॥
रतन चूर अरगजा कपूर । क्रीडा करैं उडावैं धूरि ॥२६५॥

बहुत भांति के फेरैं भेष । ते खेलैं बहु युगति विसेष ॥
ऐसी जुगति बहुत दिन गए । श्री जिन जोबन पदई भए ॥२६६॥

आदिनाथ का विवाह एवं सन्तान प्राप्ति

नंद सुनंदा ब्याही नारि । रूप सुलक्षण शशि उनहार ॥
प्रथम पुत्र तातैं उतपन्न । ब्राह्मी भई भरत की बहन ॥२६७॥

बहुरयो दूजी नंद रूप सौं भरी । रूपवंत गुन लावण्य धरी ।।
गर्भ ताहि पुत्र सौं भए । काटि करम सो मुकतिहि गये ।।२६८।।

प्रथम बाहुबलि पाछैं और । तार्थे सकल रिद्ध दई जोडि ।।
अवर भई पुत्री सुन्दरी । सील रूप प्रति शोभा भरी ।।२६९।।

राज्य प्राप्ति

नाभिराय प्रभू आयस किया । राजभार रिषभ नैं सौंपिया ।।
कलपवृक्ष सहु गए बिलाय । सहु लोक की खुध्या न जाय ।।२७०।।

ताका भेद न पावै कोइ । भूष प्यास दुष दूर ही होइ ।।
आये नाभिराय के द्वार । हम किम जीवैं प्राण अधार ।।२७१।।

तब थे कलप वृक्ष संसार । मनसा भोजन करतं आहार ।।
अब वे कलपवृक्ष हैं नाहीं । हमरा किम होवै निरवाह ।।२७२।।

नाभिराय की आग्या पाय । रिषभदेव पै विनवै आइ ।।
मननी बात कहैं सब लोग । कैसे जीव का मिटै वियोग ।।२७३।।

राजा नैं सब लिये बुलाय । सकल लोक नैं पुछे राय ।।
सुनि परजा दुष किया विचार । उदिम बताय किया उपगार ।।२७४।।

तीन वर्णों की स्थापना

महा सुभट ते क्षत्री किया । षडग बंधाय सूर व्रत दिया ।।
धरम दया कीज्यो मन लाय । पापी दुष्ट मारो धाय ।।२७५।।
रण संग्राम न दीजे पूठि । सनमुख झूझ्यो डिगै न दीठ ।।
स्वामी कार्य को दीजे प्रांन । ज्यूं तुम पावो स्वर्ग विमान ।।२७६।।
जे क्षत्री रण मैं से भजैं । कुल कलंक लागै अनतजै ।।
जे क्षत्री सहु पुर रक्षा करैं । रण साम्हौं जाय कै लरैं ।।२७७।।
निज परजातैं राषैं सुषी । दया करैं नर देषी दुषी ।।
धर्म दया करि यासौं ध्यान । भक्ष अभक्ष तजै धरि ध्यांन ।।२७८।।
जिनकै हिये थी दयाकी धनी । थापे वइस वनिक बुधि दिनी ।।
दया दान किरिया सौं सुधि । पाप कर्म सों करैं न मनी ।।२७९।।

अवर जे नर थाई उत्तम भाव । जैसी ताहि बतावैं ठाम ।।
अविवेकी जे अपर अयान । तिरानैं थाप्पे कर्म्म किसांन ।।२८०।।

हल जोति कर खेती करैं । उपजै साथ रासि तब करैं ।।
होए अन्न भुगतै संसार । उनकौ दिया इसा उपगार ।।२८१।।

थापी सब छत्तीसौं पौंण । अपने अपने मारग गौंण ।।
हुवा छत्री वैस सुद्र ए तीन । इह विधि समुझो चतुर प्रवीन ।।२८२।।
बरषै मेघ ऊपजै धान । गाडे पांन फूल सब थान ।।
मेवा सब विध उपजै जिहां । परजा सुखी विराजै तिहां ।।२८३।।
राजनीत सौं पावै चैन । दुखी न कोई दीवै नयन ।।
धर्मरीति सौं बीतै काल । दुखी दरिद्री नहीं दुकाल ।।२८४।।
राज करत पूरब गये बीत । लक्षतियासी इम भोग की रीत ।।
एक लक्ष पूरब रही आव । सुरपति मन है विचारै भाव ।।२८५।।
ए प्रथम भगवंत अवतार । इनतैं धरम चलै संसार ।।
ए माया महि रहै भुलाय । सवेगी ए किरण पर थाय ।।२८६।।

नीलांजना द्वारा नृत्य

चैत्र बदी नवमी श्रेष्ठ घडी । नीलंजना पातर अवतरी ।।
आय राय की सभा मझार । नृत्य करै गावै गुण सार ।।२८७।।
दोय घडी आयुर्बल रही । पूर्ण भई गिरपडी जे मही ।।
नाचत नाचत तिन लई पछाडि । तब राजा बोलै हुंकार ।।२८८।।
बेग उठावै ठाडी करै । बेर बेर गिर गिर वह पडै ।।
तब मंत्री बोले समझाय । याकी आयु पूरी इन ठाय ।।२८९।।

वैराग्य भाव

तब मनमें चेत्यो भूपाल । अचेत पणैं बीता यह काल ।।
अब कछु करूं धर्म की रीत । तातैं पाप हुवै भयभीत ।।२९०।।
जाण्यौं इह संसार असार । बुडत जीव ना पावै पार ।।
राग द्वेष आरति मुई रहै । भ्रमत जीव विश्राम न लहै । २९१।।
कबही हुवै देवगति भूप । कबही दुखी दलिद्री रूप ।।
कबही नर कबही तिरयंच । कबही मर करै परपंच ।।२९२।।
नट जिम भेष कीए तिन घने । दुष सुष और कहां लौं भने ।।
अब जो राखो आतम ध्यांन । जीव मैं धरि देखू पहिचान ।।२९३।।
प्रगटै धरम समर्भ सब कोइ । क्षमी रीत सुत कीने दोइ ।।
भरत नैं सूप्यौ पृथ्वी भार । बाहुबल पोदनपुर सार ।।२९४।।
निन्याणवै देस औरन कुं दिया । भयो संतोष सबै कै हिया ।।
अपणैं मनसौं विचारा ग्यांन । लोकांतिक सुर पहुंता आंन ।।२९५।।

जय जय सबद भया चहुं ओर । सिवका आनि धरी तिह ठौर ।।
धन्य धन्य भाषत सब को देव । चढे पालकी सग्यां न छेव ।।२९६।।

सिवका चढिय पराग बन गये । उतरि सिंघासन ठाढे भए ।।
नाम सिध समरया मन सौच । पंचमुष्टी का कीना लोंच ।।२९७।।

इन्द्रादिक श्राए सब देव । करि कल्याण चर्णां की सेव ।।
लीये केस ताईल में डारि । अवर सिराये समद मझार ।।२९८।।

तप कल्याणक इन्द्रकरि गये । ध्यानारूढ श्रीजिनवर भए ।।
अर जे पांच हजार नरेस । तेभी भए दिगंबर भेस ।।२९९।।

तपस्या

प्रभु नें धरत धरया षट् मास । अवर सकल बइठे वनवास ।।
उनपै भुषा रह्या न जाय । अनपांणी बिन गए मुरझाय ।।३००।।

जो फिर जांय भरत तैं डरैं । तातैं वे वन में ही फिरैं ।।
जैनधर्म की सहिय न आंच । फाटा भेष तिहां पर पांच ।।३०१।।

कोई सन्यासी जटा बधाय । जोगी जंगम भए कर्ण फटाय ।।
बारह बिध तप श्रीजिन करैं । चेतन चिदानंद चित धरैं ।।३०२।।

नासादृष्टि आतम स्यों ल्याय । पदमासन बैठे जिनराय ।।
नमि विनमि तहां पहुंता आइ । विनती करैं नमणि कै भाइ ।।३०३।।

तुम तजि राज लिया है जोग । छांडि दिये संसारी भोग ।।
भरत बाहुबली राजा किए । हमारी सुध न बिचारी हिए ।।३०४।।

हमकुं कोई बताबो देस । जहां जाय हम करैं प्रवेस ।।
श्री जिनराय तिहां छदमस्त । मुष थी कहै न एको सस्त ।।३०५।।

नमि बिनमि छोडे नहिं पास । राज्य भोग्य की छोडी आस ।।
तब धरणेन्द्र विद्या दो दई । ऐसी रिध लई तब नई ।।३०६।।

विजयार्द्ध का दीना राज । दोहुं का मन वांछित काज ।।
दस जोजन पर्यन्त उतंग । मणि माणिक तहां घणे दिपंत ।।३०७।।

दक्षिण दिस रथनूपुर नगर । उत्तर दिसि अलिकाविल अगर ।।
सब संयुक्त बिराजे गांव । लता लछमी नाना भाव ।।३०८।।

जैसी स्वर्गलोक की नारि । तइसी सर्व नयर मझारि ।।
करैं राज सुष भुगतैं भोग । रिषभनाथ मन ल्याया जोग ।।३०९।।

बारा विध तप आतमध्यांन । षष्टमास बिन अन्न न पान ।।
तब मनमें अइसी चित चीत । प्रगट करूं भोजन की रीत ।।३१०।।

आहार क्रिया

हमकौं भोजन बिना विहार । अग्रे हूंगी सूक्षम काय ॥
बिना आहार तप करया न जाय । असी समझि उठे जिनराय ॥३११॥

भोजन की विध लहै न कोइ । जिहां आवें तिहां आदर होय ॥
लाल पदारथ हीरा भेंट । मिलैं भूप नगरी सहु नेट ॥३१२॥

केई कन्यां कोई [illegible] । कोई कनक [illegible] ॥
केई रथ केई सुषपाल । मगनी बात न लहै भूपाल ॥३१३॥

ए सहु छोडि फिरै बहु मही । भोजन विधि को जाणैं नहीं ॥
हथनापुर कुरजांगल देश । राज करैं श्रेयांस नरेस ॥३१४॥

तिहां पहुंचे बीते छह मास । एक बरस मही सुध्या प्रास ॥
श्रेयांस सुभ सुपने पाई । मंत्री पूछैं तबै बुलाइ ॥३१५॥
कहै मंत्री फल सुपनां तणां । इष्ट पुरुष आवै कोई पाहुणा ॥
श्री भगवंत आवें तिह बार । राय आनंदित भया अपार ॥३१६॥

उतरि सिंहासन करि अंडोत । देइ प्रदक्षिणा करी नमोऽस्तु ॥
ज्यौं रवि फिरई मेर कौं ओर । यूं सोमैं नरपति तिह ठौर ॥३१७॥
धर्मबुद्धि इन मुख से कही । श्रेयांस नृप बहुतै लही ॥
बैठि सिंघासण गहि पडगाह । चरणोदक जल सीस चढाइ ॥३१८॥

साढा सातसैं कलस इक्षु रसी । स्वामी पिया देख सब खुसी ॥
अभयदान बोलैं कर जोरि । बरषै रतन साढी आठ किरोड ॥३१९॥
पुष्प वृष्टि भई बहु भांति । पहुंची सकल देश ए बात ॥
ठौर ठौर विधि लिष ले गये । दांन तीर्थ आदीश्वर किये ॥३२०॥
असी करि भोजन की रीत । अंतर है आतम सौं प्रीत ॥
सुनकर भरत मन में उल्हास । आये श्रेयांस के पास ॥३२१॥
बहुत भांति कीनूं सनमान । तो सम दाता और न जान ॥
दीये देस पुर पट्टन घने । आया भरत नगर आपनें ॥३२२॥

कैलाश पर्वत पर ध्यानारूढ होना

श्री जिनराज गये कैलास । तिहां देवता करैं निवास ॥
ध्यांन च्यार प्रांनी नै धरे । ताभ दोय षोटे दोय षरे ॥३२३॥
आरत रौद्र ध्यांन दुं हीन । तिनकर लेस्या षोटी तीन ॥
नरना कृष्ण नील कापोत । देह दुष जा कीये होत ॥३२४॥
आरति मैं तिरजंच गति बंध । तातैं प्रानी एस न बंधै ।
निसवासर षोटी चित गडै । रहई काल चिर बेली बढै ॥३२५॥

सूकर कूकर गैंडा रीछ । पदवी नीच बीत में तीछ ।।
जो तिरण धरई धरैं जियसंक । एही पुर्व जनम के श्रंक ।।३२६।।

आरत ध्यांन च्यार पद होय । इष्ट वियोग अनिष्ट संयोग ।।
पीड़ा चितवन भोग निदांन । ए प्रानी को दुषकर जानि ।।३२७।।

अनर्वांछित आगैं ही होय । इच्छा मन न धरैं नहीं जोड ।।
जे जोगीस्वर की व्रत धरैं । छठे गुणथांनक तैं खरैं ।।३२८।।

कुछित मरन सुरग गति रहै । मरकर तिरजंच गति कौं लहैं ।
रौद्रध्यान ए पाये च्यार । लछिन किंचित कहूं विचार ।।३२९।।

हिंसानंद मिष चौर्या त्रिषयानंद । करकस वचन अगति के बंध ।।
रुद्र परिणाम रहै नर तास । मुषतैं बुरी उपजे नित वास ।।३३०।।

निकल नरक तैं देही धरी । कै अच्या अधोगति पुरी ।।
अैसे चिह्न देषिए जिनें । पंडित वर्ग कहां लौं गिनें ।।३३१।।

जे धरि भेष तपी तप बढै । गुणथांनक पंचम जो चढै ।।
रात दिवस मन षोटी धरैं । मरकरि भूंम अधोगति परैं ।।३३२।।

षोटे ध्यांन जिन के मन रहैं । अैसे वचन ग्यांन में कहै ।।
ए दोइ ध्यांन ग्यांन आरूढ । धरम सुकल प्रानी कूं गूढ ।।३३३।।

धर्मध्यान के लक्षण कहै । प्रासुष क्षेत्र उपद्रव थी रहै ।।
दिव्य संगहन पूरी परजाय । चौथे काल मिलें जिम आइ ।।३३४।।

सीत उसन बरषा रित जोग । सुभ परणाम विवर्जित भोग ।।
नासादृष्टन मेरै अंग । इन्द्री वनज विसर्जित संग ।।३३५।।

प्राण संवर नाना भिन्न । नरि बाह्याभ्यंतर लक्षन चिह्न ।।
लोक स्वरूप विचारैं नित्त । सातव गुणस्थानक की थिति ।।३३६।।

लेस्या पीत पद्म की ठोर । टूटे पासि करम की जोर ।।
कै देवत कै हो भूपति । कै सिवमारग लागे रती ।।३३७।।

सुकल ध्यांन का सूक्षमभेद । उत्तम क्रिया भई सब छेद ।।
अंतर ध्यांन ग्यांन दिढ धार । दया सर्व की चित्त विचार ।।३३८।।

आतम भाव दाव को चढै । जिन केवली ग्यांन को बढै ।।
दसमें गुनस्थांनक दोइ करैं । उपसम सैंणी चढै ते गिरैं ।।३३९।।

दरसन ग्यांन चरण चित दिया । दया धरम दस विध कर लिया ।।
आनंद चिदानंद सौं ध्यांन । च्यार करम का करि अपमांन ।।३४०।।

प्रकृति तिरेसठ टूटी जांन । उपज्या प्रभु को केवल ग्यांन ।।
वर्ष सहस्र रहे छदमस्त । फागणवदि ग्यारस लही सुभ वस्त ।।३४१।।

केवल्य प्राप्ति

केवलग्यांन लबधि जब भई । बहुविध देव प्रदक्षिणा दई ।।
इन्द्रादिक किंनर संयुक्त । जय जय सबद करैं बहु उक्त ।।३४२।।
बारह जोजन रच्यो समोसरण । प्रांणी का मन संसाहरण ।।
बारह सभा मनोहर कही । तीन कोट कंचन के मही ।।३४३।।
बनी खातिका जल भरपूर । वृक्ष अशोक सोक करैं दूरि ।।
कलपवृक्ष अवर बहु रूप । वासावली न लागैं भूख ।।३४४।।
छह रितु के फूले फल फूल । ऊंची पौरि बनी समतूल ।।
मानस्थंभ संवारया और । सिंघासण की राखी ठोर ।।३४५।।
वृषभसेन गणधर गुणवंत । अपर तियासी अवर भगवंत ।।
पंच सहस्र दंड ऊचंत । चारि अंगुल अंतर अरिहंत ।।३४६।।
तीन छत्र कंचन मणि बने । चौसठि चवर देवैं गुण घने ।।
चौरासी गणधर जगदीस । च्यारि ग्यांन पंचम जिणईस ।।३४७।।
समोसरण थानक सुभथांन । चतुर बदन बैठे भगवांन ।।
भए चतुरमुख एकै धुनि । बारह सभा भव्य सब सुनी ।।३४८।।
बानी एक भेद नव सुनैं । गणधर कहैं लोग सब सुनैं ।।

उपदेश

निश्चय एक आतमा सार । द्वै विध इह निश्चय व्यौहार ।।३४९।।
दरसन ग्यांन चारित्र में लीन । च्यारि बेद में सुनें प्रवीन ।।
परमेष्ठी पंचम सुधि भई । अरु षट द्रव्य सर्व गुण नई ।।३५०।।
सप्त तत्त्व अष्टम गुण सिध । कहै पदारथ नवुं निध ।।
इन गुन भई गिरा सुनि भूप । है विदेह अरु तत्त्व स्वरूप ।।३५१।।
कथन समर्थ अनंत भवतनी । सिव कारन हित सब धनी ।।
पाप फेटनी पुण्य अनंद । सिथल भये कर्मन के फंद ।।३५२।।
बानी सब ही संबोधनी । प्राणी कुं आलस भेदनी ।।
जीवा सति जानैं पर लोक । अमूरत भुगतै सुभ सोक ।।३५३।।
अनुगुरु सकति रूप सब देह । चाहूं गति करि पूरन एह ।।
निश्चय सुद्ध नित्य जग जीव । अब संसारी गाढी नींव ।।३५४।।
खोटी क्रिया दुःख को मूल । रहै अनादि काल के भूलि ।।
आतम दरसन ग्यांन चरित्र । तत्व सबद है अंतर नित्र ।।३५५।।
असरण सरण जाति जिय सार । धरम एक त्रिभुवन आधार ।।
बारह व्रत सुश्रावक धरई । च्यौरासी मनस सरधा करेई ।।३५६।।

हिंसा चोरी अनरत जांनि । ब्रह्मचर्य परिग्रह परमांन ॥
गुणव्रत तीन धरैं मनु भाव । दिगव्रत देसव्रत मन चाउ ॥३५७॥

अदया का व्यौहार न करैं । शिक्षाव्रत च्यार विध धरैं ॥
सामायक पोसो बहु और । पूजा दान सुपात्र सुठौर ॥३५८॥

इण विध परम सुश्रावक होइ । जती धरैं तेरह विध सोइ ॥
पंच महाव्रत साधैं जोग । सुमति पंच वर्जित सुभ भोग ॥३५९॥

तीन गुप्ति पालैं दिन राति । मन वच काया संध्या प्रात ॥
सहस्र अठारा अंग समेत । सीलव्रत पालैं बहु हेत ॥३६०॥

आपण थकी बडी जो होइ । माता सम जाणइ सब कोइ ॥
जे अपनी सरभर की तिरी । जानहु बहनि धरम की धरी ॥३६१॥

आपण सेती छोटी आंन । पुत्री सम जांणौ करि ज्ञान ॥
बहुत भांति के सुनि उपदेस । तिणउ धरया मुनिवर का भेस ॥३६२॥

कोई सुनि श्रावक व्रत लेइ । वचन पयोग भांति बहु देइ ॥
कियो विहार दुंदुभि [illegible] । भाखी [illegible] गुन [illegible] ॥३६३॥

नृत्य करैं गावैं गुन गांन । सुरबाजे सुर दुंदु प्रमांन ॥
लोकपाल आगैं पग धरैं । सौ सौ कोस लगि सोभा करैं ॥३६३॥

आगे धर्म चक्र सुभ भई । चले प्रभु जय जय धुनि भई ॥
बीणा बेण मृदंग झालरी । संख नफीरी बाजैं घरी ॥३६४॥

घनहर चमउ मंदल धुंनि घोर । हासि कुलाहल करई सुरसोर ॥
सावधांन दसहुं दिश पूर । करई दुष्ट पापी नैं दूरि ॥३६५॥

भाखैं लोग पूछैं विध धर्म । त्रासैं असुभ पाप के कर्म ॥
दरसन अंध पंगु पग डोल । बहिर सुनैं मूक मुष बोल ॥३६६॥

इण अतिसय सौं करई विहार । पावैं जीव बहुत आधार ॥
धरम प्रगट प्रतिबोधे देस । फिर आये कैलास जिनेस ॥३६७॥

समोसरण में राजत धनी । च्यार ग्यांन चौरासी गुनी ॥
मति श्रुति अवधि ग्यांन के धनी । मनपर्यय केवल गुन गुनी ॥३६८॥

सम्राट भरत द्वारा दिग्विजय

भरत चक्र पाया सुभ ठौर । देव सहस्र सेवैं कर जोर ॥
नवविध अष्ट सिद्धि संयुक्त । चौदह रतन सुलछि बहुत ॥३६९॥

हय गय वाहन अधिक असेस । सहस्र छयानवैं नवैं नरेस ॥
सहस्र छयानवैं नारी भनी । ताकी उपमा जाय न गिनी ॥३७०॥

भरत भूप साधे छह खंड । देव दानव पैं कीया दंड ॥
आये अजोध्या देस सब जीत । चक्र न चलैं भई मन चित ॥३७१॥

कवरण देस स्याधो बिन रह्या । तब मंत्री सब ब्योरा कह्या ॥
निन्याणवैं तुम्हारे वीर । इतादेस भुगतैं बलवीर ॥३७२॥

रहई एकठा बहुत सनेह । रूपवंत कंचन सम देह ॥
मानैं नहीं तुम्हारी आन । ताथी चक्र न मानैं थांन ॥३७३॥

ऐसी सुनिकर भेज्या दूत । उनको बहु समझायौ बहूत ॥
सेवा करो मांन मुझ ग्रांन । मंत्री लिख भेज्या फरमांन ॥३७४॥

गया दूत कागद दे हाथ । मुख सौं वचन कहे बहु भाति ॥
भरत चक्रवत बाहुबली । तुम सेवा करौ तास की भली ॥३७५॥

आग्या मांनहु सेवरौ । तुम निचंत क्यू बैठे घरौ ॥
अब तुम चलौ हमारे साथ । चलो बेग पगलावो माथ ॥३७६॥

इतनी सुणिते भणां कुमार । भरत राज भुगतैं संसार ॥
हमनें देस पिता दे दिये । ते भी चुभई भरत के हिये ॥३७७॥

जदवहु अजहुन त्रिपत न भया । तो ए लेहु सब एह हम दिया ॥
छांडि रिधि ते गए कविलास । दिक्षा लई पिता के पास ॥३७८॥

फिरया दूत भरत पं गया । सब ब्योरा सेती वरनया ॥
भरत सुण्यां वे हुवा जती । किया सोच मन में बहु अती ॥३७९॥

दूत वयरण बोलीया कठोर । उनकै मन कछु बंठी ओर ॥
बार बारि भरत पछताय । तोउं न चक्र यढ़ भीतर जाय ॥३८०॥

फिरि मंत्री पूछे सुबुलाय । कहे मंत्री सुनि पृथ्वीराय ॥
बाहुबलि पोदनपुर धनी । ताके संग सेन्यां है घनी ॥३८१॥

वह आग्या मानत है नाहि । ताथी चक्र न बैठहि ठाम ॥
इतनी सुनि भेजीया वसीठ । सूरा सुभट वचनां धीठ ॥३८२॥

पोदनपुर का वैभव

पत्री लेकर चाल्या वकील । गया पोदरणपुर न लाई ढील ॥
देख्या नगर सुखी सब लोग । कीजे पान फूल को भोग ॥३८३॥

ऊंचे मंदिर सब इकसार । ढूंढता पहुंता राजदरबार ॥
सींचा पांन घर घर के बीच । पीकतणी गलीयां में कीच ॥३८४॥

घर घर नारी जांणि अपछरा । राजमहल सब सेती खरा ॥
पौलयांन देख्या दरबार । ते सोभैं भूपति अनुहार ॥३८५॥

ताहि देष मन सोचै दूत । लषन दीसैं राज संयुत ॥
जो इह बैठ्या कोई और । तउ टोकैंगा आतैं पौर ॥३८६॥

चल्या दूत तब पौरि मझार । तिहां पौलिया हूवा असवार ॥
पूछे कौण किहां तू जात । वह हमसौं समझावो बात ॥३८७॥

कहै दूत मो भेज्या भरत । राजा सौं पहुंचावो सुरत ॥
गया पौलिया राजा पास । नमस्कार करि बिनती भास ॥३८८॥

राजसभा सुरपति सी जुरी । [illegible] ॥
राजसभा में आया दूत । नमस्कार तब करि बहुत ॥३८९॥

ठाढा भया दूत की ठौर । ठीक ठिकाने ठाढे और ॥
पूछै भूप भरत कुसलात । बोल्या दूत धरि मस्तक हाथ ॥३९०॥

भरत चक्रधारी बलवंत । छहु षंड जीते सामंत ॥
नरपति खगपति माने सेव । छउं षंडका रह्या न भेव ॥३९१॥

तुम भी उनकी सेवा करो । आज्ञा जाकी मत वीसरो ॥
इतनी सुनि कोप्या भूपति । अजहूं वाके नाहीं थिति ॥३९२॥

जे वह करै चक्र की मनी । चक्रवर्त्ति कुंभारां भी मनी ॥
भरत नाम भीडे का कहै । इता गर्व क्यों उसमें रहै ॥३९३॥

मो कौं दिया पिता ने राज । वह हम स्यौं क्या राषै काज ॥
जो वाकै मन होय संदेह । करो जुध आवो सु सनेह ॥३९४॥

इतनी सुणि फिर आया दूत । कही बात सुणि कोप्या बहुत ॥
सुतउ केहरि मारधउ ठेल । जानुं पडया अगनि में तेल ॥३९५॥

भरत बाहुबली युद्ध

जानूं सकती हिये में लगी । राते नयन लहर सी लगी ॥
नगर मांहि बाजे निसान । सेना बहुत जुरी तिहा आन ॥३९६॥
सुर सुभट निकसे वानैत । अंगन मोडैं जुडिमा षेत ॥
हय गय रथ पायक बहु चले । बाजैं मारू बाजे भले ॥३९७॥

सेना तिहां चली चतुरंग । पहर आभर्न खरे सुरंग ॥
उडियन छाया आसमान । ऊजल भया चंद अरु भान ॥३९८॥

थरहराट करे सब मही । कंपे गिरवर जलहर सही ॥
जिहां जाय सेना उतरई । प्रथिवी सही न रीती फिरई ॥३९९॥

सुरत सुनी बाहुबल बली । सूरवीर मांनी बहु रली ॥
साजी सैन्य भया असवार । बेरया आगे मारग अडवार ॥४००॥

मारयौ येस मुंह मिल गये । अजौं कुभाव भाव कोये ।।
सुनें सूर नर भए अडोल । सिलहसौं भस भाले खोल ।।४०१।।
चहुं घांस छोडे अरु बांन । तुपक गोली भरि मारैं तांन ।।
बरछी षांडा लीन्हें हाथ । झूझै सूर पडे धरमांथ ।।४०२।।
दुहुधां सूर सुभट जो लरई । आयुध टूटैं धरती परई ।।
जोधां सूर सुभट रथौं जुटैं । बाथौं बांथ आपस में कटैं ।।४०३।।
मैंगल सौं मैंगल झूझंत । परैं लोथ जानो परवंत ।।
झूमैं स्वांमि धरम के काज । जिणकै छत्री कुल की लाज ।।४०४।।
घुमैं घायल धरती पडैं । गीध्र लोथर गत मैं पडैं ।।
दुहुधां जुध भया बहुभांति । हारित न मानें दोऊं भ्रात ।।४०५।।
तबहू सोच किया भूपती । कहै प्रजा की यह कुंण गती ।।
प्रजा दुख देवैं बेकाज । हम तुम सनमुख झूझै आजि ।।४०६।।
सेनां कौं दुख काहे देय । हम तुम जुध मनमांन करेह ।।
दृष्टि जुध थाप्या दहुं ओर । लगी दृष्टि ज्यौं चंद्र चकोर ।।४०७।।
भरत तैं बाहुबलि धनुष पचीस । ऊंचा घणां करैं को रीस ।।
हारया भरत जब जल जुध होय । बाहुबल जीत्या बार दोय ।।४०८।।
मुष्टि जुध थापिया बहोरि । लथ पथ हारे माची रौर ।।
बलि लीया भरथ ऊचांइ । भरत मांन भंग हुवा राइ ।।४०९।।
बाहुबलि करैं मनोहार । हम थे बाल तुम उठाए बहुवार ।।
इस कारण तुम लीए उठाय । भूलन लगी तुम्हारी काय ।।४१०।।
मुष्ट युद्ध फिर थापी बात । पहली भरत करीउ संघात ।।
पाछें बाहुबली संभारि । मुष्ठि उठाई उतनी बार ।।४११।।
तब मन में आया इह ग्यांन । बडा वीर ए पिता समान ।।
जो भाई पर कीजे चोट । तो सिर चढै पाप की पोट ।।४१२।।

बाहुबली द्वारा विजय केपश्चात् वैराग्यलेना

कर उठाए जो रीता पडै । सुरवरत अब मेरा टरे ।।
भरी मुष्ट कर लुंचे केस । बाहुबल भए दिगंवर भेस ।।४१३।।
एक अंगुठे के घरि जोग । अचिरज भए देख सब लोग ।।
सहैं परिस्या बावीस अंग । ग्यांन लहर की उठै तरंग ।।४१४।।
वारह प्रेक्षा नौ सौ चित । लोक सरूप विचारैं नित्त ।।
पंच महाव्रत समति जु पांच । मन बच इंद्री साधी सांचि ।।४१५।।

छह रित सहे परीसहे काय । स्यांम भुयंगम देह लपटाय ।।
रही बेल [illegible] सरीर । [illegible] की [illegible] सहे न पीर ।।४१६।।
वर्षा काल वृक्षतल जोग । सीयालैं सरनी जल जोग ।।
उह्नालैं परवत धरि ध्यान । तपैं चहुं घां उपर भांन ।।
अंतर चिदानंद स्युं नेह । ममता रती न राखी देह ।। ४१७।।

सोरठा

आतम सौं ल्यौ ल्याइ, धरयो ध्यान चिद्रूप कौ ।
असुभ करम मिटाइ, केवलग्यांन आया निकट ।।४१८।।

चौपई

भरत ब्राह्मी अर सुंदरी । समवसरण पहुंचे तिह घरी ।।
नमस्कार करि पूछैं बात । बाहूबल सहै परीसह गात ।।४१९।।
अंगुष्ठासिंज ठाडा तप करइ । असुभ करम कब वाके षपई ।।
केवल लब्धि लहैसी कबै । मोस्युं प्रगट कहौं प्रभु अबै ।।४२०।।
श्री जिन बोले ग्यांन विचार । उन राख्या मन में अहंकार ।।
दोनों चरण धरा जब धरैं । अहंकार तब दूरैं टरैं ।।४२१।।
उपजै केवल ग्यांन तुरंत । पामैं भवसायरना अंत ।।
प्रभू तणा सांभल ए बैंण । आत प्रतैं समझावैं अंन ।।४२२।।
मांन गयंद थी उतरौ वीर । क्रोध अगनि तजि हूजे नीर ।।
किसकी पृथ्वी किसका राज । भोग्या बहुत कर गए राज ।।४२३।।
केते हुए होहि हैं घने । तिनकी गिनती कहां लौं गिने ।।
इह संसार सुपन की रिध । जाग्यां कछुव न देख्या सिध ।।४२४।।
मन का संसय कीजे दूरि । पांव धरो धरती पर पूर ।।
इतनी सुनि मन उपसम किया । पांव धरत ही केवल लिया ।।४२५।।
टूटे असुभ करम तिह बार । पहुंचे जाय सु मोक्ष मझारि ।।
जोतैं जोति मिली तब जाय । अजर अमर पदई सुख पाय ।।४२६।।

दोहा

बाहुबलि सब विधि बली, यस प्रगट्या संसार ।
ग्यांन सरीषी नाव चढि, पहुंता भवदधि पार ।।४२७।।

चौपई

भरत राज भुगतैं संसार । परथी भोग भूमि अनुहारि ।।
पुत्र पांचसै सोभा घनी । सूरवीर ग्यांनी गुन घनी ।।४२८।।

ब्राह्मण वर्ग की उत्पत्ति

श्रेणिक बहुरि करी परसन्न । ब्राह्मण की कहिए उतपन्न ॥
कैसे थाप्या चउथा वर्ण । कहो प्रभु मो संसय हर्ण ॥४२९॥
भरत भूमि निकंटक राज । पहली करै धरम का काज ॥
छहुं षंड की लछमी जुरी । दांन देण की इच्छा करी ॥४३०॥
बहु पकवान लक्ष्मी घनी । आभूषन सोभा अति घनी ॥
ले सब सौज गए कैलास । मन में दान देण की आस ॥४३१॥
समोसरण पहुंच्या तिह बार । दई प्रदक्षिनां करि नमस्कार ॥
प्रभुजी हम परि किरपा करो । दांन देय मम पातिग हरो ॥४३२॥
रिषभदेव बोले समभाय । ये दान न लेहैं मुनिराय ॥
ए सब छोडि भए वैराग । इण के कथा की जैसी त्याग ॥४३३॥
देही ममता राखें नांहि । [illegible] महीने भोजन खांहि ॥
जे तपसी ह्वै लछमी गहै । नरक निगोद महादुष सहै ॥४३४॥
जनम अकारथ तिसका जाण । ले दिष्या जे होय अयाण ॥
माया वस्त जो राखै जोड । दरसन नें त्यावैं बहु षोडि ॥४३५॥
मर करि भ्रमै चतुरगति जीव । पाप पोट ले अपनी ग्रीव ॥
तातैं ए तुम फेर ले जाउ । नहिं ए दांन लेहि मुनिराइ ॥४३६॥
तबै भरत फिर आया गेह । दांन जु काढया किस कौं देह ॥
बारंबार करैं नृप सोच । दान लेण की किसैं नहीं रुच ॥४३७॥
सब ही सुखी दुखी नहि कोइ । किसके मन लेने की होइ ॥
दांनसाला मांडी बन बीच । बोए जब[1] तहां वधारी सींच ॥४३८॥
नगर मांहि बाज्या निसांन । हाजर होय नृप तणी आंन ॥
सब मिल आवो राजा पास । देस देस नरपति नर जास ॥४३९॥
कोई न पूछे वधारी हरी । जिनके हिये ग्यांन मति धरी ॥
जे भूरिपु ले खुंदन चले । बिनु विवेक अग्यांनी भले ॥४४०॥
चक्रवर्ति देखें नरनाथ । जे ग्यांनी ते जुदे बुलाय ॥
वधारी खूदन आये लोग । जुदा थांन दीना तिन जोग ॥४४१॥
अग्यांनी विदा कर दिये । ग्यांनी कुं आदर बहु किये ॥
नरपति वचन बीनती कहै । इह इच्छा मेरे मनु रहै ॥४४२॥
मांगु वचन देहि जो मोहि । पंचो विनय सुनाऊं तोहि ॥
वेग चलो जल भरकर लेहु । जो मैं चाहूं सो मोहि देहु ॥४४ ॥

१–जौ

सोचैं सकल विचारैं चित्त । ऐसो कहा है हम पर मित्त ।।
जाकूं चाहै पृथ्वीनाथ । सब ही नीर लिये निज हाथ ।।४४४।।
बोले भरत लेहु तुम दान । ऐसी मुनि ठाढे धरि ध्यान ।।
तब बोले हम चाहैं कहा । करवो टहर दान ले तहां ।।४४५।।
तुम प्रसाद हम हैं सब सुषी । कोई नाहि बसै नर दुषी ।।
अब तुम हम पै बाधा मांगि । दीया चाहो हमको त्याग ।।४४६।।
राज वचन औ बाधा दई । तब ही दांन विधि थापी सही ।।
ऐसे रतन के कारन पवित्र । नव नव तार बनाई रीत ।।४४७।।
नो नो गुन का इक इक तार । गुन इक्यासी बडे विसतार ।।
धोवती मुद्रिका और जनेउ । नमस्कार करि कीनो सेउ ।।४४८।।
उत्तम रीति दइ ज्यौणार । दक्षिणा दे कीनी मनुहार ।।
ये अपनेमैं नगर के घने । सबसे उत्तम बांभरण भने ।।४४९।।
पूजनीक उत्तम कुल धरा । हम सब तुल्य न को अवतारा ।।
रावरंक पूजै सब कोइ । चौथा वरण ऐसी विधि होइ ।।४५०।।
भरत गया थी जिन की जाति । नमस्कार करि जोरे हाथ ।।
बांभरण थापि दान में दीया । सब व्यवहार स्वामीस्युं कह्या ।।४५१।।
बानी तब भाषैं भगवंत । ए थापैंगे पाप महंत ।।
हिंसा होम करैंगे घने । तिनके पाप कहां लौं भनें ।।४५२।।
च्यार वेद थापैंगे और । तिनमें पाप अनंत किरोड ।।
षोटे दांन प्रकासैं बहु भांति । उलटी सब थापैंगे बात ।।४५३।।
धरती हल रथ्रु असमरी । हस्ती और तुरंगम तिरी ।।
षोटे देंगे धणु उपदेस । क्रिया भ्रष्ट सुनि होंय नरेस ।।४५४।।
जैनधरम के निंदक होंइ । असंभव बात कहैंगे सोय ।।
अज गज गऊ थापैंगे भेद । असव और जीवों को षेद ।।४५५।।
इतनो सुनी भरत ने बात । मैं इह बुरी करी बहु भांति ।।
अब इह भेष करूं जाय दूरि । इनकूं मारि गमाऊं मूर ।।४५६।।
तब स्वामी समझावैं ग्यांन । होय पाप जो हति हैं प्रान ।।
जीव हते भव भव दुंष लहैं । ऐसी बात जिनेसुर कहै ।।४५७।।
होणहार टारी नहीं जाय । भैसा षरउ न षोटा भाय ।।
राजा भरत रवि जेम प्रताप । पुंन्य करई सब टूटे पाप ।।४५८ ।।

परजा सुखी वसई ता सरों । परदुख भंजन दारिद्र हरों ।।
श्री भगवंत धरम समझाय । मोक्ष मारग के भेद बताय ।।४५९।।

पुन्य विभूति सकल खिर गई । बांनी जोत एक सम भई ।।
एक मास रहे इह भांति । नां कछु बांनी नां कछु बात ।।४६०।।

माघव बदी चौदस परवांन । श्री जिन पहुंचे मुक्ति मिलांन ।।
देह कपूर समान सब खिरी । बिज्जल घात विमकसी करी ।।४६१।।

सुरपति आय किया कल्यांण । पूजा रची भगवंतसौ माणि ।।४६२।।

दूहा

श्री जिण धरम प्रगट किया, प्रतिबोधे बहु लोग ।।
आप मुक्ति रमणी वरी, तिहां सासते भोग ।।४६३।।

इति श्री पद्मपुराणे श्रेणिकप्रश्न श्री ऋषभ महातम विधानकं संधि ।।१।।

द्वितीय संधि

भरत का वैराग्य

चौपई

भरत भूप छह खंड का धनी । राजसभा सोभा अति बनी ।।
अस्सी सहस्रथो विद्याधर भूप । एते भूमिगोचरी अनूप ।।१।।

मुकट बंध बत्तीस हजार । छयानवै सहस नारी भरतार ।।
दरपन देख धवल सिर केस । मनमें कंपा भरत नरेस ।।२।।

मंत्री सौं पूछी जब बात । कंप्या भूप पसीना गात ।।
भोग भुगत में बीती आव । धरम ध्यांन सौं धरथा न भाव ।।३।।

मोह माया में भया अचेत । जरा दूत कच आए स्वेत ।।
अब सब राज विभूति को त्याग । धरौं चारित्र मन वच वैराग ।।४।।
आदितजस को सौंप्या राज । आप संभारचा आतम काज ।।
पालै प्रजा भोगवं भोग । साधै भरथ वनमें नित जोग ।।५।।

भरत का परिवार

उपज्या केवल भया निरवांन । सुरपति पूजि गये निजथांन ।।
आदितजस के सितजस पूत । बल अंकुस बल महाबल भूत ।।६।।

अतिबल अमरत सबद सुभद्र । महेन्द्र महोदर भीम सुरेन्द्र ।।
रवितेज प्रभतेज भूपती । परताप मनि अति वीर सुभमती ।।७।।

सुविरत उदत और बहुभूप । उनका बरनों कहा स्वरूप ।।
केइक तप करि भये केवली । गए मुक्ति पूजी मन रली ।।८।।

केई सुरग देवगति लही । इक्ष्वाकवंस कुल उत्तम सही ॥
बाहुबलि के सोमप्रभ भया । महाबल सुबल धर्म धुर किया ॥९॥
भुजबल देवमादि अतिबली । इनकी कीरति जग में भली ॥
केई मुक्त केई सुर भए । काटि कर्म ऊंची गति गए ॥१०॥
सोमवंस का किया बखान । नवि वंसी विद्याधर जांनि ॥
विद्याधर परवत का भूप । नमी विद्याधर बहुत स्वरूप ॥११॥
ताकै रत्नमाली सुत एक । जानें राज काज की टेक ॥
रत्नवीर्य रत्नरथ और । रत्नचित्र रथ सुख की ठौर ॥१२॥
वज्रजंघ वज्रसिल दिष्ट । वज्रमूल वज्राभव जेष्ट ॥
सुवजर अरु वज्राभृत राय । वज्रभान वज्रवाहु गुनभाय ॥१३॥
वज्रवाक वज्रसिंघ नरेस । वज्राष्ट साधे बहुदेश ॥
वज्ररतन भीम वज्रवान । विद्युन्मुख सवकंच बलवान ॥१४॥
वज्रहस्त वदतीन विद्योत । विद्युतदृढ कामनी सुहोत ॥
इकनिस पोढे दम्पति संग । सुख सज्या सोभै सुभ रंग ॥१५॥
देस राज की महिमा कहै । रांणी का मन सुणि उमगहै ॥
मोहि दिखावो वे सब ठाउ । कैसे द्वीप परवत अरु गांव ॥१६॥
इतनी सुणि साजिया विमान । दंपति बैठ चले सुख मान ॥
पंचागिर परवत तर हांन । संजै सुरति मुनि आतम ध्यान ॥१७॥
रुक्या विमान न आगे चलै । विद्याधर मन ज्वाला जलै ॥
कै कोई मित्र कै दुरजन ठांउ । कै कोई सिद्ध तपा कै भाउ ॥१८॥
असा चितवि गहि कमांन । चारूं कूंट चलाया बांन ॥
दामिन चमकी उजयारा भया । मुनिवर देखि उपद्रव किया ॥१९॥
पापी दिया साधनें दुख । वह अपने मन मानें सुख ॥
मुनिवर चित्त में भय नवि धरी । असुभ करम टूटे तिह घरी ॥२०॥
सहु परीसहु अपनें अंग । उपज्या केवल लहर सुरंत ॥
चउविध देव किया जयकार । कंचन मही बनी तिहवार ॥२१॥
विद्युतदृढ बांधिया धर्नेंद्र । विद्यालई छीन सब संघ ॥
मुनि बैठा आतम ल्यो लाइ । ते पसु दुख दिया यहां आई ॥२२॥
तब विद्याधर बिनती करै । ऐसे पाप टरै ना टरै ॥
साधहै दुख दीया बेकाज । हरत परत खोई सब लाज ॥२३॥
कठिन पाप मैं कियो अन्याय । अब मैं पाप टरै किह भाय ॥
बिन विद्या किम पहुंचे गेह । चिंता व्यापी खगपति देह ॥२४॥

विद्याधर पावैं जई मोहि । मारैं प्रचुर करैं जिय छोहि ।।
जो विद्या मोकुं फिर देइ । भूल न करूं पाप सौं नेह ।।२५।।

धरणेंद्र की तब आग्या भई । बारावरस कर तपस्या नई ।।
सवै पाप क्षी विद्या सुध । फिर मत करै पाप की बुधि ।।२६।।

पूछै धरणेन्द्र मुनिवर सौं बात । इन तुमस्यौं क्यों किया घात ।।
क्यों इननें तुम कूं दुख दिया । कारन कौन उपद्रव किया ।।२७।।

व्यौरो सकल कहो समझाय । ज्यूं मेरे मन संसा जाय ।।
मुनि बोले पुनि ग्यांन विचारि । प्राणी पावैं सकल आधार ।।२८।।

सत्यघोष की कथा

संकर ग्राम देस का नाम । सरल जीव सुखसौं विश्राम ।।
श्रीवरधन है तहां भूपती । ता पटराणी कुसमावती ।।२९।।

सोम सरमा ब्राह्मण तिहां बसै । महाकुचील देख सब हंसै ।।
उन छोड़ी जीवन की आस । दिक्षा लई संन्यासी पास ।।३०।।

पंच अगन तप साधै जोग । ताकी सेव करैं बहु लोग ।।
अंतकाल उन छोडी देह । उपज्या जाय देव के गेह ।।३१।।

धूमकेतु नाम तिहां धरचा । देखत मन भय उपजै खरा ।।
वहां भी आव विलीन सब गई । मनुष देह फिर पाई नई ।।३२।।
बांह्मन सिष्य ब्राह्मन के गेह । भया पुत्र अति सुन्दर देह ।।
सत्यघोष बालक का नाम । दिन दिन बढै विराजै ठाम ।।३३।।

पाईविविध सब विद्या पढी । ज्योतिक ग्रंथ अति महा बढी ।।
व्याकर्ण का लाधा सब भेद । कहै पुराण ग्यारूं वेद ।।३४।।

वैदिक सामोद्रिक गुण सार । ग्यांन वाधि बढी बुधि अपार ।।
छुरी कातरनी जनेऊ राखै । झूठो वयण न मुख थी भाखै ।।३५।।
जो मुख असत्य वचन नीसरैं । खंड जीभ तब पर ही करैं ।।
कीरति प्रगटि जग सब संसार । ऐसी रीत गुणी भूपार ।।३६।।

सत्यघोष प्रति लिया बुलाय । प्रोहित थाप्या आपणां राइ ।।
आदर मान देइ सब कोई । दिन दिन कारण चौगुणां होइ ।।३७।।

नेमिदत्त वाणिक जौहरी । लाद चल्या समंद की पुरी ।।
भरे जिहाज सौंज मन सोच । नेमिदत्त मन उपज्या सोच ।।३८।।

इतनां द्रव्य लिया मैं संग । कुछ घर जाउं रहै अभंग ।।
चार रतन जे धरे अमोल । सत्यघोष नैं सौंपे तोल ।।३९।।

जब फिर आउं तब मैं लेव । इनही तुम राखो सत देव ।।
सत्यघोष कूं सौंपे लाल । बिनज निमित्त किया उन चाल ।।४०।।
ताकूं बीत गये दिन घने । सत्यघोष चित्त औरैं बने ।।
विप्र विचारया मन में खोट । खोया धरम लोभ की ओट ।।४१।।
मंदिर अपने दिया ढहाय । और भांति के फेर बनाय ।।
जो कोइ देखे सो भरमाय । च्यारि पौलिकी औरैं भाइ ।।४२।।
नेमिदत्त के बहे जिहाज । फिरि आये लालों के काज ।।
डूबी सब कछु चिंत न करी । जाती सत्यघोष में धरी ।।४३।।
लेय रतन फिर करूं व्योपार । बढ़ें लक्ष धन होय अपार ।।
सत्यघोष सतघने आवास । नेमिदत्त देख्या तट पास ।।४४।।
रूप दलिद्री फाटे चीर । आय लग्या सागर के तीर ।।
सभा में आय चलायी बात । मैं सुपनां देख्या इण भांत ।।४५।।
एक रंक मुझ सौं यों कहै । मेरी थापना तो पै रहै ।।
मांगे रतन सुपने में आय । तिसका फल तुम द्यो समझाय ।।४६।।

सत्यघोष के पास जाना

नेमिदत्त पहुंच्या तिहं ठोर । देखे मंदिर और ही और ।।
पूछी सत्यघोष की पौरि । नेमिदत्त आवियौ बहोरि ।।४७।।
सभा मांहि नेमिदत्त गया । सत्यघोष ने वंदत भया ।।
सत्यघोष देखे नहि ताहि । नेमिदत्त ताहि रह्यो लोभाइ ।।४८।।
कहै रतन मेरे तुम देहु । बोलैं विप्र पंचो सुणि लेहु ।।
मैं सुपना देख्या जह जात । सो तुम देखो अब ही बात ।।४९।।
राय सुहाली बोले सबै । धक्का दिये वणिक कुं तबै ।।
नेमिदत्त पहुंचो नृपद्वार । बे कर जोड करी पुकार ।।५०।।

राजा से निवेदन

च्यारि रतन प्रोहित कुं दीये । कीजे न्याय तींन धरि हिये ।।
राय कहै इह गहिलो कोय । सत्यघोष थी ए मन होय ।।५१।।
दूरि किया धका दिव राय । बावरि मई को करै सहाये ।।
राज सभातैं भया निरास । बसती छोडि फिरै बनवास ।।५२।।
रात रहै वृक्षन में जाय । च्यारि लाल निस दिन बिललाय ।।
एक निस सुंणि राणी ए बात । बहोत दिन भए याहि बिललात ।।५३।।

करो न्याव राजा प्रभूनाथ । यह तो हे तुमरी सरणाय ॥
या को न्याव वेग तुम करो । यह भमतो डोलै बावरो ॥५४॥

बोले राजा राणी सुणं । सत्यघोष क्यूं कपटी धुणं ॥
बावला गहलावं क्या फिरं । ताको न्याव कवण विध करं ॥५५॥

राणी बोली सुणों नरेस । इसे तो भमई तुम्हरे देस ॥
एक जीभ कूकै दिन रात । गहला कहिए किण भांति ॥५६॥

राणी द्वारा न्याय

जो तुम मोकू' प्राज्ञा देहु । याको न्याव तुम मो पैं लेव ॥
नेमिदत्त तोडे तिह बार । राजा नें जाकर कियो जुहार ॥५७॥

राजा राणी मंदिर मांहि । नेमिदत्त बैठा इक ठांह ॥
सत्यघोष को बुला तिह घरी । चौपड खेलन बाजी धरी ॥५८॥

प्रोहित नें हारी मुंदडी । राणी जीत लै करमें धरी ॥
दई मुद्रिका दासी टेर । जाहु पंभडाणी पैं इण बेर ॥५९॥

कहियो रतन मांगै सतघोष । जैन पतीजे छाप हि पेषि ॥
मिश्रानी देवै नहि लाल । दासी आयी चतुर बिसाल ॥६०॥

धोती पतरा जनेऊ हार । दासी गई फेर तिह बार ॥
स्यांम वस्त्र में बांधे रत्न । जौ न पत्यातउ देखिए जतन ॥६१॥

पोथी जनेऊ धोवती देष । दीए लाल ते च्यारू' पेषि ॥
आंण दिये रांणी के हाथ । अचिरज भया पृथ्वी का नाथ ॥६२॥

राजा बहुत अचंभा करै । असे तैं अैसी क्यों सरै ॥
औरहु रत्न भराए थाल । तिनमें डारे च्यारु' लाल ॥६३॥

नेमिदत्त बुलवाया बान । अपने रतन देह पहिचान ॥
देखे सकल रत्न परिहरे । अपने थे सो लेकर धरे ॥६४॥

तब राजा प्रोहित सूं कहै । काती छुरी जनेऊ सुरेहैं ॥
अब क्यों जिभ्या राषई मूंड । तू पाषंडी अंतर गूढ ॥६५॥

मुंड मूंडि मुष काल कराय । सकल नगर मांही फेराय ॥
देस निकारो नांम न लेहु । अब देपू तो सूली देहुं ॥६६॥

बांह्न शिष्य जती पैं जाय । दिक्षा लई कर मन वच काय ॥
नरपति ने भी दिक्षा लई । ब्रह्मविमान देव थिति भई ॥६७॥

भाव मुंज करि वेश विदेह । रांजै सुत राजा मम देह ॥
सहज विचार किया मैं जोग । छोडि दिये संसारी भोग ॥६८॥

वा संबंध जोग जो आय । सुनि बात मन संसा जाय ॥
नेमिदत्त ने दीक्षा धरी । धरणेंद्र पदवी पाई खरी ॥६९॥

विद्युदृढ भी विद्या पाइ । फिर कर आसा अपनी ठांय ॥
राज करत बीते दिन [illegible] ॥७०॥

दिढरथपुत्र ने सौंप्या राज । आपन किया मुक्ति का साज ॥
अस्वधरम अस्वध्वज भये । पद्मनाभ पद्ममाली पये ॥७१॥

दूहा

पद्मरथ भी सिद्ध जन, सिंघ अंब मृग धर्ण ॥
मेघसूर सिंघ प्रभू, सिंहकेतु मन हर्ण ॥७२॥

चौपई

शशांक चन्द्र श्री चन्द्र शेष । इंद्ररथ चक्रधर में विसेष ॥
चक्रा इन्द्र चक्रध्वज मनगर्व । मनांक मनबास मन गुन सर्व ॥७३॥

मनोज समन समेंद्र नेंद्र । मन सोम विजइ सोट आनंद ॥
लवात धर रक्तौ उष्ट भूग । हरिचंद्र पुरचंद्र सरूप ॥७४॥

पूरण चंद्र भया काल इंद्र । चंद्रमा चंद्र चूरतार्चे इन्द्र ॥
उरपांन पंक केस बरराय । वृत्तुर सचुर वजरचुर सुभकाय ॥७५॥

भर चुरा टका वाहन जटी । वाहन ते मन हरष घग बटी ॥
याही वंस भूप अति घने । करि तपु अष्ट करम सब हने ॥७६॥

केई स्वर्ग देवता भए । केई मुक्ति रमणि में गए ॥
विद्याधर का वरण्या वंस । वरण सुनाये तीन्यु अंस ॥७७॥

इति श्री पद्मपुराणे विद्याधर वंस वर्णन सम्पूर्णम् ॥

तृतीय संधि

चौपई

इक्ष्वाक वंश वर्णन

इक्ष्वाक वंस बरनू बहोरि । सुनु बात चित मे राखो ठोर ॥
धरनीधर जगधारन धीर । तौत्रिदसंजपुत्र बल बीर ॥१॥

धरनीधर दिक्षा पद धरया । राजा त्रिदसंज कौं करया ॥
इन्द्ररेखा विवाहू नारि । रूप लछिन शशि की उनहारि ॥२॥

तास गर्भ जितसत्रु भया । बहुत आनंद भूप मन ठया ॥
पोयनपुर सोमवंसी राय । वानेंद्र भूपति तिस आय ॥३॥

अभैमाल राणी ता गेह । विजया कन्या कंचन सम देह ।।
जितसत्रु सौं दई विवाह । भोग मगन तिन करें उछाह ।।४।।

इक निस सुपने षोडस देखि । भली वस्तु पाई सुविशेष ।।
विजया देवी उठी प्रभात । पति सौं कहैं सुपन की बात ।।५।।

सुणि सपने मन हुआ उलास । सुख मानैं करि भोग विलास ।।
जेष्ठ वदि मावस्या शुभ बेर । भई गर्भ पूजैं सुर पैर ।।६।।

जैं जैं कार सबद सुर करैं । देवी छप्पन सेवा अनुसरैं ।।
जैसे कमल पत्र जल बुंद । जैसे स्वाति जल सीप समंद ।।७।।

द्वितीय तीर्थंकर अजितनाथ वर्णन

माघ सुदि दसमी शुभ वार । श्री भगवंत लिया अवतार ।।
नक्षत्र रोहणी वरियां भली । तीन लोक सुन मानें रली ।।८।।

जनम कल्याणक कर गये देव । रतन पुष्प बरषे बहु भेव ।।
दसहु दिसा दुंदुभी होय । भयौ जनम आनंद सहु कोइ ।।९।।

पूरव लाख बहत्तर आव । साढे चारसै धनुष की काय ।।
सुरपति कियो महोछव आन । रीति पाछली करी प्रमान ।।१०।।

अभयमाला व्याही सुंदरी । रूप लक्षण कर सोभै खरी ।।
राजा भोग सौते दिन घने । बन उपवन सोभा अति बने ।।११।।

जहां सरोवर निरमल नीर । छाया सघन बिहंगम तीर ।।
फूले कमल रविबंसी तिहां । चंद्रबंसी मुरझाये जहां ।।१२।।

तब मन मान्या लोक सरूप । बूडे जीव मोह के कूप ।।
भोग मुगति की निंदा करी । जैं जैं सबदहु अति ही खरी ।।१३।।

माघ बदी नौमि सु जिनेश । शिबका चढि बन किया प्रवेश ।।
उतर पालकी लौंचे केश । श्री जिन भए व्रती के भेस ।।१४।।

बारह विध तप आतम ध्यान । सुर किया तहां तप कल्यान ।।
छह उवास कीये इकसार । ब्रह्मदत्त कैं लिया आहार ।।१५।।

भोजन रीति इसी विधि करी । चिदानंद ह्यौं लाई धरी ।।
बारह बरस रहैं छदमस्त । चार करम जीते बहु कस्त ।।१६।।

पोस सुदि ग्यारस शुभ घरी । परकत श्रेसठि न्यारी करी ।।
पाया केवल ज्ञान जिनेन्द्र । सुर नर तीन लोक आनंद ।।१७।।

बाजै सुर दुंदुभी बहु भेर । रचियो समोसर्ण तिहू बेर ।।
साढे ग्यारहु जोजन समोसर्ण । गणारतनउ लागी छांनिकर्ण ।।१८।।

दोष अठारहु कीये दूर । बारहु सभा रही भरपूर ।।
चौंतिस अतिसय गुण छियालीस । तीन छत्र विराजै सीस ।।१६।।

चौसठ चमर दुरैं इक बार । बांनी हुई त्रिभुवन आधार ।।
विजयसागर त्रिदज संकावीर । मंगला राणी गुण गंभीर ।।२०।।

ताको पुत्र सगर चक्रवर्त्ति । छः खंड करि साध्रे सुरत्ति ।।

विजयारध दक्षिन दिस भूप । विद्या साधी नाना रूप ।।२१।।

आप तात दिक्षा पद लिया । चक्रपाल ने राजा किया ।।
पूरणघन पुत्र ला लनैं । विद्या बल गिनती कौं गिनैं ।।२२।।

चक्रवाल नैं दीक्षा लई । राज विभूति पूरणघन दई ।।
उत्पन्न मति पुत्री ता तनी । रूपलक्षन सोभा अति बनी ।।२३।।

सुलोचन नैं भेज्या दूत । तिलकेस मेरे घर पूत ।।
अब तुम किरपा मो पै करउ । उतपलमति मम पुत्रैं बरउ ।।२४।।

पूरणघन पूछ्या जोतगी । याकी लगन कौनसौं लगी ।
याह विवाहै राजा सगर । पटरांनी होवैगी अगर ।।२५।।

इह निमत्त सौं कहै भूपाल । टीका भेज्या सगर कौं हाल ।।
सुलोचन सुनि कोप्यो राइ । जुद्ध हेत आपन चढि आइ ।।२६।।
लई खडी जोतिग गुन ग्यांन । हौनी कही आगउ आनि ।।
पूरणघन के बजैं निसांन । सूरवीर सब पहुंचे आन ।।२७।।

साजी सेन्यां मुंह मिल भए । दुहुंवां बांनी धागी छए ।।
झूझै दोऊ सैना खरी । सहस्रनयन उतपल मति हरी ।।२८।।

दारुण जुध भया भयभीत । अंत भई पूरणघन जीत ।।
आमा गेहन देषी सुता । पूरणघन कुं बाढी चिंता ।।२६।।

सुनी सहस्रनयन ले गया । उठ्या क्रोध दुचित्या भया ।।
सहस्रनयन पैं कीनी दौर । वाका चाचा मारचा ठौर ।।३०।।

उतपलमति सहस्रनयन के संग । मैं हूं सगर भूप की मंग ।।

तो मैं हरी किया अति बुरा । चक्रवर्त्ति का डर नहीं करा ।।३१।।

अब जो चाहै अपनौं प्रांन । लेचल सगरराय पैं जांण ।।
सहस्रनयन डरप्या मनमांहि । सगर पास ले पहुंतो ताहि ।।३२।।

दई बिवाह नगर सौं जाय । पटरागी थापी तस राय ॥
सहस्रनयन सुणी इह बात । पूरणघन किया चाचा घाति ॥३३॥
कोप्या नृप जुध कौं चल्या । पूरणघन फिर कैं सांभला ॥
बहुत जुध हुवा दुहु वोर । पडै मार तिहां मांची रोर ॥३४॥
मेघवाहन पूरणघन पूत । पहुंता तिहां सैंन संयुक्त ॥
बरषै बांण अषाढ सम मेह । सहस्रनयन भाग्या ले देह ॥३५॥
समोसरण में आया भाजि । तिहां भया मनवांछित काज ॥
बैर भाव सब ही मिट गया । दया प्रणांम सकल मन भया ॥३६॥
वज्रधर देखा इन जुध । चक्रवर्ति सुं कही यह सुध ॥
चाल्यो समोसरण भगवान । पूछै इनका बैर निदान ॥३७॥
राजा वज्रधर समर ले साथ । आये समोसरण जिन नाथ ॥
मानस्तंभ मान कौं हरै । देखत ही मति निरमल करै ॥३८॥
तीन प्रदक्षिण करि नमस्कार । डंडवत बहु बारंबार ॥
दो कर जोड करैं प्रसन्न । इन्हैं बैर क्यों भया उत्पन्न ॥३९॥
अजितनाथ जिण बाणी सार । गणधर भेद कहैं सुविचार ॥
संखनगर तिहां भावन सेठ । अति कीरत बहु क्रिया सरेष्ट ॥४०॥
ताकै अरहदास सुत भया । पाई बुधि सौं स्याणां थया ॥
आप सेठ चाल्यो व्योपार । पुत्र सौंप्या बहु दीनार ॥४१॥
चार कोड मिण सौंपे ताहि । धरम दया राखो मनमांहि ॥
सज्जन कुटंब की करज्यो कांण । जिन पूजा में दीज्यो दान ॥४२॥
लाद जिहाज दिसांतर चल्या । अरहदास ज्वारया संग मिल्या ॥
खेलै जुवा हरावै द्रव्य । रात बिसन तिन सेये सर्व ॥४३॥
वेस्या संगमादिक सौं हेत । लछमी बहु गणिका कुं देत ॥
खोटे कारण कीने घने । बिभचारी वाकौं सब भने ॥४४॥
सर्व दर्व षोया इण भांति चोरी कुं निकस्या अधराति ॥
राज भंडारै किया प्रवेस । बांधि पोट ले चल्या असेस ॥४५॥
सुरंग मांहि ते आवै जाय । नित प्रति सात बिसन सुं षाय ॥
श्रीण बुद्धि समद मैं गए । पश्चाताप सेठ बहु कीये ॥४६॥
मेरे घर थी लछमी बहुत । ते मैं सौंपी पूत कपूत ॥
मेरी बुधि हरी करतार । भ्रमता फिरथा देस ससार ॥४७॥
जे संतोष सौं रहता बैठि । तो क्यों होती सुखसौं भैंठ ॥
हुआ दलिद्री पहुंच्यां गेह । रती न धर में देखी षेह ॥४८॥

साहूण कही पुत्र की बात । सुणि करि दोउं मीडे पछितात ॥
कही कै वह क्या धंधा करै । राज भंडारै चोरी करै ॥४६॥
सुरंग मांहि ले पैठे सांझ । चोरी करैं भंडारा मांझ ॥
दंपति मनह विचारया एह । जो नृप सुणै तो सूली देह ॥५०॥
इम विचार चिणए लई सुरंग । देख श्ररहवास भया मन भंग ॥
पिता पुत्र ने मारया ठोर । भाज गया नगरी ने छोरि ॥५१॥
करम कुकर्म करै दिन रैन । कबही मनकों हुवै न चैन ॥

नरकों के दुःख

मरकर गया सातमी नर्क । छेदन भेदन काटन श्रर्क ॥५२॥
हुंडक देह धरी उन जाय । भूख प्यास को श्रंत न श्राय ॥
जुंवा चौर कै काटै हाथ । फेर संवारै दुख के साथ ॥५३॥
जीवह तेरे मांस कुं खाय । लोह पिंड दीजे मुख मांहि ॥
मांस श्रहार कहैं ते सुष । श्रभक्ष खाये पावै दुख ॥५४॥
सुरा पान मादिक जे लेह । तपत रांग ता मुख में देह ॥
श्राहेटै मारे बहु जीव । सूला रोपन बेंधै ग्रीव ॥५५॥
जो भुगतें पर की श्रसतरी । लोह तणी लावैं पूतली ॥
दौरि भिडावैं उनकों धाइ । पारे ज्यों सरीर फट जाय ॥५६॥
दुख मैं होय देह की देह । साल त्रिसन फल लागैं एह ।
वे दोन्यू कौली कै गेह । भए पुत्र तिहां नहीं संदेह ॥५७॥
जरि करि मुये नरक गति लही । भूष त्रिषा करि पीडा सही ॥
वहां ते मरि परवत के तट । भए सांभर करैं घन घुट ॥५८॥
वहां ते मुये मेष गति पाय । दोन्यों लरई बैर के भाय ॥
यों ही जौनि भ्रमें वे घनी । अतकाल तैं भेटया इक मुनी ॥५६॥
तिहां सुने पंच प्रभू के नाम । तातैं पायो उत्तम ठाम ॥
श्रेत्र विदेह पुष्कलावती देस । पुंडरीक तहां नगर नरेस ॥६०॥
सुण्यां धरम श्री जिनवर पास । सतार स्वर्ग परि पाया वास ॥
वहां थी चैकरि नरपति भए । भावन जीव पुरन धन थये ॥६१॥
श्ररहवास जीव सुलोचन जांन । ताथी जुद्ध भया बहु श्रांन ॥
सगर भूप जोरे दोइ हाथ । मेघवाहन सहस्रनयन की पूछी बात ॥६२॥
पद्माक नगर तिहां संपक देस । सीस श्रवली मित्र कै भेस ॥
दोऊ रहैं एकही ठांव । ससी गयो भौरही के गांव ॥६३॥

अवलावला जात हो नीर । शसिने मारया भर कर तीर ॥
देही छोडि लही गति वहल । शशि को मारया सींग सौंपेल ॥६४॥
वह तो मरि मूसा अवतार । अवली जीव भया मंजार ॥
बिलाव नें मूसे कूं मारि । यौंही भमे तिरजंच मझारि ॥६५॥
स्यांम राम की दासी गेह । ताके गर्भ भई नर देह ॥
राजा भीष्ठ तबै सुनि धर्म । दिक्षा ले काटे दुह करम ॥६६॥
पाया सनत कुमार विमांन । ह्वा भी चये आतकी आन ॥
जैवंती देस अरंजय नगर । सहस्र सूर्य के सेवक सगर ॥६७॥

सगर के भव

तप करि गये स्वर्ग विमांन । ह्वां तैं चइ पाया इह थान ॥
सगर नरेंद्र दोई करि जोरि । मेरे भव प्रभु कहो बहोर ॥६८॥
भोमर देस कुरग नरेस । मुनिकों दान दिया बहु मेस ॥
पाया अंत सुधर्म विमांन । ह्वां तैं चल्या चंद्रपुर थान ॥६९॥
दैत्यराय धारादे नारि । विति कीत्ति तसु भयो कुमार ॥
आप तात दिक्षा पद लिया । वीत्ति कीत्ति कौं राजा किया ॥७०॥
तिन भी तप कर आतम ध्यांन । पहुंचा स्वर्ग लोक पुर थान ॥
रतनसंचय पुर षेत्र विदेह । महाघोष राजा के गेह ॥७१॥
चन्द्राननी उरलियो अवतार । अविचल भया सुभट की पार ॥
तप करि देव भया सुरलोक । पूरन आव भई मन सोक ॥७२॥
भरत क्षेत्र पृथ्वी पर बसै । जसोधर राजा के मन हसै ॥
जया नाम ताके घर प्रिया । जयकीत्ति पुत्र नाम कुल दिया ॥७३॥
राय यशोधर दिक्षा लई । राज रिध जैकीर्त्त नें दई ॥
सुख में दिन बीते बहु ताहि । दिक्षा ली मुनिवर ढिग जाय ॥७४॥
पहुंचा विजय स्वर्ग विमांन । ह्वां ते सगर भया तू आंनि ॥
सकल भवांतर श्री जिन कहै । बारह सभा सुनत सुख लहै ॥७५॥

सोरठा

सुनि पिछला संबंध, मन संसय सब का गया ॥
सकल जीव आनंद । राति दिवस पालो दया ॥७६॥

चौपई

समोसरण में सुख निधान । राक्षिस अधिपति दूं पहुंचे आंनि ॥
भीम सु भीम सुहृन का नाम । राक्षस कुल आए इस ठांम ॥७७॥

दई प्रदिक्षन करै डंडोत । श्री जिण करी बहुत अस्तुति ॥
पूरणघन मेघवाहन सौं कहै । जो तुम चलौ परम सुख लहै ॥७८॥
सागर तट जोजन सो मांन । त्रिकुटाचल सुमेर परमांन ॥
पचास जोजन है उच्चंत । कंचनगढ नग जोयण हुंत ॥७९॥
जोजन तीस बसै बहु नगर । सोवन घर चैत्यालय अगर ॥
मोती लाल हीरे दवहु वरण । पन्ने चुन्नी जड़े सुवरण ॥८०॥
फिरै चितेरे रतन के घने । प्रतिमा सहित चैत्यालय बने ॥
बन उपवन बावडी कूप । सरोवर निरमल पाल अनूप ॥८१॥
हंस आदि बहु जलचर जीव । बैठक सोहैं गहरी नींव ॥
कमल फूल फूले बहु भांति । दीसै भली बाग की पांति ॥८२॥
दक्षिण दिस लंका जिहां नाम । सर्व वस्तु सों सौभै ठाम ॥
चैत्यालों परि धुज फहराय । अमर स्वर्ग सुख छोडै आय ॥८३॥
सहंसकूट बने जिण थांन । लंकागढ सुर्ग पुरी समान ॥
सकल वस्तु का करौ वर्षांन । बढै कथा नहीं होय निदान ॥८४॥
मेघवाहन कुं दीयाहार । या की पूजा करो सवार ॥
जो मनवांछित करस्यौ नरेस । तैसा तुरत प्रकासै भेस ॥८५॥
पहैरैं मति गले मझार । कुल क्षय होय पहरै जब हार ॥
या की पूजा कीजो भली । तो पूजै मन वांछित रली ॥८६॥
अरु द्वै विद्या दीनी राक्षसी । ते निश्चल चित अंतर वसी ॥
कमला अमला संप्रत तीन । दई विद्याधर गुणह प्रवीन ॥८७॥
श्री जिणवर की आज्ञा पाय । चढि विमान लंका में जाय ॥
बाजा बाजैं घुरै निसान । पूरणघन मेघवाहन भान ॥८८॥
सैना बहुत लई उन संग । हाथी रथ पालकी तुरंग ॥
बैठ विमान चले आकास । देखे पुरपट्टण बहु बास ॥८९॥
देख्या सायर लहर तुरंत । मच्छ कच्छ उतरैं बहु रंग ॥
त्रिकुटाचल तिहां कंचन कोट । ताहि कान्ति रवि हुआ ओट ॥९०॥
देखी लंका कंचन मई । जिनवर भवन सोभा अति भई ॥
अष्ट द्रव्य सो पूजा रची । करै आरती दंपति सची ॥९१॥
पूजा करि गढ ऊपर चढे । देखत सुख महा अति बढे ॥
थाल कलस दीया लंका राज । हुवा सबै मन वांछित काज ॥९२॥

निरभयवंत राज ते करैं । भूचर षेचर सेवा करैं ॥
विजयारध पर्वत कै पास । किनर गीत नगर का वास ॥९३॥

चलिमयूष तिहां बसै नरेस । श्रांनमती त्रिय सोहैं केस ॥
सुप्रभा पुत्री ताकै भई । मृगलोचन कमलाननी भई ॥९४॥

कीर नासिका सुभ्र कपोल । हीरादंत कोकिला बोल ॥
भुजा कलाई अंगुरी फरी । जंघ केल सम कटि केहरी ॥९५॥

पंकज चरण हंस गति चाल । बेणी सोभा जेम बयाल ॥
टीका मेघवाहन का किया । लिष्या लगन सुभ दिन साधिया ॥९६॥

महलरली सौं हुआ विवाह । सोना दीना बहु नर नाह ॥
हय गय वाहन दीये घने । चमर छत्र सिंघासन बने ॥९७॥

जीत कनौज भूपति नइ दई । तो मोपैं नहि बरणी गई ॥
बिदा होय चाले नरनाह । आये निजपुर अधिक उछाह ॥९८॥

सुष मांही दिन बीते घने । चमर छत्र सिंहासन बने ॥
भई गर्भ थिति सुप्रभा तनें । महाराक्षस भयो उत्पने ॥९९॥

महाराक्षस भया उत्पन्न । रूप कला लक्षण सुखन्न ॥

ता पाछैं हुआ सुत और । ससांक कुमार विराजे ठौर ॥
सगर चक्री मेघवाहन भूप । पहरि आभरणं अधिक अनूप ॥१००॥

आए समोसरण जिनथान । देखत उपजै सुख दिनांन ॥
नमस्कार करि बिनती करै । कर जोडि मस्तक भू धरैं ॥१०१॥

स्वामी कथा कहो समझाय । मन म्हारे का संसय जाय ॥
तुमसे पुरुष और भी भए । धर्म तीर्थ कौं उनके कीये ॥१०२॥

तुमसा कोई ह्वं है और । असुभ करम को डारैं तोडि ॥
चक्रवर्ति केते ह्वं भूप । कामदेव ह्वं अधिक स्वरूप ॥१०३॥

नारायण केते बलिभद्र । प्रतिनारायण के ते रुद्र ॥
श्री जिनवर भाषै सब समझाइ । बारह सभा सुणैं मनलाय ॥१०४॥

उत्सर्पणी अवसर्पणी काल । त्रेसठ पुरुष ह्वैं चौथेकाल ॥
चौबीस तीर्थंकर कामदेव । बारह चक्री नौ बलदेव ॥१०५॥

नारायण प्रतिनारायण नौ । महारुद्र वे ग्यारह गिनो ॥
पहली हुआ जुगलिया धर्म । रिषभदेव परकास्यौ मर्म ॥१०६॥

चक्री प्रथम भया ते भरत । कामदेव बाहुबल समरत्थ ॥
पंच कल्याणा इंद्रादिक देव । पूजा करैं चरण की सेव ॥१०७॥

हुये सरवारथसिधि तें आय । अजितनाथ बीजो जिनराय ।।
गरभ जनम तप केवल ग्यांन । किये महोछव सुर नर आन ।।१०८।।
चक्री सगर दूसरा भया । छह षंडि साधि राज भोगिया ।।
बाईस होंय और अवतार । धरम प्रगासैंगे संसार ।।१०९।।
चक्रवर्ति ह्वै हैं दस और । पाप दुष्ट मारैंगे तोडि ।।
धर्म पुन्य की रक्षा करैं । तीन काल सुमरण दिढ धरैं ।।११०।।

चौबीस तीर्थंकर

ऋषभनाथ प्रथम जिणदेव । जैन धरम प्रकास्या भेव ।।
दूजे अजितनाथ जिणराय । संभव अभिनंदन सुमतराय ।।१११।।
सुमति पदमप्रभू देव सुपास । चंद्रप्रभ मन पूरवै आस ।।
पुष्पदत सीतल श्रेयांस । वासपूज्य सुमरो जिणहंस ।।११२।।
वंदौं विमलनाथ सुजिणंद । अनंतनाथ चउदहौं मुणिंद ।।
धरमनाथ जिणधरम महंत । शांति कुंथु श्री अरु अरिहंत ।।११३।।
मल्लिनाथ मुनिसुव्रत देव । नमि नेम की कीजे सेव ।।
पार्श्वनाथ कमठ मद हुया । वर्द्धमान प्रकासी दया ।।११४।।

दूहा

बाहुबलि का बल अधिक, दूजा अमर मजसेन ।
श्रीधर दरसन भद्र अति । प्रसनचंद सुष सेन ।।११५।।
चंद्रवरण चंद्रकला, अगाति, मुकति सनंतकुमार ।।
श्रीवछराजा कनकप्रभ, मेघ वरण उनहार ।।११६।।
सांति कुंथ अरु अरह जिण. विजयराज श्रीचंद ।।
नल राजा श्रुलभद्र अति, हनुमान छह चंद ।।११७।।

अडिल्ल

बलिराजा वसुदेव सेव बहुतैं करैं
प्रद्युमन रूप अपार ताहि क्यौं मन धरैं ।।
नागकुमार सुदरशन सील पाल्या खरा,
धारयौ दृढ व्रत सील सुभव सायर तिरघा ।।११८।।
चक्रवर्त्ति भयऊ भरथ देस बहु साधिया ।
जीते भूप अनेक जिनों को बांधिया ।
धरचा धरम सौं ध्यान कर्म वसु क्षयकिया ।।
केवल ज्ञान उपाय मुक्ति वासा लिया ।।११९।।

सगर जीय कर चक्र देस अपने करैं ।
 इहु वंस के भूप ञाय जोडयो खरैं ।
सुण्या धरम जिन पास भाव बहु मन धरया ।।
 वाणी अगम अपार जीव सुणि निस्तरया ।।१२०।।

दूहा

मघवसु चक्री तीसरा । सनतकुमार भी होइ ।।
सांति कुंथु अरहनाथ जी । सुमरो नित सब कोइ ।।१२१।।

फिर सुभोम चक्री भया । पद्मम सुचक्री जान ।।
हरषेन जयसेन नृप । ब्रह्मादत्त गुणवांन ।।१२२।।
त्रिविष्ट द्विविष्ट स्वयंभव । पुरुषोत्तम सिंघ भेव ।।
पुंडरीक दत्त लक्ष्मणां । कृष्णनारायण देव ।।१२३।।
सुतारिक असुग्रीव । मेर कुमेर मधु कंट ।।
नि-संभव पहलाद । वलि रावण जरासिंध हु वाहेट ।।१२४।।
विस्वानल सुप्रतिष्ठ । अचलपुंडरीक जीतंधर ।।
विजय अचल सुधरम सुपुत्र सुदरसन आनंद ।
नंदमित्र श्री रामचन्द्र हरनंधर ए शुभकंद ।
भीम बली जितसत्रुजी जित नाभि पोढिल इष्ट ।।१२५।।
क्रोधानलें भया ईग्यारमां । महारुद्र बलवीर ।।
त्रैसठ सीलाका पुरुष सब । सम्यकदृष्टी धीर ।।१२६।।

अडिल्ल

श्री जिण ग्यांन गंभीर अंत नहि पाइये ।
 भव्य जीव धरि भाव प्रात उठि ध्याइये ।।
केवलग्यांन अपार सकल संसै भजै ।
 दियो धरम उपदेस सुख हिरदै रजै ।।१२७।।

चौपई

संसार का स्वरूप

अब देखो संसार सरूप । कबहू रंक कबहू हूं भूप ।।
जीव दया विन कवै न सुख । निरदय पावै भव भव दुख ।।१२८।।
हय गय विभव द्रव्य भंडार । रहे सकल हैंगे निराकार ।।
सज्जन कुटुंब दामनी उद्योत । छिनही माहि अंधेरा होत ।।१२९।।
राजा विभूतह पुत्र कलित्र । सबै विनासी बुदबुदावत ।।
इण संसार नही थिर कोय । देही आदि नहीं साथि होई ।।१३०।।

धरम सहाई जीव के साथ । सुमरण करउ जपो जिण नाथ ।।
जैन धरम परषै गुणवंत । रवि प्रताप उज्जल बहु मंत ।।१३१।।

मिथ्या धरम करैं जे अंध । अशुभ करम के बांधे बंध ।।
छांडै अमृत पीवैं नीर । भवसागर ते लहैं न तीर ।।१३२।।
च्यारों गति में डोलैं सदा । काल अनंत लहै आपदा ।।
मिथ्या धरम करो मत कोई । जैनधर्म तें शिवपद होइ ।।१३३।।
छोडै भोग जोग आचरैं । बहुर न भवसागर में परैं ।।
च्यारि कषाय अठारह दोष । ए छांडैं तब पावैं मोक्ष ।।१३४।।

अडिल्ल

मेघवाहन सुनि भूप धरम पहचानिया ।
जग सुपनां सम देखि अनित्य जु ठानिया ।।
छांडियो लंकाराज पुत्र जाकौ दयो ।
सहस्र भूप के साथ आप चारित्र लियो ।।१३५।।

चौपई

महाराक्षस जहां भोगवैं राज । ससांक पुत्र छोड्या जुवराज ।।
महाराक्षस के विमला स्त्री । पतिव्रता आज्ञा में खरी ।।१३६।।
तीन पुत्र जाके उर भये । रूपलक्षन करि सोभैं नये ।।
अमर राक्षस उदयोदय रास । भांनु राक्षस की सोभा लाक्ष ।।१३७।।

सगर चक्रवर्ती वर्णन

सगर चक्रवर्ति निष्कंटक राज । साठ सहस्र सुत आज्ञा काज ।।
एक दिवस सब मतउ विचार । चले पिता पैं करैं पुकार ।।१३८।।
अब हम बडे सयाने भए । अब लग कछु उद्यम नहीं किये ।।
षोडश वर्ष तणौं परमांण । पुत्र पिता कौं पावै थान ।।१३९।।
बिना कुमाये यूं ही फिरै । सो कपूत नाहीं बिस्तरै ।।
अब हमकूं तुम आज्ञा देहु । सेवा करैं किसकी धरि नेहु ।।१४०।।
कहैं पिता तुम सुणउ कुमार । हम सब भूप नहीं संसार ।।
ताकी सेव करौ तुम जाय । कौंन समुझि चितई सुखदाइ ।।१४१।।
सर्व वस्तु की पूरण रिद्ध । जिससो वच्छ घणेरी रिद्ध ।।
सुणत वयण कर मस्तक धरैं । हमने टहल करो सौं करैं ।।१४२।।
आज्ञा भई जाहु कैलास । महा गंगा पौढो ता पास ।।
सोवर्नमई चैत्याले घने । रतन बिंब सोभा सब बने ।।१४३।।

आगइ बहु होहिंगे मलेच्छ । वेहु वां आनि करें परवेस ।।
महागंगा ने फेरउं तिहां । कोइ न जाइ सकैगो वहां ।।१४४।।
बिदा मांगि गए कैलास । खाई खोदें चित्त उल्लास ।।
खोदी तिरणै ऊंडी अति मही । धम धम बहु धरणेन्द्र सही ।।१४५।।
मनमें कोप्या मुंड उठाय । सहस्रमुखी जिह्वा निकलाय ।।
करी फुंकार धूम आकार । अग्निझाल ते हुये छार ।।१४६।।
मूए सब तब उबरे दोय । भीम भागीरथ चित विसमय होय ।।१४७।।
सगर पास आए तिरण वार । सकल बात कौं कह्यौं विचार ।।
सुणि वृत्तान्त महादुख भया । रोवै पीटै कूटै हीया ।।१४८।।
हा हा कार नगर में होय । ऐसा दुखी न दूजो कोय ।।
राजा अश्रुपात बहु करइ । ज्यौं ज्यौं दुःख हिये उच्चरइ ।।१४६।।
समभावैं सब मंत्री लोग । इस संसार संयोग वियोग ।।
किस को पुत्र पिता परिवार । इस विभूति जल पटल प्रकार ।।१५०।।
पुण्य संयोग लई बहु रिद्ध । अशुभ उदय दुख लहैं प्रसिद्ध ।।
स्वारथ रूप सबं संसार । साथी नहीं पुत्र परिवार ।।१५१।।
जब लग जीव तब्य सुखराज । जीव बिना कछु सरइ न काज ।।
राजा फेरि नगर संचरया । मनतैं दुःख न होवै परा ।।१५२।।
आये समोसरण की सीम । राजा सगर साथ ले भीम ।।
श्री भगवंत का दरसन पाय । बहुत भांति सों नवरण कराय ।।१५३।।
देख मलीन बहुत मनमांहि । श्री जिनवर समभावैं ताहि ।।
भ्रम्या जीव इह आदि अनादि । बिना धरम नर देही वादि ।।१५४।।
सब ऊपर चक्र फिरावै काल । नोतन विरध न छोडै बाल ।।
बैठ्या ऊठ्या जागत सैन । रोवत गावत दुखिते बैन ।।१५५।।
कायर सूर राव ने रंक । काहु की नहीं मानें संक ।।
मूरिख पंडित तप अति जती । कालै दया न आवै रती ।।१५६।।
पूरण आव बीत जब जाय । बालक तरुण वृद्ध ने खाय ।।
काल समान बली नहीं कोइ । पकरि पछारत बार न होय ।।१५७।।
स्वर्ग पाताल अवं भुवि लोक । सरवारथ सिध लौं चोक ।।
आगे नहीं काल की दौडि । मुकति थान निरभय है ठौर ।।१५८।।

दूहा

तीरथंकर अरु चक्रवर्ति, कामदेव बलिभद्र ।।
नारायण प्रतिनारायन, तपसी नारद रुद्र ।।१५६।।

काल तहाँ बसि सब भये, जोधा सुभट सुजांन ॥
सकल लोक इण जीतिया, या सम बली न आंन ॥१६०॥

सोरठा

चक्रवर्ति सुनि भेद, भोग सोग सब परहरे ।
धरयो ध्यान दिढ जोग, सब संसार मन तें तजा ॥१६१

राजा भागीरथ का वर्णन

दूहा

भागीरथ राजा किया, सगर भीम सहु त्याग ।
दिक्षा ली जिणराय पैं, मनमें धरि वैराग ॥१६२॥

चौपई

पालै प्रजा भागीरथ भूप । मुकट छत्र सिर बने अनूप ॥
राज करत दिन बीते घने । श्रुतसागर मुनि आये सुने ॥१६३॥

नरपति के मन हरख अपार । चले जहां मुनि प्राण अधार ॥
नगरलोक चाले सहु साथ । वनमें ध्यान धरयौ मुनिनाथ ॥१६४॥

आए निकट वंदना करी । साठि सहस की पुच्छी चरी ॥
जिण कारण एकठे मरे । कहो कथा ज्यों संसय टरे ॥१६५॥

मुनि बोले पिछला संबंध । ताथी हुआ करम का बंध ॥
समेद शिखर चाल्यो इक संघ । इंतपुर गांम देख मनरंग ॥१६६॥

देखत लोग संघ को हंसैं । देखा गांव किसो तहं बसैं ॥
कुंभकार बरजं तिन्हूं जात । इण ठां गया जीव नो घात ॥१६७॥

बात कही भीमानी नही । गांव मांहि देही गज गही ॥
पकड पछारे सगले लोग । मींड मांड सब कीन्हे फोक ॥१६८॥

कुंभकार मरि वणिवर भया । तप करि बहुरि राज सुत भया ॥
तप करि फिरि पायो सुरथांन । सो तुं भयो भगीरथ आंन ॥१६९॥

साठि हजार सिघ के जीव । सगर भूप सुत उपजें तीव ॥
जात्रा मांहि सब का रह्या ध्यान । राजपुत्र ते हूये भान ॥१७०॥

कारण पाए मुए इक ठोर । अशुभ करम की मिटई न घोर ॥
सुनि भागीरथ कीयो नमस्कार । राज छोड ली दीक्षा सार ॥१७१॥

लंका का राजा महाराक्षस

महाराक्षस लंका का भूप । वन क्रीडा का देखन रूप ॥
सकल कुटंब लिया नृप संग । वन उपवन गुह गंभीर उतंग ॥१७२॥

निरमल सरोवर देखे घने । फूल फले कमल अति बने ॥
स्वर्गलोक किन्नर उनहार । रांणी सोमैं राज दुवार ॥१७३॥

भई रयण मुरझाये फूल । भमरा रहे बास में भूल ॥
देखई उपज्यो नृप ने ग्यान । एके इन्द्री में भ्रमर भुलान ॥१७४॥

पंच इंद्री बसि रहे भुलाय । उन जीवानैं कौंण सहाय ॥
ग्रैसी समझि भयो वैराग । राजरिद्धि सहु परियन त्याग ॥१७५॥

भ्रमर राक्षस

भ्रमर राक्षस ने सौंप्यो राज । दिक्षा लई मुकति कै काज ॥
संसार परीष्या वैपन किया । भंवर देखि मति आयी हिया ॥१७६॥

दूहा

भंमरा बींध्या कमल में, दये प्रांन ता बीज ॥
राजा क्रीडा अति करही, विषय गणी सब नीच ॥१७७॥

अडिल्ल

मनमें धरि वैराग चित्त चिमस्या घरा ।
इह संसार असार दुख सागर भरा ॥
एक इंद्री कै विषै प्रांण परिहरि करैं ।
पंच इन्द्री के विषै सेय क्यों निस्तरैं ॥१७८॥

चौपई

श्रुतसागर मुनि के पास गमन

राजा सोचैं मनमें ग्यांन । श्रुतसागर आये बन थांन ॥
धरयो ध्यान तप करैं अनेक । मन वच काय न डोलैं एक ॥१७९॥

तेरह विध चारित्र सौ चित्त । सहैं परीसा वाइस नित्त ॥
अवर अनेक सिष्य ता संग । सहैं परीसा अपने अंग ॥१८०॥

रूप गुणे अति महा प्रवीण । चंद्रकांति देखत अति हीण ॥
माली गया भूप के पास । मुनिवर जोग दिया बनवास ॥१८१॥
ग्यांन तीन अंतरगत वसैं । दरसत देखत पातिग नसैं ॥
सुनि नरेस मन किया उल्हास । पूजण चले सुगति की आस ॥१८२॥
नगर लोग चले संग बहुत । ततक्षण बन में जाय पहुंत ॥
नमस्कार करि कारी डंडोत । मदन कांति ससी की अति जोत ॥१८३॥

चरण प्रक्षालण विनती करैं । कहो धर्म मम संसय हरैं ॥
मुनिवर कहै धर्म समुझाय । हिंसा व्रत पालो मन लाय ॥१८४॥

दृष्टि अगोचर गोचर जानि । षटकाया जे आप समान ।।
जांणि बृक्ष न विराधो कोइ । अनइ देखें जे हिंसा होय ।।१८५।।
पश्चात्ताप करें मन मांहि । मिटै सकल हिरदा की दाह ।।
अनरत विरत दूसरा कह्या । सत्य बचन ते सिव सुख लह्या ।।१८६।।
चोरी लाभ परिहूरो सर्व । दान अदत्ता लेय न दर्व ।।
परिग्रह संख्या पालें सील । धर्म निमित्त न कीजे ढील ।।१८७।।
संख्या वस्तु करें परिमांण । सक्तिसमा द्यो चारों दान ।।
वइयाबरत करें बहु भांति । अनंतकाय भोजण तजि राति ।।१८८।।
महाराक्षस मीनवै करि गह्यो । मेरो भव ब्योरास्यों कहो ।।
चारि ग्यांन का धारक साध । पूजत हैं प्रानी की साध ।।१८९।।
कही सकल पूरब भव बात । अंधकार जिम दीप मिटात ।।
पोवनपुर उदयाचल नृप । अरहण श्री राणीज अनूप ।।१९०।।
हेमरथ पुत्र ताहि कैं भया । बहुत आनंद दंपति चित थया ।।
हितवंत महाजन तिहु ठां वसई । माधवी नारि मन उल्हसइ ।।१९१।।
प्रत्यक्षपुत्र है लघु अवतार । रूपलक्षण करि सोभा सार ।।
एक दिवस गरज्यो घनघोर । नृत्य करंतउ देख्यो मोर ।।१९२।।
विद्युत चाल मुवा जब मोर । नरपति के जिय उपजी और ।।
संसार परिक्षा पेषि तुरंत । घर परियण छोडे बहुमंत ।।१९३।।
श्री मुनि पास दिक्षा लई आय । करी तपस्या मन वच काय ।।
पहुंच्या स्वर्ग लही गति देव । किन्नर बहुत करै ता सेव ।।१९४।।
चई करि उपज्या षेत्र विदेह । कंचनपुर देखे वर गेह ।।
श्री प्रभाराणी सुन्दरी । ताकैं गर्भ आइ थिति करी ।।१९५।।
उदित नांम भया सुकुमार । रूपवंत गुंण लक्षण सार ।।
जोवन समैं महा बलवंत । रविप्रताप सोभा बहु मंत ।।१९६।।
मुनिवर का उपसर्ग निवार । धरम वषांण सुण्यो निरधार ।।
चारण मुनिपै दिक्षा लई । ग्यांन ज्योति अन्तर्गत भई ।।१९७।।
असनवेग विद्याधर जहां । उदित मुनि ध्यान धरया तिहां ।।
मुनिविर विद्याधर गमैं आकास । हम भूगोचरी पृथ्वी वास ।।१९८।।
मेरे तप का इह फल होइ । विद्याधर गति पाऊं सोइ ।।
देही छोडि ईसान विमान । छोडि हुवा महा राक्षस आंन ।।१९९।।
अमरराक्षस को दीया राज । भान राक्षस छोटा युवराज ।।
महाराक्षस दिक्षा पद लई । सौधर्म विमान देव पद थई ।।२००।।

विजयारध पर्वत उच्चंत । किन्नर गीत नगर निवसंत ।।
श्रीधर जहां रहै मुनरेस । श्राविका स्त्री सोभै बहु भेस ।।२०१।।

विद्युत पुत्री ताकै भई । रूप लक्षण गुण सोभै मई ।।
श्रमर राक्षस कु दई विवाह । भोग मगन रस करई उछाह ।।२०२।।

गंधर्व गीत नगर शुभ ठोर । सरीसनाभ सम भूप न श्रोर ।।
भारव्या नांम राणी पट धनी । गांधर्ववती पुत्री सोभा बनी ।।२०३।।

भानराक्षस कौं कन्या दई । क्रीडा भोग रिति मानैं नई ।।
श्रमर राक्षस के देवराक्षस पुत्र । विजयार्द्ध जीते सहु सत्र ।।२०४।।

भानराक्षस कैं दस सुत भये । पुत्री षट्‌ग्यांन गुन हीये ।।
दसों बसाये दस ही देस । सुरगपुरी सम दीसै भेस ।।२०५।।

संध्याकार बसाया नगर । सबल मनौ लंकापुर श्रगर ।।
मृनाल हंस हीर पुरिश्रोर । जोधपुरि समदपुरि की ठौर ।।२०६।।

देवराक्षस लंकापति राय । मनोवेग गति सोभै ठाइ ।।
सुप्रभा विवाही असतरी । नंदीनाक पुत्र भया सुभ घरी ।।२०७।।

श्रोहनमती विवाही नारि । भीमप्रभ पुत्र भयो श्रवतार ।।
जोवन समय भयो विवाह । सहस्रत्रियासौं भोग उछाह
भए पुत्र एक सौ श्राठ । बरणंत सकल बढैं बहु पाट ।। ।।२०८।।

दूहा

भासकर पुंजर नाम जित, संप्रति कीर्त्ति सुग्रीव ।
वृहत्कीर्त्ति नंदन सुनंदन, समुद्रसेन हयग्रीव ।।२०९ ।।

चौपई

चंद्रवरत भया महाराव । मेघ धवल ग्रह धवला नाव ।।
नक्षत्र दमन मेघनाद भाव । चंचल प्रभु बहु चढतै दाव ।।२१०।।

कीत्तिधवल को सौंप्या राज । श्रापण किया मुक्ति का साज ।।
पाले प्रजा प्रभू कीरति धवल । परमनीत सुणि वाणी प्रबल ।।२११।।

इति श्री पद्मपुराणे श्री श्रजित महातम राक्षस संबंधे ।

विधानक ।।३ ।

चतुर्थ संधि

वानर वंश वर्णन

चौपई

फिर श्रेणिक कीयो परसन्न । वानरवंसो की उत्पन्न ।।
श्री जिनजी की वांणी भई । मन संसय सब की मिट गयी ।।१।।

विजयारध गिर दक्षिन ओर । सुरग लोक सम सोभै ठोर ।।
मेघपुरी नगरी इक नांव । अतेंद्र भूपती को तहां ठांव ।।२।।

मंदिर सघण बणे उच्चंत । उत्तम लोग बसैं गुणवंत ।।
अत्येंद्र राजा अति बली । श्रीपती जग मानें रली ।।३।।

श्रीकंठ पुत्र ताकै गेह । रूपवंत कंचन सम देह ।।
विद्या पढी भया उर ग्यांन । ता सम तुल्य न पंडित आंन ।।४।।

चौथी देवी पुत्री भई । लोयण मृग क्रांति शशि लई ।।
सकल रूप जो कहुं समझाइ । सामोद्रिक के जानो भाइ ।।५।।

रतनपुरी पुहपोत्तर भूप । जा घर राणी अधिक सरूप ।।
पद्मोत्तर सुत ताके गेह । लक्षण करि करि सोभै देह ।।६।।

अतेंद्र पास तिण भेजा दूत । विनती आप लिखी सुबहुत ।।
पद्मोत्तर सुरमोरा गुनी । कन्या देऊ पढाओ मनी ।।७।।

अत्येंद्र पूछया श्रीकंठ । करी सगाई लिख दिया संठ ।।
आनंद भया दुहुं भूपती । करैं बधाई जागी रती ।।८।।

यों ही बीत गये दिन घने । लगन काज सुत सौं नृप भने ।।
रचौ सौज करि दीजे ब्याह । पुत्र पिता की मानैं नाहिं ।।९।।

कहैंक यासों ब्याहुं नहीं । पद्मोत्तर सुनि चिंता थही ।।
मोमैं कहा लगाई खोर । उनैं विचारी मनमें और ।।१०।।

पुहपोत्तर पद मौत चितवैं । निस वासुर हा हा बोलवैं ।।
अन्तर्गत मन राखैं बैर । दाव बनैं तो मारूं घेर ।।११।।

कन्या की सुन्दरता

विद्याधर सब गये सुमेर । पूजन चले न लागी देर ।।
पुहपोत्तर की तहां पूतरी । सकल कला गुण लावण भरी ।।१२।।

रूपवंत ज्यों पून्यूं चंद । घटैं बधैं यह सदा अनंत ।।
दीरघ नयन श्रवण सों लगे । देख कुरंग वन मांहि भगे ।।१३।।

दंत चिमकैं ज्यों हीरों की ज्योति । मस्तक कपोल प्रथ्वी उद्योत ।।
नासा भौंह बनी छबि घनी । वेंनी कीर्त्ति न जाये गिनी ।।१४।।

केहरि कटि कदली सम जंघ । भुजा कलाई सुभर अभंग ॥
एडी तलुवा पल्लव भली । गावैं राग मनोहर रली ॥१५॥

द्वादस आभरण सोल शृंगार । देखत नर भू खाइ पछार ॥
सीरीकंठनैं सुणि कैं राग । दोन्युं बातां करैं सराग ॥१६॥

हूं विद्याधर इनको देख । पुहपोत्तर की पुत्री पेख ॥
यह सर्सैं क्यूं लागा बात । सुणी भगवक पुत्री की तात ॥१७॥

पुहपोत्तर वे देख्या आंन । और नही बुद्धि हिये मैं जांन ॥
श्रीकंठ का पीछा किया । भाजग्र लंका भीतर गया ॥१८॥

श्रीकंठ भगनी पैं जाय । आदर भाव किया बहु भाव ॥
पुहपोत्तर साजी सब सैंन । चढ्या कटक दिन तैं भई रैन ॥१९॥

छाया रहे आकास बिमांन । अरु बाजैं गहर निसांन ॥
दसौं दिसा भई मैंभीत । कीत्तिधवल मन कालो चित ॥२०॥

कै इह कोप चढ्या है इंद । अबही आंण करैगा बुन्द ॥
भेज्या दूत पुहपोत्तर पास । याहि वेग सुध लीज्यो तास ॥२१॥

गयो दूत जहां नाम नरेस । नमस्कार करि कहै उपदेस ॥
तुम भूपति उत्तम कुल भांन । ऐसा भूप नहीं कुहि आंन ॥२२॥

सिरीकंठ मूरिख अग्यांन । उण न करयो तुमरो सनमांन ॥
वह सेवक तुम परथीपती । वापर कृपा करो भूपती ॥२३॥

वह भी उत्तम कुल का लाल । करो ब्याह तो बात रसाल ॥
नार चितवै भेज्या वसीठ । आया निकट भूप की दीठ ॥२४॥

पूछै राय कहौ सत भाव । कौंण काज पठयौ इण ठाव ॥
कहै दूत सुणु तुम नरेस । नारिदि देवि ने कह्या संदेस ॥२५॥

पद्मोत्तर से मांगी मोह । या जग और न जाउं गोहि ॥
एक छोडि दूजो जो करै । नरक निगोद अधोगति फिरै ॥२६॥

पद्मोत्तर तैं जे नर और । तात भ्रात सम जाणों ठौर ॥
अबला विचारैं और करम । ऐसे रहै त्रिया को धरम ॥२७॥

दासी ह्वं विनऊं कर जोरि । मनकी पुटकै माऊं तोडि ॥
रहस रली सौं किया विवाह । दुहुं कुल हुआ अधिक उछाह ॥२८॥

हिरदा तणां वैर तब तज्या । भई बधाई मन में रज्या ॥
सोना दिया बहुत नरेन्द्र । दोन्युं और भया आनंद ॥२९॥

भोग मगन सब सुख के साज । दोऊं नगर करें ते राज ।।
कीर्तिधवल श्रीकंठ सौं कहै । लंका के जेते पुर रहै ।।३०।।

जहाँ कहो सोई द्यु नगर । वैरभाव भाजेंगे सगर ।।
दक्षिण दिसा भीम अति भीम । सघन बसै सुविराजै सीम ।।३१।।

उत्तर दिस अस्त सा दीप । मिरगदीप सौचित्र कर दीप ।।

सकल दीप की सोभा कही । श्रीकंठ सुनि मनमैं गही ।।३२।।

पद्मश्री अस्त्रीन बुलाय । दंपति बिलसे सुख के भाय ।।
कीर्तिधवल के निकसे संग । किषल पर्वत देखिये उतंग ।।३३।।

वानर द्वीप

चौदह् योजण पर्वत ऊंच । वानर द्वीप बसै ता वुंच ।।
नील नगर की महिमा घनी । सायर मांइ भांइ अति बनी ।।३४।।

बन उपवन नीली चहुंओर । पंछी करैं हरष सौं सोर ।।
देख श्रीकंठ करैं आनंद । कहुं पंछी गुण पढ़ै जिणंद ।।३५।।

बोलैं सबद सुहाये बोल । रहस रली सों करैं किलोल ।।
छह् रित के फूले फल फूल । बैठकं घनी बनी अनुकूल ।।३६।।

मंदिर चित्रकारी सुं बने । कूप वापिका सरोवर घने ।।
जल में कमल बिराजै भले । भवर गुंजार करैं पहुफले ।।३७।।
जैसे द्रुग तिय कज्जल भरै । कमल ऊपर मधुकर गुंजरै ।।३८।

बहुरि गिरि चढि देखे देस । मन आनंदित भए नरेस ।।
कपि पकड़ि आणे बहु बांधि । देखे राय नयन सों सांधि ।।३९।।

ए दीसैं माणस की भांति । कोमल रोम वर्ण शुभ गात ।।
हैम सांकल जड़ाउ पटे । घुंघर बाल सु बानर मढे ।।४०।।

मीठैं भोजन नाना भांति । उनह् षुवावैं संध्या प्रात ।।
किषल गिर पैं आरूढे भूप । सोभा दीसै सकल अनूप ।।४१।।

किषलपुर नगर

चौदह् जोजन ऊंचा मेर । बैयालीस जोजन का फेर ।।
किषलपुर नगर ता ऊपर बसै । बन उपवन सोभा उलसै ।।४२।।
कंचन कोट रतन के जडित । सुरगपुरी की सोभा हरत ।।
रतनसिला की देहली बणी । नयरी सघण बसै तिहां घणी ।।४३।।

श्रीकंठ पदमावति सिरी । रूप लक्षण गुण सोभा भरी ।।
कीर्तिधवल लंका का नरेस । दिया श्रीकंठ किपलपुर देस ।।४४।।
राजा राणी भोगवें राज । बन क्रीडा के देखन काज ।।
भद्रसाल बन सोभा और । नंदन बन आनंद की ठौर ।।४५।।
बनक्रीडा सुख देखे भले । दंपति फिर आए घर चले ।।
रुति अषाढ सोभैं सब भूमि । मेघ घटा चिहुं दिस रही घु मि ।।४६।।
दोन्यु बठे मंदिर सत खने । सीतल पवन ताप ने हरें ।।
इंद्रादिक च्यारों विध देव । चढें विमांण आपणों भेव ।।४७।।
अंरापति पर सोभें इंद्र । चले नंदीस्वर दीप सुरेन्द्र ।।
श्रीकंठ मनमें उल्हास । बंदण निमित्त भयौ चित आस ।।४८।।
सब परिवार सेन्यां संग लेह । साजि विमांण गगन धुनि देह ।।
मानषोत्तर पर्वत के मध्य । विद्याधर की चली न बुध ।।४६।।
बहुत उपाय किए उस बेर । विद्याधर को लांघे मेर ।।
अपनी निंदा खगपति करें । हीन पुण्य कब हम अवतरें ।।५०।।
अधिक पुनीत देव गति लही । नंदीश्वर को पूजें सही ।।
अब दीक्षा ल्यो इण बार । धरिहौं व्रत संयम ना भार ।।५१।।
यदि देहो तजि देवगति भरू । नंदीस्वर की पूजा करू ।।
आपण किया दिगंबर साज । बज्रकंठ पुत्र ने दे राज ।।५२।।
बज्रकंठ भोग वे चाल । सुख में बीत गया कछु काल ।।
चारण मुनि का दरसन पाय । पिता बात पूछी तब आय ।।५३।।
चारण ऋषि बोले धरि ध्यान । पूरब भव का करौ बखांण ।।
आशीसता नगरी का नांम । बनिक पुत्र द्वै निवसैं ताम ।।५४।।
परिच्छत दुरबुधि दोउं वीर । रूपलक्षण गुण साहस धीर ।।
परिच्छत के मन उपज्या ग्यांन । दुरिबुधि कू लक्ष्मी का ध्यांन ।।५५।।
आप जाय दीक्षा पद लिया । देही छोडि अमर गति गया ।।
दुरबुधि करें सरावग धर्म । दया अंग के जानें मर्म ।।५६।।
भिरमावली स्त्री ता गेह । सिघनी लक्षन ताकी देह ।।
करकस वचन सबं सो कहै । दया धरम तें परे ही रहै ।।५७।।
खोटी क्रिया करें मन लाय । जिनवाणी चित्त को न सुहाय ।।
दुरबुधि समझि संसार सरूप । तजि गेह भया दिगंबर रूप ।।५८।।
मन वच काया साध्या जोग । देव भयौ सौधर्म सुर जोग ।।
परिच्छत जीव श्रीकंठ सुभया । दुरबुधि जीव इंद्रपद लीया ।।५६।।

इन्द्र विचारी यह मन मांहि । ए चारित्र दिखाया तांहि ॥
तातें उत्तम दिक्षा पद लह्या । वज्रकंठ का संसा गया ॥६०॥

इन्द्रीवद कौं दीया राज । आपण किया मुक्ति का साज ॥
इन्द्रप्रभू इन्द्रमति मेर । समंद समीर रविप्रभ ग्रौर ॥६१॥

रविप्रभ जोगीस्वर भया । राजभार अमरप्रभ दीया ॥
अमरप्रभ परतापी खरा । या सम तुल्य न कोई नरा ॥६२॥

त्रिकुट राजा लंकापती । ता घर राणी सौभावती ॥
तास गर्भ कन्या गुणवती । रूप लक्षण सोभा बहुवती ॥६३॥

अमरप्रभ पै भेज्या विप्र । नालिपुंग लिख दीया पत्र ॥
गुणवती का मंगलाचार । आवो लंका स्यौं परिवार ॥६४॥

अमरप्रभु मन भया आनंद । वाजित्र बाजैं सुख का कंद ॥
रहस रली सूं स्याहरण मेल्या । ऐसी गोठ अवासर सला ॥६५॥

किये चितेरे बहुत अनूप । सकल भांति के मांडे रूप ॥
वन उपवन के रूंख बनाय । कनक कलस चौखूंट धराय ॥६६॥

सुघट त्रिया मिल पूरया चौक । कपि के चिह्न किये बहु थोक ॥
आई जान नगर के पास । साज बाज आग्योणी भास ॥६७॥

वस्त्र आभर्ण र मोती लाल । दीये तुरंग हस्ती सुखपाल ॥
टीका करि जनवासा दिया । भोजन बहुत जान कौ किया ॥६८॥

दई ज्योणार अति करि सनमांन । फिर आये मंडिप तिहि थांन ॥
सकल विभूत देखिए घरी । अमरप्रभु दृष्टि कपि चिह्नं परी ॥६९॥

कपि कुं देखि कोप बहु करया । सकल हिरदय भय बहुत भरया ॥
गुणवंती ढिग बैठी आन । अमरप्रभू बोल्या करि मान ॥७०॥

इह तो मंगलचार की वार । बांनर किम मांडे इस बार ॥
सब के मन में चिंता भई । दुहुं विरयां क्या बणि है दई ॥७१॥

अहाधांम मंत्री था एक । जानैं इनकी आपना विसेष ॥
उनने बात कही समभाय । इह कुल कुशल चाहिए राय ॥७२॥

कुन पूजैं हैं तुम्हारैं कपि । श्रीकंठ नैं इनांको थपि ॥
तातैं चित्र किये इस ठाय । इन दर्शनफल है बहु भाय ॥७३॥

इतनी सुणत कोध मट गया । मंगलचार दांन बहु दिया ॥
पूछी सब व्यौरा सूं बात । रोमांचित हुवा सब गात ॥७४॥

करि विवाह गए फिरि थान । भोग भगते बहु सुख की खांन ।।
चतुर्विध सैन्यां लेकर चले । विजयाधर मन साथे भले ।।७५।।

सब राजा नैं मानी आंन । धुजा मांझि कपि के निसांन ।।
कपि के चित्र मुकट में बने । वांनर वंसी प्रगटे घने ।।७६।।

देस साधि सब अपने किये । बहु पुर नगर बसाए नए ।।
कपिकेतु जनमिया कुमार । रूपवंत शशि की उनहार ।।७७।।

जोबन वय श्रीप्रभा नारि । इन्द्री सुख मानैं संसारि ।।
आप तात जिण दिक्षा लई । राजविभूति पुत्र ने दई ।।७८।।

पालै प्रजा कपि ध्वज नरेस । प्रतिबल पुत्र भया सुभवेस ।।
आप लिया संयम का भार । प्रतिबल कौ सौंप्या संसार ।।७९।।

गगन आनंद खेचर आनंद । गिरिनंदन तप सरवर नंद ।।
श्रेयांस जिणवर के समैं । श्रीकंठ किषपुर गमैं ।।८०।।

तीन सागर बीते जब काल । अमरप्रभ उपज्या भुवाल ।।
वासुपुज्य जिणवर के थांन पूजि चरण आयो नृप वांण ।।८१।।

याहि कुल भूपति बहु भये । काटि करम ऊंची गति गये ।।
वानर वंसी विद्याधर कहे । बरणौं सकल पार को लहै ।।८२।।

महोदधि रवि याही कुल भूप । विद्युतप्रकास राणी सुसरूप ।।
और स्त्री बिवाही घनी । पुत्र अठोत्तर सो गुण गुणी ।।८३।।

किषलपुर का भोगवै राज । वानरकुली कुनिका काज ।।
उत्तिम कुल इनका सुबिनीत । दया धरम सुं बहुते प्रीत ।।८४।।

अडिल्ल

राजा भए अनेक नाम कहां लौं कहैं ।
विद्याधर गुणवंत सकल दुरजन दहैं ।।
करी जगत परिजीत आरण सगलैं बहैं ।
अष्ट करम कुं काटि मुक्ति को पथ गहें ।।८५।।

इति श्री पद्मपुराणे वानर वंसी उत्पत्ति चतुर्थ संधि विधानक

पंचम संधि

चौपई

लंका का राजा विद्युतवेग

विद्युतवेग लंका का धनी । श्रीचंद्रा राणी गुण भरी ।।
नारी तेरण बिवाही घणी । ते सुख सोभा जाय न गणी ।।१।।

स्यौं अंतेवर वन में गए । ता वन सोभा देखत भए ।।
वृक्ष ऊपर कपि बैठ्या एक । राणी कुं फल मारया फेंक ।।२।।

आया निकट बीछुरी देह । बहुरयो चढ़या वृक्ष के गेह ।।
राय सुण्या रांणी का सोर । खेंच बाण मारया कपि ठोर ।।३।।

श्रवण मुनी बैठा तप करैं । वानर आय मुनी ढिग परैं ।।
श्री मुनि च्यार ग्यांन का धनी । कपि नैं देख दया ऊपनी ।।४।।

कपि कारण सुणाये पंच प्रभु नांम । महोदय नांम सुर पैठाम ।।
अवधि विचार एक भव तनी । आई सुरति क्रोध कंपनी ।।५।।

कपि देही तैं भया हूं देव । विद्युतवेग स्यु आख्यो भेव ।।
माया रूपी साजी सैंन । जहां तहां कपि करैं कुचैन ।।६।।

विद्युतवेग सोचैं मनमांहि । कै खेचर कै भूचर आईं ।।
यासों जुध करैं चढि खेत । बांधु सगली सैंन समेत ।।७।।

सेन्यां लेकर सनमुख धाया । चहुंधा वानर कोप्या हूवा ।।
धरती पग चोटी आकास । मुख विकराल भयानक त्रास ।।८।।

लंबे दांत भयदाई धरैं । सूरवीर धीरज नहीं धरैं ।।
केई परवत लेय उठाइ । केई विरख उठावें आय ।।९।।

ले ले दौडैं एकैं बार । मारि मारि कपि करैं पुकार ।।
विद्युतवेग नैं मानीं हार । गया जहां महोदय सुकुमार ।।१०।।

देव विचारया हिरदय ग्यांन । धरि आये कीजे सनमान ।।
राजास्यौं समझाई बात । मैं वह बंदर मारया घात ।।११।।

साध प्रसाद भया मैं देव । चालो मुनि पै पूछैं भेव ।।
राजा देव गए मुनि पास । दई प्रकम्मा पूजी आस ।।१२।।

सुर खेचर दोउ स्तुति करैं । साधु संगति भव सागर तिरैं ।।
देव तणी गति वानर लही । पंच नाम करण तैं सही ।।१३।।

जो कोई सेव तुम्हारी करैं । मन वच काया दृढ कर धरैं ।।
सुगति पंथ सो लेय तुरन्त । तोरैं जनम जरा का अन्त ।।१४।।

अब प्रभुजी कहिए कछु धरम । नासैं पाप मिलै पद परम ।।
मुनिवर कहैं धरम का भेद । असुभ करम का हुवा खेद ।।१५।।

मुनि का उपदेश

पंच अणुव्रत श्रावक करैं । महाव्रत जोगीस्वर धरैं ।।
कुगुरु कुदेवां मानैं नहीं ते । उत्तम कुल श्रावक सही ।।१६।।

जे मूरिख कहिए अग्यांन । कुगुरु कुदेवहि सेवैं जान ।।
मरि कर होवै शूकर स्वान । खोटी जोणि भ्रमैं बहु ग्रांन ।।१७।।

नीची गति बहु भ्रमता फिरैं । कबहूं न ऊंची गति मैं परैं ।।
जोनि लाख चौरासी संताप । कबहुं होइ गोह अरु साप ।।१८।।

भूल न मिथ्या कीजे कोइ । जैन धरम तैं सुरपति होइ ।।
सूक्षम भेद कहे समुझाय । फिर पूछे पिछले परजाय ।।१९।।

मुनिवर बोले ग्यांन विचार । बूडत जीव उतारैं पार ।।
कासी देस भील इक रहै । वनमें आय जीव बहु दहै ।।२०।।

सावस्थी नगरी का नाम । सुजसदत्त वाणिक तिह ठांम ।।
सुजसदत्त उपज्या वैराग । छोडे विषय दोष अरु राग ।।२१।।

जाण्यौं इह संसार असार । दिक्षा लई संयम का भार ।।
करि विहार कासी वन गया । तिहां जाय मुनि जोग जु दियां ।।२२।।

नगर लोक आयो सब जात । मुनिवर दीसैं मैले गात ।।
भील चल्या था करण अहेर । वनमें मुनि देख्या तिह बेर ।।२३।।

पूरव भव का वैर विरोध । मन मांहि बहु आण्या क्रोध ।।
मुनिवर नें सरसेती हत्या । देही छोडि देवता भया ।।२४।।

मुनिवर भया सौधर्म इन्द्र । सुरग लोक में गया सुरवीन्द्र ।।
भुगत आय लीया अवतार । तडित केस तूं भया कुमार ।।२५।।

भील मुवा नरक गति लही । बहुरयो तिरण खोटी गति सही ।।
भ्रम्या जोनि बहुला दुख पाय । अब इह बांदर हुवा आय ।।२६।।

पूरव भव का इह संबंध । रुद्र प्रणाम कुगति का बंध ।।
सुणी बात संसा सब गया । दया भाव अन्तर्गत भया ।।२७।।

सुकेस पुत्र कौं दीया राज । आपणि करयौ मुक्ति को साज ।।
महोदधि किंधलपुर धनी । सुरगपुरी की सोभा बनी ।।२८।।

नील अंबर विद्याधर आय । महोधर बसौ निचण कराय ।।
विनती करैं दोय कर जोडि । सुनौं प्रभुजी कहूं बहोरि ।।२९।।

तडतकेस लंका का भूप । दिक्षा लई दिगम्बर रूप ।।
तुम्ह उसमें थी अधिकी प्रीति । सुकेस पुत्र बालक भयभीत ।।३०।।

लंका का भी साधो काज । जब वह चेतैं तब दीज्यो राज ।।
राजा सुणि बोलेसत भाव । सिष पुत्र कौं कहा उपाव । ३१।।

जैसा बीज तैसा ज सुभाव । ऊनकूं कहा सिषावै राव ।।
राजा मनमें किया विचार । अंतहपुर गया तिही बार ।।३२।।
राणी सगली लई बुलाई । तिणि सूं बात कही समझाय ।।
इह विभूति सुपने की रिध । जाग्या कछु न देखैं सिध ।।३३।।
अबहुं दिक्षा दिढ सुं धरूं । काटि करम भवसायर तरूं ।।
सुणें वचन रोवैं रणवास । जैसे बोलैं बांसरी नाद ।।३४।।
कोकिल कंठ सब बोलैं नारि । ज्यों जल सरवर रहैं बिनपार ।।
तुम बिन हम क्यूं जीवैं राय । दासी होय बिन वै गह पाय ३५।।
इह सुख छोडि धरो संन्यास । दिन दिन होइ इन का नाश ।।
जनम अकारथ देखैं कौंन । ए सुख परिहर लीजे मौंन ।।३६।।
पंचामृत भोजन सुखवास । हूवां नित होइ पराई आस ।।
निरस सरस ले हो आहार । छह रितु सहो परीसा सार ।।३७।।
तुम सुखीयानैं कोमल देह । भूमि पिलंग तजि सोवो गेह ।।
बाईस परीसा दुख की रासि । क्यों भरिहौं पिय बारह मास ।।३८।।
बलि समझावैं मंत्री आइ । भूपति नैं सहु परिजा जाइ ।।
तुम सा राजा पावैं कहां । तुम प्रसाद सकल सुख इहां ।।३९।।
अब तुम राज करो विश्राम । चौथे आश्रम दिक्षा कांम ।।
राजा कहै सुणौं चित लाइ । इन्द्रिय विषय नरक ले जांइ ।।४०।।
पुत्र कलित्र रु राज विभूत । सबै विनासी अैसी हूंत ।।
स्वारथ रूपी जानहु धंध । मोह करम बसि हुए अंध ।।४१।।
मन वच काय लगाऊं जोग । छांडूं सगल भांति के भोग ।।
प्रतिचन्द्र कुं राजा किया । आपण भेष दिगंबर लिया ।।४२।।
श्रवण मुनीश्वर के ढिंग जाय । दिक्षा लई भये मुनिराय ।।
तप कर उपज्या केवल ज्ञान । धरम प्रकास भया निरवान ।।४३।।
प्रतिचंद्र तहां भोगवै राज । सुख मैं हुं सुत उपजैं काज ।।
किरण कुंवर अंधक दोउ भए । रूपवंत विधना निरभये ।।४४।।
प्रतिचंद्र ने दीक्षा लई । राज काज दोऊ पुत्र नैं दई ।।
दोऊ भ्राता भोगवैं देस । सुख ही में नित रहैं नरेस ।।४५।।
विजयार्द्ध रथनूपुर नगर । अश्वनवेग राजा बल अगर ।।
विजयसिंह पुत्र बलवंत । बल पौरुष का नहीं अंत ।।४६।।

आदितपुर नगरी का नाम । विद्यामंदिर राज तिहथांन ।।
वेगवती राणी ता गेह । श्रीमाला पुत्री कंचन देह ।।४७।।

श्रीमाला का स्वयंवर

ताके निमित्त स्वयंवर रचा । छत्र सिंहासण बहुते सज्या ।।
देस देस के भूपति आय । बैठे अपनी अपनी ठाय ।।४८।।

राग रंग बाजित्र सुघने । मंडपतल नरपति सब बने ।।
कन्या ने कर माला लई । राय सुमंगला कुंवरि संग भई ।।४९।।

लीन्ही छडी धाइने हाथ । सब राजा का कहै वृत्तान्त ।।
एक एक से बडला भूप । उनका कहां लौं बरनुं रूप ।।५०।।

नाभस तिलक मांतुंड कुंडला । विद्यासद्य सुदरसन भला ।।
वज्रादरज और वज्राध । उल्कालिंग वज्रपंजर नाम ।।५१।।

भांनुकुमार राजा चंद्रान । नूपुरेन्द्र वज्रहंस बलवान ।।
विद्याधर नरपति तिहां घने । नामावली कहां लौं गने ।।५२।।

दूहा

देखे सब राजा आवली, कोई न आया दिष्ट ।।
अपणे मन भूपति सकल, मान भंग चित भिष्ट ।।५३।।

चौपई

कन्या गई फिर माला लई । भूमि गोचरी राजा पें गई ।।
राजकुंवर देखे फिरि नैंन । जिकिद्ध पास गई माला दैन ।।५४।।

माला देई गले में डाल । विजयसिंध कोप्या भुवाल ।।
वांनर क्यों आये इस ठांव । हमस्यौं करचा गर्व का भाव ।।५५।।

इनसौं कहौ जाय फिरि गेह । अबही मारि मिलाउं खेह ।।
राक्षस वंसी किससुं कहौ । भागो वेग जो जिया चहौ ।।५६।।

जाउ तुरत बन अंतर रहौ । वनचर पें घर गरुवा रहौ ।।
बोले किकंध अरु अंधकुमार । सुकेस कहै क्रोध के भार ।।५७।।

तुम पंथी हम लंकापती । किकंधपुर की सोभा भती ।।
जैसे कौवा उडे अकास । तैसें तुम पंछी बनवास ।।५८।।

विजैसिंध की आज्ञा भई । सेना सकल एकठी थई ।।
कोई छाय रहे असमान । कोई घेर रहै उद्यान ।।५९।।

द्वार बार घेरे चहुं ओर । भांजि न सकई किस ही ठोर ।।
अजहूं इनको कीजे दूर । घर आए मारें नहीं सूर ।।६०।।

इनकूं इहां ले आया कर्म । मारो अबै गमावो भर्म ।।
किषध नरेन्द्र की आग्यां पाय । सईन्या सिमिट भई इकठांइ ।।६१।।

विद्या साथी सनमुख भए । वणिधारी आगैं ह्वै गए ।।
विद्याधर झूझैं आकास । भूमिगोचरी भूमि निवास ।।६२।।

मैंगल सु मैंगल चोवंत । पैदल सु पैदल झूझंत ।।
जे ते हैं विद्या के बांन । दुहुधां छूटैं मेह समान ।।६३।।

सैंची नुपक तणी भइ मार । विजयसिंघ आइया कुमार ।।
अंधक सेती कह्या हंकार । रे वानर अब डारों मार ।।६४।।

अंधक कुंवर गही तरवार । विजयसिंह मारया तिह बार ।।
विद्याधर कीये भयभीत । सुकेस किकंधक अंधक की जीत ।।६५।।

किकर अस्वन वेग पें गया । जयसिंह कुं भुंठा कह्या ।।
राजा सुणि आई पछार । सेवक घणां करै उपचार ।।६६।।

सीतल औषधि सीतलवार । बड़ी बार में हुई संभार ।।
तब कर उठ्या मार ही मार । सेनां चाली सकल अपार ।।६७।।

आदितपुर कौं घेरया आइ । राक्षस वांनर वंसि न रहाय ।।
मनमें सूर तणें आनन्द । देखैं किनर सुरिज चंद ।।६८।।

चाऊं विध के देखें देव । श्रीमाला समझावै भेव ।।
तुम हो तीन बहे सेन हैं घनी । जैं तुम छिपोरि कल हनी ।।६९।।

वे फिरि जांहि तब करो विवाह । मेरा वचन मानों नर नाह ।।
अंधककुंवर कहे सुनि वैंन । स्यालन देखैं मृगपति नैंन ।।७०।।

तुम नृप वैठि रहो घर मांहि । सेना सब मारों पल मांहि ।।
विद्यामंदिर अस्ववेग सौं कहै । नील मृजाद तुमों ते रहै ।।७१।।

जा गल कन्यां डारै माल । सोई कन्यां का भरतार ।
विजयसिंघ ने मांडी राडि । तातैं भई उपाधि अपार ।।७२।।

अस्ववेग के हिरदै दाह । पुत्र वैर राखै मन मांह ।।
बोले भूप दिखावो मोहि । मेरा पुत्र जन मारा द्रोह ।।७३।।

क्रोध लहर की उठै तरंग । राक्षस वानर कुं चाहै भंग ।।
अस्ववेग सेन्यां में गया । किकंध राय के सनमुख भया ।।७४।।

वाकूं मोहि दिखावो आंन । मेरा पुत्र हण्यां है जांन ।।
विद्यावाहन किषधराय । भयो जुध वरन्यु नहीं जाय ।।७५।।

भंधककुमर भए सामहि । मारचा वज्रंगै गीवा गही ॥
पड्यो भूमि तब छूटे प्रांन । किकंधराय तिहां पहुंच्या आन ॥७६॥
गही सिला परवत की एक । अस्वनवेग कु मारी फेंक ॥
राजा गिर मोडे सें परया । सेवक उपाय स्वार तहां करया ॥७७॥
घडी बेर में भई संभार । धौडै चढया गहे हथियार ॥
रे वानर अब फिरि तु चेत । प्राण फेर तुझ मारू खेत ॥७८॥
मेरा बहणा वज्र सरीर । अईसा कौंन जोधा बरबीर ॥
जाका प्राण मो ऊपर वधै । रण संग्राम नीति कौं सधै ॥७९॥
किकंध राजा हूं है भ्रात । भुज्या सुनि कै कंप्या गात ॥
खाय पछार धरनी पर गिरचा । घड़ी बार में फिर संभरचा ॥८०॥
उंन पापी बालक कौं हण्या । याकै चित्त न आयी दया ॥
वह पहलै जो मारता मोहि । आता दुःख भया मम दोह ॥८१॥
बहोत विलाप करै तिह बार । सुकेस कही बात सुवार ॥
इसका था इहां लौं सनबंध । मोहि करम दुरगति का बंध ॥८२॥
ग्यांनी उत्तम करै न सोक । रण जुझै जस होय त्रिलोक ॥
बहुत भांति निवारचा दुख । जो अब बचसौं तौ पावौ सुख ॥८३॥
अस्वनवेग वज्र की देह । सेनां घनी बहुत है तेह ॥
जासु संवर होय न कहूं । भगो वेग तौ सुख कौं लहूं ॥८४॥
जीवैंगे तो फिरि कैं जुध । बलरणे की परकामी बुध ॥
श्रीमाला करि सुगत विवाह । बैठि विमाण ले चाले ताहि ॥८५॥
मंडलीक पुत्र सहस्र सुसार । उन पाछै दउरा तहैं बार ॥
विद्युतवाह समझावै बात । भागें को पीछा न कीजै तात ॥८६॥
ए इतने सब करैं विचार । वे पहुंचे लंका सुमंझार ॥
लंका किंघपुरी का राज । अस्वनवेग का साध्या काज ॥८७॥
रितु सावन महा रवनीक । बोलैं मोर पपीहा पीक ॥
अस्वनवेग मंदिर पै चढ्या । देख्या घनहर मन सुख बढ्यां ॥८८॥
बाज्यो पवन वै पटल फट गये । राजा संसय बहुविध थए ॥
ताहि देख उपज्या वैराग । राजविभूत देत सब त्याग ॥८९॥
सहस्रार को दीया राज । मापण किया मुक्ति का साज ॥
श्रवन मुनी पै दीख्या लई । बारह विध तप साधै गुणमई ॥९०॥

नरपति विद्याधर इक दिवस । पुर लंका में कीनु परवेस ।।
उपसम भाव देस फिरि आइ । सुकेस किकंध का संसा जाइ ।।६१।।
किपंधराय परवत पर गया । श्रीमाला राणी संग भया ।।
किपंधपुर बसाया देस । सुखसौं राज पाले सुनरेस ।।६२।।
दोय पुत्र भए ता गेह । सूर्यरज अक्षरज कंचन देह ।।
पुत्री सूरज कमला भई । कमल जेम सोभा तसु दई ।।६३।।
राजा मेर मेघ के धनी । पंथाणी राणी सु जोडी बनी ।।
मृगाक्ष दमन पुत्र गुनवंत । रूप लक्षण सोभा सोभंत ।।६४।।
इक दिन कुंवर गया था काम । देखी सूरज कमला नांम ।।
आइ पिता सौं विनती करी । सूरज कमला विवाही तिरी ।।६५।।
राजा मेर किकंध पुर गया । किंधध राय सौं विनैवंत भया ।।
प्रभु मो परि कृपा तुम करो । सूरज कमला मम पुत्री करो ।।६६।।
किधंध राय नें पुत्री दई । लिख्यो लगन सुविधाई भई ।।
रहंस रली सौं हुवा विवाह । क्रीडा गमन बहु तो उछाह ।।६७।।
सुकेस राय इंद्राणी तिरी । करणकुंड पुर नगरी करी ।।
मंदिर भले सुहावन रूप । छाया सीतल कहीं न धूप ।।६८।।
बाग बगीचे सोभैं घने । चैत्याले श्रीजिनवर के बने ।।
नित उठ दरसन पूजा करैं । जिनवाणी हिरदै में धरैं ।।६९।।
अनुक्रम तीन पुत्र अवतरे । रूप लक्षण करि सोभैं खरे ।।
प्रथम माली सुमाली और । मालिवांन ते सोभैं ठोर ।।१००।।
हेमपुर नगर व्योम भूपती । भोगवती राणी सुभमती ।।
चन्द्रमती पुत्री अवतरी । माली सौं विवाही सुभ घरी ।।१०१।।
प्रीतंकर राजा प्रीतंकर देस । प्रीतवती राणी गुणवेस ।।
प्रीति पुत्री सुमाली कुं दई । बहुत आदर बधाई भई ।।१०२।।
कनकपुर नगर कनक है देस । कनक नरेस राणी किन्नर वेस ।।
कनकावली पुत्री ता भई । मालीवान कुंवर को दई ।।१०३।।
माली कुंवर पराक्रम धरैं । लंका किंधपुर क्रीडा करैं ।।
माता पिता कहैं समभाय । लंका किपंधपुरी मत जाय ।।१०४।।
पूछैं कुंवरन सौं विरतांत । किह कारण बरजु ह्यां जात ।।
पिछली कथा कही सब बात । उठ्या क्रोध रोमखरी गात ।।१०५।।
कहैं कि अब लंका मैं जाउं । करि संग्राम लेहु सब ठांउ ।।
तात मात समभावै बैन । निरघात राजा कै बहुत सैन ।।१०६।।

तुम बालक तैं हैं बहुबली । कासौं मानहु बुध की रली ॥
वासों सरभर कैसैं होय । खमा करो समभाई तोहि ॥१०७॥

माली कंवर कहै सुनि तात । देखिज्यो अबहूं करिहुं घात ॥
निरघात भूप कौं मारू ठौर । लंकाराज मैं लेहु बहोर ॥१०८॥

इतनी कहि सेन्या सब लेई । दोन्यु भ्राता संग गुणभई ॥
पिता भया गयंद असवार । विद्या बांन लीया संभार ॥१०९॥

माली राजा द्वारा लंका पर आक्रमण

इह राय किषंदपुर गई । किंषदसुरज असवारी हुई ॥
आए सुकेस भूप के पास । सूरवीर मन बहुत उल्हास ॥११०॥
पासि पासि के नरपति घने । पालैं घारी बहुते बने ॥
उडी रयण छाया आकास । घेरी लंका जुध की आस ॥१११॥
बाजे बजैं जुझाउ फर नाद । निरघात राय सब सैन्य बुलाय ॥
कोप खड़ा जो को हौ बली । महा सुभट मानैं मन रली ॥११२॥

नेजा बरछी धनुष तरवार । जूझैं सुभट न लागी बार ॥
दंती सौं दंती चौंदत । टूटे सूंड मस्तक दहूटंत ॥११३॥
निरघात राजा हस्ती पलांण । माली कुंवर पै पहुंच्या आन ॥
मारि खड्ग रथ डारी तोडि । माली कुंवर संभल्या बहोरि ॥११४॥
लीधी खडग हस्ती पै मारि । गहे दंत चढिया तिह बार ॥
विद्याधर मारया निरघांत । राक्षस बंसी जीते प्रांत ॥११५॥
भाजे विद्याधर के लोग । बहुत उनकै मन बाढ़ा सोग ॥
फेर लिया लंका का राज । भया सकल मनवंछित काज ॥११६॥
बहुरि गये ते विषरस देस । सहस्रार मान्यां उपदेस ॥
जित तित के जीते भूपाल । फेर बसाए नगर विसाल ॥११७॥
फेरी आन्यां च्याऊं ओर । आये अपने नगर बहोरि ॥
सुकेस किषद ने दीक्षा लई । राज विभूति सु तौंको दई ॥११८॥
राक्षसबंसी लंका का राज । बानर बंसी किंषिधपुर साज ॥
विजयारथ रथनूपुर देस । सहस्रार नरपति असेस ॥११९॥
मानु सुंदरी राणी पटधनी । चौंसठ कला रूप अति बनी ॥
सुखमैं गरभ भया सुभ घरी । दिन दिन देह दुरबल होइ तिरी ॥१२०॥
नृप पूछै राणी सौं बात । काहे दुर्बल होइ तुम गात ॥
तुम कौं कौंण बात का दुख । जो तुम चाहौं मानु सुख ॥१२१॥

राणी कहै सुणु प्राणपती । इंद्राणी से सुख चाहो चिति ॥
राजा वचन कहै धरि ग्यांन । हम विद्याधर देव समान ॥१२२॥

पातर आदि गुनी जन घने । नाचैं गावैं सुख सब बनें ॥
नो महीने बीते सुभ घरी । भया पुत्र मानी लीघरी ॥१२३॥

रूप लक्षन ससि की उनहार । इंद्र नाम जनमिया कुमार ॥
ज्यौं दुतिया ससि कांति कौं चढै । ज्यों बालक पल पल में बढै ॥१२४॥

जोबन बसैं बिवाही नारि । माली सहस्र किन्नर उनहार ॥
और आठ ब्याही पट धनी । इंद्राणी अरु सोभा बनी ॥१२५॥

जोजन एक को उंचो गेह । सुरगपुरी सी सोभा देह ॥
पच्चीस सहस्र गुनी जन लोग । निरत करैं गावैं बहु भोग ॥१२६॥

पंच सबद बाजैं दिन रयण । तासु सबद सुणि सोभा चैन ॥
हय गय विभव भंडार असेस । मानें सब भूपति आदेस ॥१२७॥

दूहा

सुखमें दिन बीते घने, करैं प्रजा सुख चैन ।
सुखने दुखने देखिये, निस बासर भरि नैन ॥१२८॥

चौपई

माली भूप लंका का धनी । तिसकी आंन मानैं सब दुनी ॥
देस देस तैं आवैं भेंट । डरपैं भूप न आवैं हेठ ॥१२९॥

इंद्रकुमार प्रतापी भया । माली का लोग निकाला दिया ॥
अपने लोग तिहां बैठाय । नरपति मिले इन्द्र सौं आय ॥१३०॥

माली राय बात यह सुनी । भया कोप कांपी सब दुनी ॥
विजयारध कौ दहवट करो । इहे म्हारी धरणी तल धरौं ॥१३१॥

सेन्या सकल लई नृप टेर । चढ्यो बिमांन न लायो बेर ॥
रंग रंग के बने बिमांन । चले सुभट छाया असमान ॥१३२॥

माली सुमाली सुमालिवांन । सूरज रज अंबर रज जान ॥
और बहुत भूपति संग चले । पहरि आभरण बहुतें भले ॥१३३॥

विजयारध गिरि पहुंचे जाय । दुरजन को मारैं अब धाय ॥
भई रयण तिहां उतरे लोग । सुपनां देखि मन बाढा सोग ॥१३४॥

कुरितु तणां देखिया मेह । बिजली देही पडि बहु देह ॥
अगनि जलै धुवां तिहां घनां । रोवैं मंजार स्वान सिर धुनां ॥१३५॥

दिसा दाहिनी गदहा पुकार । सूके वृक्ष कौं कवा चुंच मार ।।
सुमाली कहै भ्रात हौं कहुं । यह कुशुन तैं मिला कहै ।।१३६।।
अब जो फेर चलो तुम वीर । तौ काहूं कौं होय न पीर ।।
हम लंका का भोगवैं राज । जो फिर चलैं तो सुधरै काज ।।१३७।।
माली बोलैं सुंणि भो भ्रात । जो अब फिरैं तो लज्जा जात ।।
देस देस में हुवा सोर । अब सुंचैलो लागैं थोर ।।१३८।।
और जे सुभट आए हम संग । ते कैसे फिरि हैं करि भंग ।।
डरैं जिको पाछा फिर जाउ । जीवत षेत न छोडुं ठाव ।।१३९।।
इतनी कह करि कीनु दौर । आस पास तैं मांची रौर ।।
देस परगने लूटे घने । सहस्रार राजा इम सुने ।।१४०।।
बोले भूप इंद्र सो कहो । वाका वचन वेग तुम गहो ।।
गये लोग इन्द्र की ठोर । करै बीनती दो कर जोर ।।१४१।।
माली नांम लंका सुनरेस । चढि कर आया है तुम देस ।।
आस पास के लूटे गांव । घेरा है रथनूपुर ठांव ।।१४२।।
सब विरतांत सुन्यां जब इन्द्र । सूर सुभट मन भया आनंद ।।
ज्यौं मंगल माला मयमंद । केहरि छांह देखि भाजंत ।।१४३।।
जब लग मोकूं देखैं नांहि । तौ लूं वे गरमैं मन मांहि ।।
राक्षस वानर मारूं ठोर । पडी जाय लंका में सोर ।।१४४।।
सैन्यां सगली लई बुलाइ । देस देस के नरपति आय ।।
विद्या जेती थी भंडार । सहु वा समय लई संभार ।।१४५।।
सिलह संयोग बांधि हथियार । चले सुभट तिहां लगी न बार ।।
अस्व गयंद घने असवार । हस्ति पैं चढि इन्द्र कुमार ।।१४६।।
चामर छत्र महा उद्योत । सूरज मुकी रतन की जोत ।।
सूर सुभट दोऊ दल जुटे । पाछे पगन कोउ नहीं हटै ।।१४७।।
भुभे स्यांम धरम के काज । जिनकौं छत्री धरम की लाज ।।
मैगल सेती मैगल भिडे । पैदल सों पैदल जुध करैं ।।१४८।।
माली सुमाली मालवान । पाछे कु पग अहुरे जांन ।।
सूरज रज अक्षर रज आइ । राक्षस बंसी भया दिढाइ ।।१४९।।
फिरके समद संभाले बांन । दुरजन मारि दिये घमसांन ।।
इन्द्रकुमार कोप्या करि तेह । राक्षस बांदर मिलाऊं षेह ।।१५०।।

आप कुंमर तब सनमुख भया । बहुत जुध दोऊं भूपति थया ॥
परवत की सिल लई उपार । चउंधां पडै जो धनहए मार ॥१५१॥

दोऊ भूपति मुष्टिका लरैं । कातर लोग देख सब डरैं ॥
लोउ न मानैं दोउं हार । बांन पत्र लषि मारी डारि ॥१५२॥

सु' बालक मजहू अग्यांन । मानु' कुवर रीस मति ठान ॥
गही कर डारचा चक्र फिराय । माली ग्रीव पडी भुवि आय ॥१५३॥

सुमाली मालिवान दोऊ वीर । भाजि गए सब लंका तीर ॥
बैठि विमान चले वे गेह । सोग लहरि हुँ इन्द्रन की देह ॥१५४॥

इन्द्र तबै छोडै बहु बांन । ए राक्षस पावैं नहीं जान ॥
मंत्री तबै समझावैं बात । भाग्या कै पीछे कहा जात ॥१५५॥

मंत्री वचन सुणे सिहु वार । उनकी छोड दई तलवार ॥
वे पहुंचे लंका में आंन । रांणी रोवैं करैं बखान ॥१५६॥

माली के गुण बरनैं लोग । सब परवार मैं व्याप्या सोग ॥
सुमाली मालवान भय करैं । इंद्र भूप भय चिंता धरैं ॥१५७॥

बहोत भांति समझाया परिवार । गए अलंका पुरी मझार ॥
जीता इन्द्र राजा महाबली । जाचिक बोलैं बिरदावली ॥१५८॥

कीतिक देख सराहै दुनी । परियन मांझ बडाई घनी ॥
मात पिता के बंदे पाय । बहुत भांति के विनय कराय ॥१५९॥

आनंद मन हुआ हुल्लास । आग्यां इन्द्र फिरी चहुं पास ॥
चक्र धुजा आदित्या तिरी । सती पुत्र भया ता घरी ॥१६०॥

लोकपाल इन्द्र का भया । सबै जीव की पालैं दया ॥
पूरब दिसा उद्योतपुर नगर । कांतिमन भूप लोकपाल अगर ॥१६१॥

मेघरथपुर महाबली भूप । परणा नारी महास्वरूप ॥
वरुण नांम पुत्र ता गेह । लोकपाल तीसरा करेह ॥१६२॥

नगर मेघपुर पच्छिम देस । रहै तिहां सूरज नरेस ॥
कनकावली का पुत्र नरसेर । वाकु' थाप्या भंडारी टेर ॥१६३॥

कांचनपुर पूरब दिसि ओर । बसा अगनि नरपति सिह ठौर ॥
श्रीप्रभा रांणी पट धनी । चंद्र कर्म पुत्र सुं गुनी ॥१६४॥

नांम धरत असुर सुर येह । और दस दिगपाल थापेहि ॥
जष्य दीप किंनर किंनरा । गंधर्व राग सुनावैं खरा १६५॥

अस्व अस्वनी वईस्वानर । देव समान भय विद्याधर ।।
कौतिक मंगल व्योम बिंद भूप । आनंदवती रांणी सु अनुप ।।१६६।।
तारा कन्यां होय गर्भमई भई । कोकसी कैकसी गुंणमई ।
वैश्रव राजा के विश्रवा पुत्र । कौकसी दई विवाह संयुक्त ।।१६७।।
वइस्वानर सौ इंद्र पै गई । लंका राज विस्वानर है दई ।।
सुमाली मालिवान अलंका रहैं । मन मैं भय दुरजन का रहै ।।१६८।।
सुमाली के पुत्र इक भया । रूपवंत विधानां निरमया ।।
दिन दिन बडा सयाणा भया । बल पौरिष विद्या निरमया ।।१६९।।
श्री जिनवाणी निश्चै धरै । तीन काल सामायिक करै ।।
लंका धुटक राति दिन घनी । छूटा थांन पुरषारथ हनी ।।१७०।।
जो हम अपना देश न लहैं । इह चिंता निसि वासर रहैं ।।
इह सोच बिजयारध गया । तपसी भेष बनवासी भया ।।१७१।।
विद्या साधी मन वच काय । कैकसी पिता की आग्या पाय ।।
विद्या निमित्त गई सुन्दरी । रूप लक्षण अवला गुण भरी ।।१७२।।
विजयारध पर पहुंची तिहां । रतनश्रवा तप करता तिहां ।।
वाके निकट कैकसी आय । करै रुदन अवला बहु भाय ।।१७३।।
रतनश्रवा बोलै तज मौन । सांची बात कहो तुम कौन ।।
कै किंनर कै हो अपछरा । कारण कौन रुदन तै करा ।।१७४।।
कौण दुख व्यापा है तोहि । अब तुं वरण सुणावहि मोहि ।।
करूं दूरि तेरो दुख आजि । मन का भेद कहो सच गाजि ।।१७५।।
व्योमबिंद राजा मम तात । आई थी मुनिवर की जात ।।
रतनश्रवा विद्या सिध भई । मनकी इच्छा पूरण थई ।।१७६।।
कह इक नगर बसैं इह बार । बस्या नगर सुख हुआ अपार ।।
कैकसी सौं विवाह विध करी । भोग भुगत में बीतैं घडी ।।१७७।।
मंदिर सुरगपुरी सम जानि । सेज्या सोभै सुख की खानि ।।
कैकसी मन इच्छा इह भई । होई पुत्र मेरै जै दई ।।१७८।।

तीन स्वप्न

सुख मैं सयन करै ही रयन । सुपन तीन देखे सुख अैन ।।
किंचित रात रही पाछली । एक मुहूरत बिरयां भली ।।१७९।।
प्रथम सिंघ गर्जा रव करै । हस्ती हनै बहुत मन धरै ।।
दूजे मैंगल देख्या बली । सरोवर में बहु करता रली ।।१८०।।
कमल उपारि लिया सुख माहि । मानूं मेरे मंदिर आहि ।।
तीजे देख्यौ पूरण चन्द । सुपने देख भया आनन्द ।।१८१।।

जागी त्रिया हुआ परभात। पति सौं जाय सुणाई बात ॥
सुपिने सांभलि भया उल्हास। विषनां तुम मन पूरवै आस ॥१८२॥

होइसी पुत्र तीन गुणवंत। तीन षंड के पति सोभन्त ॥
सुनि प्रिय बचन अधिक सुख पाय। अंचल गांठि दई बहु भाइ ॥१८३॥

प्रथम स्वर्ग तैं सुर इक चया। आइ गर्भ स्थिति वासा लया ॥
मनमैं गर्व करै कैंकसी। प्रिय सुं वचन कहै करि हंसी ॥१८४॥

हम सेवैं श्री जिणके पाय। हम मन रहै क्रोध किहि भाय ॥
दंपति गए मुनिवर के पास। नमस्कार करि बैठे तासि ॥१८५॥

स्वामी कहो धरम समझाय। चित्त हमारा किम गरवाय ॥
बोले मुनिवर ग्यान बिचार। प्रतिकेशव तुम गर्भ अवतार ॥१८६॥

तासम बली न दूजा और। भूचर षेचर सेवैं कर जोडि ॥
दोय पुत्र होसी ता पछैं। केवल पाव मुकति मैं गछैं ॥१८७॥

मुनि वाणी सुनि आया गेह। अदभुत सुख पाया ता गेह ॥
जब बीते पूरे नव मास। पुत्र जनम का भया प्रकास ॥१८८॥

दीन दुखित नैं दीना दान। सब ही का राख्या सनमान ॥
बाजैं बाजित्र नाना भांति। सबद सुहावने लागे गात ॥१८९॥

रावण का जन्म

दुतिया शशि ज्यु बधै कुमार। रावण रूप रवि तेज अपार ॥
दूजा कुंभकरण सुत भया। चंद्र नखा रूप गुण धीया ॥१९०॥

तीजा भभीषन हुआ कुमार। मानूं पूनम शशि उणहार ॥
दशानन कुमर महाबलवन्त। इन्द्र भूप खोटे चिह्न जोवंत ॥१९१॥

सुपने में गज दावइ आय। आग्या कछु देखैं नहि राय ॥
दामिन कडकडाय कै गिरैं। सोथि आय धरणी पै परैं ॥१९२॥

औंर घणां हूं उलकापात। ए चिह्न इन्द्र देखैं दिन रात ॥
कुंमरै इक दिन ढवा उघारि। काढ लिया विद्या का हार ॥१९३॥

पहरी तुरत गले मैं माल। दरसण सोभण लगे विसाल ॥
इह था कुल विद्या का धरा। पूजा करैं ते छूंते हरा ॥१९४॥

पुंनिवंत पहिरया गल मांहि। पुण्य प्रसाद भय व्यापै नांहि ॥
कैंकेसी सूती महल सत खनैं। सेज्या तैं सुख बिलसैं अति घने ॥१९५॥

दसानन कुंअर सौवै था पास। बदनदंति जोति परकास ॥
चंद्रमां की सोभा तन कांति। दसन जोति बालक बहु भांति ॥१९६॥

गले हार सहज में डारि । दस सिर सोमैं राजकुमार ।।
वैश्रव विद्याधर उरणवेर । सैन्यां साथि गगन सब घेर ।।१६७।।

रावण की जिज्ञासा

चले जात हैं अपने थान । बहुत भांति के घुरैं निसांन ।।
दसानन तब पूछी मात । कवरण भूप इह किह पुर जात ।।१६८।।
कहां बसै कैसा प्राक्रम । कुरण न्याति कैसा कुल धर्म ।।
इन्द्र भूप विजयारघ धनी । करैं सेव राजा बहुधनी ।।१६६।।

माता का उत्तर

वैश्रवा भगनी सुत मोहि । सुणौं पुत्र समझाऊं तोहि ।।
लंका श्री अमहारौं थांन । अबण्हु राज करै बलवांन ।।२००।।
घने किये तुम तात उपाव । कछु न बरगता देख्या दाव ।।
अब तुम उपजे तीनूं वीर । कब जीतोगे साहस धीर ।।२०१।।
म्हारे मनसा ऐसी रहै । कवरण समै फिर लंका रहै ।।
सुणी बात कोपियो कुमार । हूं लंका जीतूं इह बार ।।२०२।।
सुंणि माता समझावै बाल । तुम ही सुत लघु वय सुकुमाल ।।
इतनी सुणि परवत पैं कूदे । मारि लात ढाह्या पद पूंद ।।२०३।।
भारी सिला इक लई उठाइ । ताड वृक्ष कर लिया उठाइ ।।
जो अब फेंकुं तो पहुंचै लंक । वैश्रव राजा मारैं संक ।।२०४।।
विजयार्द्ध गिर उलट कैं धरूं । इन्द्र सुधा ले प्रलयत्व करूं ।।
मात पिता उठ चुंबई सीस । बहुत प्रकारैं दई असीस ।।२०५।।
पहिलें विद्या साधउ भली । पीछैं पूरो मन की रली ।।
मात पिता की आग्या लई । तीनूं भाई सब गुण मई ।।२०६।।
भीम बन हुई विद्या की ठाउं । भयदायक नहीं मानुष नाउ ।।
अजगर सिंह देख मन डरैं । या बन में धीरज को धरैं ।।२०७।।

विद्या सिद्धि

ये पुनिवंत सिला इकु देखि । बैठा तापस का धरि भेष ।।
धरयौ ध्यान विद्या सिध भई । अन्नदान प्रथमई लई ।।२०८।।
इच्छा भोजन पावैं नीर । है गुन है या विद्या तीर ।।
दूजा ध्यान धरया लउ लाइ । आया यज्ञ क्रीडा के भाइ ।।२०९।।

यक्ष द्वारा परीक्षा

देख तीन तपसी बहु रूप । इन सम कोई नाहि सरूप ।।
जक्ष परीक्षा इनकी करैं । कैसे ध्यान धीर तन धरैं ।।२१०।।

देवांगना इक चातुर घनी । रूपवंत लावण्य गुनवती ॥
गावें गीत बजावें बीरा । गई जिहां तापसी तीन ॥२११॥

ताल पखावज दुंदुभी करें । निरत करत मुनि जन मन हरें ॥
कोई निकट बैठि इम कहै । किम बालक देही दुख सहै ॥२१२॥

मन मानेंता भुगतो भोग । उली वय क्यों सहौं वियोग ॥
तुम कारण हम किन्नर चई । तुमारी तपस्या पूरण भई ॥२१३॥

जहां तुम चलो चलैं तुम साथ । तुम हो प्रभु अनाथों के नाथ ॥
एह बैठे काठ समान । मनमें कछु वन आवै आन ॥२१४॥

तब वे किन्नरि वसन उतारि । लपटी इनसों ज्यों गलहार ॥
कोई देह चुटकियां लेइ । कोई पांव दबकी देइ ॥२१५॥

किन्नरी बहुत दिखाए भाव । इनका ध्यान रह्या थिर ठांव ॥
उनको चित्त न क्यों ही टरै । विलषी भई अप्सरा फिरै ॥२१६॥

आय कही यक्षसों सहु बात । उनका चित्त न चलै किह भांत ॥
आप यक्ष आया उन पास । मांगों वर पुर वो मन आस ॥२१७॥

[illegible] न बोले तीहूं वीर । [illegible] सरीर ॥
निज सैन्यां नैं दे उपदेश । सब मिल करो भयानक भेस ॥२१८॥

वेग जाइ तप टारो आज । इनका पूरण होइ न काज ॥
इतनी सुणि वितर सब धाय । दई परीस्या नाना भांति ॥२१९॥

कोई रूप सिंघ का करै । बहुत दहाडैं देख्या मन डरै ॥
कोई रूप सु करिए एव । अजगर भेस धरै बहु देव ॥२२०॥

कोई सर्प होई तन डसैं । तो उनरो मनूं नहुं का खिसैं ॥
बहु औरउ सैन्यां करी मलेच्छ । कहै पुहपपुर की मन एच्छ ॥२२१॥
रतनस्रवा कुं बांधन चले । रघू कुटंब कहि ल्यावैं भले ॥
जो तुम बहुत सूर वीरता धरौ । हमसौं जुध वेग तुम करौ ॥२२२॥
ए तापस बोले नहीं बोल । ध्यान लहरि में करैं किलोल ॥
ऐसे कह करि आगैं चले । माया रूप चिह्न करि भले ॥२२३॥

रतनश्रवा कैकसी के हाथ । भ्राता बांधे उनकैं साथ ॥
ले आये विमान मंझार । मात पिता बहु करैं पुकार ॥२२४॥

तुं दसानन कहिए बलवंत । हमारा होत प्राण का अंत ॥
ए मलेच्छ हम दे अति त्रास । तुमतैं टूटैं हम संगल पास ॥२२५॥

तू होयगा दस सीस का धणी । एक सीस का धंमप्रहणी ॥
तु कहतो प्रश्नी बसि करौं । मूठ कहत कुछ काज न सरो ॥२२६॥
जनमतही तु मरि क्यूं न गया । हमरी तोहि न आयी दया ॥
भांन कुंमर तूं अैसो सुभट । तुझ आगल हम पावै कष्ट ॥२२७॥
तैं रावल पौरिष कहां गया । तेरे चित्त न आई दया ॥
जो तुम देखो भौंह चढाय । सबै मलेच्छ भसम हो जाय ॥२२८॥
बभीषण सौं कहे ए बैन । तुम बैठे हम होंय कुचैन ॥
तेरा नाम भवीषण कहै । दुरजन दुष्ट न पल में दहै ॥२२९॥
तुम देखत हम होई संताप । दुखे पावें हैं माई बांप ॥
जो तू हमैं छुडावै नहीं । बल पौरिष तुम हारया सही ॥२३०॥
बहुरि गहै नागी तरवार । दंपति को मारया तिहं बार ॥
सीस काटि कर आगैं धरैं । तउव न ध्यांन उनका टरैं ॥२३१॥
जे जोगीस्वर राषै ध्यान । निश्चै उपजै केवलग्यान ॥
जे चाहै संसारी रिध । मनवांछित की पावैं सिध ॥२३२॥
धरम जिनेस्वर का दिढ धरैं । सरब जीव की रिख्या करैं ॥
तब जिया पावै मारग मोक्ष । मेटैं जन्म जरा का दोष ॥२३३॥
विद्या निमित्त इण निश्चै धरी । विद्या सकल आय कर फुरी ॥
दसानन ग्यारह से विद्या लई । जिनके गुण का पार न कहीं ॥२३४॥
जो विद्या का करौं बखान । पढत सुणत कछु अंत न ग्यांन ॥
भांन करन विद्या नहीं च्यारि । तिनके गुण बहु अगम अपार ॥२३५॥
विद्या चतुर बभीषण लई । बहुत भांति सुखदायक भई ॥
जो विंतर आए थे तिहां । ते आभूषण आपैं वहां ॥२३६॥
नमस्कार करि सेवैं पाय । सब विंतर ठाढे भए आय ॥
विजयारध पर्वत्त उतंग । ता ऊपर गिर सम्या सुरंग ॥२३७॥
जहां इनहिव किया प्रवेस । स्वयं प्रभु सु बसाया देस ॥
कंचन कोट रतन मणि जटा । अधिक उतंग दिपाई अटा ॥२३८॥
हथिया पौलि पौलि ढिग करैं । कलस परतमा ऊपर ढरैं ॥
चैत्यालय जिण प्रतिमा तणे । पूजा करैं सामायकुं घणे ॥२३९॥
महल लोक तिहां बसै असेस । तीनूं भाई जिहां नरेस ॥
अनुंबर्त्त यक्ष आया तिण ठाय । नमस्कार कीया बहु भाय ॥२४०॥
मैं हुं जक्ष अनुंव्रतक नांम । आज्ञा दीसो साहुं काम ॥
जंबूद्वीप मैं जो कछु कही । अब चितवौं तब ठाढा रहीं ॥२४१॥

छत्र सिंहासन चामर दई । दियो मुकट सुर रतनां मई ॥
बहुरयौ कथा पुहुपपुर गई । बहुत आनंद बधाई भई ॥२४२॥

सुमाली एवं मालिवान की कथा

इह अलका किधंवपुर सुं नी । बाजैं बाजा गावैं गुंनी ॥
सब परिवार भया आनंद । पूजा कीनी देव जिणंद ॥२४३॥

स्यौं परिवार स्वयंपुर चले । सुमाली मालिवांन दोउ मिले ॥
सूरजरज अंबरजि भूप । बैठि बिमान बने जु अनूप ॥२४४॥

परियण युत आये जिण थान । पूजा कीनी निहचै आण ॥
भई रयण कीयो विश्राम । करई सामायिक ले जिण णाम ॥२४५॥

उत्तर तैं रतनश्रवा कंकसी । मिले सुतउसै चिता नसी ॥
व्याहूं पुरुष आए तिह घरी । आए सब परिवार की तिरी ॥२४६॥

ए बालक उठि लागे पाय । उनुं हिये सौं लिये लगाय ॥
कंकसी नैं करै डंडोत । उनूं दई आसीस बहुत ॥२४७॥

धन धन गर्भ रतन की खांनि । तुम्हतें बढ़े घणे संतान ॥
पुरुषां सिंघासन बैसाइ । बहुत भांत कीनी मनुंहार ॥२४८॥

चउकी कनक पचल मणिलाल । हीरा पनां अवर प्रवाल ॥
तिनपरि बैठे भूपति आय । करै उबटना गंध मिलाय ॥२४९॥

सौंधा अगरजा तेल फुलेल । किस्तुरी सामग्री मेल ॥
नाई सुघड करै तिहां सेव । पावै सुख नरपति बहु भेव ॥२५०॥

निरमल जल कंचन के कुंभ । ये सोमैं ज्यौं सुंदर थंभ ॥
ढारै कलस करैं असनान । गावैं गुणियण चतुर सुजांण ॥२५१॥

उत्तम धोवती पहरी भली । तिहां सुंदर मानैं बहु रली ॥
इन सरीर में इसी सुवास । तातैं भवर न मूकै पास ॥२५२॥

दसानन भांन करण कुंमार । वभीषण सेव करै बहु भाइ ॥
नमस्कार चरणन कौं करै । पुरुषासुख अधिक मन धरै ॥२५३॥

षट रस व्यंजन

भई रसोई व्यंजन भले । स्युं कटुंब जीमण कुं चले ॥
रतन तिवाई सोवन थाल । कंचनभारि गंगाजल चाल ॥२५४॥

घेवर बरफी लडुवा सेत । बहु पकवान परुस्या तेह ॥
षटरस भोजन कीने घने । हरे बघेरे उत्तम बने ॥२५५॥

जीमैं भोजन सब परिवार । बीरा दीनां पान संवार ॥
सिंघासन परि बैठें आय । नगर कितोहल देषें राय ॥२५६॥

दसानन तब पूछें बात । माली का कहु विरतांत ॥

दशानन द्वारा लंका राज्य प्राप्ति की इच्छा

किम छोड्या लंका का राज । क्योंग सकल कहो प्रभु आज ॥२५७॥

पिछली कथा कहो समझाय । सुमाली भया मूरछा आइ ॥
सबही कंवर करैं उपचार । बड़ी बार में भई संभार ॥२५८॥

अवर कथा कही तिहं वार । फिर कैलासह देवहू दार ॥
पूजा करी श्री भगवंत । सोवन मुनी तिहां महंत ॥२५९॥

नमसकार करि पूछी बात । लंका राज लहै किह भांत ॥
अवधि विचार कहैं मुनिराय । पोते तीन होंयगे आय ॥२६०॥

ते पावैगा लंका राज । मन वांछित का सुधरैं काज ॥
बहु परिवार बढे संतान । उन सब बली न दूजा आन ॥२६१॥

जे कछु कहैं मुनीस्वर जैन । तुमनैं देषि भया सुष चैन ॥
पुंनि सुं पावैं सुर की रिधि । पुन्यैं होवैं विद्या सिद्ध ॥२६२॥

पुण्यें भोग भूमि सुष करे । पुण्य राज प्रथ्वी कूं वरै ॥
पुण्य दुःख दालिद्र सब हरैं । पुण्यैं भव सागर जल तिरैं ॥२६३॥

पुण्यें पुत्र कलित्र परिवार । पुण्यें लछमी होय अपार ॥
पुण्य विद्या लहै विमांन । पून्यैं पावै उत्तम थान ॥२६४॥

पुन्यें दुरिजन लागैं पांव । पुन्य थी सदा सुषदाय ॥
जल थल वन विहुंड सहाय । तातैं पुन्य करौ मन लाय ॥२६५॥

सुणो पुंन्य कीजे सब कोय । मनवांछित फल पावै सोय ॥
सुरगति नर नारकी तिरजंच । पुण्य बिना सुष लहै न रंच ॥२६६॥

इति श्री पद्मपुराणे देशानन उत्पत्ति विधानक

मन्दोदरी की सुन्दरता

सुरदंतपुर दक्षिण की ओर । दैतनाथ राजा तिहं ठौर ॥
हेमावती राणी पटधनी । मंदोदरी सब गुण मय भनी ॥२६७॥

कैसे कवि चन्द्रमुखी कहैं । वह घटैं बधै या सम निस रहै ॥
किम कविराज कहै मृगनैन । वई भय दायक सुख की दैन ॥२६८॥

क्यों करि कवि कहै वेणी व्याल । इह वह रहै प्रत्यक्ष पताल ॥
क्यों विजयें नासा कीर । ए पंथी ए गुण गंभीर ॥२६९॥

सकल रूप का करूं बखान । पदमनी की सी सोभा जान ॥
कन्या खेलै ही वह बाल । चंचल देखी ताम भुवाल ॥२७०॥

राय देख मन संसै किया । राणी सेती प्रकासित भया ॥
पुत्री भई विवाहन जोग । उत्तम कुल जे नामी लोग ॥२७१॥

विवाह के लिये विचार विमर्श

जहां देखिये कीजे काज । मंत्री मंत्र समारो साज ॥
[illegible] भूप भूषण सिरमोर । ता इन नाही न दूजा ठौर ॥२७२॥

दूजा मंत्री बिनती करैं । दशानन कुंवर विद्या बहु धरैं ॥
उत्तम कुल उजियारा पक्ष । उनकी सकल जगत में पक्ष ॥२७३॥

दिन दिन हूं है घणां परताप । उसका जीवैं दादा बाप ॥
मंत्री बात सति चित लगी । बुलाए पंडित अरु जोतिगी ॥२७४॥

साधौ लगन देख बहु भांति । राव विग्रह होवैं उपसांति ॥
जोतिग देखि साधी सुभ घरी । और बहुत सामग्री करी ॥२७५॥

पुहुपनगर के लिये प्रस्थान

मंत्री च्यार कन्या इक संग । और लोग बहुरंग सुरंग ॥
पहुंचे पुहुपनगर में जाय । रतनश्रवा तिहां नहि पाय ॥२७६॥

पूछे लोग नगर के घने । भीमपुर नगर रतनश्रव सुने ॥
स्वयंपुर नगर वस्या ता पास । सुख सु तहां वे करैं विलास ॥२७७॥

मंत्री स्वयंपुर नगर कुं चले । वन उपवन मंदिर तिहां घने ॥
उतरे वन जिहां श्री जिनथान । चन्द्रनखा बैठी थी ध्यान ॥२७८॥
जब उनसों वह कन्या मिली । बहुत बात पूछी तसु भली ॥
तू किम एकाकी इण ठांम । कहो कवण अपणों कुल कांम ॥२७९॥

चन्द्रनखा से भेंट

चन्द्रनखा बोली समभाय । दशानन है मेरा भाय ॥
सयल राजं पर्वत सुभ ठौर । चन्द्रहास खडग की दौर ॥२८०॥

ते विद्या साधन को गया । सात दिवस का वादा दिया ।।
चन्द्रहास षडग नै पाय । अब आवसी दशानन राय ।।२८१।।
विद्या सिद्ध मन वांछित भई । चन्द्रहास की प्रापति भई ।।

रावण के दर्शन

आया रावण श्री जिन भौंन । साध्या भला महूरत सौन ।।२८२।।
मंत्रियां आय कियो परिणाम । देख्यो रूप लक्षण गुण धाम ।।
ऊंचे आसन बैठा आय । रवि ज्यों सोभा बपु परताप ।।२८३।।

पूछे जबै दसानन कुमार । कवण काज आया भो द्वार ।।
स्वर्गपीलपुर दक्षिण देश । दैत्यनाथ तहां बडो नरेश ।।२८४।।

ताके तनया मन्दोदरी । जास रूप नहीं अपछरी ।।
चन्द्र ललाट पै भौंह कबांन । मृगनयनी लज्या गुंन थांन ।।२८५।।

नासा कीर रू सुठट कपोल । उष्ट रंग दंत सहज तंबोल ।।
कुच भुज चरण कमर केहरी । सुधर कलाई सोभै घरी ।।२८६।।

ऐसी है गुण गण संयुक्त । हंस गमणी नख किरण जुगत्ति ।।
तुं मनि मस्त वहै सुंदरी । लेहु लगन साधो सुभ घरी ।।२८७।।

मन्दोदरी के साथ विवाह

लियो लगन मन रहस्या घनां । स्वयंपुर गए कुटंब मैं भना ।।
आनंद हुआ दोऊ कुल मांझ । बाजे बाजै बासुर सांझ ।।२८८।।

भले महूरत कियो विवाह । बहुत अडंबर करि उत्साह ।।

भोग भुगति मैं बीतैं घडी । सुखमानें दंपति तिस घडी ।।२८९।।

दोऊं लोक काला विध करैं । अधिक प्रीत उर माही धरैं ।।
मेघगिर पर्वत ऊपरि जाय । एक जोजन की है चउराइ ।।२९०।।

छह हजार नृप की पुत्री । खेलैं सरवर ऊपर खडी।।
बसन उतार करैं असनान । उझकि उझकि सब झांकैं आनि ।।२९१।।

जल उछाल खेलैं सहेलियां । गावैं सरस चउ बोलियां ।।
घाट बाट रखवाला रहैं । मारग चलै न सब बट रहैं ।।२९२।।

दसानन विद्या संभारि । पहुंतो जाय सरोवर पाल ।।
सगली कन्या रही लजाय । ताकूं देख रही मुरझाय ।।२९३।।

दसानन दौडि ग्रही तसु बांह । संकोचि प्राणि कछु बोली नांहि ।।
समझो ही रूपको सिंह धार । इह निश्चै सब का भरतार ।।२९४।।

एक महुरत भांवरि फिरी । वासमये भूपती सब तिरी ।।
कोक कला सब ही परवीन । किनर देखि होय गुण हीन ।।२९५।।

रखवाले ऐसी सुध पाय । कही अमर सुंदसुं जाय ।।
सुनि करि नृप कोप्यो बहु भांति । सेना भेजी चार्बे दांत ।।२९६।।

वाकूं मारि करो तुम षेह । दसानन नहीं राषो उस देह ।।
चले सुभट परवत पै गये । छोडे बांण ता सनमुख भए ।।२९७।।

दसानन तबै चढायें भौंह । सब सैन्या भागी सिर नौय ।।

दशानन की वीरता

नृप सौं जाय जनाई सार । वा सनमुख न चलैं हथियार ।।२९८।।

राजा कहै अवर ल्यो सैन । पकरो वेग दिखावो नैंन ।।
तब सेवक नरपति सौं भनैं । प्रभू तुम आप चलो तो बनैं ।।२९९।।

अमर सुंदर अमर नो वेग । कनक विद्युत प्रभ अवर अनेक ।।
षट्सहस्र भूपति इक ठोर । सेनां का कछू नांही ओर ।।३००।।

चढे विमान चले उस थांन । राजसुता देखिया निसांन ।।
पद्मावती आदि जे तिरी । दसानन सुं विनती करी ।।३०१।।

तुम परि चढि आया निश्चैं धार । तुम जल मांहि छिपो असवार ।।
जो तुम जल नैं तिर नवि सको । तो सांतिनाथ मंदिर में लुको ।।३०२।।

विद्या ल्यो तुम आलोपनी । दृष्टि न आवो काहू तणी ।।
जब वे ढूंढ सोष उठि जांय । तब लें चलो आपने ठांव ।।३०३।।

रावण कहै सुनो त्रिय बैंन । मेरा बल तुम देखो नयन ।।
मैं तो गरुड वे सर्प समान । एको सनमुख झुझै आन ।।३०४।।

सिंह एक हस्ती सैंस्याठ । भाजैं तुरत मयंगल ठाठ ।।
मैं तो बली सिंघ सौंवाधि । मोकुं सकै कौन नर साधि ।।३०५।।

सब नैं पकडि करूं दहै वाट । बंध करो सब ओघट घाट ।।
पद्मावती प्रमुख इम कहे । पिता भ्रात मुझ जीवत रहैं ।।३०६।।

अवर निसंघ करो असिघाव । उनकों तुम लीजियो बचाव ।।
दसानन सुणुं तुम तिरी । उण मारन की प्रतिग्या करी ।।३०७।।

सब दल निकट पहुंतो आय । रावण भी तत सन्मुख आय ।।
बैसि विमान गगन में गया । बहुत सुभट विद्या के किया ।।३०८।।

चन्द्रहास तब खड्ग संभाल । मुराछावंत किये ततकाल ।।
नागपासनी विद्या डारि । बांधे सब नरपति तिहं बार ।।३०६।।

मानभंग सब ही नृप किये । हार मांन विनती कर नये ।।
दया भाण छोडे सब राय । कन्यां व्याहीं मन धर भाव ।।३१०।।

सकल त्रिया ले घर कौं चले । भांन भभीषन सन्मुख मिले ।।
मंदिर अंतेवरह संवारि । न्यारी न्यारी राखी नारि ।।३११।।

कुंभपुर नगर महोदर भूप । ता घर रानी महा स्वरूप ।।
तडित माला ताकैं सुता । भांनकुंवर व्याही शभमता ।।३१२।।

कुंभपुर तणों सुण्यां जब गीत । कुंभकरण नामैं सु पुनीत ।।
धोतपुर विसुध सुकमल नरेश । मदनमाला नारी गुणवेस ।।३१३।।

सरस्वती पुत्री गुणवंत । रूपवंत लावण्य बुधिवन्त ।।
भभीषण सौं किया विवाह । भोग भुगत में करैं उछाह ।।३१४।।

मंदोदरी गर्भ स्थिति करी । इन्द्रजीत जन्म्यां शुभ घडी ।।
नानां कै ग्रह बधैं कुमार । देखत मोह करैं नरनारि ।।३१५।।

दूजे मेघनाद अवतारि । रूपवंत ससि की उनहारि ।।

कुंभकरण द्वारा उपद्रव

कुंभकरण लंका ढिग जाय । आस पासि सब लूट ले जाय ।।३१६।।

बहुत सखी आनी सुंदरी । भोग मगन मानैं मन रली ।।

इसी बात तब वैश्रव सुनी । आई लहर क्रोध कंपनी ।।३१७।।

वैश्रवण राजा के दूत का सुमाली के दरबार में आना

लिख्या पत्र दूत कर दिया । स्वयंप्रभ नगर सुमाली पं गया ।।
सोभा दूत नगर की देख । देखी स्वर्गपुरी सुविवेक ।।३१८।।

जाय पहुंतो राज द्वार । सुमाली सुरत सुणी तिहबार ।।
राजा पासैं कोक वसीठ । लिया लेख वांच्या नृप दीठ ।।३१६।।

नमस्कार करि बोले दूत । निरभय जंपै वयण बहुत ।।
तुम इन्द्र ते अबै थे भाग । पातालपुरी छिपे थे लाग ।।३२०।।

दयानिमित्त दिये तुम छोड । अबके पकडे मारउ ठौर ।।
तुमने सुधि मारण की भई । तुमैं उपाधि उपाई नई ।।३२१।।

सोयत केहरि दिया जगाइ । वा आगैं जीवत क्यूं जाय ।।
जों दादुर अहिमुख ते छूटि । फिर करिहै बांबी की धूंटि ।।३२२।।

ऐसे तुम निवसौं इस ठौर । सुनैं इन्द्र अब मारैं ठौरि ।।
जो तुम अपनौं जीवत चहौ । तो अपणे मारग में रहौ ।।३२३।।

कुंभकरण अब किया बिगार । वानैं बांधियो अब मार ।।
जो उस सीष हुवै इस बार । बहुरन करैं अनीति लगार ।।३२४।।

जो नहीं करैं तुमारी कान । तो उस बांधि भेज द्यो आनि ।।
हुं तिस कैसा लगाउं हाथ । बहुरन चूक करैं किण साथ ।।३२५।।

दशानन का कोप

सांभल इतनी दसानन कोप । जैसैं गरज करैं घटाटोप ।।
कहै राय सुन रे [illegible] । काक हंस होवै किह लाग ।।३२६।।

मानुष इन्द्र होवै किण भांति । हम सेवक है उसका णाति ।।
जो मंगल गरजै मन माहि । देखै नहि केहर की छांह ।।३२७।।

तुझ पतंग डोला उणहार । कहां गरुड तापति करै मार ।।
ज्यों पतंग ते सेवै भूप । देखत मरै अगनि का रूप ।।३२८।।

तैसे इन्द्र और वैश्रवान । जे वे वेग मिलैं मुझ आन ।।
तो वानैं छोडूं जीवता । नांतर बलिद्यउ दशदेवता ।।३२९।।

दूत राय के सनमुख खरा । चंद्रहास खडग कर धरा ।।
कंपी धरती कंप्या सूर । भभीषण उठ कहै हजूर ।।३३०।।

इस ऊपर क्या कोपो वीर । यह किंकर आया तुम तीर ।।
कहै आपणें पति के बैंन । या कुं मारघा लाज न श्रैन ।।३३१।।

अर याकों जो मारो डार । तो अपजस होवैं संसार ।।
इतनी सुनत भया मन सांत । समझाया जब लहुडे भ्रात ।।३३२।।

धका दे पुर बाहिर किया । बसीठ का भर आया हीया ।।
पगडी बांध लंका में गया । सब व्यौरा वैश्रवन सों कह्या ।।३३३।।

वे तुमनें पतंग सम गिनें । उनकी बात कहत न बने ।।
दसानन दस सिर का धनी । अपनं मन राखै अति मनी ।।३३४।।

वीस भुजा दीसैं बलवंत । विद्या घणी करै परचंड ।।

वैश्रवन राजा द्वारा युद्ध

वैश्रवन कोप्या भूपाल । ज्यों दिया तेल अगन में डाल ॥३३५॥

सुरस सुभट सब लिये बुला । मरू बाजे अरु करनाइ ॥
देश देश में भेज्या उकील । आया सुभट न लागी ढील ॥३३६॥

उडी धूल छायो आकास । अंधकार दीसै चहु पास ॥
चढि विमांण दोऊ तिह बार । स्वयं प्रभु नगर घेरया तिह बार ॥३३७॥

दशमुख सिद्या लई संभाल । दोन्यूं भाई लये हंकार ॥
रतनसूर पलांनि तुरंग । और सुभट चीढे इक संग ॥३३८॥

दुहूं तरफ वानैती भूप । सनमुख भये जुध के रूप ॥
गहिं तरवार चक्र कर लिया । बरछी हाथ ढाल मुख दीया ॥३३९॥

सूर सुभट दोऊं था लरैं मूंड तूटि धरती परि पड़ैं ॥
सर छूटे बांणव की मार । मानौं वर्षे घन हर धार ॥३४०॥

दसानन निज करैं मनमांहि । सेना झूझ मुई मनमांहि ॥
केहरि रथ बैठा तब आय । दुरजन दलन भया संताप ॥३४१॥

गदा चक्र ले खडग चंद्रहासि । दश सिर बीस भुजा हैं तास ॥
धस्या कटक में मारे घने । जक्षनाथ आया साम्हने ॥३४२॥

दोऊ लरैं जुध कै हेत । जक्षनाथ तब राख्यो खेत ॥
तब वैश्रवन सनमुख भया । वैश्रवन चित्त ऊपजी दया ॥३४३॥

युद्ध से वैराग्य

ध्रग ध्रग ए राज ध्रग मेदिनी । विषय बेल के फल ए दुनी ॥
पिता पुत्र भ्राता थी मरैं । रुद्रध्यांन करि नरकौ पडं ॥३४४॥

इह मो भाई मोसी के पूत । थाकूं मारे पाप बहुत ॥
इण प्रणांम करि ठाढा भया । दसानन रुद्र भाव सौं गया ॥३४५॥

वैश्रवण बोलै तिहं बार । जाणों ए संसार असार ॥
किसका राज कौंण की मही । सुख दुख दाता कोई नहीं ॥३४६॥

माया मोहि में फिरहि अग्यांन । क्रोध मान वसि भया अग्यांन ॥
तृष्णा लोभ बहु दुःख का मूल । तिनमें रह्या चिदानंदि भूलि ॥३४७॥

राज करत उपजैं बहु पाप । मरि करि परभव लहै संताप ॥
बली दसानन कहै विचार । हिवणा कवण ग्यांन कौ सार ॥३४८॥

जइ तु जीव की रिक्षा करैं। जती होय तो काल न टरै ॥
जो तू अपने जीव तैं डरै। तो तु सेव हमारी करै ॥३४९॥
लंका हम कूं तू जो देह। तो इह बसैं तुम्हारी देह ॥

दसानन द्वारा युद्ध करना

जो कछु बल पौरष मन धरौ। तो संभालि फिरि हमसौं लरो ॥३५०॥
इतनी सुनत गहै हथियार। सनमुख ह्वैं करि माडी रार ॥
दसानिन गदा लीन्हीं हाथ। रथ फेरया तब लंका नाथ ॥३५१॥
धनदत्त विद्याधर आया दौडि। गदा चक्र मारौं की भौडि ॥
दसानन फिरि कीने घाव। दसानन बज्र कीया दाउ ॥३५२॥
विद्याधर नैं सिर सौं हया। रथ तैं गिरया पुत्र ले गया ॥
वैद्य बुलायो कीया जतन। घाव सिवालैं कहा कठिन ॥३५३॥
सेवा करैं पुत्र सब आय। सेवैं घाव अरु मलम लगाय ॥
वैश्रवनें देखैं चहुं ओर। पडी लोथ ही सगली ठौर ॥३५४॥
सैन्या सकल का भया संहार। मन वच तन छोड्यौ अहंकार ॥
उपसम भाव उरमाहीं धरैं। जिणवर चरण सरण संभरैं ॥३५५॥
या संसार अचल कछु नाहि। राजभोग जिम बादल छांह ॥
जिस कारण बांधै सहू पाप। चहुंगति मांहि सौहै संताप ॥३५६॥
इन्द्री सुख के कारण जीव। बहु अपराध चढावैं ग्रीव ॥
बिना काज इतना जिय मरैं। किये करम टारे नहीं टरैं ॥३५७॥

वैश्रवन द्वारा दिगम्बर दीक्षा ग्रहण

लंका राज दसानन दिया। वैश्रवन भेष दिगंबर लिया ॥
बारह विध तप उत्तम ध्यान। तेरह विध चारित्र विनांण ॥३५८॥
तन बाईस परिसा सहै। अष्ट करम छिनमांहीं दहै ॥
सारित रुद्र ध्यांन करि दूरि। धरम सकल चित राखैं पूरि ॥३५९॥
केवलग्यांन भया तिह घडी। सुरलोकांतिक महिमां करी ॥
काटि कर्म पहुंच्या निरवान। पायो सिवथानक कल्यांन ॥३६०॥

सुमाली द्वारा पुनः लंका की प्राप्ति

सुमाली बैठा लंका राज। भया सकल वांछित काज ॥
ए सब कंवर करैं आनंद। समरण पूजा करैं जिणंद ॥३६१॥

दसानन विमान इक रच्या । नग तिरण उणहारै संच्या ॥
मंदिर कनक मई सब किये । बंदनमाल रतन मय हिये ॥३६२॥

[illegible] सिंहासन [illegible] कुटंब संग लेकर चलैं ॥
भान कुंमर शुभ रच्या विमान । भभीषण है सवारया आन ॥३६३॥

चढे विमान अपणे आपणे । दक्षिण दिस नृप साथे घने ॥
देस देस के भूपति मिले । आंरण मनाय विजयारध चले ॥३६४॥

मारिग माहिं पूजि सुमेर । चैत्याले देखे बहु फेर ॥
ऊपर धुजा बहो फहराय । रतनबिंब जिण का तिण ठाय ॥३६५॥

सुमाली सेती करैं प्रसन्न । दोउ कर जोडि बीनवै दशानन ॥
इण नगरी का भाषो नांम । चैत्यालै कब ते इस ठांम ॥३६६॥

सुमाली भूपति ब्यौरा कहै । हरिषेण चक्री छहखंड लहै ॥
उन श्री जिनके मंदिर किये । छत्री कलस रतन जड दिये ॥३६७॥

हरिषेण चक्रवत्ति की कथा

हरषेन की सुनु अब बात । उण जिण भवण किये किण भांत ॥
कंपिला नगरी सिंहध्वज राय । विप्रा राणी सेवै जिण पाय ॥३६८॥

ताके गर्भ भया हरषेण । वाकै भए हुआ सुख चैन ॥
राणी दस लक्षण व्रत करै । पुन्यों दिन माहे रथ फिरै ॥३६९॥

लक्ष्मी सौकि पति सौं बीनवै । मिथ्या धरम कुदेवै नवैं ॥
मेरा रथ पहलै नीकलै । ता पाछे वाका रथ चलै ॥३७०॥

राणी के मन व्यापा सोग । छांडे अन्नपान रस भोग ॥
हरिषेण माता ढिग गया । सब व्रतांत रथ का पूछिया ॥३७१॥

तुम हो क्यों माता अणमणी । रथ पूजा सामग्री बणी ॥
कही पुत्रस्यौं सब समझाय । सुनि हरिषेन पसीनी काय ३७२॥

जो अब कहौं पिता सौं बैन । बधै उपाधिर होय कुचैन ॥
उठ्या कुंमर गया उद्यान । सब बन दीसै अति भय वांन ॥३७३॥

अजगर सर्प सिंह तिहां रहै । कोई मनुष तहां भूलि न जहै ॥
पुण्यवंत चित भय नवि धरै । बनमें कुमर अकेला फिरै ॥३७४॥

गिरि ऊपरि संन्यासी रहै । स्यौं कुटंब भेष तप गहै ॥
पंच अगनि तिहां साधै घने । रूपवती पुत्री तिह तने ॥३७५॥

नीचि झांकि देख्यो हरिषेन । भया दुहां का चारौं नैन ।।
देखि कुमर गिरि ऊपर जाय । तपसी याहि कुंवर जे आय ।।३७६।।

इह उनका बरज्या नहीं रहै । गिरि ऊपरि का मारग गहै ।।
तब वे कोप उठे तापसी । आव गहि आवे धसमसी ।।३७७।।

कन्या देखें दृष्टि पसार । तब बोली माता बच सार ।।
हम इम सुण्यां साधु मुख बैण । तू पटराणी व्याही हरिषेण ।।३७८।।

तू देखें परदेसी ऊठि । निज तन कहा लगावं दोठि ।।
तब बोले हरिषेण कुमार । प्रतियन पै क्या गहुं हथियार ।।३७९।।

परवत छोडि चल्यो बन माहिं । मनमें चित वा सुर सांझि ।।
बन फल खाय बन ही में रहै । रात दिवस दारुण दुख सहै ।।३८०।।

फूल पांन सोवै साथरै । निस वितीत होवै इण परै ।।
इस विजोग तैं कछु न सुहाय । प्रांनी प्राण विना दुख पाइ ।।३८१।।

मन में ऐसी निश्चय करी । माता दुख नहुनि म्हराणी ।।
जब छह षंड का पाउं राज । जिणवर सुवरण सवारौं राज ।।३८२।।

ऐसी चितत सिंध तट गया । नदी तीर तिह ठाढा भया ।।
तिहां नारि देखें सब घरी । गोरी बाल तरुणी गुण भरी ।।३८३।।

प्रौढा विरधा बहुत सुजांन । भ्रमी स्वरूप देख इक तांन ।।
नयनहु देखें रूप प्रभाय । सिथल भयी निज घर न सुहाय ।।३८४।।

हस्ती एक बहुत मद भरया । पटा चुवै भय दायक घरा ।।
महावत मंगल पर चढया । चरची भोई प्रबरछह गढया ।।३८५।।

घेरचा जाहि चले चिहुं ओर । सारे नगर मचाई रोर ।।
आवत देखिर कहै कुमार । सैं महावत हाथी नैं टालि ।।३८६।।

महावत कहै परदेसी सुनौं । मंगल मतवालो है घनौं ।।
आंकुस गिणैं न मानें कारिण । यहां नहीं फिरै हमारे पांण ।।३८७।।

किम करि यों का महरा फिरै । तु हाथैं अलगो क्युं न टरै ।।
साम्है गज पाछै है नदी । कहां जाउं दोन्युं विध बदी ।।३८८।।

सकल नारि देखें बिललाइ । महावत गज ले पहुंच्या आय ।।
तब हरिषेण धीरज बहु दिया । तुम कछु भय चित मारण लिया ।।३८९।।

बोले कुमर रे समझ गंवार । हाथी सहित तुझ मारूं डारि ।।
कहै महावत तुझ लागया काल । दूरि होर्ड़ मा मूढ गंवारि ।।३९०।।

सांभल सबद कोप्यो सुकुमार । हस्ती दंत गहे तिरा वार ।।
लिये उपारि मस्तग सौं हनैं । भाज्यो चिलचिलाय गज मनैं ।।३९१।।

एक दई महावत कै लात । जाएं करी सत्रु की घात ।।
निरमद किया महामयमंत । राजा सुधि लई बलवंत ।।३९२।।

सिंहराज भेजे सब लोग । करो महोछव कंवर संजोग ।।
बहुत करी बिनती मनुहार । भली भांति ल्यावो हम द्वार ।।३९३।।

आय कुंवर कै लागे पाय । [illegible] प्रभू सु[illegible]
हस्ती ऊपर चढ्यो कुमार । बाजैं प्रतिबाजे तिह बार ।।३९४।।

छाय बाजार संवराई गली । घरि घरि कांमरिग गावैं रली ।।
सिंह भूप भेट्या उर लाय । रूप देखि अति हरख्यो राय ।।३९५।।

निजपुत्री व्याही तिह घरी । ताकी साथि कन्या सौ परी ।।
इक दिन बात निमित्तक भनैं । इस कन्यावर हस्ती हनैं ।।३९६।।

भोग भोगवैं सुख सेझ मझार । नागवती चित करै कुमार ।।
कुंवर भणैं कब बीतैं रयण । चलौं बेग नागवती सैंरा ।।३९७।।

इम चितवन्ता आई नींद । परचो सेज पर आंणि गयंद ।।
बेगवती विद्याधर आय । कुंवर सोवतो लियो उठाय ।।३९८।।

धर बिमान लेचल्या आकास । बेगवती मन करै उल्हास ।।
जाग्यो कुंवर अचुंभय भयो । देख त्रिया कर सौं कर गह्यो ।।३९९।।

तूं छै कवरा कहो सत भाव । किह कारण तैं लिया उठाइ ।।
बेगवती बोली नहीं बात । कुंवर बिचारै घालुं घात ।।४००।।

बेगवती कंपी तिहबार । हिवैं मुनैं जो डारै मार ।।
बहु करैं बीनती आपणीं । हुं आई कारज तुम तणीं ।।४०१।।

जो तुमही बिरणासल हो मोय । तौ सब कारण बिगसै तोहि ।।
सुरज उदयपुर नगर सुभथांन । सक्रचाप राजा जिम भांन ।।४०२।।

बंधुमती राणी पट धनी । जैं चंद्रा पुत्री ता तणी ।।
लिख दीने बहु धंड के भूप । कन्यां निजर न आण्यां रूप ।।४०३।।

तुमारा चित्र सीस धरि लिया । ता कारण मैं तुम हर लिया ।।
चलो बेग तुम करहु वियाह । मिटै सकल हिरदै के दाह ।।४०४।।

सुरज उदयपुर में तब गये । राजा पास बधावा गये ।।
सुभ लगनें ब्याही सुंदरी । भोग भवान में बीतें घड़ी ।।४०५।।

गंगाधर्म महींदर भूप । दोऊ भए क्रोध के रूप ।।
इन परदेसी नें कन्या दई । हमारी उसनें कारण न लई ।।४०६।।

सेन्यां ले चल दौड़े सूर । विद्याधर विद्या भरपूर ।।
सुरज उदयपुर घेरया आय । हरिषेण सु कहै समुझाय ।।४०७।।

तुम यह रहो हम जाहुं लरन । तुम पाहुणा न होवै मरण ।।
तब हंसि करि बोले हरिषेन । तुम घरि बैठि करो सुखचैन ।।४०८।।

हम बैरी स्युं करि हैं युद्ध । अपणां मन तुम राखो सुधि ।।
सैन साथ ले सूहमल भए । सूरवीर तहां जुझ बहु भए ।।४०९।।

दारुण जुध भया भैभीत । हरिषेन की भई तब जीत ।।
जीत्या सत्रु भया आनंद । बाजे बजे महा सुखकंद ।।४१०।।

आयुधशाला कारण भया । चक्र सुदर्शन पाया नया ।।
पूजा करि सुदरसन बंदि । चल्या चक्र जीते षट् खंड ।।४११।।

तब आए तापस की पुरी । बारह जोयण सेन्या परी ।।
सहु तापस आये तिह बार । आसीरबाद दे बारंबार ।।४१२।।

तब हरषेन कहै हंसि बात । मैं हूं वह जो तुम धरजात ।।
तपसी जांणि दया उर धरी । षिमा करी उन वाही घरी ।।४१३।।

तपसी कहैं तुम हो धरमिष्ट । पुण्यवंत क्युं होय न कष्ट ।।
वन बिहंड में पुण्य सहाय । मन वांछित सुख उपजै आय ।।४१४।।

पुण्य बधै लक्ष्मी परिवार । पुण्यै भोग लहै संसार ।।
तुम बलवंत अति महापुनीत । तुमतैं कौण सकै नर जीत ।।४१५।।

सब तपस्यां मिल अस्तुति करी । ब्याही नागवसी पुत्तरी ।।
पहुंते आय नगर कंपिला । कंठा कंपण परियण मिला ।।४१६।।

मात पिता के बंदे पाय । रथ चलाइया श्री जिनराइ ।।
भुंजै राज करै आनंद । ठौर ठौर देहुरा जिणंद ।।४१७।।

राज करत दिन बीते घने । एक दिवस एक कारण बने ॥
चढि मंदिर देखें मन भाव । देखे हिरण जुगल इक ठांव ॥४१८॥

सुरत रीत वै वन में फिरैं । विद्युत पात तैं दोऊ मरैं ॥
ताहि निरख जाग्यो मन ग्यांन । कालचक्र है पवन समांन ॥४१९॥

क्षिण मैं व्यापै करै न ढील । मोह जिण राख्यउ कील ॥
इह संसार जल बुदबुद प्राय । पल पल आव घटत ही जाय ॥४२०॥

हय गय विभव अर्थ भंडार । पुत्र कलित्र मित्र परिवार ॥
सबै बिनस्वर थिर नहीं कोय । संपई तणां विछोहा होय ॥४२१॥

संसार परिक्षा परिषन किया । राजरिद्ध तजि संयम लिया ॥
करम काटि पंचम गति लई । हरिषेण कथा संपूरण भई ॥४२२॥

दोहा

सुनी कथा हरिषेण की, मनमें भयो आनंद ॥
दशानन को संशय मिटयो, पूजे देव जिणंद ॥४२३॥

चौपई

दशानन द्वारा जिन पूजा

जिनवर भवन में उतरे जाय । प्रणपति करी दशानन राय ॥
आठ दरब स्युं पूजा करी । जनम सफल मान्यौं तिह घरी ॥४२४॥

वहां तैं उठि समेदगिरि गये । रैण भई आश्रम तिह लये ॥
हस्ती एक महामयमंत । द्वारह फोरत गरज करंत ॥४२५॥

लोक देख होवै भयवंत । दसानन चित सोच करंत ॥
कै कोई दुरजन है इह बार । आया हमसौं करिबा रार ॥४२६॥

कै वैश्रवन क्रोध संभाल । युद्ध करण आया इह काल ॥
महां सेती उठि लीनी सुद्ध । हाथी देखि विचारी बुद्धि ॥४२७॥

कुसुमादिक विमाण परि बैठि । आपण जोवै हस्ती हेठ ॥
धनुष सात है उदर गयंद । दस धनुष लंबा वपु छंद ॥४२८॥

नव धनुष ऊंचा गजराय । ऐरापति साम रावै भाव ॥
दसानन उठि ऊभा थया । निकट कर्‌यां के संख बजाय ॥४२९॥

संख सब्द गिरिवर गिरिपडै । धरती कंपी जलहर डरै ॥
हस्ती भागो सांकल तोडि । दसों दिसा में मांची रोर ॥४३०॥

भई भंडा की रोमावलि खड़ी । हस्ती कैं जिय खलभल पड़ी ॥
तबै गयंद भाज्यौ चिंघार । दसानन चरण गह्या सिहंवार ॥४३१॥

दौड़ उछल्या धरती पड्या । ज्युं अंजनगिरि गिर पड्या ॥
पकड़ि दांत झकझोरा घन्या । बज्रमुष्टि कर ताकूं हन्या ॥४३२॥

निरमद कीया अजा समान । सुख पाया कुटंब जन आन ॥
पोहु फाटी रु भया परभात । गजपलाण मार कर जात ॥४३३॥

तब इक किंकर पहुंता आइ । लोटैं धरा सिर पाग बगाय ॥
दसानन तिहां उभा रह्या । कहो किंकर तू किणैं दह्या ॥४३४॥

तासुं बचन पूछै बलबीर । कहो बात चित राखो धीर ॥
कौण काज आया मो पास । तेरा मन की पूरूं आस ॥४३५॥

संघावली किंकर कौं नाम । सैन्यावली का सुत इण ठांम ॥
इन्द्रतणा किंकर कही एक । तिण लीधी लंक कर टेक ॥४३६॥

लोग तुम्हारा दिया निकाल । सूरज रज अचछर रज पाइ मार ॥
वै तुमारा बंस के परताप । वे दोन्युं चढि दोडे आप ॥४३७॥

दो सुं बोड जुध अति भया । वांनर बंसी दल कटि गया ॥
रहे सूरज रज अचछर रज । किया जुद्ध राखी तिहां लज्ज ॥४३८॥

जम की सेन्यां करी संहार । जम सन्मुख आया तिहंवार ॥
सूरज रज कैं मारी गदा । रथ तैं पड्या भूमि पर तदा ॥४३९॥

अलंका मैं ले गये उचाइ । मिल मिल गावैं बाब सिचाइ ॥
अब वाकुं कुछ भई उसास । जम दे है लोकां नैं त्रास ॥४४०॥

नरक सात सो राया इन्द्र । तहां माणस गाल्या करि वृन्द ॥

लंका विजय

तिस कारण आया तुम पास । तुम चल दूर करो दुख त्रास ॥४४१॥

इतनी सुणि सब सेन्यां दही हुंकार । किखंद पुरे पहुंता तिण बार ॥
बाजै मारू माची रोर । किषंदपुर देख्या दक्षिण ओर ॥४४२॥

वैतरणी अरु सातौं नर्क । बंदी बान सहै उपसर्ग ॥
रखवाले बैठे तिहां घने । थंभ बांधि करि पिंजर हने ॥४४३॥

दशानन बंदि छोडि सब दई । संपोट कर्नै ए बात सब गई ॥
सुणित बात कोप्या संपोट । दशानन नैं अपडूं पग रोप ॥४४४॥

सूर सुभट सब लिये बुलाय । चढि आया लड़बे कैं भाय ।।
वभीषण आय फिरया अड़वार । दोनु दल मुरया तिह बार ।।४४५।।

संप्रोट भभीषण नें कहै । अब तू मोतें सनमुख रहै ।।
तोकु सही भभीषण नाम । जीवत पकड़ि बांधि ले जाउं ।।४४६।।

वभीषण की सेना बहुभरी । दशानन भी आया तिह घरी ।।
चन्द्रहाहांस लीया संभालि । संपोट का दल किया संहार ।।४४७।।

संपोट भाज गया जम पास । बोलै वचन मुख लेइ उसास ।।
जम सांभलि ली सौं बात । चढ्यो कोप केहर की जात ।।४४८।।

जम की साथ चले सामंत । सेनां नहीं लाभैं अंत ।।
चढि आया बाजित्र बजाय । कुंभकरण भभीषण सनमुख आय ।।४४९।।

हूहुवा सुभट जुझैं रणमाहि । उडी रेणु मांनु भई सांझ ।।

दशानन द्वारा युद्ध

दशानन आया उण ठाव । युध भेद समझै सब दाउ ।।४५०।।
दस सर बीस भुजा बलवांन । दुरजन मारि कीये घमसान ।।
जम इनके सनमुख ह्वै लरया । सर लाग्या रथ सैं गिर पड्या ।।४५१।।

सांतक नांम जम का इक पूत । लोथ पिता की उठाई तुरन्त ।।
लोथ राख करि किरणही गांम । रथनूपुर गया इन्द्र के ठांम ।।४५२।।

ब्यौरा सकल इन्द्र सौं कह्या । जमनें मारि देश उन लह्या ।।
दशानन नाम महा बलिवंत । देखत ताहि प्राण ह्वै अंत ।।४५३।।

बीस भुजा कहिए दस सीस । जाकी कर न सकै कोई रीस ।
सुणत बात कोप्या जिम सिंह । साथि सैंन भट लिये अभिंन्द ।।४५४।।
देस देस तें लिख फरमान । दूत पठाया चतुर सुजान ।।
सबै नरेन्द्र बुलाये राय । जोतकी पूछे तुरत बुलाय ।।४५५।।

सिद्ध भर्णो जोगित बुलाय । हिव चलस्यौ तो होसी हार ।।
कहै इन्द्र अब निंवल्या बार । जो फिर जाऊं नगर सभार ।।४५६।।

तो सूरिमा पणौं नवि रहै । मांनी हारि सहु कोई कहै ।।
पुरुषा सब समजावैं बात । बतीस दांत नहीं मानुं हार ।।४५७।।
अंतहपुर में फिर गया इंद्र । सौच बुलाय करै आनंद ।।
जम फिर आया इंद्र के पास । पुत्री दई रूप गुण भास ।।४५८।।

जम भेज्या सुरगतिपुर देस । खुसी हुए सब भूप नरेस ।।
दसानन नगर लिये सब साथ । इन्द्र सु'तिन फांडी उपाधि ।।४५९।।

त्रिकुटाचल रतनश्रव राज । मनवंछित का हुवा काज ।।
किकंधपुर सूरजरज दिया । किषपुर राज अन्छरज लिया ।।४६०।।

सुमाली मालिवान दोऊ लंका धणी । सुभ साता तसु भाई घणी ।।
सेवा करैं वे तीनु' वीर । लह्या सब सुख पाय सरीर ।।४६१।।

छत्र सिंघासण चामर घने । बहुत गयंद ढोर के बने ।।
हय गय रथ पायक असवार । मेहल चढ्या देखै नर नारि ।।४६२।।

लाल जवाहर वारैं भूप । सगली सोभा वणी अनूप ।।
पहुंचे गढ लंका में जाय । बजैं निसांण गुणी गुण गाय ।।४६३।।

सब कुटंब भेट आगलैं लागि । असुभ करम सगले गये भाग ।।
इतनी कथा कही जिणराय । श्रेणिक भूप सुणी मन लाय ।।४६४।।

सोरठा

श्री जिण धरम प्रसाद, वृद्धि भई परिवार की ।
पायो लंकाराज, राक्षसबंसी जग तिलक ।।४६५।।

इति श्री पद्मपुराणे दशग्रीव विधानकं

सप्तम विधानक

चौपई

बाली सुग्रीव वर्णन

किषिधपुर सूरज रज भूप । इन्द्रमालिनी नारि सरूप ।।
बालि पुत्र ताकैं उर भया । चरम सरीरी रूप निरमया ।।४६६।।

रतनमाला गर्भ भया सुग्रीव । जानैं धरम करम की नींव ।।
दिन दिन बढत सयाने भये । विद्या पढि पंडित अति थये ।।४६७।।

राजनीति का जाणैं भेव । मनमें जपैं सदा जिणदेव ।।
सदा रहै हिरदै में ग्यान । सम्यग् दृष्टि निश्चल ध्यान ।।४६८।।

सूरतिवंत पराक्रमी घने । दुरजन कंपैं नाम के सुनै ।।
किषपुरी अच्छर रज राय । हरीकांत प्रिया सोभै पट ठाइ ।।४६९।।

प्रथम पुत्र जनम्यां नल नाम । दूजा नील दया का धाम ।।
चरम सरीरी उजली देह । महा पराक्रमी धरम सनेह ।।४७०।।

सूरज रज उपज्या वयराग । राजरिष सगली ही त्याग ।।
बालि कुमर प्रति सोंप्या राज । सुग्रीव ने कियो जुवराज ।।४७१।।

राज्य प्राप्ति

परहितमोह मुनिवर के पास । दिष्या लई मुक्ति की आस ।।
राजा बालि प्रतापी खरा । रामावली अस्त्री नें वरा ।।४७२।।

तातैं व्याही सौ औरं । तातैं अधिक विराजै ठौर ।।
विजयार्ध मेघपुर नाम । ताकै पुत्र खरदूषण नाम ।।४७३।।

चन्द्रनषानें याहि हरया । निसवासर लंका में षडा ।।
दसानन कुंभकरण तें डरै । भभीषण का भय चित धरैं ।।४७४।।

दसानन गया जात्रा मेर । खरदुषण आया तिह बेर ।।
चन्द्रनषा हरि चढ्या विमाण । लेकर गयो आपणां थान ।।४७५।।

कुंभकरण भभीषण दोउं वीर । ग्रैसी सुनि परजले सरीर ।।
मन मांहि ते कर आलोच । अन्नपांन छोड्या मन सोच ।।४७६।।

रतनश्रवा अर नरपति घने । कहै कि वाकों गहि कर हने ।।
सेन्यां जोडि विजयार्द्ध चले । दसानन आवतां मारग मिले ।।४७७।।

सांभलि चन्द्रनषा की बात । कपी देह पसीना गात ।।
इतनी सेन्यां का क्या काम । एक ही करैं ते करो संग्राम ।।४७८।।

छिनमें मारि सब परलय करो । उनपरि कहा खड्ग बापरों ।।
मन्दोदरी सीष इम भनें । कंन्या घर राष्या नहिं बने ।।४७९।।

उत्तम कुल उनके भी षरे । चौदह सै षेचर उण षरे ।।
विद्या सहस है वाके तीर । साहसैवंत महा बलवीर ।।४८०।।

जो तुम वाकी डारौ मार । तो विधवा होसी बहण तुमार ।।
तब वाको दूषण अति होय । तुमने भला न कहसी कोय ।।४८१।।

अब जो षिमा करो तो भला । ह्वैं सेवक ह्वं करि आवै चला ।।
जो तुम जुध करण का चाउ । तो अब बालि सुग्रीव परिजाउ ।।४८२।।

उनको दिन बीते है घने । न करै सेव हुकम तुम तने ।।
आग्या मानैं नाहीं बाल । वेग जाहि इह टालो साल ।।४८३।।

दसानन सुनी त्रिया सो कहै । जो वे मुझ आग्या में रहैं ।।
हूं उनकी नहीं मानूं संक । वे हम सूं कहा करि है बंक ।।४८४।।

बहुरि भणी मंदोदरी बैन । सुणु कथा चित राखो चैन ॥
पाताल लंका चंद्रदधि रहै । अनुराधा राणी सुख लहै ॥४८५॥

चंद्रोदधि सहजै मरि गया । राणी तब वनबासा लिया ॥
बनमें भया पुत्र परसूत । बालिनामें लक्षण संयुक्त ॥४८६॥

विद्या सीख भया बहु गुनी । अपने मन राखै अतिमनी ॥
बालसभीप मिल्या बल भाय । दोन्यू रहैं प्रीत अधिकाइ ॥४८७॥

ऐसे सुणि करि भेज्या दूत । और बात भति लिखी बहुत ॥
पहुंच्या किषंदपुर जिहां बालि । पत्री ताहि सौंपे बरि हाल ॥४८८॥

दसानन सम भूपति नहीं और । जाके बल को नांहि छोर ॥
तुमारे पुरखानें दई भूमि । वे सेवा करते तजि भूमि ॥४८९॥

तुम भी मांनु उनकी आंन । ज्यौं ए रहैं तुम्हारे प्रांन ॥
अब तुम साथि हमारे चलो । श्री प्रभा कन्यां ले मिलो ॥४९०॥

ज्यौं तुझ देश परगने देइ । आदर सहित नगर में लेइ ॥
बालि नरेस कहै समझाय । मैं पद नमूं जिणेश्वर राय ॥४९१॥

कैसे ताहि नमांऊ सीस । मेरे बडा अर्छ जगदीस ॥
दूजा नैं प्रणामूं किस भांति । मै भगवंत सुमरउं दिनराति ॥४९२॥

उह् ऐसा है क्या बलवांन । मुझने बचन कहै इस भांति ॥
जो हूं लंक उपरि चढि जाउं । मारौं उलटि सब उसका ठाउं ॥४९३॥

उठा कोप चल गहै तरवार । मारउं दूत मिलाउं छारि ॥
भव बल का कर पकरै बाल । दूत न मारै को भूपाल ॥४९४॥

योह बोल निज पति का बैन । आया हमैं संदेशा दैन ॥
धका दिवाय कर दिया निकार । गया दूत फिर उतनी बार ॥४९५॥

सकल बात ब्योरा सौं कही । तुम तैं तिण सम मानैं नहीं ॥
लंकपति सेना सब टेर । देसपति साथ लिये तह् बेर ॥४९६॥

युद्ध वर्णन

चाल्यो दल छायो आकास । पहुंचे किकंधपुर कै पास ॥
बाजा तब बाज्या बहुजोर । गांम घेर लीन्हा चहुं ओर ॥४९७॥

बालि भूप नै भई संभार । नल नील आए जु कुमार ॥
सूर सुभट सब एकठे किये । हय गय रथ वाहन बहु लिये ॥४९८॥

चढे कोपि जिण पर केहरी । देखत ही सब की सुधि हरी ॥
[illegible] सुकंप हुरी [illegible] । [illegible] सुजान ॥४९९॥

हाथ गह्या नांगी तरवार । दुहुंधां पड़ै बांण की मार ॥
बरछी हाथ धनुंष सर लीये । ताकि मारे अरियण के हिये ॥५००॥

कोई सुभट गदा कर गहे । तब सागर मंत्री इम कहे ॥
पंडित गुंनी अधिक सुजांन । बचन बालि प्रति जंपै आंन ॥५०१॥

सैन दसानन की है घनी । तुम हो एक नगर के धनी ॥
उन सगली जीती है मही । वा समान कोई खेचर नहीं ॥५०२॥

चन्द्रहास जो मारै खड्ग । तो तुमनैं ह्वै बहुत उपसर्ग ॥
इतना जीव मरै रण मांहि । घर घर सोग बधै दुखदाय ॥५०३॥

इन जीवां को क्यौं ल्यौं पाप । अब तुम षिमा करो प्रभु आप ॥
बालि कहै मंत्री सुंणि बात । देखि जु इहाँ लगाउं हाथ ॥५०४॥

सब सियाल मिल इकठा होय । एक सिंह नवि जीतैं कोइ ॥
इणका काल लिख्या इण ठांम । मारो ठोर मिलाउं नाम ॥५०५॥

मंत्री फेर बीनती करै । वाकी सर भर क्यौं बल धरै ॥
ज्यौं मनुषां केहर नैं गहै । पिंजर माहि परवस दुख सहै ॥५०६॥

वह तुमनें पकड़ै करि घेर । तातैं करो छिमां इस वेर ॥
बहुरि बालि मंत्री सौं कहै । सूरापन षिमा तैं न रहै ॥५०७॥

नृप कहै इन मांनी हारि । चरचा इम चालैं संसार ॥
मस्तक मैं नाउं भगवंत । मुणि पैं व्रत गह्यो इण भंत ॥५०८॥

बालि द्वारा दीक्षा ग्रहण

जो अब आइ मिलु तजि जंग । तो होवै मेरा व्रत भंग ॥
सुग्रीव नैं सौंप्या सब राज । आपण किवो मुक्ति की साज ॥५०९॥

गगनचंद्र मुनि पासैं जाय । दिक्षा लई मन वच क्रम काय ॥
बारह अनुप्रेक्षा चित धरैं । मास उपास पारण करैं ॥५१०॥

तेरह विध पालैं चारित्र । जीत्या क्रोध लोभ मंद सत्र ॥
बाईस परीसा सहै सरीर । मन वच काया राखी धीर ॥५११॥

निस दिन चिदानंद लिव लाइ । विद्या सिद्ध भई तब आइ ॥
बल अनंत विद्या गुण ढेर । भू उलटत नही लागैं वेर ॥५१२॥

मुनि कैं चित्त दया का भाव । नां कछु हरष नहीं विसमाव ।।
धरम उपदेस सुणैं भवि लोक । मुनि साधैं निस वासर जोग ।।५१३।।

करि विहार पहुंते कैलास । दरसन किया मुगति की आस ।।
बारहविध लाया तप ध्यान । बाहर अभ्यंतर उत्तम ग्यांन ।।५१४।।

सुग्रीव दशानन पासैं गया । श्रीप्रभा सुं विवाह कर दिया ।।
पटराणी थापी तिह घरी । पाछै ब्याही घणी अस्तरी ।।५१५।।

सुग्रीव नें सौंप्या निजपुर राज । सो फिर करैं भूप का काज ।।
नीलकमल विजयारध देस । तिहां रहै नील कमल नरेस ।।५१६।।

श्रीदेवी राणी तसु गेह । रतनावली पुत्री सुभ देह ।।
दशानन ब्याही रतनावली । भोग भुगांत मानैं बहु रली ।।५१७।।

दशानन की कैलाश वंदना

ह्वां तैं बैठि करि चले विमाण । गिरि कैलास परि थाप्यो थांन ।।
तब मन सोच करैं दशसीस । मंत्री भणैं सुणौं नर ईस ।।५१८।।

गिरि कैलास महैसर देहुरा । तीन चौबीस रतन बिंब धरा ।।
वंदनीक हैगी इह ठौर । या समान तीरथ नहीं और ।।५१९।।

बालि की तपस्या

इण ठां बालि तपस्या करैं । तिण कारण बिमाण नहीं टरैं ।।
सोभनीक तिहां वृक्ष उतंग । फूलत फलत बिराजैं रंग ।।५२०।।

चिमकैं सिला मानु रवि किरण । दरसण कीयां दुख का हरण ।।
गंगा नदी चलैं तिहां घनी । उज्जल बरण सोभा जब बनी ।।५२१।।

दसानन कोप्या तिहबार । आणौं परवत लेउं उपार ।।
उलटो गिर सायर मैं देउं । निज बल तणी परिक्षा लेउं ।।५२२।।

उतरया आप भूमि पग दिया । क्रोध अति चित्त में किया ।।
चढि परवत पर पहुंतो तहां । करैं बालि मुनिवर तप जहां ।।५२३।।

ताहि देख करि भौंह चढाय । हथेली काटई दांत चबाई ।।
निठर बयण मुख सेती कहै । तू यों ही देही क्यों दहै ।।५२४।।

तेरे मन का क्रोध न घट्या । जैन धरम कछु तप करि सटा ।।
अहंकार तैं मनमैं धरा । मेरा विमान रख्या जो परा ।।५२५।।

अब तूं देख कहा मैं करौं । परवत सहित सायर संचारौं ।।
जो तैं सिध पाई कछु भली । अब कै बचैं तो जाणौं बली ।।५२६।।

ऐसी भांति कहैं बहु बोल। मुनिवर साधैं तप अडोल ।।
ध्यान लहर मैं बैठा जती। राग दोष मनमें नहीं रती ।।५२७।।

आया पर्वत कै तरहांन। सुमरत विद्या ठाढी भई आन ।।
एक महूरत एकैं घडी। विद्या आई सकल तिहां गुरी
देहु बेगु प्रभु आज्ञा, आज करां जिका फरमाओ काज।
निज देही तब कीधी बडी, सब विद्यां वाकै संग चडी ।।५२८।।

भारी एक गदा गिर थांन। भई पातिका कूप समान ।।
दसानन गया तबै पाताल। गिर उठाय लिया ततकाल ।।५२९।।

छत्र समान उठाया सीस। भुजा उंचाई उंचे बीस ।।
कंपी धरती हाल्या रुंख। ऊंची पडै परवत की कुंष ।।५३०।।

हस्ती घोडा करैं चिंघाडि। डरपे केहरि खाइ पछाड ।।
पंथी उडे हलैं तरु डाल। मानुं आया परलय काल ।।५३१।।

अंधकार दीसैं चिहुं ओर। चली नदी जल परवत फोर ।।

बाली द्वारा चिन्तन

मति श्रुति अवधि मनपर्यय ग्यांन। बालि साध तब करैं विचार ।।५३२।।
अवधि प्रमाण करि चिंतैं ध्यांन। दसानन हैं या परवत ठाम ।।
तिण उपसर्ग किया इत आइ। कहा आश्चर्य मुझ छूटैं काइ ।।५३३।।
एक बार है मरण निदान। तातैं सोच न करिये आन ।।
होणहार नहीं टारी टरैं। विकलप गुं कारज नहीं सरैं ।।५३४।।
बाल साध इम करैं विचार। मुनिवर यां तप करैं विचार ।।
वे मुनि केवल लोचन सार। मति श्रुति अवधि मनपरजय कार ।।५३५।।
कंचनमय अच्छे देहुरा। रतनबिंब अनसंख्या करा ।।
गिरि उपर निवसैं बहु जीव। दुख नैं दुख आपैं दसग्रीव ।।५३६।।
यह मुझ नैं होसी अपलोक। इण परि बलि करैं मन शोक ।।
मुझ तैं अच्छे ए तो पराक्रम। इसको तुरत गमाउं भर्म ।।५३७।।
दया निमित्त मैं लीधा जोग। अब इण पर मुझ बण्यौ नियोग ।।
जो हूं इस पर करूं कषाय। तो मुझ तप सहु निरफल जाइ ।।५३८।।
अपने जीव का भय नवि करो। अवरा तणां सोच चित धरौं ।।
पर उपगार करैं जो कोइ। ताको कछु बन दूषन होइ ।।५३९।।

इम चिंतवी अंगुठा टेक। भई विद्या ईक विद्या एक ।।
बीस भुजा सहि सकै न भार। ज्यों ज्यों दबई त्यों करै पुकार ।।५४०।।

तब लग नहीं टूटे दस सीस । बोझै व्याकुल हुं लंकीस ।।
नींचइ पाणी करै पुकार । ह्यां तैं कोई न सकै निकार ।।५४१।।

रोवैं बहुत न निकसैं कहूं । अब हूं किण पर मारग गहुं ।।
रोवैं राण्या करैं पुकार । विधवा भई हम मांग संभार ।।५४२।।

मुणिवर कैं मन आई दया । चरण उठाइ भूमि तैं लया ।।

रावण द्वारा बाली की वंदना

तब रावण छुटया तिह घरी । मान भंग हुं अस्तुति करी ।।५४३।।
गयो आप तिहां बैठा जती । ताकै लोभ न वपु एको रती ।।
तप प्रताप सौं दिपै देह । चिदानंद सेती अति नेह ।।५४४।।

जैसे हुं पाणी की कार । अैसा मोक्ष मारग अहंकार ।।
रावण तीन प्रदक्षिणा दई । नमस्कार करि समता भई ।।५४५।।

तुम महंत धरम धर मीत । तातैं भगी धरम की रीत ।।
मैं पापी मूरख अग्यांन । पड्यो मोह फंदा में आन ।।५४६।।

पाप करम मैं किया अथाय । तैं दुख किम करि मेटया जाय ।।

दीक्षा लेने के भाव

अब तुं मो प्रभु दिक्षा देह । बांह पकड़ अपनी डिग लेह ।।५४७।।

चंद्रहास तब दीनों डारि । गदा गोमती सब हथियार ।
मुकुट सीस तैं डारया तोडि । विद्याभरण दीने सब छोडि ।।५४८।।

कपडे तनके डारे फार । मन वैराग्य धरया तिह बार ।।
करी वंदना चौबीसी तीन । बार बार बोलै आधीन ।।५४६।।

तुम भगवंत हो तारण तरण । हूं आयो प्रभु तेरी सरण ।।
मैं दीक्षा ले सेऊं चरण । मेरे होउ पापों का हरण ।।५५०।।

आसण कंप्या धरणी देव । अैसठ सिलाका होइ न छेह ।।
इनका अैसा अछै नियोग । भुगतैं तीन षंड का भोग ।।५५१।।

अैसी चित आया कैलास । पूजे श्री जिण मन उल्लास ।।
रावण सु धरनेन्द्र इम कहै । तेरे दया भाव चित रहै ।।५५२।।

तैं तो भगति करी मन लाइ । मैं सुणि धरम आया इस ठाइ ।।
जो तेरे मन इच्छा होइ । मुझ पै मांगि लेहु तुम सोइ ।।५५३।।

रावण विनवें मांगु यही । करूं तपस्या जिण पद गही ।।
छोडुं सकल राज का मोह । पग बंधन है माया लोग ।।५५४।।

पुत्र कलित्र न संगी कोइ । संपय तणां विछोहा होइ ।।
ऐसा ये संसार सरूप । नटवत भेष करै बहु रूप ।।५५५।।

जौनि फिरयौ चौरासी लाख । समकित की परतीत न साख ।।
तौ इह भ्रम्यौ सकल जग बीच । कबहूं उत्तम कबहूं नीच ।।५५६।।

मनमें कबहूं नायो सांच । विषय किये भर इंद्री पांच ।।
इक इंद्री सुख मुगतण हार । ते भवमें दुख सहैं अपार ।।५५७।।

पांचु इंद्री विषय संयुक्त । सेवत यामें दुख बहुत ।।
पांच चोर काया में रहैं । ए जीतैं तब सिव सुख लहैं ।।५५८।।

धरणेन्द्र द्वारा शिक्षा

तब बहुरि बोले धरणेन्द्र । तुम राजा पृथ्वी के चन्द्र ।।
तुम बिन दुख पावैंगे लोग । चौथे आश्रम लीजो जोग ।।५५६।।

मैं आया अब तेरे पास । मांगि सिद्य ज्यौं पूरू आस ।।
दिन को ज्यौं चिमकैं बीजली । बरसैं मेह पुरैं मन रली ।।५६०।।

देव सरण जे भेटे आय । ये दोन्यु निरफल नहीं जाय ।।
रावण जंपै सुणि धरणेन्द्र । देह देव जो तुम उर बिन्द ।।५६१।।

सक्ति बाण रावण प्रति दिया । ताका भेद गुण समझाइया ।।
जाके हियै लगै यह बाण । ताके गुण का दहै परमाण ।।५६२।।

ए करण ऊपर होइ जाय । वह जीवै नहीं विसही उपाय ।।
धरणेन्द्र देव गया पाताल । रावण मन में भयो विकराल ।।५६३।।

एक मास परवत पर रह्या । चित में धरम जिणेसुर गह्या ।।
समभावैं परियण सब आय । मंत्री कहै ग्यांन समझाय ।।५६४।।

अब फिर चलो करो निज राज । तुम बिन बिगडैं सगरे काज ।।
च्यारि दान तुम दीज्यो नित्त । पूजा करि पालो समकित ।।५६५।।

रावण पहुंतो लंका नरेस । करैं राज सुख पावैं देस ।।
बालि जती लहि केवल ग्यांन । परम प्रकास गए निरवाण ।।५६६।।

इति श्री पद्म पुराणे बालि निर्वाण विधानकं ।।

प्रथम विधानक

तगति का विवाह

चौपई

ज्योतपुर नगर हुतासन भूप । हरियल राणी महा स्वरूप ॥
अतिगति पुत्री ताकै उर भई । रूप लखन करि सोभै नई ॥५६७॥

चित्रांगद राजा कै साहसगति पूत । साहसीक बहु गुण संयुक्त ॥
इक दिन दृष्टि पडी अतिगता । देखत बढी काम द्रुम लता ॥५६८॥

जाय पिता सैं बिनती करी । हुतासन की ब्याहुं पुत्तरी ॥
राजा ततक्षण भेज्या दूत । लषी बीनती बचन बहुत ॥५६९॥

मेरा पुत्र बहुत गुणवंत । जाकै बल पौरष नहीं अंत ॥
अतिगति पुत्री तुम या को देहु । मेरा बचन मान प्रति लेहु ॥५७०॥

अवर दूत भेज्या सुग्रीव । बांनर बंसी अति उत्तम जीव ॥
राजा सोच करै मन मांहि । पुत्री समझि दीजिये काहि ॥५७१॥

मुनि चन्द्रस्वामी पं जाइ । नमस्कार करि लाग्यो पाइ ॥
मेरे मन संसय भयो आइ । उभय दूत पठिए हैं राइ ॥५७२॥

कन्या किसकी संबंधिनी । अवधि विचार के भाषो मुनि ॥
बोले मुनिवर ग्यांन बिचार । सुग्रीव की है आव अपार ॥५७३॥

व के साथ विवाह

साहसगति की है अल्प आव । कन्या देहु सुग्रीव कु भाव ॥
राजा का संसय मिट गया । मंगलचार सुग्रीव सू ठया ॥५७४॥

पंच सबद बाजै तिण बार । भांभण पढै बेद झंकार ॥
रहस रली सू भयो विवाह । दोउं कुल में बहुत उछाह ॥५७५॥

भए बिदा किकंधपुर गया । दंपति करैं भोग नित नया ॥
भया पुत्र इक नाम अनंग । दूजे अंगद लहर तरंग ॥५७६॥

महाबली है दोनू वीर । पराक्रमी अरु दिव्य सरीर ॥
साहसगति कै हिरदै दाह । अतिगत सुग्रीव ले गया बिवाह ॥५७७॥

छलबल करिकैं याकूं हरूं । मनबांछित सुख तासों करूं ॥
जब लग अतिगति भेटूं नांहि । तब लग रहि है मुझ मन डाहि ॥५७८॥

हेमांचल पर्वत पर गया । विद्या हेत तपस्वी भया ॥
रावण साधे सकल नरेस । आंण मनाय किये बसि देस ॥५७९॥

रावण द्वारा इन्द्र से युद्ध करने का विचार

दुरजन रह्या नहि किए ठाय । इन्द्र ऊपर नसु भई चढाइ ।।
देस देस लें आए राय । परदूषण मन चित्या दाव ।।५८०।।

ऐसी बार रांवण पं जाउं । बालु मिलें मिटे अंतराव ।।
भली भांति मिलवे कू चले । चउ देसें भूपति संग भलें ।।५८१।।

रावण सुणि खरदूषण बात । महा सुख मान्यां इण भांत ।।
भली बार परदूषण आइ । दोनूं भाइ मिले गल लाइ ।।५८२।।

चढि सब अपणें चले विमाण । ओझल भया अबै रथ भांग ।।
बाजे बाजैं घुरैं निसांण । हस्ती गरजैं मेघ समाण ।।५८३।।

एक सहस अक्षोहणि अर एक । एक सहस सुर दल की टेक ।।
पुष्प विमांण परि बैठा आप । मनमें जपे श्री जिनेस्वर जाप ।।५८४।।

सुमरण किये मनवंछित सिध । सुख संपति पावें बहु रिध ।।
रवि अस्ताचल ओझल भया । परवत पर इनो वासा लिया ।।५८५।।

सेज्या परि पौढइ सब भूप । शशि उडगण की जोति अनूप ।।
भयो प्रभात उठे सब लोग । नोबत बाजैं हर्ष प्रयोग ।।५८६।।

गावैं गुणियन राग बहोत । रवि की भई किरण उद्योत ।।
रावण बैठा कंचन पाट । विरुद बषांणें जाचक भाट ।।५८७।।

कंचन कलस नीर सु भरैं । करि सनांन फिर सुमरण करैं ।।
तुरी पलाण भये असवार । रमवाताल गए तिह बार ।।५८८।।

ताल मनोहर निरमल नीर । हंस आदि पंषी बहु तीर ।।
जलचर जीव विराजैं ओर । पंछी करैं कुलाहल सोर ।।५८९।।

बैठक छत्री चाक्कं षूंट । मंदिर बण्या बीच धरि सूत ।।
किंकर आइ बात जो कही । मैं देषि है उत्तम मही ।।५९०।।

तिहां तुम प्रभु उतरो जाइ । सुख पावैं सेनां तिण ठाय ।।
महिषमती नगरी है तिहां । मानसरोवर सोभैं जिहां ।५९१।।

ताकै निकट रावण उतरया । सकल सैन सौं वन बहु भरया ।।
डेरा सोभैं सुरंगी रंग । आभूषण सोभैं अति चंगि ।।५९२।।

सहस्त्ररश्मि राय सरोवर माहि । सहसनारि संग करै उछाह ।।
दीसै लोचन जेम कुरंग । क्रीडा करैं भूप के संग ।।५९३।।

चौकी बैठी घाटी घेर । कोई न असंकै तिहं बेर ।।
जलक्रीडा सरोवर बीच । खेलैं राणी माची कीच ।।५९४।।

अंजलि भरि भरि नीर उछाल । ऐसे खेलैं तिहुं भूपाल ।।
राजा लीने कमल उपारि । मारैं उनें मनावैं हारि ।।५९५।।

कोई रूठि रहे मुष मोरि । ताहि मनावैं भूप बहोरि ।।
त्रिविध प्रकार की क्रीडा करी । गावैं मंगल सब मिलि तिरी ।।५९६।।

रावण द्वारा जिन पूजा

वे अपने मन निरभय धरै । रावण पूजा नैं चित धरै ।।
सामग्री पूजा की सौंज । निज थांनिक साजा करि चौज ।।५९७।।

अष्ट द्रव्य सौं पूजा करै । श्री जिनवाणी मुख उच्चरै ।।
जल धारा का इह विचार । मिटा दोष मिटै संसार ।।५९८।।

केसर चंदन जिण ए दले । भय आताप मिटै संपए ।।
पहुप चढावैं जिण प्रतिबिंब । सीलन टरैं रहै गन थंभ ।।५९९।।

उज्वल अक्षत षंडित नहीं । इण विध पूजा कीजे सही ।।
नेवल थाल चढावैं धरै । क्षुध्या आदि दोष हरै ।।६००।।

दीप चढावैं रतन समान । निश्चैं पावैं केवल ग्यांन ।।
खेवें धूप सुगंध निमित्त । आठ करम जर जावैं अंत ।।६०१।।

फल जु चढावैं जिण पद पास । पावैं मोक्ष तणा आवास ।।
विनयवंत ह्वै आरती करैं । ऊछलै जल रावण ढिग परै ।।६०२।।

रावण कै मन चिंता होइ । ऐसा निडर इहां नहीं कोइ ।।
उन कछु करी न मेरी कांणि । जिनवर कै डर करया न जांणि ।।६०३।।

अब देखउ ढूंढो तुम जाइ । वेगि बांधि आंणि इस ठांइ ।।
गई फौंस तिहां खेलै राय । रखवाला वरजैं मति जाय ।।६०४।।

सूर सुभट भीतर धसि गये । वाकुं देखि अचंभित भए ।।
तू इस तैं हिव नीकलि मूढ । मैं तोनैं अब पाया ढूंढि ।।६०५।।

तू अब चल रावण के पास पास । जो चाहै जीवण की आस ।।
और जो तू मन राखै भर्म । देख जु अब कछु ह्वै है कर्म ।।६०६।।

रावण का सहस्त्ररश्मि से युद्ध

राजा निकल्या जल तैं दूरि । आभूषण पहरया भर पूर ॥
शस्त्र बांधि कर भया तयार । सूर सुभट सब लिये हंकार ॥६०७॥

ऐसी बात रावण पैं गई । सैन बहुत तिन आपण लई ॥
मिले परसपर मांडी राड । जैसा सू तैसा करैं मार ॥६०८॥

सेना भूमि दोऊं की मरी । रावण आया वाही घरी ॥
अपणे भागते देखे लोग । सहस्त्ररश्मि कैं कछुवन सोग ॥६०९॥

फिर संभालि करि धीरज दिया । मार मार शब्द बहु किया ॥
रावण कैं सन्मुष होय लरैं । दससिर का कछु भय नहि करैं ॥६१०॥

धनुष गह्या सर छोडे घने । निरभय होय सबं ही हने ॥
रावण मनमें अचिरज धरैं । मेरे आगैं जम से डरैं ॥६११॥

यह तौ दीसै है [illegible] । [illegible] ॥
धनुष ताणि करि मारया बांण । रुधिर चाल्या धारा भर मांन ॥६१२॥

तब रावण हस्ती पर आय । सहस्त्ररश्मि नैं मारै धाइ ॥
दोऊं बाथांबाथ जु लरैं । हस्ती तैं धरणी पर गिरैं ॥६१३॥

कबहू ऊपर कबहू तलैं । महाबली ते इणपर लरैं ॥
बहुत लोग रावण के आय । सहस्त्ररश्मि नैं बांध्यो राइ ॥६१४॥

वाकुं भेज्या लंका बांधि । मारग चलत लिया नृप साथि ॥
रजनी भई लिया विश्राम । सुख सैन्या सूते उस ठाम ॥६१५॥

बाजे प्रात समैं बहु बजे । सबद सुनत सब का मन रजैं ॥
रावण उठ सामायिक किया । सिंघासण ऊपर पग दिया ॥६१६॥

राजा आय करैं नमस्कार । मुकटबंध के भूप हजार ॥

सतबाहन मुनि द्वारा उपदेश

सतबाहन मुनिवर तप सूर । अनंतबल है रिद्धि भरपूर ॥६१७॥

आवैं लोग मुनीश्वर जात । सहस्त्ररश्मि की भाषी बात ॥
रावण तुमारा सुत बांधिया । बंदीखानैं ले कर दिया ॥६१८॥

सुणी पुत्र की चिंता धरी । उनौं माया सब की परिहरि ॥
फिर कछु दया भाव चित लाय । मुनिवर उठि रावण पैं जाय ॥६१९॥

रावण साध को दरशन देषि । सफल जनम मानो बहुलेष ॥
उतर सिंघासण करि डंडोत । रावण अस्तुति करी बहुति ॥६२०॥

सकल सभा कीनों नमस्कार । धर्म वृद्धि दीणी तिणबार ॥
सिंघासण बैठाण्यां मुनी । वैयावत कीधा नृप धनी ॥६२१॥

हम आवै थे बनह मझारि । विघनां पूरी इच्छ हमार ॥
तुम प्रभू हम पैं करतारथ किये । तुम दरसन सुख पायो हिए ॥६२२॥

अब सेवक प्रति आग्या देहु । ज्यों मेरो भागै संदेहु ॥
किण कारण यां कियो गमण । स्वामी वचन तजि आयउ मौन ॥६२३॥

कहैं साधु सुम सुणु नरेस । मानों तुम म्हारो उपदेस ॥
सहस्ररश्मि नें छोडो राउ । या कारण आया इस ठांव ॥६२४॥

रावण कहै सुणो प्रभु [illegible] । मोहू पुत्र का है कछु [illegible]
जो तुम आग्या देसे मोहि । मैं छोडतो प्रभू अब तोहि ॥६२५॥

तुम आपणनें कीधे वेद । मायाजाल कीये सब भेद ॥
मुनिवर बोलैं चित्त विचार । सकल जीव मेरैं इकसार ॥६२६॥

दया हेत आया तुम पास । अभयदान दीजे सुखवास ॥
रावण कहै सुणों मुनिराइ । हमसे सकल मिले नृप आइ ॥६२७॥

सहस्ररश्मि अति कीनी मनी । मिलन न आया सामनी ॥
हम पूजत है श्री जगदीश । तउ उन आया नमाया सीस ॥६२८॥

जल उछालि डारयउ तिण ठाव । मोकुं बढ्या क्रोध का भाव ॥
लोग पंठाया उसकै पास । उण तो करया प्राण का नास ॥६२९॥

तब मैं आप वेग आइया । हमसौं घणां जुध तिण किया ॥
मैं इसनें लीया था बांधि । तुम आया थी छोडुं साध ॥६३०॥

बेडी हांस हथकडी काटि । आभूषण दीने मन आट ॥
ले आए तिहां रावण भूपि । राजसभा में दिपैं अनूप ॥६३१॥

नमस्कार करि ऊभा भया । रावण सलहैं पोरष किया ॥
बहुत भांति करि स्तुति करी । इसा चाहिजे रण की धकी ॥६३२॥

या सम सुभट न दूजा कोइ । मो सौं सनमुख लड्यां न कोइ ॥
मेरा भय कछु चित्त न धरया । मेरे सन्मुख आछा लड्या ॥६३३॥

इसने बारिह्व सेनापति । सबतैं याहि चढाऊं रती ।।
रांवरण अस्तुति कीनी घनी । और सराह करै सब गुनी ।।६३४।।

सहस्ररश्मि की बिरदावली । एक एक की कीरत भली ।।
रावज मन तैं भया मन भंग । बहुर न करौं राज सौं संग ।।६३५।।

सबै बिरणासी राज विभूति । हय गय लछमी अस्त्री पूत ।।
जे मैं केल करी जलबीच । तो तो मोकूं ऊपजी थी मींच ।।६३६।।

सहस्ररश्मि द्वारा मुनि दीक्षा

अब हूं दिक्ष्या लेस्युं जाय । करौं तपस्या मन वच काय ।।
रांवरण जंपै सुनहु नरिंद । मै पयराग भया सब भेद ।।६३७।।

धरणेन्द्रद्र मोकूं समझाया फेर । लियो प्रथ्वीपति रथ फेर ।।
तुम बालक जोवन भरि देह । क्यों करि तपस्यों धरि हो नेह ।।६३८।।

जैन धरम दुष्कर है घना । भूमि सेज करिस्यौं पोढरणां ।।
बाईस परिस्या कैसे सहै । क्षुधा त्रिषा दुख तन को दहै ।।६३९।।

अब तुम राज करो आपरणां । छहू रितु दुख पावोगे घरणा ।।
श्री जिनवाणी निश्चय ध्यांन । दान च्यारि दो सक्ति समान ।।६४०।।

सब नरिंद में तू सरदार । निरभय पालो राज द्वार ।।
श्रीप्रभा मंदोदरि की बहन । करौ व्याह जे हुवै दुख दहन ।।६४१।।

रांवण बहुत प्रकार समझाय । वाका मन न चलै किरण ठाइ ।।
सतबाहन पैं दिक्षा लई । जनम जरा की संका गई ।।६४२।।

नगर अजोध्या पूरब देस । सहस्रकिरण तहां अरणै नरेस ।।
सुणी सहस्ररश्मि की बात । पुत्रं राज महप तीई भांत ।।६४३।।

आपरण लई दिक्षा उरण जाइ । अरणं भूप आया इस ठांय ।।
अभिनंदन सुत नैं दे राज । आपण कियो दिगंबर साज ।।६४४।।

रावण सुं उत्तम क्षम करी । भावत केवल विध्या की घरी ।।
आतम ध्यान लगाया जोग । पावैगे पंचम गति भोग ।।६४५।।

इति श्री पद्मपुराणे सहस्ररश्मि मरणं विध्यानकं ।।६।।

दशम विधानक

चौपई

सरोवर निकट किया दोहुरा । आदिनाथ रचना सों धरा ॥
बीस बिंब जिण प्रतिमा किये । भई प्रतिष्ठा जर्णुर्द नये ॥६४६॥

देस देस तैं आये लोग । चलि आये वंदण जिण जोग ॥
नरपति आय बहुत तिण मिले । आदर भाव किये तिण भले ॥६४७॥

सगला नैं दीन्ही ज्योणार । बहु विध कीये व्यंजन सार ॥
अष्ट द्रव्य सुं पूजा करी । पंडित पढी जिनवांणी खरी ॥६४८॥

दीन दुखी जन दीनां दांन । सब ही का राख्या सनमांन ॥
धरम जुगति कीनी तिहां घनी । धरम तीर्थ की सोभा बणी ॥६४६॥

पश मेध की चर्चा

श्रेणिक राजा अस्तुति करी । पश मेध भाषो इस घरी ॥
श्री जिणवाणी अगम अथाघ । पूजित है भाणी की साध ॥६५०॥

गौतम स्वामी कहै अरथाइ । बारह सभा सुणं मन लाय ॥
नगर अजोध्या राजा सुप्रतिष्ठ । श्रीकंता रांणी समदिष्ट ॥६५१॥

वसु राजा

वसुव पुत्र जनमिया कुमार । क्षीरकदम की सोभा सार ॥
स्वस्तिमती वाकी अस्तरी । परपित पुत्र भया सुभ घरी ॥६५२॥

तीजा शिष्य नारद तिहां पढ़ै । तीन्यां की बुधि दिन दिन बढ़ै ॥
चारण मुनिवर निकसे आय । कहैं बात अपणैं सदभाय ॥६५३॥

मुनिवर जंपैं इन महला एक । जाय जीव नरक में विवेक ॥
षीर कदम सुणि कीया सोच । छूटी भई शिक्षा आलोच ॥६५४॥

वे अपणें मन मांही रली । षीरकदम जिय आई भली ॥
चल्या उनु कैं पीछे लागि । पहुंच्या थाणक पूरण भागि ॥६५५॥

नमस्कार करि विनती करी । प्रभु मोहि दिक्षा दीजे शुभ घरी ॥
तुम संगति पंचमगति लहुं । चरणकमल दिग तपस्या गहुं ॥६५६॥

क्षीरकदम बैठ्या धरि मौन । परवत पुत्र घरकुं किया गौन ॥
स्वस्ति मती तब कहै रिस्याइ । पिता साथ छोड्यो किण भाई ॥६५७॥

ग्रौर बार पोथी ले कांख । तोकुं पिता आपणि ढिग राखि ॥
तब बोले परवत समझाय । मोहि अगाउ दिया पठाय ॥६५८॥

इहां दुचितै जोवैं बाट । ह्वां उन ल्योल्याई मन आट ॥
रयण भई आया नहिं गेह । चिंता व्यापी उनकी देह ॥६५९॥

प्रात भयो उठि चाल्यो पूत । पिता तणी चटसाल पहूत ॥
वहां नहिं देख्या आगे गया । बनमैं पाया मौन गहि रह्या ॥६६०॥

कहै पिताजी चलिये गेह । भयो दुचितै कुटंब दुख नेह ॥
इनतो माया मोह सब तज्या । सुत ह्वासैं आया घर भज्या ॥६६१॥

सब ब्रतांत जननी प्रति कह्या । सुणी बात मात दुख सह्या ॥
खाय पछाड करैं बिललाट । परवत पासि धुणै ललाट ॥६६२॥

तुम जोगीश्वर व्रत धरी । हमरी चित कछु नहीं करी ॥
वाका ध्यान निरंजन लग्या । बोलैं किसही कौण का सगा ॥६६३॥

नारद का आगमन

फिर आये घर बहुत उदास । नारद आया गुरुनी पास ॥
गुरणी नैं समझावैं बात । नदी नाव ज्यौं कुटंब संघात ॥६६४॥

उतरे पार बिछुर सब गये । अइसे संग परातम भए ॥
सुपने कैसा इह संयोग । छोडि दिया संसारी भोग ॥६६५॥

तातैं करो मति कछु भी सोग । भयानंद मुनिश्वर साधै जोग ॥
सुप्रतिष्ठत भूप अजोध्या धनी । क्षीर कदंब की जबड न सुणी ॥६६६॥

वसु पुत्र नें सौंप्या राज । आपण किया सुगति का साज ॥
पालै परजा वसुध नरेस । निरभय राज करैं भुवनेस ॥६६७॥

नारद सम्यग्दृष्टी मुनी । परबत थाए मिथ्या घनी ॥
दोऊ चरण शास्त्रन पढ़ैं । परवत मन मैं गोष्टी गढ़ैं ॥६६८॥

चरचा करैं यज्ञ अर दांन । पंच महाव्रत हूँ विधि जान ॥
पंच अणुव्रत श्रावक करैं । महाव्रत जोगीस्वर धरैं ॥६६९॥

पंच समिति अरु तीन गुपति । अठाईस मूल गुण संयुक्त ॥
क्रिया चौरासी पालैं सदा । छह रितु सहैं बाईस आपदा ॥६७०॥

सुछम बादर जेते जंतु । दया भाव सुं राखैं संत ॥
बारह अनुप्रेक्षा सु बिचार । भवसायर तैं उतरैं पार ॥६७१॥

त्रेपन क्रिया जु श्रावक करैं । च्यारि प्रकार दान बिस्तरैं ॥
पूजा करैं सामायिक दांन । छह दरशन का राखैं मान ॥६७२॥

चैत्याले करैं प्रतिष्ठा भली । संघ चलावैं मन की रली ।।
तब परवत द्विज अैसैं लही । च्यारदान हैं,नाहीं सही ।।६७३।।

नारद एवं पर्वत के मध्य चर्चा

तब पूछे नारद फिर बात । कौण दाण दीजे किण भांति ।।
बोले विप्र दाण ए सही । कन्या गऊ अर दीजे मही ।।६७४।।

सत्री दांन मंदिर सतखनां । सोना रूपा जवाहर घणां ।।
अज गज महिष अश्व को होमि । प्राणुष भली संवारै भौमि ।।६७५।।

गडहा औंडा खोदैं घरे । मच्छ कच्छ तामैं ले धरें ।।
पंडित विप्र वेद धुनि पढैं । सकल जीव अग्नि मैं डढे ।।६७६।।

मांस प्रसाद बांटि सब खांइ । जज्ञ किया बैकुंठा जाई ।।
नारद मुनि समझावै ताहि । ए उपदेस नरक दिसि आइ ।।६७७।।

जीव हतैंर भषैंगो मांस । उनकी कदे न पूरवै आंस ।।
नीच गति वेहै भ्रम है घनी । ते दुख बरण सकै को गुनी ।।६७८।।

बोले विप्र होम क्यूं होइ । हत्या करत डरै जो कोइ ।।
नारद कहै होमिए अचित । लगैं दोष जालिये सचित्त ।।६७९।।

अज कहिए छह बरस का धांन । हम गुरु मुखस्यौं यों वखांन ।।
ते हम होमैं अग्नि मझार । जिस का दोष न लगं लगार ।।६८०।।

परवत कहै अज कहिए बोंक । नारद मण में आंणी सोक ।।
दोन्यूं कहैं वसु नृप की साष । चरचा करैं सभा में भाषि ।।६८१।।

जिसकी भूपति मानैं सांच । जिसका वचन सब मानैं पांच ।।
जे हारैं रसना द्वै षंड । अैसा मंडया वाद प्रचंड ।।६८२।।

दोन्युं पहुंचे राजदुवार । नरपति था तब महल मझारि ।।
फिर आये वे आपणी गेह । प्रात भए पूछैंगे एह ।।६८३।।

परवत कही माता सौं बात । नारद करसी वाद प्रभात ।।
मैं अज कह्या छाले का नांव । वह छह बरसी धान कहाव ।।६८४।।

जो हारैं राजा की सभा । तिसकी जीभ होयगी अभा ।।
माता सुणि करि मुंडी धुंन । करी नपूती सुत सौं भनैं ।।६८५।।

तू तो झूठे बोल्या बैन । पड्या कूप में देषत नैन ।।
जो क्यौं जीवैं कूप मझारि । राजा तोहि डारिहै मारि ।।६८६।।

तैं जे उपाई पाप की बुधि । मो तन भूलि गई सब सुधि ॥
मोहि कह्या था राजा बोल । जो कछु कहुं वस्तु अमोल ॥६८७॥

मनवांछित मांगों से लेहुं । मिथानी जी आज्ञा देहु ॥
तब मैं वचन लिया निरधार । जब चाहूं दीजो तिह बार ॥६८८॥

स्वस्तिमति द्वारा वसु राजा से वचन मांगना

अब मांगु राजा पैं जाय । झूंठ वचन तैं लेहुं छुडाय ॥
स्वस्तिमती राजा पैं गई । आदर मांन राव बहु दई ॥६८९॥

बार बार पूछैं कर जोरि । कैसे कृपा करी इस ठौर ॥
मिथाणी बोलैं समझाय । मेरी दक्षिणा दीजे राय ॥६९०॥

वेग अंजुली पाणी लेहु । अपणा वचन कह्या सो देहु ॥
राजा तब अंजुली जल भरया । मांगो जो चित भावैं परा ॥६९१॥

परवत तणी कथा सब कही । तुम बिन सरणांगति को नहीं ॥
उसनैं सांचो करो नरिंद । पुत्र भीख मुझ द्यो भवनींद ॥६९२॥

राजा सुणि करि मीडैं हाथ । बारबार धूंणैं निज माथ ॥
इस मिथाणी मुझनैं छल्या । इण यह वयण न भाख्या भला ॥६९३॥

झूंठ न्याय जो राजा करैं । निश्चै अधोगति नरकैं पड़ै ॥
वचन दीया फेरुं किस भांति । अैसे सोचत बीती रात ॥६९४॥

आया नारद उठि परभात । परवत चल्यो कहु तुम बात ॥
राजसभा में दोन्युं गया । ग्यांन चरचा में वाद तब भया ॥६९५॥

राजा कहै वचन बसि काज । परवत कहै सुमानों राज ॥
धरती फाटि सिंहासण धस्या । तब नारद राजा प्रति हंस्या ॥६९६॥

भूपति अजहू न्याव विचार । झूठ कहे सिर बांधि है भार ॥
नृप बोलैं परवत रूप देषि । सिंहासण धरती में प्रेषि ॥६९७॥

नारद का वचन

नारद बोले सुनि हो राव । असत्य वचन का देखो भाव ॥
वे ही वयण बोलैं भूपाल । आसण सहित गया पाताल ॥६९८॥

वसु भूपाल नरक में जाय । सहै दुःख तहा बिललाय ॥
झूठ अवं अरु करैं अन्याव । ते प्राणी बहुते दुख पाव ॥६९९॥

सगली सभा अचंभै भई । बहु फटकार विप्र नैं दई ॥
पापी दुष्ट पाप का मूल । राजा तणां भया ए सूल ॥७००॥

राजा मुंह देखी जो करै । नरक निगोद सदा दुख भरै ॥

परवत द्वारा सन्यास

परवत ने अति चढ्या कलंक । छोड्या नगर लोक की संक ॥७०१॥

संन्यासी पै दिक्षा लई जाय । पंच अग्नि साधै मन लाय ॥
देही छोडि हुवो वह देव । अवधि विचार पाप कै भेद ॥७०२॥

षोडस बरस की देही करी । कंध जनेऊ धोती धरी ॥
गोपीचन्दन द्वादस तिलक । राते नयण सो भयो पलक ॥७०३॥

पोथी कांख जटा लम्काय । ऐसा धरा देव नें भाव ॥
मेरा मुखतैं निकली बात । मैं अब करउं जगत विख्यात ॥७०४॥

विप्र संन्यासी वेद पढाई । इह विध प्रकट करै सब ठाई ॥
पाप भेद भरौं जे विप्र । पाप बुधि में भए विचित्र ॥७०५॥

मारुत राजा को संबोधन

संन्नत रिषिस्वर राजगिरि जाइ । राजा मरुत समोध्या आई ॥
कहीक जज्ञ करो तुम एक । वडा रचाउ युगल अनेक ॥७०६॥

सकल जाति के आणौं जीव । राखो बांधि उणां की ग्रीव ॥
औंडा खाडा खणावो बडा । तिहां उनने होमै भरि घडा ॥७०७॥

वहै जीव पावैगे सुर लोक । होगी जस तुम लही हो मोक्ष ॥
होम जज्ञ विधि राजा ववी । देस देस ने दीन्ही चिठी ॥७०८॥

सब कुटंब बांभण सब चले । देस देस के भूपति मिले ॥
जज्ञ की ठांम पहुंते आय । च्यारौं बेद पढै तिहि ठांय ॥७०९॥

नारद कथा

श्रेणिक पूछै नारद की कथा । दसका था कुंण माता पिता ॥
ब्रह्मरुचि ब्राह्मण परमातिरी । संन्यासी की दिक्षा धरी ॥७१०॥

दंपति पंच अगनि करि जोग । तबहूं मांनै मनका भोग ॥
कंद मूल का करैं अहार । रहै गरभ थिति परमा नारि ॥७११॥

मुनिवर तप आई निकलै । देखे दंपति जप तप तिहां करैं ॥
मुनिवर सात धरम की कही । उन दोन्यां मिल जिय में धरी ॥७१२॥

जैसे नर कोंजे नहि द्वार । बहुरि करै नहीं अंगीकार ।।
जे जोगीस्वर माया गहै । परिग्रह बहुत लीयां जे रहै ।।७१३।।

जिसका जनम अकारथ जाइ । अंतकाल पीछे पछिताय ।।
तिणां मात्र न परिग्रह लेइ । ताकौं सब कोई उपमा देइ ।।७१४।।

जे तुम जोग करो धन तजो । माया छोडि जिनेस्वर भजो ।।
ब्रह्म रुचि का संसय मिट गया । स्त्री त्याग दिगंबर भया ।।७१५।।

परमा कहै मोहि दिक्षा देहु । जैन धरम पाऊं धरि नेहु ।।
बोले मुनिवर ग्यांन विचार । गर्भवती नांहि ले दीक्षा सार ।।७१६।।

तब वह स्त्री बन में ही रही । दसमास पूरण निरमई ।।

नारद का जन्म

भया पुत्र नारद रिष गुणी । माता मनमें सोचै घनी ।।७१७।।

मैं दिक्षा लेकर तप करौं । अवर न कछु चित्त में धरौं ।।
या का निमित्त होय सो सही । मेरे माया मोह कछु नहीं ।।७१८।।

पानां मांहि लपेट्या पुत्र । तरु तलि म्हेल्या लक्षण संयुक्त ।।
इन्द्र मालिनी अर्जिका पै जाय । लीन्ही दीक्षा मन बच काय ।।७१९।।

वहां बालक नित बधै पुनीत । पुन्यां कूं कछु होय न चित्त ।।
पुन्यै रिक्षा करै सब कोइ । सगलें पुण्य सहाई होय ।।७२०।।

जंबक देव जात हो चल्या । थभ्या विमांण न ह्यां तैं हल्या ।।
अवधि विचारै सुर मन माहि । नारद मुनि है या बन ठांहि ।।७२१।।

देव आय करि लिया उठाय । विजयार्द्ध पहुंचाया जाय ।।
गुफा बीच ले राख्या बाल । देव करै ताकी प्रतिपाल ।।७२२।।

नारद का जीवन

विद्या पढि पारंगत भया । बृहस्पति का सा लक्षण लिया ।।
आकास गांमनी विद्या पाइ । भीड देख करि राजगिर जाइ ।।७२३।।

मनमें सोच करबि आपणौं । बनमें लोग मिलैं क्यों घणो ।।
कौण परवया नगर मझार । भीड़ जुडी क्यों इतनी बार ।।७२४।।

नारद मुनि देखैं धरि ध्यान । ब्राह्मण बहु बैठे तिहि थान ।।
बहु तपसु जिहां राखे घेर । होम क्रिया चाहैं तिहि बेर ।।७२५।।

तिहां नारद मुनि पहुंता आन । जटाजुट धोती तरहांन ।।
कांध जनेऊ पोथा लिये । हाथ कमंडल फीची किये ।।७२६।।

देव शब्द नाना संस्कृत । नारद जांन द्विज आदर कृत ।।
नमस्कार करैं सब लोग । वंदनीक सब पूजण जोग ।।७२७।।

संवृत नैं पूछ्या वृत्तान्त । जीव जंत क्यों घेरे भ्रान्त ।।
भणैं विप्र इण को हूं घात । अग्नि बीच होमैंगे प्रात ।।७२८।।

नारद का उपदेश

नारद मुनि विप्र सौं कहै । मारया जीव नरक दुख लहै ।।
दया भाव सर्वज्ञ के बैन । दूषन दीजे देषत नैन ।।७२९।।

सकल आतमा आप समान । सब की दया कही भगवान ।।
संवृत द्विज नारद प्रति भनैं । रूप रेष अरु सबद न जिनैं ।७३०।।

उन सरवज्ञ किम थापी दया । तू मूरिख कछू भेद न लिया ।।
नारद बोलैं सुनि विपर अज्ञ । रूप न रेख जैन सरवज्ञ ।।७३१।।

पाए भेद ए तो किए कह्या । जिसके कहैं वेद तुम लह्या ।।
महा अनर्थ लिखा जिहं बीच । ऐसा करम करैं नहि नीच ।।७३२।।

ब्राह्मण कहै ब्रह्मा का ग्यान । जिन सब रची सृष्टि परवांन ।।
ए सब पशु होम के काज । ब्रह्म वचन महकिया साज ।।७३३।।

नारद मुनि फिर उत्तर देय । जे ब्रह्मा सब सृष्टि करेय ।।
ते सब हुए पुत्र समान । वानैं दहन क्यों किया बषान ७३४।।

पसु तृणचारी है वनबास । इनके जिनका न करिये नास ।।
त्रिषा भूष धूप ए सहैं । ऐसे दु:ख छहों रितु लहैं ।।७३५।।

तिनको कहा कीजिए घात । हिंसक है चिंडाली जात ।।
जीव बध तैं मुक्ति न होय । आपण पाप करैं जे कोय ।।७३६।।

चारों गति में सह संताप । जब वै आणि उदै हूं पाप ।।
मन वांछित नहीं पूजैं आस । मंदर दारिद्र तजैं नहि पास ।।७३७।।

जैं गयंदनी माणस जणैं । तुरी गर्भ हसती गति बणैं ।।
गदही उदर तुरंग प्रसूत । तो हत्या तैं मुक्ति संयुक्त ।।७३८।।

राजा वसु ने लेहु हंकार । नरक छोडि आवै इस बार ॥
ह्यां तैं उठि मुकति नैं चलैं । तो जग दाह जाणौं मैं भलै ॥७३६॥

नारद पर उपसर्ग

जग्य करया राज मनवसीकरण । विषय पंच इन्द्री का हरण ॥
संतोष विप्र नैं दक्षिणा दई । केश लोचनां क्रोध करेई ॥७४०॥

ध्यान अगनि मैं जालैं कर्म । इस विध होम किये ह्वै धर्म ॥
विप्र संन्यासी उठ्यो रिसाइ । नारद परि सब आए धाय ॥७४१॥

कोई मूंकी कोई लात । नारद मुनि मारयो बहु भांति ॥
नारद के मन उठयो अहंकार । गही सिला सब उपरि मार ॥७४२॥

वे अनेक इहां एक सरीर । इण विध परी नारद पर भीर ॥
पकडि लिया दोन्‍ह कर बांधि । सब उदास नाहीं [illegible] ॥७४३॥

पापी मिलि दुख दिया बहुत । रावण का तिहां आया दूत ॥
देखा बाडा पसू अति जीव । नारद ऋषि की बांधी ग्रीव ॥७४४॥

सो देखि उपसर्ग सौ पाछा फिरया । देख पाप मन कोप्या खरा ॥
हिंसा धर्णी कही नहीं जात । रावण सौं कही रिष की बात ॥७४५॥

रावण द्वारा नारद की सहायता करना

रावण सेना तहां पठाइ । कही मरुत नैं बांधो जाइ ॥
बाजे मारू दौडे सूर । दसौं दिसा सु रही भर पूर ॥७४६॥

बाडा तोडि पसू सब छोडि । नारद ऋष के बंधन तोडि ॥
राजा मरुत बांधि गहि लिया । विप्र संन्यासी धका दिया ॥७४७॥

आग्या असी रावण दई । ए सब मारो पापी सही ॥
ए पापीष्ट पाप का मूल । दया भाव इण कै नहीं सूल ॥७४८॥

इनहि मारि धोउ अवघोज । फेरन होय पाप का चोज ॥
जीव विणास बतावैं धरम । असा करैं नीच का करम ॥७४९॥

इनके मारे का नहीं पाप । ए जीवा नैं मारैं आप ॥
मारि इननैं परलय करूं । इनहि संग तुम सहवट करउं ॥७५०॥

नारद मुनि चित आयी दया । रावण नैं उपदेस इम दिया ॥
ए बांभण उत्तम कुल भले । रसना लंपट कुमारग चले ॥७५१॥

आदि पुराण में इनका भेद । सुर्णी भूप हूं कहौं न भेद ।।
नाभिराय कै रिषभकुमार । सियासी लख पूरब राज संभार ।।७५२।।

ऋषभ वर्णन

रही आंव पूरब लख एक । इन्द्रौं के मन भया विवेक ।।
ए हैं प्रथम तीर्थंकर देव । इनतैं चलई धरम का भेव ।।७५३।।

ए माया में रहे भुलाय । मन वैराग्य उपजै किह भाय ।।
एक अपछरा थी परवीन । जाकी आव घडी दोय तीन ।।७५४।।

राज सभा में नाची भली । देख नृत्य उपजी मन रली ।।
निरत करत तहां पूरी आव । खाइ पछाड परी मुषि डाव ।।७५५।।

बोले भूप उठावो याहि । याकी वेग गहौं तुम बांह ।।
मंत्री कहै यह पातर मुई । तब वैराग चिमक चित भई ।।७५६।।

छोड्या सब पृथ्वी का राज । आपण चले धरम के काज ।।
भरथै दिया अजोध्या राज । बाहूबलि पोयणपुर साज ।।७५७।।

च्यार सहस राजा भए संग । दया भाव चित लहर तरंग ।।
वनमैं मौनि गही जिनराज । राजा सबर उठे अकुलाइ ।।७५८।।

भूख छहमासी सहियन जाय । जो अपणे घरि चलिबे चाह ।।
तो फिर हमें भरत दुख देइ । ऐसी मनमें चिंत धरेय ।।७५६।।

वन फल खाई पीवैं नीर । जोगी संन्यासी तप सहे सरीर ।।
एक हजार बरष गए बीत । श्री जिण उपज्या केवल चित्त ।।७६०।।

केवल वाणी संसय हरै । ताहि सुंणत भव सायर तिरै ।।
चक्रवर्त्ति भरत बाहुबलि बंड । जिन भुजबल साधे खट खंड ।।७६१।।

लक्ष्मी जुडी भरया भंडार । जिसका गिणत न आवै पार ।।
गिर कैलास शिखर देहुरा किया । रतनबिंब संवराया नवा ।।७६२।।

तो भी लक्ष्मी घाटै नहीं । दाण देण इच्छा उ मही ।।
कोई न लेन दांन नैं आइ । तब बामण कूं थापै राय ।।७६३।।

आदिनाथ स्वामी पैं गया । ब्राह्मण का ब्योरा सब कह्या ।।
रिषभ देव की वाणी भाई । इह उपाधि तुम थापी नई ।।७६४।।

जैन धरम के निंदक होइ । पाप उपदेस कहेंगे लोइ ।।
भरत भनैं इन करिहूं दूरि । सब को मारि गिराऊं मूल ।।७६५।।

श्री भगवंत चित दया दिढाय । सकल ब्राह्मण दिये छुडाय ।।
चौथा करण उरण सेती हुवा । चौडा वेद धव थाप्या जुवा ।।७६६।।

सुभूमि चक्रवर्ति किये संघार । तपसी महन्त भये तिह बार ।
तब तें फेर भये उत्पन्न । छोडो इन ज्यौं पावो धन्न ।।७६७।।

बांमरण छोडि दिया ततकाल । विनयवंत बोले मरुत भूपाल ।।

रावण का कनक प्रभा से विवाह

कनक प्रभा पुत्री गुणमई । रावण प्रति विवाह कर दई ।।७६८।।

एक बरस इस बीत्या ठांम । राजा मरुत ने सुख के भाव ।।
कनक प्रभा के भई प्रसूत । चित्रा पृथ्वी लक्षण संयुक्त ।।७६९।।

हेमांचल गिर रावण गया । भूपति सकल भग्य करि नया ।।
हेमाचल परवत रमणीक । ता ढिग भूमि खरी सोभनीक ।।७७०।।

महल करण की इछा करी । सब मिल समझायें मंतरी ।।
ह्यां के रहें परदेसी नाम । नाम लंका है पुरखां की ठांम ।।७७१।।

उनही लोक जांणे सब कोइ । ह्यां के बसें न कारज होइ ।।
तब फिर कों मारग कों चल्यार । देखें रूप सराहें भला ।।७७२।।

राजगिर नगर में निकल्या आय । देखें रूप रावण बहु भाइ ।।
कोई अटारी देखें नारि । झांखि झरोखा ऊंची द्वार ।।७७३।।

कंई गली कंई बाजार । सबैं किये सोलह सिणगार ।।
पुरुष रूप देखैं सब लोग । बहुरि सराहैं पुण्य संजोग ।।७७४।।

जिणपद नगर जैसे नरेस । रावण नें जीते सब देस ।।
मिल्या अगाउ अस्तुति करी । पुत्री ब्याह दई सुंदरी ।।७७५।।

रावण मनमें बहुत उल्हास । देखें नगर सकल चिहुं पास ।।
प्रजा सुखी इम देह असीस । रावण जीवो कोडि बरीस ।।७७६।।

बहुत दिवस बीते इस गांव । बहुरी चले आपणें ठाम ।।
सकल लोग मन भया उदास । जे अबके रहते चोमास ।।७७७।।

उदर पूरणा कर वे लोग । यां के आयां गयो वियोग ।।
असाढ बदी दोयज की घडी । चरणे की मन इछा करी ।।७७८।।

वरषा आठ दिवस की झडी । चतुरमास की छाविरण करी ॥
सबही की पुंगी मन आस । रावण भुंजै भोग विलास ॥७७६॥

रहै सतखनै महल मझार । जोन्हि रहिय गहि हँ राख ॥
राग रंग गावैं मल्हार । अंबरषै अति घन हन धार ॥७८०॥

मोर झंगार पपीहा रटा । चउंघा मंडी काली घटा ॥
बिजुली चिमकैं गरजैं घनां । ऐसा सुख रावण नैं बन्या ॥७८१॥

भाद्रपद के व्रत

कोई बैठाउं भीजत जाइ । कीचड मांहि बहुत दुख पाय ॥
भादो मास धरम का थान । पूजा करी सामग्री आण ॥७८२॥

सोलहै कारण का व्रत करै । दया अंग निस वासर धरै ॥
पूजा रचना मैं बीतै घडी । चरचा करै जैनमत खरी ॥७८३॥

दस लाक्षण का पालै अंग । बहुत वरत धारी ता संग ॥
चंदवा तणां बहुत देहुरै । रंग सुरंग विछ्रवणां करै ॥७८४॥

रतनत्रय व्रत पालै लोग । मन वच काया साधै जोग ॥
पूरणवासी पूंनिम चंद । रहस रली मनमे आनंद ॥७८५॥

सब ही में दीनी ज्योणार । बहुत बीनती कर मनुहार ॥
पुण्य प्रसाद अधिक सुख भया । देस देस सुख भुगत्या नया ॥७८६॥

इति श्री पद्मपुराणे राजा व्रत अत्र विधानकं ॥

चौपई

दशम विधानक

रावण की कन्या का मधु के साथ विवाह

रावण मनमें समझै ग्यान । कन्यां देखकर भई प्रमांन ॥
उत्तम कुल कोई देख कुंमार । करो काज सुख घरी विचार ॥७८७॥

बहुरै कर्क इन्द्र नर मौड । कैसी बात वणाइक भौरि ॥
कन्या व्याह करि नीवरूं । मन मन का संसा परिहरूं ॥७८८॥

मंत्री देस देस कौं चले । पुरपट्टण सब देखैं भले ॥
आये मथुरा नगर मझार । हरिवाहन नृप माधवी नारि ॥७८९॥

मधुव पुत्र महा बलवंत । रूप लक्षन छवि शोभावंत ॥
सम्यग्दृष्टी महा विचित्र । नांम सुणत सब कांपै सत्रु ॥७९०॥

मंत्री देख भया उल्हास । विप्रमें पुरजी मनकी आस ॥
हरिवाहण सु कही समुझाय । मधु कुंवर ने देहु पठाइ ॥७९१॥

रावण पासि चला तिह बार । मंत्री चतुर अधिक असवार ॥
बरछी हाथ गही हथियार । वाके गुण का अंत न पार ॥७९२॥

रावण पास जब गया कुंवार । नमस्कार करि करयौ जुहार ॥
अधिक रूप देख्यौ भरि नैन । सुभ मंत्री विनवै सुभ बैन ॥७९३॥

मध हरिवंसी है [illegible] । विद्या [illegible] बहुत [illegible] ॥
बरछी दई देवता सिख । दुरजन देख भजै भयभीत ॥७९४॥

या सनमुख कोई रहै न सूर । विद्याधर देखिर भाजैं दूर ॥
ऐसे गुणधर बीर के बडे । जिहां लग चाहैं तिहां लग चढे ॥७९५॥

सेव तुम्हारि चित्त में धरी । आया सेव करण इस घरी ॥
रावण देख किया बहु भाव । टीका किया अधिक मन चाव ॥७९६॥

भली घडी सुभ दिन साधिया । मंगलाचार कुंवर का किया ॥
सोना दीनां अगण अपार । भांति भांति की करी ज्यौंणार ॥७९७॥

मधु चिता समवे सुभसार । मगन रहै नित भोग मझारि ॥
सुख में बसैं मधुपुरी देश । हरिवंसी सुत करैं असेस ॥७९८॥

मधु का वृतान्त

फिर श्रेणिक पूछें करि जोडि । मधु की कही मुझ बात बहोडि ॥
देव मधु किम हुवा नेह । ज्यौं मेरा भाजे संदेह ॥७९९॥

तब श्री जिण की वाणी भई । सब के मन की दुविधा गई ॥
धातकी द्वीप ऐरावत क्षेत्र । धारा नगर तिहां राय सुमित ॥८००॥

मित्र [illegible] नाम ब्राह्मण पुत्र । दोन्यु विद्या पढं विचित्र ॥
ब्राह्मण पुत्र अधिक आधीन । पड्या गिरघा कणका लें बीण ॥८०१॥

नित प्रति भिक्षा मांगिर खाई । ऐसी ही विध काल बिहाय ॥
राय सुमित्र विद्या था बौल । राज बैठि तुझ करूं अमोल ॥८०२॥

बैठ्या राज तबै सुध भई । बहुत विभव ब्राह्मण नें दई ॥
आप बराबरी बांभण किया । राजा बन क्रीडा नें गया ॥८०३॥

घोडा छुट्या भील की पुरी । बन देख्या सब सुध बीसरी ॥
तिहां राजा भीलें ने गह्या । ब्याही वनमाला सुख लह्या ॥८०४॥

मास एक बीत्या तिरा देस । फिर आया निज नगर नरेस ।।
ब्राह्मण सुणि राज्या प्रति मिल्या । देखी वनमाला चित चल्या ।।८०५।।
जो ऐसी मैं भोगऊं त्रिया । तो सुख मांनौ यह चित दया ।।
या कै अधिक वियाप्या मैंन । निस बासर देही नहीं चैन ।।८०६।।
कामस ब्रह्मा हर तप टरया । तप सब खोइ चतुर मुख करया ।।
संकर नांच्या गदा कर ल्याइ । तप खोयो रसनारि लुभाय ।।८०७।।
कामरणबंद है अति बलवंत । धन्य त्रिको जिन राख्यो दंड ।।
ब्राह्मण छीजै दिन दिन देह । राजा कै मन भया संदेह ।।८०८।।
इह क्यों दुरबल हुवै घणां । या कै भेद न आवै भणां ।।
विप्र प्रतैं नृप पूछै बात । तुम अपणां भाखो विरतांत ।।८०९।।
किस कारण तुझ षीण सरीर । तो कुं है काहे की पीर ।।
सांची बात कहो समझाय । तो मेरो संसय मिट जाय ।।८१०।।
ब्राह्मण कछु न बोलै बैंण । वाकै दाह लगाई मैंण ।।
लाज सबद बोलै किस भांति । कांम मगन कैसे हिसिरात ।।८११।।
छोडी लाज सुणाया भेद । इह वणमाला कारण खेद ।।
राजा कहै सुणों द्विज मित्त । तुम कछु भरमें भाणउं चित्त ।।८१२।।
जो वह इच्छै तो तुम लेहु । मैं तोकुं दीनी निसंदेह ।।
उठ्या विप्र देवी घर गया । राणी कुं उपदेस इह भया ।।८१३।।
तुम जाओ दैयी की जाउं । मढ बाहर सखीय बैसाउ ।।
रांणी मढ के भीतर गई । देखि सेज बिछाई नई ।।८१४।।
ब्राह्मण वचन पयंपै ताहि । राणी देखि रही मुरझाइ ।।
ब्राह्मण सुं बोलै वनमाल । परनारी जैसा है काल ।।८१५।।
विषै न खाय मरै अग्यांन । नरक जाहि वे जीव निदांन ।।
जे नारी परपुरुष को रमैं । ओ नारी नीची गति भमैं ।।८१६।।
सूकरी कुकरी गदही होइ । खोटी गति में भरमैं सोइ ।।
इक तिल सुख बहु बहु दुख लहै । छेदन भेदन के दुख सहै ।।८१७।।
ताथै कृतनी त्यागैं अंग । ए फल लहैं सील करि भंग ।।
द्विज के मन को मिटयौ कुफैल । दया भाव प्रगटयो सुख मैल ।।८१८।।

आप करै निंदा आपणी । खोटी बुधि करी मैं घणी ।।
ऐसा मैं चित्त आण्यां पाप । सो क्यों मिटै कियां विललाप ।।८१९।।

खड्ग काढि निज नांखै गरदना । नभस्थलौं नृप देखें धरा ।।
तब नृप द्विज का पकड्या हाथ । बहुत पाप उपजैं अपघात ।।८२०।।

पाप करैं अगनि जल मरैं । विष फांसी कुंवे गिर पडैं ।।
वाकुं नरक घणां भव होय । ताहि सहाय करै नहीं कोइ ।।८२१।।

ब्राह्मण गमों देस सब त्याग । सरि करि भ्रम्यो धरया बहु सांचि ।।
एक दिवस घनहर घनघोर । चली पवन उडि गए बहोरि ।।८२२।।

राजा देखि भयो बैराग । राजविभूति दिया सब त्याग ।।
सुतने निज पद दियौ नरेस । आपण लियो दिगंबर भेस ।।८२३।।

देही छोडि गया ईसान । पाया जिन स्वर्ग लोक विमाण ।।
उन द्विज भ्रमत नर देही धरी । संन्यासी की तपस्या करी ।।८२४।।

मरि कर भया निरञ्जक देव । अवधि विचार किया बहु भेव ।।
सुमित्र राय था मेरा मित्र । उन मुझसौं राखी बहु प्रीत ।।८२५।।

अब वह मध्य लोक अवतरा । मधु सुमित्र मिलुं मो धरा ।।
रतन बहुत तिन मधु नैं दिया । तरछी एक बहु गुंणी थिया ।।८२६।।

सब सुख सौं राजैं मधु भूप । कहां लग वरणाउं तास स्वरूप ।।
अठारह वरष गये जब बीत । बहुत देस के भूपति जीत ।।८२७।।

तब कैलास परवत परि गया । श्री जिण बिंब चरण प्रति नया ।।
अष्ट द्रव्य सौं पूजा करी । पढैं मंत्र जिनवाणी खरी ।।८२८।।

दुलिंगपुर नल कुबल दिगपाल । सुणि रावण आया भुपाल ।।
तिमने जीते हैं बहु देश । अब उन इहां कीजे परवेस ।।८२९।।

पत्री इंद्र भूपनें लिखी किंकर जाय दीनता भखी ।।
रावण नलकूबर परि गया । चिट्ठी बांचि करो तुम दया ।।८३०।।

प्रभुजी उसका ऊपर करों । नलकुबर का भय तुम हरो ।।
इन्द्र करै पूजा जिण नाथ । सेना दई दूत के हाथ ।।८३१।।

युद्ध वर्णन

मद गाजा सौं जैसों भरो । काहिर नीकल मत लरो ।।
आप गया पांडव वन थान । पूजा करी लिये पंच नाम ।।८३२।।

वे गढ में पहुंचे सब आय । दीये किवाडैं भीतर जाय ।।
सो जोजन ऊंचा गढ देखि । दस जोजन चौडा सु विसेष ।।८३३।।

कांगुरे कांगुरे धरी कुबांन । हथनां सांका अंत न आंन ।।
पूजा करी रावण नीवरयां । देख्या गढ सायर मन भरयां ।।८३४।।

सूर सुभट बहु दिये पठाय । गढ नैं हाथी दिये ढकाइ ।।
दांत टूट कर मस्तक हनें । इनका कछू दाव नहीं बने । ८३५।।

रावण पर तब आये घने । ऐसे कठन न देखे सुने ।।
गोला गोली लगें न बाण । ता गढ परि क्या चलै सयान ।।८३६।।

यह सुणि रावण चढया बिमांन । ग्यारह सैं छोहणि बलवान ।।
ऊपर तैं गोली की मार । उलटी सैन्यां होई संघार ।।८३७।।

च्यार जोजन गोला विस्तार । जहां पडै तहां परलय कार ।।
बहुते लोग जुडे सावंत । तब बोले मंत्री विनयवंत ।।८३८।।

यह गढ कठिन आवैं नहिं हाथ । अब फिर चलो लंकापति नाथ ।।
बोले भूप महा बलवंत । जो छेडूं तो लोग हसंत ।।८३९।।

अब इहां रहु करि करो उपाव । जो गढ आवे किण ही दाव ।।
कैलास की खोह में मोरचे किए । बहुत उपाव बिचारैं नए ।।८४०।।

ऊपर भा नल कूबर धनी । रावण के चित चिंता घणी ।।
रूपवंत सुनिये है सही । उन जीती है सगली मही ।।८४१।।

एक बार हूं दरसन करउ । दससिर देख सुख मन धरउ ।।
बनमाला दूती नें टेर । रावण पासि जाय कैं बेर ।।८४२।।

ऐसैं कोई सुणैं नहीं कोइ । कहिए अंतहेपुर की ठोर ।।
जो तुम ढील काम की करो । प्राण वेग तुझ पर हीं करो ।।८४३।।

दूती कहै अब मोहूं जाय । जंद फंद सौं आनौं राय ।।
आभरण सजि कैं दूती गई । जोहन मोहन विद्या लई ।।८४४।।

मंदिर मांहि निरभय व्है धसी । रावण देखि मन में अति हंसी ।।
पूछे राय कहो सब भाव । कवण काज आयी इस ठाव ।।८४५।।

नलकूबड की है पटधनी । रूपलक्षण सोहै अति घनी ।।
तुम सौं बहुत कही बीनती । दरसण देहु कृपा करि अती ।।८४६।।

अब तुम उठो चलो उस पास । दोन्यां की पूरै मन आस ॥
रावण कहै दूती सौं बात । पर रमणी संग नरकै जात ॥८४७॥

जैसी झूठी पातल पड़ी । ऐसे नेह जाणौं पर तिरी ॥
जैसे उलगण डारैं कोइ । कुकर दौडि गहै फुनि सोइ ॥८४८॥

ऐसी जाणि पराई नारि । सत्त न छोडूं इस संसार ॥
दूती बोली फेर रिसाइ । तोहि अभाग उदय भयो आय ॥८४९॥

जे तू वाकी मानैं बात । गढ तोकौं आवै परभात ॥
रावण कही मंत्री [illegible] । [illegible] तहां [illegible] ॥८५०॥

मंत्री समझि सीख यह दई । विद्या वा पै है गुणमई ॥
रस में लेहु वे विद्या मांगि । पाछै उसने कीज्यौ त्याग ॥८५१॥

रावण फिर दूती पै गया । राणी प्रति संदेसा दिया ॥
तुम मेरी इच्छा जो धरो । वेग आय तुम दर्शन करौं ॥८५२॥

रावण पासि सौं दूती गई । रस की बात घणी बरणई ॥
राणि के मन भयो आनंद । बिगसैं जेम कुमोदनी चंद ॥८५३॥

विद्या सुमरि करि चली विमांण । रावण की ढिग पहुंची आंन ॥
बैठी सेज्या ऊपरि जाय । कांम लहरि कछु कह्या समाय ॥८५४॥

रावण कहै देवी तुम सुणौं । गढ परि जावा चित मुझ तणौं ॥
राणी जंपै सुणौं नरेस । मैं तुमकौं भेजा संदेश ॥८५५॥

तुम नो आये नहीं उस ठांम । अब किम बिध जैहो उस धांम ॥
रावण कहै विद्या मुझ देहु । तो मैं तेरा कह्या करेउ ॥८५६॥

रावण द्वारा विद्या प्राप्त

तब राणी विद्या दी भली । रावण की पूजी मन रली ॥
असालक विद्या सब तैं बडी । वज्रसाल गढ तिन सौं मढी ॥८५७॥

वे विद्या पाई तिह वेर । तब सैन्यां लीया गढ घेर ॥
तोडे पोलि कपाट सुभंग । धंसे सुभट बाजे जय ढंग ॥८५८॥

रावण की विजय

लूट लिये सब हाट बाजार । नल कुवेर तब सुणी पुकार ॥
नलघा कोप बांधे हथियार । सूर सुभट सब लिये हंकार ॥८५९॥

आया आय डगा पर केहरी । देखत सब की सुधि बीसरी ।।
भभीषण सन्मुख दोड्या आय । दुहुंवा जुध भया अधिकाइ ।।८६०।।

नलकूवड बांधिया तुरंत । भभीषण जीत्या बलवंत ।।
वज्जमाल गढ सम नहीं और । बहुत देस पहुंच्या वह सोर ।।८६१।।

रावण का जस प्रगट्या घणां । उपरंभा मांनैं सुख घणां ।।
मैं विद्या रावण नैं दई । गढ पायार जीत सब भई ।।८६२।।

मेरी बहुत करेगा कांण । गई अंत:पुर ऐसी जांणि ।।
रावण नैं बहु आदर दिया । माता वचन मुख सौं बोलिया ।।८६३।।

तुम गुरणी मुझ विद्या दई । तुम मुझ मात धरम की भई ।।
गुरणी माता साह की स्त्री । आवज आश्रित गांव पुत्री ।।८६४।।

इतनी माता पुत्री समान । जोग अजोग करैं पहिचान ।।

नलकूवड की राजा से बात

नल कूवड को लिया बुलाय । तिणसौं कही बात समझाय ।।८६५।।

जो तुम चाहो आपण देस । तो मुझ आप मांनो थो येस ।।
जो तुम कुछ इंछा सो देउ । अब तुम मांनो माहरी सेव ।।८६६।।

अपरंभा माता की ठोर । तुम इह राज करो सुखहोरि ।।
नलकूबड बोले करि ग्यांन । मैं पाया है इंद्र का थांन ।।८६७।।

निज प्रति बोझ अवर का होय । ताको भला न कहसी कोइ ।।
जनम जनम को चढ़ै कलंक । अपने जी की मानैं संक ।।८६८।।

नल कूवड छोडी वह नारि । विजयार्द्ध पहुंच्या तिहबार ।।
रथनूपुरह इंद्र पैं गया । सब वृत्तान्त नर वैसों कह्या ।।८६९।।

सुणी बात जब कोप्या इंद्र । रावण नैं हूं ल्याउं बंदि ।।
मैं उसनें दीन्ही थी छूट । उन देश में मचाई लुटि ।।८७०।।

देखि जु वाहि लगाऊं हाथ । ऐसी फिर न करैं किण साथ ।।
पूछ्या जाय फिर तासूं मता । ऐसी बात सिखाओ पिता ।।८७१।।

जिह विधि रावण नैं ल्यौं जीत । युद्ध तणी समझावो रीत ।।
सहस्रार बोलैं समझाय । रावण राक्षसबंसी राइ ।।८७२।।

उन कयलास छत्र सिर लिया । वैश्रवण जम को दुख दिया ।।
अस्त्रसाल गढ लिया छिनाय । बहुत भूपती साधे जाय ।।८७३।।

तुम वासौं किम सर भर करौ । रुपणी कन्या दे क्रोध परिहरो ।।
अपणा कीज्यो निरभय राज । निज बल समझ कीजिये काज ।।८७४।।

इन्द्र द्वारा क्रोध करना

तबै इंद्र बोलिया रिसाइ । पुरषा भय बुधि सब जाय ।।
जे छत्री मरने तैं डरैं । तेवौं नरक निगोदौं परैं ।।८७५।।

मैं केहरि वह दंती आइ । भाजैं देखि सींघ की छाइ ।।
मैं अब लग कीनी है गई । वाकौं बुधि मरण की भई ।।८७६।।

सूरवीर सब लिये बुलाइ । देस देस के आए राय ।।
हय गय रथ साजे तिहां घने । सब सामंत देव से बने ।।८७७।।

संजी धनुष लिये बहु बांण । जम धरम डग भले नीसांन ।।
लाख पचास हस्ति चलैं डोर । आगैं बाजैं चारी ओर ।।८७८।।

राक्षस की सेना

उनतैं रावण सेन्या साजि । निकस्यो युद्ध करण के काज ।।
वानर बंसी राक्षस बंस । घणे भूपति उत्तम अंस ।।८७६।।

दैत्यनाथ षडदूषण भूप । वेश देश के सुभट अनूप ।।
सब सामंत मन माहि अडोल । पालैं अपने प्रभु के बोल ।।८८०।।

पचपन लाख डोरि गज चले । अस्व अनेक सौमैं तिहां भले ।।
ग्यारसय छोहणि दल संग । सिलह संजोग बने सब अंग ।।८८१।।

दोउं सनमुख दल भये आय । दोनूं तरफैं घुरे नीसांन ।।
छूटैं तीर तुपकहथनार । जैसे बरषै घनहर धार ।।८८२।।

दुहुधां लरै सूरमां बली । दोन्युं सेन्यां बहु विध दली ।।
राक्षस रूप लई विकराल । वानर बंसी सब मुख लाल ।।८८३।।

देखि इन्द्रै भय उपजै घनी । देव जेम विद्याधर गुणी ।।
मारैं खडग मुंड गिर पडै । रुंड मुंड बहु लडते फिरैं ।।८८४।।

मही इन्द्र सेनापति तिहंबार । भई भभीषण स्यौं तरवार ।।
सेनापति भूझ भुईं गिर्‌या । श्रीमाली तब ऊपर फर्‌या ।।८८५।।

कुंभकरण तब कीन्ही दौर । सूरवीर झूझैं दुहुं ओर ॥
इंद्रजीत मेघनाद तब धसे । घणे लोग जम मंदिर बसे ॥८८६॥

सिघवाहनर कनक प्रभ सूर । तिनकै जुध किया भरपूर ॥
श्रीमाली माल्यवान का पूत । आइ लड्या सेनां संयुक्त ॥८८७॥

दुरजन दल ए परलय किया । रुधिर तणां अति नाला थया ॥

इंद्रा युद्ध

इन्द्रभूप आया चढि बली । अंधेरे पुत्र संग सेन्या भली ॥८८८॥

पुत्र पिता सौं विनती करै । मेरा कह्या क्यौं न उर धरै ॥
मोकुं आज्ञा दीजे आज । वेग संवारौं तुम्हारा काज ॥८८६॥

रावण कौं बांधों जब आय । मोहि पराक्रम देखो राइ ॥
कहै इंद्र पुत्र सौं बात । तुम हो बालक कोमल गात ॥८६०॥

अब तेरे खेलण की बात । तुम सुख भुगतो इण संसार ॥
बालक क्रीडा की है वयस । तुम बिण काज कवण इंह देस ॥८६१॥

तेरा मरण कैम देखूं नैण । असे कहै पुत्र सौं वैन ॥
जैवंत इन्द्र बोलैं करि जोडि । तुम पर बैठो निरभय ठोर ॥८६२॥

रावण पकडौं सेन्यां साज । ज्यौं पकडै तीतर नैं बाज ॥
अैसी विध रावण नैं गहुं । पलमांही सब सेन्या दहूं ॥८६३॥

जयंत इन्द्र करि सुरिष पलांण । भले लिये जोधा बलवांन ॥
श्रीमाली सुं लड़ा बहुत । लगी गदा भूं पड्या तुरंत ॥८६४॥

सेवकां आगे करि लिया उठाइ । सीतल पवन वीभजनां वाय ॥
चल्या कुंवर लिये हथियार । हस्ती ऊपर भया असवार ॥८६५॥

श्रीमाली उपर मारि तरवार । माथा छेद भया तिह वार ॥
सेन्यां विषल रावण की भई । इन्द्रजीत को इह सुध भई ॥८६६॥

कटा पडै ज्यौं बरसै मेह । परवत समान पडी मृत देह ॥
सूर सुभट तिहां बहु कटे । पाछै पांव न कोई हटे ॥८६७॥

जयंत कुंवर के लागा घाव । आया इन्द्र क्रोध के भाव ॥
इतरैं रावण चढ्यां दससीस । सब हथियार गहै भुज बीस ॥८६८॥

सब सावंत लिये कर संग । दुरजन दल करवे को भंग ॥
रावण कहै दिखावो इन्द्र । कौस दोय देख्या मुखचंद्र ॥८६६॥

ऐरापति पर आवत चल्या । छत्र चमर तां ऊपर भला ।।
इन्द्रजीत को घेरयो आइ । इंद्रका दल सब दीया हटाइ ।।६००।।

रावण देखी सुत पर गाढ । दोडया तिहां क्रोध करि बाढ ।।
छूटे बांण अगनि की झाल । मेघबांण ज्यों बरषा काल ।।६०१।।

अस्व गयंद सूर बहु कटे । तउब न सैन दुहुंषा घटे ।।
रावण दया विचारै हिये । इत उत कौं यहां क्यों क्षय किये ।।६०२।।

रावण और इन्द्र में युद्ध

मुझ ते तो है इन्द्र से काम । जासु सन्मुख करू संग्राम ।।
सुमति सारथी प्रति समझाइ । इन्द्र साम्हां ही चलिए धाय ।।६०३।।

रावण चढ्या सिंह के रथ । हाथी चढ्या इन्द्र समरत्थ ।।
दोन्यू भूप सामही लरैं । छूटैं बाण मेह जिम पडै ।।६०४।।

अगनिबांण छोड्या मेघबांण । बुझी अगनि उबरे बहु प्राण ।।
इन्द्र तणी सेन्यां बहि चली । इन्द्र भूप विद्या सांभली ।।६०५।।

अंधकार जब छोड्या बाण । भया अंधेरा गए औसांण ।।
उनकै सुझै नहि अंधेर । रावण का दल मार्या घेर ।।६०६।।

उज्वल बाण रावण चित किया । छुटत ही अंधेरा मिट गया ।।
इन्द्र करै तब बज्र सौं मार । रावण क्यों नहि मानै हार ।।६०७।।

रावण चन्द्रहास कर गह्या । भई मार धीरज नहीं रह्या ।।
कातर भाजि छिपावैं जीव । सूर सुभट नहीं मोडै ग्रीव ।।६०८।।

अजित कुमार सौं इंद्रजीत । दारुण जुध भया भयभीत ।।
देखै झांक पिता की ओडि । हांकि गए दोउ नर तब छोड ।।६०९।।

किस ही भांति टरैं नहीं पांव । इन्द्रजीत रह्या तिहि ठांव ।।
इन्द्रै इन्द्रजीत को गह्या । बाथौंबाथि लरैं है तिहां ।।६१०।।

ऐरापति तैं दोउं उतरे । दोन्यू भूप मल्ल जिम भिरैं ।।
कबहूं ऊपरि कबहूं तलै । ऐसा युद्ध किया उन भलै ।।६११।।

पकड्या इन्द्र बांधि गहि लिया । लेकरि बंदीखानैं दिया ।।
सब सेना मन भया आनंद । निरभय थए मिट्या दुख द्वंद ।।६१२।।

भूपति सकल आय कर मिले । रावण फिर लंका गढ चले ।।
परियण माहि बधावा भया । स्यौं कुटुंब लंका में गया ।।६१३।।

पुण्य प्रसाद जीत बहु भई। पुण्य विभव चौगुणी थई ॥
तातैं पुण्य करो मनल्याय। सुख संपति बाधे अधिकाइ ॥६१४॥

अडिल्ल

पुण्य तणे संयोग देश बहुते जुडे।
जीते नृप अनेक बोल ऊपर करे।
इन्द्र नरेन्द्रहू साधि सकल जय जय भई।
जैन धरम परसाद असाता सब गई ॥६१५॥

इति श्री पद्मपुराणे इन्द्र प्रभाव विधानकं ॥

१३ वां विधानक

चौपई

सहस्रार का रावण के पास आना

इन्द्र को सब रोवै रणवास। अन्नपानी तजि करैं उपवास ॥
जयवंत कुंवर बहुत बिललाय। नगर लोग चितवैं बहु भाय ॥६१६॥

सहस्रार करिकैं मनुहार। समझाया सगला परिवार ॥
अबहुं रावण पासैं जाउं। मेरा कह्या मानैंगा राउ ॥६१७॥

इन्द्रतणी मैं छुडाउं बंदि। ज्यौं परियण में होय आनंद ॥
सब परियण कौं धीरज दिया। लंकौं तणौं पयाणा किया ॥६१८॥

मंत्री सुघर लिये नृप संग। रूपवंत सौभैं सब अंग ॥
पहुंते लंका समुद्र मझार। देखी स्वर्ग पुरी उणहार ॥६१९॥

सिंघ दुवारैं पहुंचा भूप। बणी पोल तिहा अधिक अनूप ॥
पौलिये खबर रावण सौं करी। मांहि बुलाया वाही घडी ॥६२०॥

राज्यसभा मांही नृप गया। रावण उठकर आदर किया ॥
सिंघासण बैठाया राय। पुरुषा जाणि करी बहु भाय ॥६२१॥

इन्द्र को छोडने की प्रार्थना

सहस्रार रावण प्रति कहै। पुत्र वियोग मम हिरदा दहै ॥
इन्द्रैं छोड्यां जस बहु होंय। तुमारी कीरत करैं सब कोइ ॥६२२॥

तुम आग्या मानैंगा इन्द्र। कृपा करिउ छोडो अब बंदि ॥
बोलै रावण आसा यही। नगर बुहारै नित उठ सही ॥६२३॥

धरती छिड़कें अपणें हाथ । राणी चंदन बिछकें साथ ।।
तो छोड़ु उगने इण बेर । आग्या भंग करें नहि फेर ।।६२४।।

सुणी बाल मन विस्मय भया । माथा नीचें राख्या नया ।।
तब रावण समझी मन बात । तुम पुरुषां जैसा हम तात ।।६२५।।

बोले सहस्रार सुभ बैन । मंत्री सबद होय मन चैन ।।
हमही इन्द्र समझाया घणां । महाबली उपज्या रावणा ।।६२६।।

तुम उसकी सेवा करि जाय । असे उसने रहै समझाय ।।
असुभ कर्म ताकी मति हरी । सीख हमारी लागी बुरी ।।६२७।।

उन तुमसूं किया युध जु घणां । पुरुषा वयण सबै अवगणा ।।
पुरुषां का मान्या नहीं कह्या । तो दुख मान भंग होय सह्या ।।६२८।।

जे सुबुधि पंडित सुग्यांन । पुरुषां कहै सु करैं प्रमान ।।

इन्द्र को छोड़ना

रावण सहस्रारसौं कहै । भ्राता इन्द्र मेरी ढिग रहै ।।६२९।।

असा दूजा बली न और । जो मन इच्छं सोधौ ठोर ।।
अं जो चाहो आपणा देस । करो राज निरभय भुवनेस ।।६३०।।

अगले तैं थो टाल्यो राज । मनवंछित का हूं है काज ।।
सहस्रार नृप अस्तुति करें । तुम दरसन तैं दुख वीसरें ।।६३१।।

तुम हो त्रेसठ सलाका पुरुष । देखत मनमें उपजै हरष ।।
कृतार्थ भए हम प्रभु आज । रथनूपुर का पावैं राज ।।६३२।।

बहै बडा पुरुषां की ठांव । वहां के बसें हम प्रगटे नांम ।।
बेडी काटि दिया इन्द्र छोडि । तोय हथकडी डारी तोडि ।।६३३।।

हय गय आभूषण पहराय । रथनूपुर कौं दिया पठाई ।।
अपने घरमें पहुंच्या इन्द्र । सब परियन में भयो आनंद ।।६३४।।

इन्द्र चित्त में भरमें घना । इह उपसर्ग कहां हूं बन्या ।।
अन्नपांन पाणी नहीं रुचै । एसा रहै रात दिन सोच ।।६३५।।

राणी देश भागि भंडार । सबै भयांनक लगै उजार ।।
हय गय विभव सेव पालकी । कुछु न सुहाय लगै ज्वालसी ।।६३६।।

इन्द्र की व्यथा

चिन्ता का कछु करै न ल्यार । देता रांकै विकल्प भाव ॥
बहुत दिवस बीते इस भांति । तब कछु सुरत भई नृप गात ॥६३७॥

गंधमादन पर्वत पर गया । श्री जिनमंदिर में प्रगटया ॥
नमसकार करि पूजा करी । ऊंचे ते सेना दिठ पडी ॥६३८॥

इन्द्र मूण उपज्या मन सोच । सहस्त्रअक्षोहिणी था मेरा भोग ॥
रावण ने सब परलय किये । बहुत दुःख उन मोकूं दिये ॥६३९॥

सब रावण का बाज्यो सोज । लंका मांहि पडीयो रोग ॥
आकास परलय होय ज्यों राज । उनही बिगाड्या मेरा काज ॥६४०॥

मेरे थी विद्या लक्ष्मी । हय गय विभव तणी नहीं कमी ॥
उन रावण सब दहवट किया । बहुत प्रकार मुझे दुख दिया ॥६४१॥

वाकी संपति ह्वैं जो नास । उन मुझ प्रति ही दिखाई भास ॥
इन्द्र सराहय बारंबार । बहुर ग्यांन मय किया विचार ॥६४२॥

समझि समझि मनमें पछताय । मैं क्यों सराप्यो रावण राय ॥
सराप दिये अति बाढे पाप । अपनी करनी खोवै आप ॥६४३॥

राजभोग थिर नाहीं मही । च्यारों गति मांहि सुख नहीं ॥
पुण्य संजोग मिलैं बहु रिध । पुण्य घट्यां नासैं सब सुध ॥६४४॥

कबहू राव कबहु ह्वै रंक । कबहू जीतें गढ अति बंक ॥
कबहू बैठि सिंघासण चलैं । कबहू पायक पीयस दलैं ॥६४५॥

कबहू देव कबहू नारकी । कबहू मनुष्य ह्वैं तिरण चार की ॥
घटि बढि होइ कर्म की चाल । च्यारौं गति मैं भ्रमै काल ॥६४६॥

राज भोग में भयो अचेत । या परसाद भई मुझ चेत ॥
जो वहु इतना करता नहीं । ग्यांन मुझे किम होता सही ॥६४७॥

अब ऐसा गरवा तप करौं । काटि करम पंचम गति वरौं ॥

मुनिचन्द्र का आगमन

इह विचार चित बैठा इन्द्र । तिहां एक आया मुनि चन्द्र ॥६४८॥

च्यार ग्यान का धारक जिकै । दरसन देख होय सुभ मते ॥
नमस्कार कीया कर जोर । टूटे जनम जरा की डोर ॥६४९॥

सुणो ध्यांन के सुच्छम भेद । तातैं होइ करम का छेद ।।
प्रभु मेरे पूरब भव कहौ । कवण करम तैं दुख बहु लह्यौ ।।६५०।।

इन्द्र के पूर्व भव

मुनि जंपै पिछला विरतांत । भ्रम्या लाख चौरासी जात ।।
लया जनम भील के गेह । भई पुत्री ता कुष्ठी देह ।।६५१।।

मुख विकराल चपटी नाक । चुंधी आंख मुख दीसै बांक ।।
जनमत मात पिता मर गये । ऐसे दुःख वा गति में भए ।।६५२।।

ह्वांते मरि फिरि देही धरी । मुनि दरसन तैं राजग्रह परी ।।
तप करि पहुंती स्वर्ग बिमांन । पूरण आव मुगती सुर थान ।।६५३।।

रतनपुर नगर तिहां गोमटराय । कुंदमणी राणी उर आइ ।।
क्षीर धारा तेहां हुई पुत्री । तप करि स्वर्ग लोक थिति करी ।।६५४।।

क्षेत्र विदेह रत्नसंचय नगर । असंमत मर्द्दन रावल अग्र ।।
गुणवंती राणी पटधनी । पुण्यसेन पुत्र भया बहु गुणी ।।६५५।।

राजा नैं दीक्ष्या पद लिया । राज्यभार सब सुतनैं दिया ।।
गुणसेन सुण्यां बहुधर्म । सिथल भए असुभ सहु कर्म ।।६५६।।

छोड राज दिक्षा लई जाइ । स्वाध्यान तपसों मन ल्याइ ।।
देही छोडि अहमीन्द्र विमांण । भया इन्द्र पाया सुख थांन ।।६५७।।

वहां ते चय रथनुपुर देस । सहस्रार कै इंद्र नरेस ।।
पूछै इन्द्र दोइ कर जोडि । प्रभुजी मेरी करो बहोडि ।।६५८।।

कौण पापतैं मान भंग भया । सब सुख कवण करम तैं गया ।।

रावण द्वारा इन्द्र के मान भंग के कारण

क्यों रावण मुझ दीना दुःख । भूल्या सकल राज का सुख ।।६५६।।

मुनिवर बोले आतमग्यांन । जती सुमरण धरि देख्यो ध्यांन ।।
अरजमपुर नगर अनूप । अगनिवेग विद्याधर भूप ।।६६०।।

आनंदमाला पुत्री ता गेह । कोकिल सबद कंचन सम देह ।।
ताकै पिता स्वयंवर रच्या । सकल सौज सामग्री सच्या ।।६६१।।

देस देस के आए राय । मंडप तल बैठे सब आय ।।
कन्या हाथ लई वरमाल । गुणवंत खेचर गल दीनी डाल ।।६६२।।

कियो विवाह घडी सुभ साथ । भोग भुगत कीनी अति बाधि ॥
एक दिन सूता था आवास । विद्याधर ले चले आकास ॥९६३॥

आनंदमाला जागी तिरण वेर । सेज्यां अकेली देखी फेर ॥
तब उपज्या मनमें वैराग । सकल वस्तु का कीना त्याग ॥९६४॥

हंसावन्ती नदी तट तीर । परच स्वरत मुनिवर तप धीर ॥
दिक्षा लई मुनिवर पैं जाइ । करैं तपस्या मन वच काय ॥९६५॥

गुणसेण जाग्या तिह बार । विद्याधर सौं कीनी मार ॥
भाजि गये दुरजन के लोग । आया निज नगरी में लोग ॥९६६॥

देखी नहीं त्रिया घर मांहि । चिंता करता ह्वै गई सांझ ॥
गई सुरत मुनि थानक गया । क्रोध वचन मुख सौं बोलिया ॥९६७॥

मेरे डरतैं लीया जोग । अजौ अभिलाषा रासै भोग ॥
सौहागणि तैं बाई करी । आई तुझ मरने की घडी ॥९६८॥

मुनिवर कुं बांध्या बहुभांति । मारथा आछे मुबकी लात ॥
मुनिवर कछुवन आणै चित्त । सहै परीसा आपणैं नित्त ॥९६९॥

इसनौं है यासुं वैरानि । सो मुझनैं भुगत्या परवांन ॥
चिदानंद सौं ल्याया ध्यान । ज्यों इसका होसी कल्याण ॥९७०॥

बोली नारि पति नै दे गालि । रे पापिष्ट मुनि किया बेहाल ॥
ए मुनिवर मन अंतर रहैं । छह रितु के दुख ऐसैं सहैं ॥९७१॥

तैं क्यों आप उपद्रव किया । किण हित साध प्रतैं दुख दिया ॥
तेरा होज्यो राज का भंग । इस सराप दिया तिण संग ॥९७२॥

मुनिवर तिथ रिख की भई । या सम रिख कल्यांण नै दई ॥
गुणसेन सोच करै मन मांहि । इह सराप टलणे का नांहि ॥९७३॥

सीलवंत का वचन न टलै । मैं तो पाप बहुत ही करै ॥
बंधण दिये साधु के खोलि । अति अधीन होय बोलै बोल ॥९७४॥

मुझ में आज भई अब बुधि । माया जाल तैं भूली सुधि ॥
अब कछु ऐसा करूं उपाव । नासै पाप लहुं सुख ठांव ॥९७५॥

मुनिवर करी धरम की टेक । सत्रु मित्र सम जाणैं एक ॥
मुनिवर कहैं ग्यान के भेद । तप करि महेन्द्र भया वह देव ॥९७६॥

उहां मुनि इंद्र सुधर्म बिमांण । आइ सुगति रावण भया ग्रांन ॥
गुणसेन जीव भया तू इन्द्र । या सनमंध किया तुझ वंदि ॥९७७॥

पिछली सुणि मन भया अडोल । रावण किया मित्र का बोल ॥
जो तुम मोसों कीन्हां जुध । तो मैं लही धर्म की बुधि ॥९७८॥

या कै हूं जो मुकत की ठोड । वा परसाद गई मुझ खोड ॥
सुण्यां धरम रथनूपुर गया । जयंत कुंवर ने राजा किया ॥९७९॥

इन्द्र द्वारा मुनि दीक्षा

इन्द्र भूप दिगंबर भया । तेरह बिध सौ चारित्र लिया ॥
सहै परीसा बाइस गात । च्यारि करम का किया घात ।।९८०।।

केवलग्यांन लब्धि तसु भई । जै जै सबद दुंदुभी थई ॥
धरम प्रकास संबोधे घने । इन्द्र मुनीन्द्र भेरा वे बने ॥९८१॥

दूहा

इन्द्र भूप इह विध बली, धर्यो धर्म दृढ चित्त ॥
भवसागर तैं उतर करि, सुख सुगतें बर नित्त ॥९८२॥

चौपई

मुकति गया मुनिवर श्री इन्द्र । पावैं सुख सास्वते ग्रानंद ॥
ज्योति ही ज्योति एकठी भई । इन्द्र प्रभू पंचम गति लही ॥९८३॥

रवि उद्योत अंधेरा मिटैं । केवलवाणी संसय मिटैं ॥
मन धर कथा इन्द्र की सुनैं । ते नर अष्ट करम को हणैं ॥९८४॥

इति श्री पद्मपुराणे इन्द्रनिर्वाण विधानकं ॥

१४ वां विधानक

चौपई

अनन्तवीर्य मुनि को कैवल्य प्राप्ति

दीप धातकी मध्य गिर मेर । ग्रनंतवीर्य जिण केवल बेर ॥
सावन पर्वत पर जीण साथ । इंद्र ग्रादि देवता साथ ॥९८५॥

ईंद्र विमांन देव सब चले । मुकटां की मणि सोभा भले ॥
पृथ्वी दसौं दिसा उद्योत । रतनां तणी विराजै जोत ॥९८६॥

बाजा बाजैं नाना भांति । सब सुर चले जिनेस्वर जात ॥
देखि विमांण रावण चितवै । तब मरीच मंत्री वीनवै ॥९८७॥

अनंतवीर्य स्वामी जिणदेव । ए सब चले तास पद सेव ।।
अनंतवीर्य को केवलज्ञान । पूजा करैं ग्यांन कल्याण ।।९८८।।

रावण द्वारा वन्दना

रावण के मन भया आनंद । दरसन कारण देव जिणंद ।।
सोलह सहस्र भूप संग लिये । बैठि विमांण समोसरण गये ।।९८९।।

दई प्रदक्षिणा सुर नर जाय । नमस्कार कीया बहुभाय ।।
दोई कर जोडिर पूछें इन्द्र । बारह सभा में सूरज चन्द्र ।।९९०।।

इन्द्र धरणेन्द्र तिहां नरेन्द्र । भया सकल प्राणी आनंद ।।
पूछें पुण्य पाप के भेद । सुणत वचन मिट जावै खेद ।।९९१।।

भगवान की वाणी

श्री भगवंत की वाणी होय । भवियण लोग सुणैं सब कोइ ।।
छहूं दरब अर तत्व सु सात । नव पदारथ अर पंचगात ।।९९२।।

पाप पुण्य का करैं बखांण । हिंसा तैं गति नरक निदांन ।।
मद्य मांस सहित जे खाइ । उंबर पंच कठूंबर भाय ।।९९३।।

काहू की चित दया न करैं । ते जीव नीची गति पडैं ।।
सात विसन जे चित में धरैं । सातउं नरक मांझ दुख भरैं ।।९९४।।

असत्य वचन जे मुख सौं कहै । च्याऊं गति मैं सुख न लहैं ।।
असत्य वचन चोरी परिहरैं । ब्रह्मचर्य व्रत विध सौं करैं ।।९९५।।

परिग्रह प्रमाण करैं नहीं मूढ । भव भव में पावैं दुख गूढ ।।
सात विसन के सेवणहार । ते कबहूं नहीं पावैं पार ।।९९६।।

रोग सोग दुख पडैं विजोग । काहू भव में मिटैं न सोग ।।
पाप करम के भेद अनंत । उनका कहत न आवैं अंत ।।९९७।।

धरम करत सुख संपति होइ । कै मनुष्य कैं सुर पद होइ ।।
मनुष्य जनम का लाहा लेहु । सोलह कारण वरत करेहु ।।९९८।।

दशलक्षण पालैं धरि भाव । रतनत्रय संयम जिण नांव ।।
अठाईस मूल गुण पालैं सुद्ध । धरम ध्यान में राखैं बुधि ।।९९९।।

चार दांन दे वित्त समान । निस उठि दरसन करै विहान ।।
षट्आवश्यक सबही सौं करै । दया भाव चित अंतर धरैं ।।१०००।।

सारस्त्र पुराण सुणैं मन ल्याइ । जिस मैं भोजन भूलि न खाय ।।
जे जीव जिसमें लेय ग्राहार । तिरजंच मांहि भ्रमैं अपार ।।१००१।।

व्यालू करैं न छीजती बार । दरसन ग्यांन चरित्र चित्त धारि ।।
उत्तम गति में ह्वै आरिज खंड । पंचेन्द्री को दीजे दंड ।।१००२।।

संयम कौं पालैं धरि भाव । भोग भूमि पावैं सुख ठांम ।।
सुपात्रां नैं विध सौं दे दांन । षट् दरसन को राखैं मान ।।१००३।।

आप समांन सकल ने जांनि । दया भाव सब ऊपर आंन ।।
दांन कुपात्र फलैं नहीं कुच्छ । कुगुरु कुदेव कुसास्त्रां तुच्छ ।।१००४।।

इन संगति नीची गति जाय । अर जे कंद मूल फल खाय ।।
पाप पुन्य को भेद न करैं । कुगुरु कुदेवा निश्चै धरैं ।।१००५।।

ते जीव मरि खोटी गति पडैं । भव भव दुख दलिद्र अनुसरैं ।।
सम्यक दर्शन देसैं सुष । सम्यकग्यांन चारित्र सुबुध ।।१००६।।

श्री भगवंत नैं पूजे नित्त । सुमरै गुणवाद धरि चित्त ।।
निसदिन गुरु की सेवा करैं । मिथ्या तजि समकित आदरैं ।।१००७।।

कैं व्है देव कै भूपती । सम्यक ते होय पंचमगती ।।
समकित बिना न पावैं मोक्ष । मिथ्याती ते भव भव दुख ।।१००८।।

दूहा

सम्यक है चिंतामणि रतन, तेह पालो धरि ध्यांन ।।
भवसागर को है सगुण, सहित कीजिए मान ।।१००९।।

अणी विरत तेरह विध धरैं । बारह विध तपसौं अघ हरैं ।।
क्रोध लोभ ए च्यार कषाय । रागदोष ये देय बहाइ ।।१०१०।।

बाईस सहै अबाधा नित्त । द्वादस अनुप्रेक्षा सौं चित्त ।।
भोजन करैं उदंड अहार संयम का राखैं दिढ भाव ।।१०११।।

दस लक्षण कै पालै अंग धरम सुकल स्यौं राखैं संग ।।
बारह बरत सरावग करैं । पांच अणुव्रत निश्चैं धरैं ।।१०१२।।

फुनि पालैं शिस्याव्रत च्यार । सातौं बिसन तजैं जिम छार ।।
पुरष गुणव्रत धारैं तीन । सो जाणैं श्रावक पर चीन ।।१०१३।।

राखैं सदा मनमें संतोष । तृष्णा तजै तो पावैं मोक्ष ।।

लोभदत्त सेठ की कथा

लोभदत्त सेठ की कहो कथा । तिण लक्ष्मी बहुते संग्रही अथा ।।१०१४।।

कुरी खाइ महादुःख भरै । जहां तिहां पायक जिम फिरै ।।
सिर पगडी तल धोती बांधि । एक दुपट्टी राखै कांध ।।१०१५।।

जीरण वस्त्र त्रिया नैं देय । दान पुन्य कबहीं न करेइ ।।
सब पुर लोग कृपण कहैं ताहि । वह मनमें कछु आणैं नाहिं ।।१०१६।।

चारण मुनि आए तिण बार । साहणी दौडि करी नमस्कार ।।
स्वामी म्हारा पूरब पाप । छती आथि हम सही संताप ।।१०१७।।

किण प्रकार होसी हम गति । लोभदत्त के धरमन चित्त ।।
अब ऐसी विद्या मुझ देहु । तीरथ दरसन सदा करेहु ।।१०१८।।

तब मुनिवर इक विद्या दई । ताहि सुमर बुधि पाई नई ।।
लकड़ो एक बडो विस्तार । भीतर तैं पोलाइ सार ।।१०१९।।

विद्या सुमरित सु ऊपरि बैठि । तीरथ करण चाली त्रिय सेठ ।।
ऐसे नित प्रति तीरथ जाइ । रतन द्वीप पूजैं जिण राइ ।।१०२०।।

तेली तेलण दोन्यु लडै । तेलणि कूद लकडा मैं बडै ।।
साहणि चढि चाली आकास । उतरै रतन दीप के पास ।।१०२१।।

तेलण देख अचंभै भई । रतन संकेलि गोद भरि लयी ।।
लकडे बीच आइकै छिपी । बहुत ज्योति रतनन की दिपी ।।१०२२।।

साहणि आई घरि आपणी । तेलण आनंदी मन घणै ।।
तेली प्रति दीने सब जाइ । रतन एक साह ढिग ल्याइ ।।१०२३।।

साह देख अति अचिरज भयो । ऐसो रतन कहां तैं लयो ।।
तेलण सों पूछै लोभदत्त । मोसौं सांच कहो मोहि सत्य ।।१०२४।।

तैं यह कहां तैं पाया रत्न । या का मोहि बताबो जत्न ।।
तेलण भणैं सुणउ मम सेठ । लकडे मांहि रहो तुम पैठि ।।१०२५।।

भई सांझ सेठ तिहां बंस्या । अधिक लोभ ताके मन बस्या ।।
साहणि बिद्या सुमरी आय । लकडे बैठि दीप कौं जाय ।।१०२६।।

समुद्र मांझ देख्या सहलीर । इह लकडा डाल्या गहै नीर ।।
वा लकडे चढि साहुणि गई । डुब्या साह नरक गति भई ।।१०२७।।

साहणि आयी घर आपणै । पूछै बात तब मुनिवर भणै ।।
कहो साहु गयो किहु ओर । वाकुं मैं ढूंढू किस ठौर ।।१०२८।।

मुनिवर कहैं पिछला वृत्तान्त । डूब्या साह लकडे संघात ।।
साहुणिकीया मन में सोच । लोभदत्त का इह नियोग ।।१०२९।।

नित प्रति उठि लक्ष्मी दें दान । पूजें साधु देव भगवान ।।
बिलसें भोग दिन सुख में जाइ । भोजन भले भले नित खाइ ।।१०३०।।

दूहा

लोभदत्त लक्ष्मी लही, कछुवन जाण्यां भोग ।।
पाप करम करि एकठी, ताथी भयो वियोग ।।१०३१।।

चौपई

भद्रदत्त सेठ की कथा

भद्रदत्त सेठ आधीन । बेचें वस्तु परिग्रह लीन ।।
दान अदत्ता लेइ नहीं पड्या । बाहर अभ्यंतर चित खरा ।।१०३२।।
एक दिन कंचन राय प्रधान । तसु दीनार पड्या मग थान ।।
सब दीनार सेठ जब लही । भद्रदत्त चित्त सोचें कही ।।१०३३।।
कंचण घर गया दिण आर । नृप के आगे को पूछें सार ।।
कहा दुचिते बहुत उदास । मुनें कहो करो बिसवासि ।।१०३४।।
कंचन कहै मो पास दिनार । राजा मुझे सौंपिया संभारि ।।
छूट पडे मारग में आन । तासें सोच करूं बहु भांति ।।१०३५।।
अन्नपांन मो कछु न सुहाय । तिण कारण मैं रह्यो मुरझाय ।।
वे दीनार सेठ तब दिये । भयो सुख कंचन के हिये ।।१०३६।।
भद्रदत्त की अस्तुति करें । धन्य सेठ तु लोभ न धरें ।।
सगला लोग सराहैं ताहि । ऐसी बात सुणी नरनाह ।।१०३७।।
दई सेठ नें घणी विभूति । आदर मान किया अद्भूत ।।
ताको जस प्रगटयो संसार । सत तें लछमी लही अपार ।।१०३८।।

दूहा

सति मारग श्रेसा भला, ताहि करौ सब कोइ ।।
दोन्युं भव जस विस्तरें, बहुरि मोक्ष पद होइ ।।१०३९।।

चौपई

कुंभकरण द्वारा धर्मोपदेश की प्रार्थना

कुंभकरण पूछें कर जोडि । स्वामी भाषो धरम बहोडि ।।
कवण पुन्य तें लहिये मुक्ति । तैसी मोहि सुणावो युक्ति ।।१०४०।।
अनंतवीर्य जिण कहैं बखाण । बारह सभा सुणैं धरि ध्यान ।।
समकित जे पालैं थरिचित्त । उत्तम ध्यान विचारें नित्त ।।१०४१।।

समक्यायिक वेदक समकिती । निश्चय विवहार दोइ विध थिती ॥
अरिहंत समान देव नहीं कोइ । गुरु निर्ग्रन्थ संतोषी होइ ॥१०४२॥
सास्त्र ते जिस माहीं दया । इष्ट अनिष्ट करै नहीं भया ॥
देव कुदेव है पूजै नहीं । पाखंडी गुरु की बात न सही ॥१०४३॥
कुसास्त्र में मानें नहीं सांच । निग्रह कीजे इन्द्री पांच ॥
अपरोपत कीजे उपवास । खोटै व्रत तैं होय पुन्य का नास ॥१०४४॥
वरत करि कै कंदमूल को खाय । तो किया कराया निरफल जाय ॥
लेय आहार कहैं हम व्रती । मनुष्य जन्म की खोवैं कृति ॥१०४५॥
चउं घड़िया अणथमी करै । अथवा घडी दोय अगसरैं ॥

रात्रि भोजन निषेध

भोजन रयण तजैं तिहु मात । ते कहीए मानुष की जात ॥१०४६॥
जे नर रयण भोजन खांहि । राष्यस सम जाणिये ताहि ॥
पशु जाति ते हैं अग्यांन । जैसे मांस भषी हैं स्वान ॥१०४७॥
कीट पतंग माकडी घणी । वाका दोष न जाय न गिणी ॥
ते सब गति अति थोडी लहैं । रोग सोग दुख भव भव सहैं ॥१०४८॥
केई जनम दलद्री होइ । थोडी आव लहैं जिय सोइ ॥
लख चौरासी भ्रमैं संसार । ते कबहीं नहीं पावै पार ॥१०४९॥
भोजन रयण तजैं धरि ध्यान । ते भव भव सुख लहैं निदान ॥
पंचमि गति पावैं निरवाण । सकल लोक में उत्तम थान ॥१०५०॥

दूहा

जे नर निशि भोजन करैं, कंद मूल फल खांई ॥
ते चिहुं गति भ्रमते फिरैं, मोक्ष पंथ तिहां नांहि ॥१०५१॥

रात्रि भोजन त्यागैं सर्व । उत्तम कुल पावैं बहु दर्व ॥
भले भले मिंदिर आवास । कै सुख विलसैं कै जाइ अकास ॥१०५२॥
बत्तीस लक्षणी पावैं नारि । रूपवंत ससि के उणिहारि ॥
हंस गामिनी कोकिल बयण । सकल सुगण मन उपजत चैन ॥१०५३॥
पुत्र सपूत होहि तिसु भले । कबहूं खोटै मार्ग न चलै ॥
सज्जन कुटंब भाई घणे । आदर भाव कहत नहीं बणे ॥१०५४॥
छत्तीं राग अरु तीस रागणी । होहि नृत्य सुख सोभा घणी ॥
कनक मई पाई अति देह । लोचन कमल है ससि नेह ॥१०५५॥

कुंडल सोभैं दोन्यु कर्ण । बडी आव मुगतें सुख सर्ण ।।
जैन धरम सौं राखैं प्रीत । सतत धरम की पालैं रीत ।।१०५६।।
नित उठि द्वारा पेषण करैं । जनम जनम के पातिग हरैं ।।
मुनिवर कौं विधस्यौं दे दान । छहौं भेष का राखै मान ।।१०५७।।
बारह सभा सुणैं विध धर्म । असुभ भाव के टूटैं कर्म ।।
कंई भूप दिगम्बर भये । किनही व्रत श्रावक के लिये ।।१०५८।।
जैसा चित तैसा लै व्रत । जनम जनम का दुःख जहन्त ।।

रावण द्वारा व्रत ग्रहण

रावण सों बोले भगवान । तू ले व्रत कछु निश्चय आन ।।१०५६।।
रावण सोच हिया में करैं । सीलवरत की इच्छा धरैं ।।
परनारी सेवैं अग्यान । पावै अंत दुख की खान ।।१०६०।।
जैसे स्वान ले वम्यां आहार । जैसे विषई मूढ गंवार ।।
वहैं द्वार दुरगंध निवास । जाहि देख मन होत उल्हास ।।१०६१।।
मेरी तीन खंड में आंरण । मोपैं बरत सधै नहीं जांण ।।
एक भांति व्रत पालौं सही । जे नारी मुझ इच्छै नहीं ।।१०६२।।
तांका सील न खंडउं जाइ । इहै वरत मुझ बोलयै राइ ।।
श्री जिण पास नेम इहलीया । आगैं को फल दाता भया ।।१०६३।।
कुंभकरण भभीषण व्रत लिया । करि डंडोत पयांणा किया ।।
आए लंका सह परिवार । करैं धर्म मन हरष अपार ।।१०६४।।
इन्द्र धरणेन्द्र सुरथानक गए । श्री जिनवाणी सुमरै हिये ।।
सब के मन का संसय गया । धरम प्रकास जगत में भया ।।१०६५।।

अडिल्ल

अनंतवीर्य भगवंत धरम बहुविध कह्यौ ।
सुधम भेद अगाध सुणत सब सुख लह्यौ ।
व्रतधारी भए भूप मोक्षमारग गए ।
भवसागर तैं जीव उतरि सिवपद लए ।।१०६६।।

इति श्री पद्मपुराणे श्री अनंतवीर्य धर्म व्याख्यान विधानकं ।।

पन्द्रहवां विधानक

चौपई

हनुमान का जीवन

इहां श्रेणिक कीया परसन । हनुमान की कहो उत्पत्ति ।।
श्री जिनवाणी दिव्य ध्वनि होइ । बारह सभा सुणै सब कोई ।।१०६७।।

गौतम स्वामी निरणैं भणैं । सभामध्य श्रेणिक सुणैं ॥
विजयारध दक्षिण दिस ओर । आदित्तपुर नगरी तिहां ठोर । १०६८॥
राय प्रहलाद नगरी को धणी । केतुमती राणी तुम तणी ॥
पवनंजय पुत्र भया शुभघरी । पल पल बढ़ै देह गुण भरी ॥१०६९॥
पर्वत सम वेसपुर वेस । महेन्द्र विद्याधर तहां नरेस ॥
हृदयवेगा राणी सुंदरी । सौ पुत्र जनमें सुख करी ॥१०७०॥
प्रथम अरिदमन दूजा उबपाद । अंजनी सुंदरी पूनम चांद ॥
रूप लक्षण गुण महा प्रवीण । सोलह भांत बजावै बीण १०७१॥
छहौं राग अर तीस रागणी । विद्या पढ़ै सरस्वती वणी ॥

अंजना के विवाह की चर्चा

राजा महेन्द्र तब मता उपाइ । मंत्री च्यारूं लिये बुलाइ ॥१०७२॥
अमर सागर सौं मता विचार । कन्या बडी भई इह बार ।
उत्तम कुल जे राजकुमार । तिहां लगन भेज्यो इस बार ॥१०७३॥
अमर सागर बोल्या मंतरी । रांवण की कीर्त्त है खरी ॥
अैसे सुं कीजे सनमंध । राक्षसवंस ज्यौं पुंनिम चंद ॥१०७४॥
इंद्रजीत दूजा मेघनाद । वेद पुराण बजावै नाद ॥
पराक्रमी वै चरम सरीर । मोक्षमार्गी एका भव तीर ॥१०७५॥
अैसे उसके महा सपूत । कंन्यां देहु सुख होइ बहुत ॥
सुमति मंत्री फिरि दूजा कहै । मेरै मन इह संसा रहै ॥१०७६॥
रावण कैं घर इतनी नारि । पटरांणी सोलह हजार ॥
कुमरां कहैं बहुत अस्त्री । एक एक सेती गुणभरी ॥१०७७॥
उस घरि कंन्या दीये नहिं बणैं । श्रीषेन राजा गुण घने ॥
चरम सरीर प्राक्रमी बली । उंकौं देहु होयगी रली ॥१०७८॥
तारा धर मंत्री समझावै बैन । कनकपुर नगर सोभा है अैन ॥
हिरणनाभि राजा तिण ठाम । तसु पटराणी सुमना नाम ॥१०७९॥
सौदामनि तास उत्र भया । मोक्षगामी सोभै सुभ कया ॥
वाके गुण का पार न कहीं । अैसा बली भूप को नहीं ॥१०८०॥
संदेहपारिख बोलै परधान । सौदामनी के मन में बहु ग्यांन ॥
बैराग भाव कुंमर का चित्त । संसारैं समझैं अनित्य ॥१०८१॥
जो उसको उपजै बैराग । वाकैं लगै न करता त्याग ॥
कंन्या विधवा सब क्यूं दिन भरै । क्यौ करि दिवस कंत विन टरैं ॥१०८२॥

बाहि महारह बंदतो के गए । दिव्यां ले केवल उपजए ॥
पहुंते मुक्त रमणि की ठौर, आवागमन करै बहोरि ॥१०८३॥
पवनंजय कुमर विजयारध देस । रूपवंत अति बडो नरेस ॥
ताका गुण ब्योरा सौं कहे । कहत सुणत कछु अंत न लहे ॥१०८४॥
रितु वसंत का आगम भया । राग रंग सब घरि घरि थया ॥
कांमनी मानैं रेति अतिभली । घरि घरि गावैं मंगल रली ॥१०८५॥
फूले फूल मोरे तरु अंब । नव पल्लव सई भई प्रबंध ॥
भ्रमर भ्रमरनी करै गुंजार । जिहां तिहां गावंति धमार ॥१०८६॥
सकल भूप आवे कैलास । महेंद्रसेण की पुत्री आस ॥

राजा महेन्द्र एवं राजा प्रहलाद की भेंट

तिहां आया राजा प्रहलाद । वा संग सैन्या बहुत अगाध ॥१०८७॥
दोनूं भूपति मिले गल लागि । रूपवंत अति पूरण भाग ॥
वारंबार पूछै कुसलात । पूजा करैं जिण की सुप्रभात ॥१०८८॥
राय प्रहलाद महेन्द्रस्युं कहै । मेरे मन को संसा दहै ॥
तुम क्यों दुर्बल अधिक नरेस । आपणां चित की भणउं असेस ॥१०८९॥
महेन्द्रसेन बोले भूपती । मुझ घर कंन्या अंजनावती ॥
रूप लखण सब गुण संयुक्त । धरम भेद जाणैं सुबहुत ॥१०९०॥

पवनंजय के साथ विवाह प्रस्ताव

पवनंजय पुत्र तुम्हारा सुण्यां । तामैं विद्या बल गुण घणां ॥१०९१॥
पवनकुमर ने अंजनी दई । दोन्युं कुलां बधाई भई ॥
विमलसाह लिख भेज्या पत्र । आदितपुर पठया दूत विचित्र ॥१०९२॥
तीन दिवस रहै ताव्हा माझि । मंत्री जाय पहुंते सांझि ॥

पवनंजय द्वारा अंजना को देखने की उत्सुकता

पवनंजय पूछे अंजनी रूप । सुण्यां कुंवर नें बहुत अनूप ॥१०९३॥
तीन दिवस बीते किह भांति । व्याप्या कांम कुमर के गात ॥
कब बीते ये तीन दिवस । कब अंतःपुर होइ प्रवेस ॥१०९४॥
पवनंजय कुमर बिचारै ग्यान । सीलवंत किम होय अयान ॥
अष्टगुणा कांम स्त्री होय । दिढ सौं सील जु राखै सोइ ॥१०९५॥
मो सा पुरुष जो व्याकुल रहै । मोसुं भला न कोई कहै ॥
प्रहसित मित्र पै गया कुमार । मन का भेद कह्या तिण बार ॥१०९६॥

अंजनी रूप सुण्यां में घणां । मोकुं काम व्याप्या चौगुणां ।।
जो हूं देखूं अपणे नयन । तो मोकुं होवें सुख चैन ।।१०९७।।

मित्र कहै धीरज धर आस । दोन्यूं चल्या भई जब रात ।।
अंजनी मंदिर ढिग गए । झरोखे निकट छिपतिये भए ।।१०९८।।

नैनूं देख्यो रूप अघाइ । वह दुख कहीं न बरन्यो जाय ।।
वसंततिलका दासी को नाम । अंजनी सौं बोली धर भाव ।।१०९९।।

बडा भाग तेरा अंजनी । पवनंजय सा बर पाया गुणी ।।
वा सम बली न दूजा और । सीमंगी तू पट की ठौर ।।११००।।

कंचन रतन सी जोडी बनी । उस ते हैं तुम सोभा घणी ।।
पूरब किया पुण्य तैं भला । ऐसा बर सौं सनमथ मिला ।।११०१।।

दासी द्वारा विद्युत वेग की प्रशंसा

मिश्र केस बोलै दूसरी । पिता तुमारे कीनी बुरी ।।
विद्युत वेग सा राजा छोडि । करी सगाई ऐसी ठौर ।।११०२।।

ताके गुण का वार न पार । मुक्ति गामी अरु दातार ।।
वाकी तो इक घडी महोत । कहां दीपक कहां रवि उद्योत ।।११०३।।

समंद छांडि ज्यौं चयरी भरी । असौं महेन्द्रसेन प्रति करी ।।

पवनंजय को निराशा

असे वचन पवनंजय सुनी । जानुं उर आयुध सों हनी ।।११०४।।

सोवत सिंह हुंकारघा ठेल । मानुं दीया अगनि में तेल ।।
काढ षडग लीया तिह बार । अंजनी सुधा डारूं मार ।।११०५।।

विभचारणी लक्षण इण भांति । इन सुणि करि कछु कहियन बात ।।
प्रहसित मित्र समझावैं बैन । कह्या न षडग लिया परिसेन ।।११०६।।

जे वचन सुणि भया मन भंग । ब्याह करूं नहीं याके संग ।।
कहै पवन मैं दीक्षा लेसि । प्रात भये सब तजिस्यों भेसि ।।११०७।।

प्रात भये उठिया कुमार । मन चाहे ल्यौं दिक्षा भार ।।
प्रहसित मित्र कुंवर संग चल्या । मता विचार सुणाया भला ।।११०८।।
जे तुम लेस्यो दिक्षा जाइ । होण कहेंगे सगला राय ।।
एक बार लुटैं इह देस । पाछें होइ दिगंबर भेस ।।११०९।।
दोनूं गये पिता के पास । म्हारैं हैं दिक्षा की आस ।।

वंतीपुर पर चढाई

एक बीणती सुंण हो नाथ । वंतीपुर कौं ल्याउं हाथ ।।१११०।।

इतनी सुणि सब सैन हंकार । चढ्या कोप करि पवनकुमार ।।
कुज सेन्या रावण लगी बुलाय । दंतीपुर कौं घेरया जाय ।।१११११।।
बाजैं मापु नाना भांति । रोम उठी सुरों के गात ।।
अंजनी कांन पडी ए बात । सीस धुर्णी चितवै बहु भांति ।।१११२।।
निश्चना कवंग पाप मैं किया । मंगलचार समैं दुख दीया ।।
खाय पछाड धरती पर पडी । दवा उपाव सेवा बहु करी ।।१११३।।
बडी बार में भई संभालि । विभनारिणी कुं दीनी गाल ।।
अन सब भाष्या खोटा बयण । सुणे पवन देखै निज नैंण ।।१११४।।
में अबही मांडुं सन्यास । जीवत जनम में भइ निरास ।।
नगर माहिं अति हुवा सोर । व्याह बीच तब मांची रोर ।।१११५।।
पवन नाम दुलह का सुण्यां । पवन समान आईथा मनां ।।
अैसी बात वहै चिहुं ओर । अैसी याहि कुंमरि में खोरि ।।१११६।।
सुणी बात महेन्द्रसेन । प्रहलाद निकट आया सिख दैन ।।
हमतैं कहो चूक के परी । तुम आपणों मन अैसी धरी ।।१११७।।
हम तुम में थी पहली प्रीत । कैसे कारी जुध की रीत ।
आज चाहिये रहसानन्द । किह कारण तुम कीया दंद ।।१११८।।

दूहा

पवनंजय अंजना विवाह

महेन्द्रसेन के सुणि वचन, मिटया क्रोध का भाव ।।
बहुरया रहस रली भई, दुहुं कुल अधिको चाव ।।१११९।।

चौपई

कुंवर के मन की खुटक ना जाइ । संभा भांवर कीम छर भई ।।
अंजनी का भाज्या मन दुख । सुफल जनम करि मान्या सुख ।।११२०।।
भए बिदा बीरया इक मास । जब पहुंचे अपने घर बास ।।
मन सेती भूलैं नहीं बात । रोवैं खुटक कुमरि दिन रात ।।११२१।।

दूहा

पवनंजय के मन की खुटक, कबहिं न होवै दूरि ।।
अंजना सुंदरि क्या करै, दीदा कुमाया क्रूरि ।।११२२।।

चौपई

अंजना का दुःख

मंदिर न्यारा अंजनी नैं दीया । रहै अकेली कंपै हिया ।।
अपणी निंदा बहुतैं करैं । भुगत्या बिना करम नही टरैं ।।११२३।।

पवनंजय कुमर भरम की देह । मैं पापणी किय होइ सनेह ॥
कै मैं जिन गुण निन्दा करी । जिनवाणी नहीं निश्चय धरी ॥११२४॥
कै गुरु का राख्या नहीं मान । कै मनधर नहीं सुण्यां पुराण ॥
कै किस ही को किया बिछोह । कै मिथ्या सौं ल्याया मोह ॥११२५॥
कै भोजन उठि खाया रति । परनिंदा कीनी बहु भांति ॥
तो इह मुझ नै भया वियोग । असुभ उदय तैं बाढ्या सोग ॥११२६॥
ऐसे कहि अंजनी पछितांहि । सखी सहेली कहैं समझाय ॥
मनमें चिंत करौं मति धणि । करम उदै ते ऐसी बणी ॥११२७॥
अंजनी कै है पवन का ध्यान । अब इहां कथा चली है आन ॥

रतन द्वीप राजा के साथ रावण का युद्ध

वरण है रतनद्वीप का राय । रावण कौं नहीं मांणैं दाय ॥११२८॥
रावण ने तब भेज्या दूत । वरण भूप पैं जाइ पहुंत ॥
वासुं वातां कहै बसीठ । रावण नें तैं दीनी पीठ ॥११२९॥
उण राजा जीते सब देस । तीन खंड के करै आदेस ॥
इन्द्र वैश्रवण जीतिया कुवेर । जम नलकूबर पकड़्या घेर ॥११३०॥
तुं समुद्र में छिपकरि रह्या । अब तुं मांनि हमारा कह्या ॥
रावण सेव करो कर जोडि । आग्या मांनि तुं आव बहुरि ॥११३१॥
तुज बहु देस परगने देइ । आदर सहित नगर में लेइ ॥
इतनी सुण कर कोप्या भूप । रक्त नयन भय दाई रूप ॥११३२॥
बोलै राजा सुण रे दूत । रावण नें सराहित बहुत ॥
जै वहु बहुत कहावै सूर । हमसौं जुध करो भर पूर ॥११३३॥
धका देइ पुर बाहर किया । दूत लगा मन विस्मय भया ॥
दूत रावण पैं आया फेर । कही सकल उन उन नीचैर ॥११३४॥
सुणत वचन तब उठ्या रिसाइ । सूर सुभट सब लिये बुलाइ ॥
रतनदीप कुं घेरा जाय । सुनत वरण तब निकस्या धाइ ॥११३५॥
राजा पौंडरी दोऊं सुत चले । सेना जोडि सूरमा मिले ॥
दुहूंघां लडैं बडे सामंत । पैदल सुं पैदल भुझंत ॥११३६॥
मैंगल सौं मैंगल बहु भिडे । रथ सौं रथ टूटि गिर पडे ॥
रावण की सेन्यां भहटाइ । बांधि लिया षडदूषण राय ॥११३७॥
रावण का मन दुचिन्ता भया । मंत्री सेती मता तिन किया ॥
मंत्री जन दीया उपदेश । बुलाए नगर के भूप नरेस ॥११३८॥

बरण भूप कौं पेरचा आय । ऐसा मता नृप किया उपाइ ॥
सकल ठौर कौं गए जबीन्द । आवो वेग मति ल्यावो ढील ॥११३६॥

राय प्रहलाद के पास रावण का सन्देश

राय प्रहलाद पैं गया वसीठ । चीठी दई पढी भर दीठ ॥
मांथै कागद लिया चढाय । पढि पढि पत्री नवण कराय ॥११४०॥
दल सज किया पलाणी तुरी । पवनंजय कुमर बीनती करी ॥

पवनंजय द्वारा युद्ध में जाने का प्रस्ताव

तुम इहां बैठि करो प्रभु राज । तुम आगैं हम सार्थं काज ॥११४१॥
पिता आगैं सुत करै न कांम । महा कपूत कहै सब गांम ।
बोले राजा सुणौ कुमार । तुम क्या जाणौ जुध की सार ॥११४२॥
कुमर पितासो बिनती करै । सिंह पुत्र किसका भय धरै ॥
ताकौं कवरण सिखावै दाव । भाजै हस्ती सुणतां नांव ॥११४३॥
हस्ती भाजै थानक छोडि । सिंह के सुत की सहै न ठोडि ॥
पिता कहै दिखावो प्राकर्म । मेरे मन का भाजै भर्म ॥११४४॥
जब बोल्या पवनंजय कुमार । निसका करै बल सिंह का सार ॥
कांम पडे तब देखो बात । बरणह बांधु अब ही जात ॥११४५॥
सोम माल दरी न बंस । ज्यौं सरवर में सोमैं हंस ॥
करि सनान बहु भोजन खाइ । उत्तम वस्त्र तिन पहरे जाय ॥११४६॥
बांधि हथियार सेना संग लई । बहुत असीस बडे जन दई ॥

अंजना द्वारा पवनंजय को विदाई

सब कुटुंब भेट्या गल ल्याइ । तिहां अंजनी ठाढी आय ॥११४७॥
देह मलीन रही मुरझाय । ताहि देखि मन पवन रिसाय ॥
यह क्यों आई है इण वार । निठुर वचन मुख कह्या अपार ॥११४८॥
त्रिया कौं लागे मीठे बयण । सुणि सुणि होय बहुत ही चैन ॥
धन्य धन्य है आज का दीस । पिय के वचन सुने करि हौंस ॥११४९॥
बहुरि अंजनी बिनती करै । नीची दृष्टि चरण चित धरै ॥
जे तुम थे इस नगरी मध्य । तुमरी निस पावैं थी सुध ॥११५०॥
मेरे मन ऐसी थी आस । इक दिन प्रभु बोलेगा हास ॥
अब तुम गमन करो परदेस । तुम बिन क्यु जीवस्युं नरेस ॥११५१॥
बहुत भांति बीनवै अंजनी । वाकैं दया न आयी किनी ॥
हस्ती चढया साथि सुभ घडी । वहोत सौज लीनी सुभ बडी ॥११५२॥

मानसरोवर उतरे जाय । सेना सकल रही तिह ठांय ।।
देख सरोवर निरमल नीर । मंदिर देखे ताके तीर ।।११५३।।

ऊंचे बैठा पवन कुमार । देखें इत उत द्दष्टि पसार ।।
आवे सीतल पवन सुवास । पंथी सब दल बैठिहु पास ।।११५४।।

पवनंजय द्वारा चकवा चकवी का वियोग देखना

हंस आदि बहु जलचर जीव । सर ढिंग करें किलोल अतीव ।।
काई कूद जल भीतर पड़ें । तिहां बैठि अति क्रीडा करें ।।११५५।।
चकवी चकवा रयण वियोग । व्याप्या तबै कंत का सोग ।।
झांई जब देखें जल मांहि । ताकौं समझै अपणा नाह ।।११५६।।
निरखें झांई करें पुकार । कबहां जाय चढे द्रुम डार ।।
सीतल नीर अगन सम लगै । ऐसें सब निस चकवी जगै ।।११५७।।

ऐसा दु:ख पवनंजय देख । मनमें उपजी दया विशेष ।।

अंजना से मिलने की इच्छा

बाईस बरस मुझे व्याहां भया । अंजना सुंदरी नें दुख थया ।।११५८।।
घर हूं चल्या जुध के काज । मुझि मर्क जो पूरी लाज ।।
मुझ वियोग अंजना मरै । बिना वस जनम इह गिरै ।।११५९।।

किण विध जाय अंजनी सुं मिलुं । सोक वियोग वाकों सब दलौं ।।
घर सैं विदा होय मैं चल्या । फेर न बैन कहे कोई भला ।।११६०।।
प्रहसित मित्र सों पूछी बात । अंजनी दुख पाया बहु भांत ।।
वाकी चुकि तउथी कछु नांहि । दया कही क्या लागै ताहि ।।११६१।।
कवण जतन देखुं अंजनी । मोकूं कठिन भाई यह बनी ।।
सज्जन कुटंब लोग की कांणि । दोन्युं कठिन बणी है आंणि ।।११६२।।
प्रहसित कहै चलिये प्रच्छन्न । जैसे कोई लखै न चिह्न ।।
एक सोच उपज्या इण बार । सेना में ह्वैगी जो पुकार ।।११६३।।

समाधान दल का तुम करो । तो पाछै यहां तैं तुम टरो ।।

मुदगराय सौं भाषी बात । हम समेद गिर जाय हैं जात ।।११६४।।

इहां तुम सावधान बहु रहो । श्री जिन के दरसन हम लहौं ।।
बहुत हार फूलन के लिये । चंदन केशरि उत्तम फल नये ।।११६५।।

बहोत सौंज ले दोनुं चले । करि आनंद हीए में खिले ।।

अंजना पवनंजय मिलन

अंजनी के मंदिर में गया । प्रहसित मित्र बाहर ही रह्या ।।११६६।।

अंजनी ने देख्या जब पौन । उठी पुकारी तु है ह्यां कौन ॥
दहा कौं अबै जगावण लगी । पुरुष देखि अंजनी भगी ॥११६७॥
बोले पवन डरैं मति नारि । हूं आयो तेरा भरतार ॥
इतनी सुणि मन भयो उल्हासि । विधनां पूरी मन की आस ॥११६८॥
नमस्कार पवन सौं कियौ । दरसण देखत दुख विसारियौ ॥
बैठा सेज्या ऊपर आय । गद गद बोल बोलैं बहुभाइ ॥११६९॥
दासी बात कही थी बुरी । मैं वाकी कछु चित्त न धरी ॥
मोकुं दुख लिख्या इं भांति । कर्म रेखा मेटी नहीं जात ॥११७०॥
तब पवनंजय धीरज देइ । अपणें मन नहीं चित करेइ ॥
मैं तो आप भया अभ्योल । मैं तुमकूं दुख दिया अतोल ॥११७१॥
हम तुम है दोउ बालक देह । बहुत दिना दुख होत सनेह ॥
सोभा रयण चन्द्र तैं बणै । जैसे सुख देखेगी घणे ॥११७२॥
जिम पाछली निशा के समैं । चंद्र प्रकासि ज्योति कूं गमैं ॥
जब म्है आंण किया परकास । तब ही जाणी भोग विलास ॥११७३॥
दोऊ बोलैं अमृत बैण । दंपति मिलैं भया सुख चैन ॥
दोन्यूं करैं कोक की रीत । प्रथम समागम त्रिया भयभीत ॥११७४॥
सरब सुख सुगत्या बलवीर । दोन्यूं सुखी इक भया सरीर ॥
बहुरयां ते सूते गल लागी । बीती रात शशि गयो भागि ॥११७५॥
पवन सरूप देखि छवि कांति । हारि शशि मानि भाज्या प्रातः ॥
रवि उदयाचल उग्या आइ । दरसण देख्या चाहै राइ ॥११७६॥
वसंतमाल परभातहि जागि । आयी निकट बारणै लागि ॥११७७॥
पौलि खोलि आई उण पास । अंजनी बैठी नीचै जास ॥
कुंवर जगाया कर पद लागि । जागि पवन अंगराया आप ॥११७८॥
अंगुली चटकावैं अरु जंभाइ । रक्त नयण बहुतैं घमाइ ॥
गमण काजि सुरत गई भूलि । भए मगन दोउ सुख के मूलि ॥११७९॥
प्रहसित पास पवनंजय गया । भला भया दोन्युं मिल ठया ॥
अबेर भया प्रगटै इह ठांम । कातर होइ हमारा नाम ॥११८०॥
सब कोई फिर आया कहै । कपूत नांम प्रथ्वी पर लहै ॥
आगे पहरि भये तय्यार । अंजनी करै अधिकी मनुहार ॥११८१॥
हमनैं काज रावण का कारणां । कारजि साधि वेगा फिरणां ॥
अपणा मन राखियो अडोल । असैं कहै पवनंजय बोल ॥११८२॥
अंजनि के भरि आये नैंन । कह्यो कुटुंब सों अपने बैन ॥
मैं असनान किया है आजि । गरभ रहै तो आवै लाज ॥११८३॥

बोले पवन सुणों हो स्त्री । अैसा भय तुम नां चित धरी ॥
तीस मास लगि त्यौं न कोइ । फिर आउं भाग वतीन न होइ ॥११८४॥
अंजनि बोली दो कर जोडि । तुम विलंब मोहि लागे षोडि ॥
जे तुम कही कुटुंब सौं बात । कोई न दोष लगै किण भांति ॥११८५॥
अंजनी सेती कहृ समझाय । सबसौं मुंह मिल हुये हम जाय ॥
तुमसौं विदा हुए थे नहीं । तातें आइ मिले हम सही ॥११८६॥

अंजना को मुद्रिका देना

जो तुम कछु मनमें भय करो । मुद्रिका मेरी तुम कर धरो ॥
इह सहनाणी दिखाइयो नारि । हमको सीष आयो इण बार ॥११८७॥
चल्या पवनंजय और प्रहसित । चढ विमांण चाल्या विहसित ॥
आकास गामनी विद्या संभारि । दोन्यूं पहुंता कटक मंझारि ॥११८८॥

सोरठा

पुन्य संजोगै होय, भोग तांहि जिय सुख सन्धि है ॥
विषय बेल फल होय, तब अैसा बहु दुख सहै ॥११८९॥

इति श्री पद्मपुराणे पवनंजय अंजनी मिलाप विधानकं ॥

सोलहवां विधानक

चौपई

अंजना द्वारा गर्भ धारण करना

सुख में मास गये यूं बीत । प्रगटत भई गरभ की रीत ॥
पीत वदन कंचन सम जोति । दिन दिन उदर अति ऊंचा होत ॥११९०॥

केतुमति द्वारा पूछताछ

चलै चाल गयंवर की भांति । केतुमती जब सुणी इह बात ॥
अंजनी पासि आइ पूछी सुरति । तैंन कवण करी इह करतूति ॥११९१॥
साचे वचन कहो मुझ आय । वैघज ताहि लगाऊं हाथ ॥
उज्जल कुल को कालष चढी । अैसी चिंता वास मैं बढी ॥११९२॥

अंजना द्वारा स्पष्टीकरण

अंजनी वीनवै दोइ कर जोडि । मोकुं कछुवन लागै षोडि ।
मानसरोवर परि तुम्हारे पूत । देख्या चकवी वियोग बहुत ॥११९३॥
मेरी दया विचारी हिये । ह्वातैं आय रात सुख दिये ।
च्यार पहर मुझ मंदिर रह्या । प्रात भये उठि मारग गह्या ॥११९४॥

मैं उनने बहु बिनती करी । कुटंब सौं कही बात इण घरी ॥
बे बोले यह जो मुंदडी लेउ । जो कोई पूछै तो इह देउ ॥११९५॥
जो मेरी मानु नहीं बात । देख मुंदडी मानु सांच ॥
केतुमती बोली रिसखाइ । निठुर बचन भाख्या बहु भाइ ॥११९६॥
बाईस बरस बिवाह को भए । तेरा नाम सुणत दुख सहे ।
जो तेरी छुं देखता छांह । महा कोप उपजै था तांह ॥११९७॥
चलण समय तुझसौं रिस कारी । तेरी दया नहीं उर धारी ।
ऐसी तोस्यूं क्या सनमंध । वह फिर आया खनैं बंध ॥११९८॥
बिभचारिणी तैं किया कुकर्म । मोसुं कहै पवन का भर्म ॥

अंजना को ताड़ना

लाठी लातें मारी घणी । ठौर ठौर अंजनी कौं हणी ॥११९९॥
वसंतमाला परि कोपी बहुत । हे बिभचारिणी तुहै कुत ॥
तेरे आगै कारण इह हुवा । झूठा पवनंजय कुं दे दुवा ॥१२००॥
तोकुं देखि कहा हूं करउं । मारि तोहि जम मंदिर धरउं ॥
अकुहरा किंकर लिया बुलाइ । इनकौं पिता घर ले जाइ ॥१२०१॥
महेन्द्रपुर मांहि लेकै छोडि । दोई जीवस्यौं क्या मारू ओरि ॥
जो मैं अब दोन्यू जीव हतौं । तोलस बंध भमुं चिहुं गतौ ॥१२०२॥
इह बात प्रहलाद नृप सुणी । क्रोध लहरि उपजी चित घनी ॥
वेगि निकाल मंदिर तैं देहु । या का नाम न फिर कैं लेहु ॥१२०३॥

अंजना का निष्कासन

रुदन करत काढी अंजनी । वसंतमाला ताकै संग दिनी ॥
उनकै पीछै किंकर हुवा । बहुत तरास दिखावै कुवा ॥१२०४॥
कहैक वेगि वेगि तुम चलौ । उनका चरणन धरती हलौ ॥
असुभ करम तैं इह दुख भया । पावैं भमी महेन्द्र की धिया ॥१२०५॥
कठिन कठिन वन अंदर गई । किंकर कै मन चिन्ता भई ॥
इह पवनंजय की पटधनी । या कौं बेला ऐसी बणी ॥१२०६॥
अब मैं छोडौं इनकौ दुःख । इनके दिन फिरए लहैं सुख ॥
सुणै पवन मारै मुझ ठौर । तब मुझ कौण छुडावै और १२०७॥
किंकर करै बीनती बहु भांति । मेरी चूक नाहीं कछु मात ॥
तुम्हरे सासु सुसर नैं कह्या । उनके बचन तुम्हें दुख सह्या १२०८॥

मैं सेवक विनउं कर जोडि । मेरी चित्त न आणौं खोडि ।।
कोस च्यार जब नगरी रही । भई रयण वन आश्रम गही ।।१२०६।।
अैसा दुख अंजनी कुं भया । देखि रुदन दिनकर लोपिया ।।
इह सब दोस करम की देह । ऊंचे नीचे उसास बहु लेह ।।१२१०।।
गरजैं सिंह हस्ती तिंह ठौर । वन में करैं स्याल अति सौर ।।
इनका दुख देखि सब पंछी रोवैं । पात बिछाइ भूमि पर सोवैं ।।१२११।।
इक दिन बीतैं बरस समान । मनमें सुमरैं श्री भगवान ।।
बसंतमाला की जांघ पर मूंड । वन भयदायक दीसैं सूंड ।।१२१२।।
कठिन कठिन बहु पीडित भई । तब कछु भय चितसैं मिट गयी ।।
सुमरैं जिनवर बारंबार । असुभ करम के टारन हार ।।१२१३।।

दूहा

धरती पांव न जे धरैं, सोवैं सेभ्र अनूप ।।
वनमें निस दुखस्यौं कटी, पांव चली भरि धूप ।।१२१४।।

चौपई

अंजना का महेन्द्रपुरी जाना

भए प्रभात महेन्द्रपुर गयी । पिता द्वारि जाइ ठाढी भई ।।
पौलिया भीतर जांण न देइ । बसंतमाला ताहि जंपेइ ।।१२१५।।
इह अंजनी राजा की धिया । याकौं असुभ करम दुख दिया ।।
महिंद्रसेन कौं इह सुधि देहु । तेरी सुता आइ तुझ गेह ।।१२१६।।
सिलकपाट पौलिये का नाम । पहूंच्या राज सभा की ठांम ।।
नमस्कार करि भाषी बात । अंजनी आई आज प्रभात ।।१२१७।।
प्रसनकीर्त्ति को दिया उपदेश । आदर सौं कीजे परवेश ।।
नगर छवावो हाठ बजार । बहुत भांति कीजे मनुहार ।।१२१८।।
तब अकरूर कहै समझाय । मेरी विनती सुनिये राय ।।
केतुमती यह दीनी काढि । उनके चित ए चिंता बाढि ।।१२१६।।
बाईस बरष ब्याह कौं भए । पवनंजय निज मंदिर गये ।।
पवन गया रावण के काज । इन ल्याई दोन्युं कुल लाज ।।१२२०।।
याकूं भई गरभ की थिति । तुम राखो जे आवैं चित्त ।।

पिता द्वारा निष्कासन

इतनी सुणत कोपिया भूप । रक्त नयन अर क्रोध के रूप ।।१२२१।।

बेग नगर तें देहु निकार । उनकौं नीकौं अठी कुमार ।।
वसंतमाला राजा पै गई । करि डंडौत चरण को नई ।।१२२२।।
अंजनी बहौत लाडली सुता । वागौं मोह बहुत तुम हुता ।।
निसदिन जीव सम गिणते ताहि । याका बचन डारते नांहि ।।१२२३।।
असी अति प्यारी थी धिया । केतुमती वाकौं दुख दिया ।।
मानसरोवर पवनंजय गया । चकवी रुदन देखि भई दया ।।१२२४।।
वहांतै आय किया संजोग । च्यार पहर निस भुगते भोग ।।
करी खोज तब कीजौं क्रोध । नीके न्याव समझो नृप बोध ।।१२२५।।
केतुमती इह दीनी काढि । याकौ अब बनी अति गाढि ।।
पिता गेह नहीं पावै ठांह । हारे थके बिरख की छांह ।।१२२६।।
सब मंत्री समझावैं ग्यान । कोई चित्त नहीं आवै आन ।।
बसंतमाला ऊपर रिस करी । तू बिभचारिणी है अति बुरी ।।१२२७।।

सब ओर से तिरस्कृत

ए सब भई तुझ ही तें खोडि । तो कौं दुख दीजे ते थोडि ।।
हेला ईंट पत्थर की मार । नगर माहिं तें दई निकारि ।।१२२८।।
जिहां जिहां तैं भाई बंध । घरि घरि फिरी जांणि सनबंध ।।
कोई वारनु न देखन देहु । द्वार ही ते पाथर लेय ।।१२२९।।
सब कुटब की छोडी आस । दोन्यु नारि लिया बनवास ।।
हस्ती सिंह चीते तहां फिरैं । महा भयानक बन में डरैं ।।१२३०।।
रोवैं पीटैं करैं पुकार । स्यावै देही भाव विकार ।।
भूख पियास सतावै देह । कपडा फाटैं लागैं खेह ।।१२३१।।
आंसौं चलैं दुख व्यापया घणां । ऐसा जोग करम का बण्यां ।।
पवनंजय मोसौं अस करी । बिछोहा समै प्रीत चित धरी ।।१२३२।।
सासु सुसरैं दई निकार । मात पिता कछु करी न सार ।।
करम विपाक जांणि मनमांहि । जननी पिया दया उर नांहि ।।१२३३।।
या मुझसौं कछु किया न मोह । निर्दय बने अक्षर नहीं लोह ।।
जो मृगपती मुझनें इहां खाइ । दुख सकल बियोग मिट जाइ ।।१२३४।।
ताती लू लागैं तन तपैं । छिन छिन नाम जिनेश्वर जपैं ।।
केस उखारि र पीटैं हिया । कवण पाप पूरब मैं किया ।।१२३५।।
बार बार सुमरै भगवंत । तुम बिण कुण सरणागति संत ।।
दूजा कोई नहीं सहाय । बेर बेर सुमरैं जिणराय ।।१२३६।।

बसंतमाला समझावै ताहि । सुख दुख करमतणा फल आहि ॥
इनकौं होत न लागै बार । कबहुक रंक कबहु भो बार ॥१२३७॥
बनहि देखि धीरज नहीं धरै । बसंतमाला अंजनी स्युं कहै ॥

अंजना का गुफा में शरण लेना

परवत ऊपरि गुफा है भली । दोन्यु गिरिवर ऊपरि चली ॥१२३८॥
तिहां भौंयंग करैं फौंकार । बारह कोस होइ बन छार ॥
देखत बन लागै भय घणी । नांम सुणत आवैं कंपणी ॥१२३९॥
झांखडी सूल पडे चिहुं ओरि । पांव धरण कौं नाहीं ठौर ॥
कपडे झाडी सौं लग फटे । बारिझ कोरि देह कौं कटै ॥१२४०॥
पग भीतर बहु कांटे गिडै । असे दुखसौं परवत चढै ॥
तिहां ठौर षोह बहु परी । ताहि देखि बह दोन्युं डरी ॥१२४१॥
थकी वृक्ष तल चलै न पांव । बसंतमाला बोली इह भाव ॥
जिम तिम चल करि थानक गहौ । गुफा मांहि निरभय ह्वै रहौ ॥१२४२॥
देही छुलि छुलि हुआ पिंड । पाव बिगास हुआ कैई पंड ॥
लेइ उसास रोवै अंजनी । चला न जाय कठिन गति बनी ॥१२४३॥
बामैं दाहिणै कहीं न ठांव । दशौ निविष किण दिस आउं ॥
बसंतमाला कर पकड्या आइ । थांभती ठेकती गुफा में जाय ॥१२४४॥

सघन वन में मुनि दर्शन

बैठि गुफा में आश्रम लिया । मातंग बन सकल दृष्टि में किया ॥
देखे वृक्ष मनोहर फले । ता बन में मुनिवर तप करें ॥१२४५॥
नासा दृष्टि आतम ध्यान । तेरह विध पालणा धरि ध्यांन ॥
सहैं परीसा बाईस धीर । छह रितु की व्यापै नहि पीर ॥१२४६॥
मुनिवर बन में भय नहीं धरैं । देह तणी ममता परिहरैं ॥
ग्यानवंत जिम समुद्र गंभीर । भुल्या भव्यां बतावैं तीर ॥१२४७॥

मुनि वंदना

जाकैं है उत्तम छिमा आदि । पंच इन्द्री का लहैं नहीं स्वाद ॥
अंजनी आइ प्रदक्षिणा दई । नमस्कार करि चरणां नई ॥१२४८॥
बसंतमाला किया परणाम । बारंबार पढैं गुणग्राम ॥
समाधान पूछैं मुनिराय । मुनिवर भणैं करम परभाव ॥१२४९॥
महेन्द्रसेन की इह पुत्री । सत्त सील संयम गुण भरी ॥
प्रहलाद राय पवनंजय पूत । बाईस वर्ष दुख दिया बहुत ॥१२५०॥

चलती बेर किया संजोग । केतुमती नैं दिया विजोग ।।
कोई नाहीं दुःख सहाइ । असुभ कर्म उदय भया म्राइ ।।१२५१।।
ग्रैसे करम सब ही कुं लगैं । कोई नाहि करम तैं भगैं ।।
अंजनी बसंतमाला चुप रहै । थी मुनि सब आगम की लहै ।।१२५२।।

बसंतमाला द्वारा पति वियोग का कारण पूछना

बसंतमाला पूछे कर जोडि । बात हमारी कहो बहोरि ।।
कैसा जीव गरभ किम पडया । कठिन पाप करकैं अवतरया ।।१२५३।।
किम वियोग हम कौं इह भया । पूरब पाप कवण हम थया ।।
बोले मुनिवर लोचन ग्यांन । पुन्य जीव गरभ भयो आनि ।।१२५४।।
याकौ दूसण नाहीं कोइ । अंजनी पाप उदय तें होइ ।।
महापुनीत धर्म की देह । चरम सरीर पुत्र तुझ गेह ।।१२५५।।

मुनि द्वारा समाधान

हनुमान होसी तुझे पुत्र । कामदेव बलवंत बहुत ।।
उसका भव पूरबला सुणौं । रोग सोग मन को सब हणौं ।।१२५६।।
जंबू द्वीप भरत क्षेत्र आहि । अमितगति नगरी ता माहिं ।।
मंदिर अभिय राजा धरमिष्ट । नंदीनमैं सम्यक दृष्टि ।।१२५७।।
जया देवी राणी ता गेह । मदी पुत्र की सोमैं गेह ।।
रितु बसंत खेलैं सब लोग । नंदन बन में वृक्ष अशोक ।।१२५८।।
रागरंग गावैं सब ठौर । सकल जगत में सुख का सोर ।।
विद्याधरी जोषिता घणी । चली जात आकास गामणी ।।१२५९।।
देखि दमैं दौडया आकास । मुनिवर निरख गई ता पास ।।
नमस्कार करि पूछया धर्म । सुणे वचन ते लागे मर्म ।।१२६०।।
एक दिन मुनि कौं दिया आहार । विनयवंत होइ कीनी सार ।।
नित उठ साधै आतम ध्यान । अंत समैं पढैं पंच प्रभु नाम ।।१२६१।।
देही तजि गया सौधर्म विवान । भया देव पाया सुख ठाम ।।
व्हां ते चय मृगांकपुर देस । सूरज चंद्र तिहां राय नरेस ।।१२६२।।
भीव भंग ताकैं पटधरणी । सिंघरथ पुत्र सु सोभा बणी ।।
समकित पूरण भया काल । उपनां जाय स्वरगपुर बाल ।।१२६३।।
विजयारध तहां अरतनदेस । सुकच्छ नाम तिहां तणों नरेस ।।
कनकोदरी राणी सुंदरी । घनवाहन पुत्र भया सुभमती ।।१२६४।।
जोबन समैं विवाही नारि । बीतैं निस दिन भोग मझारि ।।
विमलनाथ स्वामी अरिहंत । निरवाण गये श्री भगवंत ।।१२६५।।

तिरण अवसर घनवाहन राय । राजकरत सुख में दिन जाय ।।
मेघकूट देखि भयो वैराग्य । राजविभूति कूं वहीं त्याग ।।१२६६।।
लक्ष्मी तिलक मुनिवर ढिग आइ । दिक्षा लई वचन मन काइ ।।
तेरह विध चारित्र सौं ध्यांन । वैयावरत करौं उत्तम ग्यांन ।।१२६७।।
सोलहकारण दसलक्षण वरतैं । रतनत्रय पालत गुण धरत ।।
बारह अनुप्रेक्षा चितप्रेषि । बाईस परीस्या सहैं विशेष ।।१२६८।।
बारह विध तपसों मन ल्याइ । बाह्याभ्यंतर एकै भाइ ।।
सब जिय आप समानैं जानि । धर्मोपदेस करैं व्याख्यान ।।१२६९।।
आतमदरस ज्योति सौं लगी । सास उसास ग्यांन करि पगी ।।
मास उपास पारणां करै । ऐसा तप गरवा तन धरै ।।१२७०।।
लांत स्वर्ग में अमर विमाण । देही छांडि भया सुरथांन ।।
यहां ते चइ तुम कूंखि में आइ । पुन्यवंत कंचन सम काय ।।१२७१।।

दूहा

अब भव सुणि अंजनी तणां, कहैं संषेप बषांण ।।
वचन लगै अमृत समां, बोलै ग्यांन प्रवान ।।१२७२।।

चौपई

विजयारध नगरी तिहा अणं । सुकंठ भूप भव का दुख हणं ।।
ताकैं घर पटराणी दोइ । सीलवती पतिव्रता सोइ ।।१२७३।।
कनकोदरी न लक्ष्मीवती । दोन्यु मांभैं गुण गुणमती ।।
लक्ष्मीमती प्रतिमा जिण पूजि । अन्नपांन आरोगै तूझ ।।१२७४।।

कनकोदरी द्वारा जिन प्रतिमा की चोरी

कनकोदरी तब ऐसी करी । प्रतिमा चोरी वाड मैं धरी ।।
लक्ष्मीवती वरत तैं उठी । जिनप्रतिमां नहीं पाई पुठी ।।१२७५।।
लक्ष्मीमती मन व्यापी पीर । अन्नखाई नहीं पीवैं नीर ।।
श्रीमती अजिका तब आइ । लक्ष्मीमती देख सुरभाय ।।१२७६।।
तासौं अजिका कहै समभाय । अवर प्रतिमां पूजो जाय ।।
वेग सनांन करि भोजन करो । भाव तुमारो पूरण सरो ।।१२७७।।
जिण अग्यांन तैं प्रतिमा हरी । अपणी गति षोटी तिण करी ।।
जनम जनम नरकौं दुख होइ । प्रतिमां जांणि चुरावैं कोइ ।।१२७८।।
भव भव ह्वैंता जीव कैं रोग । सदा कुटंब में पड़ै वियोग ।।
कनकोदरी कंपी सुणि बाल । प्रतिमां आणि दई ता हाथ ।।१२७९।।

मैं तो महापाप इह कियो । प्रतिमा ले जल में राखियो ॥
लक्ष्मीमती न्हाई तिण बार । प्रतिमा पूजि करि लिया आहार ॥१२८०॥

कनकोदरी कुं चिंता भई । वाही समै राजा पै गई ॥
जो प्रभुजी मुझ आग्या होइ । तो मैं अब संयम व्रत ल्योइ ॥१२८१॥

राजा की आग्या जब पाय । श्रीमती अर्जिका पासैं आय ॥
विनती करि चरणन को नई । औसी गैमी मुझ तें भई ॥१२८२॥

दिख्या देहु ज्यौं छूटै पाप । जो तप किये मिटै संताप ॥
दिख्या दई जिनवाणी कही । तपारूढ ह्वं काया देही ॥१२८३॥

तप करि किया करम का घात । देही तजि पाई सुर जात ॥
इन्द्राणी भई सौधर्म विवांण । ह्यां तें भई तू अंजनी आणि ॥१२८४॥

बाईस घडी जिन प्रतिमा हरी । बाईस वर्ष ही आपदा सही ॥
अणछाणी जल प्रतिमाधरी । वनमें पग उगाहणे फिरी ॥१२८५॥

सुणी भरम उपज्या वैराग्य । मुनि कै उठि चरणां में लागि ॥
मैं गर्भ तें हो निर्वृत्त । दीख्या लेई करूं शुभ व्रत ॥१२८६॥

पुत्र जन्म की भविष्यवाणी

बोले मुनिवर ग्यांन विचार । तेरै होई पुत्र अवतार ॥
रामचन्द्र लक्ष्मण का मित्र । बहुरि उ करै धरम की रीत ॥१२८७॥

कामदेव महा बलवंत । ताका नाम होसी हनुमंत ॥
पवनंजय से फिर संयोग । बहुत बरस भुगतेगी भोग ॥१२८८॥

तेरे असुभ करम सब गये । सुख अनंत देखैगी नए ॥
ब्यौरा सुण्या किया नमस्कार । बैठी आय निज गुफा मझार ॥१२८९॥

मनमें रहसि भई अडोल । चित में राखे मुनि के बोल ॥
सब चिंता तब ही मिट गई । प्रगट्या तिमिर रजनी जब भई ॥१२९०॥

दुष्ट जीव हैं बनमें घने । महा भयानक शब्द है सुने ॥
दावानल सा बन सब जलै । गज टक्कर तें परवत हिलै ॥१२९१॥

भाई सबद तें गुंजे गुफा । भय व्यापैं नहीं जीव में कुफा ॥
बसंतमाला अंजनी बिललाई । सोवैं धरती पात बिछाइ ॥१२९२॥

अैसे दुखमौं बीतै घडी । इक इक पलक बरस सम टरी ॥
एक पहर अब बीती रयन । यां सैन्यां कै हिये अचल धन ॥१२९३॥

रतन चूलि खेचर तिहु ठांहु । रतनचूला रांणी का नांम ॥

रतनचूल का अपनी स्त्री के साथ आगमन

अंजनी का दुख सुनि उपनी दया । इहै विलाप बनरण ने किया ॥१२८४॥
इनका दुख करौं अब दूर । असे सम में ए कोई सूर ॥
याही वनकूं देवता आए । एक भवंतर की अवधि उपाइ ॥१२८५॥
ईके गर्भ में है हनुवंत । महोच्छे जाके करें बहु भांति ॥
महाबली अर चरम सरीर । भाइसंवत महा बलवीर ॥१२८६॥
असे बालक तणां अवतार । याही भव पावै सिव सार ॥
गंधर्व जाति के आए देव । मंगलचार करण कौं सेव ॥१२८७॥
सब परवत पर भई सुवास । महारमणीक सोभै तिहुं पास ॥
गावैं गीत अर नाचैं घड़ी । रतनचूल चित अचरज धरी ॥१२८८॥
अबही रुदन होइ था दुंद । पलमैं देख्या होत आनंद ॥
भरे तलाब अर पर्वत भरैं । सूके रुख भए सब हरे ॥१२८९॥
छह रितु के लागे फल फूल । सीतल पवन सुख सम तुल्य ॥
मुनिसुव्रत की जिन प्रतिमा धरी । गंधर्व देव सेव बहु करी ॥१३००॥
संस्कृत में वे गावैं गीत । करैं नृत्य अति महा प्रवीण ॥
देवांगना बजावैं वीण । करैं नृत्य अति महाप्रवीण ॥१३०१॥
पूजा करी अंजनी आय । तीन काल सुमरैं जिण राय ॥
भली भई दही कुगुण समाई । बसंतमाला तब लई बुलाई ॥१३०२॥
जन इसके सब समझै चिन्ह । सैज्या पर स्वाई करी जतन ॥

पुत्र जन्म

भया पुत्र शशि के उद्योत । तम घट गया उजाला होत ॥१३०३॥
रवि कीसी सोभै छवि कांति । बालक सोभै असी भांति ॥
वदन देख रोवै अंजनी । कहै बचन सुभ असी बनी ॥१३०४॥
पुत्र जनम होता घर मांहि । तो मनमांथा होत उछाह ॥
जो होता पवनंजय गेह । पुत्र देखि करता अति नेह ॥१३०५॥
जनम समय देता बहु दांन । पीहर का करता सन्मांन ॥
अब वनमें आई परदेस । कहा करूं किससुं उपदेस ॥१३०६॥
देवांगना समझावैं ताहि । यह बालक मेटै दुखदाह ॥
पुण्यवंत जीव जन्मीयौ । देव आय महोत्सव कियौ ॥१३०७॥

पराक्रमी एकाभव मोक्ष । असा पुत्र भया तुम कूंखि ।।
अब अपणां मन करो आनंद । यह बालक जैसे मुनि चन्द ।।१३०८।।
रक्षा बहुत करेंगे देव । देवांगना करेंगी सेव ।।
विद्याधर स्त्री संयुक्त । गुफा दुवारै आय पहूंत ।।१३०९।।
विद्याधरी बालक ढिग गई । देख बदन बलिहारी लई ।।
प्रति सूरज रह्या बाहरी ठौर । जहां देवता बैठें और ।।१३१०।।
वसंतमाला मन चिंता करै । मत कोई दुरजन बालक हरै ।।
निकलि गुफा तैं बाहर आइ । विद्याधर ढिग बैठी जाइ ।।१३११।।
तब खेचर पूछै विरतांत । तुम क्यों रही वनमें इण भांति ।।
तुम अपणां समझाइ भेव । तो देउं भाजै अहमेव ।।१३१२।।

खेचर के प्रश्न का उत्तर

पिछली बात कही समझाय । इह है सुता महेन्द्रराय ।।
मनोवेगा गर्भ तें भई । प्रहलाद राय के सुत परणई ।।१३१३।।
इहै पवनंजय की अस्तरी । बाईस बरष वियोग में पड़ी ।।
रावण के कारज कौं चल्या । चकवी वियोग देख फिर मिल्या ।।१३१४।।
मात पिता भी मिल्या न कुमार । एक रात रह गया तिह बार ।।
केतुमती इहै दई निकाल । याकी किनहि न करी समार ।।१३१५।।
ताथी आई गुफा में रही । सर्वकथा ब्योरास्यु कही ।।
मुनिवर पासि सुणे परजाइ । किये करम सो भुगतै काइ ।।१३१६।।
वसंतमाला तब पूछै बात । अपणां कहो नाम कुल जात ।।

खेचर का परिचय

विजयारध उत्तर दिस ओर । हनुरुह नगर बसै तिह ठौर ।।१३१७।।
विचित्र नाम तिहां भूपती । सदमासगण राणी सुभमती ।।
प्रतिसूरज हूं ताको पूत । ओरा सकल कला संयुक्त ।।१३१८।।
अंजणि सुणि हिय गह भरी । मामा सौं बोली तिह घरी ।।
कंठ लगाय रुदन करि मिली । बसंतमाला छुडावै मन रली ।।१३१९।।
नीर आणि परछाल्या मुख । दोन्यां होए भयो अति सुख ।।
थाइ संग नाम जोतगी संघात । तास्युं पुछी जनम की बात ।।१३२०।।
कैसी घडी जन्म्या इह पूत । कवण कवण लक्षण संयुक्त ।।
चैत्र बदि आठैं अधरात्रि । श्रवण नक्षत्र उदय शशि कांति ।।१३२१।।

ता समये हुवा परसूत । कौण लगन में जन्म्यां पूत ।।
पौंडी लेइ करि जोतिग साधि । सुपभ नाम संवतसर बाधि ।।१३२२।।

सूरज स्वामि वरष का कह्या । सब निरतांत जोतिगी लह्या ।।
रवि है मीन चन्द्रा मक्र । मंगल वर्ष मीन मीन का सुक्र ।।१३२३।।

बुध मीन बृहस्पति सिंह । सनीस्वर मीन का संह ।।
[illegible] लिखि [illegible] देखि । [illegible] विसेषि ।।१३२४।।

दक्षिणा दई विप्र ने राइ । निवरण करी सब देवां आइ ।।

अंजनी का विद्याधर के नगर जाना

अंजनी प्रति बिवाण बैठाइ । बसंतमाला संग लई चढाइ ।।१३२५।।
विद्याधर ले निजपुर चल्या । सुगन मुहूरत साध्या भला ।।
बैठि विवाण चले आकास । देख्या रवि बालक आकास ।।१३२६।।

विमान से हनुमान का शिला पर गिरना

उछल पड्या परबत पर आय । अंजनी पुत्र पुत्र बिललाय ।।
रुदन करै प्रति सूरज घणां । आंसू धार नयण सौं बण्यां ।।१३२७।।
बालक पड्या सिला पर आय । परवत चूर हुआ तिह ठाइ ।।
पुन्यवंत कैं लगी न चोट । चुसै पांव अंगुठा ओठ ।।१३२८।।
हसौर उछलै बारंबार । देख पुत्र सुख भया अपार ।।
लिया उछंग हिया सौं ल्याइ । पुहचे हनू रुह पुर मे जाइ ।।१३२९।।
नगर मांहि अति भयो आनंद । पूजा करि श्री देवजिणंद ।।
बालक बधै नित उत्तम देह । रहै अंजनी मामा गेह ।।१३३०।।

सोरठा

सब तैं बडो ज पुण्य, जल थल में रिक्षा करै ।।
संकट विकट उद्यान, कष्ट पीड सगली हरै ।।१३३१।।

इति श्री पद्मपुराणे हनुमान जन्म विधानकं ।।

१७ वां विधानक

चौपई

पवनंजय के द्वारा रावण से विदा

पवनंजय रावण पैं जाइ । नमस्कार कीयो सिर नाइ ।।
रावण नें अति आदर किया । बिदा वरुण राजा पर किया ।।१३३२।।

पवन संग बहु सैन्यां दई । बरुण भूपसौं चरपट भई ।।
वरुण राय के भूझे पूत । मांड्या वरुण राय अवधूत ।।१३३३।।
खरदूषण तब लिया छुडाय । वरुणें आंणि लगाया पांय ।।
पवनकुमार सराह्या भूप । या का अधिक विराजै रूप ।।१३३४।।

पवनंजय का आदित्यपुर आगमन

भई जीत लंका फिर गया । आदित्यपुर पवन आइया ।।
मात पिता के चरणाउं नया । परियण मांहि बधावा भया ।।१३३५।।
अंजनी तणा महल में जाय । देखी नहीं त्रिया तिह ठांय ।।
मन माहीं अति चिंता भई । मंदिर थी राणी कित गई ।।१३३६।।
मात पिता सूं पूछी बात । मात कह्या उससे बिरतांत ।।

पवनंजय का अंजना के निष्कासन के समाचारों से कुपित होना

तिण कारण घरतैं दी काढि । उंण दूषण किया था बाढि ।।१३३७।।
बोले पवन तब वचन [illegible] । तुम मुझ [illegible] ते [illegible] ।।
तब तुम देते बाहिर निकाल । या बिन प्राण जांहि इह बार ।।१३३८।।
बाकी मोहि बतावो सार । अंजनी पठई किसके द्वार ।।
वा हम भेजी पिता के गेह । तुम उसकी सुधि जाकर लेहि ।।१३३९।।
प्रहसित मित्र लिया तब साथ । दंतीपुर तहां महिंद्रनाथ ।।

पवनंजय का ससुराल जाना

पवनकुमार सुसर पैं गया । उन सनमांन बहुत विध किया ।।१३४०।।
अंजनी तणें महल में गया । देखी नहीं सोच तिण ठया ।।
कंन्या एक देखी तिण ठांव । पूछै बात पवनंजय राव ।।१३४१।।
उन सब कही सुसर की बात । काढी सुता पिता अर मात ।।
ऐसी सुंणत खाई पछाड । बडी बार तन भई संवार ।।१३४२।।
महेन्द्रसेन सौं तब कही आणि । तुम क्यों दई अंजना जाणि ।।
महेन्द्रसेन बोलै समझाइ । याकुं सासु ओलंभा लाइ ।।१३४३।।
सो हम पैं क्यूं राखी जात । ओलंभा तें सुकुल लजाइ ।।
पवन तिलक धरि धरि सुध लेइ । कोई निश्चै खबरि न देइ ।।१३४४।।
प्रहसित सौं पवनंजय कहै । तुम फिर जांहि खबर वे लहै ।।
प्रहलाद केतुमती पैं जाइ । ए वारता कहो समझाय ।।१३४५।।
जो मैं अंजनी पाऊं कहीं । तो मुझ प्राण रहैंगे सही ।।
जो वह मेरे चढै न हाथ । तो मैं भी प्राण तजूं उस साथ ।।१३४६।।

प्रहसित मित्र बहु विनती करै । तुमनैं छोडि जांउ किण घरै ।।

अंजना की तलाश

भरतक्षेत्र ढूंढ़ूं सब देश । अंजनी पावैं कोई नरेस ।।१३४७।।

पवनंजय विदा मित्र ने दई । हस्ति परि चढि गोधरण लई ।।
वन परबत देखी बहु ठौर । रुदन करैं पीछें कर जौर ।।१३४८।।

पचडी पटकी करैं पुकार । कपडे तनके फाडे डार ।।
इस वन में वह कोमल देह । वन भय देखि भई मर खेह ।।१३४६।।

कै वह दुष्ट जिनावर गही । कै विद्याधर ले गया मही ।।
कै उन दीक्षा लीनी जाइ । अन्न पांणी बिन मुरझाय ।।१३५०।।
मैं भी मरूं याहि वन बीचि । ऐसे दुखतैं आछी मीच ।।
हस्ती सेती भणैं कुमार । तू फिर जाइ प्रहलाद के द्वार ।।१३५१।।
भूख प्यास तूं दुखिया होइ । मेरा दुख जाणैं नहीं कोई ।।

प्रहलादराय को पवनंजय का संदेश

प्रहलादराय सौं इम जाय कहो । पवनकुमार अगनि में दह्यो ।।१३५२।।
हस्ती देखि रुदन अति करैं । शाखि पासि कुंवर कैं फिरैं ।।
प्रहसित गयां जहां प्रहलाद । पवनंजय वचन के मुख आदि ।।१३५३।।
वह अंजनी बिन तजै परांण । मैं तुम खबर करी है यान ।।
राजा सुणतैं खाई पछार । रोवैं पीटैं सब परिवार ।।१३५४।।
केतुमती आई सुणि सोर । प्रहसित बातां कही बहोर ।।
केतुमती रिस करी अनंत । तू क्यूं आया छोडि तुरंत ।।१३५५।।
नेस खसोटै कूटै हिया । सब परियण दुख अधिका किया ।।
तिनका दुख बरण्यां नहीं जाय । ऐसे सकल लोग बिललाइ ।।१३५६।।
सीलवती कुं दिया कलंक । इन क्यौं व्यापी अंगी संक ।।

अंजना की तलाश

देस देश के खेचर आइ । प्रहलाद ने बात कही समझाय ।।१३५७।।
पवनंजय अंजनी ढूंढे जाय । उनको तुम पं ल्याडे राय ।।
अर जो आई पहुंचै नहीं । पत्री लिखी प्रति सुरज जही ।।१३५८।।
भेज्या दूत प्रतिसूरज पास । उनसौं बात कही परकास ।।
पवन अंजनी के कारणैं । आपणपैं दुख कीनैं घणे ।।१३५६।।

मात पिता विभव अर त्याग । ढूंढण कारण गया है भाग ॥
पवनंजय कौ तुम ढूंढो जाय । असा कहै प्रहलाद जु राय ॥१३६०॥

प्रतिसूरज अंजनी सौं कही । पवनंजय की कुछ सुध नहीं ॥

अंजना की चिन्ता

असे सुने अंजनी बैन । चिंता व्यापी भयो कुचैन ॥१३६१॥

अब लौं थी उसकी मुझ आसि । उनौं लीया अब बनवास ॥
अब हूं तजूं आपने पाण । असी मोहि बणी है आंण ॥१३६२॥

बसंतमाला सूरिज पै गई । सकल बात तासूं वीनई ॥
तुमारी भाणजी व्याकुल होइ । तुम या धीरज देवो कोइ ॥१३६३॥

प्रति सूरज अंजनी सौं कहै । तू काहे को चिंता गहै ॥
बैठि बिमांण प्रथी सब देखि । पवन मिलाउं तोहि विसेषि ॥१३६४॥

सज्या बिमांण चल्या आकास । देखे बहुपुर पट्टण वास ॥
प्रहलाद तणे विद्याधर घणे । विमांण आरूढ भले सब बणे ॥१३६५॥
चले बहुत विद्याधर भूप । प्रतिसूरज पहुंच्या रवि रूप ॥
देखैं सकल पवन का खोज । बहुत विनय करैं सब सौंज ॥१३६६॥

देख्या हस्ती बन के मांझि । पहिचान्या सब ही जन ताहि ॥
हस्ती ने देखी बहु भीर । बनमें कोई न आवै तीर ॥१३६७॥

पट्टा चुवै अधिक मयमंत । परिदक्षणा देवै बहुभांति ॥
प्रभु रक्षा करै गयंद । चलै न विद्याधर का धंद ॥१३६८॥
कागद की हथणी दिखलाइ । हाथी बांधि लियो तिन ठांय ॥
पवन बैठा कर संन्यास । गह्यौ मौन जीव तजि आस ॥१३६९॥

पवनंजय की प्राप्ति

प्रहलाद देखि अति चिंता करैं । मति यह रूप दिगंबर धरैं ॥
माथा चुंब्या पुत्र का जाय । बहुत प्रकार करी समभाय ॥१३७०॥
इह दीक्षा की नाहीं बार । अब तुम सुख भुगतो संसार ॥
आगैं जब संपति ह्वै भलौं । तब दीक्ष्या लीजो मन रली ॥१३७१॥

मौन माहिं इन सैन इम कही । त्रिया वियोग संन्यास मैं गही ॥
जब अंजनी मैं देखूं नैंन । तब मैं बोलूं मुख सौं बैन ॥१३७२॥

अन्न पान मैं तब ही खाउं । मैं अब धरचा मरण का भाव ॥
तब रोवैं विद्याधर घणे । राक्षस बानर बंसी जणे ॥१३७३॥

प्रति सूरज बोलै हँसि बात । हूं बुलाऊं पवनंजय इक भांति ।।
तब सब बोल बेग बुलाय । तीन लोक में होइ जस नांव ।।१३७४।।

प्रति सूरज पवन ढिग जाय । प्रथम भेद भाष्यो समझाय ।।
और सब बात गुफा की कही । पुत्र जनम सुणि रहस्या सही ।।१३७५।।

मुनि केवली गया था जान । वनमें नारि देखी बिललात ।।
दया निमित्त मैं तहां आइया । भाणजी कुं विमाण परि लिया ।।१३७६।।

असी सुणि मन आनंद भया । सब ही का संसा मिट गया ।।
बहुरि कथा बालक की कही । रूप लछण वा सम कोई नहीं ।।१३७७।।

रवि नैं देखि बालक उछल्या । तिहां ते आइ परबत परि पड्या ।।
बहुत दुख चित चिंता भई । हमारी सेन्या सगली गई ।।१३७८।।
बालक की सुणि रोवें पौन । हाई हाइ करैं सब हौन ।।
प्रति सूरज तब बोलै ... । बालक लग्या नहीं ... ।।१३७९।।
सिला फूटि थई चकचूर । पुण्यवंत कै लगी न मूर ।।
अंगूठा चूपै खिलकै खरा । पुन्यवंत बालक तिहां परा ।।१३८०।।
लिया गोद अंजनी कुं दिया । हनूरुह में आश्रम लिया ।।
सेना सहित हनूरुह गये । सब राजन को भोजन दिये ।।१३८१।।

अंजना पवनंजय मिलन

मास दोय की सकल नरेस । बिदा मांगि पहुंचे निज देस ।।
पवनंजय अंजनी सुख के भाव । पुत्र तणां धरया हणुमंत नाम ।।१३८२।।

कामदेव हैं सब तैं बली । जिनकी कथा जगत में चली ।।
हणुमान का सुणैं चरित्र । धन संपति बहु लहै पवित्र ।।१३८३।।

सुणि पुराण जे निश्चय धरैं । काटि करम भव सायर तिरैं ।।
रवि प्रकास नैं भये अंधेर । पावैं मोक्ष नासैं भव फेर ।।१३८४।।

जाय सुगति में निरभय ठौर । आवागमन न होय बहोर ।।
दरसन ग्यांन सब लहैं अनंत । बलवीर्य का नावै अन्त ।।१३८५।।

दूहा

चरित्र सुणैं हनुमांन का, धरैं परम दृढ चित्त ।।
निश्चय पावैं परमपद, होइ मुकति की थित्ति ।।१३८६।।

इति श्री पद्मपुराणे पवनंजय अंजनी मिलाप विधानकं ।।

चौपई

१८ वां विधानक

वरुण द्वारा रावण से युद्ध

वरुण सुणी पवनंजय गृह त्याग । छोडि कुटंब वन मैं गये भागि ।।
अब मैं भुगतौं निरभय राज । रावण सौं क्या अटका काज ।।१३८७।।

रावण का कछु भय नहीं धरूं । अब मैं पकडि बंदि मैं करूं ।।
रावण सुणी वरुण की बात । महाकोप उपज्या सब गात ।।१३८८।।

देश देश को दूत पठाइ । सकल भूपति लिया बुला बुलाइ ।।
दोइ सहस्र अक्षोहिणी दल जुड्या । बाजंत्र बाजैं मारू घुरया ।।१३८९।।

बजैं दमामा अर सहनाहि । मेघपुरी कौं घन घेरी जाई ।।

भेजा दूत हनूरुह देस । पवनंजय को दिया संदेस ।।१३९०।।
पवनंजय रावण की मांगि । चल्या देखि बेग्या फरमान ।।

हनुमान द्वारा युद्ध में जाने की इच्छा

तब हणुमंत कही इण भांति । मोकूं आग्या दीजे तात ।।१३९१।।

मेरा तुम देख्यो पराक्रम । होइ सहाइ तुम्हारा धर्म ।।
पुत्र वयण सुणि हंस्या पवन । पुत्रै कीया तहां गवन ।।१३९२।।

सेना बहुत लई तिन साथ । त्रिकुटाचल देखि छिप्यौ दिननाथ ।।
तिहां उतरि कै आश्रम लिया । भया प्रभात पयाणां किया ।।१३९३।।

रावण पास गया हणुवंत । देख्या ताहि बहुत हर्षवंत ।।
बहुत प्रीति सौं बोलैं भूप । वाका देख्या अधिक स्वरूप ।।१३९४।।

वाकी कथा कहैं सब लोक । पर्वत परि पड्या माता भया सोक ।।
पुन्यवंत कैं लगी न चोट । परवत सिला भई सब चोटि ।।१३९५।।

सिला फोडि टूकडे करे । हणौंमान जीवत ऊबरे ।।
बहुत सिरावैं रावण राय । पवनंजय भली करी बहु भाय ।।१३९६।।
असा बली भेजा मुझ पास । पूरैगा मो मन की आस ।।
सेना देखी नाना भांति । केई तरह की उनकी जात ।।१३९७।।

रतनदीप घेरया चिहुंवोर । वरुण राय आया चढि भोर ।।
सकल पुत्र आए चढि संग । मारू सुणि कातर चित भंग ।।१३९८।।

सूरवीर मन करै आनंद । दुहुं वां सुभट करैं चद बंद ।।
राक्षसवंसी दिये अहुराइ । वानर बंसी बोले राइ ।।१३९९।।

भाज्या रण तैं लागैं लाज । अब फिरि करो भूप के काज ।।
सिमट लोग फुनि सनमुख भए । इन्द्रजीत मेघनाद दोऊ गए ।।१४००।।
उतनें कुमर इतनें नृप घने । वरण पुत्र इनौं नें हने ।।
मार मार दोऊं घां होइ । जूझैं सुभट हटै नहि कोय ।।१४०१।।
रावण आप कटक में भस्या । बीस भुजा दस सीरनी कस्या ।।
स्यंह तणों रथ बैठ्या भूप । तब हणुवंत आया बलरूप ।।१४०२।।
बांधे वरुण के बहु पूत । वरण राय तब आय पहूंत ।।
मनमैं सोचा रावण राय । जे बालक ने मारैं ठाय ।।१४०३।।
असै समझ आया गामही । जूझै लोग न हारि मांनई ।।
वरुण एकै विद्याने संभारि । रावण परि छोडि तिण बार ।।१४०४।।

कुंभकरण द्वारा विजय के पश्चात् लूटपाट करना

रावण ऊपरि विद्या वही, हनुमांन वह बिद्या गही ।।
वानर वंसी नें बांधिया कुमार' घेरया वरण लोह की बाडि ।।१४०५।।
आंण्यां बांधि रावण कैं पास । कुंभकरणस्युं बोल्या हास ।।
लूटो नगरि करो तुम बंदि । जिहां तिहां जाई मचाई दुंद ।।१४०६।।
लूटो जिको तिकोही लेहु । कुंभकरण इम आग्या देहु ।।
लुट्या नगर हाट बाजार । राजा का लुट्या भंडार ।।१४०७।।
बहुत नारि नर लीन्हे बांधि । सीलवंती मरैं बिन अपराध ।।
केई जीभ षंड करि मरैं । सीलभंग तैं पतिव्रता डरैं ।।१४०८।।
केई कुंभकरण का रूप । राग प्रभाव सु देखैं भूप ।।
धन्नि भाग जे याकी नारि । यह उनकैं ऐसो भरतार ।।१४०९।।
केई पुत्र पुत्र बिललाइ । केई मात पिता कोई भाइ ।।
जिणकै कुटब बिछोहा भया । परिबस पड़ी बहुत दुख सह्या ।।१४१०।।
केई बांधि लई संबि नारि । केई ऊंटां परि असवार ।।
केई लई गाड्या पै डारि । बहुत बांधि घेरी तिण बारि ।।१४११।।
असी विधि रावण पै आनि । कुंभकरण आया बलिवांन ।।
सबली बंधि तब करैं पुकार । रावण सुणि करि दया विचारि ।।१४१२।।

रावण द्वारा लूट की निन्दा करना

ए तुम क्यों बांधी अस्तरी । कुंभकर्ण तैं कीनी बुरी ।।
अर्थ दर्व दे छोडी बंदि । अपणें घर तुम करो आनंद ।।१४१३।।

जाकी वस्तु लूटि में गई । ताकी ताहि मंगाय करि दई ।।
रावण में सब दई असीस । तेरो भलो करो जगदीस ।।१४१४।।

रावण फिरि लंका में गया । सुदरसण सहज ही लिया ।।
जे जं सबद करे संसार । वरुण किये बहुतें नमस्कार ।।१४१५।।

मैं तो चूक करी थी धणी । कछुवन आवै कहतां बणी ।।
मैं तो अधिक मूढता करी । तुम्हारी आग्या चित्त न धरी ।।१४१६।।

वरुण को पुनः राज देना

वरुण भूप तब दीना छोडि । बंधण सकल दिये नृप तोडि ।।
वरुण फेर करि पायो राज । रतनदीप का सारया काज ।।१४१७।।

चन्द्रनखा की महाप्रभा पुत्री । हनूमान ब्याही सुभ घरी ।।

वानर वंशी राजा वर्णन

अपनां पुहपथी नगर शुभ देस । हनुमांन कुं दिया नरेस ।।१४१८।।

किहपुर का राज नल नील । श्रीमालणी रांणी सुभसील ।।
श्रीजयंता ताकी सुता । हनुमांन कुं दीनी गुणजुता ।।१४१९।।

विजयारध गिर किन्नर गीत । कन्यां वाकी ब्याही सुभ रीत ।।
किहंधपुर रहै सुग्रीव । सुतारा पतनी धरम की नींव ।।१४२०।।

भावमंडला पुत्री ता गेह । रूपलक्षण करि सोभै देह ।।
कंन्या बडी सयानी भई । राजा के मन चिंता थई ।।१४२१।।

कहै स्वयंवर छाडं आजि । देस देस के भूपति काज ।।
जा गलु कन्या डालै माल । कन्या सो ब्याहै भूपाल ।।१४२२।।

राजा मना विचारै भला । देस देश को चितेरा चला ।।
पुतली लिखी सबं की जाइ । जहां लग थे पृथ्वीपति राय ।।१४२३।।

जहां तहां के राजकुमार । चितेरै लिखी सुरति सवार ।।
हनूमान की लिखी पूतली । समभि आइ प्रति सौंपी भली ।।१४२४।।

देखी भाव सकल मंडला । हनुमांन उपरि चित चल्या ।।
राजा वाकी मूरति लिखाय । हनुमान पै दूत पठाय ।।१४२५।।

गया दूत जेठै हणुमंत । रूपलक्षण का नाहीं अंत ।।
दीया पटले वाकै हाथ । किया पयाना दूत के साथ ।।१४२६।।

तिहां नारि होवै मयमंत । जहां जाय निकसै हणुमंत ।।
भामंडला नृप दई पठाय । भोग भूमि नप करै उछाह ।।१४२७।।

अंजनीपुत्र जाण्यां इक ओर । अमरपति नाम विराजै ठौर ।।
निरभय राज करै तिहां भूप । दुख चिंता सब डारी कूप ।।१४२८।।

दूहा

प्रथमकांड श्रेणिक सुण्यौं, विद्याधर को बंस ।।
मिथ्या भेदन मिट गई, सगली ही मन मस ।।१४२९।।

इति श्री पद्मपुराणे प्रथम कांड रावण वंश विधानकं ।।

१६ वां विधानक

सोरठा

बे कर जोडि नरेस, श्रेणिक फिर परसन करै ।।
रावण वंस परमेस, मैं बहु विध वारके सुण्या ।।१४३०।।

चौपई

जिन कोई बर्के त्रिदोष का धणी । असी मैं उनके मुख सुणी ।।
केवल वयण वाह्यो समभाय । सब संसय तिहां मिट जाय ।।१४३१।।
किम उपजें चौबीस जिणंद । द्वादश चक्रवर्त्त गुणवृन्द ।।
नव नारायण बलिभद्र भए । प्रति नारायण कैसे थए ।।१४३२।।
कवण पुण्य पूरवभव किया । कवण स्वर्ग तैं चय आइया ।।
किम गुरु पासैं दिक्ष्या लई । कवण भूमि तैं इह थित भई ।।१४३३।।

अडिल्ल

वाणी ग्यांन गंभीर सवै जिणवर कही ।
गौतम करैं बखान सुणै श्रेणिक उर गही ।।
समकित सौं धरि प्रीत सुणै मन ल्याइकै ।
सकल बंस का भेद कह्या समभाइकै ।।१४३४।।

जंबुद्वीप भरतखंड कोसांबी नगरी
सुमुख नृपति करैं राज दया चित आगरी ।।
सुखी बसैं सब लोग दुखी कोई नही,
आई रितु बसन्त सब न क्रीडा चही ।।१४३५।।

वीरक सेठ एवं वनमाला वर्णन

वीरकसेठ तिहां रहै वनमाला असतरी ।
रूपवंत गुणचतुर सलावण अतिपरी ।।
सकल प्रजा नृप साथ सुवन क्रीडा करी ।
देख त्रिया नृप नैन मुदित चिंता धरी ।।१४३६।।

वनमाला पर राजा का आसक्त होना

वनमाला चित चल्यो देखि भूपाल को ।
राज रिद्धि सब देखि भयौ सुख बाल को ।।
मो सी नारि सरूप राय घर जोइए ।
कहा वणिक घर जोवन थिरता खोइये ।।१४३७।।

राजा सोच अधिक मन में करै ।
नरपति करै अनीत सुमर नरकां पड़ै ।।
हूं नृपति धरमिष्ट पाप कैसे करूं ।
व्याप्यो अधिको कांम सु धीरज किम धरौं ।।१४३८।।

राजा की व्याकुलता

गही राय तब मौन भेद नहि पाइये ।
करै वैद्य उपचार सु औषध ल्याइये ।।
कहै दोष पित्त वाय का ग्रन्थ बिचारि कैं ।
उसको रहै न विकार ... कैं ।।१४३९।।

पंडित जोतिग कहैं ग्रह चाल कौ ।
नवग्रह खोटे ध्यावैं या भूपाल को ।।
मुख बोलै नही बोल सुग्रह खोटे लगे ।।
बहुत बडी गंभीर जुडे प्रीतम सगे ।।१४४०।।

दूहा

सुमति नांम इक मंत्रवी, आयो भूपति पास ।
लोग उठाय दिये सबै, पूछै करि अरदास ।।१४४१।।

सेवक स्यौं मनकी कहो, किण कारण गही मौन ।
सांच बात मुख उचरो, तुम मन संसय कौन ।।१४४२।।

राजा मंत्री सौं कहै, सांभलि सुमति सुजांण ।।
वनमाला नैं देख करि, चये जात हैं प्राण ।।१४४३।।

मंत्री विनवै राय सौं, तुम नृप अछो सुग्यांन ।।
परनारी के संग थी, होइ धरम की हाणि ।।१४४४।।

बोलै नृप अकुलाय करि, सुण हो मंत्री बात ।।
ग्यांन भेद कब लग भणौं, वा बिनमो जीव जात ।।१४४५।।

मंत्री सोच बिचार कर, दूती लई बुलाइ ।।
भेजी वनमाला कनैं, लीनी तुरत मंगाय ।।१४४६।।

दोन्यु की इच्छा फली, कियो जुगति सों भोग ।।
जैसे दुखिया मानवी, मूलं रह्म वियोग ।।१४४७।।

बीती निशि सुरज उदय, दंपति कर स्नान ।।
सुमरैं श्री भगवंत कौं, मुनिवर पहुंता ग्रान ।।१४४८।।

उठि द्वाराप्रेषण कर्यो, मुनि कों दियो ग्रहार ।।
दंपति बहु विनती करी, जिम थाये निस्तार ।।१४४९।।

जाप करत तस भूमिपै, पडी दामनी ग्राय ।।
वे दंपति दोउ मुवा, विजयार्द्ध उपजा आय ।।१४५०।।

उत्तर श्रेणी हरिपुर नगर, तहां पवन गिर भूप ।।
मृगावती राणी उदर, जनम्यां सुपम स्वरूप ।।१४५१।।

ग्रडिल्ल

पूर्व जन्म

हरि विभ्रम धरा जोतिगी विप्र ने ।
दिन दिन बढ़ै कुमार सुराजा केतु ने ।।
रूपवंत सोमंत सुख परिवार में ।
दान सुपात्र सहाय भयो संसार में ।।१४५२।।

गेघपुरी को नरपति ताकी ग्रस्तरी ।
वनमाला का जीव गर्भ तसु ग्रवतरी ।।
मनोरमां धारयो नाम जोतिगी विप्र नें ।
रूप लक्षण सामोद्रक काहै तसु तनें ।।१४५३।।

जोबनवंती देखि हरि विभ्रम को दई ।
लगन घडी सुभ साधि विप्र चोरी छई ।।
रहस रली सों व्याह रह रंग प्रीत सों ।
फूलन की कर सेज रमें सुख रीत सों ।।१४५४।।

दूहा

बीरक सेठ की तपस्या

बीरक सेठ उठि हाट तें, ग्रायो गेह संभारि ।।
चिंता चित उपजी घणी, तिहां न पाई नारि ।।१४५५।।

घर की सुधि सब बीसरी, ढूंढै घर घर नारि ।।
कहीं न पाई ग्रस्तरी, जती भयो तिण बार ।।१४५६।।

करी तपस्या जुगति स्यों, लही देवगति जाय ।।
उपनी ग्रवधि इक भवतणी, हृदभाव सों ग्राय ।।१४५७।।

दंपति पिछला बैर सुं, लो चाल्या आकास ।।
तुं सुमुख मनमारा रहे, मैं वीर कहुं जै नाम ।।१४५८।।

हूं पूर्वे थी वांणियो तू पृथ्वीपति भूप ।।
अब जो तूं काछु बल करै, हुं लहूं नृप के रूप ।।१४५९।।

चौपई

देव होकर पूर्व भव की अपनी स्त्री को दुख देना

दंपति को दुःख दीने घणे । सुर का क्रोध कहां लग गिणें ।।
कबहुं गहिहि गयण उछालि । धरती पडतां झेलें सभाल ।।१४६०।।

कहै समुद्र में देहु बुडाइ । कैले धरूं सिला तलि जाइ ।।
कै या मींड करूं चकचूर । नखसिख तोडि मिलाऊं धूलि ।।१४६१।।

दूहा

बहुत त्रास उनको दिये, उपनु जाती ग्यांन ।।
पूरब में पाली दया, तो सुर लह्यो विमांन ।।१४६२।।

चौपई

दया के भाव

जो अब इनकी हत्या करूं । नोतम पाप आप सट भरूं ।।
जै मानुष करै कोई पाप । जप तप करि निज हरै संताप ।।१४६३।।

मेरा दोष टलै असरीत । राखुं जीव दया सुं प्रीत ।।
छोडि दंपत्ति आणी दया । नारि पुरुष मन आनंद भया ।।१४६४।।

दूहा

चंपापुर दक्षिण दिसा, छोडे दंपति जाय ।।
हरितिणपुर को नृप थयो, हुवो प्रताप अधिकाय ।।१४६५।।

चौपई

राज करत बीतै बहु वर्ष । जन्म्या मांनी महागिर हर्ष ।।
महा प्रताप प्रगट्या संसार । हरवंसी जनमिया कुमार ।।१४६६।।

हिमगिर वसु गिर पीछे भए । महीधर आदि पुत्र बहु थए ।।
केई स्वर्ग देवगति पाइ । केइक मुक्ति बिराज्या जाइ ।।१४६७।।

बहुतै नगर बसाया देस । हरिवंसी बहु भए नरेस ।।
सीतलनाथ का दरसन किया । हरिराजा का समए भया ।।१४६८।।

दूहा

सीतल नाथ जिनेन्द्र तैं, हरिवंसी हुए अनंत ॥
नाम कहां लग बरणए, कहत न आवै अंत ॥१४६९॥

चौपई

मुनिसुव्रतनाथ का जन्म

कुसागर नगर सुमित्र नरिन्द्र । पौमा देवी मन आनंद ॥
सघन ग्रह नगरी में बसैं । दुखी दलिद्री कोई न नसैं ॥१४७०॥

पदमादेवी पिछली राति । सुपने देखे नाना भांति ॥
स्वेत गयंद वृषभ अरु स्यंघ । लक्ष्मी माला पुनमचंद ॥१४७१॥

सूरज उदै मच्छ जल तिरै । कल सरोवर निरमल भरै ॥
सिंघासण रतनन की भूमि । देखी अगनि बलै निरधूम ॥१४७२॥

कुंभ जुगल देख्या जल भरया । देव विमान अनूपम धरया ॥
देख्यो धरणेन्द्र देवता नाग । भयो प्रभात उठी जब जाग ॥१४७३॥

सोलह सुपणा देख्या इह भांति । सुमित्र भूप सौं कही सब बात ॥
सुणे सकल सुपना के बैन । बिगसउ बदन भयो उर चैन ॥१४७४॥

होय पुत्र त्रिभुवन का धणी । हरिवंसी कुल बाणी बणी ॥
तीन लोक के सुरपति आइं । श्री जिन के सेवेंगे पांय ॥१४७५॥

नरपति खगपति दानव देव । ए सब आनि करेंगे सेव ॥
पंचग्यान का त्रिभुवन पति । धर्म प्रकासि पंचमी गती ॥१४७६॥

सुणि पिय बयण हीये सुख भया । अंचल गांठि बांधि के लिया ॥
श्रावण बदि दोइज सुभ घड़ी । प्रभुजी आय गर्भ थित करी ॥१४७७॥

आसण कंप्या सुरपति इन्द्र । अवधि विचार किया आनंद ॥
श्री जिन देव तणों अवतार । उतर सिंहासण कियो नमस्कार ॥१४७८॥

भृकुटी जक्ष तब लिये बुलाइ । नगर कुसागर बेगा जाइ ॥
छपनकुमारी देवि पठाइ । गरभ सोध लगीं प्रभाइ ॥१४७९॥

रतनवृष्टि फूलों की वृष्टि । जै जै करत भये अघ नष्ट ॥
देवी सब मिल सेवा करैं । रात दिवस टारी नहि टरैं ॥१४८०॥

जैसे रवि बादल की छांह । इम गरभ माहि दंपै जिणशाह ॥
स्वाति बूंद पर दमके पत्र । श्री भगवंत महा पवित्र ॥१४८१॥

बैसाख बदि दसमी सुभवार । श्रवण नक्षत्र भयो अवतार ॥
सुरपति संग अपछरा घणी । ऐरापति साज्या बिधबणी ॥१४८२॥

चले देवता जै जै करैं । इन्द्राणी जिणवर नैं हरैं ।।
माया का बालक उतै राखि । लीया उचाइ दीनता भाखि ।।१४८३।।

पति की गोद दिये जिनराय । दरसण देखि महा सुख पाय ।।
बाजे बाजैं नाचैं देव । दसों दिसापति आए सेव ।।१४८४।।

मेरु सुदरसण पांडुक सिला । तिहां महोच्छव कीना भला ।।
करैं उवटणा मंगल गीत । खीराचारि करी बहु प्रीत ।।१४८५।।

सहस अठोत्तर इन्द्र ने भरे । और देवता बहु कर धरे ।।
श्री जिण ऊपर डारैं आणि । काजल नयन सहित मुख पान ।।१४८६।।

बींधे कर्ण वज्र की सुई । कुंडल तणी जोति अति हुई ।।
आभूषण पहराय अनूप । सब सिंगारैं सोभै रूप ।।१४८७।।

अष्ट दरब सूं पूजा करी । करैं आरती विनती करी ।।
श्री जिनवर माता पैं आणि । तिहां बाजै आणंद नीसांण ।।१४८८।।

इन्द्र धरणेन्द्र सुर लै गये । बरख्या रतन पुष्प बरणाये ।।
तीस हजार वर्ष की आय । बीस धनुष की ऊंची काय ।।१४८९।।
नाहैं जोतिगी लगन विचार । मुनिसुव्रत त्रिभुवन आधार ।।

मुनिसुव्रतनाथ का जीवन

परियण मांहि बधावा भया । जनम समय बहु धन खरचीया ।।१४९०।।
खेलैं संग देव के बाल । क्रीडा करैं तन रूप विशाल ।।
सात सहस्र अरु बरष पचास । ता पाछैं मन भया उल्हास ।।१४९१।।

जसोमती व्याही वर नारि । रूपवंत शशि की उणहारि ।।
भोग करत दिन बीते घणे । भयो गरभ जसोमति तणे ।।१४९२।।

दक्ष पुत्र जन्म्या शुभ घडी । परियण मांहि बधाई करी ।।
पंद्रह सहस्र बरष करि राज । मृग मृगनी देखे बन मांझ ।।१४९३।।
बिजली पडि करि दोन्यूं मुवा । ताहि देखि मन विसमय हुआ ।।
मन में धरया धरम सौं काज । दक्ष पुत्र कौं दीनौं राज ।।१४९४।।
सुपरणां सरसी जांणि विभूति । सुरलौकांतिक आणि पहूंत ।।
धन्य धन देव सबद सब करैं । प्रभु आगैं शिव सुरका धरैं ।।१४९५।।
चढे पालकी प्रभु बन जाइ । सिध नाम ले लौंच कराइ ।।
भए दिगंबर आतम ध्यान । सुरपति किया चारित्र कल्यांण ।।१४९६।।
बैसाख बदी दसमी दिढ चित्त । नौ बरषैं रहिया छदमस्त ।।
बैसाख बदी नवमी शुभ वार । टारे करम घातिया चार ।।१४९७।।

प्रकृति तरेसठ टूटी जान । उपज्या प्रभु कूं केवल ज्ञान ॥
आए चतुरनिकाय के देव । पूजा करी बहुत विध देव ॥१४९८॥

जोजन तीन रच्या समोसर्ण । भव्यजीव का संसय हर्ण ॥
कंचन कोट रतन के तीन । सिंहासन भामंडल लीन ॥१४९९॥

चारौं वन के वृक्ष घनि बने । वृक्ष अशोक शोक को हर्णं ॥
बणी बातिका अति गंभीर । तिस में दीसैं निरमल नीर ॥१५००॥

मानस्थंभ मांन कूं हरै । देखत ही मन निर्मल करै ॥
अठारह गणधर बैठे पासि । च्यारों ग्यांन कहै वे भास ॥१५०१॥

वाणी वेद सुणैं सब कोय । बारह सभा का संसय खोय ॥
गणधर ब्योरा कहैं बखांण । भव्य जीव सांभलैं बखांण ॥१५०२॥

दानपती व्हां नृप वाहन । सहसराय लीयो चारित्र ॥
बैसाख बदि चौदसि निर्वाण । संमेदगिरि गए मुक्ति भगवांन ॥१५०३॥

जोतैं जोति जाय करि मिली । पुजा इन्द्र करैं मन रली ॥
पालैं प्रजा दक्ष प्रभु भूप । महाबली अति धर्म स्वरूप ॥१५०४॥

एलवृद्धन कूं दीया राज । आपण किया मुक्ति का साज ॥
श्रीवर्द्धन जयवंता भया । ताकैं पुत्र कुंनम बलि थया ॥१५०५॥

महारथ पुत्र वासकेत बलबंड । बहु भूपन तैं लीया दंड ॥
वासकेत कै विमलावती नारि । रूप सील संयम की पार ॥१५०६॥

जनक भूप ताकैं उर भया । दान मांन सबकौं बहु दिया ॥
दया दान संयम नित करै । पुण्य प्रताप तैं दुरजन डरैं ॥१५०७॥

दूहा

हरिवंशी राजा

हरिवंसी पुनिवंत कुल, भूपति भए अनेक ॥
काटि करम सिवपुर गए, पांच नाम की टेक ॥१५०८॥

चौपई

कोई पंचम गति को गए । केई स्वर्ग देवता भए ॥
हरिवंसी बसाए बहु गाम । इनका कुल तीस की ठाम ॥१५०९॥
इक्ष्वाकवंस आदीश्वर किया । जिनकी कथा सुणौं धरि हिया ॥
उत्तम कुल सबही तैं आदि । तिनकी चालैं कथा अनादि ॥१५१०॥

दूहा

आदिनाथ मुनिसुव्रत लौं, नरपति भए अनंत ॥
नाम कहां लग वरणउं, कहत न आवैं अंत ॥१५११॥

चौपई

इणही बंस बहु भूपति भए । काटि करम शिव थानक गये ॥
केई पहुंता स्वर्ग विमांण । केई भया पृथ्वीपति आणि ॥१५१२॥

केई पहुंच्या नरक मझारि । केई पहुंच्या स्वर्ग विमांण ॥
जैसी करणी तैसी गति । धर्मध्यान में राखे मति ॥१५१३॥

सकति समान दान अरु ब्रत । देवशास्त्र गुरु राखें हित्त ॥
च्यारिउं दांन भाव सों देइ । सो ऊंची गति का सुख लेइ ॥१५१४॥

इक्ष्वाकावंसी राजा वज्रबाहु वर्णन

इक्ष्वाक वंसी विजय नरेस । भुगतै नगर अयोध्या देस ॥
हेमचूल राणी पटधणी । मानू कनक कांमनी बणी ॥१५१५॥
सुन्दरमन ता पुत्र जनमिया । कीर्त्तवती तसु व्याही त्रिया ॥
प्रथम पुत्र वज्रबाहु भया । दूजा पुरीन्द्र पराक्रमी थया ॥१५१६॥
दोन्यु कुमर विद्या बहु बड़े । बल पौरस सूं बहुते बढ़े ॥
हथनापुर हंसवाहण राय । चूडामणी राणी पटधाय ॥१५१७॥

मनोदया पुत्री ताके भयी । सो वज्रबाहु कुमर को दई ॥
लिख्या लगन साध्या सुभ द्यौस । व्याहण चाल्या नृपमन हौंस ॥१५१८॥
पुरों इसो पूछे नव बात । बलोकरण मुनिवर की जात ॥
नासा दृष्टि आतमध्यान । ताको सोभै च्याऊं ध्यांन ॥१५१९॥
बसत सगि परबत परिजाय । वज्रबाहु हस्ति चढ़िराय ॥
मुनिवर एक तिहां तप करें । जैसे केस सुंदर नर धरैं ॥१५२०॥
आतमभाव लगायो जोग । छांडे सकल जानि के भोग ॥
तन बाईस परीस्या सहै । अष्ट करम कु निस ही दहैं ॥१५२१॥
तप की अधिक विराजै जोति । तिण समान परिग्रह नहीं होत ॥
दोनूं कुमर सराहै आइ धनि साधु जे ऐसे भाइ ॥१५२२॥

वज्रबाहु तिहां लाया ध्यांन । देख्या मित्र उदयसुंदर नाम ॥
कहै किम चाही दिक्षा लिया । बैरागभाव मैं तैं चित दिया ॥१५२३॥

कंवर भणै तउ अचिरज कह्या । मनुष्य ही पालै चारित्र महा ॥
उदय सुंदर बोलै तब मित्त । जै दिक्षा तुम आणी चित्त ॥१५२४॥
मैं भी संयम ल्यौं तुम साथ । मेरी अरज सुणौं प्रभु नाथ ॥
इतनी सुनत बसन सब डाली । मन वैराग्य भयो भूपाल ॥१५२५॥

तब उठि मित्र वीनती करी । हांसीक न। सांची चित धरी ।।
तुम तो चले ब्याह के काज । कवण समय दिक्ष्यां को आज ।।१५२६।।

बोले कुमर सुपन समरिध । मात पिता कुण भाई बंध ।।
जैसी परफुलत है सांझ । असे सुख कूं लखर्क मांझ ।।१५२७।।

विणसत ताहि न लागै वार । असा है संसार असार ।।
धन्य धन्य तू मेरे मित्र । तैं मोहि कही धरम की रीत ।।१५२८।।

तुझ प्रसाद सिव मारग गहुं । तेरा गुण मैं कवि लग कहूं ।।
असी बात सुंणी परवार । बाल वृद्ध आए तिण बार ।।१५२९।।

दादी माता सब मिल आइ । ग्रौर कहैं बहु जन समझाय ।।
तु बालक जोबन की बार । करो विवाह भोग संसार ।।१५३०।।

कुंवर भणैं संसारा थिति । जीवका कोई सगा न इत ।।
संयोग वियोग रहट की घडी । कबही रीती कबही भरी ।।१५३१।।

सब साता तैं पावैं सुख । अशुभ करम उदय तैं दुख ।।
सुख भुगतैं जो सागर बंध । इक पलके दुख मैं सब दुंद ।।१५३२।।

तातैं हूं अब तप आचरूं । धरम नाव भवसागर तिरूं ।।
गुणसागर मुणिवर के पास । दिक्षा लई सुगति की आस ।।१५३३।।

दोई सहस अरु छ: सै कुमार । भए दिगंबर कैस उतारि ।।
मनोदया सांभली यह बात । दिक्ष्या लई अजिका के पास ।।१५३४।।

विजयसेन सुरेन्द्र मनिभूप । बैठे सकल सोग के रूप ।।
वह बालक सुकुमाल सरीर । कैसे सहेगा परीस्या पीर ।।१५३५।।

हम तो राज भोग बहु किए । ऐसी काछुवन आणी हिये ।।
जरा व्यापी देही जो जरी । कैसे होय तपस्या खरी ।।१५३६।।

जोवन समय संभाल्या नाहि । अब पिछताया होवै काहि ।।
समझावैं सब मंत्री आय । जो कछु सधै सो करि जाय ।।१५३७।।

सोई घडी सधैं सब धर्म । वाही घडी कटैं अघ कर्म ।।
सकल राज रिध करि त्याग । विजय साह हुआ वैराग्य ।।१५३८।।

पुरिंदर प्रति सोंप्या निज राज । आपण किया दिगंबर साज ।।
विजयसेन संग राजा घने । भए जती मद आठों हणे ।।१५३९।।

निर्वाणघोष घोष मुनिवर के पास । भये साध मन पूजी आस ।।
पुरींदर राजा पृथ्वीपति अस्तरी । कीर्तिधर पुत्र भया सुभ घरी ।।१५४०।।

कीर्तिधर राजा वर्णन

कुसाल नग्र नरेन्द्र नृप रूप । ता घरि पुत्री अधिक अनूप ।।
महदेव्या कन्या का नाम । कीर्तिधर सौं व्याई चाव ।।१५४१।।
भूप पुरेन्द्र हुवा जब जती । माया लोभ न ताके रती ।।
क्षेमंकर पासैं दिक्षा लई । आतमध्यान मैं सदा रहेई ।।१५४२।।
कीर्तधर अधिक प्रतापी भया । पृथ्वीतणां राज सब लिया ।।
सकल भूप तसु मार्ने आंण । या सम राय न को बल जान ।।१५४३।।
एक दिवस सूरज कौं केत । किया ग्रहण असुभ कैं हैत ।।
सूरज छिप्या भया अंधकार । उडगन जोति भई संसार ।।१५४४।।
राजा देखि चित चिंता करी । ऐसी आउ जरा सी घरी ।।
जैसे केतने रवि कूं ग्रह्या । आपत जरा पराक्रम बंया ।।१५४५।।
रवि तो छूटि जाय ततकाल । जरा चढ़ें तब व्यापैं काल ।।
मंत्रियां सौं इम कहै भूपाल । तुम चालियौ धरम की चाल ।।१५४६।।
प्रजा देस की कीज्यो सार । हम अब लैं संयम का भार ।।
मंत्री सर्व कहैं सीस नवाय । तुम बिन क्यों देस साध्या जाय ।।१५४७।।
तुम भुगतो पृथ्वी का राज । हम तुम आगे संवारां काज ।।
परजा लोग करे सब आय । हमारा कह्या सुणौं तुम राय ।।१५४८।।
तुमारे राज प्रजा सब सुखी । तुम आगन्यां में कोई न दुखी ।।
तुम जिन छोड्यो राज आपणां । तुम तें हम सुख पाया घणां ।।१५४९।।
करो राज भोग मन ल्याइ । संतति होइ दीक्षा ल्यो जाइ ।।
राजा इनका मान्यां कह्या । राज भोग में फिर रम रह्या ।।१५५०।।
परजा ने बहु दीना दांन । घर घर बाजै आनन्द निसांन ।।
इक दिन जनम्या पुत्र उदार । तास सुकोसल नाम कुमार ।।१५५१।।
मंत्री करी एक हिकमती । पुत्र ने राखियो गुपती ।।
ब्राह्मण मने किये सब जाय । राजा पासि हुवो मति ल्याइ ।।१५५२।।
जब एक मास वीत कर गया । ब्राह्मण जबैं आसीरवाद दिया ।।
दई दोब राजा कैं हाथ । पुत्र जनम जाण्यो नरनाथ ।।१५५३।।

दूहा

हुआ सुकोमल तणी फिराई । आप राय दीक्ष्या लई जाय ।।
तेरह विध चारित्र व्रत लिया । आतम ध्यान मुनीश्वर किया ।।१५५४।।

इति श्री पद्मपुराणे श्री मुनिसुव्रत वंशकाह्न कीर्तिधर महातम वर्णनं ।।

२० वाँ विधानक
चौपई

कीर्तिधर की तपस्या

कीर्तिधर मुनिवर इम तप धरैं । मास उपास पारणा करैं ॥
सहैं परीस्या बीस अरु दोइ । दयाभाव सबकों पर होइ ॥१५५५॥

बहुत बरष ऐसे तप किया । नगर आहार निमित्त आइया ॥
द्वारापेषण करैं न कोइ । राजा द्वारैं ठाढा होइ ॥१५५६॥

झरोखे बैठी सहदेवी नारि । आवत देख्या मुनिवर द्वार ॥
देख साध मन बहुत रिसाइ । नगर [illegible] ॥१५५७॥
ए मुनिवर हैं बहुत बुरे । राज भोग सुख देख्यां जरैं ॥
महा दुःख सौं गहिए राज । तिणनैं कहै नरक का साज ॥१५५८॥
अपणां घर खोवैं व्है जती । पुत्र कलित्र की चित न रती ॥
घर तजि भीख मांगता फिरैं । लाज कांण बसत्तर परिहरैं ॥१५५९॥
घणां बिणां खोवै घरबार । देह जलाय करैं जिम छार ॥
छोडैं सब संसारी सुख । छह रिता थे भुगतैं दुःख ॥१५६०॥
असी कुबुद्धि इनामैं होइ । बूडैं आप और घर खोइ ॥
एक मास तणा तजि पूत । छोडी सगली राज विभूति ॥१५६१॥

बालक की न दया चित धरी । असी इणि सब कीनी बुरी ॥
अब जो याहि दरसैं हि कुमार । तौ याको भी ले जाहि गंवार ॥१५६२॥
निज किंकर बोल इम कह्या । राजसी पुर मां देख्यां जिहां ॥
तिनको मारि मारि परहा करउ । इह उपदेस हिया मां धरउ ॥१५६३॥
मुनिवर फिर गया वन मांहि । करैं तपस्या वासुर[1] सांझ ॥
मनमां कछु नहीं आंणैं आंण । जोति स्वरूप सौं लाग्या ध्यान ॥१५६४॥
विप्र संन्यासी पाचौ भेष । तिण की अस्तुति करैं विशेष ॥
ते राखैं अजोध्या में घणें । तिण पैं कुमर कोक विध भणे ॥१५६५॥
खोटे वेद रात दिन पढैं । जिनके सुण्यां नरक थिति बढैं ॥
असी विध प्रगट्यो मिथ्यात । जैन धरम की कीनी घात ॥१५६६॥

तब तैं यहां मिथ्याती बसैं । खोटे वेद कीये तिनौं इसै ॥
बसंतलता थे देख चरित्र । मंदिर मांहि रुदन बहु करंत ॥१५६७॥

---

१. रात्रि दिन

राजकुमार के द्वारा वैराग्य

राजकुंवर तब माय सौं कहै । तेरे मन की चिंता रहै ॥
जो कोई लोगु बोलैं बुरा । ताकी रसना खंडु छुरा ॥१५६८॥

बसंतमाला इम कहै समझाय । तुमारा पिता भया मुनिराय ॥
वह आया था लेण आहार । माता तुमरी खाई मार ॥१५६९॥

वासौं राज भोग बन किये । जिसकी दया न आयी हिये ॥
आंगण बसाए मिथ्यमती । पुर मैं काढि दिये सब जती ॥१५७०॥

तुझ को निकसण दे नहीं द्वार । बांधि राख्यो तु कारागार ॥
ता कारण मैं किया रुदन । इम सांभल नृप मोड्यो वदन ॥१५७१॥
अर्द्ध रात्रि महलां परिजाय । डोरी बांधि तलैं उतराय ॥
तिहां मुनिवर बैठा था एक । दई प्रदक्षिणा आंण विवेक ॥१५७२॥
नमस्कार करि बारंबार । बहुत प्रकार कीन्ही थुति सार ॥
जनम जरामृत डोलैं जीव । चिरकाल की गाढी नींव ॥१५७३॥

च्यारौं गति में डोलैं हंस । कबहि नीच कभी उत्तम वंस ॥
रोग सोग आरति में फिरै । बिन समकित भव सागर पडै ॥१५७४॥

प्रभुजी मो पर कृपा करेइ । भव दधि तार मुकति पद देइ ॥
मंत्री मिले आय सब पासि । समझावैं विनती मुख भासि ॥१५७५॥

अब लग थे तुम बाल अचेत । अब जोबन तुम भए सचेत ॥
हम संसय टूटण की बार । तब तुम ल्यौ हो दीक्षा भार ॥१५७६॥

कुल मांहि कौन छै कुमार । ताकौं राज सौंप हो सार ॥
पिता तुम्हारे जब दिक्षा लई । महीना लगैं सुत कौं भु दई ॥१५७७॥

अब तो तुम भुगतो ये सुख । चित्रमाला पावैं है दुःख ॥
वाकै बालक नाहीं कोइ । ता की गति कहु कैसे होइ ॥१५७८॥

जब संपति होवै तुम गेह । तुम तब करो दिगंबर देह ॥
बोले भूपति वचन विचार । चित्रमाला कै गरभ का भार ॥१५७९॥

वाकैं पुत्र होयगा बली । पूरैगा सब की मन रली ॥
वाको मैं दींया सब राज । जब वह जनमें तब सारो काज ॥१५८०॥

इतनी कहि तब वसन उतारि । किया लोंच सिर केस उपारि ॥
ल्याया चिदानंद सौं ध्यान । गुरु संगति पाया बहु ग्यान ॥१५८१॥

कठोर तपस्या

सहदेवी आरत में मुई । देही छोडि सिंघणी भई ।।
दोन्यूं मुनीस्वर करत विहार । भवि प्रमोद गये वन मझारि ।।१५८२।।
घरणहर करि छायो आकास । मुनिवर तिहां रह्या चोमास ।।
बरषै मेह मूसलाधार । तिहां मोर कुहकै अपार ।।१५८३।।
जल पृथ्वी पर उमड्या आइ । नंदी नाला चलैं अधिकाय ।।
दोन्युं मुनि परबत पर जाय । देखि सिला बैठे तिरण ठांइ ।।१५८४।।
च्यार महीने का संथार । ग्रैसों विध तिहां करें उपवास ।।
बरषै मेह पवन अति चलै । इनकी देह न तपतें टलैं ।।१५८५।।
स्याम भुवंग भल घोटं देह । डंस मच्छर नन चूटै एह ।।
बुंद झरैं तरु बारंबार । बेलि घणी लपटी ज्यों हार ।।१५८६।।
उगी दोब देह विपरीत । महा भयानक बन भयभीत ।।
देखें कातर फाटै हिया । जिस बनमांहि इनौं तप किया ।।१५८७।।
आसोज कात्तिक आई रित्त । चंद्रमा ज्योति बिराजै श्रति ।।
गति चौमासय पूरण योग । आहार निमित्त चित्त वै नियोग ।।१५८८।।
याही बनमें सिंघणी आइ । मुख पसारि अरु पूंछ उठाइ ।।
भय दायक देख्यां डर होइ । ता बन में नावै अन कोइ ।।१५८९।।
सुकुमार साधु सिंघणी नें गह्या । नखि मारि कै पावां तलि लह्या ।।
भखें मांस कछु दया न करैं । ग्रैसे स्यंघणी मुनि नैं हरैं ।।१५९०।।
इह पूरव भव का सनबंध । भुगत्या बसौं यही कछु बंध ।।
मुनिवर सुकल ध्यांन मन दीया । केवलग्यांन अंत छिरण भया ।।१५९१।।
सुर लौकांतिक जै जै करैं । सुकुमार मुनीस्वर मुक्ति बरैं ।।
देही दहन देवता करी । वह सिंघणी तिरण ठांणै घरी ।।१५९२।।
कीत्तिधर बोले तजि मौन । तेरा बन क्यौं कीया गौन ।।
तुच्छ आव अब तेरी रही । क्रोध छोडि मन समता गही ।।१५९३।।
लियौ संन्यास तजे निज प्राण । पाया पहले स्वर्ग बिमांण ।।
कीत्तिधर लहि केवलग्यांन । धरम प्रकास गये निरवाण ।।१५९४।।

चित्रमाला के पुत्रोत्पत्ति—हिरण्यनाभ

विचित्रमाल तिय जनम्यां पूत । हिरण्यनाभ लक्षरण संयुक्त ।।
जोवन समय विवाही नारि । अरिहतमती शशि की उणहार ।।१५९५।।
राजकरत दिन बीते घने । तिरण ठामैं इक कारण बणे ।।
आरसी दिखावै नाई आइ । श्वेत केस सिर देख्या राय ।।१५९६।।

कहैंक मीनी जीवन बेस । दई दिखाई धवले केश ॥
जमकी दूत दिखाली दई । मेरी आव अकारथ गई ॥१५९७॥
धरम राह में किया न कुच्छ । अब तो आव रही है तुच्छ ॥
देह जाजरी तप किम होइ । अब पिछताये अवसर खोय ॥१५९८॥
सकति समान किया कछु जाय । तप अर दांन करो मन मांहि ॥

नघुष राजकुमार को राजा बनाना

नघुष पुत्र को राजा किया । निमल साध पै संजम लिया ॥१५९९॥
सिंघकारणी राणी पटधनी । सीलवंत अति सोभावनी ॥
दिन बीते सुख मांहि बहुत । तब इक किंकर आणि पहुंत ॥१६००॥
दक्षिण दिश का राजा बली । उन सब भूमि तुमारी दली ॥
व्हां का ऊपर करिये राय । या कारण आयो तुम पाय ॥१६०१॥
सैना बहुत भूप संग चली । सूर सुभट सोभैं अति भली ॥
नगर राज राणी नैं सौंप । आप चल्या दुरजन परि कोप ॥१६०२॥
उत्तर श्रेणी के सुणी नरेस । नघुष चल्या नृप दक्षिण देस ॥
उण सब लई अयोध्या घेरि । राणी सैन कोपी लिणबेर ॥१६०३॥
करि संग्राम भया आसन्न । राणी ऐसी महा विचित्र ॥
दक्षण साधि नरपति आइया । राणी बात सुणी अति कोपिया ॥१६०४॥
राजा की व्यापा जुर ताप । उपजी ज्वाला भयो संताप ॥
नाई देख भेद सब कहै । या को कोई जतन न रहै ॥१६०५॥
या का मरण होयगा सही । पंडित बेदों ऐसी कही ॥
राणी नित जिन पूजा करै । पंच नाम का सुमरण करै ॥१६०६॥
हस्तपालि लीया सुभ नीर । आसौं छिडको राय सरीर ॥
लेकर जल मंत्री नृप देह । किया मंगोछल अधिक सनेह ॥१६०७॥
सीलवती का लाग्या नीर । दगध रोग की भागी पीर ॥
राजा कौ सुख उपज्या नया । फेर सुहाग राणी को दिया ॥१६०८॥
बहुत दिन बीते भोग मझार । स्यौदास पुत्र ने सौंप्या भार
आपण भए दिगंबर रूप । स्योदास राज करै तिहां भूप ॥१६०९॥
कनकाभा व्यांही असतरी । सिंघसेन जनम्यां सुभघडी ॥
अठाई का व्रत करैं पुनीत । श्रावक करैं धरम की रीत ॥१६१०॥

स्योदास द्वारा जीव हिंसा पर प्रतिबन्ध

नगर मांहि डुंडी फिरवाय । जीवबंध को करै न काइ ॥
जाकैं सुणियो हिंसा नाम । ताकूं लूट लीजिये गांम ॥१६११॥

राजा आमिष आहार नित लेई। मांस बिना कछु मुख में ना देई ॥
सुंदर नाम रसोईदार। राजा आगे करी पुकार ॥१६१२॥
श्रावग तणों अठाईं व्रत। तातैं आमिष कोई न करंत ॥

राजा द्वारा मांस खाने की इच्छा

राजा कहै जो आमिष ल्यावै। तो मुझ आजि रसोई भावै ॥१६१३॥
ब्राह्मण कियो नगर तलास। बधिकां कै घर में नहीं मांस ॥
कहूं न पाया तबै मसाणां गया। बालक मृतक उठाय कर लिया ॥१६१४॥
रांध्या प्राण रसोई बीच। ऐसे करम किये उस नीच ॥
राजा खाइ बडाई करैं। बहुत सुवाद हुआ इण परैं ॥१६१५॥
तीन सै गांव विप्र को दिये। विप्र को सुख हुआ अति हिये ॥
ल्यावै नित बालक चुराइ। ता बालक नै राजा खाइ ॥१६१६॥
नगर लोक मन चिंता भई। छिप छिप सुरति चोर की लई ॥
बालक गह्या रसोईदार। लोका मिल पकडया तिन बार ॥१६१७॥
मारथा घणा पासली तोडि। पुछया पीछैं सबैं उह चोर ॥
तूं नित बालक ले ले जाय। तो कूं हम मारेंगे ठाइ ॥१६१८॥
द्विज बोल्या राजा के काज। इनको मांस रसोई काज ॥
नृप आग्या तैं बालक हरैं। प्रजा लोग सुण कर परजलै ॥१६१९॥
सिंहसेन कुंवर पै जाय। मंत्रीयां सेती कही समझाय ॥
राजा है परजा कै वाडि। खेत करैं जे बाढि उखाडि ॥१६२०॥
ऐसी हम परि हुई अनीति। कैसे बसैं लोग भयभीत ॥
सब मंत्री मिल कियो बिचार। स्योदास भूप तब दियो निकाल ॥१६२१॥

सिंघसेन का राजा बनना

सिंघसेन्त प्रति दीनुं राज। भयो सकल मन वंछित काज ॥
स्योदास भूप अरु सुंदर द्विज। वनमैं देख्या आचारज ॥१६२२॥
नमस्कार मुनिवर कूं किया। पाप पुन्य का भेद पूछिया ॥
सुण्यां धरम आमिष का दोष। राज लिया संजम का पोष ॥१६२३॥
महापुर नगर किया परवेस। राजा बिनां पडया वह देस ॥
तहां का राज स्योदास ने दिया। दंड सकल रायन परि लिया ॥१६२४॥
सिंघसेन पै भेज्या दूत। हमसूं आय मिलो तुम पूत ॥
सिंघसेन बोलियो नरेस। प्रजा मोहि दीयो नृप भेस ॥१६२५॥

कारण कवण पिता सौं मोहि । सांची बात कहूं मैं तोहि ।।
दूत गया तब राजा पासि । निठुर बचन मुख कहे प्रकास ।।१६२६।।
कोप चढ्या भूपति स्योदास । मन में जुद्ध कारण की आस ।।
अजोध्या नगर घेरचा चिहूं ओर । सिधसेन सौं कीनी भौर ।।१६२७।।
सिधसेन कूं बांध्या आइ । फेर राज जन मुगत्या आइ ।।
राज करत कितना दिन गये । चेत्याधर्म दिगंबर भए ।।१६२८।।
सिधसेन कूं सौंप्या राज । स्योदास किया मुक्ति का साज ।।
वाकै पुत्र भया ब्रर भरथ । चतुर्वक्र अर हेमारथ ।।१६२९।।
दशरथ उदय पाद पृथ्वीरथ भए । अंजिनरथ इंद्ररथ भए ।।
दीनानाथ मायंत बीरसैन । प्रीतमन कमलबंध सुभचैन ।।१६३०।।
कमलवांधवा रविमन धीर । बसंत तिलक तो सोमैं ठोर ।।
कुमेरदस अकुंथभगत । कीर्त्तमन अंमा सूरज रथ ।।१६३१।।
कुंदुरथ मृगेन्द्रसेन आदि भले । इमन हिरनांकुस मांधि रले ।।
नुम असथल बकुथल ननुरैस । रघुराजा जीते बहु देस ।।१६३२।।
अहरण भूप परतापी भया । बल पौरष अति प्रतिपाले दया ।।
है प्रथवीमती राणी पटधणी । रूप लक्षण गुण सोभा घणी ।।१६३३।।
ताकैं गर्भ दोइ सुत भए । अनंतरथ दसरथ निरभए ।।
अहरणराय कैं धरम सुं काज । अनंतरथ कौं सौंप्या राज ।।१६३४।।
सहस्ररश्मि रावण सौं जुधि । वा समैं एक ऊपजी बुधि ।।

दशरथ का राजा बनना

अहरण अनंतरथ दोनुं आइ । सहस्र रश्मि पै दिक्षा पाइ ।।१६३५।।
राजा दसरथ पाई मही । समद्रष्टी जानुं ते सही ।।
महषमती नगरी का राय । विभ्रमधर राजा तिह ठांव ।।१६३६।।
अमृतप्रभा ताकैं अस्तरी । अंबप्रभा भई पुत्तरी ।।
राय दसरथ कौं दई विवाह । भोग मगन मों करैं उछाह ।।१६३७।।
कौसल नगर अपराजित भूप । अपराजिता पुत्री सुखरूप ।।
किया व्याव दसरथ सौं आइ । भोग मांहि सुख चैन विवाह ।।१६३८।।
महारपुर तिलकराइ । भीममती सोमैं पटधाइ ।।
कंकाइ पुत्री दसरथ कुं दई । राजभोग तहां विलसत भई ।।
मंगलावती नगरी कैके मात । सुमित्रा सोमैं इह भांति ।।१६३९।।

इति श्री पद्मपुराणे कौशल महातम दशरथ उत्पत्ति विधानकं

२१ वां विधानक
चौपई

दसरथ वर्णन

राजा दसरथ अजोध्या धनी । सास्त्र मांहि जिनवाणी सुणि ।।
नितप्रति पूजै श्री भगवंत । गुरु सेवा साधै नित संत ।।१६४०।।
सरब सुखी नगरी में लोग । धरम राज सुं भुगतैं भोग ।।
राजसभा जे इन्द्र समान । मुनिसुव्रत का सुणैं पुराण ।।१६४१।।

नारद मुनि का आगमन

तिहां नारद मुंनि पहुंच्या आइ । सकल लोक उठि लागे पाय ।।
समाधान पूछी बहु भांति । कुण कुण तीरथां करी जात ।।१६४२।।
दीप अढाई में करो गमन । बैठि विमांण चलो जिम पवन ।।
पुंडरीकणी क्षेत्र विदेह । सीमंधर जिण सासण गेह ।।१६४३।।
समोसरण जो पुराण सुणे । सो प्रत्यक्ष हम देखे घणे ।।
संसार मेरे मन तें टरा । अनंत गुणां सुं देखो खरा ।।१६४४।।
केवलि भाषी वाणी सत्य । भवियण लोग सुणैं धरि चित्त ।।

नारद द्वारा रावण की बात कहना

अवर कही रावण की बात । कुंभकरण भभीषण भ्रात ।।१६४५।।
नलनील अवर सुग्रीव । हणुमांन सुभटां की नींव ।।
सोलह सहस्र सभा में भूप । हाथ जोडि खडा रहै अनूप ।।१६४६।।
तीन षंड जीते सब देश । नरपति सकल करैं आदेस ।।
निमितग्यांनी सागर कौं पूछि । मेरी भाव कहो आगम बुझि ।।१६४७।।
मैं सब जग बसि कीनां सही । एक खुटक मेरे मन रही ।।
काल रह्या है मोसुं भाजि । वा का जतन करो मैं आजि ।।१६४८।।
कहो वेग मोसुं विरतांत । तो मेरे मन होवै सांति ।।
तब निमित्ति यह कही विचार । दसरथ सुत लक्ष्मण कुमार ।।१६४९।।
जनक सुता का कारण पाय । ताकैं हाथ तेरी है आय ।।
या मनि सुणि चितवै नरेन्द्र । भूमगोचरी किम व्है बंध ।।१६५०।।
दोन्युं नृप का किजे नास । तो मैं रहुं अमर जग बास ।।
भभीषण समभावै सुणि बात । दशरथ कनक नांम बहुभांति ।।१६५१।।
किसकौं मारौं कहो भुपाल । बिण समभयां क्यों करो जंजाल ।।
तब ही मैं पहुंच्या तिरकूट । साथे कारण भेजे दूत ।।१६५२।।

जे तुम जाय किहां छिप रहो । तो आसा जीवे की लहो ।।
अब मैं जाय जनक सुधि देहूं । तुमकों सकल सुणाया भेउ ।।१६५३।।

दशरथ तब बुलाय मंतरी । मता विचारं चिंता धरी ।।
वह षेचर हम भूमि गोचरी । वाकी सुरभर कुंगाइ करी १६५४।।

राजा देश छोडि भजि गया । निज सूरत कर नृप थापिया ।।
अंतहैपुर ले राख्या थापि । राणी वा ढिग सेवक राइ ।।१६५५।।

याही रीत जनक नृप करी । कलहनी इनकी इह विध टरी ।।
कुंभकरण भभीषण भूपाल । बहुत ले चले साथ विशाल ।।१६५६।।

पाई सुरति अजोध्या थांन । दसरथ है सतखनैं सथांन ।।
याही विध बाहुकुं मारि । दोउ सिर ले गए तिण बार ।।१६५७।।

दोऊं नगरी पीटैं लोग । सब परियण मैं बाढो सोग ।।
रावण पासि आणि दोउ सीस । पूजा दांन निमित्त जगदीस ।।१६५८।।

अपना मन कीया निश्चंत । अमर हुवा रावण बलवंत ।।
होणहार टार्यो किम टरै जाइ । जे कोई करै कोडि उपाव ।।१६५९।।

दशरथ जनक पूर्व दुख दिया । या भव कों इनमें व्यापिया ।।
बहुरि पुन्य कीया सुभ ठांम । प्रगट भया तासौं फिर नाम ।।१६६०।।

दोन्युं नृप आए निज देस । बहुरि दोन्युं भए नरेस ।।
टर्यौ कलह निर्मबो आनंद । हुवा सहाई धर्म जिणंद ।।११६१।।

दूहा

होणहार कैसे टलैं, बहुविध करै उपाय ।।
अणहोणी होणी नहीं इह निमित्त का भाव ।।१६६२।।

इति श्री पद्मपुराणे दशरथ जनक काल बला टालण विधानकं ।।

२२ वां विधानक

चौपई

कैकयी वर्णन

कौतिग मंगल उतरे सैन । शुभमति भूप प्रजा सुख चैन ।।
पृथ्वी राणी ता पटधनी । द्रोणपु केकया पुत्री बणी ।।१६६३।।

लक्षण रूप सकल गुणभरी । महा विचित्र केकं पुत्री ।।
छहौ राग तीस रागणी । अठतालीस नंदन सोभै घणी ।।१६६४।।

नाद भेद बीणा के भेद । ग्यांन सास्त्र के जाणै भेद ।।
देस देस की बोली बैंन । कोकिल कंठ सुणत सुख चैंन ।।१६६५।।

लिखें पढ़ें बहु शास्त्र पुराण । च्यार वेद का करै वखांण ।।
जोतिग वैदक भणी व्याकर्ण । आगम कहै मन संसय हर्ण ।।१६६६।।

चउदहै विद्या बहुतरि कला । सुधरील कौं जाणै भला ।।
सीलवंत रूप की खांनि । तीन लोक का समझै ग्यांन ।।१६६७।।

कन्या भई विवाहण जोग । सुमति मंत्री राजा पूछियों नियोग ।।
मंत्री सगला लीया बुलाय । अंदर मता विचारैं राय ।।१६६८।।

कन्या सो है गुण भरपूर । यातैं सरस होय जे सूर ।।
तासो समझि कीजिए विवाह । उत्तम कुल आगिणे नाह ।।१६६९।।

स्वयंवर रचना

मंत्री कहै स्वयंवर रचो । भली भली सौ जौ तिहां संचो ।।
देश देश तैं आवैं राय । कन्या कं कर माल दिवाय ।।१६७०।।

जा गलि डारै तास सो वरै । यह विचार हियै में धरै ।।
बहुत भले पाटंबर आणि । जिण तैं बहुत सभानें ताण ।।१६७१।।

कनक थंभ रतनन की जोति । नरपति आए तिहां बहुत ।।
परिवाहण हैमप्रभ भूप । सिंहासण बहां धरै अनूप ।।१६७२।।

तब कन्या वरमाला लई । ताकैं साथि नृपति धाइ धई ।।
चकडोल चढि कन्या तिहां आय । बिरदाली बनावैं धाइ ।।१६७३।।

दसरथ के गलै घाली माल । तब सब कोप उठे भूपाल ।।
कहै इक एक नगर का धणी । यामैं बल पौरिष क्या हणी ।।१६७४।।

पकडन आये रावण के लोग । भागि कन्या सब सुगनैं भोग ।।
अैसे परि रीझ कैं किया । माला दई राजा की धिया ।।१६७५।।

अंह बहे फिर चालै राय । आ राजा को मारैं ठांइ ।।
हरिवाहण हेम प्रभु पैं गए । अैसे वचन ऊनु तनिए । १६७६।।

सगला नृपां यह मता विचार । दसरथ को घेरया तिह बार ।।
सुभमति राय कहै समझाय । कंकैयां सो अयोध्या ले जाइ ।।१६७७।।

दशरथ द्वारा युद्ध

हम इन सौं समझेंगे बात । तुम निज घर पहुंचो कुसलात ।।
बोलै दसरथ राजा सुणौं । इनकौं तो मैं पल में हणौं ।।१६७८।।

तुम देखो मेरा प्राकर्म । इनका मारि गमाऊं भर्म ।।
चढया कोप दसरथ भूपती । रथ परि बैठी उजली रती ।।१६७९।।

कैकेया आय बैठी रथ बीच । विद्या साधी पूरण हीच ॥
तुम कीज्यो निर्भय हो युध । रथ तुम भरा चलाऊं सुध ॥१६८०॥
सुभमति की सेन्यां सब चली । जामैं सकल युध की गली ॥
हरिवाहन के सनमुख दौड । खैंचा धनुष बांण नै छोड ॥१६८१॥
सह न सके दशरथ के बाण । सब ही के भूले अवसांन ॥
भाजे तब ही सकल नरेस । हेम प्रभु जांगे उपदेस ॥१६८२॥
रण छांडयां पति नांहीं रहै । कुल कलंक जुगि जुगि कौं दहै ॥
तब सब समदि एकठे भये । सनमुख लरन भए काछु थए ॥१६८३॥
सूरवीर दोउं धा लडैं । पैदल सूं पैदल कट मरैं ॥
हाथी सूं हाथी भुभंत । रथ सेती रथ टूट पडंत ॥१६८४॥
नगन खडग दामिन जिम दिपै । छुटै गोली सब कातर छिपैं ॥
जैसे बरसैं घणहर धार । ऐसे पडै दोऊं तरफ की मार ॥१६८५॥
दुहु धा पडी पर्वत सम लोथ । तिण को गृध्र भखैं है चुंथि ॥
मार मार वाणी तिहां होय । कायर धीरज धरै न कोय ॥१६८६॥
हेमप्रभु के सनमुख भया । मारी गदा टूटि रथ गया ॥
हेमप्रभु गिरपडिया राव । रथ नीचें आए लसु पाव ॥१६८७॥
संग भूप को लेकर भजे । दशरथ जीत्या बाजा बजे ॥
राजा सर्व दसरथ कौं नये । छोडि क्रोध निर्मद ह्वै गये ॥१६८८॥
सुभमति नैं दीणी ज्यौंनार । सगलां की करिकैं मनुहारि ॥
कैकया दई दसरथ को ब्याह । गये अजोध्या घणे उछाह ॥१६८९॥
मंत्री सकल वधाई करी । सकल प्रजा सुख आनंद भरि ॥
नया जनम दशरथ फिरि पाय । कलस ढालि पद बैठो राय ॥१६९०॥
भोग भुगति मैं बीतैं घडी । देस प्रदेसं की रति करी ॥
जिहां तिहां दशरथ गुण चलै । दुरजन दुष्ट बहुत दल मलै ॥१६९१॥

दूहा

देश देश के भूपती, मांनै दसरथ आंण ।
कुलमंडल नरपति भया, रघुबंसी जग भाण ॥१६९२॥

चौपई

सकल ठाम की चिंता मिटी । दुख संताप की रज सब कटी ॥
निरभय राज करै नरनाह । कैकया के गुण करै सराह ॥१६९३॥

देखी बहुत प्रकार गुण भरी । अवर बात रण की चित धरी ॥
राणी सुं बोलै तिण बार । जो चाहो सो मांगो नारि ॥१६६४॥

तब केकया बोलै सुंदरी । प्रभु मुझ वचन देहु इण घरी ॥
जब चाहूं तब लेस्यूं मांग । एह वचन तू द्यो हम त्याग ॥१६६५॥

सोरठा

महा विचित्रा नारि, वा समय उन बुधि कर्गी ॥
पावैंगी तिण बार, जिण बिरयां इच्छा करैं ॥१६६६॥

इति श्री पद्मपुराणे कैकया वर प्रधानं विधानकं ॥

२३ वां विधानक

चौपई

अपराजिता राणी द्वारा स्वप्न दर्शन

अपराजिता राणी पटधणी । सीलवंत अति सोभा बणी ॥
भले महूरत पाछली राति । सुपनां देख्या नाना भांति ॥१६६७॥

स्वेता गयंद ऊजले वर्ण । देख्यो सिंघ गर्जना कर्ण ॥
सूर्य उदय देखा परभात । देख्यो सांत पूनिम की रात ॥१६६८॥

बाजे बाजैं गुणियण पाइ । जागी तब चक्रित भई आइ ॥
जा दशरथ सूं सुपने कहे । ज्यौरा सुणि अगणित सुख लहे ॥१६६९॥

स्वप्न फल

होइ पुत्र त्रिभुवन का धणी । जाकी महिमा जाइ न गिणी ॥
कुल उज्जल बालक तारणतरण । नाम जपत होइ पातिग हरण ॥१७००॥

या सम बली न दूजा और । ऐसा अधिक प्रतापी जोर ॥
सुणि पिय सबद भया आणंद । चित मैं ध्यावै देव जिणंद ॥१७०१॥

सुमित्रा द्वारा स्वप्न दर्शन

सुमित्रा राणी पिछली राति । सुपिना देखे उठी प्रभात ॥
गर्जत देख्या सिंह केहरी । लक्ष्मी कलस सकल गुण भरी ॥१७०२॥

कमल फूल घट ऊपर धरे । देखे समुद्र लहरि उच्छरे ॥
सूरज उदय निर्मला देखि । देख्यो पूनिम चंद विसेष ॥१७०३॥

सुदरसण चक्र देख तिण बार । जागि उठी मन हरस अपार ॥
पति सो कही सपने की बात । सुणे सुपन फल नाना भांति ॥१७०४॥

होसी पुत्र महाबलवंत । तीन खंड का राज करंत ॥
ताकी सरभर अवरन कोय । तीन लोक ताको जस होय ॥१७०५॥

लक्ष्मण जन्म

नवमासैं जब जनम्या पूत । रूपवंत लक्षण संयुक्त ।।
पंडित तैं डि लगन सुभ लिया । दान मान मन वांछित दिया ।।१७०६।।

लक्ष्मण नाम कुंवर का धरया । अमनंत रिध सिध गुण भरया ।।

भरत जन्म

केकय गर्भ भरत भया पुत्र । बहुत रूप अरु सहा विचित्र ।।१७०७।।

अपराजिता के राम जन्म

अपराजिता भई परसूत । रूपवंत लक्षण संयुक्त ।।
पदमनाभ ससि की उद्योत । सब परियण में सोभा होत ।।१७०८।।
सुप्रभा पुत्र सत्रुघन भया । सो भी देव लोक तैं चया ।।
रामचंद्र पदम का नांम । च्यारौं वीर दिये अभिराम ।।१७०९।।
सेवा करैं देवता घने । बोलैं भासा सोभा बने ।।
च्यारों बाल खेल अति करैं । देख रूप सब का मन हरैं ।।१७१०।।

रावण के घर में अशुभ शकुन

रावण के घर उलका पात । बिजली पडी कांगिर ढह जात ।।
रात दिवस रोवैं मंजार । कूकर रोवैं बारंबार ।।१७११।।
मंगल चारि सुपने मांझि । बोलैं काग होइ जब सांझ ।।
उल्लु बोलैं दिन तिहां घणे । असी चिंता मन रावण तणे ।।१७१२।।

सोरठा

दशरथ अजोध्या का धणी, ताकैं पुत्र जु च्यारि ।।
रामचंद्र लक्ष्मण बली, भरत सत्रुघन सारि ।।१७१३।।

अडिल्ल

पूजैं श्री जिणराय सुगुरु सेवा करैं,
वाणी सुणैं मन लाय सुद्ध समकित धरैं ।।
प्रगटयो जस संसार कीर्ति बहु तिण तणी,
देइ सुपात्रह दान दया पालैं घणी ।।१७१४।।

चौपई

चारौं भाइयों द्वारा विद्या सीखने का वर्णन

कंपिला नगर का थान । भारग सिद्ध अग्नी का नाम ।।
जब उह पुत्र सयाना भया । नित्य उलाहणा आवै नया ।।१७१५।।

गागर फोडै निकसै पणिहार । गली गली में खावै गार ।।
मात पिता भए कलि कांन । दिया निकाल कुपात्र हि जांन ।।१७१६।।

भूख्या प्यासा दूखित घणां । ऐसा ताहि कठिन दिन बण्यां ।।
मांगै भीख उदर निठ भरै । इण विध गया राज गिर पुरै ।।१७१७।।

कुसाग्र राय नगरी का धणी । ताकै विद्या साला बणी ।।
वैस्वासुत ते गुरु प्रवीण । आवध विद्या सिखावै तीन ।।१७१८।।

कुंवरु साथ शिष्य बहु जुरे । सीखैं विद्या ते इण परै ।।
तिहां एलते पहुंचा जाइ । दानसाला मां भोजन खाइ ।।१७१९।।

सीखैं विद्या रहै उन पास । बहु विद्या सीखी उन पास ।।
राजा पासि गया इक बार । नृपति अग्रे कही पुकार ।।१७२०।।

आया एक विदेसी भेष । उनै विद्या सीखी सब ऐष ।।
कुंवर न लही विद्या हीण । परदेसी ते महाप्रवीण ।।१७२१।।

राजा ने गुरु लिया बुलाय । सिष्य प्रतें गुरु कहैं समझाय ।।
राजा देखत चलाओ बाण । भैंडे बंडे छोडे जाणि ।।१७२२।।

राज सभा गुरु पहुंचे जाय । गये आयुध साला की छांय ।।
राजकुंवर सर छोडै भले । औरां का सर बांका चलै ।।१७२३।।

एल प्रदेशी धनुष कर गह्या । गुरु का वाकि सुध लह्या ।।
टेढे सर कूं छोडत भया । राजा का संसय मिट गया ।।१७२४।।

गुरु परदेसी परतुष्ट मांन । कन्या देण कही तिण जाणि ।।
एल प्रदेशी ज्ञान चित किया । माहिन समान गुरु की धिया ।।१७२५।।

एमई ब्याहुं तो लागई दोष । किस ही जनम लहै नहीं मोक्ष ।।
अरघ रात्रि तब भाग्या एल । अजोध्या नगरी आया तिह वेर १७२६।।

दसरथ नृप के आया पास । अपना गुण कीना परकास ।।
राय दशरथ ने कन्या दई । इसकूं तिहां सुख थिति भई ।।१७२७।।

च्यारूं राजसुत तिहां मिल्या । विद्या गुण सीखैं तिहां भला ।।

इति श्री पद्मपुराणे रामलक्मण, भरत, शत्रुघ्न विद्या विधानकं ।।

२२ वां विधानक

चौपई

जनक भूप विदेही अस्त्री । निर्भय राज करै तिहं पुरी ।।
चक्रध्वज पुर का इक धणी । मनसेणी राणी तसु तणी ।।१७२८।।

चित्रोत्सवा पुत्री ताकैं उर भई । रूप लखण सोभै उरमई ॥
धूमसेन निज ब्याहा आनि । [illegible] ॥१७२९॥

राजसुता सेती अति प्रीत । एक बिचारी खोटी रीत ॥
दोन्यां ने मिल कियो बिचार । नगरी छोडि भज्या तिण बार ॥१७३०॥

लछमी घणी लेकर नृप सुता । निकसे दोनु करके मता ॥
बिदरभ देस प्रकृति सिघराय । ए उस नगरी पहुंते जाय ॥१७३१॥

वंचसि भये नगर के पासि । छाय झुंपडी करैं बिलास ॥
खोयां खाय दलिद्री भये । लकडी बेचत कछु दिन गये ॥१७३२॥

कुंडल मंडल राजकुमार । बन क्रीडा आये इक बार ॥
देखी त्रिया रूप गुण रासि । कुमर कांम की उपजी प्यास ॥१७३३॥

दूती भेज तिन लई बुलाइ । नृप सग मिली महा सुखपाय ॥
रात दिवस भुगते सुख भोग । इनका ऐसा बण्यां संजोग ॥१७३४॥

विप्र द्वारा विलाप

विप्र आया घर संझ्या बार । सूनां घर पाया बिन नारि ॥
सारा दिन का हारा थका । भया अकेला गई कालिका ॥१७३५॥

त्रिया त्रिया मुख करै पुकार । कबही रोवै खाय पछारि ॥
गली गली मे रोवत फिरै । राय अग्रे जाय गिर पडै ॥१७३६॥

मेरा न्याव करो तुम नरेस । मेरी अस्त्री गई तुम देस ॥
मुझ नारी तुम देहु ढुंढाय । नांतर तजौं प्राण विष खाय ॥१७३७॥

सरणां आइ तुमारे मैं बस्या । म्हारा घर बिणसैं बिन बसा ॥
राजा मंत्री लिया बुलाय । तिणसैं बात कही समझाय ॥१७३८॥

राजा द्वारा षडयन्त्र

जब वह विप्र आवै मो पासि । तब तुम झूंठ कहो कैं साज ॥
नृप मंत्रीय सभा सब जुरी । विप्र फेर आयो ता घरी ॥१७३९॥

मंत्री इक बोल्या इण भांति । मैं देखी मारग में जात ॥
पोदनपुर के मारग मांहि । मैं आवं था देखी तरु छांह ॥१७४०॥

आरजिका तिहां तप करैं । घणी साथ चेली तप करैं ॥
सखी एक अति रूप की खाणि । उनकी दिक्षा लीनी आन ॥१७४१॥

बेग जाय पोदनपुर ढूंढ । इहां क्यूं सोर करत है मूढ ॥
विप्र कूं सब ही दिया बहकाय । पोदणपुर उण सोधण जाय ॥१७४२॥

देखे वन उपवन चहुं ओर । देखी गुफा परबत की ठोर ॥
देह सिथल वन देख्या भला । जिहां तिहां देवालय मिला ॥१७४३॥

पाई नहीं फिर आभा विप्र । ताकौं आवन देखा नृप ॥
मडी दार तब दीया लगाय । गाय मारि कर दिया भजाय ॥१७४४॥

मुनि दीक्षा

वन में बहुत दुखी बिललाय । आरिज गुपति मुनि भेटया जाय ॥
सुणे धरम के सूक्ष्म भेद । सोह करम की टूटी खेद ॥१७४५॥

दिक्षा लई दिगम्बर भया । जैन धरम निश्चै चित दिया ॥
सियालै रहै नदी के तीर । सहै परीसा काया धीर ॥१७४६॥

उंनालै गिरि पर धरि जोग । तपै भानु लू बाजै रोग ॥
चालै पसेव पाप बहि जांय । असा तप साधै मुनिराय ॥१७४७॥

वरषा काल वृक्ष कै तलै । बर्षै मेघ अरु नाला चलै ॥
पानि चुवै मुनि उपरि पडै । मांछर डांस सदेह सौं लगै ॥१७४८॥

लागैं बेलि अंग लपटाइ । मुनिवर सहैं परीसा काइ ॥
चिदानंद सौं लाया ध्यान । दया छह काया की जांन ॥१७४९॥

रत्नावली का राजा द्वारा युद्ध करना

अनरण रत्नावली का राय । अहिकुंडल का सुण्या अनाय ॥
चक्रपुरी तिण घेरी आय । कुंडल मंडल निकस्या आय ॥१७५०॥
दुहुवां जुध भया भयभीत । फिर आया गढ भीतर जीत ॥
मूंद किवाड गोला की मार । अनरन भूपति मानी हार ॥१७५१॥

किसहि न पावै गढ का भेद । राजा कै मन उपजी खेद ॥
दिन दिन हुवै दुरबलि देह । बालचंद्र सेनापति पूछै एह ॥१७५२॥
किण कारण देही तुम षीण । मन की बात कहो परवीण ॥
राजा सेनापति सौं कहै । मेरे मन में संसा रहै ॥१७५३॥

मंत्री द्वारा उपाय बतलाना

चक्रपुरी आई निज हाथ । ताथैं चिंता है मन साथ ॥
बालचंद्र बोलैं बलवान । कुंडल मंडल पकडौ राजान ॥१७५४॥

बालचंद्र ले सैन्या संग । गढ ततकाल कियो तिण भंग ॥
कुंडल मंडल बांध्या जाय । निज पति पास आया तिहं ठांय ॥१७५५॥
दई मार पग सांकल घालि । असी रीति पडया बहु जालि ॥
बसन उतारि दिया सब छोडि । वन में गया करम की छोडि ॥१७५६॥

वैराग्य भाव

तिहां श्रवण मुनिवर तप करैं । नमस्कार करि पाइन पड़ैं ।।
सांचा कहो धरम समझाय । मेरा पाप कटैं किहि भाय ।।१७५७।।

राज रिद्धि मद धरम न किया । बिपति नैं करुणा समझिया ।।
मेरा किण बिध होइ सहाइ । किम भवसागर उतरौं पार ।।१७५८।।

उपदेश

बोलैं मुनिवर लोचन ग्यांन । सप्त विसनतैं धरम की हांणि ।।
सातों नरक अनंता भ्रमैं । छेदन भेदन बिनसह जमैं ।।१७५९।।
भूख त्रिषा का नावैं अंत । इण विध प्राणी दुःख लहंत ।
जे तीरथ बहुतेरा फिरैं । भद्र होई कुं दान नित करैं ।।१७६०।।

क्रोध मांन माया मद होइ । ऐसा गुरु सेवो मत कोइ ।।
नख अर केस तीरथ बहाइ । आपा बंणतं हूं पाप उठाइ ।।१७६१।।

अण छाणें जल करैं सनांन । अण गल जल पीवैं जल पान ।।
ते निहचैं नरक में जांइ । इण बिध धरम धरो मन ल्याव ।।१७६२।।

समकित सुध आतमा जोइ । दया भाव जाकै चित होइ ।।
मनुष देव गति ऊंची लहै । दुष्टि हुवै सो नीची गति सहै ।।१७६३।।

राजा द्वारा अणुव्रत ग्रहण करना

सुणि राजा तबै अणुव्रत लिया । हिंस्या झूठ चोरी परतिया ।।
नमस्कार करि मारग गह्या । इह संसा उसकै मन रह्या ।।१७६४।।

मेरा कुटंब अरण की बंदि । वे छूटैं तब हुवै आनंद ।।
अब हूं साधूं कोई देश । बांधू मैं आणि अरन नरेस ।।१७६५।।

मै अपणे बल छुडाउं जाइ । अइसैं चित बत राजा आइ ।।
तरषा पिव लागी तिस भूख । देही सकल गई तिस सूख ।।१७६६।।

अंत भया प्राण का नास । सुमरयां प्रभु पांच की आस ।।
समकित सौं पावैं गति भली । आगै पूजंगी मन रली ।।१७६७।।

चित्रोत्सवा द्वारा दीक्षा लेना

चित्रोत्सवा उपज्यो बैराग । सकल बिभूति कुटंब हो त्याग ।।
आर्यिका पास ली दिक्ष्या जाइ । वईवरत करैं बहु भाइ ।।१७६८।।
बारह बिध तप साधैं नित्त । निसवासर अनुप्रेक्षा चित्त ।।
तप करि कष्ट अति देही दहै । सत संयम आतम सुध लहै ।।१७६९।।

देह छोडि लियो स्वर्ग विमाण । उहां तैं चई जनक घर आंण ।।

सीता का गर्भ में आना

त्रिदेहा गरभ आणि थिति करी । कुंडल मंडलीभी तसु धरी ।।१७७०।।
पिंगल मुनिवर तजे पराण । पुंहच्या महाशुक्र विमाण ।।
अवधि विचार एक भव तणी । अवण पुन्य तैं सुरगति बणी ।।१७७१।।
पिछली सुरति तैं कोप्या देव । कुंडल मंडल का जाण्या भेव ।।
उन मेरी थी लीनी नारि । मुझको मारि दीया निकालि ।।१७७२।।
मोहि घणे दुख दीने भूप । तब मैं भया दिगंबर रूप ।।
तप प्रसाद ऐसी गति लही । वे दोन्यूं विदेहा उदर में सही ।।१७७३।।
जनंम समैं ताकूं मैं हरूं । अपणे मन भाने हूं करूं ।।
इसा देव गरभ रिछ्या काज । ऐसी सुरत चितै सुरराज ।।१७७४।।

सीता भामण्डल का जन्म

नव मास जब पूरण भए । पुत्री पुत्र जनक घरि भए ।।

देवता द्वारा बालक का अपहरण

बालक लिया तबै देव उठाइ । पकडि बांह गयण ले जाइ ।।१७७५।।
मारैं पेखि तबै बालक हंसै । तबै सुर तणे क्रोध मन बसै ।।
तू कुंडल मंडल था भूप । चित्रोत्सवा देखि स्वरूप ।।१७७६।।
तिसनैं चुराय लेय तु गया । मो कूं भी तैं अति दुख दिया ।।
तब मैं था भिक्षुक आधीन । पिंगल विप्र मैं वह सम कीन ।।१७७७।।
फैंकूं गगन गरुड ले जाय । डालूं सिंध में मच्छ तोहि खांय ।।
कै पर्वत पर पटकूं तोहि । सिला तलैं दाबूं अइसा छोहि ।।१७७८।।
ऐसे मनमें करैं उपाय । बहुरि भया दया का भाव ।।
मैं था विप्र भिक्षुक आधीन । दया आणि साधे गुण तीन ।।१७७९।।
सम्यकदर्शन सम्यक ग्यान । तप करि भया देवता आणि ।।
अब मैं नया पाप क्यों करूं । याकुं ले सुभ थानक धरूं ।।१७८०।।
रथनूपुर विजयारध जाय । राय तणे मंदिर भठाय ।।
नृप तब बालक लिया उठाइ । सुदरसना राणी लई जगाय ।।१७८१।।
उठि तू पुत्र तइही जण्या । मींडत आंखि उठी जब सुण्या ।।
हूं थी बांझि जण्या सुत केम । बिना गर्भ सुत होवैं एम ।।१७८२।।

राजा कहै गर्भ तुझ गूढ । सोचै कहा लेहु सुत मूढ ।।
देवता कानैं कुंडल दिये । जिनकौ देखि अचंभे भए ।।१७८३।।

सांचै पुत्र जण्यां मैं आजि । किण पहराये कुंडल साजि ।।
तब राजा बोल्यो सत भाय । या कुं सुर ल्याया इण ठांय ।।१७८४।।

पुण्यवंत मह शशि की जोति । ... ... कन्यि सेन अहोति ।।
नगरी मध्य खबर यहु दई । रांणी पुत्र प्रसूता भई ।।१७८५।।

सुख में बधैं श्राय कैं बाल । अगणित धन खरच्यो भूपाल ।।

जनक राजा द्वारा विलाप

विदेहा बालक देखैं नाहि । रुदन करैं नयना परवाहि ।।१७८६।।
जनक राय रोवैं तिण वार । हम क्या पाप किया करतार ।।
ऐसा कवण पुत्र मुझ हरैं । पूरब कर्म उदय दुख पडै । १७८७।।

देश देश कौं पत्र लिखाइ । करूं इलाज पावै किण ठाइ ।।
राजा दशरथ मेरा मित्र । वह ढूंढैगा अंतर प्रीत ।।१७८८।।

राजा दशरथ द्वारा खोज

दशरथ सुणि ढूंढे सब थांन । कांहीं न पाया अपणे जांन ।।
जनक त्रिया सौं कहैं समभाय । पुण्यवंत बालक वहु भाय । १७८९।।
बधै तो बढे काहु के गेह । तुम चिंता न करो संदेह ।।
जे कछु सनमंध है हम साथि । तो आणि मिलावैगा जिण नाथ ।।१७९० ।

कन्या का सीता नाम रखना

कंन्या का सीता धरया नाम । लीला करैं बाल सुख धांम ।।
रूप लक्षण शशि की जोति । गुण बरण्यां कहूं पार न होत ।।१७९१।।
वस्त्र आभरण बण्यां सब अंग । गोद लिया परियण उछरंग ।।
दिन दिन बाढैं सुखस्यौं तेह । मात पिता अति धरैं सनेह ।।१७९२।।

इति श्री पद्मपुराणे सीता भामंडल उत्पत्ति विधानकं

२३ वां विधानक

श्रेणिक द्वारा राम सीता विवाह को जानने की इच्छा

जब जोडे श्रेणिक नृप हाथ । एक ससय मो मन जिनमाथ ।।
रामचंद्र सीता का व्याह । किण विध किया जनक नर नाह ।।१७९३।।
राम कवण पराक्रम किया । कैसें व्याही जनक की धिया ।।
वाणी कहैं तबैं जिनराय । गणधर वचन कहै समझाय ।।१७९४।।

विजयारध गिरि दक्षिण ओर । कैलाश गिर उत्तर की ठोर ॥
बर बर देस और विदग्ध । मैं उरमाल नगरपति सग्ध ॥१७९५॥
रद्रधर बर राजा तिह नग्र । अंकन और भूपती सग्र ॥
म्लेछ खंड का राजा जुडधा । ऐसा मता उनु कर मिल्या ॥१७९६॥
आरज खंड पर कीजे दोड । कोई नहीं नामी तिहं ठोर ॥
रावण है लंका का देस । इह ठाम जाय हम करैं प्रवेस ॥१७९७॥

जनक की नगरी मिथिलापुरी पर आक्रमण

म्लेछ खंड का दोड्या भूप । ढाहत फोडत आवैं अम रूप ॥
मिथलापुरी जनक तिहां राय । घेरया नगर म्लेछां आय ॥१७९८॥
जनक दसरथ कनैं दूत पठाइ । लिख्यो सकल विरतांत बनाय ॥

जनक द्वारा दशरथ के पास सन्देश भेजना

म्लेच्छ मोहि घेरया है आप । थाणा मेरा दिया उठाय ॥१७९९॥
पीडा परजा कूं दे है घनी । देवल ढाहि गऊ तिहां हणी ॥
साधां कूं देहैं उपसर्ग । जिसकूं तिसकूं मारैं खड्ग ॥१८००॥
मैं तो आय गढ भ्यंतर रहूं । प्रजा दुःख किण बिरते सहूं ॥
प्रजा सुखी तो राजा सुखी । परजा पीडित राजा दुखी ॥१८०१॥
जो कुछ प्रजा पुंन नित करैं । छठा अंस राजा नै पड़ै ॥
उनका डर तैं प्रजा सब भजै । जो हूं भाजुं तो कुल लजै ॥१८०२॥
तुम जो मेरा ऊपर करो । तो मैं निकल दुष्ट सौं लरौं ॥

दूत का अयोध्यापुरी आना

आया दूत अजोध्यापुरी । राजसभा देखैं सब जुरी ॥१८०३॥
दसरथ च्यारूं पुत्र संयुक्त । करैं सलाम आय तिहां दूत ॥
दिया लेख राजन निज हाथ । बांच पुत्र सूं करैं नरनाथ १८०४॥
रामचंद्र कुं राजा करो । ढालो कलस मुकट सिर धरो ॥
करो आरती पटह बजाय । हूं साधूं म्लेच्छ कूं जाय ॥१८०५॥
रामचंद्र पूछैं तब बात । मो कूं राज क्युं देत हो तात ॥
दसरथ कहै तुम सुणो कुमार । म्लेच्छां परिजाश्यां इण बार ॥१८०६॥
तुम साधो पृथ्वी का राज । हम जावैं वरिश्त पर काज ॥

रामचन्द्र की जाने की इच्छा प्रकट करना

श्री रामचन्द्र बोले बलवीर । करो राज मन राखो धीर ॥१८०७॥

वे मलेच्छ जैसा सुण लिया । कहां सिंध आगे चालिया ।।
जो तुमारी सरभर करा होइ । ता परि भला कहें सहु कोइ ।।१८०८।।
हम हैं प्रभुजी आग्या देहु । सकल म्लेच्छ मिलाऊं खेहु ।।
राय भणे तुम हो लघु वैस । वे म्लेच्छ भयानक देस ।।१८०९।।
किस पर युध करोगे जाय । ऐसे भूप कही समभाय ।।
रामचंद्र तब उत्तर कहैं । स्यंघ पुत्र किसका भय करैं ।।१८१०।।
हस्ती जूथ सबद सुण डरैं । वे भाजैं सकल सुध वीसरैं ।।
निगामी एक करै बन छार । हम सूं जोधे वह मानैं हार ।।१८११।।
अइसैं उनहीं लगाऊं हाथ । फेरि न बोलैं काहू साथ ।।
रामचंद्र लक्ष्मण तिहां चले । सुर सुभग संग लीने भले ।।१८१२।।

राम का मिथिला गमन

मिथलापुर मां पहुंचे जाइ । इनका दल दृष्टि न समाइ ।।
जनक कनक नैं छोडे बाण । मारि म्लेच्छ किये घमसाण ।।१८१३।।
उन म्लेच्छ नीसांन बजाय । जनक कनक भेट्या सनमुख जाइ ।।
बाजे बजै भेरि करनाइ । बहुत भूप आये उस ठांइ ।।१८१४।।
जनक तणा दल हट्या जाणि । घणें लोगां तज्या पराण ।।

राम द्वारा युद्ध करना

श्री रामचंद्र धनुष टंकार । गह्या धनुष लक्ष्मण कुमार ।।१८१५।।
पडे धाइ दल ऊपर जाय । दुहुं मां जुध भयो बहु भाइ ।।
दुरजन जाय गहगट करैं । तब म्लेच्छ सब फिरि कैं लरैं ।।१८१६।।
लक्ष्मण ऊपरि आये धाय । तोड्या रथ मारे दुरजन राय ।।
श्री रामचंद्र पहुंच्या तिह बेर । मारि म्लेच्छ किये सब ढेर ।।१८१७।।
इनका है रवि जैसा प्रताप । इण प्रकार भाए प्रभु आप ।।
अंधकार भाजै जिम देखि । रवि की प्रगटै किरण विशेष ।।१८१८।।
जैसे पटल महा घनघोर । भागं फाट पवन के जोर ।।
मलेच्छां की फौज चली सब भाग । ए दौडे उन पीछे लाग ।।१८१९।।
इनके दल बल हुवा घणां । राम प्रसादै पौरिस अति बणा ।।
पकडै जिसनैं मारैं ठौर । पडी लोथ तिण की नहीं बौड ।।१८२०।।

राम का आदेश

रामचंद्र इह आग्या भई । हिंसा जीव करो मति कोइ ।।
भागे का पीछा मति करो । अब तुम अपणे थानक फिरो ।।१८२१।।

रामचंद्र लक्ष्मण की जीत । जनकराय सों बांधी प्रीत ।।
जैं जैं सबद करैं सब लोग । भाजे ताके सब सोग वियोग ।।१८२२।।

इति श्री पद्मपुराणे म्लेच्छ पराजय विधानकं

२४ वां विधानक

चौपई

जनक की इच्छा

जनक बिचारी तब मन मांहि । ऐसी वसत कछु मेरैं नांहि ।।
रामचन्द्र कै अग्रे धरां । उनकै गुना करै नारद नांह ।।१८२३।।
सीता देण की इच्छा करी । नारद कांन बात यह पडी ।।

नारद द्वारा कन्या को देखना

नारद जुध इनौं का देखि । अपणैं मन हरषियो विशेष ।।१८२४।।
कन्यां देखण कूं धरि भाव । आया अंतहपुर की ठांव ।।
जनक मंदिर नारद मुनि गया । दर्पण लीयां थी वहां सिया ।।१८२५।।

नारद को देख सीता का डरना

कन्यां देखै अपणां वरण । सब सरीर दीसै लगि चरण ।।
सीस जटा जुट देह मलीन । हाथ कमंडल पीछी लीन ।।१८२६।।
कटि पछदनी अति तापस मुनी । सीलवंत नारद रिष गुनी ।।
देखी छाया सीता डरी । भाजी कन्यां वाही घडी ।।१८२७।।
मा मा करि दोडी घर मांहि । नारद पाछैं दोडे ताहि ।।
पोलीदार जावा नहि देहि । नारद सेती वाद करेहि ।।१८२८।।
भया कोलाहल नरपति सुण्यां । कहा सोर अंतहपुर बण्यां ।।
आगन्यां भई दौडि सब सूर । आयुध बहुत लिये भरपूर ।।१८२९।।
नारद निज विद्या संभालि । गिरि कइलास गया तिहं काल ।।
ऊंचे नीचे लेइ उसास । नहीं थी जीवण की आस ।।१८३०।।

नारद का विचार

नारद मुनी चल्या बडी वार । मनमें उपज्या तब अहंकार ।।
मोसुं नृप जनक ऐसी करी । मोहि देखि सीता भाजि दुरी ।।१८३१।।
मिथलापुरी जनक की मही । करूं उपद्रव तो नारद सही ।।
लीख्या पट्ट सीता का रूप । रथनूपुर चंद्रगति भूप ।।१८३२।।

प्रभामंडल है तासु कुमार । नारद गयो तिरण सभा मझारि ।।
उठें लोग जोडे दोउ हाथ । दरसन देखि नारद मुनि नाथ ।।१८३३।।
नमस्कार बहुत विध किया । नारद नैं बहु आदर किया ।
प्रभामंडल नैं पट्ट दिखाइ । निरखैं रूप अधिक सुख पाइ ।।१८३४।।
पदमावती के सुरपती धणी । कै किंनर सोभा अति बणी ।।
बोले नारद सुणों कुमार । इन्द्रकेतु सुत जनक भुवाल ।।१८३५।।
मिथलापुर का मुगतै राज । विदेहा राणी लाज जिहाज ।।
नाम गरभ सीता अवतरी । उसका रूप लिख्या तिस घडी ।।१८३६।।
इह सूरत या मैं गुण घणे । हाव भाव बहु जाय न गिणे ।।
रामचंद्र को इहै दई निमित्त । तबै इहै मेरे आयी चित्त ।।१८३७।।

भामण्डल की सीता को पाने की चिन्ता

ऐसी त्रिया भामंडल जोग्य । विद्याधर जे भोग नियोग ।।
इस कारण आया तुम पासि । चलो मिथलापुर पूजै आस ।।१८३८।।
भामंडल की सुध बीसरी । सीता सीता चित्त में धरी ।।
जे हूं मिलूं जनक की सुता । दरसण देखें भागे चिंता ।।१८३९।।
घरि आंगरण ता कछु न सुहाय । अन्न पांन मुख कबहुं न खाय ।।
दिन दिन कुंवर भ्रमता जाइ । तन सूकै राणी पिछताय ।।१८४०।।
प्रभामंडल मन सीता लागि । सुख संसारी दीया त्याग ।।
मात पिता की लज्जा करैं । विरह अगनि सूं देही जरैं १८४१।।
मंत्री सोच करैं अधिकाइ । ता दिन देखी कुतली राय ।।
वाही दिन तैं है यह सूल । या की औषधि मंत्र न मूल ।।१८४२।।
राणी का संसय किया । साधु सुतरां सूं भेद यह दिया ।।
जब तैं पट्ट देख्या इह पूत । तब तैं याकूं लाग्या भूत ।।१८४३।।
खाण पान वस्त्र सब तज्या । वह तो करै कुमारी लज्या ।।
तुम पूछो तिसका विरतांत । कारण कवण तुम सूकै गात ।।१८४४।।
मात पिता कुंवर ढिग गए । वाका मन की पूछत भए ।।
नरपति कहै करो सनांन । भोजन मीरखावो तुम पांन ।।१८४५।।
आभूषण तन लओ संवारि । तुमने इंछा सीता नारि ।।
अब हम जतन व्याह का करा । तेरा कारज वेग ही सरा ।।१८४६।।
भामंडल का दुख अब गया । करि सनांन उठि भोजन किया ।।

चन्द्रगति द्वारा उपाय सोचना

चन्द्रगति मन सोचैं घणा । कुछ हरषै कुछ चिंतावणा ।।१८४७।।

राजा जनक भूमि गोचरी । अवर रहै वह मिथलापुरी ।।
रथनूपुर तैं दूर वह देस । बेटी कबहु न देय परदेस ।।१८४८।।
जे सीता आणिये चुराय । होय अनीत रहसि सब जाय ।।
उनके घर में नाहीं सोग । हमने लगा कहै सब लोग ।।१८४९।।
चपल वेग सूं कही बुलाय । तुम अब मिथलापुर में जाय ।।
जनकराय आणौं मुझ पास । वाकूं कछु न दिखावौ त्रास ।।१८५०।।
चपलवेग चाल्या सिरनाय । चढि विवांण मिथलापुर माइ ।।

विद्याधर द्वारा मायामयी अश्व रचना

अश्व एक विद्याधर किया । द्विज गहि हटवाडै गया ।।१८५१।।
तापरि रतन जडित पलांण । नाचत कूदत करै खांचा ताण ।।
अस्व प्रशंसा जनक नृप सुणी । गुणस्यु तहां सराहै गुणी ।।१८५२।।
आप जनक नृप देखण चल्या । गुण लच्छन सब देख्या भल्या ।।
व्यापारी सूं पूछा मोल । तब वह बांभण भाखै बोल ।।१८५३।।
पृथ्वी औसा अस्व नहीं । बडे भाग्यता आज्य जनक है सही ।।
तुम निमित्त आण्यौं इस ठांव । दोइ सहस्र सोनिया भाव ।।१८५४।।
व्यापारी कुं दिया दिनार । घोडा लै बांध्या दरबार ।।
बहु प्रकार सेवा तिस होइ । तिहां मास बीता इक दोइ ।।१८५५।।
किंकर एक आयो इस ठांय । कही हथनापुर महु लगाय ।।
दुरजन आइ घेर्‌या सब देस । तुम चलि करो उपाइ नरेस ।।१८५६।।
सुणी बात अब सेन्यां पलांण । अस्व ऊपरि पिरै निसांण ।।
सूर सुभट लीया बहु संग । बाजा बाजै लहर तुरंग ।।१८५७।।
परबत पासि ढोल बहु पडे । हाथी तिण आगै टारै न टरैं ।।
तबै वह अस्व लिया मंगवाय । ता ऊपर चढिया नरनाह ।।१८५८।।
हय नृप सहित उड्या आकास । सेन्यां साहि सोक को त्रास ।।
सेन्या फिर मिथलापुर जाय । नवां भूप थाप्या तिण ठाय ।।१८५९।।
जनक आकास गमन जब किया । पुरपाटण बहुला देखिया ।।
सब पृथ्वी का देख्या देस । मन आनन्द्या जनक नरेस ।।१८६०।।
विजयारध गिर पहुंता जाय । अस्व मार्ग में उतरया आय ।।
सुखी जाता चलै तुरंग । रम्यकरण वन देखि सुरंग ।।१८६१।।
सहस्रकूट चैत्यालो जिहां । वन उपवन सरवर है तिहां ।।
पछी बैठा करैं किलोल । बोलैं बाणी अमृत बोल ।।१८६२।।

सीतल पवन कमल की बास । भ्रमर गुंजार करें तिहुं पास ।।

राजा जनक का विद्याधरों की नगरी में आगमन

प्रथम पोलि जिन प्रतिमा बणी । इसी होइ जिहां शोभा घणी ।।१८६३।।

दालें कंचन प्रतिमा परि भलें । अस्त्र बांधि करि राजा चलें ।।
गोपुर देखि भयो आनंद । बहुत वृक्ष जिहां पंकति बंध ।।१८६४।।
भीतर जिन सासन की ठौर । देखी प्रतिमा च्यारों ओर ।।
नमस्कार कीनूं नरनाह । पूजा अरचा अधिक उछाह ।।१८६५।।

सेवा सुमरण वारूं बार । रहस्य आया मनमें तिण वार ।।
राजा श्री जिणवर का ध्यान । घोडा छोड गया स्वस्थान ।।१८६६।।
विद्याधर का फेरया रूप । पहुंच्या तिहां चन्द्र गति भूप ।।
जनक राय आण्यां इस देस । चलो बेग तुम मिलो नरेस ।।१८६७।।
जिन थानक में बैठा आइ । ढील करो तो वह उठि जाइ ।।
सह परिवार विद्याधर मिले । श्री जिन जानि रूप तिहं मिले ।।१८६८।।
बजै बहुत बाजे कर नाय । बहु लोग पूजा कौं जाय ।।
सांभलि जनक चढि देखि उतंग । बहुत लोग भूषण पचरंग ।।१८६९।।
देख्या चंद्रगति तणां विमाण । के इक है राजा बलवांण ।।
केइ भूमि केई आकास । उतरया भूमि चैत्यालय पास ।।१८७०।।
नमस्कार करि बइठा भूप । राजसभा दैदीप्य अनूप ।।
जनक प्रति पूछै चन्द्रगति । के इंद्र के धरणेन्द्र तुम आन ।।१८७१।।
कै तुम विद्याधर के इन्द । तुम पहुंचे वो थान जिणंद ।।
आनिन सकै मस अस्थल आइ । अपनां भेद कहो समझाय ।।१८७२।।
बोल्यै जनक मैं भूमिगोचरी । राजकरै आ मिथलापुरी ।।
माया रूपी घोडा आनि । हूं आयो हूं इस थान ।।१८७३।।

चन्द्रगति द्वारा सीता के विवाह का प्रस्ताव

चन्द्रगति नृप आदर करै । एक बात री इच्छा धरै ।।
तुम पर सीता पुत्री सुणी । मेरा सुत प्रभामडल गुणी ।।१८७४।।
किरपा करि कन्या तुम देहु । विद्याधर सुं होइ सनेह ।।
कहै जनक तुम सुणु हो राय । सीता दई राम रघुराय ।।१८७५।।
जब मैं बचन न देता ताहि । कह्या तुम्हारा फिरता नाहि ।।
चन्द्रगति बहुरि जनक सूं कहै । रामचंद्र बल केता गेहै ।।१८७६।।

ताकूं जो पुत्री तुम देई । उनसूं प्रीत अधिक कर लेइ ।।
रामचन्द्र गुण बरणौं भूप । ता सम कोई नहीं अनिरूप ।।१८७७।।

बरबर म्लेच्छ मिथलापुर आइ । बहुता नैं घेरया मैं धाइ ।।
रामचन्द्र ते मारया घेरि । गए भाज ते नायें फेर ।।१८७८।।

वा समये मैं दीनी सिया । तासु कथन मैंने यह किया ।।
चन्द्रगति कहै हम देव समान । भूमिगोचरी हैं पसू समान ।।१८७९।।

कहा म्लेच्छ हैं इसा बराक । उनकूं भाखे मैं इक धाक ।।
बांधु मलेछ पल में पचखंड । वे देहैं मोकूं नित दंड ।।१८८०।।

हमरी संका रावण मन धरै । भूमिगोचरी क्या सरभर करै ।।
जो तुम हमसौं करो सनेह । तो हम सिखावैं विद्या अछेह ।।१८८१।।

आकास गामिनी विद्या देहु । देश देश का कौतूहल करेह ।।
सब पृथ्वी पर हो तुम बली । हम सौं प्रीति किये होवै रली ।।१८८२।।

जनक का उत्तर

बहुरि भणैं जणक इह भाइ । तुम समुद्र वे तो भील राइ ।।
आपी नीर पिवैं सब कोइ । समुद्र उदक न बांछै कोइ ।।१८८३।।

तुम हो शशि वे सूर्य समान । देखत भान कला होइ आन ।।
पाडल पत्र दीसैं बहु भांति । सूरज तेज सो नासी क्रान्ति ।।१८८४।।

अगनि पतंगे जिण बहु जलैं । दीप जोति मंदिर सब बलैं ।।
होइ उजाला सब घर माहि । ता सरभर क्या करि है राइ ।।१८८५।।

तुम गयंद वह सिंह केसरी । बिन देखें भाजै तिह घडी ।।
विद्याधर सुणि कोपे भणें । इन हमकों ऐसे अब गणे ।।१८८६।।

भूमिगोचरी पशु सम चलें । हम आकाश तैं पृथ्वी दलैं ।।
जिसकी तू बहु करै सराह । भूमिगोचरी बखाणैं ताहि ।।१८८७।।

फिरि जनक नृप ऐसें कही । बंस इक्ष्वाक दसरथ नृप सही ।।
ताकै पटराणी हैं चार । पुत्र चारि लिया कूंषि अवतार ।।१८८८।।

एक सो पांच राणी हैं और । ते सोभैं मंदिर की ठौर ।।
उत्तम आदिनाथ का बंस । धरम तीर्थ भए जिन अंस ।।१८८९।।

पंछी जिम तुम उडो अकास । ऐसा बल पौरष उपहासि ।।
जो तुम दिक्षा लेण मन करो । आरजखंड ते सिव संचरो ।।१८९०।।

तिहा सलाका त्रेसठ पुरुष । पूजैं सुरपति मानैं हरष ।।
इहां कोई आवैं सुर देव । कारण चैत्य जिणवर की सेव ।।१८९१।।

आरिजखंड सम देश नहीं और । महापुरुष उपजैं तिन ठौर ।।
रामचंद्र लक्ष्मण बलवंत । तिनके गुणा को नाहीं अंत ।।१८६२।।

चन्द्रगति द्वारा स्वयंवर रचाने का प्रस्ताव

चन्द्रगति ये कह्या उपदेस । रच्यो स्वयंवर जनक नरेस ।।
वज्रावर्त्त धनुष है एक । वा कूं लो मंडप तल टेक ।।१८६३।।
जो नर करै धनुष टंकार । बाण चलावै मंडप पार ।।
ताकूं दीजे सीता धिया । अैसा वचन जनक सौं कह्या ।।१८६४।।
जनक राय सोचैं तिण बार । कछु मन हरष कछु विसमैं सार ।।
रामचंद्र तैं धनुष ना उठै । मेरा वचन पड़ैं सब झूठै ।।१८६५।।
चंद्रगति प्रभामंडल सुकुमार । विद्याधर सहु लीना सार ।।
रथ परि जनक राय बैठाय । मिथलापुर के वन में आय ।।१८६६।।

मिथिला नगरी

केई भूमि केई आकास । उतरे मिथला के चिहुं पास ।।
देखि नग्र मन भयो उलास । भामंडल मन लील विलास ।।१८६७।।
जनक भूप नगर में गया । सकल लोक को अति सुख भया ।।
गली बंटाई बाजार उछाह । झाकै अटा झरोखां बाहि ।।१८६८।।
हाट पटण छाई सब ठौर । बाजा बजै नग्र में सोर ।।
हस्ती चढ़या उछाले द्रव्य । दई असीस प्रजा मिल सर्व ।।१८६९।।
पट बैठे जनक नरेन्द्र । राजसभा में अधिक नरेन्द्र ।।
कलस ढालि फिरि बैठा राज । सीधा सगला मनवंछित काज ।।१९००।।

रणवास में राजा जनक

राजा जनक गया रणवास । ऊंचे नीचे लेह उसास ।।
बिदेहा राणी सेवा करै । चमर सहेली के कर ढलैं ।।१९०१।।
पूछै राणी सुणो नरनाथ । तुम चित अटके काहू साथ ।।
कवण देस की देखी नारि । तासूं मन लाग्यो अपार ।।१९०२।।
मन मानैं तुम ब्याहो ताहि । मेरी बात सुणौं नर नाह ।।
तब राजा बोलै सत भाव । पिछला भेद सुणाया राय ।।१९०३।।
मायामई अस्व मैं लिया । मो विजयारध गिरि लै गया ।।
विद्याधर घेरया सब देस । सीता मांगै भामंडल नरेस ।।१९०४।।
वजरावरत धनुष है एक । वाकी उनकी है इह टेक ।।
जो कोई करै धनुष टंकार । सो ही कंन्या का भरतार ।।१९०५।।

रामचंद्र न सके संभार । वे ले जाहिं सीता नारि ॥
इह चिंता मेरे मन बसै । रामनैं न द्यूं तो जग हंसै ॥१६०६॥

रानी द्वारा चिन्ता प्रकट करना

इतनी सुणत राणी बिललाय । कवरण पाप उदय मेरे श्राय ।
जनमत भया पुत्र का हरण । कन्या जाइ तो पूरा मरण ॥१६०७॥
हाय हाय करि रोवैं घणी । ऐसी कठिन ग्रगिण कैं बणी ॥
तब राजा समझावैं वयण । अपणां मन राखो तुम थयन ॥१६०८॥
मारूं विद्याधर सब ठौर । वे नहि आवैं यांव न फौर ॥

सीता स्वयंवर

राजा ने तबै स्वयंबर रच्या । भली भली सौंज कर सच्या ॥१६०९॥
देस देस कुं पठाए दूत । सकल पृथ्वीपति आई पहुंत ॥
रामचंद्र लक्ष्मण ह भरत । सत्रुघन सब का लें मन हरत ॥१६१०॥
आए सब मंडप राजान । कन्यां कर जयमाला आन ॥
सुभस्वर ता है धीयता संग । रतन जडित कर छडी सुरंग ॥१६११॥
खेचर भूचर भूपति घने । पहरि आभूषण अछे बणे ॥
एक तैं एक नृप आये बली । कहां लगि बरणों नामावली ॥१६१२॥
चंपापुर का हरिवाहन राय । ता ढिग घनप्रभु बैठा आय ॥
केतुमुख दुरमुख और प्रभामुख । श्री जैनांगारस का गुरुमुख ॥१६१३॥
जडराजा भान सु प्रभा सुपती । मंदिर विसाल श्रीधर सुभमती ॥
वीरधर बंधव भद्र तिह ठौर मंदकेस के पुत्र नृप और ॥१६१४॥
गोविंद अर रत्नपुर का राव । राजा भोज सुभोज तिण ठाइ ॥
आय नाम सकलां का कहै । कंन्या देखि फिर मारग गहै ॥१६१५॥
राजकुंवर देखै बहु भांति । रामचंद्र की देखी कांति ॥
बज्रावर्त धनुष तिहां धर्या । सेवा करैं देव सनु पड़ा ॥१६१६॥
जे कोई धनुष चढावैं श्राय । सो सीता नैं परणैं राय ॥
जैसी बिजली तैसा वज्र । ज्वाला सत धनुष बज्र अच्र ॥१६१७॥
फुंकार फिरै तिहां नाग महान । कंपै भूपति जावैं भाजि ॥
कोई धनुष पासि नहीं आवै । सूर सुभट करै बहु उपाव ॥१६१८॥
जो कोई पहुंचै किस ही भांति । भस्म होइ प्राण उड जात ॥
भूपति कहैं जनक कहा किया । इतने लोगों के प्राण जु लिया ॥१६१९॥

हमने छोड्या ग्रैसा व्याह । हम जीवत अपने घर जाह ॥
रूपवंत त्रिय सौं क्या काज । बुरी भली सेती रह लाज ॥१६२१॥

मारा मान भंग इत भया । ब्रह्मचर्य पालैं हम नया ॥
सकल भूप त्यां हारी मान । रामचन्द्र उठ्या तिण बार ॥१६२२॥

राम द्वारा धनुष खेंचना

दशरथ नृप की आग्या लई । त्रिभुवन नाथ सो प्रणपति करी ॥
रवि सम तेज चन्द्र उणिहार । रामचंद्र का बल अंत न पार ॥१६२३॥

जैसा भेस सुदर्सण धीर । सोभै कंचन वरण सरीर ॥
जिम समुद्र अति अगम अथाह । नहीं राम गुण को अवगाह ॥१६२४॥

कर सूं धनुष जब लिया उठाइ । तउ़ाण छिन में लिया चढाइ ॥
करि टंकार गह्यो जब बाण । गरज्यो धनुष अति मेघ समान ॥१६२५॥

बोलें मयूर पपीहा रटैं । दादुर सबद सरोवर रटैं ॥
पर्वतीस्वर गिर कंपे घणे । जलह नीर तब उछले घणे ॥१६२६॥

सीता द्वारा वरमाला डालना

जै जै कार देवता करैं । पहुप वृष्टि वरषैं सिर परैं ॥
रामचंद गलै डाली माल । जै जै कार करैं भूपाल ॥१६२७॥

मान भंग विद्याधर भए । लज्जावंत होई उठि गए ॥
जनक दसरथ कै बाजे बजैं । ता समय सौं दुरजन लजैं ॥१६२८॥

सिंघासन परि दसरथ राय । नमसकार कियो तिह भाय ॥
सीताराम की जोडी बनी । ते सोभा मुख आइन मिनी ॥१६२९॥

ग्रैसी वस्तु नहीं जग माहि । जाकी पटनल दीजे ताहि ॥
चंद्रकिरण षेचर भूपति । कन्या अस्टदस गुणवती ॥१६३०॥
रामचंद्र कूं दई विवाह । सीता संग अधिक उछाह ॥
लक्ष्मण नैं लीना करि धनुष । उतारि चढाइ किया मन सुख ॥१६३१॥
राजा सकल रहे मुंह वाहि । इन सम हम कोई जोधा नाहि ॥
भरत सोच करैं मन बहुत । एक पिता हम चारूं पूत ॥१६३२॥
मो पैं धनुष उठ्या नहीं काय । इनूं का पूरब पुन्य सहाय ॥
पुन्य प्रतापैं ए हुआ बली । इनकी सरभर किम पाऊं रली ॥१६३३॥
केकई चितवैं सुत की ओर । मन मलीन देख्या तिण ठौर ॥
भरत मन की लाधी बात । पति सौं वचन कहै बहु भांति ॥१६३४॥
भरत तणैं मनमैं वैराग । दीक्षा लेसी सब घर त्याग ॥
कनक मेह सुप्रभा नारि । लोकसुंदरी पुत्री तिण बार ॥१६३५॥

भरत का लोकसुंदरी से विवाह

बाहि कहो वरमाला लेहि । भरत तणें गले घालेइ ।।
जनक कनक प्रति कहै बुलाइ । कन्या आई मंडप ठाइ ।।१६३६।।

देखै सकल भूपती राइ । माला दई भरत गले घालि ।।
लोकसुंदरी व्याही भरत । तजि वैराग भोग सुख करत ।।१६३७।।

अं अं करम महा बलवंत । मोह सिंधु में बूडे अनंत ।।
भवसागर तें कठिन निकाल । जे उछलें काहु बाल ।।१६३८।।

मोह सिला ले बोलैं फेरि । जीव करम नें राख्या घेरि ।।
जनक नरेन्द्र दीनी जिवणार । देस देस के नृप की करै मुनहार ।।१६३९।।

मिष्ठान्नों का वर्णन

मंडप तलैं वे बैठा भूप । सोवनथाल भरि रखे अनूप ।।
रत्नो जडित तवाई धरे । सुवन कटोरा दुग्ध ले भरे ।।१६४०।।

फीणा फीणी अरु बरफी स्वेत । घेवर लाडु परुस्या हेत ।।
खुरमे सीरा पूरी घनी । बहुत सुवास तनो की अनी ।।१६४१।।

थोल बडे व्यंजन बहु भांति । हरे जरद बहु गणें न जाति ।।
भात दाल अति घृत्त सुवास । सिखरण का दौंना धरि पाति ।।१६४२।।

तामें बूरा लायची लौंग । मेवा मेल्या तिहां मोहन भोग ।।
मीठा मिरच जीरों का मिल्या । लूण संवाते तिहां खिल्या ।।१६४३।।

जीम्यां भूपति एकई पांति । चलु लेइ मुख सोध कराति ।।
लौंग कपूर केशरि जावतरी । बीडा बांध्या चौली धरी ।।१६४४।।

भावे रत्न कनक नग जरे । बीडा बांधि तिन आगे धरे ।।
नृपति साय सभा के बीच । लगाए अडिग चावें गला नीच ।।१६४५।।

केसरि छिडकी बहुत गुलाब । रंगारंग हुआ बहु भाव ।।
कांमणि गावैं मंगलचार । सहु कुटंब की आवैं नार ।।१६४६।।

चौरी रची अखंड बणाइ । पढें वेद धुनि पंडित राइ ।।
वाजा बहु वाजैं दरबार । नृत्य करैं गावैं नर नारि ।।१६४७।।

रामचंद्र सीता का व्याह । दोऊ कुल में अधिक उछाह ।।
वाही लगन विवाहो घणी । ते सुख सोभा जाय न गिणी ।।१६४८।।

सोदा बहुत दिया भूपती । नाही गिणत संताछती ।।
रहस रली सुं सुधरया काज । आय अयोध्या भुगतैं राज ।।१६४९।।

दूहा

चल कुटंब लक्ष्मी घणी, पाई पुन्य पसाइ ॥
रामचंद्र लक्ष्मण बडे, भए मुकटमणि राय ॥१६५०॥

इति श्री पद्मपुराणे रामचंद्र सीता विवाह वरणन विधानकं
२५ वां विधानक

चौपई

अयोध्या आगमन

सहु परिवार अयोध्या आइ । करी बधाई दशरथ राइ ॥
सुख में बीतें आठों जाम । भोग्यां भुगतें सीताराम ॥१६५१॥

सुद अषाढ अष्टमी सुभघडी । पूजा की सामग्री करी ॥
देव सथान संवारया घणां । भला भला चंदोवा तणां ॥१६५२॥

अष्ट दरब सब लीये सुध । पूजा पढें पंडित सुबुधि ॥
गंगा का जल उत्तम नीर । भरे कलस झारी तिहं तीर ॥१६५३॥

अति सुवास जल भरया सुवास । अठ छडाई करें परिवार ॥
अरचा चरचा पूजा पाठ । असी विध बीते दिन आठ ॥१६५४॥

पुरवासी करें सांतीक । उत्तम चलें धरम की लीक ॥
किया महोछव श्री जिन थान । देवसास्त्रगुरु प्रवान ॥१६५५॥

गंधोदक लेना

गंधोदिक सिर लिया चढाइ । महल मांहि फिर दियो पठाइ ॥
सब राणी निज अंग लगाइ । सुप्रभा ने नहीं पहुंच्या जाइ ॥१६५६॥

जे त्रिय गंधोदिक लेइ । ताकूं पुत्र जिनेश्वर देइ ॥
कुष्टी का कुष्ट जु भगें । निरमल होइ देही जगमगें ॥१६५७॥

कंचन सम काया तसु होइ । निसचें व्रत करें जो कोइ ॥

सुप्रभा राणी की व्यथा

सुप्रभा राणी कर अहंकार । अणसण लें पौढी तिणबार ॥१६५८॥

पसचाताप मन मैं अति धरै । हीन पुन्य जो पूरब करैं ॥
पति का तो कछु दूषण नही । तातैं हमारी कांण न रही ॥१६५९॥

अब मैं तज दूंगी निज पराण । हमारी आज घटाई काण ॥
राजा आये महल मंझार । देखी पडी सुप्रभा नार ॥१६६०॥

मलिन रूप देखी जहां पडी । जाणे प्राण तजै इस घडी ।।
दशरथ आइ पलंग परि बैठि । राणी उतर कर बैठी हेठ ।।१६६१।।
बांह पकड करि लई उठाय । पीलंग ऊपर निज पास बिठाय ।।
किण कारण तू करै अहंकार । किण मनुष्य तो कू दई गार ।।१६६२।।
ताकी जीभ कढाऊं तुरन्त । जैसे ही पाऊं सुध तंत ।।
सुप्रभा कहै सुणो नरेस । मोकू कहा देखी हीण भेस ।।१६६३।।
सकल कला गुण माहि प्रवीण । कवण वस्तु मैं जाणौं हीण ।।
गंधोदक सब कू तुम दिया । मेरे ताई क्यु न बांटिया ।।१६६४।।
अब हू मरू मांडि संन्यास । अपणे जीवण की तज आस ।।
राय कहैं तैं सुण्या पुराण । ऐसी चित्त मैं भूल न आण ।।१६६५।।
क्रोध करि जो आत्मा दहै । लख चौरासी में दुख सहै ।।
कुमति मरण भवभव होइ दुख । चिहु गति मांहि न पावै सुख ।।१६६६।।
गंधोदिक लीया थी कंचुकी । सुप्रभा रांणी क्रोध मा चकी ।।
सुप्रभा बोलै सुणु नाथ । मुंह मोड्यां भीर ईनह हाथ ।।१६६७।।
मिल्यो तिहां सगलो रणवास । बैठी घेरि राणी चिहुं पासि ।।
इह गंधोदिक श्री जिनवर तणौं । इस पर क्रोध न कीजे घणौं ।।१६६८।।

कंचुकी को नृत्य का आदेश

अंजुली भर छिडकी सब लिया । ततखिण क्रोध पयाण किया ।।
राजा कंचुकी सौं तब कहै । वेग नांचि राणी सुख लहै ।।१६६९।।

कंचुकी का उत्तर

बोलै कंचुकी सुणो नरेश । वृध्य भए पंडुरा केस ।।
टूटे दांत देही जा जुरी । सब सरीर में लीलरी पडी ।।१६७०।।
कांपै चरण थर हरै सरीर । बहै नाक नैणा थी नीर ।।
लाठी टेक सुर ढीले भए । तरुणा पाका पौरुष गये ।।१६७१।।
जैसी फूलै है अति सांभ । जिम जोवन विनसै पल मांभ ।।
हूं किण पर नाचुं भूपती । देही में बल रह्या न रती ।।१६७२।।
तुमारै ही इहै प्रसाद । बहुतेरा सुख भुगते स्वाद ।।
रूपरंग चतुराई घणी । मुझ सो कोई न गुंणी ।।१६७३।।
वृद्ध भये कला सब घट गई । अष्यर पद की सुध भई ।।

दशरथ पर प्रभाव

दसरथ के मन सांची लगी । वैराग भाव की चेष्टा जगी ।।१६७४।।

जोबन जल बुदबुदा समान । पलमैं होइ जाइ तिहां हानि ।।
जोबन समैं धरम कबहू ना करै । अगले भव कु यौ हित धरै ।।१६७५।।
जीव लपटियो माया जाल । आय अचिंत्यो व्यापैं काल ।।
जरा घटाई देही मांस । तो भी इच्छे भोग विलास ।।१६७६।।
अगली सुध सब दई बिसार । पुत्र अरु लछमी लाईई नार ।।
सुपना की सी है सब रिद्ध । जागति कबहू न दीसैं सिध ।।१६७८।।
सकल विभूत पुण्य तैं होइ । ताका भेद समझै सब कोइ ।।
पुण्य सिवाय सगा कोई नहि । कहा रावै ऐसा सुख मांहि ।।१६७९।।
उपजै जिणसैं होइ विछोह । तासु कहा कीजिये भोग ।।
धन्य साध जिन तजियो गेह । ममता कबहूं न राखैं नेह ।।१६८०।।
मेरा है यह पुत्र सपूत । तिसकों सौंपों राज विभूत ।।
आतम का हित करू मन लाय । धरू साधु ब्रत मन बच काय ।।१६८१।।
ऐसी चित चिंता नृप करै । पंच महाब्रत कब मन धरै ।।

सर्व विभूति मुनि से धर्मोपदेश का श्रवण

सर्वभूति मुनिवर पैं आइ । च्यार ग्यांन झलकै तसु काय ।।१६८२।।
बहुत शिष्य मुनिवर ता संग । तीन ग्यांन सों सोमैं अंग ।।
केइ तरु तल केई जिन भूमि । केई सिला केई परबत गिन ।।१६८३।।
केई सरिता के तट तीर । धरयो ध्यांन मन मेरु सुधीर ।।
रितु चौमासो कांसी घटा । सकल गयण मेघसों पटा ।।१६८४।।
चमकै दामिण गरजै घणा । मूसल धारा बरसै घणा ।।
मुनिवर बैठा अपणों ध्यान । लगैं बूंद अति तीर समान ।।१६८५।।
सहै परीस्या बीस अन दोय । दया भाव सब ऊपर होइ ।।
बाजा बजैं बहुत परभात । उठैं लोग जिन सुमरैं प्रात ।।१६८६।।
करि सनान जिन पूजा करी । भूपति मुनि बंदन चित धरी ।।
राय संघात चाल्या बहु लोग । देख्या साध आतमा जोग ।।१६८७।।
दीनी तीन प्रदक्षिणा राय । केवलि वाक्य सुण्या मन लाय ।।
सकल संदेह चित्त का गया । राजा फिर मंदिर आइया ।।१६८८।।
रांणी सों बहु मंदिर मांझ । राजा सेव करैं दिन सांझ ।।
भोग भुगति मैं बीतैं काज । दसरथ करैं अजोध्या राज ।।१६८९।।

इति श्री पद्मपुराणे विश्वभूति मुनिवर समीप धर्म श्रवण विधानकं

२६ वां विधानक

चौपई

भामंडल की चिन्ता

गई चउमास सरद रितु आई । कार्तिक मास महा सुखदाई ।।
धान पाए पाणी का स्वाद । फूले कमल करैं अलि नाद ।।१९९०।।
चंद्रसूरज की निरमल कांति । उज्जल जग सोभै बहु भांति ।।
भामंडल मन चिंता घणी । भई कंगी करम गति बणी ।।१९९१।।
मम इच्छा सीता की करी । ब्याही राम भूमि गोचरी ।।
हम विद्याधर देव समान । हमारी कछुयन रही कांण ।।१९९२।।
ऐसी खुटक रहै दिन रात । नरलज्ज कही मन की बात ।।
वृहतकेत साभलि सब भेद । करैं सोच मन मां बहु खेद ।।१९९३।।
बोलैं अन्य मंत्री तिहां घणां । दान न को हम पास ई तणां ।।
सीता सम कोई नहि नारि । स्वरग मध्य पाताल मझारि ।।१९९४।।
रामचन्द्र सम अवर न बली । ते सीता सुं मानै रली ।।
लक्षमण तणौं अस्यो प्राक्रम । उनकै सदा सहाई धर्म ।।१९९५।।
जब सीता ब्याही थी नाहि । तब चोर ल्यावते ताहि ।।
तब कैसे लेता रामचन्द्र । हमौं किया जब झूठा द्वंद ।।१९९६।।
अब वह कैसे हरियन जाय । राम लषण तैं देव डराइ ।।
बृहस्पति केसु मंत्री तब कहै । कहा सोच तुम मनमें रहै ।।१९९७।।
विद्याधर हम जइसा देव । सीता हरन लागै ई भेव ।।
राम लक्ष्मण मांहै जुध । भूमि गोचरी लड़ै असुध ।।१९९८।।
हम विमाण चढि लेइ अकास । भूमिगोचरी के पुरवास ।।
भामंडल वीमाण चढ चले । वृहतकेत मंत्री सब मिले ।।१९९९।।
बहुत सुभट संग लीया चढाइ । पहुंचे विदग्ध देस मां जाय ।।

भामंडल को जाति स्मरण होना

महीधर परबत देख्या बहुदेस जाती समरण भया अरेग ।।२०००।।
पूरब भव करते इहां राज । द्विज नारी राखी थे काज ।।
तप करि विप्र भया वह देव । चित्रोत्सवा मै जुगल भए पुत्र । २००१।।
जनमत समैं मुझें सुर हरया । चंद्रगति तणां मंदिर से धरया ।।
महाकुबुधि बिचारी बुरी । बहन हरन की इच्छा धरी ।।२००२।।
अपने कुल की निन्दा करी । आई मुरछा मृतक सम परी ।।
बहुर गये रथनूपुर देस । चन्द्राइण देख्या सुत भेस ।।२००३।।

बैद लिया बुलाय उपचार । सीत कमल उर धरे समार ।।
कामिन फेरै देही पर हाथ । बीजणा करैं सखी तिण साथ ।।२००४।।

हूं सचेत बोलियां कुमार । पूछै राय पुत्र की सार ।।
पिछला कह्या सकल सनमंध । विरयां कारण हुआ अंध ।।२००५।।

सीता बहिन हूं वाको भ्रात । उपजे कुंख विदेही मात ।।
जनम समैं हरि ल्याया देव । तुम घर छोड दिया इह भेव ।।२००६।।

सकल सभा सांभलि सनमंध । सब संसार जाणियो धंध ।।
पोता कूं दीनूं सब राज । चले सुत पिता दीक्षा काज ।।२००७।।

महेन्द्र गिर इक उत्तम थान । सरबभूत हित मुनि तिंग ग्यांन ।।
करि जोड कीनूं नमस्कार । प्रभु हमें दिक्षा द्यौ इणबार ।।२००८।।

बाजा बाजैं गुणी जसगाय । नृत्य करैं अपछर तिण ठाय ।।
करैं आरती महोच्छा घणो । भाट जैजै कार जनक भणौं ।।२००९।।

प्रभामंडल जनक सुत सूर । ग्यांनवंत दाता भर पूर ।।
धन्य धन्य करी धरम की देह । धरमध्यान सुं ल्याया नेह ।।२०१०।।

सीता द्वारा पिता के नाम पर चिन्तन

सीता सुण्यां पिता का नाम । सोचै घणां रासि चित ठांम ।।
जनक पुत्र इहै है नृप कौण । मो संगि जनम हुवा था जौण ।।२०११।।

कोई हर ले गया जनम की वार । ताकी कबहुं न पाई पार ।।
सीता के भरि आये नैण । रामचंद्र तब पूछे वयण ।।२०१२।।

किम इम भरे कहा तुम दुःख । तुम कूं है मुंह मांग्या सुख ।।
सांची बात कहो समझाय । क्यूं दिलगीर भई किण भाइ ।।२०१३।।

पिछली कही जनक की बात । मो साथै इक जन्म्या भ्रात ।।
वाकुं कोइ ले गया उठाइ । बोलैं भाट जनक सुत राय ।।२०१४
तुम चालो तो देख्या जाइ । दरसन भ्रात को पाऊं राय ।।

दशरथ का मुनि के पास जाना

बीती रयण भयो परभात । दशरथ चल्यौ मुनिवर की जात ।।२०१५।।

च्याऊं पुत्र सहित परिवार । बहुतैं लोग भए असवार ।।
विद्याधर की सेण्यां घणी । मंदिर माया रूपी बनी ।।२०१६।।

राजसभा खेचर की जुडी । अनैं अयोध्या छाई खरी ।।
दरसन कियो मुनिवर को जाइ । नमस्कार कीया बहु भाइ ।।२०१७।।

विद्याधर ग्राय सब मिले । समाधान पूछे बहु घने ॥
चरचा करैं धरम की सर्व । सातों तत्व और षट द्रव्य ॥२०१८॥
नव पदार्थ नैं काया पंच । जिनवाणी मुख बोलैं संच ॥
आदि ग्रंत की चरचा करै । जिनेश्वर वाक्य हिये मैं धरैं ॥२०१९॥
दशरथ नृप पूछैं कर जोडि । प्रभुजी इनकी कहो बहोड ॥
किरण कारण यह लेत हैं जोग । छोडे केम राज सुख भोग ॥२०२०॥

मुनि द्वारा बतलाना

बोले मुनिवर ग्यांन विचार । विदग्ध देस महीधर की पार ॥
कुंडलमडन तिहां भूपती । पिंगल विप्र कगी तिहां थियती ॥२०२१॥
नारि लई विप्र की छीन । विप्र दलिद्री था अति दीन ॥
चक्रध्वज प्रभावती का सुना । राजा ले त्रिय भोगता ॥२०२२॥
विप्र महा दुख घणा मन करया । जती पास संयम आदरया ॥
तप करि लह्या महेन्द्र विमांण । पिछला भव समझ धरी ग्यांन ॥२०२३॥
अनरण कुंडल मंडल गह्या । बांध्या ताहि बहुत दुख दिया ॥
बहुरि कुंडल दीया छोडि । मुनि मुख सुनी करम की खोडि ॥२०२४॥
तिहां ग्रणुव्रत लिया मन लाइ । चित्तोत्सवा तप कीया जाइ ॥
दोउ उपज्या गरभ विदेह । जनक भूप के जुगलया एह ॥२०२५॥
वैर समझि इन बालक हरया । गयण गया गिर कंदर फिरया ॥
विजयारध रथनूंपुर आय । चंद्रगति फिर घेरया आय ॥२०२६॥
पुष्पवती नैं पाल्या याहि । नाम धरया प्रभामंडल ताहि ॥
नारद लिखी सीता का रूप । प्रभामंडल तब मोह्या भूप ॥२०२७॥
उन बांछी हरणे कुं सीगा । जानी सुमरण ग्यांन उपजीया ॥
इण कारण उपज्या वैराग । राज रिध दी सब ही त्याग ॥२०२८॥
ब्योरा सुणि सब चकित भए । सब संदेह दूर कै गये ॥

प्रभामंडल द्वारा प्रश्न करना

प्रभामंडल तब पूछै प्रश्न । चंद्रगति पुष्पवती प्रसंग ॥२०२९॥
कवण सनमंध इणु संग मिल्या । पुत्र समान इनु कैं पल्या ॥
भरतक्षेत्र मोद इम गांम । विमुंच विप्र निवसैं तिण ठांम ॥२०३०॥
अनकोसा ताकी है स्त्री । अतिभूत पुत्र सरिसा सुन्दरी ॥
ग्याना विप्र उर आमात । सरसा कुं ले भाज्या भ्रात ॥२०३१॥

मात पिता सुत निकसी खोज । तीनूं व्याकुल रोवैं रोज ।।
भर्‌या सींज सों छोड़्या गेह । तीनूं बिछुडे ढूंढत एह ।।२०३२।।

बहुत प्रकारैं ले ले नाम । ढूंढत फिरैं नगर पुर ग्राम ।।
घर कूं चोर लूट ले गये । तीनूं फेर भिखारी भए ।।२०३३।।

विमुंच विप्र जमुना पर गया । भिक्षा मांगि निज मारग लिया ।।
इन कुंवास नरह मलीन । भ्रमत भ्रमत देही भई छीन ।।२०३४।।

उरजा देखि तब वार्मी मिली । अनुक्रम बात पाछली मिली ।।
उनब सती कही समभाय । बेटी किसके घरै समाय ।।२०३५।।
हम तुम दोन्यूं एक ही जात । मेरैं पुत्र तुरी है नाति ।।
पुत्र कूं मिले गया संदेह । सरवार पुर गये दोऊं एह ।।२०३६।।
कमलाति अजिका के पास । दिक्षा लई सुगति की आस ।।
विमुंच विप्र भी दिक्षा लई । करी तपस्या मन वच कई ।।२०३७।।
पहुंचे तीनुं जीव विमांण । अदभुत सरिसा अवर कयाण ।।
तीनुं आये आन की आंन । करैं बहुत मिथ्या मत ध्यान ।।२०३८।।

जैन धरम की निंदा करैं । मिथ्या धरम को निश्चै धरैं ।।
सरसा बहुगति भ्रमी अथाइ । अंत भई हिरणी परजाइ ।।२०३९।।

चल्यो केहरी पाछें धोहि । हिरणी धसी दवानल माहि ।।
बहुरि कनक परवत परिजाइ । सिंघ देखि भागी उनकाय ।।२०४०।।
छुटे प्राण हिरणी तहां मुई । चक्रध्वज सुता चित्रोत्सवा भई ।।
ग्यांना भ्रम्या बहुत संसार । धूमकेत घर लीया अवतार ।।२०४१।।
पिंगला नांम पुत्र ते भया । चित्रोत्सवा पुंगल ले गया ।।
अतिभूत ज्यान गति भ्रम्या । अंत समै हंस गति जम्यां ।।२०४२।।
ताराछ सरोवर क्रीड़ा करैं । इक दिन जाय कीच में पड़ैं ।।
लाग्यो कीच पांख भर गई । उड़ न सकै अपाहिज भई ।।२०४३।।
जिनवर थान जाइ गिर पड़ै । जसोमित्र तिहां मुनि तप करैं ।।
अंत सुण्यां परमेष्ठी नाम । किन्नर देव भया तिण ठाम ।।२०४४।।
दस हजार संवतसर आव । कुंडलमंडल हुवा राव ।।
विदग्ध नगर का राजा हुवा । पिंगल संग पहुंची चित्रोत्सवा ।।२०४५।।
त्रिया चोर द्विज नैं दुख दिया । पिंगल तप करि देवता भया ।।
विमुंच जीव चन्द्रगति भूप । मनकोसा पुष्पावती रूप ।।२०४६।।
उरजा भई विदेहा नारि । चित्रोत्सवा सीता अवतार ।।

भाई बहिन मिलन

भाई बहन जुगलिया भए । पुत्री पुत्र जनक घरि गए ॥२०४७॥

पूरब भव का कारण मिल्या । इस सनबंध इसके घर पल्या ॥
सुण्यो सकल पिछलो बिरतांत । उठी रोम सब ही के गात ॥२०४८॥

भामंडल सीता मिलें रोइ । समझावें उनको सब कोइ ॥
जनक कनै ए सब बेग पुचाई । अतिवेडाइ विदेहा माई ॥२०४९॥

गया दूत पत्र दीया ताहि । बांचित मोह उदय भयो आइ ॥
पवनवेग तब कहै तुम चलो । पुत्र आपनां सेती मिलो ॥२०५०॥

चढे विमान सहित परिवार । भयो सुख मन हरष अपार ॥
गए अजोध्या मिले गल लागि । मात पिता मिलिया बड भागि ॥२०५१॥

धन्य जननी जिन पायो वीर । बाललीला देखी सधीर ॥
दिखलाई [illegible] बहु भांति । भयो सुख अति [illegible] ॥२०५२॥

रामचंद्र कै मन उल्लास । सकल कुटंब मिल्यो ता पास ॥
भामंडल कहै दिक्षा लेहुं । रामचन्द्र समझावैं भेउ ॥२०५३॥

तुम बालक जोबन भरी देह । हम तुम हुवा अधिक सनेह ॥
जब हम दिक्षा लेस्या जाइ । तब तुम हम संग लीज्यो भाइ ॥२०५४॥

भामंडल सेना संयुक्त । रथनूपुर में जाय पहुंत ॥
जनक कनक का सब परिवार । मिथलापुरी गए तिहवार ॥२०५५॥

सीता राम अधिक सुख भया । बहु प्रकार आनंद सब थया ।
सगलां की चिंता मिट गयी । दिन दिन सहस विभव गुण थई ॥२०५६॥

अडिल्ल

पुण्य उदय परिवार बधैं दिन दिन घणां ।
बिछुरैं प्रीतम मिलैं बहुत घरि सज्जणां ॥
बैरी लागैं पाय परम परभाव सूं ॥
संपति मिलैं अनेक कृपा जिनराज सौं ॥२०५७॥

इति श्री पद्मपुराणे भामंडल समागम विधानकं

२७ वां विधानक

चौपई

दशरथ का मुनि के पास जाकर अपने पूर्व भव पूछना

राजा दशरथ मुनि पासैं गया । नमस्कार करि चरणों नया ॥
स्वामीं मो मन रह्यो सन्देह । मो पूरब भव भाखो लेह ॥२०५८॥

कवरण पुण्य ये पाई रिद्ध । जनक कनक सुत च्यारौं विध ॥
सरवभूति मुनि अवधि विचार । ज्यों ज्यों भ्रमैं संसार ॥२०५६॥

हम तुम रुल्या अनंती बार । भ्रमतां कबहुं न पायो पार ॥
तीन लोक में नहीं बिसराम । स्वर्ग मध्य पाताल सुठांम ॥२०६०॥

च्यारौं गति मैं डोल्यो हंस । कब उत्तम कब नीचैं बंस ॥
सप्त तत्त्व के सूच्छम भेद । जाय मुणाल संसय तरु छेद ॥२०६१॥

नित प्रति राखै उत्तम ध्यान । जैन धरम का सुणै पुराण ॥
दान च्यार दे चित्त समान । औषद अन्न अभय का दांन ॥२०२६२॥

जीव तत्त्व का सुणैं बखाण । एकै जीवइ निरंजन जाण ॥
दोइ प्रकार संसारी प्रांन । भव अभव्य जीव धरि ध्यान ॥२०६३॥

भव्य सोही जाणैं ये भेव । मन वच सत्य जिनेस्वर देव ॥
पूजा दान सामायिक करैं । पाप कर्म सबै परिहरैं ॥२०६४॥

तो निश्चय सिद्धालय जाय । समकित सुं रहै दया के भाव ॥
कैई सिद्ध होइंगे और । पावैंगे तो निर्भय ठौर ॥२०६५॥

अभव्य जीव दरसन तैं दूर । देव शास्त्र गुरु समझैं नहीं मूल ॥
जिन वाणी ताकूं न सुहाइ । कुगुरु कुदेव कुशास्त्र तैं धाइ ॥२०६६॥

समकित दया न समझैं कुछ । च्यारौं गति माहि सबै तुच्छ ॥
उपजत बिनसत लगै न बार । ऐसे जीव रुलैं संसार ॥२०६७॥

तिहुं लोक धिरत घट जिम भरैं । तिहां के जीव नहीं नीवरैं ॥
मोक्ष थानक भरि पूरन थाइ । नरक निगोद न रंच घटाइ ॥२०६८॥

धरम अधरम क जीव अजीव । काल आकास द्रव्य षट नीव ॥
नव पदार्थ आने पंच काय । सकल भेद कहियो समझाय ॥२०६९॥

सेना पुर नग्र तिहां बसती धणी । उपसत नृप भामणी तसु तणी ॥
जैन धर्म सौं प्रीत न चित्त । चंडी मुंडी मंडी पूजैं सु चित्त ॥२०७०॥

मिथ्या धरम करैं मन ल्याय । तीरथ तीरथ सप्त अमाय ॥
दया दान समझैं नहीं भेव । पाप प्रमाद की इच्छा करेव ॥२०७१॥

करैं बरत खावैं कंद मूल । तिल दांणा बहुला फल फूल ॥
सिंघाडा बींध्या की चूंन । बरत खांड नैं सीधा लूण ॥२०७२॥

काया पोष बरत बहु किया । झूठी कीया सौं चित दीया ॥
जल मैं कूद बिरावैं मीन । छापा तिलक ध्यान करि हीन ॥२०७३॥

अणछाणे जल करै रसोइ । बहुत पाप ताकूं नित होइ ।।
मरि करि पहुँते नरक मझार । चउरासी लख भ्रम्या अपार ।।२०७४।।

दशरथ के पूर्व भव

भ्रमत भ्रमत इंद्रकपुर नग्र । करै राज राजा जसोभद्र ।।
धारणी त्रिया तासु पट धनी । धारण पुत्र सोभा अति बनी ।।२०७५।।
व्याही नयण सुंदरि नारि । आया मुनिवर लेण आहार ।।
विधसुं द्वारा पेखण किया । ऊंचा आसण बैसण दिया ।।२०७६।।
चरण धोय जल सीस चढाइ । वंदयावर्त्त किया बहु भाइ ।।
मास उपासी मुनिवर जती । सुध आहार दियो भूपती ।।२०७७।।

अषय दांन दियो मुनिवर तहां । अधिक पुनीतण दंपति कहा ।।
समकित सुं पालै अनुवर्त्त । देवसास्त्र करैं गुरुभक्त ।।२०७८।।
पूरण आव करि तज्या परान । क्षेत्र विदेह धातकी आंन ।।
भोग भूम दंपति तिहां पाइ । दोनुं भए जुगलिया आइ ।।२०७९।।
तीन पल्य की आयु प्रमाण । भुगति तीसरे स्वर्ग विमांण ।।
उहां तैं चए अर्धद्र देस । नंदघोष रहै तिहां नरेस ।।२०८०।।

वसुधा है ताकी असतरी । नंदवरधन जनम्यां सुभ घरी ।।
कोडि पुरव की भुगती आव । जसोधर पास सुण्यां धरम के भाव ।।२०८१।।

दिक्षा लही जतीश्वर पास । जसोधर मुनि लौकांतिक वास ।।
नंद वरधन पंचम सुरथांन । भुगत आव फुन चया निदांन ।।२०८२।।
मेरु सुदरसन पछिम वोर । विजयारध परवत की ठोर ।।
ससीपुर नग्र रत्नमाली भूप । विद्युलता राणी सु स्वरूप ।।२०८३।।
सुरजय ताकै भया सुपुत्र । विद्याधर बल सूं संजुक्त ।।
सिंध नग्र वज्र लोचन राय । रत्नमाली चढे जुधकर भाय ।।२०८४।।

दारुन युध दोउ वां भयो । रत्नमाली नै क्रोध उपनुं भयो ।।
अगनि बाण कर लिया संभारि । मारि मारि किये दुरजन ठार ।।२०८५।।

देव एक आयो तिण ठांम । समझाया रत्नमाली नाम ।।
जो मारैगा इतने लोग । तोकूं होसी भव भव विजोग ।।२०८६।।
जे कोई एक जीवनै हनै । ताकों हुवै नरक की गनै ।।
भव पिछला देव निज कहै । राजा क्रोध छोडि इम कहै ।।२०८७।।

गधारी नगरी नृप भूत । उपमती नामइ पिरोहित ।।
हिंस्या करै था घणी । इक दिन लबधि पुरुष की सुणी ।।२०८८।।

दशरथ का पूर्व भव

कमल गर्भ मुनि आगम भया । सुणि नरेस पूजा कूं गया ।।
प्रदक्षिणा दई नृप तीन । नमस्कार करि बोलैं दीन ।।२०८६।।
स्वामी कहो धरम समझाय । पाप पुन्य का कैसा भाय ।।
कहैं मुनीसर सुणो नरेस । पुंनि तैं जस होवै देस विदेस ।।२०६०।।
पुंन्य तैं ह्वं संसार में रिद्ध । पुनि तें पावैं सगली सिद्ध ।।
पाप करम नित करैं ते मूढ । दया पालैं हिरया रूढ ।।२०६१।।
मरि करि चहुंगति मांहि भ्रमई । खोटी गति मां बनसैं अमई ।।
राजा सुण्यां धरम का भाव । भर हुर कर कंप्या सब गांव ।।२०६२।।
उत नरेन्द्र उपसमी द्विज । दिष्या पालैं ब्रह्मचर्य ।।
तप करि पहला स्वर्ग विमाण । पल्य पांच तिहां आयु प्रमांण ।।२०६३।।
प्रोहित जीव मिथ्या मन धरी । जैन चरचा राजा कैं धरी ।।
उहां तैं लोक भ्रम भए आइ । राजहस्त सुत का जीव है राइ ।।२०६४।।
प्रोहित जीव चय बडवा भया । हस्तनी गर्भ बडवा जिय चया ।।
हस्ती भूपति का गजराय । बहुत दिवस तिहां गए विहाय ।।२०६५।।
जुध शर्म लागे बहु घाय । छूटा प्रांण संग्राम की ठांव ।।
धीमल पुत्र हसति घर जाइया । जोबन गंवा राणी ब्याहिया ।।२०६६।।
अर सूदन पुत्र हस्ती का जीव । दिन दिन बढे सुभट की नींव ।।
जाति स्मरण उपज्या तिण बार । कमलमर्द पले तप सार ।।२०६७।।
सतार स्वर्ग पाइया विमाण । हस्ती जीव मंदार बण आण ।।
भया मृग तीहां मृगी आव । उपज्या गरभ भीलन की ठाव ।।२०६८।।
कालंजर भील कहावै नांव । आखेटक करम सु रालैं भाव ।।
मरि कर गया सरकरा भूमि । कठिन करम तिहां आया भूमि ।।२०६९।।
भ्रम्या जोनि चउरासी लाख । समकित कदेइ न मुखतैं भाष ।।
भ्रम संसार मनुष गति लही । तिहां आइ कछु आश्रम गही ।।२१००।।
मैं अब आइ संबोध्या तोहि । असुभ करम का टूटा मोह ।।
करी तपस्या छोडे प्राण । रत्नमाली नृप तू भया आन ।।२१०१।।
रत्नमाली अम सूरज रजै । दोउं करथा पाप का कजै ।।
तिलक सुन्दर मुनि पें तब आइ । दिक्षा लई सुगति के भाइ ।।२१०२।।
सूरज रज महा सुक विमांण । उहां तैं चय दसरथ भया आण ।।
नंदघोष ग्रीवक तैं चया । सरवभूति मुनिवर वै भया ।।२१०३।।
चय इक देव हुवा है जनक । रत्नमाली जीव भया है कनक ।।
इण विध सुण्यां सकल परजाइ । संसय मन तें गया बिलाय ।।२१०४।।

दूहा

सब परजाइ दसरथ सुण्यां, ज्यौं ज्यौं भमियां हंस ॥
पुन्यवंत सब जग प्रगट, सबतैं उत्तिम वंस ॥२१०५॥

चौपई

दशरथ का वापिस घर पर आना

राजा फिरि आयो घरमांहि । मंदिर गये भई तब सांझ ॥
सरद रितु सुहावणी घणी । आभूषन की सोभा घनी ॥२१०६॥
चंदन अगर सौं अंगीठी भरी । बास महक रही तिन खरी ॥
ऊनमई सेज्या पाटंबर सोडि । केसर भरे गींदवे तिण ठोर ॥२१०७॥
दुग्धपान कै कीजे भोग । जो दुख भूलैं देख असोग ॥
बिछे गिलम तिहां अति ही अनूप । तणे चंद्रवे सेज्या रूप ॥२१०८॥
उत्तम औषध खावैं वणाइ । तिनले गुण वरने नहीं जाइ ॥
असे सुखिया भुगतैं सुख । दुखियां तणां सुणु अब दुख ॥२१०९॥
फाटे बसतर लूषी देह । मैलां मन अर पाप सनेह ॥
काठा मन अनैं पानी भरै । सीत होई धाम में तपैं ॥२११०॥
कठिन कठिन सौं बीतैं काल । पाप करम का एही हवाल ॥
जैसी करणी तैसी गति । जाणैं ए संसारी थिति ॥२१११॥

दूहा

शुभ अशुभ का भाव ए, देखो समझि विचार ॥
सुपना का सा सुख ए, जाति न लागै बार ॥२११२॥

चौपई

वैराग्य भाव—रामचन्द्र को राज सौंपना

राजा मंत्री सब लये बुलाइ । अब हम दिक्षा लेस्यां जाइ ॥
रामचंद्र को सौंप्यौ राज । प्रजा तणी वह राखै लाज ॥२११३॥
मंत्री रुदन करैं तिण बार । राणी रोवैं महल मझार ॥
भरत विचार करैं आहि । सोचैं बहुतिहां मैं दुखदाहि ॥२११४॥
प्रथम पुन्य तैं भव मैं तरघा । मोकूं मांही राखा करघा ॥
अब मैं दिक्षा लेस्यु पिता संग । जो नहीं हुवै मेरा मान भंग ॥२११५॥
कैकेयी पुत्र देख्यो विरकत्त । राजा वर आप्यो तब चित्त ॥
गई भूप पासैं तिण बार । सकल सभा कीयो नमस्कार ॥२११६॥

कैकयी का दशरथ के पास जाना एवं अपने वर मांगना

अर्द्ध स्यंघासण दियो नरेस । हाथ जोडि बोले भुवनेस ॥
मोकूं वर दीना तुम क्या किया । अब मोकूं दीजे करि दया ॥२११७॥
तुम सम दाता कोई नहीं । जुग जुग की तरहे तुम मही ॥
बोलैं राय सुणौं कैकिया । अब हम चाहैं दिख्या लिया ॥२११८॥
जो कछु वस्तु भली मो पासि । मांगि वेग ल्यो पुरौं आस ॥
रांणी नयण भरै बहु नीर । व्याप्या कंत बिछोहा पीर ॥२११९॥
नीची देखैं धरती खणैं । बडी बेर पीछै मुख भणैं ॥
भरत लेण कहत है जोग । मैं किम सहस्यौं पुत्र विजोग ॥२१२०॥
अब जो भरत नैं द्यो राज । तो अब रहै हमारी लाज ॥

दशरथ द्वारा विचार

राजा दशरथ करै विचार । कठिन वस्तु तैं मांगी नारि ॥२१२१॥
रामचंद्र सुत महा पवित्र । लक्षमण मेरै महा विचित्र ॥
भरत राज पावै किण हाथ । हारचो बचन त्रिया कै हाथ ॥२१२२॥
रामचन्द्र जे पावं राज । भरत करै दिख्या का काज ॥
मरैं कैकेयी पुत्र विजोग । मोकूं बुरा कहैं सब लोग ॥२१२३॥
रामचंद्र हरि लियो बुलाय । सब विरतांत कहे समझाय ॥
कैकेयी नैं मैं कह्यो वर दैंन । बल करि कियो राज सब सैंन २१२४॥
जौं मैं साच कुसाच अब करूं । पृथ्वी मांहि अपजस सिर धरूं ॥
भरत लेय जो दिख्या जाय । तो कैंकयी मरै हलाहल खाय ॥२१२५॥
मोकूं होइ घणौ अपलोक । यो मुझ अधिक व्याप्यो सोक ॥
भरत राज देहु संसार । रामचन्द्र बोले तिण बार ॥२१२६॥
मात पिता की आग्या सार । जाका बचण कुंण सके टार ॥
निज मंदिर चढि देखैं भरत । दीक्षा की मन इच्छा धरत ॥२१२७॥
कब सो पिता निकसैं घर बार । ताके लेस्युं संजम भार ॥
बुलाया राय सभा के बीच । राम बचन ज्यौं अमृत सींच ॥२१२८॥

भरत को आमंत्रण

अजोध्या का तुम भुगतो राज । अब हम करैं धरम का काज ॥
तिणकै भरत सुणौं सुम तात । बडे राम लक्षमण है भ्रात ॥२१२९॥
इन हजूर किम बैठौं पाट । कस्या नैं लागौं मोकुं हाठ ॥
राज्य विभूत परब संबार । जाणौं सहु संसार असार ॥२१३०॥

पुत्र कालित्र सगा नहीं कोय । संपति तणां बिछोहा होय ॥
देही आदि कोई साथ न चलै । अब मैं फिर माया में मिलै ॥२१३१॥
जो तुम दिक्षा समभी भली । मैं भी संयम ल्यु मन रली ॥
हमनै किम नाखो इह मांहि । राज भोग की इच्छा नांहि ॥२१३२॥

राम लक्ष्मण द्वारा प्रस्ताव

रामचन्द्र लक्ष्मण इम कहै । हमारै चित्त असी क्यु रहै ॥
तुम बाल घर जोवन वेस । तुमकू दियो पिता सब देस ॥२१३३॥
अजोध्या नगरी राज तुम करो । चतुर्थ आश्रम दिक्षा धरो ॥
दोइ कर जोडि भरत इम कहै । तुमारी आग्या मैं सरदहै ॥२१३४॥
तुम प्रभुजी करि हो जिन की सेव । मोकू कहि समझाओ भेव ॥
रामचंद्र भरत सु इम कहैं । हम वन बेहड किनर रहै ॥२१३५॥
सेवा करि हैं कुणा की जाय । वन में बैठि जपै जिणराइ ॥
दशरथ के चरणन को नये । बिदा मांगि माता पै गये ॥२१३६॥

माता के पास जाना

राजा दसरथ भयचक भया । मुर्छा खाइ धरणि गिर गया ॥
सब सेवग मिल थांभै देह । पुत्र बिछोहो व्याप्यो तेह ॥२१३७॥
माता सुणतैं खाए पछाड । बडी बार तन भई संभार ॥
माता कहै सुणु रघुनाथ । हम कु भी लै चालो साथ ॥२१३८॥
भरत राज पिरथी का रहो । तुम अपने घर बैठा रहो ॥
रामचंद्र बोलै सुण मात । रवि आगैं शशि की नहीं कान्ति ॥२१३९॥

राम का उत्तर

हम आगैं किम रहसी राज । वह पट बैठा हम कु लाज ॥
हम दक्षिण दिस करि हैं गौन । वन बेहड निहां नाहीं भौन ॥२१४०॥
तुमकू किस विध लेकर जांहि । गैला में दुख कैसे सांहि ॥
जब हम कहीं लहै विश्राम । तब तुमसौं मिलवे का काम ॥२१४१॥
सीता साथ लही तिणबार । वज्रावर्त्त धनुष संभार ॥
हम तुमकू कहा देख्या कपूत । भरत नैं सौंपी राज विभूत ॥२१४२॥

लक्ष्मण द्वारा क्रोध करना

पिता न समभा धरम की चाल । हम कू दीया देस निकाल ॥
त्रिया चरित्र सु भूल्या राय । लक्ष्मण लीं तब भौंह चढाय ॥२१४३॥

धरती उठाऊं बज्राकार । भरत माहि बल कहा अपार ॥
नगरि माहित देहु निकाल । राज देहु रामचंद्रणी इस बार ॥२१४४॥

बहुरि भाव लक्ष्मण मन भयो । क्रोध लहर सब ही मिट गयो ॥
पिता आग्या किम टारी जाय । हमकूं भव भव करम बंधाय ॥२१४५॥

राम वनवास

राम माहि मोतैं बल अति । इसा न आणी अपनै चित्त ॥
तातैं कहि हैं ए बयण । पिता तणी आग्या नहीं हणै ॥२१४६॥

आगैं राम अनै पाछै सिया । लक्ष्मण ताकैं पाछै किया ॥
श्री जिन चैत्यालय जाय । विध सेती बंदे जिन राय ॥२१४७॥

सकल कुटुंब नगर का लोग । पाछैं लागि चले मन सोग ॥
राजा दशरथ भरथ सत्रुघन । सब रणवास भयो सब सून ॥२१४८॥

गोहनतैं बिदा कर दिये । वे तीनूं तबैं बन मां गए ॥
रोवैं स्वर्ग लोक के देव । सबैं पृथ्वी भ्रम पायो भेव ॥२१४९॥

लोग कहैं चलिस्यां संग राम । बन खंड मैं कैसैं बिसराम ॥
सूरज देख दुख का भाव । जाइ छिप्यो अस्ताचल ठाम ॥२१५०॥

पंछी रुदन करैं चढ रूख । जलहर गए सकल जल सूख ॥
भई रयण जिण मंदिर जाइ । नमस्कार करि बैठा ताइ ॥२१५१॥

भरत सत्रुघन पायो राज । दसरथ गयो दिख्या कै काज ॥
राज बहुत भए वैराग्य । राज भोग सहु जन करि त्याग ॥२१५२॥

इति श्री पद्मपुराणे भरत राज, राम लक्ष्मण वनवास, दशरथ दिक्षा, विधानकं

२८ वां विधानक

चौपई

वनवास की प्रथम रात्रि

रामचन्द्र लक्ष्मण अरु सिया । जिन मंदिर में आश्रम लिया ॥
भई रयण सोया कछु बार । अरध निस चाले धनुष संभार ॥२१५३॥

निकसे एक नगर के बीच । देखे मंदिर ऊंचे अरु नीच ॥
अपनी अपनी सेज्या ठौर । सोवैं लोग न सुणिये सोर ॥२१५४॥

कामी थके त्रिया गल लाग । केई सुरत करैं है जाग ॥
कई त्रिया मदन सिस गया । कोकिला पंडित जन किया ॥२१५५॥

केई हारे पडे बेसुध । केई मूरख महा कुबुधि ।।
केई कथा धरम की चलैं । सुणैं भेद अरथो सुख लहैं ।।२१५६।।

केई दुखी दालिद्री पडे । टूटी झुपडे के तल गिरे ।।
कई पडे मांहि बाजार । कई पडे रहैं पइसारिनी मार ।।२१५७।।

चोर फिरें पर धन हरें । पाहरुत्रा का सबद सुण डरें ।।
देखे सकल नगर के चिह्न । दुखी सुखी देखे भिन्न भिन्न ।।२१५८।।

पुह फाटी उग्यो जब भान । बहु सावंत अजोध्या ते भ्रान ।।
मारग घेर रहैं वे ग्राय । रामचंद्र जिह पैंडे जाय ।।२१५९।।

राजाओं का अनुगमन

छोडा रथ कौसिल कर लए । भूपति सकल पयादे भए ।।
सुखिया भू मनि धरते पांव । चल्या न जाय थके लिए पांव ।।२१६०।।

जोता निबहे पाछैं घने । कालिद्री जमुना कूं हने ।।
उछलैं लहर मच्छ बहु चलैं । गड़गडाट सौं जल न हलैं ।।२१६१।।

तबैं सहू राजा विनतीं करैं । प्रभु हम कैसे पार उतरैं ।।
तुम तो प्रभुजी उतरो पार । हम कैसें पहुंचैं निरधार ।।२१६२।।

सबको वापिस जाने को कहना

रामचन्द्र बोलैं सुणु लोग । तुम क्या मारे सहु विजोग ।।
हम तापस वन बेहड वास । करिहौ कहा हमारे पास ।।२१६३।।

तुम फिर जाउ घर आपणैं । दिन पलटया मिलिवो आपणैं ।।
रामचंद्र सीता गहि बांह । पैरि गया तिहां तटनी थांहि ।।२१६४।।

बैठा एक रूंख तलि जाय । वारि खडा भूपति बिललाइ ।।
देखो असुभ करम का भाव । ऐसा नया दुख व्याप्या आय ।।२१६५।।

अवर मनुष्य की कीजे कहा । राम सरीखा इह दुख लहा ।।
हम फिर जांहि करैं कहा गेह । करि हां चिदानंद सौं नेह ।।२१६६।।

सब मिल ऐसी चितवैं चित्त । इनु जिन भवन करी जाइ थित्ति ।।
श्री जिन मंदिर उज्जल वरण । दूख असोग दुख के हरण ।।२१६७।।

पूजा करी जिनेस्वर भगत । ऊंचैं चढि देख्या सब जगत ।।
ठांम ठांम देख्या देहुरे । रतन संभव मुनि तिहां तप करैं ।।२१६८।।

देइ प्रदिक्षणा पूछैं धर्म । जती सरावग का सब मर्म ।।
पार उतरि आये सब राय । सुण्यो धर्म तहां चित्त लगाय ।।२१६९।।

बहुत भूपति यां दिक्षा लई । धरम भेद सुणि निश्चय थई ॥
बहुतें श्रावक का व्रत लिया । दया धरम मांही चित्त दिया ॥२१७०॥
घणां फिर गया अजोध्यापुरी । भरत सूं मिले बीनती करी ॥
कही बात सगली समझाय । रुदन करें सुणा दुख अधिकाय ॥२१७१॥

दशरथ द्वारा स्वप्न एवं वैराग्य

दसरथ करैं करम व्यवहार । पुत्र वियोग भयौ दुख अपार ॥
कवण करम मैं खोटा किया । पुत्रा है देस निकाला दिया ॥२१७२॥
बहुरि समझिया मन में ग्यान । असा मोह में भया अयान ॥
कुण कुण भवका चितवो पुत्त । केई पुत्र कलित्र संजुत्त ॥२१७३॥
स्वरगां का सुख के के बार । देवलोक की भुगती नारि ॥
चिहुं गति का दुख सुख घणे । देह जीव सों प्रीत न बणै ॥२१७४॥
पुद्गल अणंत धरें सब जौंण । जीव संघाती कहिए कौंण ॥
पांच चोर है काया बीच । विष मय करैं करम नित नीच ॥२१७५॥
विषय अभिलाष हीं उपजै दुख । जिसा होइ डसने जैसा दुख ॥
पाछें हुवै प्राण का नास । असी समान इन्द्री सुख जास ॥२१७६॥
मोह जेल बंधियो संसार । मूरख मगन हुवै निरधार ॥
स्वारथ रूपी है जग सार । धरम एक जिय को आधार ॥२१७७॥
बारह अनुप्रेक्षा हुवैं चित्त । आतम ध्यान विचारैं नित्त ॥
दसरथ मुनि असा तप करैं । चिदानंद लिव चित्त मैं धरैं ॥२१७८॥
अपराजिता रोवै दिन रात । कैकई सोग करै बहु भांति ॥
भरत करै माता का सोच । कहै चल देखुं माता मन सोच ॥२१७९॥

भरत का राम के पास जाना

उनकूं आनि बिठाऊं राज । उन आगैं मैं साधूं काज ॥
भरत सत्रुघन अस्व पलांण । बहुत संग लीया राजान ॥२१८०॥
पहुंचे कालिंदी पर जाय । गये पार बैठा तट ठांइ ॥
ह्वां तैं मारग पूछत चले । छठे दिवस राम कुं मिले ॥२१८१॥
उतर दूर थी करैं डंडोत । विनती तिनसौं करैं बहुत ॥
रोवैं सत्रुघन भरत और । रामचंद्र बोलैं तिण ठौर ॥२१८२॥
भरत बीनवैं द्वै कर जोडि । तुम प्रभू हो त्रिभुवन सिर मौर ॥
गैंवर बोझ चलै किम बहल । हमसूं राज चलै नहीं ह्यल ॥२१८३॥

तुम राजित लक्ष्मण परधांन । तुम प्रभु हम छत्र उठावन वांन ।।
सत्रुघन ढारैंगा चमर । तुम पर बैठि बांधे कमर ।।२१८४।।

कैकयी का आगमन

पाछैं आई कैकई माइ । राम लखण उठि लागे पांय ।।
रुदन करै समभावै बात । तुम बिन दुख पावां दिन रात ।।२१८५।।
अजोध्या चालि राज तुम करौ । मेरी चूक न जित मैं धरौ ।।
लघु भाई सेवैगा चरण । तुम त्रिभुवन के तारण तरण ।।२१८६।।
रामचंद्र बोले सुण मात । हमकुं बनवास दिया है तात ।।
पिता आग्या किम कीजे भंग । हम तपसी भेष हैं सुख भ्रम ।।२१८७।।
भरत सत्रुघ्न हम दीया राज । गिरथ तारौ [illegible] ।।
तुम सब बिदा अजोध्या किया । आपण उठि बन मारग लिया ।।२१८८।।
विद्युत मुनी अजोध्या वास । भरत सुनैं जिन मत का पास ।।
अरहनाथ के मंदिर जाइ । तिहू काल जिन पूज रचाइ ।।२१८९।।
धरम मार्ग का कीजे काज । प्रजा सुखी भरथ के राज ।।

राम का उज्जयिनी जाना

मालव देस उजीणी नयर । बन उपवन की देखत सैंर ।।२१९०।।
गाय र भैंस चरैं तिहां घणी । खेती हरियल सोभा बणी ।।
मनुष्य न दीसैं किणही ठौर । नगर सोभै रमणीक सु और ।।२१९१।।
लक्ष्मण राम अचंभा करैं । इहां का लोक कहां हैं दुरैं ।।
देखो पर्वत ऊपर जाय । सकल बात भाषो तुम आय ।।२१९२।।
लक्ष्मण जाय परवत चढ्या । देख देहुरो अंत: सुख बढ्या ।।
नमस्कार करि तरु परि चढ्यो । मनुष्य एक तहां दृष्टि पड्यो ।।२१९३।।
ताहि देख मन सोचं मांहि । ताको भेद न पाऊं जाहि ।।
कै इह मनुष्य कै उभी ठूंठ । कैसे बिन समझ्या कहूं झूंठ ।।२१९४।।
इह कूं देखूं अपने नयन । तब मैं कहूं राम सौं बयन ।।
उतर रूंख सो दाखिण चल्या । पंथ मांहि वह आवत मिल्या ।।२१९५।।
लूषी देह कूबडी धेह । फाटे बसतर लागे छेह ।।
नंगे पांव दुषित अति रूप । ताहि साथ ले आए भूप ।।२१९६।।
रामचंद्र सीता ढिग आणि । बटोही नैं जाण्यौ देव समाणि ।।
कहै यह इन्द्र अथवा धरणेन्द्र । कै विद्याधर सूरज चन्द्र ।।२१९७।।

रामचन्द्र ता करुणा करी । तू कहा चाल्यो किण नगरी ।।

सिघोदर मिलन

देस मालवो नगर उज्जैण । करै राज सिघोदर सैण ।।२१६८।।

दसापुर नगर थकी हूं चल्यो । वज्रकिरण समइष्टी भलो ।।
रामचंद्र पूछैं फिर बात । उण समकित पायो किण भांति ।।२१६६।।

पंथी भणै राय विरतांत । दसारण्य वन अहैडे जात ।।
इह वन छोडि किण कारण गया । प्रीतवरधन मुनि दरसण भया ।।२२००।।

ग्रीष्म रितु पर्वत बहु तपैं । ध्यानारूढ तहां भगवन जपैं ।।
राजा मुनि नैं पूछैं आइ । काया कष्ट सहो किण भाइ ।।२२०१।।

मनुष जनम कौ लाहा लेइ । तप करि वाद जलावै देहि ।।
आत्मा कुं कही दीजे दुःख । पंचइंद्री का भुगतो सुख ।।२२०२।।

भोजन कारण घर घर फिरो । निरस सरस अहारइ करो ।।
आतम दुख करो तुम बुरा । मनुष्य जनम दुर्लभ है खरा ।।२२०३।।

बोले मुनिवर भूपति सुणौ । मैं निज सुख कहां लग भणुं ।।
राजा हंस करि पूछै बात । तपैं सिला दुख पावै गात ।।२२०४।।

उडै धूल दुख सहै सरीर । भूख पियास परीसा पीड ।।
मुनिवर भणै सुणुं भूपाल । इन्द्री विषय दुख का जाल ।।२२०५।।

सात नरक भुगतैं इण साज । विषय सेव्या बिगरैं सहु काज ।।
जे जीव विषय इन्द्री कौ करैं । मान तजत कछु बार न धरैं ।।२२०६।।

कारण मोह पिवै है जीव । भ्रमैं संसार दुख की नीव ।।
राजा सुणि चरण कुं नया । पाप प्राश्रम सगला मिट गया ।।२२०७।।

जती सरावग का सुणि धर्म । अणुव्रत लीया सुभकर्म ।।
मुनि पै नेम लेई तिण बार । अरिहंत बिन न करूं नमस्कार ।।२२०८।।

गुरु निर्ग्रंथ अरु शास्त्र जैन । इनकूं सेऊं कर मन चैन ।।
राजा आये अपने गेह । दया धरम सुं लाया नेह ।।२२०६।।
विषय बिना रहै नहीं घडी । श्री जिनवाणी हिरदै धरी ।।
प्रीतिवरधन मुनि मास उपास । तिबइया धरि भोजन की आस ।।२२१०।।

वज्रकरण द्वारा पेषण किया । मुनिवर कूं तब भोजन दिया ।।
बरखे रतन पुष्प तिण बार । मुनिवर जबै लीयो आहार ।।२२११।।

राजा पासि रह्या उहै आइ । नमसकार करै किण भाय ।।
मुनिसुव्रत की प्रतिमा घडाइ । मुंदडी में थे वा लगाई ।।२२१२।।

नमस्कार प्रतिमा कूं करै । तुमारी काण न मनमें धरै ।।
लोक में कछु समझत पड़ै । रंधर विन राजा सों कहै ।।२२१३।।

सिंहोदर मन कोप्या राइ । तातै नगर क्रोध के भाय ।।
वृहद गति वज्र किरण पै आइ । सगली बात कही समझाइ ।।२२१४।।

सिंहोदर कोप्या है घणां । ताका जीव कूं चाहै हण्यां ।।
जे तुम भाग जाइ किण ठांम । तब तुम बचो तजो यह गाम ।।२२१५।।

पूछै तैं जाणी किण भांति । मोसूं कहि समझावो बात ।।
कुंदनपुर नगरी का नाम । समुद्र सिंग वणिक तिण ठाम ।।२२१६।।

लखमी नाम जाकै घरनारी । दोइ पुत्र उपजाये सुख धणी ।।
विद्युत ज्वाल प्रथम सुत भया । ग्रहतगंत दूजा कूं थया । २२१७।।

मोकूं पिता द्रव्य बहु दिया । विणज हैत उज्जेणी गया ।।
कमला लता गणिका कूं देखि । मन अटक्यो ता रूप विशेष ।।२२१८।।

अरथ खोयो सब दलिद्री भया । अंति समझ चोरी चित दिया ।।
सिंहोदर मंदिर गणिका गई । श्रीधरी रांणी को देखत भई ।।२२१९।।

कुंडल देखि चितवै तिण बार । अपणे कुंडल धरे उतार ।।
सखी सुं बोली वेस्या अस्त्री । मोकूं कुंडल लागें बुरी ।।२२२०।।

जैसे कुंडल है राणी कान । असे मोकूं दीजे आंन ।।
मैं सुणा नृप मंदिर में गया । सिंहोदर सूं पूछे तिया ।।२२२१।।

किण कारण तुम दुचिते घणे । चिंता कवन तुम्हारे मने ।।
वज्रकिरण मन दुविधा धरै । मेरी कांण नवै नहीं करै ।।२२२२।।

प्रतिमा नैं वह करै नमस्कार । मान भंग करै सभा मझारि ।।
मेरा अन्न खावै वह राय । मोसुं ऐसा करै दुराव ।।२२२३।।

वाकूं मारूं तो सुख लहूं । इह मतो मैं तो सूं कहूं ।।
ऊंचै चढि देखियो नरेस । घेरया उजनै तुम्हारा देस ।।२२२४।।

वज्रकिरण तब गढ मैं गया । कांगुरै कांगुरै बैठा सुरवा ।।
पोलि किवाड मजबूत दिवाय । जुध निमित्त रूग बैठा राइ ।।२२२५।।

रंधरविसुत सिंहोदर का दूत । वज्र किरण पै आय पहूंत ।।
कहै क तूं प्रतिमा कू नवै । जती पाय सुणि वयूं निजदवै ।।२२२६।।

वनहै सुहावै असी रीत । सबकुं चाहै किया अतीत ।।
तू काहे कूं खोवै जीव । राजा प्रते न वाबो ग्रीव ।।२२२७।।

बोले बज्रकिरण भूपति । राजरिध छोडूं सब भती ।।
धरम द्वार हमनें तुम देहु । दंपति जाया निकाला लेहु ।।२२२८।।

मैं निश्चै छोडूंगा नाहिं । राज भोग की ग्रंछा नाहिं ।।
दूत घर आया नृप पासि । ताकूं एक निरंजन पासि ।।२२२९।।

धरम द्वार की इछा नांहि । राज भोग की इछा नांहि ।।
सिंहोदर फिरिया भूपति । सेना पडी सब घेरैं धरती ।।२२३०।।

आस पास सब दिया उजाडि । तबतैं भाजे हैं सब छांडि ।।
सुरभीत मतें मम आइया । इसकी खबर मैं अभी पाइया ।।२२३१।।

लागी अगनि जली झुंपडी । बली टूट अंग परि पडी ।।
हेम सांकली रतन सौं जडी । रामचंद्र दीनी तिण घडी ।।२२३२।।

परदेशी पहुंतो निज ठांम । भया सुखी जगत में नाम ।।
उहां तैं चले असन निमित्त । दशांगपुर चैत्यालैं करी थिति ।।२२३३।।

चन्द्रप्रभ की पूजा करी । लक्ष्मण सुं बोले तिस घडी ।।
नग्र मांहि सुं सीधा लाय । बिन सेती क्यूं भोजन खाय ।।२२३४।।

लक्ष्मण की बज्रकिरण से भेंट

सीता त्रिषावती है घणी । दशांगपुर तिहां गाढ अति बणी ।।
चहुंधा घेर रहे सामंत । लक्ष्मण नें जाना बरजंत ।।२२३५।।

धका धूम करि भीतर गया । गढ की पौलि खडा जिम भया ।।
बज्र किवाड अटल तिहां दणें । सूर सुभट रखवाले घणें ।।२२३६।।

लक्ष्मण सूं पूछैं तू कुणें । किहां तैं किया तुमनें गौण ।।
वह्रेक हम परदेसी आय । अन्न हेत हम गढ मैं जात ।।२२३७।।

पोले दीनी खिडकी खोलि । बज्रकिरण आदर सौं बोलि ।।
तुम किहां तैं आवण किया । लक्ष्मण को आदर अति दिया ।।२२३८।।

बोले लक्ष्मण सुनो नरेस । अन इछा आये तुम देस ।।
पंचामृत सूं थाल भराइ । लक्ष्मण आगे धरा मंगाय ।।२२३९।।

तब बोले लक्ष्मण कुमार । भाई भावज हैं जिण द्वार ।।
उन जीम्या बिन मैं किम खाउं । कहो तो तिस पास ले जाउं ।।२२४०।।

भोजन अन्न दियो भरि थाल । लक्ष्मण नैं बूझै भूपाल ।।
लक्ष्मण ले आयो जिण धांम । जिहां बैठा श्री सीताराम ।।२२४१।।

ग्रैसी आणी उत्तम वस्तु । राम कहै लक्ष्मण नैं हस्त ।।
फासु जीमण आण्यां भला । बहुत सुगंध ता माहिं मिल्या ।।२२४२।।

करि अहार मन रहसे घणे । बज्रकिरण की अस्तुति भणे ॥
धन्य यह सम्यक दृष्टि भूप । असा भोजन दिया अनूप ॥२२४३॥

सिंहोदर वाकूं देहै दुख । किस विध होवैं या कूं सुख ॥
हम तो खाया इसका धान । या का कारज करैं प्रमान ॥२२४४॥

लक्ष्मण का सिंहोदर के पास जाना

लक्ष्मण भेज्या सिंहोदर पास । पुण्य जीव का किम करैं नास ॥
बज्रावर्त्त धनुष ले हाथ । तरकस बांधि खड्ग लें साथ ॥२२४५॥

राय द्वार तैं ऊभा भया । पौलिय अटक्या जांण न दीया ॥
कहै किसई हूं भरत का दूत । कहो सिंहोदर स्यौं इह सूत ॥२२४६॥

राजा नै तब लिया बोलाइ । भरथ संदेसा कह्या समझाइ ॥
बज्रलोचन कहा किरी बिगाड । तै उसका दिया देस उजाड ॥२२४७॥

यह तो सेवै श्री जिनराय । तैं वाकुं भयवंता आज ॥
वा कौ वेगि छोडि तू देई । इह अपलोक मती तू लेह ॥२२४८॥

बोले राजा सुणि हो दूत । असा कहा भर्त रघुदूत ॥
आपणैं देस मनावो आंण । ता पाछै हूं रावस्यौं कांण ॥२२४९॥

बज्रलोचन खावै मुझ धान । बहुरि भंग करै मम मांन ॥
वाकूं भला लगाऊं हाथ । असी करै न काहू साथ ॥२२५०॥

जो याकुं मैं अब यूं छोडि । तो बिगडैं और इ या होड ॥
बोले लक्ष्मण सुणु नरेस । या कूं छोडि मांनि उपदेस ॥२२५१॥

राजा कहै सुण रे तू मूढ । दा भंग तू का हुवै आरूढ ॥
जैसा हुवै उसका सूल । असा तेरा ह्वै है मूल ॥२२५२॥

लक्ष्मण और सिंहोदर के मध्य झगड़ा

लक्ष्मण कहै आया तुझ मरण । मानैं नहीं भरथ की सरण ॥
कोप्यो भूप आदि सब सभा । क्रोध सकल ही के मन हुवा ॥२२५३॥

कंई गदा गही तरवार । सगला आयुध लिये संभार ॥
लक्ष्मण कहै ढील क्यों करौ । तुम मैं बल है तो वेगा लडौ ॥२२५४॥

धाय पडे सब ही सामंत । लक्ष्मण करै प्राण का अंत ॥
जाहि गहै ता पटकैं भूमि । मारैं मुंठी लातां घूंस ॥२२५५॥

मारि थपेड करैं संहार । सगली सैन्या दीनी मार ॥
राजा देखि अचंभा करै । एक पुरुष असा बल धरै ॥२२५६॥

राजा धाइ पड्या तिण बार । बोलै सब्द मार ही मार ।।
कोई निकट आई नहीं सकै । जा पकडै ता मारै धकै ।।२२५७।।

तोड्या रथ अरु ध्वज नीसांण । [illegible] ।।
इह तो कोई हितू हमार । सब दुर्जन कीने संहार ।।२२५८।।
सिहोदर के धाए सुभट्ट । गदा खडग से किया संघट्ट ।।
गोला सर बरषै ज्यौं मेह । पुंनिवंत कै लगै न देह ।।२२५९।।

वज्रावर्त्त लक्ष्मण संभार । सगला दिया मारि कर छार ।।
मारै खडग बिजली सी भ्रांत । दारुण जुध भया बहु भांति ।।२२६०।।

देखैं लोग अचंभे होइ । इन्द्र कहै धरणेन्द्र है कोई ।।
कै विद्याधर कै इह देव । सिहोदर सोचैं मन एव ।।२२६१।।

सिहोदर को लक्ष्मण द्वारा बांधना

लक्ष्मण तबै दुपट्टा रोड । सिहोदर नैं बांध्या दोड ।।
मारैं लात धमुं के घणे । रांण्यां उसकी विनती भणे ।।२२६२।।

मोहि भीख दीजिये भरतार । तू दूजा मेरै करतार ।।
लक्ष्मण कहै रघु पासि ले जाहु । जे वे करैं दया का भाव ।।२२६३।।

तो मैं छोडुं या कौ त्याइ । ल्याये रामचन्द्र की ठांइ ।।
चंद्रप्रभु की पूजा करी । रामतणी अस्तुति चित धरी ।।२२६४।।
वज्रकरण सेती रघु कहै । मांगि वेग जो इच्छा वहै ।।
वज्रकरण कहै मांगू एह । सिहोदर ने छोडि तू देह ।।२२६५।।

राज्य का बटवारा

धन्य धन्य भाखैं सब लोग । अभयदान का दीया जोग ।।
सिहोदर कुं दसांगपुर दिया । उजेणी का राज वज्रकरण किया ।।२२६६।।

बहुत राय दरसन कूं आय । तीनसैं कन्या भेट वर्यो ल्याइ ।।
रामचंद्र लक्ष्मण कहैं बात । हम परदेसी फिरैं अभात ।।२२६७।।

वन में फिरैं तहां घर नांहि । कैसे इनस्यौं करैं विवाह ।।
बारह बरस फिरां बहु देस । ता पाछै समझिये नरेस ।।२२६८।।

राजा सकल बीनती करैं । अब ए कन्यां किण ने वरैं ।।
तुमकौं आणी ए धरि भाव । कैसे दीजे औरैं ठांव ।।२२६९।।

कन्या सकल रही मुरझाय । जैसे फूलमाल कुम्हलाइ ।।

रामचन्द्र जिण थानक गए । आधी रात बिदेसी भए ।।२२७०।।

मनमें कछु नहीं अहमेव । सुमरत चले जिनेसुर देव ।।२२७१।।

दूहा

जिनवाणी निश्चै धरैं, दया करैं षट्काय ।।
दुरजन सकल चरणां नमैं, श्री जिन धरम सहाय ।।२२७२।।

पर उपगारी राम हरि, परदुख भंजन हार ।।
पर कारज सारण निमित्त, प्रगटयो जस संसार ।।२२७३।।

इति श्री पद्मपुराणे वज्रकरण सिंहोदर विधानकं
२६ वां विधानक

चौपई

लक्ष्मण और विद्याधर मिलन

रामचंद्र सीता तिसाया भया । नीर लेण कुं लक्ष्मण गया ।।
तहां सरोवर निरमल नीर । छाया सघन विहंगम तीर ।।२२७४।।

नेत्र तसकर विद्याधर भूप । विजयार्द्ध पति गणी अनूप ।।
क्रीडा देखन आयो तिहां । वन लीला सब निरखी जिहां ।।२२७५।।

देख्यो लक्ष्मण पैले पार । रूप कांति कर दिपै अपार ।।
बहुत लोक भेजे ता पास । मनमें उपज्या अधिक हुलास ।।२२७६।।

सेवग आइ करैं नमस्कार । करैं वीनती बारंबार ।।
चलो प्रभु बुलावै तुम राय । तुम दरसन देख्यां को चाव ।।२२७७।।

लक्ष्मण विद्याधर ढिग गयौ । नेत्रतसकर अति आदर दियो ।।
लक्ष्मण उठि वीनती करैं । बैसाण्या सिंघासण परैं ।।२२७८।।

पूछै आए तुम किण काज । कवण वस्तु बांछो तुम आज ।।
लक्ष्मण बोले सुणों नरेस । आहार निमित्त आए इण देस ।।२२७९।।

रामचंद्र सीता जिण थान । मैं पहुंच्या पाणी कुं आंन ।।
नेत्रतसकर बोलिया तिह बार । सलोदन तेडिया रसोईदार ।।२२८०।।

व्यजन भले संवारे भोग । हीरे पीले बहुत पयोग ।।
अवर पकवान संवारे घणे । उत्तम घी मीठा में बणे ।।२२८१।।

राम बुलाये तिहां नरिंद । सीता सहित अधिक आनंद ।।
नेत्र तसकर चरणन कुं नया । बहुत प्रकार महोत्सव किया ।।२२८२।।

सिंघासण ऊंचे बैठाय । करैं आरती सेवैं पाय ।।
रतन जडित सोने के चौक । करैं उबटणा मूले सोक ।।२२८३।।

करि सनांन फिर भोजन खाइ । बिदा होइ आगे कूं जाइ ।।
वनमैं देखी सुभट मंडली । मारग की रोकी तिहां गली ।।२२८४।।

ए धसि करि तिह आगे गये । कंचुकी देखि अचंभै भए ।।
देखी कन्या बहुत स्वरूप । वा समांन कोई नहीं रूप ।।२२८५।।

सामुद्रिक की सोभावणी । अन्य कहां लग वरणौं गुणी ।।

लक्ष्मण द्वारा प्रश्न

लक्ष्मण तिस कूं पूछे बात । बालखिल्य नृप मेरो तात ।।२२८६।।
पृथ्वीदेवी कूंखि हूं भई । कुबड नग्र महा सुख मई ।।
धरम राज मैं बीतैं घडी । दुरजन दुष्ट सेती थरहरी ।।२२८७।।

राजा म्लेच्छ है रुद्रभूत । चढि आए सेना संयुक्त ।।
पिता मेरे से किया जुध । बांधि ले गया करि बल बुध ।।२२८८।।

पृथ्वी देवी कारण कंत । निसदिन रुदन करैं बहुभंत ।।
वसुधा मंत्री निमती बुझिया । कहि होणहार सूजिया ।।२२८९।।

राणी जब बालक नैं जणै । सो तो सब दुर्जन कूं हणैं ।।
बहुरि राज नगरी को करै । दुरजन तिस के पावां पडै ।।२२९०।।

कल्याण माला हूं पुत्री जणी । निमित्त ग्यानी नैं ऐसी भणी ।।
कन्या एक पुरुष के भेस । वनमें रहै नित्य विसेष ।।२२९१।।

कोई पुरुष को दरसण लहै । ताहि देख दुख कोई न रहै ।।
सिंहोदर नृप को मैं दई । या कारण मैं बनमें रही ।।२२९२।।

सैन्या मो पडी घेर चिहुं पास । कुंचुकी निकट मोहि इह आस ।।
मैं तुम दरसन पायो आज । हुवा मनवांछित मम काज ।।२२९३।।

एक अचंभा मो मन घणा । जो मैं पुत्र होता गुण गणा ।।
तो नगरी का होता साज । पुत्री कैसे पावै राज ।।२२९४।।

रामचन्द्र इह आग्या दई । यांही भेष रहो तुम थई ।।
तीन दिवस रहिगो बन मांहि । आधीरात छोडि तिहां जाइ ।।२२९५।।

कन्या जागि करै बिललाइ । मैं सोय गई वे उठ गये आय ।।
मेकला नंदी उत्तर बन गए । करकारण बन देखन भए ।।२२९६।।

वामैं वृक्ष बेर के लाग । देखण पेड नारियल लाग ।।
सीता तबै विचारया सौंन । हंसी जुध दो घडी मैं पौंन ।।२२९७।।

अत जीत को हुंगा भलो । रामचंद्र तब चाहि हलो ।।
असुभ सौण की छोडि सभाइ । बन ही बन निकसे रघुराइ ।।२२९८।।

रुद्रभूत राजा से युद्ध

रुद्रभूत राजा तिण ठांम । सेना घणी क्रोध के काम ।।
रामचन्द्र सैं मांड्या जुध । हारी सेन्यां भई असुध ।।२२९९।।

रुद्रभूत पग लाग्या आइ । रामचन्द्र का दरसण पाइ ।।
रामचन्द्र पूछै बिरतांत । उन भाषी पिछली सब बात ।।२३००।।

कौसंबी नगरी का नाम । अहित अगन विप्र तिण ठांम ।।
प्रतिसरजा ताकै नारि । रुद्रभूत पुत्र भई अवतार ।।२३०१।।

सात बिसण का सेवणहार । तसकराद करत पैरया कोटवाल ।।
थिस्वानल राय पास ले गया । नृप तब उस पर कोपिया ।।२३०२।।

कंहक इसकूं सूली देह । किंकर उस गह्या बहुत दुख देइ ।।
सेठ एक नृप आगैं जाइ । विप्र जाणि कै दिया छुडाइ ।।२३०३।।

उहां तैं मैं आइया इह देस । काकोनद मलेछ पै भया नरेस ।।

बालखिल्य को मुक्त करना

रामचद्र इम आग्या दई । बालखिल्य नैं छांडो सही ।।२३०४।।
मलेच्छराय ने दीया छोड । सेवा करी दोय कर जोड ।।
सभा सहित कुबडपुर आइ । करी वधाइ बालखिल राइ ।।२३०५।।

सिहोदर बज्रकिरण भी मिले । रुद्रदत्त बिदा कर चले ।।
इनका दुख कीया सब दूर । बालखिल सुख लह्या भरपूर ।।२३०६।।

दूहा

रामचंद्र अति ही बली, लक्ष्मण भी बलवंत ।।
परकाज के कारणें, करैं उपाव अनन्त ।।२३०७।।

इति श्री पद्मपुराणे बालखिल्य विमोचन विधानकं
३० वां विधानक

अडिल्ल

वन भ्रमण

रामचन्द्र लक्ष्मण कुमार साथैं सिया ।
आधीरातनि पंथ गमण तहां तैं किया ।।
त्रिदस वन सुप्रसन्न नदी परवाहनी ।
तरवर अशोक सघन वन शोभा बनी ।।२३०८।।

चौपई

सीता की प्यास बुझाना

पंथीयातणा सुहावैं बोल । छाया सीतल बेल तंबोल ।।
उत्तरमस्तोही बन गए । महाभयानक देखत भए ।।२३०६।।
सीतानें लागी तिस घणी । पडै धूप बहुतै प्रणमणी ।।
कहि नकट न देखीए नीर । लागी त्रिषा अनंत अधीर ।।२३१०।।
ऊंचे चढि देख्यो कोई ठाम । जहां तैं देख्यो अरन इक गांम ।।
कपिल बिप्र बसै तिस ठोर । अगनिहोत्री अरु ठाढी पोल ।।२३११।।
यहां ते गए ब्राह्मण घर एह । करुणावंत धरम की देह ।।
देख प्रदेसी दया ऊपजी । सीतल नीर झारी भरि लई ।।२३१२।।
पाणी पीय लिया बिश्राम । कपिल ब्राह्मण आयो ताम ।।
खबी पोट कांधा परि लिया । लकडी का बोझा सिर किया ।।२३१३।।
अंगोछा मस्तक परि लपेट । मैली धोती बांधी देह ।।
बांध जनेऊ तिलक ललाट । करणैं होम क्रिया इह बाट ।।२३१४।।

विप्र द्वारा क्रोध करना

देह कूबडी चपटी नाक । अति कुरूप रही तसु आंख ।।
देखि विदेसी घर के पास । क्रोध वचन मुख बोल्या तास ।।२३१५।।
मींट चढाइ मुखस्यौ बोलै बरडाई । कुवचन कही त्रिया नै जाई ।।
देसी क्यूं बैठण दीये । लाज नहीं कछु इनकै हिये ।।२३१६ ।
पौन पौल फडता फिरई पडै । ऐसे इनको जक नहीं पडै ।।
ए उठि चलेइ देखैं सब लोग । बहुत भीड दरसन के जोग ।।२३१७।।
कपिल विप्र लोगां सौं कहै । ए निलज्ज ऐसे ही रहैं ।।
कहा इनका दरसन तुम करौ । मूढ लोग तब बोलैं बुरो ।।२३१८।।
लक्ष्मण कोपि कपिल द्विज गह्या । फिर फिराय पटकन कूं चह्या ।।
रामचंद चित करुणा आइ । कपिल विप्र कूं दिया छुडाइ ।।२३१९।।

दया के पात्र

हरि नैं समभावै रघुनाथ । इस पर कहा उठावो हाथ ।।
जती संन्यासी विप्र अतीथ । बाल वृद्ध नारी पसु जीव ।।२३२०।।
पसु अपाहज मत मारो भूल । इनकी हत्या है अघ मूल ।।
आपतै सबल ता ऊपर चोट । परजा जीव दया की ओट ।।२३२१।।
लक्ष्मण दया चित्त में धरी । अन्य साव जे रहैं बन पुरी ।।
पापी किरपण जे अग्यांन । उनकौं कह्यौ न पाणु थांन ।।२३२२।।

बस्ती में आर्ति गमन त्याग

अब हम चलि बनवासा लेइ । बस्ती में फिर पांव न देइ ॥
बनफल बीण करैं आहार । किस किस की सुणि मांडे राडि ॥२३२३॥

बसती तजि आये बनवास । अंधकार निसबासर साम ॥
बरखा रितु अगाहर चहुं ओर । काली घट सोमैं चिहुं ओर ॥२३२४॥

रवि की किरण छाइ घण लई । सर्व पृथ्वी अंधियारी भई ॥
बरखै मेह मूसलाधार । चमकै दामिन चारूं बार ॥२३२५॥

लछमरण राम दुचिते घणे । छाया बिणा रहवौ किम बणे ॥
दृष्टि पसार देखि चिहुंपास । मंदिर देखे चित्त उलहास ॥२३२६॥

राम लक्ष्मण का मन्दिर में विश्राम करना

मंदिर में बैठा तब जाई । कपडे निचोड करि दिये सुकाइ ॥
भई रयण पौढे तिण ठाम । छत्रकरण देव का नाम ॥२३२७॥

डरपौं देखि ततक्षण भजि गया । बिनाधुक प्रतैं संदेसा दिया ॥
दोइ विदेसी अरथी एक । मेरे थांन रह्या कर टेक ॥२३२८॥

देव द्वारा मायामयी नगरी की रचना

देवता बोल्यो अवधि विचार । ए बलिभद्र नारायण अवतार ॥
ए आये हैं मेरे देस । सेव करूं ह सेवग भेस ॥२३२९॥

नगर संवारया मिंदर भला । रत्न खचित सुवर्ण निरमला ॥
वाही जागई सेज्या संवार । मिलम चंद्रवा बांदरवाल ॥२३३०॥

देव पुनीत आभूषण घणे । पागी अन्न गौरस सब बणे ॥
हाथी घोडा रथ पालकी । बसती बनी नई राम की ॥२३३१॥

लछमरण राम उठे परभात । सीता जागी बीती रात ॥
गंधर्व जात के गावैं देव । बहुत प्रकार करी सुर सेव ॥२३३२॥

राम लछमरण तब करैं विचार । या वन मैं तो थी उजाड ॥
किस प्रकार ए भई विभूति । तब यह बनपुर आय पहुंत ॥२३३३॥

करि डंडोत बीनती करैं । यक्ष राज हम सेवा करैं ॥
बैठि झरोखे भुगतो सुख । नगर देख भूले सब दुख ॥२३३४॥

कपिल ब्राह्मण की चिंता

कपिल विप्र सिर लकडी भार । बन तें काढि आए तिण बार ॥
भिक्षा मांहि देखै है नगरी । कंचन मंदिर रतन सूं जडी ॥२३३५॥

तब द्विज मनमें अचरज धरैं । इहां तो थे वन बेहड घने ॥
किण प्रकार इहां हुवा नगर । राति भी चाले वणीयो सगल ॥२२३६॥
कैं इह सुपने है परतक्ष । कैं ममता माया है को जक्ष ॥
ऐसे सोच करैं था खडा । मिल पणिहारी भरि सिर घडा ॥२३३७॥
पूछे ताहि इह नगरी कौण । कहै पणिहारी रामपुर भौन ॥
इह [illegible] श्री [illegible] की पुरी । देव [illegible] इह माया करी ॥२३३८॥
चौकीदार रखवाले घरैं । पापी दुष्ट नैं परहा करैं ॥
धरमी हुवै सो दरसण लहै । देखी माणस दूरै रहै ॥२३३९॥
पूछे विप्र मैं किण विध जाऊं । पणिहारी कहै ले श्री जिण नामु ॥
मुणि पै सुण्या धरम का भेद । तातैं हुआ पाप का विछेद ॥२३४०॥

धर्मोपदेश सुनना

चरित्र सुर मुनि पासैं जाइ । नमसकार करि लाग्या पाइ ॥
सुणि जिणधरम अणुव्रत लिया । धर्म लेस्या मांहि चित दिया ॥२३४१॥
राम लखण का दरसण पाइ । कपिल विप्र ने लिया बुलाइ ॥
बहुत विभव विप्र कुं दई । मंनमें कछुवन आणी नहीं ॥२३४२॥

दूहा

जैन धरम पालैं सदा, दया करैं बहु भाय ॥
नवनिधि पावै जगत में, बहुरि मुक्ति में जाय ॥२३४३॥

इति श्री पद्मपुराणे कपिल जैनधर्म व्याख्यान श्रवण विधानकं

२१ वां विधानक

चौपई

चातुर्मास के पश्चात् गमन

सुख में इहां बीतो चउमास । बहुरि फिर निकले बनवास ॥
दिनायक पति जोडे हाथ । नमस्कार करि नमायो माथ ॥२३४४॥
जे सेवा मुझ से भई हीन । षिमा कीज्यो विनवुं आधीन ॥
बिन उपदेश कियो इह काज । क्रिया करो सेवग परि आज ॥२३४५॥
रामचंद्र लक्ष्मण कहैं बैन । तेरा नगर में पायो चैन ॥
तैं बहु कीनी सेवा भगति । तेरा सुजस भया सब जगति ॥२३४६॥
हम तुमकुं सकुचाया भाय । तुम जस महिमा कहिय न जाय ॥
इनका मोह देव बहु किया । मोती हार आन कर दिया ॥२३४७॥

कुंडल दिया सिया कूं आंण । ताकी जोति रवि किरण समान ।।
नगर छोड वन मारग गह्या । नग बसे थे ते घर रह्या ।।२३४८।।

माया रूपी खिरी विभूत । लोग उदास भए तब बहुत ।।

विजय वन में गमन

वन ही वन मारग कूं चले । विजय हरि के वन में नीकले ।।२३४९।।

पृथ्वीधर थे तहां भूपति । इंद्राणी राणी उज्ज्वल मती ।।
वनमाला जाकें पुत्री । रूप लक्षण गुण सोभैं खरी ।।२३५०।

कन्या भई विवाहण जोग । निमित्तग्यांनी इम कह्या नियोग ।।
लक्ष्मण की पटराणी होइ । दसरथ दिक्षा लई इण सोइ ।।२३५१।।

लक्ष्मण राम गये वनवास । भरत सत्रुघन करें विलास ।।
लक्ष्मण कूं अब पावैं कहां । कन्या व्याह दीजिये जिहां ।।२३५२।।

सकल कुटंब रहसि मन करैं । कन्या बहु सुख मनमें धरैं ।।
राजा सुणी अजोध्या बात । दसरथ दिक्षा लई इण भांति ।।२३५३।।

वनमाला का लक्ष्मण पर आसक्त होना

वनमाला कहै लक्ष्मण बिन और । मेरे पिता भ्रात की ठौर ।।
लक्ष्मण कूं सुमरै दिनरात । इण भव मेरे अन्य न बात ।।२३५४।।

सांझ पड्यां देवी की जात । वनमाला आज्ञा लहि तात ।।
कहै कहूं फांसी ले मरूं । कंत बिना कैसे दिन भरूं ।।२३५५।।

छांडि उठ्यो तरु सूं बांधि । गल में मेल्यो चाहै फांधि ।।
लक्ष्मण ने आई सुभ गंध । देखण गया ते सनबंध ।।२३५६।।

याहि देखि तरु हेठैं छिप्या । वनमाला लक्ष्मण गुण जप्या ।।
वनदेवी सूं विनती करैं । जे लक्ष्मण मो कूं अब वरैं ।।२३५७।।

तेरा मंढ चुणाऊं देव । पूजा करूं बहुत विध सेव ।।
गल में चाहै फांसी लिया । इस भव मेरैं लक्ष्मण हिया ।।२३५८।।

अगलै जनम होई जियो मेल । ऐसें करैं वह कन्या खेल ।।

लक्ष्मण का प्रकट होना

तबै प्रगट्या लक्ष्मण कुमार । तू अपघात करै किम नारि ।।२३५९।।

मैं हूं लक्ष्मन तू रख मन ठांव । मैं पताजे तौ ग्रघ ढिग आव ।।
इतनी सुणि कन्या लइ खोलि । ऊभल फेरिकैं बोलै बोल ।।२३६०।।

राम का लक्ष्मण के लिये में पूछताछ

रामचद्र जाग्या अधरात । तिहां न देख्या लक्ष्मण कुमार ।।
सीता सूं पूछी कित गया । ता समय इम बोली सिया ।।२३६१।।
पुकारो तुम आवैंगा दोडि । रामचंद्र करैं सोरा सोरि ।।
रामचंद्र पूछें हंसि बात । कैसे समझे तुम बिरतांत ।।२३६२।।
आसीरवाद तू ऊनें दिया । सांची बात कहो तुम सिया ।।

सीता द्वारा उत्तर

सीता कहै अरध निस गई । चंद्रप्रकास उजैली भई ।।२३६३।।
वाही घडी लक्ष्मण वनमाला । दोऊं आये रूप रसाला ।।
जैसे रयण चन्द की प्रीत । असे सदा आनन्द की रीत ।।२३६४।।
रामचन्द्र ढिग लक्ष्मण बैठि । वनमाला सीता कैं हेठ ।।
चालूं वारता कथा कहै । सब सुख सुहावणां लहै ।।२३६५।।
सीतल चालै पवन सुवास । वनमाला पुंगी आस ।।

वनमाला की तलाश

दासी जागी देखी थान । कन्यां नैं रोवैं हैरान ।।२३६६।।
सूर सुभट बहु चौकीदार । तुरी पलाणां गहि हथियार ।।
केई पाला केई सुवार । निकसे सब कन्या की लार ।।२३६७।।
वनमाला देखी इस ठोर । सब सेन्या का हुवा सोर ।।
देख्या रूप राम लक्ष्मणां । चंद्रसूरज का जोडा बन्या ।।२३६८।।
कै इह इन्द्र स्वर्ग तैं आइ । किसकी पटंतर न दीया जाय ।।
करि प्रणाम बिनवैं बहु भांति । तुम हो कवण कहां तुम जात ।।२३६९।।
रामचंद्र यह लक्ष्मण बीर । सोहैं दोन्यु कनक सरीर ।।
कही प्रभू सब बात पाछली । सगलां कैं उपजी मन रली ।।२३७०।।
जैं जैं सबद करैं सब लोग । सगलां का भाग्या मन सोग ।।
राजा पासि खबर तब दई । रांणी सुनि आनंदित भई ।।२३७१।।
छाया नगर हाट बाजार । चरलैं उमही वर नार ।।
रामतणां सोहै अति रूप । भूपति दीनी भेट अनूप ।।२३७२।।
करि महोछव बाजा बजवाय । रहस रली सूं हुवा उछाह ।।
बैठि सिंहासन रामचंद्र । सकल प्रजा मन भयो आनन्द ।।२३७३।।

लक्षमण पृथ्वीधर नृप पास । करैं बधाई मन उल्लास ।।
महासुख में थयो विहांण । और बजै आनंद नीसांण ।।२३७४।।

पूरव भव के पुण्य तैं, पायो सुख अनंत ।।
बनमाला रहसी घणी, देखया लक्षमण कंत ।।२३७५।।

इति श्री पद्मपुराणे लक्षमण पटरानी लाभ विधानकं

३२ वां विधानक

चौपई

अतीवीर्य राजा द्वारा अयोध्या पर आक्रमण

श्री नंदनगर अतिवीरज राव । बायगत दूत प्रथीधर कनैं आय ।।
दिया पत्र राजा के हाथ । विमुख प्रधान पढी सहु बात ।।२३७६।।
विजय सार्दूल बज्रधर भूप । देगरथ सिंहरथ जम के रूप ।।
आठसहस्र मंगल तसु ओर । हय गय रथ पायक नहीं ओर ।।२३७७।।
मिलेछ खंड का राजा घना । आरज खंड का जाय न गिण्यां ।।
वे सब आय एकठा भए । और बहुत आवैंगा नए ।।२३७८।।
चिट्ठी देख चलो ततकाल । अजोध्या मारि चहै भूपाल ।।
भरत सत्रुघन करैं ऊपरि दौड । दस अक्षोहणी दल हुवा इक ठौर ।।२३७९।।
रामचंद्र तबै दूत नैं कहै । अतिवीर्य क्यों उपद्रव चहै ।।
कहा भरत तुम किया बिगार । हमसे कहो बात निरधार ।।२३८०।।

लड़ाई के कारण

बोले दूत भरत के बैंन । अतिवीर्य बैठा सुख चैंन ।।
सहज विचार कियो मनमांहि । भरत भेट मुझ भेजे नांहि ।।२३८१।।
सब राजा मानैं है आंण । भरत सत्रुघन करैं न कांण ।।

दूत द्वारा सन्देश

सुरत बुध्य तिहां भेज्या दूत । अजोध्या मांहि जाय पहुंत ।।२३८२।।
भरत सत्रुघन नैं कही जाय । अतिवीर्य सेवा करो आय ।।
कै तुम देस छोडि कै जाव । भला चाहो तो मो संग आव ।।२३८३।।

शत्रुघ्न का उत्तर

जैसे पड़्या अगन में तेल । सोवत सिंघ जगाया हेल ।।
कोपि सत्रुघ्न बोले वाक्य । अतिवीर्य हूं गो कहा बराक ।।२३८४।।
ताकी सेवा हम जो करैं । ऐसा कहा अपर बल धरैं ।।
उन तो सूतो सिंघ जगायो । वह जीवत छूटै किए पायो ।।२३८५।।

अब वह बचैं हमतें किण भांत । देखउ ताहि लगाऊं हाथ ।।

दूत का पुन: निवेदन

बोलै दूत कोप करि घणां । तुमतो हो बालक बुध्य विनां ।।२३८६।।
अतिवीरज है इन्द्र समान । सकल भूप मानैं तसु आंण ।।
धिला तणीं भोलैं मति भूल । किसकै भोलैं करतां हो फूल ।।२३८७।।
दाल कहै तां काहा तुम चित्त । बहुत गर्भ कहा करते हो चित्त ।।

उत्तर प्रत्युत्तर

सत्रुघन कहै अरे सुण दूत । वाकी करत है सराह बहुत ।।२३८८।।
जैसैं गज रूई का फैल । तिसूगा एक करैं कस खेह ।।
जैसैं घरमाती वैसाख । लोटैं भूकैं ल्यावैं तन राख । २३८६।।
हस्ती की सरभर कहा करै । वह मूरखि जो हम सैं लडै ।।
वाकूं कहि तू वेग संभारि । मारूं मीड मिलाऊं छार ।।२३६०।।
दूत दिया धवका दे काढि । दूत चल्या दत्ता मन बाढ ।।

युद्ध की तैयारी

भूप पास परकास्यो भेद । अतिवीर्य सुणि कीयो मन खेद ।।२३६१।।
देश विदेश के भूपति जोडि । जनक कनक राजा हैं और ।।
वज्जकरण सिंहोदर राय । अजोध्या तैं चाले हरि भाइ ।।२३६२।।
अब वे तुम परि ढोवा करैं । तुमतो घर में निश्चल पडे ।।
अतिवीरज कोप्या तिण बार । बहुत भूपति ने लिए हकार ।।२३६३।।
अतिवीरज सूं जनक तणौं सनबंध । सबही आण जुडे बलवंध ।।
राम लछमण कोप्या केहरी । दसौं दिसा कांपी भय धरी ।।२३६४।।
अतीवीर्य गर्भ मनमांहि । तब लगि नहीं देखें हरि छांह ।।
उनैं भरत सौं बांध्या बैर । अब वे हमकूं मारैं घेर ।।२३६५।।

पृथ्वीधर का निवेदन

पृथ्वीधर विनवै कर जोडि । तुम दोई बीर करहो भोड ।।
वाकैं दल जुडिया अधिकाय । कैसैं जुध करोगे जाय ।।२३६६।।
हम कूं भाग्या वो तुम आजि । अब ही करैं तुमारा काज ।।
बोलैं रामचन्द्र तब बली । पराये बल पूजैं नहीं रली ।।२३६७।।
आपणा बल तौं आवै काम । पराया भरोसा करैं न राम ।।
रथपरि बैठि रामलछमणां । सीता ढिग सुख मानैं घणां ।।२३६८।।

प्रथ्वीधर के आठौं पूत । नंदनगर तैं जाय पहुंत ।।
सीता कहै सुण हो रघुनाथ । किम करौ जुध अतिवीरज साथ ।।२३६६।।
वहैनर्थं दलबल अतिघणां । अतिवीरज किम जावै हणां ।।
वा का तो है अतिवीर नाम । बहुत राय आये उस ठाम ।।२४००।।
जैसा नाम तैसा पराक्रम । अतिवीरज कैं मन आया धरम ।।

भरत शत्रुघ्न को आमंत्रण

भरत सत्रुघन लीया बुलाय । अपणे हेतु करी इकठाय ।।२४०१।।
तबै ईणसौं मांडो जुध । अपनैं हिरदै बिचारो बुध ।।
राम लखन मन हंसि कर इम कहै । अनंत वीरज नाम वह लहै ।।२४०२।।
जे निरबल ते कहै अतिवीरज   मांहरे आगै है अनवीरज ।।
हम हैं अति ही गंहुवा । वाका भय तुम क्यों क्या हूवा ।।२४०३।।
भरत सत्रुघन कुल प्रताप । या परि वह पाय है पाप ।।
जे हम मानैं वाकी संक । कैसे जीतेंगे गढ लंक ।।२४०४।।
जो बल नहीं आपणी भुजा । कहा आणि करि है नर दुजा ।।

भरत की सेना

भरत कै मैंगल सात सै कोर । चौंसठ सहस्र अश्व हैं और ।।२४०५।।
वाकैं दस क्षोहणी दल जुड्या । इस सेती जावै किम लड्या ।।
जे हमपैं जीत्या नहीं जाइ । भरत सत्रुघन करि है कहा आय ।।२४०६।।
जो हम कबहू सुणते नांहि । भरत दूत मारया था जाहि ।।
अतिबीरज सेती जो होती राड । इह उनकौं हणता तिण बार ।।२४०७।।
रघुवंसीया न हूंती लाज । अजोध्या तणौं बूझता राज ।।
हम रावल की जाणी नहीं सार । वाकौ डारैं अब ही मार ।।२४०८।।
औरां नैं काहे कूं हतूं । मारे चाहो सो कद मतो ।।
जब लग दिवस आंथवैं नांहि । अबही चालि मारिये जाय ।।२४०९।।
मतो विचारत हूं गई रात । तब ही समझेंगे परभात ।।
जिन मंदिर में बासा लिया । जिन प्रतिमा का दरसण किया ।।२४१०।।
वृद्धि धरम मुनि कूं नमस्कार । पूजा रचना बारंबार ।।

गणिका का नृत्य

गणिका अखाडै संजूत । करि आई नृत्य बहूत ।।२४११।।
बहुरि गई नृप के दरबार । देखण चले लोक हजार ।।
सकल कला पात्र गुणवंत । नृपकैं आगैं गावैं बहुत ।।२४१२।।

बाजैं बीण मृदंग अर ताल । मृगलोचनी सोहै सुविसाल ॥
दंत नासिका बणे कपोल । मधुर बचन कोकिला बोल ॥२४१३॥

सुघर कलाई सोभैं हाथ । बेणी बणी भुयंगम नाथ ॥
कुच अति कठिन उदर त्रिवली । स्याम केस की सोभा भली ॥२४१४॥

कदली जंघ चरण अति भले । गज गति चाल हंस की चलैं ॥
वा रहै सोलह शृंगार । आई पात्र राज के दुवार ॥२४१५॥

ठाम ठाम आभूषण बणें । अति वीरज राजा तब सुणे ॥
सभा जोडि बैठो नरपति । गावैं गुण कोकिला अति ॥२४१६॥

नृत्य के भाव

नाचे पात्र दिखावे भाव । थेई थेई करतां देखै राव ॥
कबहु लटि छूटैं अर घुलैं । मानौं भौं नाग का चलैं ॥२४१७॥

ज्यौं घटा मांहि दामिनि उद्योत । सरल शरीर कंचन सी जोत ॥
कबहू उछलैं तोडैं तांन । मारैं खैंचि नैंन सर बांण ॥२४१८॥

सभा मोहि ताकरि पायो दांन । वस्त्र कनक लीधा आसमांन ॥
नए गीत गावैं अपछरा । देखण कूं सुरपति मन टल्या ॥२४१९॥

भरत शत्रु जस गुण गावै । अतिवीरज कौं समझावै ॥
तेरा मंत्री बुधि हीण । ताकौं मति दीनी है धीण ॥२४२०॥

भरत शत्रुघन रजपूत । महाबली च्यारू अवधूत ॥
जे तुम चाहो अपनां भाण । भरत भूप की मानूं आंण ॥२४२१॥

वह सूरज सम तुम हो चंद । रवि आगे कला अमंद ॥
ऐसी सुणि कोप्या मन राव । उठी सगली सभा रिसाइ ॥२४२२॥

राजा काढि खडग लियो हाथ । गणिका परि तक मारयो मांथ ॥
टूटी तरवार बची अपछरा । अपणें मन कछु भय नहीं करया ॥२४२३॥

पातरी का उत्तर

पातर बोली सुणि हो नरिंद । भरत ध्यान तैं मो भया आनंद ॥
कटयो नहीं मेरो इकबाल । तेरा खडग टूटा मिटे जंजाल ॥२४२४॥

जबैं भरथ आवैगा आप । होइ सहाइ भरत गुण जाप ॥
सुणि सब लोग अचंभे भया । सबैं विचार उपाया नया ॥२४२५॥

मंत्री तब समझावै बैन । देहि सीख राजा नैं चैन ॥
भरत सुमरण तैं पातर बची । अपणें मन तुम समझो सची ॥२४२६॥

भरत नैं चालि करौ नमस्कार । तौ तुम जीव का होइ उधार ॥
राजा कहै कहां है भरत । ताकी हम आज्ञा सिर धरत । २४२७॥

राम कहैं गणिका सुणि बात । जे तुम चालो मुझ संघात ॥
तिहां आप बैठा श्री राम । लछमण सीता सौं जिण धाम ॥२४२८॥

राजा श्री जिन मंदिर जाय । अष्ट द्रव्य सूं पूज रचाय ॥

सीता के दया भाव होना

धरम मुनि को करि डंडौत । रामचंद्र पग नम्या बहुत ॥२४२६॥

सीता कै मन उपजी दया । लक्षमण स्यौं कही कीजिए मया ॥

अतिवीर्य को अभयदान

रामचंद्र लक्षमण कृपावंत । अतिवीरज सौं बोलें इण मंत ॥२४३०॥

करौ राज तुम निरभै जाइ । अयोध्यापति की आज्ञा पाइ ॥
बहुरि न करौ भरत सुं बैर । अवर देस दीनां तुझ फेर ॥२४३१॥

बोले अतिवीरज भूपाल । राज करत जे व्यापा काल ॥
मरि करि जीव नरक में पडै । ऐसे दुःख नीचो गति भरै ॥२४३२॥

छह खंड तणौं पावै राज । माया अंध विसभां किण काज ॥
अब मैं लह्यौ धरम को मार्ग । अब तक रह्यौ माया में लागि ॥२४३३॥

अतिवीर्य द्वारा वैराग्य लेना

तुम प्रसाद अब भयो सचेत । अब हूं करूं धरम सूं हेत ॥
केसरवज्र सुत नैं दे राज । आपन कियो दिगंबर साज ॥२४३४॥

तीन रतन तेरह विध धरम । दशलक्षण सूं पालैं छह करम ॥
अवधिज्ञान मुनिवर कूं भया । जीव जंतु की पाले दया ॥२४३५॥

नासा दृष्टि आतमाध्यांन । धरम कथा का करैं बखांण ॥
सहै परीस्या बीस अरु दोई । देह मात्र परिग्रह होइ ॥२४३६॥

द्वादस प्रेष्या सुं लाइ चित्त । दया भाव सगलां सौ नित्त ॥
जैसे पिता पुत्र सौं नेह । षट् काया सौं पालैं नेह ॥२४३७॥

दश लछण गुण चक संभार । भावैं सोलह भावन सार ॥
आरत रौद्रध्यांन करि दूर । धरम सकल राखैं भरपूर ॥२४३८॥

भरत सत्रुघन सुणी इह बात । उस पैं दिख्या पालैं किस भांति ॥
अतिवीर्य मांहि अति कोध । इन पाया किसका प्रतिबोध ॥२४३६॥

भरत कहै इम बात समझाइ । सूरवीर व्रत पालैं ग्याइ ॥
कायर पालैं किम चारित्र । पालैं दिष्या सकल पवित्र ॥२४४०॥

दूहा

जैन धरम दुर्लभ घणां, पालैं बडे कुलीन ॥
कायर पालैं केम तप, अग्यांनी मति हीण ॥२४४१॥

अतिबीरज अति ही बली, करी धर्म सों प्रीत ॥
राज रिधि सब छोड करि, भजै श्री अरिहंत ॥२४४२॥

इति श्री पद्मपुराणे अतिबीरज विधानकं

३३ वां विधानक

दूहा

विजय और अतिवीर्यजुत, रामचंद्र के भक्त ॥
पाया राज नंद नगर का, प्रगट्या जस सहु जुक्त ॥२४४३॥

चौपई

विजय राजा का विचार

विजय असफंदन करैं विचार । ग्रैसी वस्तु कहा संसार ॥
राम लछमण नैं दीजे भेट । ग्रैसी कवण वस्तु शुभ होत ॥२४४४॥
रवि दा मात रितुमाला पुत्तरी । अति बीरज सुता रूप गुण भरी ॥
लछमण कूं दीनी तिह बार । बहुत बिनय कीनी मनुहार ॥२४४५॥
चल्या भरत फिर अजोध्या देस । मारग मैं मिल गयो नरेस ॥
विजय असफंदन चरण कुं नया । भरत ताकुं उठि कंठ ल्याइया ॥२४४६॥
कंदर्पमा सुता विजय सुंदरी । भरत निमित्त दीनी घडी ॥

अतिवीर्य की कठोर तपस्या

मानगिर पर्वत ऊपरं आय । अतिबीरज बैठा मुनिराय ॥२४४७॥
करैं तपस्या मन बच काइ । ग्यान लहर उपजैं बहु भाय ॥
तप की तेज देही मैं जोति । मानुं पुन्य शशि उद्योत ॥२४४८॥
भरत शत्रुघन विजय असफंद । गए तिहां अतिवीर्य मुनींद ॥
उतर सिंघासण करैं प्रणाम । सहु परिवार गया तिण ठाम ॥२४४९॥
पर्वत मारग महा कठिन । चढगये नृपति बहुत जतन ॥
मुनि कूं देखि भयो आनंद । बंदे चरण कमल सुख कंद ॥२४५०॥
विनयवंत करि वैयावृत्य । धन्य साध पालैं जे चरित्र ॥
सुणे धरम सब पालिग गये । नमस्कार करि बहु विध नये ॥२४५१॥

आए अजोध्या सुगतैं राज । मनवांछित हुवा सब काज ।।
विजय असफंदन किया विदा । प्रीत रहैगी दहुंमा सदा ।।२४५२।।

पृथ्वीधर कह करो विवाह । राम कहैं हम तो वन जांह ।।
पूरण दिन होसी वनमांहि । तबै व्याह करणें की चाह ।।२४५३।।

वनमाला को छोड़कर आगे बढ़ना

वनमाला नैं लक्षमण कहै । बारह बरस वनमांही रहैं ।।
तुमनैं साथ लें कहां दें दुःख । फिर आवैं तब होवैं सुख ।।२४५४।।

तब वनमाला रोवैं घणी । लक्षमण समभावैं कामणी ।।
हम फिर आवेंगे तुम पास । करो गति मन चित्त उदास ।।२४५५।।

होवैं समकित बिन सूल । मिथ्यादृष्टी मिथ्या मैं भूल ।।
ऐसा हम कुं जो होवैं पाप । जे हम फिर आवैं नहीं आप ।।२४५६।।

आधी राति उठे दोउ भ्रात । सीता ले चाले संघात ।।

सुलोचना नगर

सुलोचना नग्र के वन में गए । अन्न पाणी आंण भोजन किये ।।२४५७।।

जिनमारग ये निकसे आय । देखि रूप सब मोहित थाय ।।
ए अपने मन निर्भय चलैं । देखे देश गांम अति भले ।।२४५८।।

खेमांजलपुर आश्रम लिया । रामचंद्र लक्षमण निय सिया ।।
देस देस के मानस देष । भांति भांति की बोली भेष ।।२४५९।।

रंग रंग के पर्वत घने । नामावली कहां लग गिणे ।।
एक मनुष्य कहै था बात । सत्रुद्रुम की कछु कही न जात ।।२४६०।।

जित पद्मा की प्रतिज्ञा

कनक भाजन की अस्त्री । जित पदमा वाकी पुत्री ।।
राजा पैं कीनी इक टेक । मेरे हाथ की बरछी सहै एक ।।२४६१।।

वाकुं पुत्री देहुं विवाह । करहु मंगलाचार उछाह ।।
ऐसा पृथ्वी पर है कोंण । मरण आपणां चाहै जोण ।।२४६२।।

जो कोई निज तज दे प्राण । कुण विवाहै ऐसी जाण ।।
जीव करह्या तजैं घरबार । जीव समान नहीं संसार ।।२४६३।।
जिह सौंगा तें टूटैं कान । वाकौं पहूंरैं कौण समान ।।
ऐसी भणकरा मैंने सुणी । बाहिर बुला कर पूछी घणी ।।२४६४।।

लछमण राम अचंभा किया । देखैं इह राजा की षिया ।।
ऐसा गुण वामैं है कहा । एता गर्भ मनमें है गहा ।।२४६५।।

लक्ष्मण का जितपदमा के पास जाना

लछमण गया नगर के पार । ऊंचे घर जैसा कैलास ।।
फटिक समान ऊजले वर्ण । जिनमंदिर देखे सुख हुर्ण ।।२४६६।।
लक्षमण पहुंता राज दुवार । पौल्या आय फिरचा सरकार ।।
तुम हो कौण कवण कहां जाव । मो सों बात कहो सत भाव ।।२४६७।।
हम आए नृप दरश निमित्त । देखण कारण हुवा चित्त ।।
पोल्या कहै कुछ उभा रहो । मैं अब जाय राय नें कहो ।।२४६८।।
भूपति प्रतैं कही समझाय । रूपवंत कोई आयो राय ।।
तुम दर्शन कूं ऊभो द्वार । हुकम हुवै तो ल्याउं हकार ।।२४६९।।
राजा पासि लाए बुलाय । लक्षमण राजसभा में जाय ।।
पूछे नरपति तुम हो कोण । किह नगरी सौं कीया गौण ।।२४७०।।
लक्षमण कहै हम भरत के दास । इहै बात सुणी परकास ।।
जितपदमा पुत्री तुम गेह । तुम हती बहुवां की देह ।।२४७१।।
जे प्रतिग्या है तुमारी सांच । तो तुम मुझ बरछी मारो पांच ।।
अचरज करै राय मन माहि । ऐसा धीरज यामें काहि ।।२४७२।।
जो मैं मारूं इस पर घाव । अपजस चढ़ें बुरा व्है नांम ।।

पद्मा द्वारा बरछी के वार करना

लक्षमण कहै कहा करै विचार । वेग पांच बरछी मोहि मार ।।२४७३।।
अगन प्रजलती एक चलाय । लक्षमण ग्रही बीच मां भाइ ।।
दूजी बरछी फैंकी बली । लक्षमण नैं पकडी मन रली ।।२४७४।।

लक्षमण की विजय होना

इण विध चूकी पांचु चोट । पुन्यवंत धरम की ओट ।।
तब राजा लक्षमण कुं नया । जितपदमा दीनी निज धिया ।।२४७५।।
लक्षमण कहै मन में मोहि भ्रात । सीताराम जगत विख्यात ।।
उनकी आग्या ले करों विवाह । मेरा वचन सुणों नरनाह ।।२४७६।।

राजा राणी सहित राम के पास आना

राजा राणी जितपदमा पुत्री । मंगलाचार गीत विध करी ।।
परियण सहित राम पैं चले । बाजा बहुत बजाये भले ।।२४७७।।
उडी धूल आलोच्यो भाव । सीताराम विचारैं घ्यांन ।।
लक्षमण सूं कछु भया विरोध । ऊंचे चढि करि लेहु सोधि ।।२४७८।।

देख्या रहस रली सूं लोग । प्रावत देख्या करण संजोग ।।
सत्रुद्मन आइ चरण कूं नया । जित पदमा सीता पद लया ।।२४७६।।
किये महोत्सव पुर ले गये । पुन्य प्रसाद बहु सुख भये ।।
अधिक आनंद नगर में भया । जित पदमा चित हरख्या थया ।।२४८०।।

सोरठा

पूरब पुन्य पसाय, जिहां तिहां रख्या करै ।।
जीत भई सब ठांइ, रघुबंसीन प्रताप अति ।।२४८१।।

इति श्री पद्मपुराणे जितपद्मा विधानकं

३४ वां विधानक

चौपई

जितपद्मा को छोड़कर आगे चलना

राजा सौंज व्याह की करै । ए चलणे की इच्छा करै ।।
जित पदमा सूं लक्ष्मण कहै । तू अपने मन निरभै रहै ।।२४८२।।
फिर आवं तब करस्यां व्याह । तुम कूं वनमें कहां ले जाहि ।।
जित पदमा के लोयण झरै । नगर लोक बहु विनती करै ।।२४८३।।
लक्षमण राम रहै हम देस । पुंन्यवंत ए बडे नरेस ।।
राणी राय करै अरदास । पूरण सकल मनोरथ आस ।।२४८४।।
अरध रात्रि वन मारग लिया । राम लखण जनक की धिया ।।

राम लक्ष्मण का वंसथल गांव में पहुंचना

देख्यां गांम नगर र नयरी । वंसथलपुर बसती खरी ।।२४८५।।
लोग भागते देखे घणे । तीजे दिन इक कारण बने ।।

पर्वत पर बाजा आदि बजना

परवत पर कोई करै पुकार । ताके भय भाजै संसार ।।२४८६।।
पुरुष छिपै मुहरा मभार । तिहां रहैंगे सांझ सवार ।।
बाजै घणे दमामे ढोल । ज्यौं वह कान पडै नहीं बोल ।।२४८७।।
जो कोई वह सुणै हुंकार । पुरुष नपुंसक होवै तिण बार ।।
कोई सुणि कार तजै पराण । ऐसा दोष अछै तिण थान ।।२४८८।।
सीता सुणि बोली तब बैन । इस पर्वत परि होइ कुचैन ।।
इन लोगां संग तुम भी चलो । भय की ठौर रहै नहीं भलो ।।२४८९।।

राम लछमण तब हंसिइ । मुणों से जसै अलोका स्याह ।।

राम द्वारा विचार करना

दख्यण दिस इक पर्वत ठाम । ताकै श्रवण सुंण डरपैं गांम ।।२४९०।।
सो प्रतष्य हम देख्या आजि । मनवांछित का हुवा काज ।।
गिरवर पर कुंण करै पुकार । ताका डर मानैं संसार ।।२४९१।।
सीता जो तुम डरपो घणी । तुम भी जाहु जहां ए दुणी ।।
रामचंद्र सीता लछमण । परवत चढि देखैं हैं सब बन ।।२४९२।।
रथण भई वन के सब जंत । हस्ती स्यंघ बोलैं दुरदंत ।।
स्याला सबद भयानक लगैं । राम लछमण उस बन में जगैं ।।२४९३।।
बसन उतारि पहर कोपीन । धरै ध्यान ऊभा तप लीन ।।
जैसैं सोहैं कलस सुमेर । असैं सोहत हैं तिण बेर ।।२४९४।।

अजगरों का निकलना

नीलांजन नगर की उणिहार । अजगर निकले तिहां च्यार ।।
दामनी ज्यौं जिह्वा नीकलैं । फुंकारता अगनि पर जलैं ।।२४९५।।
महा भयभीत करैं विचार । उनकैं हैं समकित आधार ।।
बहुत विचारे विलखे भये । पुन्यवंत डर भय नहीं थए ।।२४९६।।
च्यारुं अजगर रूप धरि देव । राम लछमण की कीनी सेव ।।
पुजैं चरण बजावैं बीण । नाचैं गावैं गीत नवीन ।।२४९७।।

देशभूषण कुलभूषण मुनि पर उपसर्ग करना

ता वन में देशभूसण मुनी । कुलभूसण करैं तपस्या घनी ।।
राष्यस आंगण दिखावैं नृत्य । वह अपने मन भय ना कृत्य ।।२४९८।।
उनकौं चाहैं तप से टाल । वह हैं मन वच काया हुसियार ।।
अंधकार घण घटा बनाई । उपसर्ग दिया मुनिवरांतैं धाइ ।।२४९९।।

अडिल्ल

मुनिवर ध्यांन गंभीर चित्त आतम दिया,
हृदय सुमरि नवकार ध्यान निर्मल किया ।।
आरत रौद्र निवार धरम सुकल गह्या,
ऐसा सुभट मुनिराज कष्ट बहुला सह्या ।।२५००।।

चौपई

राम लछमण का मुनि के पास आना

लछमण राम सीता सब चल्या । वज्रावर्त्त धनुष संभाल्या भला ।।
साधां नैं क्यूं देहै दुःख । तिनर भाज्या उपज्यो सुख ।।२५०१।।

दोऊ मुनिवर नैं केवलग्यांन । जय जयकार करैं सुर आन ।।
पूछैं राम हाँथ कर जोर । नील वंध किम पिछली ओर ।।२५०२।।
कारण कवरण उपद्रव किया । वितर किम तुम कूं दुख दिया ।।

व्यन्तरों के पूर्व भव

बोलैं मुनिवर पूर्व भव भाव । पद्मनी नगर विजयगिर राव ।।२५०३।।
पट्टरांणी नामैं धारणी । भोग भुगति रति मांनैं घणी ।।
अमृतस्वरित राजा का दूत । उपयोगा स्त्री उदित पूत ।।२५०४।।
मुदित नाम का दूजा पूत । वसुभूत विप्र मित्र बहुत ।।
उपयोगा विप्र पाप की रीत । अमृतस्वरि तैं रहैं भय भीत ।।२५०५।।
पर्वतभूत मंत्रीय बुलाय । अमृतस्वर कहीं दिया पठाय ।।
वसुभूति विप्र कूं लीया साथ । विप्र षडग लीयौ निज हाथ ।।२५०६।।
अमृतस्वरित कौं तिहां मारि । आय कही उपयोगा नैं सार ।।
वे दोनुं मन रहसे घणे । डांव पड़ैं दोन्युं सुत हणें ।।२५०७।।
वां दोन्यां वीर सुणी इह बात । इण भामण मारया तुम तात ।।
अब तुम कूं मारैगा आइ । सावधाण रहज्यो इण ठाइ ।।२५०८।।
इक दिन सोवैं था दोउ भ्रात । मारण आया द्विज अधरात ।।
उदित नैं मारी तरवार । वसुभूत मारया तिण बार ।।२५०९।।
विप्रजीव म्लेच्छ अवतार । खोटी ज्यौंन भ्रम्यो संसार ।।

मतिवर्धन मुनि का आगमन

मतिवरधन मुनिवर मुनी । अनधरा आरज का ग्यानी गुनी ।।२५१०।।
वसंत तिलक वनमें तैं आय । छह रितु फूल फले वन राय ।।
सूका तरवर हूवा हरया । जलहर सकल नीर सुं भरया ।।२५११।।
माली गया राय के पास । कही वीनती सहु सब भासि ।।
राजा सहु परिवार हकार । हाथी चढि चाल्यौ नरनार ।।२५१२।।
नगर लोक चाल्यो नृप संग । पहरि तनै आभरण सुरंग ।।
वन के निकट राय जब गया । गजते उतरि भूमि पग दिया ।।२५१३।।

मुनि की तपस्या

मतिवरधन मुनि के संग घने । वे ठाडे ध्यांन मांहि आपणे ।।
कोई पदमासन तप करैं । तीन रतन हिरदै में धरैं ।।२५१४।।
राजा अस्तुति करि दंडोत । दरसन देखि सुख भया बहुत ।।
नरपति कहैं सुणों मुनिराय । तुमारी है राजा सी काय ।।२५१५।।

तुम काहे कुं लीया जोग । छांडे सकल राज के भोग ।।
बोले मुनिवर सुणौं विचार । राजभोग तिहां थिर न संसार ।।२५१६।।

सुभ अरु असुभ करम परभाव । भ्रमैं जीव पावैं नहीं पार ।।
सुपना का सा है सब सुख । बहुर लहैं नरक का दुख ।।२५१७।।

इन ऊपरैं निगोदरी वास । जनम मरण नहीं टूटी आस ।।
दिष्या नैं पावैं सिव आस । निरभै लाभै भोग विलास ।।२५१८।।

दरसन ग्यांन बलवीर्ज अनंत । सासय सुख लहै बहु भंत ।।
विजय परबत सुणि दिष्या लई । राज विभूत पुत्र कौं दई ।।२५१९।।

उदित मुदित द्वारा वैराग्य लेना

उदित मुदित उपज्यौ वैराग । भये दिगंबर घर सब त्याग ।।
सम्मेद सिखर की मनसा करी । गुरु आग्या लीनी तिहुं घरी ।।२५२०।।

वन मे गए भील की पुरी । मग नहीं लहै तिहां स्थिति नरी ।।
साधैं जोग धरम के काज । ग्यांन अंकुस सें मन गज राज ।।२५२१।।

पंचइन्द्री की रोकैं चाल । मोह करम की तोडैं माल ।।

म्लेच्छों द्वारा उपद्रव

मलेच्छ आय तब कीनी बुरी । साध हतण की इच्छा करी ।।२५२२।।

उदित कहै मुदित सौं बात । म्लेच्छ आवैं है घालण घात ।।
हमकूं मारयां चाहैं आइ । तुम राखो दिढ मन बच काय ।।२५२३।।

अपनुं चित्त राखज्यो ठौर । टूटैं जनम मरण की डोर ।।
उन मत्यं उपसर्ग निमित्त । पापी पाप विचारयो चित्त ।।२५२४।।

पहुंच्या तिहां भील का राज । दोन्युं मुनिवर लिये छुडाय ।।
तिन म्लेच्छा नैं मारया बांध । तोनें क्युं दुःख दिया साध ।।२५२५।।

पूछैं राम राय की कथा । बाके भव भाषो सरवथा ।।
भरत नगर तिहां दोइ किसाण । सुरपक करपल्लव जांनि ।।२५२६।।

सुकतवाल कहारिया चोर । तिण किसाण छुडाया तिण ठौर ।।
उन बालक जब बुधि सभारि । तप करि उपज्यो राजकुमार ।।२५२७।।

सब मलेछुं का हुवा राय । करै राज सोभा अधिकाय ।।
सुरपक करपल्लव भरम जाणि । तप कर उदित भए यहां आन ।।२५२८।।

पूरब जनम दिया अभय दान । ता सनबध छुडाये इस थान ।।
म्लेच्छां को दीनी अति मार । मरि करि पहुंच्या नरक मझार ।।२५२९।।

दोऊ भेष उदर पूरणा भई । संन्यासी पै दिक्ष्या लई ॥
पंच अगनि साधी बहुभांति । मरकरि भया देव की जात ॥२५३०॥
अगनि केतु नाम तसु भया । उदित मुदित समेदगिर गया ॥

उदित मुदित द्वारा निर्वाण प्राप्ति

समाधि मरण करि छूटे प्राण । पाया स्वर्ग मे देव विमांण ॥२५३१॥
अरिष्ट नगरी प्रिय वन भूप । कंचन नाम्। नारि अनूप ॥
दूजी पदमावती अस्तरी । रूपवंत लष्यण गुणभरी ॥२५३२॥
दोऊ देव चये अंत आय । पदमावती गर्भ भए आय ॥
प्रथम रत्नरथ चित्ररथ और । रूपवंत सोहै तिण ठौर ॥२५३३॥
आभा और अगनिकेत पुत्त । अनरथ नाम रूप बहुत ॥
राजा सुण्यु धरम व्याख्यान । छह दिन आव रही परमांन ॥२५३४॥
राज भार पुत्र ने दिया । आपण भेष दिगंबर लिया ।
रत्नरथ श्रीप्रभा सौं व्याह । राजभोग में करै उछाह ॥२५३५॥

अनरथ राजा का मान भंग एवं वैराग्य

अनरथ करै राय सौं बैर । मांगै राज प्रथी का खैर ॥
चित्ररथ मंत्री सौं मत्र विचार । सेना जोड कीए जुध भार ॥२५३६॥
मान भंग अनरथ का होय । भये संन्यासी ध्यान वियोग ॥
काय कष्ट सु साधै जोग । छोडे सब संसारी भोग ॥२५३७॥
रत्नरथ चित्ररथ मुनिवर पै गये । साभलि धरम जतीसुर भये ॥
ईसान स्वर्ग में हुवे देव । सुर बहु करैं तिना की सेव ॥२५३८॥

देसभूषण कुलभूषण का जन्म

सिद्धरत्नपुर क्षेमकरण नरेस । विमलाराणी पतिव्रता भेष ॥
ताके गर्भ स्वर्ग तैं चई । देसभूषण कुलभूषण भई ॥२५३९॥
सागरघोष भूप की साल । विद्यापढि दोउ भए गुणाल ॥
पनरह विद्या बहत्तर कला । सर्वविद्या सीखी गुण भला ॥२५४०॥
विप्रसाथ दोऊ शिष्य ले जाय । सुत गुण देख आनंद्यो राइ ॥
सागरघोष बहु पायो दान । क्षेमंकर कीयो सनमांन ॥२५४१॥
नरपति ऐसा करै विचार । जोवनवंत भयो सु कुमार ॥
रूपवंत नृप की कोइ सुता । ताहि गरभि कांई कीजे मता ॥२५४२॥
उहै भूपति को जांचै जाइ । ऐसी बात विचारै राय ॥

वनक्रीडा

दोऊ कुंवर वनक्रीडा चले । हय गय रथ पायक बहु भले ॥२५४३॥

रथ परि बैठा दोन्यु वीर । रूपलक्षण करि दिपै सरीर ।।
कमलोत्सवा झरोखे द्वार । बैठी नयन आभरण संवार ।।२५४४।।

देसभूषण कुलभूषण देखि । यासौं कहुं विवाह विसेष ।।
ये दोन्यु आपस में जिद । नारि रूप हिया में निंद । २५४५।।

उततैं भाट आवता मिल्या । आसीर्वाद दीया उन भला ।।
क्षेमंकर के कुल आनंद । विमला उदर भए मुनिचंद ।।२५४६।।

चिरंजीव ह्वै ज्यो तुम सदा । इनका सुजस बखांणै मुदा ।।

कमलोत्सवा का विचार

कमलोत्सवा इनकुं देखिया । धन्य वह जिनके दोउ भया ।।२५४७।।

ऐसी सुणी जबै इन बात । सोच करैं मनमैं दोउ भ्रात ।।
सराह्या इन मैया की ठौर । हम मनमैं आणी थी और ।।२५४८।।

जे इह अनि राखती भाव । तोऊ न कहती बहिन का भाव ।।
हम तो चित मां आण्या था पाप । क्यूं उतरैगा इह संताप ।।२५४९।।

मन ही मन में बांधे करम । ज्ञानवंत किम करै अधरम ।।
धिग् यह जनम धिग् संसार । विषय भाव में रह्यौ अंधियार ।।२५५०।।
अब किण विध मिटे सौ अपराध । करैं तपस्या मन वच साध ।।

दोनों भाइयों के वैराग्य भाव

फिर आये जहां माता पिता । वैराग तणां करि दोन्युं मता ।।२५५१।।

कहै कि हय तुम इह सनबंध । इन्द्रिय विषय पाप का बंध ।।
अब तुम हम कूं आग्या देई । तो हम मुनि पासैं व्रत लेहि ।।२५५२।।

माता पिता द्वारा संताप

दंपति सुनि मुरछा गति आइ । पुत्रां प्रतैं कही समझाय ।।
तुमारा न देख्या मंगलाचार । तुम दोनौं बालक सुकुमार ।।२५५३।।
करो राज तुम भुगतो सुख । कारज विन कवण सहो ए दुःख ।।
चतुर्थ आश्रम दिख्या जोग । अब भुगतो संसारी भोग ।।२५५४।।

कुमारों का उत्तर एवं वैराग्य लेना

बोले कुंवर संसार असार । व्यापत काल न लागैं बार ।।
बाल वृद्ध सगला नै खाय । काहु की करुणा न कराइ ।।२५५५।।

आग्या ले मुनिवर पैं गये । लुंचे केस दिगंबर भए ।।
बारह तप तेरह चारित्र । अठाईस मूल गुण है पवित्र ।।२५५६।।

तीन रतन पालैं धरि भाव । साधैं तप या विध इण ठांम ।।
अनरथ कैन्यां कौमुदी नम । सुम राजा जा की बल अग्र ।।२५५७।।
रतिवंती राणी सम्यक् दिष्ट । ग्यांन क्रिया में अधिक श्रेष्ठ ।।
राय सुणीया ऐसा महंत । दरसन कारण चल्या तुरंत ।।२५५८।।
अैसे तपसी करिए सेव । राणी निंदा करैं अछेव ।।
बाद भयो राणी अन राव । समभैं केम सुभासुभ भाव ।।२५५९।।
साधुदत्त मुनि के उपदेश । राणी मांड्यो वाद नरेस ।।

नागदत्ता का अनरथ तपस्वी के पास जाना

नागदत्ता कन्या सुं कही । अनरथ पासि जाहु तुं सही ।।२५६०।।
सारे दिन रहियो वन मांहि । तपसी पास जाइयो सांझ ।।
जब वह चुकै आपणा ध्यांन । वाकुं त्याज्यो कणिका थान ।।२५६१।।
पुत्री गई जहां अनरथ । लाग्या ध्यान आतम के मध्य ।।
कंन्या की पाई तबैं बास । अनरथ कहै फसी मन प्रास ।।२५६२।।
मैं तो बहु प्रकार तप किया । अपछर यह फल पाइया ।।
तब कन्या तापस ने कहैं । मेरी माता मनोहर रहै ।।२५६३।।
तू पूत्री अपनी वर बूढोल । अब तुम चलो मोहि घर गल ।।
तुम चरणन की सेवा करूं । तुम साथै तप व्रत आदरूं ।।२५६४।।
तब तापस आइया पास । कन्या बोली वचन प्रकास ।।
अब तुम चलो माता के पास । मोकूं देसी तुरत निकास ।।२५६५।।

तपस्वी का कन्या के साथ जाना

तपसी चाल्यो कन्या संग । जिम भाजी जिम व्याध्र कुरंग ।।
तिहां सुमुख राजा जा छिप्या । वेस्या के घर आया तपा ।।२५६६।।
वेस्या दई अपणी पुत्तरी । भोग भुगत मानैं तिह घडी ।।

दुर्गन्ती होना

राजा तबैं बांध्या तापसी । पनिया सौं पीट्यो करि हंसी ।।२५६७।।
राख्यो राति पाइगा बीच । मूत लाद की मांडी कीच ।।
प्रभात भये बुलायो तुरंत । मुंड मुंडाय कै पाछगा बहुभंत ।।२५६८।।
गादह चढाइ फिराया देस । अैसा किया तपा का भेस ।।
मरि करि भुगती सातो नर्क । ऐसैं सहै भव भव उपसर्ग ।।२५६९।।
अंत भया बांभण का पूत । संन्यासी हूं तप करै बहुभंत ।।
ज्योतिग पटल देवता भए । वा सनबंध हमनैं दुख दए ।।२५७०।।

अनन्तवीर्य मुनि के पास देवों का आना

इक दिन चतुरनिकाया देव । अनंतवीर्य दर्शन कु सेव ॥
तिहां इन्द्र नें पूछी बात । मुनिसुव्रत उपजे जिननाथ ॥२५७१॥
उन पीछे कवण होइ केवली । देसभूषण कुलभूषण कथा चली ॥

दोनों मुनियों के केवलज्ञान होना

उनकूं उपजै केवलज्ञान । उन प्रभु देव विचारया ध्यान ॥२५७२॥

पूरब भव का जाण्यां भेव । आया उपसर्ग कीया गहेव ॥
षेमंकर अर विमला माय । ले संन्यास तजी निज काय ॥२५७३॥

पहुंचे सौधर्म स्वर्ग विमांण । उपसर्ग देख आए इस ठांण ॥
महालोचन षेमंकर जीव । आया मोह करम की नींव ॥२५७४॥

हम घातिया कर्म सहू टाल । माया मोह का तोड्या जाल ॥
केवलग्यांन उपज्या इस घडी । सुर नर सहू मिलि सेवा करी ॥२५७५॥

दूहा

रवि प्रताप जग में तपै, ग्यानी ज्योति अनंत ॥
सुगत भेद संसय मिटै, सुख पावैं बहु भंत ॥२५७६॥

इति श्री पद्मपुराणे देसभूषण कुलभूषण केवलज्ञान विधानकं

३५ वां विधानक

चौपई

सूरप्रभ राजा द्वारा राम का स्वागत

सूरप्रभ वंसस्थल को राई । वंसगिरि सोभै बहु भाई ॥
बारह सभा सुणें तहां धरम । रामलखण को पायो मर्म ॥२५७७॥

भूपति सकल वर्णन कुं गए । दरसन पाइ कृतारथ भए ॥
नारायण बल अष्टम अवतार । सुमरयां हुवै जीव आधार ॥२५७८॥

सुप्रभराय गयंद सवार । पंचवर्ण कीने इकसार ॥
कियो महोछव आण्यो गेह । दीपैं यह कंचन मय देह ॥२५७९॥

फिरै छत्र सिर ढारैं चंवर । बिछे कुसुम सब भारिग ठौर ॥
बहु पकवान मिठाई घनी । बहुत भांति की रसवती बणी ॥२५८०॥

भात दाल तरकारी घृत । रस गोरस दौनां भरि घर्त ॥
रतनतबाई कंचन थाल । चौकी जडत बहु मोती लाल ॥२५८१॥

सुवर्ण भारी अमृत नीर । जीमैं राम लक्ष्मण दोउ वीर ।।
सीतां नें लीयौ आहार । दई मुख सोधि बहु पान संवार ।।२५८२।।

अरगजा घाल्या बास गंभीर । जातैं उपजै सुख सरीर ।।
लक्ष्मण राम बंस गिर चले । वनक्रीडा देखत मन रले ।।२५८३।।

चैत्यालय देखें बहु भाइ । रतन बिंब जीमों जिनराय ।।
कहीं कंचन के देहुरे । कहीं पाषाण लगाये खरे ।।२५८४।।

करें प्रतिष्ठा पूजा दान । सकल भूपती मानैं आंण ।।
रामचंद्र लक्ष्मण सों कहै । बणै नहीं जो हम एहां रहैं ।।२५८५।।

लोग करें हमरी सब सेव । भरथ सीव सौं रहिये छेव ।।
कैसे रहिये भरथ की ठौर । रहैं जहां तहां लखैं न और ।।२५८६ ।

सतवादी श्री रामचंद्र, लक्षमण चित्त विवेक ।।
बंसगिरि तजि आगैं चले, धारि धरम की टेक ।।२५८७।।

चौपई

राम का आगे गमन

राम गिरि छांडि वनमारग चले । बहु प्रकार तरु देखे भले ।।
अगले वन सब देखे सघन । मनुष्य न दीसैं मारिग कठिन ।।२५८८।।

निस वासर तिहां एक समान । सघन वृक्ष दीसैं तिहां भान ।।
सारे दिन चलिया कोस एक । गिरि कंदरा में रह्या टेक ।।२५८६।।

वनफल बीण करें आहार । पहुंचे करण रेवा तट पार ।।
उत्तम वृक्ष लागे फल फूल । सीतल पवन जाय दुख भूल २५६०।।

तिहां जाय रामचंदर रहैं । वनफल आणि अन्य न चहैं ।।

वन जीवन काल

बासण मोटा तिहां संवार । रसवंती करै सीता तिण बार ।।२५६१।।

पानन की पातल लैं बणाइ । सुरही धेनु का दुग्ध मंगाइ ।।
नारिकेल के तंदुल अनूप । दाडिम दाख सुख स्वरूप ।।२५६२।।

चारोली पिस्ता बिदाम । ए बसता खाइ करै आराम ।।

राम द्वारा चारण मुनियों को अहार देना

चारण मुनि सीतां दृष्टि देखि । मास उपवासी दिगंबर भेष ।।२५६३।।

रामचंद्र ने सीता कहै । उठो वेगि पडगाहो गहैं ।।
दोउ मुनिवर ने देय अहार । रामचंद्र उठियो तिणबार ।।२५६४।।

नमस्कार करि पूजे चरण । मुनि दर्शन भव पातिग हरणं ॥
वैयाव्रत करि दीयो दान । विधि सेती कीयो सनमान ॥२५९५॥

मुनिवर कौं दीनी मुखसोधि । अगैदान बोले प्रति बोधि ॥
पुहुप रतन बरषे तब घणे । सुर नर सब जै जै कुं भणे ॥२५९६॥

गृद्ध की कथा

गृध्र एक बैठा तरु डाल । भव सुमरण उपज्यो ततकाल ॥
केइ बेर लही मानस देह । धरमध्यान सुं धरयो न सनेह ॥२५९७॥

अकारथ खोयो सब जन्म । नटवत भेष करे सब कर्म ॥
मानुष होय कबहु पुन्य न कियो । शास्त्र सुणन को चित न दियो ॥२५९८॥

मुनिवर को नहीं दियो अहार । धरयो नहीं व्रत संजम भार ॥
पंखी भयो नित आमिष भख्यो । अब मैं कैसे अलेषं लिख्यो ॥२५९९॥

चरणोदक मुनिवर का पिया । ऐसा ग्यांन गृद्ध को भया ॥
गपीन तैं कहा संयम पलैं । मुनिवर चरणां में चित मिलैं ॥२६००॥
जटारज्ञा सम पंछी वर्ण । [illegible] कहुं न हरें ॥
रामचंद्र पूछैं विरतान्त । सुगुरु पंनि गुपनि भाषैं बात ॥२६०१॥

जनपद करण नाम तिहां देस । बहुत नग्र ग्राम बहु वेस ॥
कैई गिरिपर कैई तलैं । कैई बसैं नदी तट तलैं ॥२६०२॥

कैई निबसैं महा उद्यान । कैई निकट नगर के थांन ॥
करण कुंडल का दंडक भूप । अरवकरणी राणी सरवरूप ॥२६०३॥
प्रबस्य सौं राजा आसक्त । भई रयण करिवा चाहथी रित ॥
मारग में मुनि ध्यानारूढ । सर्प एक मंगायो नृप दूढ ॥२६०४॥

मुनि पर उपसर्ग

कीड़ी चढ़ी साध की देह । परिखस्य कौं गयो भूपति गेह ॥
मुनिवर तबैं मांड्यो संन्यास । वाके देह तणी नहीं आस ॥२६०५॥

विसहर मृतग चुबै गरल । अैसो अहि घाल्यो मुनि गल ॥
जो कोई जाय उतारै सांप । तब वह वासो करै संताप ॥२६०६॥

अन्य देश का भूपति आई । देख्यो सर्प मुनिवर की काई ॥
अस्व तैं उतरि मुनीसर पठतारि । राजा ये कीया नमस्कार ॥२६०७॥

उत्तम वस्त्र सौं पूंछियो सरीर । वैयावृत करि मेटी पीर ॥
गयो भूप उपसर्ग निवार । दंडक फिर आयो तिण बार ॥२६०८॥

बोलैं किणउं उसारयौ सांप । उतारया अनहीं राजा आप ।।
चढ़ै कोप कहै केलूं भांन । साधां नैं पीडूं इस थान ।।२६०६।।

मुनि के चारों ओर अग्नि जलाना

फिर बोल्या वाडा चहुं फेर । काठ संवारो बहु तिहां घेर ।।
काहू कूं निकलण मत थोह । दावानल माहीं कीयो द्योह ।।२६१०।।
पापी दुष्ट विचारी बुरी । आई नरक जाणे की घडी ।।
च्यारों तरफ लगायी आग । मुनिवर ध्यान निरंजन लाग ।।२६११।।
लग्या झील देही सब जरैं । मुनिवर नहीं ध्यान तैं टरैं ।।
पावकध्वज भवन को देव । अगनि बुझाइ करी मुनि सेव ।।२६१२।।

वाही अगनि देही सब जाल । सकल प्रथी बल हुई लाल ।।
दाभे जीव जन्तु सब मुये । राजा नरक सातवीं गये ।।२६१३।।
भरम्यो लख चौरासी जौनि । अब ए पुत्र भए करि गौंन ।।
हमारा भव देख्यो परतक्ष । वानारसी नग्र रहै तिहां रक्ष ।।२६१४।।

अचलराय एवं गिरदेवी द्वारा मुनि को आहार देना

अचलराय गिरदेवी अस्तरी । रूप लक्षण गुण सोहैं धरी ।।
त्रिगुप्ति मुनिन कूं दियो आहार । दिखाया आपणां हाथ पसार ।।२६१५।।

मेरे संतति होय कि नांहि । भाषो मोहि जिम मिटैं दाह ।।
मुनि बोल्या होसी सुत दोइ । सुगुपति गुपति तेरे गरभ होय ।।२६१६।।
सोमप्रभ प्रोहित है राय । सोमिला स्त्री गर्भ के भाय ।।

सुकेत और अग्निकेतु द्वारा दीक्षा लेना

प्रथम सुकेत अनैं अगनिकेतु । दोनूं वीर हैं बहु हेत । २६१७।।
सुकेत अनंतवीर्य मुनि पास । दिक्षा लही सुगति की आस ।।
अगनिकेतु संन्यासी भया । पंचअगनि साधी तप किया ।।२६१८।।

सुकेतु विचारैं असा ध्यान । अगनि केतु तप करैं अग्यांन ।।
काय कलेसस्यौं दहै सरीर । अन्य जीव किन आवै पीर ।।२६१९।।

सूक्षम बादर विराधै प्रान । अणगालैं जल करैं असनांन ।।
वा कूं परमो भूमैं जाय । गुरु सूं आज्ञा मांगी आय ।।२६२०।।

अनंतवीर्य सुकेत सूं कहैं । अगनिकेत मन मिथ्या गहै ।।
तुम्हारा मांनैगा नहीं बैन । अग्यानी किम समझै सैन ।।२६२१।।
क्रोध मान माया का धणी । जैन धर्म सोंडा की अणी ।।
रागदोष ताकै मन बसैं । संयम क्रिया नहीं उल्हसैं ।।२६२२।।

वह तो समभैंगा इस भांति । तोथ्यु हम समभावें बात ॥
प्रकर महाजन सुघरा तिरी । वाकैं साथ तीन अवर तिरी ॥२६२३॥

आवैगा गंगा जल भरण । तीन दिन पाछैं उसका मरण ॥
पावैगी भूंडा अवतार । बीजे भव महिषी अवधार ॥२६२४॥

उहां तैं भी मरि विलास के ग्रेह । जा कंवर नाम सुती हुइ एह ॥
जती सुकेत भ्राता पैं गया । दोन्यां सूं तिहां मेला भया ॥२६२५॥

वाही समैं रुघराजव आइ । तबैं सुकेत बोलैं मुनिराय ॥
अगनिकेत नैं पूछै ग्यांन । कहो कछु आगम व्याख्यान ॥२६२६॥

इस कन्यां का क्या होइ लिखंत । तो मैं जाणुं तु महंत ॥
अगनिकेत कहै तुम भणो । तुमारा ग्यान सही मई गिणो ॥२६२७॥

कन्या का भविष्य

सुकेत कहैं [illegible] इह मरैं । तीजे दिन [illegible] को नहिं टरैं ॥
भेड भैंस गति हूँ भी सुता । विसाल देह रूप की लता ॥२६२८॥

जबैं कन्या होइ जोबनवंत । प्रवर विलास मामा सु कहंत ॥
इह कन्या मोकुं तुम देह । भाणजी जाणि कही उण लेहु ॥२६२९॥

व्याहण आया मामा द्वार । अगनिकेत आयो तिण बार ॥
है संन्यासी प्रवार सुं भाषा । इह तो सुता तेरी इह आया ॥२६३०॥

तू कहा ऐसा हुआ अग्यांन । बेटी ब्याहन कुं ओढी जान ॥
ऐसी कथा कन्या नैं सुणी । उपजी अवधि भव सुमरणी ॥२६३१॥

कन्या द्वारा वैराग्य के भाव

धिग् धिग् भाई मोहनी करम । ऐसैं जीव भ्रमैं है मर्म ॥
इह अचिरज सब लोग्यां सुण्यां । भया वैराग सबही मण्यां ॥२६३२॥

अनंतवीरज मुनिवर ढिग गया । दिख्या लई करि मन वच कया ॥
रामचंद्र सीता नैं सुणीं । अवर वह वृद्ध वीनती भणीं ॥२६३३॥

अचल राजा गुपति सुगुपति । अगनिकेत लह्या समकित ॥
प्रवर अवर मामा विलास । विधरा नाम और कन्यां तास ॥२६३४॥

धरम मारग तुम मोसु कहौं । तुम प्रसादैं गति उत्तम लहौं ॥
रात्रि भोजन हिंस्या ग्रत्त । अइसी रीत वह पंथी धरत ॥२६३५॥

मुनिवर गए आपणें थांन । सिख्याव्रत भविजन मांन ॥
लक्ष्मण नैं हस्ती वस्य कीया । ऊपरि ताके चढि आइया ॥२६३६॥

पुष्पवृष्टी देखैं तिहां वेर । जटा पंखी देख्या तिण वेर ।।
रामचंद सूं पंखी कथा । प्रभु नें कह्या भेद सरवथा ।।२६३७।।

धन्य साध जे तारी तरैं । बेर बेर सब अस्तुति करैं ।।
संसय मिटया गया संदेह । दया धरम सूं धरयो सनेह ।।२६३८।।

सोरठा

नर देही निध पाय, दांन सुपात्रां दीजिये ।
सुरग तणां सुख थाय, अंत मोक्ष पद पावही ।।२६३९।।

इति श्री पद्मपुराणे रामचन्द्र सुपात्र दांन जटापंखी विधानकं
३६ वां विधानक

चौपई

राम का आगे गमन

अगें चलेण की इछा करी । करन रेवा नदी बहै तिहां खरी ।।
नाव बिना किम होजे पार । असा तिण ठां करैं विचार ।।२६४०।।

नहर मांहि सतें साह एक । ताकी सोभा बणी अनेक ।।
अंबी कलस मुगताहल घणे । रतन जोति सूरज सम बणे ।।२६४१।।

सिंहासण परिवमत अनेक । मज्या मोहै अधिक विवेक ।।
चंदवा चंदन अरगजा और । बहुत जुगति राखी तिण ठौर ।।२६४२।।

बाजा बाजैं ताके पास । उसपरि चढि चाले बनवास ।।
पार उतर देखै बहु देस । बन बेहड अति परवत वेस ।।२६४३।।

रंग रंग के गिर पाषांन । उत्तम ठौर रहै मन मांन ।।
कहिं झरैं पर्वत तैं नीर । कहीं नदी निकसी तिहं तीर ।।२६४४।।

दंडक वन में पहुंचना

दंडक बन में पहुंचे जाय । बहुत पुष्प फूली बनराइ ।।
सोहै बन सुगंध अति वास । देखत उपजै चित्त उलास ।।२६४५।।

अडिल्ल

वन की शोभा

वेलि चंबेली जातिक चंपा केवडा ।
बने सरोवर कमल नीर निरमल भरया ।।
भ्रमर करैं गुंजार सुसब्द सुहावणे ।
फूले फूल अनंत कवल कव लग गिणे ।।२६४६।।

नारिकेल खर्जूर अंब अनौ आमली ।
नींबु सदाफल बेर सेव कहूजे भली ।।
बड पीपल अरु महुवा छांह सीतल जिहां ।
सकल जाति के रूंख देखि बहु सुख लहा ।।२६४७।।

केसरी अगर सुबास पुष्प चंदन घणे ।।
दाख चिरूंजी अवर पेड पाडल भणे ।।
पुंगी ब्रक्ष उतंग जायफल के बणे ।
धांन तणे बहु खेति तिहां सुंदर भणे ।।२६४८।।

चौपई

कहि हंसने कहां चकोर । बोलैं सब्द सुहावन मोर ।।
कहैं तीतर कहैं लवं कपोत । सारस बग बतक बहोत ।।२६४९।।

धूधू कवुआ गिरध बटेर । सूवा सारो पंषी बहु हेर ।।
जैं जैं सबद करैं चिहुं वोर । राम नाम सुमरण का सोर ।।२६५०।।

दंडक पर्बत तिहां उतंग । गुफा में रहैं सिघ उमंग ।।
कहुं चीता कहि सारंग रीछ । सांभर सूकर गैंडा हींछ ।।२६५१।।

आरणां भैंसा सुरही गाय । पसु जाति सगला तिह ठांइ ।।
सरवर माहिं कमला का फूल । चलैं पवन अति सुख का मूल ।।२६५२।।

चलै समीर तिहां गंभीर । गावै सगला सुख सरीर ।।
सबल बृक्ष हालैं पात । भयो आनंद वन मैं बहु भांति ।।२६५३।।

क्रीडा करैं हंस वन मांहि । झरणा झरैं तिहां सीतल छांह ।।
हरषे सकल दिवस धन्य आजि । रामचंद्र आए वन मांझि ।।२६५४।।
वन सोभा देखैं अति भली । राति दिवस देखैं मन रली ।।
रंग रंग के दिपैं पाखांन । दमकैं किरण उद्योत है भान ।।२६५५।।
फिटक सिला की जोति अनूप । सब ठां सोहै महा स्वरूप ।।

दंडक वन की शोभा

ता तलि करावरन बहै । महा अगनि उज्जल जल रहै ।।२६५६।।

परवत की झांई जलमांहि । भये वृक्ष तहां सीतल छांह ।।
स्वर्ग सूर ससी उडगण घणे । जल मैं दीसैं अति सोभा वणे ।।२६५७।।

रामचंद्र लछमण अर सीया । जटा पंषी निज कर पर लीया ।।
करि सनान जल क्रीडा करी । नीर उछालैं अंजुल भरी ।।२६५८।।

वे सुख किए पर चरणें जाइ । विदग्ध नगर बसै तिरण ठांइ ।।
बरषा रुति का प्रागमन भया । तहां प्रभु ने बासा लिया ।।२६५६।।

दंडक बन अति उत्तम ठोडि । तिहां रघुपति त्रिभुवन सिरमोड ।।
पंचवरण बादल आकास । बरषै मेह अधिक सुखरासि ।।२६६०।।

पर्वत तैं उतरैं जल भोमि । काली घटा रही अति झूमि ।।
दामिन जोति पृथ्वी पर होइ । दंपति रहसि करैं सब कोइ ।।२६६१।।

दूहा

दंडक बन बासा लिया प्रगटयो तिहां चउमास ।।
रामचंद त्रिभुवन धणी, मन मैं धरैं उल्हास ।।२६६२।।

इति श्री पद्मपुराणे रामचंद्र दंडक बन निवास विधानकं
२७ वां विधानक

लक्ष्मण को सुगन्ध आना

लक्ष्मण बन कोडा को जाइ । बहुत सुगंध उठी तिण ठांय ।।
लक्ष्मण मनमें करैं विचार । इह सुगंध कमी प्रकार ।।२६६३।।
ऐसी कहीं देखी न सुणी । इह सुगन्ध बन में घणी ।।
कैं इह मम सरीर की बास । कै इह रामचंद्र की सुवास ।।२६६४।।
लषमण सोचै बारंबार । इस विध बास नहीं संसार ।।
इहां श्रेणिक पूछै कर जोडि । श्री जिन भाषैं कथा बहोडि ।।२६६५।।

पूर्व कथा

ऐसी है किसकी सुवास । नारायण जु सराही तास ।।
श्री जिन भाषैं समभाय । श्रेणिक राय सुणैं मन ल्याय ।।२६६६।।
आदिनाथ स्वामी छद्मस्त । नमि विनमि मांगैं इह वस्त ।।
भरत बाहुबलि पायो राज । सुधरया नहीं हमारा काज ।।२६६७।।

भाषी बात तजो प्रभू मौन । हम हैं राज नश्री का कौन ।।
धरणेन्द्र ने दीयो इन राज । विजयारध का सौंप्या राज ।।२६६८।।

वाकै बंस धनवाहन भया । अजितनाथ कै समोसरण गयो ।।
भीम नाम राष्यस पति देव । आया करण श्री जिन की सेव ।।२६६९।।

घनबाहन स्यों भया मिलाप । त्रिकूटाचल कुं ले चाल्यो आप ।।
दीयो लंका को तब राज । जोजन आठ लंक गढ साज ।।२६७०।।

ऐसो हार दियो वा हाथ । मुंनि सेती पूंजी इह नाथ ।।
वाकै बंस रावण भयो बली । तिहूं खंड साध्या मन रली ।।२६७१।।

वाकै भगनी है चंद्रनषा । षरदूषण पट राणी रषा ।।
वाकै गर्भ पुत्र द्वै भए । संबूक सुंदर निरमए ।।२६७२।।

सूरजहास खडग निमित्त संबूक की तपस्या

सूरजहास षडग निमित्त । संबूक साध्या तब बहु मंत ।।
बारह वर्ष दंडक बन रह्या । साधी विद्या षडग तब लह्या ।।२६७३।।

दिवस सात औंधे मुख रह्यो । संबू कुंवर षडक न ग्रह्यो ।।
जे षडग आवै मो हाथ । तब लें जाउं अपणें साथ ।।२६७४।।

तस सुगंध वन भयो सुवास । लक्ष्मण गयो षडग के पास ।।
बहुत कष्ट भी पायो षडग । बारह वर्ष सह्यो उपसर्ग ।।२६७५।।

असे वासूं ल्यायो ध्यान । आप ही आवै कर्म प्रमान ।।
तब मैं ले जाउं निज गेह । इण प्रकारै साधी जब देह ।।२६७६।।

लक्ष्मण द्वारा सूरजहास की प्राप्ति

लक्ष्मण सूरजहास नैं पाइ । पुण्यवंत नारायण राइ ।।
ततषिण मूठ खडग की गही । जाणों जोति सूरज की लही ।।२६७७।।

देख्यो बहोत ऊजलैं वरण । लषमण चाहै परिष्या करण ।।
यो है कसोल देखूं चलाय । या की कैसी धार ठहराय ।।२६७८।।

वेडो बांस को रह्यो तिहां आय । संबू कुंवर बैठो तिण ठाइ ।।
लक्ष्मण करै बेडा परि चोट । संबूक कुंवर कटयो तिण ओष ।।२६७९।।

उतर मूंड धरती पर पड्या । गिरी लोथ तिहां लक्ष्मण खडा ।।
सूरजहास खडग इह भेव । करैं देवता सगला सेव ।।२६८०।।

देव सकल बोलैं तिण बार । ए पुंन्यवंत अष्टम अवतार ।।
संबूक कंवर जु कीया तप । विद्या निमित्त किया बहु जप ।।२६८१।।

द्वादस वर्ष कष्ट बहु सह्या । वाका हेत मन ही में रह्या ।।
बिन लहणौं पावै किम भांति । बारह वरष सहै दुखगात ।।२६८२।।

दोहा

बिना पुन्य पावै नहीं, कष्ट सहै दिन राति ।।
हीन पुन्य परभव किया, सुभ फल केम लहंत ।।२६८३।।

पुंन्य जिहां तिहां फिरै, इतना लहै सुभाय ।।
विद्या विभव सरीर सुख, सो मिलै अगाऊ आय ।।२६८४।।

चौपई

देव पुनीत आभूषणों की प्राप्ति

देव पुनीत आभूषण घने । केसर चंदन सोभा बणे ।।
देवां नें लक्षमण कूं दिये । नमसकार चरणन कूं किये ।।२६८५।।

आनन्दा लक्षमण कुमार । वनमें खड्या लगी बहुबार ।।
सीता रामचंद्र सुं कहै । लक्षमण कहा अब लग बन रहै ।।२६८६।।

वेगा उठि वाकी सुधि लेहु । जटा पंषी तुम मोकूं देहु ।।
तब ही लक्षमण पहुंचे आय । तब पूछै सब रघुपति राइ ।।२६८७।।

तुम यह खड्ग कहां ते लया । लक्षमण तब ब्यौरा सब कह्या ।।
तब वह करैं बहुत आनंद । खरदूषण घर हूवा दंद ।।२६८८।।

चन्द्रनखा द्वारा विलाप

चन्द्रनखा आवै थी नित्य । पुत्र सनेह घणुं थो चित्त ।।
नित प्रति देती भोजन अहार । करती सदा पुत्र की सार ।।२६८९।।

देख्या खड़ा बांस का कट्या । पुत्र ने देख्या मन सहु घट्या ।।
कुमर खडग किस पर चलाइया । बन कुं काटि कहां उठि गया ।।२६९०।।

आगे देखी सुत की लोथ । पड्या मुंड कुंडल की बोथ ।।
देख्या कुंवर खाई पछाड । रोवै पीटैं करैं पुकार ।।२६९१।।

किस दुरजन मेरा मेरा सुत हण्यां । चन्द्रनखा सिर पीटैं घणां ।।
भई चित्त भ्रम विचारैं एह । विद्या सुं काटि निज देह ।।२६९२।।

उठो पुत्र कहा करो चरित्र । तेरी बाट जोवैं सब मित्र ।।
चन्द्रहास रावण पै खडग । तुम चाह्यो लियो वह मांगि ।।२६९३।।

चन्द्रनखा की राम लक्षमण से भेंट

बहुरि संभल करि बोलै मात । देखु मैं किण कीधा घात ।।
राम लक्षमण कुं देखे कही । इन मेरया सुत मारया सही ।।२६९४।।

देखि रूप सो भइ आसक्त । धन्य वह नारि ज्यासौं ए रतन ।।
चन्द्रनखा रोवै तिण वार । सीता आय पूछी तिण सार ।।२६९५।।

किण कारण तू रोवै घणी । कहो सांच काहे मृगनयणी ।।
चन्द्रनखा बोलैं तब बैन । मेरा जीव कुं महा कुचैन ।।२६९६।।

मात पिता मेरे को नाहिं । अब में गही तुमारी छांह ।।
जे लक्षमण मोकूं करैं व्याहु । तुम जाई समझावो ताहि ।।२६९७।।

नहीं लछमण नैं इच्छा करी । मान भंड भई विद्याधरी ।।
चढि विमाण लंका कौ गई । रामलछण मन ऐसी भई ।।२६९८।।

जो इच्छै थी चन्द्रनखा, लक्षमण धरी न चित्त ।।
कुमति विचारैं अति घणी, कवण नहै तिय हित्त ।।२६९९।।

इति श्री पद्मपुराणे संबुकवध विधानकं

३८ वां विधानक

चौपई

चंद्रनखा का खरदूषण के पास जाना

चंद्रनखा पहुंची निज भूमि । कपड़ा फाडि मचाई धूम ।।
खोस्या केस लगाई खेह । नखतैं सब वीलरी देह ।।२७००।।

इण विध खरदूषण पैं गई । सोगवंत तिहां बोलन भई ।।
पूछै पति सांची कहो बात । तो कुं किसैं कही अवदात ।।२७०१।।

जिन वरांक तेरा किया सूल । वाका मरणां आया मूल ।।
जे यह छिपैं जाइ पाताल । मारूं घेर ताकूं ततकाल ।।२७०२।।

चंद्रनखा कहै दंडकारण । तिहां संबूक गया तपकरण ।।
सूरजहास खडग तिहां लहा । रहैं भूमिगोचरी तिहां ।।२७०३।।

मेरा पुत्र उनुं मारिया । मोसूं घणी करी है प्राणीया ।।
मैं तो घणी करी पुकार । कोई सहाय भयो न तिण बार ।।२७०४।।

हूं अबला वह पुरुष सरीर । कैसें उनसौं हुवै धीर ।।
सत राखन बहुतेरा करचा । एक बटोही तिहां दिठ परचा ।।२७०५।।

उन मोकूं तब दई छुडाय । मेरा सील रह्या इण भाइ ।।

खरदूषण का कुपित होना

खरदूषण कोप्या सुण बात । चवदहै हजार भूपति संघात ।।२७०६।।

चवदह सहस मंगल तसु और । हय गय पायक रथ बहु और ।।
मंत्री सूं पूछै तब मंत्र । मंत्री मंत्र कह्यो तिण मंत ।।२७०७।।

बारह बरष कंवर तप किया । लक्षमण आवत ही पग लिया ।।
सेवा करैं देवता घणे । वासौं जुध किया किम बणे ।।२७०८।।

जौ तुम जुध करण की बात । भेजो दूत दशानन पास ।।
एकठा होय सैन्यां बहु लेय । तब तुम वासौं जुध करेय ।।२७०९।।

रावण के पास दूत भेजना

इतनी सुणि भेजा तिहां दूत । रावण पासि जाय पहुंत ।।
सोलह सहस मुकटबंध जुड़े । हाथ जोडि राम पासै खड़े ।।२७१०।।
दस सिर बीस भुजा बलवंत । चन्द्रहास खड्ग सोभंत ।।
असत्र बांण गदा तसु पास । इन्द्र समान विभव बल तास ।।२७११।।

खरदूषण का दंडक वन पहुंचना

खरदूषण बेटा कै मोह । बहुरि उठा नारी का छोह ।।
बडे झुझारू चढे विमांण । दंडक वन ते पहुंचे आंण ।।२७१२।।
सुण्यां देव नंदीश्वर ज्याइ । कै कोई दुरजन चढ आव ।।
कै कोई गरुड चढै आकास । रामचंद्र इम बोलैं भास ।।२७१३।।
देखे दल नांगी तलवार । वज्रावर्त्त धनुष संभार ।।
सुर जहां सरवन सौं मरचा । एक मनुष्य विडे तल मरचा ।।२७१४।।
उन अस्त्री उनके घर जाइ । कह्यो सकल ब्योरी समझाइ ।।
ता कारण चढि लाए घणां । अबै सावधान हुवां ही बण्यां ।।२७१५।।
सुण्यां सबद सीता निज कांन । रामचंद्र सुं लिपटी आंन ।।
बहुत सोर काहे ते होइ । केसरी सिंघ दहाडैं कोइ ।।२७१६।।
लक्षमण तब करै बीनती । तुम सीता संग छोडो मती ।।

लक्षमण द्वारा युद्ध करना

इनसूं जाय करूं मैं युध । मैं हारूं तब लीज्यो सुध ।।२७१७।।
हार जाणौं तब पूरूं संख । तब कीज्यो तुम मेरा पक्ष ।।
सूरजहास खडग कर लिया । वज्रावर्त टंकार तब किया ।।२७१८।।
उततैं छूटैं विद्या बाण । बरछी धरसे गदा मेघ समान ।।
गोला गोली पडैं अनंत । इततैं छूटैं वज्रावर्त्त ।।२७१९।।
लक्षमण कै लागै नहीं घाव । विद्याधर झूलैं तिण ठांव ।।
जैसे कमल सरोवर मांहि । ऐसे मुंड भूमि मध्य तिरांहि ।।२७२०।।
हाथी घोडे पर्वत ढेर । पडी लोथ सगलो वन घेर ।।
झूझे सुभट स्यामि के काज । जिनकूं धान खाये की लाज ।।२७२१।।

रावण का आगमन

रावण सुणि आयो तिण बार । पहुंच्यो दंडकवन है मंझारि ।।
रामचंद्र सीता बैठारि । रावण दृष्टि सीता पर डारि ।।२७२२।।

सीता को देखना

सीता की देखी छबि घणी । ते मुख गोचर जाइ न भणी ॥
जे सीता के नख की कांति । ग्रैसी नहीं मंदोदरी गात ॥२७२३॥

बुध तणी गति गयो भूल । उपजी कुबुधि मरण अनुकूल ॥
करै सोच सीता किम हरूं । मैं तो सील महाव्रत धरूं ॥२७२४॥

सीलव्रत टालौं किण भांति । सोचै घणा बणै नहीं बात ॥
अब लग मैं नहीं करी अनीत । छोडूं नहीं धरम की रीत ॥२७२५॥

अब जो सुणै दूसरा कोइ । तो अपलोक प्रथी पर होइ ॥
जो मैं छोडूं ग्रैसी नारि । तो बिरहानल सहूं अपार ॥२७२६॥

ग्रैसी बिध याकूं ले जाउं । कोई न समझै मेरा नांव ॥

करणगुप्ति विद्या का ध्यान करना

कारणगुपति विद्या संभारि । विद्या बोली बात विचारि ॥२७२७॥

रामचंद्र सीता के पास । लक्षमण जुध करैं मन नास ॥
रामजी ऐसी हरि गही । ऐसी हारि नहीं गीणौं सही ॥२७२८॥

संख नाद सबद मैं करूं । तब तुम आपणा चित मैं धरूं ॥
करके नाद तब ऊपरि आइ । लक्षमण एम गये समझाइ ॥२७२९॥
जे तुम संखनाद करो भरपूर । रामचंद्र उठि आवैं सूर ॥
तब तुम तुम सीता हर ले जाव । इण प्रकार तुम करो उपाव ॥२७३०॥

रावण द्वारा शंखनाद करना

छोड्यो बांण भयो अंधकार । सिंघनाद पूरयो चिग्घार ॥

राम का लक्षमण के पास जाना

नाद करत रघुपति सांभल्यो । रामचंद्र लक्षमण ढिग चल्यो ॥२७३१॥

रावण द्वारा सीता हरण

खोटा हुवा राम ने सौंण । सीता ले रावण करै गौण ॥
पुहुप विमांण ले बैठा चल्यो । निकले मनि पाप विचार न करयो ॥२७३२॥

सीता का विलाप

सीता राम नाम उर जपै । लौंचै केस देह अति कंपै ॥
रे पापी कह तू है कौण । मोकौं लेना चाहै जिम पौंन ॥२७३३॥

जटायु द्वारा आक्रमण

रोवैं सीता पीटैं निज देह । जटा पंषी आक्रमं करै एह ॥
मारै चोंच रावण के सीस । नष सौं चूंथ करै बहु रीस ॥२७३४॥

चलै रुधिर रावण के मुख्य । जटा पंषी दीयो अति दुःख ।।
रिस करि रावण पंषी गह्या । तोडी पंख छेदन दुख लह्या ।।२७३५।।
नांखि दियो पड्यो धरती माय । अधमुवा मुर्स लिए ठांय ।।

रावण द्वारा खेद करना

सीता देख करत विललाप । रावण धुणै सीस निज आप ।।२७३६।।
अनंतवीरज स्वामी अरहंत । तिणपै लियो सील दृढभंत ।।
रावण कुबुधि उपजी मो चित्त । परनारी सौं लगाया हित्त ।।२७३७।।
पतिव्रता है सीता सती । इसके मन में पाप न रती ।।
छोडि राज मैं दिख्या लेहुं । उपजुं वैराग विचारै येव ।।२७३८।।
याने ले लंका मैं जाउं । बिन वांछा मैं संग न करू ।।
इसकी इच्छा होवै जबै । करू संग मिलाप मैं तबै ।।२७३९।।
मांही तो यह पुत्री समान । इह विचार पहुतो निज थान ।।
लक्ष्मण रामचंद्र सौं कहै । तुम क्यों आए वहां कुण रहै ।।२७४०।।
मैं तो सब दुरजन संहार । खरदूषण को मार्‌यो डार ।।

राम का विलाप

रामचंद्र तब बोले बैंन । सिंघनाद सुणि भया कुचैन ।।२७४१।।
रामचंद्र फिर आवे तिहां । सीता दृष्टि पडी नहीं वहां ।।
खाय पछाड धरती पर गिरे । सीता सीता मुख तैं करैं ।।२७४२।।
फाडे वस्त्र सिर केस खसोट । गह्यो धनुष किस पर करै चोट ।।
वन बेहड सरवर अरु वृक्ष । कहीं न देखी सीता प्रतक्ष ।।२७४३।।
जटा पंखी मारग में पड्या । सास उसास लें चाहे मर्‌या ।।
पंच नाम संभलाए कांन । जटा पंषी का गया प्रांन ।।२७४४।।
सीता तुमतै रही रूठि । वह तो नाद सबद था झूठि ।।
हम कु तुम कहा देहो दुख । उठि आवो देखो तुम सुख ।।२७४५।।
व्याकुल भया रघुपति का मन । रुदन करत सब भ्रमियो वन ।।
दोइ भाई तीजी सीता संग । भयो विछोह जीव का अंग ।।२७४६।।
हेर्‌या वन हेरी सब खोह । रामचंद्र ने व्याप्या मोह ।।
बहुत वियोग भया तिण वार । उठै लहर तब खाय पछाड ।।२७४७।।

दूहा

जैसा दुख रघु नैं भया, कहां लग करू बखाण ।।
चित भरम्या त्रिभुवन धणी, मल्या सकल सयांण ।।२७४८।।

इति श्री पद्मपुराणे सीताहरण रामविलाप विधानकं

३६ वां विधानक

चौपई

लक्ष्मण खरदूषण युद्ध

लक्ष्मण खडदूषण सौं जुध । कायर देख रही ना सुध ॥
सूरवीर मन करैं उल्हास । सुर नर असुर करैं जैकार ॥२७४९॥

विराधित चन्द्रोदिक का सुत । विद्याधर सेना संजुत ॥
लक्ष्मण को कीयो नमस्कार । बिनयवंत ह्वै बारंवार ॥२७५०॥

प्रभुजी मुझ को आग्या देहु । दुरजन दल नाषु करि खेहु ॥
लक्ष्मण विद्याधर प्रति कहै । मेरा पराक्रम अब तू लहै ॥२७५१॥

देख जु इनकुं परलय करूं । खडदूषण जम मंदिर धरूं ॥
विद्याधर सब विस्मय होय । या सम दूजा बली न कोय ॥२७५२॥

धन्य धन्य करि विनती करैं । खडदूषण सौं जे तुम लड़ैं ॥
सब सेना थाकी मैं हणूं । अपने आगैं अवरन गिणूं ॥२७५३॥

विद्याधर विद्या संभालि । खडदूषण के सेनापति का काल ॥
वा सनमुख विद्याधर हुआ । पायक सौं पायक लडि मुवा ॥२७५४॥

रथ सूं रथ टूटैं गिर पड़ैं । हाथी सूं हाथी तिहां भिड़ैं ॥
खडदूषण विद्या संभालि । गर्दभ मुख कीया तिण बार ॥२७५५॥

बडी दाढ भयदायक घणी । कहैक रै मेरा सुत हणी ॥
अब मैं लेस्यूं सुत का बैर । चंद्रनखा बिगोई तैं घेरि ॥२७५६॥

अब तुम को भेजुं जम पास । तो कुं अवर जनम की आस ॥
खैच चलायो कानिक बाण । लक्ष्मण कै लाग्यो आई काण ॥२७५७॥

लक्ष्मण कहै सुणि रे तू गंवार । तू तो गदहा की उणिहार ॥
सिंघ गदह सरभर किम होइ । अब तूं आया आगा खोइ ॥२७५८॥

मारयो बाण लखण नैं खैंचि । टूट्या छत्र निसान रथ पंच ॥
खरदूषण धरती गिर पड्या । गहि तरवार भूमि पर पड्या ॥२७५९॥

लक्ष्मण की खरदूषण पर विजय

लक्ष्मण सूरजहास संभार । मार्या खरदूषण भूपाल ॥
ज्यूं माखी उडि जांय बयार । त्यौं सब सैन्या भागी हार ॥२७६०॥

जीत्या लक्षमरा जै जै थई । पुष्प वृष्टि लक्षमण पर हुई ।।
आया रामचंद्र कै थांन । देख्या सोवत चिंता भई म्रान ।।२७६१।।

सीता नहीं देखी तिरा ठौर । मनमें चिंता व्यापी और ।।
रामचंद्र जगायो जाय । पूछी चिंता खबर सुभाय ।।२७६२।।

रामचंद्र बोले तिरा बार । किण ही चोरी सीता नारि ।।
कै कोई सिंघ गया है खाय । कै छल करि ले गया कोई राय ।।२७६३।।

लक्ष्मण का विलाप

लक्षमरा करै बहोत विलाप । कवरा कर्म तैं भयो संताप ।।
वन मैं आय लिया आश्रम । कोई उदय भयो अशुभ कर्म ।।२७६४।।

इहां सूं है सीता का हररा । पावें नहीं तो पूरा मररा ।।

विद्याधरों का आगमन

विराधित विद्याधर तिहां आय । रामचंद्र के लाग्या पाइ ।।२७६५।।

रामचंद्र पूछें इह कौन । इनू किनही तैं कीया गौंन ।।
लक्षमरा नैं महिमा करी घराी । या की कीर्त्ति जाई न भराी ।।२७६६।।

मो कूं कीनी बहुत सहाय । चंद्रोदित सुत विराधित राय ।।
लक्षमरा विद्याधर सूं कही । तुम सीता कूं ढूंढो सही ।।२७६७।।

जो नहीं सीता की सुध होई । हम दोन्यां में बचैं न कोइ ।।

चारों ओर दूत भेजना

कनकजटी का रतनजटी पुत्र । ठांम ठांम पठाए दूत विचित्र ।।२७६८।।
रतनजटी सुरिगयां इह बोल । राम राम करि पुकारै रोल ।।

रावण के पास जाना

तिहां जाइ रावरा कूं घेर । पापी ल्याव सीता इरा बेर ।।२७६९।।

रामचंद्र त्रिभुवन जगदीस । अब तूं जाइ नवावो सीस ।।
तेरी लंका होइ विरास । इम भासै विद्याधर तास ।।२७७०।।

तो तूं जीवेगा दिन घरो । नाहीं तोकूं जीवत हरौं ।।
भयो जुध रावरा सूं तिहां । रावरा सोच करै है जिहां ।।२७७१।।

इसकै साथ सैन्यां है घराी । मैं एकाकी सूं ऐसी बराी ।।
माया सौं सीता मृत करी । रतनजटी इह चिंता धरी ।।२७७२।।

या कारण आयो इस ठौर । सीता मुई करि दुख अति जोर ।।
रावण प्रतैं लगाऊं हाथ । वा को बांध ले आऊं साथ ।।२७७३।।

रे पापी रावण बुधि हीण । इह तो बहन भामंडल की चीण ।।
तेरा काटैगा दस सीस । तोडैगा तेरी भुजा सब बीस ।।२७७४।।

रावण नैं तब मार्‌या बाण । रतनजटी तब पड्या समुद्र में आण ।।
पंच नाम का सुमरण किया । समुद्र तिर बाहर आइया ।।२७७५।।

कपि द्वारा देखना

कपि पर्वत परि ऊभो भयो । रांवण लंका में तब गयो ।।
विराधित नैं ढूंढी सब दिसा । सीया न लाधी मनमें संसा ।।२७७६।।

तब फिर आये नीची दृष्टि । राम लछन नैं व्यापियो अति कष्ट ।।
विराधित नैं बोलै रामचन्द्र । पूरब भव के खोटे वृन्द ।।२७७७।।

असुभ उदय हम पाये दुःख । तुम सो काहि न वांछउं सुख ।।
अबर फिरे तुम ज्याऊं देस । मेरा तुम मान्यां उपदेस ।।२७७८।।

सकल हमारे कर्म की चाल । तुम चिंता मति करो भूपाल ।।
विराधित बोलै बिनती करैं । प्रभू अपणे संसय परिहरै ।।२७७९।।
दीप अढाई ढूंढुं जाइ । तुमकौं सीता देहां आइ ।।
इक चिंता इक मनमें घणी । तुम खरदूषण सीसा हणी ।।२७८०।।

अलंका गढ में पहुंचना

रावण कुंभकर्ण बलिवंत । भभीषण इन्द्रजीत सामंत ।।
मेघनाद में बल अपार । किषंदपुर सुग्रीव अंगद गुण सार ।।२७८१।।

किषंदपुर नल नील हणुमान । ए तुमसौं करि हैं घमसांन ।।
चलहु अलंका गढ लेहु । संब कुंमर निकाल के देहु ।।२७८२।।
पवन भामंडल विद्याधर राव । वे सब आगे हैंगे आव ।।
दोय रथ समराइ भले । लक्ष्मण राम अलंका चले ।।२७८३।।
आइ अलंका गढ ले लिया । चंद्रनखा सुत काढिकै दिया ।।
वे पहुंचे रावण के पास । राम कहै भलो वनवास ।।२७८४।।
सीता बिन सब देस उजाड । रामचंद्र चितवैं उपगार ।।
श्री भगवंत का तिहां देहुरा । पूजा करी भाव सुं खरा ।।२७८५।।
अष्ट द्रव्य सूं पूजैं पांय । दुख संताप गए बिलाइ ।।
इण विध रहैं अलंका मांहि । सीतां कारण चिंत कराहि ।।२७८६।।

दूहा

असुभ कर्म परभाव तैं, बाधी चिंता बेस ।।
जो कछु लिख्यो ललाट में, ताहि गर्कं कुण पेल ।।२७८७।।

इति श्री पद्मपुराणे सीता वियोग विधानकं

४० वां विधानक

चौपई

रावण की सीता के समक्ष गर्वोक्ति

रतनजटी कंकु पर्वत थिर । रावण देखे दक्षिण भयो चित्त ।।
मंद चाल से चलै विमांण । रांवण लग्या कांम का बांण ।।२७८८।।

सीता प्रति बोलै ग्राधीन । मुख दिखावो मोकूं परवीन ।।
जे मोकूं दर्शन नहीं देह । मेरे प्रांण छूटैंगे अबेह ।।२७८९।।

तुम कारण प्राण मम जांहि । इह तो पाप सगलो तुम थाय ।।
तपसी कहा रांम लक्षमणा । तिनका दुख मानै मत घणां ।।२७९०।।

कहां अजोध्या तिनका धणी । वनमें रहूं तपसी रूप सुध्या घणी ।।
मैं तो नरपति शक्र समान । इछो सो पावो मन मांहि ।।२७९१।।

सर्व प्रथई पर है तुम राज । करो भोग मनबंछित काज ।।
जे तूं मेरा कोरा सिर मैं देइ । तो मैं मनतैं तजूं सनेह ।।२७९२।।

सोलह सहस्र राणियां मझार । तुझै पटराणी करूं सिरदार ।।
तुमकूं फेर दिखाऊं सुमेर । देखो यह सागर बहु फेर ।।२७९३।।

एह सुख देखो छांडो सोग । राजरिध का भुगतो भोग ।।

सीता का करारा उत्तर

सीता कहै सुणरे पापीष्ट । जे तू खोर्षे खोटी द्रष्ट ।।२७९४।।

जे तूं फरसै मेरी देह । हूं सराफ तू होवैगा खेह ।।
परनारी भगतै ते मूढ । पडै नरक दुख सहै अटूट ।।२७९५।।

मेरे रामचंद्र का ध्यान । उन बिन ततक्षण तजो परांण ।।
राम बिना जितनां नर श्रौर । मेरैं तात भ्रात की ठौर ।।२७९६।।

हस्त प्रहस्त खरदूषण का लोग । चालकेत महाखेद कै मन सोग ।।
गिरवा नरग भूपति मिले आइ । खरदूषण तिहां भुभै राई ।।२७९७।।

रावण निकट आयकैं मिले । खरदूषण की सुणी पर भले ।।
गुण औदाहर रच्छ बाग । तिहां फल फूल रहे थे लाग ।।२७९८।।

अशोक वाटिका में सीता को रखना

असोक वृक्ष तले सीता राखि । चन्द्रनखा बिनवै सहु साखि ।।
खरदूषण संबूक कों मारि । हमैं पताल तैं दिया निकारि २७९९।।

चन्द्रनखा का रावण से निवेदन

रावण चन्द्रनखा ने कहैं । तुझ उपाय ए फल लगे ।।
एता सब तुझ भया उपाय । मारया खरदूषण सा राव ।।२८००।।

गांव देस्यां तू बैठी खाइ । अपणो तन मन राखो ठांह ।।
ऐसी कहैं अंतहपुर जाइ । सेज्या पौढे व्याकुल काइ ।।२८०१।।

मंदोदरी द्वारा रावण से पूछना एवं रावण का उत्तर

मंदोदरी पूछै कर जोडि । दुचिते कहा भए तुम [illegible] ।।
रावण कहै सीता की बात । हरि लीयो वाकुं इण भांति ।।२८०२।।

खरदूषण संबुक कुमार । लक्षमण ने वे मारे मारि ।।
अवलोकिनी विद्या ने पूछ । वन मो बताई सगली सुध ।।२८०३।।

मैं वाकी सीता को हरी । वाहि विछोहा कंत की पडी ।।
वाकै राम नाम की जाप । अन्नपाणी बिन सहै कलाप ।।२८०४।।

ऐसी चतुर दूती जो होइ । वा कूं जाय समझावै कोइ ।।
मो सेती जो मानैं रति । तो मेरे जीय की मिटै चित ।।२८०५।।

वा बिन ए जात हैं प्रांण । सुध बुध भुलि गई सब स्याण ।।
मंदोदरी मन करै बिचार । करूं उपाव तो बचै भरतार ।।२८०६।।

दूती का सीता को समझाने का असफल प्रयास

दूती सुघड विचक्षण नारि । वा कौं ततक्षण लई हकार ।।
सीता नैं समझावो जाय । अन्नपाणी जो अब ही खाय ।।२८०७।।

रावण तीन खंड का धणी । राम लक्ष्मण तपसी मुणी ।।
उनकै कारण क्या इतना दुख । करो भोग भुगतो सब सुख ।।२८०८।।

दूती चली ग्रीवारव ठांव । सोभा देखी नंदनवन भाव ।।
भले वृक्ष बेल बहु वणी । नामावली न जाये गिणी ।।२८०९।।

इन्द्रलोक सम उपवन बन्या । सीता सबद असोक तलि सुन्यां ।।
आ मुख राम नाम का ध्यांन । ताकै चित्त न आवै आन ।।२८१०।।

दूती जस रावण का गाय । करै नृत्य बाजित्र बजाय ।।
सौगन तजै न देखै सिया । अति पतिव्रता जनक की धिया ।।२८११।।
दूती धूत कर्म सब किये । सीता कै कछु नांही हिए ।।
हाव भाव दिखलाये घने । मन नहिं मानैं सीता तने ।।२८१२।।

दूहा

दूती फिर आई सबैं, किये बहुत उपचार ।।
सत राखें करतार सु, कवण डुलावण हार ।।२८१३।।

चौपई

रावण की व्यकुलता

रावण सुं दूती कहै बयण । सीता तो खोलै नहीं नयण ।।
अन पांणी तजि लियो संन्यास । ऊंचे नीचे लेत उसास ।।२८१४।।
बहुत भांति समझायी ताहि । मंत्र जंत्र कछु लागे नांहि ।।
सुणी बात रावण अकुलाइ । हाथ मसलकर बहु पछताइ ।।२८१५।।
खिण बाहर खिण भीतर जाइ । ता कै चित्त कछु न सुहाइ ।।
अम्या चित्त सब सुध बीसरी । चिंता मिटै न एकै घरी ।।२८१६।।
भभीषण च्यारु मंत्री ते आय । बैठि मतो इंण भांति उपाइ ।।

मन्त्रियों द्वारा विचार

रावण चर्या तै विभल हुयो । वाको कछु भेद न पाइयो ।।२८१७।।
सुभन मंत्र मंत्री इम कहै । खरदूषण के सोग में रहै ।।
इह आश्चर्य विचारै खरा । बारह बरस संबुक तप करया ।।२८१८।।
सूर्यहास खडग तब लया । लक्ष्मण नैं पल ही में गह्या ।।
वे दोन्युं थे मेरी बांह । ऐसा मारचा छिनकै मांहि ।।२८१९।।
ता कारण रावण दुख करै । भ्रम्यां चित्त सुधि बुधि बीसरैं ।।
पंचमुख दूजा मत्री कहै बैन । रावण को इस विध नहीं चैन ।।२८२०।।
लक्षमण एक खरदूषण दल घणां । उन तो सब सेन्या बल हण्यां ।।
खरदूषण मार्‌या संबूक । तातैं होइ रह्या है मूक ।।२८२१।।
सह आमती तीजो मंतरी । उनसों समझि बात कही खरी ।।
अश्वग्रीव प्रतिनारायंण हुआ । सुप्रतिष्ठ नारायण नैं ज्यो किया ।।२८२२।।
अब यह लक्ष्मण है अति बली । खरदूषण की सेन्यां दली ।।
वाकैं सेन्यां जुड़त न बार । रावण के मन इसो विचार ।।२८२३।।
चौथा मंत्री बोलै विनयवंत । विराधित विद्याधर बलवंत ।।
वह तो रामचंद्र सुं मिल्या । वाका हित सुग्रीव सों मिल्या ।।२८२४।।
उसका मित्र बली हनुमान । रामचन्द्र सों मिलि है आन ।।
तो लंका टूटै तिह घडी । ऐसी बात चित्त में धरी २८२५।।

सुग्रीव राज भ्रष्ट जो करै । लंका परि हथनाला धरै ।।
सूर सुभट राखै चिहु ओर । सुग्रीव राज छुडावो ठौर ।।२८२६।।

विद्याधर इक किषंदपुर गयो । तारा राणी सु आसक्त भयो ।।
सुग्रीव दियो देस तैं काढि । सूरज के सुत चिंता बाढि ।।२८२७।।

बहुत सोच दुहुं धां बणी, निसबासर इह ध्यांन ।।
रामचंद्र सीता धणी, बणै कहा अब आणि ।।२८२८।।

इति श्री पद्मपुराणे माया पुकार विधानकं

४१ वां विधानक

चौपई

राम सुग्रीव मिलन

किषंध नगर सूरज रज भूप । ताको पुत्र सुग्रीव स्वरूप ।।
तारा राणी ताकै पटधणी । अंगद पुत्र बल सोभा घणी ।।२८२६।।

सुग्रीव दंडक बन मांहि आय । देखी लोथ पडी तिण ठाय ।।
बटोही पूछ सुण्यो सब भेद । भयो सोच मन मैं अखेद ।।२८३०।।

मेरे मन इच्छा थी और । खरदूषण भूड्या इस ठौर ।।
अब हूं मना कवण सूं करूं । रावण की सरणागति परूं ।।२८३१।।

बहुरि विचार करै सुग्रीव । जो मोकू बांधै दस ग्रीव ।।
रामचंद्र सौं जाकर मिलूं । तो मैं राज लहूं निरमलूं ।।२८३२।।

सात अक्षोहणी दल सुग्रीव के संग । जाके भयो राज में भंग ।।
राम लक्षमण पैं गयो सुग्रीव । करि डंडोत नवाई ग्रीव ।।२८३३।।

मलिन रूप सुग्रीव कूं देखि । पूछै रघुपति ताहि विशेष ।।

राम के द्वारा सुग्रीव के सम्बन्ध जानकारी पाना

विराधित सूं पूछयो विरतांत । सुग्रीव दुखित है सो कहि भांति ।।२८३४।।

विराधित वचन कहै समझाय । किषंधपुर नगरी का राय ।।
मायारूपी विद्याधर एक आय । सुग्रीवरूप अंतहपुर जाय ।।२८३५।।

तारा राणी करै विचार । इह तो है अवरै अणुहार ।।
किंकर तब ही लिए बुलाय । कही बेग सुग्रीव पैं जाइ ।।२८३६।।

वन क्रीडा कूं भूपति गयो । मेरे मन एह संसय भयो ।।
किंकर दोड्या वनह मझार । दुचिता देख्यो भूप तिण बार ।।२८३७।।

सोचैं नृप किंकर कूं देखि । अंगद भया मेर दक्षण विसेष ।।
ताकूं लागैं कछु इक बार । तौ इहै आया इसैं विचार ।।२८३८।।

कं,मन कुंवर भयो वैराग । दिष्या लेहै गह कुं त्याग ।।
कै तारा राणी दुख दिया । यह कारण हूं दुखिता भया ।।२८३९।।

पहुंच्या किंकर विनती करी । प्रभू चलो उठि या ही घड़ी ।।
एक अचंभा देख्या आज । तुम सूरत कोई आयो राज ।।२८४०।।

अंतहपुरी कियो परवेस । राणी तुमसों किया संदेस ।।
राजा आयो नगर मझार । दरवानैं रोक्या तिणबार ।।२८४१।।

अटक बचन मुख सेती कहै । राजा घंस्या तिहां थह लहै ।।
अपणी सूरत देख्या ओर । दोनूं भूप करैं तिहां सोर ।।२८४२।।

मंत्री सोच मत्र नह किया । अंगद प्रले राज पद दिया ।।
बे दोन्यु नृप दिया निकाल । वाकी मनमें चिंता जाल ।।२८४३।।

जब लग समझ पड़ै कछु नहीं । तब लग राज तुमारा सही ।।
विराधित बुलाइ हणुमंत । उनैं न पाया इनका अंत ।।२८४४।।

ए दोन्युं एकै उणिहार । इनका न्याव नही निरधार ।।

राम द्वारा सुग्रीव को राज देना

रामचंद्र की क्रिपा भई । सुग्रीव भूप को उपमा दई ।।२८४५।।

तुमारे दुसमन को मारौं ठौर । अपणो कीज्यो राज बहोरि ।।
जो न सुधारौं तेरा काज । तो मैं दिख्या लेस्युं आज ।।२८४६।।

धिग धिग इण संसारी रीत । ता कारण ऐसी विपरीत ।।
जैसा दुःख तुझै तैसा मोहि । हूं अब देस माथ ज्यों तोहि ।।२८४७।।

तूं भी करो हमारा काम । सीतां ढूंढ सुणावो ठांम ।।
कहै सुग्रीव सात दिन मांहि । याकी सुधि पहुंचाऊं आहि ।।२८४८।।

सात दिवस मैं जो मोहि काम न करों । तो हूं अगनि मांहि जल मरूं ।।
भेज्यो दूत विट सुग्रीव पास । वहै चढि आया जुध की आस ।।२८४९।।

दोनु तरफ दारुण जुध भया । सुग्रीवैं गदा मारि घर गया ।।
निर्भयवंत ते भया अडोल । ह्यां सुग्रीव भेज्या फिर बोल ।।२८५०।।

रामपास इक दूत पठाइ । मेरी मदद करो जो आय ।।

सुग्रीव की विजय

उंन तो मारि किये चकचूर । मो सूं जुध भया भरपूर ।।२८५१।।

रामचंद्र सेना बहु जोडि । विट सुग्रीव परि दीनी दोड ॥
चढि दोड्या रन सनमुख आइ । बाजा मारू सबै बजाइ ॥२८५२॥

दोन्यूं छोडि दिया बांण । बहुतां का उड गये परांण ॥
रामचंद्र भय करै न गात । विट सुग्रीव लडै इस भांत ॥२८५३॥

सुग्रीव राज पायो फिर देस । बहुत आनंद सुख लह्यो नरेस ॥
रामचन्द्र का महोछव किया । तेरह कन्या भेट ल्याइया ॥२८५४॥

सुग्रीव द्वारा तेरह कन्याओं को भेंट में देना

चन्द्राभान हृदया [illegible] । हिरदै [illegible] श्री [illegible] ॥
अनधरा नाम चउथी श्रीकांति । सुंदरवती चन्दसम कान्ति ॥२८५५॥

मनोवाहनी च्यारूं सिरी । मदनोत्सवा गुणवंती खरी ॥
पदमावती जिनवती बहुरूप । गुण लावण्य अति दिसै अनूप ॥२८५६॥

पुन्य संजोग मिली ए नारि । रूप लक्षण गुण अगम अपार ॥
रामचंद्र कूं करि डंडोत । सगलां बिनती करी बहोत ॥२८५७॥

देस देस के आये राय । कोई नही हम दृष्टै आइ ॥
तुमारी सेवा हम करि हैं भली । बहुत भांति होसी मन रली ॥२८५८॥

श्री रामचंद्र पुनिवंत चरम अवतार हैं ।
पुंन्य गुण बल रूप लह्यो अपार है ॥
कनक वरण कामिनी कै मन चाव है ।
हरी जु सीता नारि असुभ पर भाव है ॥२८५९॥

इति श्री पद्मपुराणे विट सुग्रीव विधानकं

४२ वां विधानकं

चौपई

कन्याओं के हाव भाव

कन्या सकल परम परवीण । ताल मृदंग बजावैं वीण ॥
कैई गावैं कैई नृत्य जु करैं । नो रस तान से चारै खरैं ॥२८६०॥

रामचन्द्र का डुल्या न चित्त । अधिक सोच सीता को नित्य ॥
कांमनी हाव भाव बहु किया । वन कै कछु न आई हिया ॥२८६१॥

राम लछमण बोले तिह बार । सुग्रीव अपनुं काज संवार ॥
अपणैं सुख की मानैं रुचि । सीता का कछु करै न सोच ॥२८६२॥

राम लछमन किहकंधपुर जाइ । सुग्रीव सौं बात कही समझाइ ।।
सुग्रीव आय चरण कूं नया । प्रभुजी मोइ ऊपर कीजे दया ।।२८६३।।
ऐसैं सीता सुधि ल्याऊं तोहि । तब मैं करूं तुमारी सेव ।।
रामचंद्र सुग्रीव सूं कहैं । इह संसय मेरे मन रहै ।।२८६४।।
मोह फंद में बिसर भयो सुत्र । मन में ऐसी थापुं सुधि ।।

जक्षदत्त द्वारा माता प्राप्ति की कथा

ज्यौं जक्षदत्त नै माता लही । तारा इण मुनिवर नैं कही ।।२८६५।।
जक्षदत्त किम पाई माइ । ते विरतांत कहो समझाइ ।।
अंजन नगर भूप तिहां यक्ष । राजलदे नारि उत्तम पक्ष ।।२८६६।।
यशदत्त वेस्या के ग्रेह । देखैं कौतिग धरैं सनेह ।।
दमंयवती ताकैं निज बसैं । जक्षदत्त तासूं नित हंसैं ।।२८६७।।
तारायण मुनिवर यह देख । जक्षदत्त समझाया भेष ।।
इह तो तुझ माता परतख । कहा अग्यांन भया दसदक्ष ।।२८६८।।
कुंवर भणैं कैसे इह मात । ब्यौरा सुं भाषो ते बात ।।
मुनिवर कहैं मृतकवती देस । कनक महाधन सुण उपदेस ।।२८६९।।
धरणी नाम तास की नारि । धनदत्त पुत्र लियो अवतार ।।
दमंयवती ब्याही अस्तरी । रूप लक्षण सौं सोभै खरी ।।२८७०।।
धनदत्त चाल्यो लाद जिहाज । दमंयवती नैं सौंपी लाज ।।
रत्नकंबल दे तिसको गया । दमयवती सुं गर्भ स्थित भया ।।२८७१।।
सासु सुसरैं दई निकाल । उत्पलका संग दीनी नारि ।।
रोवत चली साह की बहु । कोय न बैठन देवै कहूं ।।२८७२।।
विणजारैं संघि दुख सौं जाइ । वनफल कबहु भोजन खाइ ।।
उत्पल दासी भुयंगम डसी । देह छोडि जम मंदिर बसी ।।२८७३।।
रही अकेली दुखित घणी । असुभ कर्म तैं ऐसी बणी ।।
भयो पुत्र अति चिंता करी । मैं तो सुत जनम्यौ इस घडी ।।२८७४।।
जे राखुं तो पालूं किह भांति । रत्नकंबल में लपेटी राति ।।
जक्षराय को दीया पूत । जक्षदत्त नाम संयुत ।।२८७५।।
दमंयवती को दीया दाम । वह तो रहै वेस्यां निज ठाम ।।
जे तेरैं मन आवैं नहीं । रत्नकंबल गांठ कीडी मैं सही ।।२८७६।।

अक्षदत्त मुणि दोडियो तुरंत । रत्नकंवल गठडी में बहुमंत ॥
माता सूं पूछ्या सब भेद । मनतें कुमति भई सब छेद ॥२८७७॥
धनदत्त सेती मिलियो कुमार । भयो आनंद सकल परवार ॥
इण विध तुम कौं सीता मिलै । सूर सुभट बुलाइयो भलै ॥२८७८॥

चारों ओर सीता की खोज

दीप अढाई में सब ठौर । बेगां जाइ करो तुम दौर ॥
जहां सीता देखो तुम जाइ । तिहां की खबर बेगा द्यो आय ॥२८७९॥
देस देस को नरपति गए । सुग्रीव बहुरि चरण को नए ॥
प्रभुजी मोकुं आग्या होइ । मैं भी थानक सोधुं कोइ ॥२८८०॥
बैठि विमांण चल्यो सुग्रीव । कांबु पर्वत की आयो सींव ॥
रतनजटी विद्याधर तिहां । फरहर्त्ता देख्या लेजा तिहां ॥२८८१
इह किसकी धुजा फरहराइ । उतर भूमि तिहां देखै आइ ॥
रतनजटी डरप्या तसु देखि । इह कोई है दुरजन भेष २८८२॥

रतनजटी और सुग्रीव की भेंट

सुग्रीव भूप पूछें रतनजटी । ते कहि रावण सीता हरी ॥
मैं बहु तेरा किया उपाय । ता तैं कोई न लागी डाव ॥२८८३॥
राम का नाम जपैं श्री सिया । दुखित बहुत जनक की धिया ॥
सुनि सुग्रीव रतनजटी ल्याइया । बैठि विमाण राम ढिग आइया ॥२८८४॥

रतनजटी द्वारा लंका का परिचय

रतनजटी कीयो नमस्कार । बात सकल भाषी निरधार ॥
राक्षसपुर इस सायर मांहि । सातसै जोजन चौडाइ जाहि ॥२८८५॥
एक बीस जोजन की लंबाइ । त्रिकुटाचल नव जोजन चौडाइ ॥
पचास जोजन की उंचाइ । वा सम गढ नाहीं किण ठांइ ॥२८८६॥
तीस जोजन कै लंका फेर । रावण कुंभकरण ज्युं मेर ॥
भभीषण तैं दुरजन सब डरैं । इन्द्रजीत मेंघनाद बल धरैं ॥२८८७॥
पंद्रहसै अछोहणी दल संग । इंद्रादिक कियो मान भग ॥
दस नगर बसैं ता पास । सुर्वा सुमेरपुर महिलादपुर वास ॥२८८८॥
जोधपुर हरिपुर सागरपुरी । अधरसुर तिहां नगरी ॥
रावण सम भूपति कोई नांहि । ऐसे बचन सुणें नरनाह ॥२८८९॥

अइसी पईज कहा तुम करो । सीता लणो सोग परिहरो ।।
अवर विवाहो भुगतो भोग । कहा करो तुम इतना सोग ।।२८६०।।

राम कहैं सीता बिन और । कहूं नारि प्राणन कौ ठौर ।।
रावण कूं भेजूं जमलोक । रहै सदा लंका में सोक ।।२८६१।।

जांबूनद मंत्री का कथन

जांबूनद मंत्री कहै वयन । अपने मन कूं राखो चैन ।।
सीता किसपै आणी जाइ । रवि समान तपैं रावण राय ।।२८६२।।

जैसे बंदर मोर के काज । व्याकुल भयो छोडि सब राज ।।
अैसे तुम भरमुं हो राम । जिह भरम्या कछु सरै न काम ।।२८६३।।

बंदर मोर की कथा

पूछैं राम बंदर की बात । उसका मोर गया किह भांति ।।
वैंना नदी चैनपुर नगर । सर्व रुचि रहै नांमी सगर ।।२८६४।।

गुण पूरणा बाकी अस्तरी । विनयदत्त जनम्या सुभ घडी ।।
ग्रह लछमी परणाई नारि । जोबन बेस सुख भोग मझार ।।२८६५।।

बिसालभूत द्विज सौं बहु प्रीत । ग्रहलछमी भीआरी विप्रीत ।।
द्विज सौं कही विनयदत्त कुमार । हम तुम सुख भुगतैं संसार ।।२८६६।।

ब्राह्मण मन में पाप विचार । विनयदत्त को लेगया अरण मझार ।।
बांधि नेज सौं ऊंची डारि । फिर आयो विनयदत्त के द्वार ।।२८६७।।

ग्रह लछमी कूं जणाई सार । मैं मारया तेरा भरतार ।।
दोन्यू सुखी हुआ मन बीच । बिसालभूत कीया कर्म नीच ।।२८६८।।

दया न समझ्या मारयो जजमान । जिसपै लेता नित उठि दान ।।
छुंदर सेठ वा वन में गया । वाहि तरु तलि ठाढा भया ।।२८६९।।

ऊंचे कूं देख्या विनयदत्त । चढया डाल परि दया निमित्त ।
खोलि दिया सर्व रुचि का पुत्त । वा कुं पहुंचाया घर जुत्त ।।२९००।।

ब्राह्मण सुत भाज्या तजि देस । सेठ घरे बधाई बहु भेस ।।
नउतन जनम पुत्र का भया । छुंदर के हाथ सुं मोर उडि गया ।।२९०१।।

राजकुमर नैं पकडयो मोर । छुंदर करै पुर में अति सोर ।।
विनयदत्त प्रतै छुंदर इम कहै । मो सेती तुझ प्राण ए रहै ।।२९०२।।

मेरा मोर कुंवर ने गह्या । अब यह तेरा मार्ग कह्या ।।
मेरा मोर छुडाय दे मो हाथ । मैं तो भला किया तुम साथ ।।२९०३।।

वह तो भूपति यह बाण्यां सुंदर । कैसे मोर लहै वह भंवर ।।
विनयदत्त बोले तिण बार । हुं बाण्या इह राजकुमार ।।२६०४।।
कैसे कहूं राज सौं जाइ । भ्रडर मोर लेहू मन लाइ ।।
वह तो मोर किरणे का नहीं । एह बात हम तुम सों कही ।।२६०५।।
असा कवण बली है सूर । रावणस्यौं सरभर करै पूर ।।

लक्ष्मण का क्रोधित होकर निश्चय प्रकट करना

इतनी सुणि लखमण कोपाइ । जो रावण में बल अधिकाय ।।२६०६।।
तो क्यूं उन चोरी यूं लई । वा कुबुद्धि मरण की भई ।।
कायर डरपैं नपुंसक लोग । चोर अन्याई मानैं दुख सोक ।।२६०७।।
क्षत्री डर मरने का करैं । निश्चय जाय नरक में पडैं ।।
अब लौं रावण था बलवंत । बन मैं जब लग बलवंत ।।२६०८।।
केहरि की जब सुणै हुंकार । निरमद ह्वै नासै तिण बार ।।
लखमण कहै इण परि उपदेस । राजसभा मैं सुण्यौ नरेस ।।२६०९।।
कुसुमपुर नग्रप्रभा सेठ रहै । जमुना त्रिय निसदिन सुख लहै ।।
आत्मसंशि ताकै सुत भया । इक दिन वन क्रीडा कौं गया ।।२६१०।।
प्रथमसेन का दरसन पाय । सेव करी बहु मन बच काइ ।।
उन तपसी चुरा इक दिया । सर्व गुणों का परचा किया ।।२६११।।
राजा की राणी अहि डसी । गारुड गुणी जुडे गुण बसी ।।
औषध जतन लगै नहि काइ । आतम शक्ति राजा पै आइ ।।२६१२।।
चुरा घोइ लिया पंच नाम । डसी थी ज्यावेती नृप भाम ।।
राणी का विष उतरा सुण्या । राय तणा मन रहस्या घणां ।।२६१३।।
आत्मशक्ति को दिया बहु साज । बहुत विभव अर आधौ राज ।।
कुछ लछमी गडी थी कहां । खोदण गया आत्मसक्ति तिहां ।।२६१४।।
अजगर लेकरि गया पाताल । देखि चोह तिहां भस्या भुवाल ।।
अजगर ने मारी फौंकार । उठै सिला मारया तिह बार ।।२६१५।।
लिया द्रव्य सर्व उन जाय । हम सीता छोडैं किण भाय ।।
जैसें उन अजगर कूं हण्या । तैसे हम मारेंगे रावणा ।।२६१६।।
लंका कूं करि हैं चकचूर । हम आगै कहा रावण सूर ।।
सकल भूपती बोले वयण । सुणौं प्रभू राखो चित चैन ।।२६१७।।
दीप धातकी अनंतवीर्य जिनेस । रावण ने पूछे बहु भेस ।।
तीन खंड जीते सब देस । आग्या मानैं सकल नरेस ।।२६१८।।

रावण की मृत्यु के सम्बन्ध में भविष्यवाणी

मेरी भाव कवण है हाथ । ब्योरा सूं कहिए जिन नाथ ।।
श्री भगवंत की वांनी हुई । कोटि सिला उठावै जो कोई ।।२९१९।।
ताकै करि है तेरी मीच । निसचै जाणि बात मन बीच ।।

लक्ष्मण द्वारा शिला उठाना

जो तुम सिला उठावो जाइ । तो रावण कूं मारो भाइ ।।२९२० ।
लछमण कहै उठाऊं सिला । तब मो पौरिष देखो भला ।।
सुग्रीव साथ नृपति सब चले । साजि बिमाण सौंज सौ भले ।।२९२१।।
राम लछमण विमाण परि बैठि । पहुचे कोटि सिला कै हेठि ।।
अरध निसा गई सिला कै पासि । तिहां होइ सिवपुर की आसि ।।२९२२।।
नमसकार करि बारंबार । आठ सिध गुण पढै संभार ।।
बहुत विनय सौं पूज जिनेस । मुनिसुब्रत पूजिया नरेस ।।२९२३।।
लछमण पढया पंच प्रभु नाम । सिला उठाइ लई तिस ठांम ।।
जोजन एक सिला उच्चंत । अठ जोयण चकली दीपंत ।।२९२४।।
दश जोजन की है लंबाइ । लछमण ततखण लई उठाइ ।।
जंघा लग पहुंचाई आंन । बहुर धरी तब वाही थांन ।।२९२५।।
जै जै देव दुंदभी भई । ए लछमण नारायण सही ।।
नल र नील अर्क सुग्रीव । सब नै मता मैं गाही नींव ।।२९२६।।
बहुरि नरेन्द्र कहै ए बली । कथा नारायण की तब चली ।।
सात नारायण आगै हुआ । तिण श्री प्रतिनारायण मुवा ।।२९२७।।
कोई कहै इन उठाई सिला । रावण कैलास उठाया भला ।।
कोई कहै रावण विद्या सहाइ । हम लहै विद्या लेइ उंचाइ ।।२९२८।।
इन उठाई देही के बल । लछमण महाबली मू अटल ।।
कोऊ कहै ए दोनूं भ्रात । रावण का दल कह्या न जात ।।२९२९।।
ए उसको जीतैं किस भांत । ऐसा करो दोनूं घर सात ।।
रामचंद्र पै भूपति गए । राम कहैं ढीले किम भए ।।२९३०।।
वेगि चलो लंका परि अबै । रावण मारि ढाहौं गढ सबै ।।
कहैं भूप सुणो त्रिभुवन राय । जब वह सीता देइ पठाइ ।।२९३१।।
तो कीजे काहे कूं जुध । हम वाकूं समझावैं बुध ।।
भभीषण ज्ञानवंत परमेष्ट । दयावंत है समकित द्रष्ट ।।२९३२।।

तासु कही बात रामभाइ । को कहै है रावण नैं जाइ ।।
रावण कै सीलव्रत की टेक । अण वांछित किम तजै विवेक ।।२६३३।।
सिया तुम्हारी देगा आरिण । भेजो दूत कोई चतुर सुजांण ।।
पवनपुत्र बलीं हणमंत । सूरवीर महाबल अनन्त ।।२६३४।।
जो वह जाइ तो ल्यावै सिया । श्रीभूत दूत हणुमंत पै गया ।।
लिख्या पत्र विवरां सूं भला । दूत लेई ततक्षण चला ।।२६३५।।

इति श्री पद्मपुराणे लक्षमण कोटिसिला उतक्षेपण विधानकं

४३ वां विधानक

दूहा

रामचंद्र लक्षमण सबल परदुख भंजण हार ।।
कोडिसिला उठाइ करि, प्रगट भए संसार ।।२६३६।।

चौपई

श्रीपुर नगर राजा हनुमान । सर्व सुखी परजा तिण ठांम ।।
नगर सोभ कछु जाय न गिणी । स्वर्गपुरी की महिमा बणी ।।२६३७।।
अनंग कुसमा खरदूषण पुत्री । दक्षिण आंखि फुरकै खरी ।।

लंका से दूत का आगमन

नरमंद दूत लंका तैं आइ । संबुक खड्दूषन की कहे समझाय ।।२६३८।।
रामचंद्र लक्षमण दोउ बीर । सीता नाम त्रिया उन तीर ।।
लक्षमण नैं मारया संबूक । खडदूषण भी हण्यां अचूक ।।२६३९।।
सेना जुडी मरपति घने । नामावली कहां लग गिणे ।।
ऐसी बात अंतहपुर सुणी । रोवैं हणुमांन सब दूंणी ।।२६४०।।
अनंग कुसमा सब परिवार । आई मूरछा खाय पछाड ।।
पीटैं हियोर खोसैं केस । हा हा कार करै बहु भेस ।।२६४१।।
रंगी बजवीण अनंई कोकिला । अैसा सबद उणीं का नीकला ।।
अैसे भौमगोचरी कौण । इण विध प्रगट भए भड जौण ।।२६४२।।
खडदूषण सा मारया राय । करै सोच अति दुखित सभाय ।।
श्रीभूत सुग्रीव का दूत । ग्यानवंत अतिबल संजुत ।।२६४३।।
कवण काज आये तुम दूत । अैसा कारिज कवण बहुत ।।
हनूमांन को करि नमस्कार । पवनपुत बोले तिण बार । ।।२६४४।।

द्वं करि जोडि करि बोलैं दूत । निरभय वचन कहै अदभूत ।।
किषंदपुर का राजा सुग्रीव । माया रूपी विट् सुग्रीव ।।२६४५।।
राज लिया सुग्रीव का छीन । सुग्रीव आप किरिया आधीन ।।
राम लक्षमण भूमिगोचरी । तिण सूं जाइ वीणती करी ।।२६४६।।
रामचंद्र का दरसन पाय । तिण सुं भेद कह्यो समझाइ ।।
मेरो दुःख दूरि करो तुम दूरि । कांम करो करुणा भरि पूर ।।२६४७।।
बिट सुग्रीव दूत दोउ जुटे । बहुत सुभट दोऊ धां कटे ।।
रामचन्द्र ने मारघा चोर । सुग्रीव ने दीया राज बहोरि ।।२६४८।।
इह सुणि हणुमांन आनंद । धनि धनि पुरुष राजा रामचंद्र ।।
पर दुख भंजन हैं श्रीराम । कोटिसिला, उठाई लक्षमण ताम ।।२६४९।।
उनकी सीता किण ही हरी । तिण थी खबर तुम कोई नीकली ।।
हणुमांन सुणि अस्तुति करैं । कुल कलंक सुग्रीव के टरैं ।।२६५०।।
अनंगकुसुमा सुग्रीव की धिया । पिता राज सुणि हरषा हीया ।।
आदरमान दूत को दिया । उचित दांन बंदीजन लीया ।।२६५१।।
सुणत दुःख सगला बुझि गया । बाजा बाजि बधावा भया ।।

हनुमान द्वारा राम के दर्शन करना

हणुमांन सैन्यां ले वणी । बैठि विमान सोभा अति घणी ।।२६५२।।
घोडे हस्ती रथ सुखपाल । लागे कनक रतन बहु लाल ।।
राम लक्षमण दरसन निमित्त । किंषिधपुर आये हनुमंत ।।२६५३।।
कोडि सिला का सुण्या बखांन । अनंतवीर्य का वचन प्रमाण ।।
ये रावण का करि हैं नास । हूं सेवा करिहुं इण पासि ।।२६५४।।
किषंदपुर की समराई गली । सुग्रीव भूप मानैं अति रली ।।
घरि घरि बांधी बंदरवाल । घर घर छाये हाट बाजार ।।२६५५।।
बहुत लोग अगवाणी चले । जाय करि हनूंमांन सुं मिले ।।
हस्ती पर हनुमान कुमार । सैन्यां चली नगर मझार ।।२६५६।।
सिंघासण बैठे रामचन्द्र । लक्षमण पासि सोहैं जिमचंद ।।
सुग्रीव नल नील बैठे तिण पासि । विराधित अंगद अंग सुवास ।।२६५७।।
बहुत नरेन्द्र सभा में खडे । सूर सुभट महागुण भरे ।।
छत्र चंवर रघुपति सिर ढरे । वदनही जोति सोभा अति टरैं ।।२६५८।।
स्याम केस लोचण अति बणे । नासा कपोल विराजैं घणे ।।
रक्त उष्टदंत छबि कुंद । हीरा जोति झलकाकी बुंद ।।२६५९।।

हीया कंठ भुजा सोभंत । उदर कमर केहरि की भंत ।।
कदली जंघ कमल से चरणं । नख की जोति जैसी ससि करणं ।।२६६०।।
रवि प्रताप शशि की ज्योति । हनुमान को दर्शन होत ।।

राम का हनुमान को गले लगाना

चरण कमल वंदे हणुमन्त । रामचंद्र भए कृपावंत ।।२६६१।।
कंठ लगाइ सनमुख बैठाइ । आदरि मनोंहारि बहु भाय ।।

पवनपुत्र द्वारा प्रस्तुति

पवन पूत बोले कर जोडि । प्रभू तुम गुन का नावै ओरि ।।२६६२।।
जैसे रतन समुद्र में घने । ते गुण जाय न किस पैं गिण्यौं ।।
तुमारे गुण प्रभू अगम अपार । राम नाम त्रिभुवन आधार ।।२६६३।।
तुम जीत्या बरबर मलेछ । वज्रावर्त धनुष को खैंचि ।।
सिंघोदर राजा नैं जीत । पिता वचन की पाली रीत ।।२६६४।।
दंडकवन में लह्या सूर्यहास । संबुक खरदूषण कीए नास ।।
प्रति सुग्रीव बिद्या बैताल । तुम कूं देषि भाज्या तत्काल ।।२६६५।।
परपंची कुं मारया ठोर । सुग्रीव राज दीया बहोर ।।
किण ही पास न हुवो न्याव । ततक्षय कीयो तुम उपाव ।।२६६६।।
कहां लौं बरणों तुमारा उपगार । इह जस कीरत चले संसार ।।
बेद पुराण कथा यह चलै । सीता कौं आणौं कौं मिलै ।।२६६७।।
सफल जनम मेरो सब सही । हणुमान बात ए कही ।।
रावण परि लंका को जाउं । सीता को आणउं इस ठांव ।।२६६८।।
रामचन्द्र बोले जगदीश । जे तुम बचन मानें दशशीश ।।
तो सीता मांगउ हम पास । चोरी सुं आण्यां उपहास ।।२६६९।।
रावण चोरी सूं ले गया । तुम चोरैं तो अपयस नया ।।
सीता अन्नपाणी सब तज्या । वाकुं दोनुं कुल की लज्या ।।२६७०।।
हम बिन तह छोडैगी प्राण । इह मूंदडी दीज्यो सहिनांण ।।
कहियो मन रखियो निश्चंत । किहंधपुर राम लक्ष्मण निवसंत ।।२६७१।।
अन्नपाणी वाकुं खवाज्यो बाद । निरभय मन राखियो धीरपाद ।।
जांबुनंद बोल्या अंतरी । उन इक बुधि बताई खरी ।।२६७२।।
रावण लंकापति बलवंत । जिसकी आगन्या तीनूं षंड ।।
कुंभकर्ण भभीषण बीर । इन्द्रजीत मेघनाद अति धीर ।।२६७३।।

लंका के रखवाले घने । पंथी जाण न पावैं किणे ।।
तुम इण विध जाऊं परछन्न । लखैं न कोई इसे जतन्न ।।२९७४।।
तुम हो एक बड़े हैं घणे । तिनसुं बिगाड्यां नहीं बणे ।।
मनुष जनम पावनां कठिन । देख सोच के कीज्यो गमन ।।२९७५।।
हनुमांन जब चढ़ें विमांण । त्रिकुटाचल कौं किया पयान ।।
रघुपति गले लाइकैं मिल्या । लक्ष्मण आदर कीने भल्या ।।२९७६।।
सींव लगैं भूपनि सब आइ । पहुंचाए तिहां हणुवंत राय ।।
हणुमांन सुग्रीव सुं कहै । राजा सब किषिंदपुर रहैं ।।२९७७।।
सबरै लोग बुलावो सूर । सैन्यां जोड़ो दल भरपूर ।।
आग चले रघुपति के काम । मनमें सुमरो श्री जिनराम ।।२९७८।।

अडिल्ल

रामचंद्र जगदीसर परमपुनीत हैं ।।
भव भव कीं हैं पुंन्य धर्म सों प्रीत है ।।
सूर सुभट सब आइ मिले सब भूपती ।।
रावण भया सुन हीन राम आगी रती ।।२९७९।।

चौपई

प्रगट्यो पुंनि मिलइ सब सुख । जनम जनम का मूलैं दुःख ।।
सज्जन मित्र मिलैं बहु लोग । मनवंछित सब भुगतैं भोग ।।२९८०।।
तातैं पुंनि करो सब कोइ । पुत्र कलित्र लक्ष्मी बहु होइ ।।
रामचंद्र का सुणैं पुराण । भव भव पावैं ते कल्याण ।।२९८१।।

दूहा

चढ़ि विमाण हणुमंत, चल्यो राम के काज ।।
सूर सुभट अति ही बली, रूपवंत सब साज ।।२९८२।।

इति श्री पद्मपुराणे हनुमान लंका प्रस्थान विधानकं

४४ वां विधानक

चौपई

महेन्द्रपुर नगर

चढ़ि विमाण देखे बहु देश । दंती पर्वत महेन्द्र नरेस ।।
महेन्द्रपुर की शोभा अति वेष । भया मोह मन अति परेष ।।२९८३।।
इस नगरी मेरा ननसाल । गर्भ समैं मा दई निकाल ।।
मेरी माता कुं दुख दीया । परजंक गुफा में मेरा जन्म भया ।।२९८२।।

अमृत गुपति मुनि देख्या सही । अंजनी सूं सब पिछली कही ।।
इह राजा महेन्द्रसेन । मुझ माता कूं देता नहीं चैन ।।२९८५।।
तो क्यूं होता इतना दुख । रतन चूल तैं पाया सुख ।।
अब मैं इण सौं लेहूं बैर । महेन्द्रपुर कूं मारूं घेर ।।२९८६।।

हनुमान द्वारा महेन्द्र सेन से बदला लेना

बाजे मारू चिमक्यो महेन्द्रसैन । सूर सुभट सूं बोलै वयण ।।
कवण देस का आया राइ । सेना सजो युध के भाय ।।२९८७।।
दुहूंधा छूटैं विद्या बाण । प्रसन्नकीत्ति भागैं बलवान ।।
भया जुध प्रसन्नकीत्ति को बांधि । महेन्द्रसेन कोप्या सिर सांधि ।।२९८८।।
अर्क अमर्फदन हार । धाए सनमुख करि मारामार ।।
पर्वत सिला बिरख उखारि । पडै घणी हनुमंत परि मार ।।२९८९।।
तब हनुमंत विद्या संभारि । बानर बहुत भए विकराल ।।
जा कूं पकडैं लुंचैं देह । कबहु उठाइ सिला कूं लेह ।।२९९०।।
जाकूं मारैं होइ संहार । तोड्या रथ महेन्द्र तिण बार ।।
कूद चढे हणवंत विमांण । मारैं मुकी कोध मण आंण ।।२९९१।।
हनुमांन तब राखैं कांण । पुरुषा सम नाना कुं जाणि ।।
उस ऊपर तू उठावैं हाथ । पुकारैं सकल लोक जे साथ ।।२९९२।।
दुहिता कूं मारैं अग्यांन । अंजनी सुत इह है हनुमान ।।

परस्पर मिलन

इतनी सुणत मिल्या गल ल्याइ । जैसा सुणं था तिसा दिखाइ ।।२९९३।।
कुल मंडण तू उपज्या पूत । सकल गुणां लक्षण संजुक्त ।।
प्रसन्नकीत्ति दिया तब छोडि । मिलकैं अस्तुति करी बहोड ।।२९९४।।
पुर मैं आणि महोछा करैं । सब विरतांत सुणि मन मैं धरैं ।।
मो कूं है कारज उताल । तुम किषंदपुर जाज्यो दरहाल ।।२९९५।।
रामचंद के सेवउं पाय । सेना ले वेगा तुम जाव ।।
महेन्द्रसेन प्रसन्नकीत्ति चले । श्रीपुर जाइ अंजनी सूं मिले ।।२९९६।।
बहुत दिया लक्ष्मी अनैं चीर । कथा कही सुख हुआ सरीर ।।
हनुमान लंका कूं गया । इम किसंधपुर कुं गम किया ।।२९९७।।
रामचंद्र लक्षमण पैं जांय । सुणी सुरत सुग्रीव नरनांह ।।
महेन्द्रसेन आइया नरेस । आदर बहुत दिया आनंद ।।२९९८।।

दूहा

भया मिलाप कुटंब सूं, महेन्द्रसेन नरेन्द्र ॥
हनुमान अर अंजनी, भाग्यां अति आनन्द ॥२९९९॥

इति श्री पद्मपुराणे महेन्द्रसोहितः मिलान विधानकं

४५ वां विधानक

चौपई

दधिमुख द्वीप मातरा देस । मंदिर स्वेत शोभा बहु भेस ॥
बन उपवन नैं बावडी कूप । महा रमणीक सुहावें रूप ॥३०००॥
अंतर बन शुभ थानक खरो । अजगर स्यंध देख मन डरो ॥
तिहां दोइ मुनिवर तप करैं । आतम ध्यान सु निश्चय धरैं ॥३००१॥

कन्याओं द्वारा तपस्या

कन्यां तीन फिरैं तिण ठांव । दावानल सुं जलै ए भाव ॥
एक तप करैं न डोलैं चित्त । चलैं पसेव परीसैं सहंत ॥३००२॥

न द्वारा दावानल बुझाना

हनुमान कुं उपजी दया । समंद्र माहि तैं जल भर लिया ॥
दावानल बुझाई दीयाइ । सगला तपसी लिया बचाइ ॥३००३॥
उनकूं विद्या की सिध भई । जाय मेरु प्रदक्षिणा दई ॥
दोई घडी में आए फेर । मुनि दर्शन कीया तिण बेर ॥३००४॥
हनुमान कीया नमस्कार । पूछयो कन्या का व्यवहार ॥
तुम तप करो कवण निमित्त । अपनी बात कही उत्पत्ति ॥३००५॥

के विवाह की भविष्यवाणी

मिग्रादेस नृप गंधर्वसैन । जाकी कन्या बोलैं बयन ॥
अमरवती राणी गर्भ भई । चंद्ररेषा हूं पहली थई ॥३००६॥
अंगमाला विद्युतप्रभा तीसरी । हमारे पिता स्वयंवर विध करी ॥
देस देस के नृपति आय । कोई न हमारी दृष्टि पडाइ ॥३००७॥
मानभंग ह्वै नृप फिर गये । परियण माहि सोच अति भए ॥
मुनिवर कूं पूछयो मो तात । ए कन्या दीजे किण भांति ॥३००८॥
मुनिवर बोले ग्यांन बिचार । विट सुग्रीव जो मारैं मार ॥
सो होसी इणका भरतार । मुनिवर कह गए उपगार ॥३००९॥

सकल देस का देख्या राव । वह है कवरण तिसका सुंराउं नाम ।।
मुनि के वचन यह झूठे पडे । यह संसय परियरण सब करें ।।३०१०।।
अंगारकं विद्याधर आइ । मेरे पिता सूं कहै समझाय ।।
मैं हूं विद्याधर बलवंत । कन्या विवाह द्यो मोहि तुरंत ।।३०११।।
वाली कही जो मारै ताहि । विट सुग्रीव नाम है जांहि ।।
सो विवाह श्री द्यरण मैं न्याइ । तू अपणे घर कूं उठ जांह ।।३०१२।।
बारह दिन हम कूं इत भए । मुनिवर कूं अष्टम दिन थए ।।
अंगारक आग लगाई बन । तुमे उपाया मोटा पुंन्य ।।३०१३।।
षष्ट बरष जो तपकूं करैं । तब इह विद्या ताकूं फुरैं ।।
तुम दरसन विद्या सिध भई । महापुरुष छो तुम गुण मई ।।३०१४।।
गंधर्व सैन आये भूपती । वंदे चरणं देखि मुनि जती ।।
हनुमांन सूं पूछ्या भेव । सकल बात सुणि कीनी सेव ।।३०१५।।
रामचन्द्र हन्या विट सुग्रीव । किषंदपुर है समंद की सींव ।।
उनसौं जाइ मिलो तुम राइ । हम लंका सीता कनें जाइ ।।३०१६।।
राजा सुंणि कियो उल्हास । ततक्षण गयो राम के पास ।।
रामचंद्र लक्षमरण सूं मिल्या । गंधर्व सैन बली अति भला ।।३०१७।।
कन्यां तीनूं राम कौं दई । मन की चिंता सहु मिट गई ।।
अधिक उछाह भयो मनमांहि । सकल दूरि भाजी उरदाह ।।३०१८।।

दूहा

मनवांछित कारज भए, तप साधे थी तीन ।।
विद्या की तिहां सिध भई, पायो वर प्रवीन ।।३०१९।।

इति श्री पद्मपुराणे गंधर्वसेन लाभ विधानकं

४६ वां विधानक

चौपई

हनुमान का आगे जाना

त्रिकुटा चल गिरि ऊंचा थान । ताहि न सकै उलंघ विमान ।।
पास रही चाल्यो हनुमान । या पर कोट देख्यो हनूराय ।।३०२०।।
प्रथम मंत्र मंत्री सौ कहा । यह गढ कवरण सवारथा तिहां ।।
तब मंत्री बोले सुविचार । सीतां हरी तबं ए सवार ।।३०२१।।
खरदूषण सूं भूझ्या सुण्यां । एक पुरुष सगला दल हण्यां ।।
जब कहु ये यहां आवै चोइ । तो हम दल सब परलई होइ ।।३०२२।।

तामैं माया का गढ करया । बहुत लोग सुभट सौं भरया ।।
कोई देख सकै नहीं कोट । जो कोइ जोवै ता परि चोट ।।३०२३।।
इसनी सुंणि धाया हणवंत । तोडि पौलि भीतर पैसंत ।।

वज्रमुख एवं हनुमान की वार्ता

वज्रमुख सांभलि इह बात । चढ्यो कोप उठी रोम गात ।।३०२४।।
दोनुं जुध करैं बहु भाइ । दोन्यां मांहि न कोई हटाइ ।।
हणवंत क्रोध चढं तिण बार । वज्रमुख मारया तिहां राव ।।३०२५।।
लंका सुंदरी वज्रमुख की धिया । पिता बयर सांभलि जुध किया ।।
सेनां जोडि हणवंत से लडं । मन में बयार पिता को धरै ।।३०२६।।
छोडै विद्या बाण अनंत । झूझै सूरवीर सामन्त ।।
देख्या हनुमान का रूप । लंका सुंदरी मांही भूप ।।३०२७।।

लंका सुन्दरी और हनुमान के मध्य प्रेम होना

ऐसा रूप पुरुष नहीं कोइ । जैसा सु संगम अब होइ ।।
उतसौं हणुमंत देखी ए नारि । हाथां सूं छोडे हथियार ।।३०२८।।
दोनूं कैं रहसि मन भया । लंकासुन्दरी के विमान पै गया ।।
दोनूं कैं मन उपजी प्रीत । भूली सकल युध की रीत ।।३०२९।।
लंका सुंदरी बाण पर लिख्या । उलटा बाण हनुमान पै नया ।।
दोनूं मिलिया कियो विवाह । सुख भोगवै मन उछाह ।।३०३०।।
रहसरली सूं पूर में जाइ । पंचइंद्री सुख भुगतै काय ।।
हणुमान बोले तिण बार । हमैं जाइ हैं लंका मझार ।।३०३१।।
रामचंद्र का करना काम । हमकूं बिदा देहु तुम भाम।।
लंका सुन्दरी पूछै बात । सुण्यां सकल पिछला विरतांत ।।३०३२।।

लंकापति का प्रभाव

कहिक लंकापति अति बली । तिण रोकी है सगली गली ।।
तिहां देवता सकैं न पैठ । तुमको होइ है रावण सूं भेट ।।३०३३।।
पकडै तोकूं बह राखै बांधि । जे तुम चलो मता मन सांधि ।।
कहै हणवंत जो रावण लरै । वा का भय हम चित्त न धरैं ।।३०३४।।
इण विध जाइ करो परवेस । कोई न लहै तुम्हारा भेस ।।

हनुमान द्वारा समझाना

लंकासुंदरी पिता का सोग । रोवै घणी अर भया वियोग ।।३०३५।।

इस विध समझावै हणवंत । वाका था ई मही निमित्त ॥
क्षत्री जे रण में दई पीठ । कुल कलंक लागै तसु दीठ ॥३०३६॥
वा का जाणहु इह विध लेख । ताकों कबहू न करो परेख ॥
समझाई लंका सुन्दरी । लिखे कर्म सों टरै न घरी ॥३०३७॥
जैसा कर्म उपावैं जीव । तैसा भुगतैं अजीव जीव ॥
तुमारा था ऐसा संयोग । पिता मरण पुत्री संभोग ॥३०३८॥
अब तुम सोग करो सब दूरि । सुष भुगतो वांछित भर पूरि ॥
भोग भुगत सौं बीती रात । राम के काम उठया परभात ॥३०३९॥

दूहा

पुण्य पुरुष अति ही बली, इक पलमें भई जीति ॥
देव षेचर सुख ते लहैं, इह ही धरम की रीत ॥३०४०॥

इति श्री पद्मपुराणे लंकासुन्दरी विवाह विधानकं

४७ वां विधानक

चौपई

हनुमान का लंका में पहुंचना

लंका में पहुंच्या हणमंत । भभीषण पैं जाणि दयावंत ॥
अंजनी सुत मंदिर में गया । आदर मांन बहुत तिण दिया ॥३०४१॥

विभीषण से भेंट

बेर बेर पूछैं कुसलात । बडी बार बतलाया बात ॥
कहै भभीषण सुण हणवंत । रावण कूं उपनी कुमत्त ॥३०४२॥
सीता कूं ल्याइया चुराय । परदारा सब को खय जाइ ॥
देस देस हुवा अपलोक । राजनीत में दोषी होक ॥३०४३॥
तीन षंड का रावण राय । खोटी मति इंण करी अन्याय ॥
ऐसे भूप कर्म ए करैं । पृथ्वी पर अपजस सिर धरैं ॥३०४४॥
उत्तम करम करैं ओ नीच । उत्तम मध्यम में क्या बीच ॥
मैं याका सेवक हनूमान । तातैं मैं कही है आंन ॥३०४५॥
सीता रामचन्द्र कूं देइ । इतनां जस जे तुम लेहु ॥

विभीषण का रावण को समझाना

भभीषण सुणि रावण पैं गया । बहुत भांति कर समझाइया ॥३०४६॥

सील रतन मत खोवो वीर । सीलवंत सुख लहै सरीर ।।
सीलवंत की कीरत होइ । सीलैं संतत लहैं सुख सोइ ।।३०४७।।
लक्षमरण खरदूषरण ने मारि । सेनां सकल करी तिरण छार ।।
रामचन्द्र लक्षमरण दोऊ वीर । जानैं सकल जुध की भीर ।।३०४८।।
अब वे आवेंगा इस ठौर । मांचैगी लंका में रोड़ ।।
सीता देई रघु पास पठाइ । अपकी तरणी दुःख मिट जाय ।।३०४९।।

रावरण का कोधित होना

इतनी सुंणि कोप्यो दस सीस । मेरी कवरण सकैं करि रीस ।।
रामचंद्र से मारे घरणे । इनकी गिरणती मां को गरणे ।।३०५०।।
अब मैं सीता आंरणी सही । ऐसा कवण पुरुष है मही ।।
सीतां भेजडुं उन पास । लाजै कुल होवै उपहास ।।३०५१।।
कहा करेगा तपसी राम । मोसुं जीत सकैं संग्राम ।।
जीती है मैं सगली मही । मोकूं किह का ही डर नहीं ।।३०५२।।

हनुमान का वानर रूप धाररण कर सीता के पास पहुंचना

भभीषरण कही हरणवंत ने आय । हनुमांन उठि बन मैं जाय ।।
प्रमदा वन में बैठी घरणी । फलैं फूल वृक्षावली घरणी ।।३०५३।।
लंगूर रूप विद्या सुं करया । सीता कूं देखरण तरु परि चढ़या ।।
बदन मलीन हुंगली छै हाथ । सुमररण जाप जपै रघुनाथ ।।३०५४।।
जाकै राम नाम का ध्यान । वाकै चित्त न आवै आन ।।
दई छाप सीता ढिग जाइ । निरखत सीता नयन उघाड़ि ।।३०५५।।
तज्या सोग मन भयो उलास । दूती मुख देख्यो सु प्रकास ।।
जाय रावरण सौं विनती करी । सीता सोग तज्यो इरण घड़ी ।।३०५६।।
दूती ने दीया बहु दान । मंदोदरी पठई सीता थान ।।

मन्दोदरी और सीता का वार्तालाप

मंदोदरी आय सखी संजुक्त । सीता की अस्तुति की बहुत ।।३०५७।।
सीता बोली तवै रिसाइ । हे निलज्ज मति पाप कहाइ ।।
राम तरणी सुधि पाई अबैं । मेरा सोग बिसर गया सबै ।।३०५८।।
भली करी तैं छोड्या सोग । रावरण सुं भुगतो सुख भोग ।।
तुमकुं सब तै करि हैं बडी । भलां समझि तैं छोडी गुढी ।।३०५९।।

मंदोदरी कहै स्राप तैं लही । वे तपसी मुवा है कहीं ॥
विरा ही पंछी मांगी स्राप । तू मन में गरभै है आप ॥३०६०॥
काहू बन में मारया तापसी । पंछी स्राप ले आयो नसी ॥
स्राप देन मन गहै गही । कहां अजोध्या ताकी मही ॥३०६१॥
एक नगर के वे भूपती । रावण तीन खंड का पती ॥
उनका इतना करै भरम । ऐसा वचन लगाया मरम ॥३०६२॥

सीता द्वारा राम के सेवक को प्रकट होने के लिये कहना

तब सीतां बोली सत बैंन । राम का सेवग देख्या नयन ॥
कोई हूं हो प्रगट्यो आप । मेरे मन को संसय जाय ॥३०६३॥

हनुमान का सामने आना

हणुमान प्रगट्या तिण ठाइ । रही सहेली दृष्टि लगाय ॥
कै इह सुर कै खेचर भूप । कै इह कामदेव का रूप ॥३०६४॥
सीता कूं किया नमस्कार । अस्तुति बहुत करी तिण बार ॥
धनि धनि हो तुम सीता मात । ग्यारह दिन दुख सह्यो इण भांति ॥३०६५॥
देह सुकाई करी अति षीण । राम नाम सुमरण में लीन ॥
अपणां राखियो मन अडोल । रामचंद्र इम बोल्या बोल ॥३०६६॥
किषधपुर में सेना जोडि । अब करि हैं लंका परि दौड ॥

सीता के प्रश्न

सीता कहै सुणु हणुमान । तुम अब राम कद की पहचान ॥३०६७॥
मैं तुम कूं नहीं देख्या सुण्यां । किस विध उपास्यों सनबंध बण्यां ॥
उनु के कारण आये लंक । मनमें कछु मन आंणी संक ॥३०६८॥
ब्यौरा सूं समझावै बात । मिटै संदेह सुंणि विरतांत ॥
लक्षमण तणी कहो कुसलात । स्राप एह पाई किण भांति ॥३०६९॥
कै रामचंद्र नै दीक्षा लई । कै इह स्राप पडी तुम पई ॥

हनुमान का उत्तर

हणवंत बात कही समझाइ । रामचंद्र दंडक वन रहे घाइ ॥३०७०॥
संबूक चन्द्रनखा को पूत । साधी विद्या तप किया बहूत ॥
द्वादश वर्ष में विद्या पूरी । सूरजहास आया तिह घरी ॥३०७१॥
लक्षमण नैं वह लीया खडग । संबू कू मार किया उपसर्ग ॥
चंद्रनखा देखै पुत्र का सूल । तब सुधि गई सबै भूलि ॥३०७२॥

खरदूषण सूं करी पुकार । कपड़े फाडि लगाई हार ।।
खरदूषण अति क्रोध कराय । सैन्यां ले तिहां धाये आय ।।३०७३।।

लक्षमण वासूं मांड्यो जुध । रावण नैं इह पाई सुध ।।
कोप में चले पुहप विमांण । दंडक बन में पहुंच्या आंन ।।३०७४।।

तुम कौ देखि राम के पास । वाकी सुधि गई सब नास ।।
राजनीति सहु वीसर गई । तुमारे हरन की इछा ठई ।।३०७५।।

सिंघनाद रावण पूरिया । रामचंद्र लक्षमण पैं गया ।।
रावण नैं तब तुमकूं हरया । जटापंखी बल करि तिहां लड्या ।।३०७६।।
वाकौं गहि रावण मारिया । ऊपर वैं धरती डारिया ।।
लक्षमण रामचन्द्र कूं देख । कहिक तुम क्यों आए लेख ।।३०७७।।
सीता छोड आये एकली । एह तुम बात करी नहीं भली ।।
वेग जाओ सीता के पास । तुम बिन दुख होवेगा तास ।।३०७८।।

ढूंढे बन बेहड सब खोह । उनकां तुम सेती अति मोह ।।
सिसकति पाया पंखी जटा । देखा अतसमय बन बटा ।।३०७९।।

पंच नांम सुणाए कांन । जटा पंखी गया स्वर्ग बिमांण ।।
लक्षमण खरदूषण नैं मारि । तुमरा हर्ण सुण्या तिण बार ।।३०८०।।

रतनजटी तुम पाछैं दौडि । प्रांण करी रावण सूं झोडि ।।
रतनजटी कै लाग्या घाव । समुद्र में पडे रतनजटी राव ।।३०८१।।

जहां तैं तिरि कंबू गिरि गए । रामचन्द्र ने भेद तिण दिये ।।
विराधित नैं लंका पाताल । आंणि बिठाए रघु ततकाल ।।३०८२।।
सुग्रीव राज परपंची छीन । तातैं हूआ फिरया आधीन ।।
रघुपति परपंची को मारि । सुग्रीव राज दियो तिणबार ।।३०८३।।
उनौ बडा किया उपगार । ता कारण हम कियो है बिचार ।।
रावण तीन खंड का भूप । सीलवंत करुणा का रूप ।।३०८४।।
ताकी कीरत है संसार । अठारह सहस ताकै घर नारि ।।
मैं सेवक रावण का सही । मेरा वचन फिरैगा नही ।।३०८५।।
तुमकूं देगा मेरे साथ । ले पहुंचाऊं जिहां रघुनाथ ।।
सीता हनूमान सूं कहै । तुमसे किते राम ढिंग रहैं ।।३०८६।।

मन्दोदरी का कथन

राम पास किता दल जुडया । मंदोदरी बोलै एही घडा ।।
कै इह बली के राम लक्षमणा । और न कोई चउथा जणा ।।३०८७।।

जब होता रावण का काम । हनूमान करता संग्राम ॥
इह वाके भाई की ठौर । असा हितू न कोई ग्रौर ॥३०८८॥

चंद्रनखा की दीनी पुत्री । असी याकी कृपा करी ॥
या कै कर्म असी मति दई । याके हिरदै असी मति दई ॥३०८९॥

कहां राम भूम गोचरी । ताके दूत होइ आया इण पुरी ॥
सुग्रीव मति मरणे की भई । किपदपुर तपसी कुं दई ॥३०९०॥

अब जो सुणैं रावण इण बात । देख जू तोहि लगावें हाथ ॥

हनुमान मन्दोदरी संवाद

हणवंत कहै मंदोदरी सुणु । तो पै बुधि नर्थं कौं गिणु ॥३०९१॥

तेरी बुधि भई है हीण । छोडि कुमति रावण को दीण ॥
तोहि कहै थे नव जोवनां । तो मैं गुण एकौ नहि बर्ण्या ॥३०९२॥

तो मैं जो होता गुण सार । तो वह क्या नैं हरता परनारि ॥
खोटा करम उदै तुज भया । तेरा गुण सगला गिर गया ॥३०९३॥

रावण की त्रुती तू भई । पटकी महिमा सगली गई ॥
तूं बईरण रावण की सही । वाके जीव का तोकूं डर नहीं ॥३०९४॥

तैं मति दई मरण की ताहि । तोहि रंडापा की भई चाहि ॥
मंदोदरी आदि कोपी सब नारि । रे बानर कहो बचन संभारि ॥३०९५॥

कहो राम लक्षमण कूं मारि । बानर बंसी कहा गंवार ॥
जितने जुडे राम के पासि । होसी उनुं सगला को नासि ॥३०९६॥

सीता का उत्तर

सीता बोली सुणों सब तिरी । राम लखण की कीरति खरी ॥
पहला बरबर मलेछ कूं जीति । वज्रावर्त्त तैं सब भयभीत ॥३०९७॥

असा धनुष चढाया तुरंत । उनसे कौं नहीं बलवंत ॥
खरदूषण मारया संबूक । उनका बांण है महा अचूक ॥३०९८॥

सेना का नाहीं कछु काम । रावण कूं मारैं नहीं राम ॥
समुद्र उतरि जो आवै एक । राखें रघुबंस की टेक ॥३०९९॥

तुम अब निश्चै होस्यो रांड । तुम जसकीर्त्ति मां होस्यो भांड ॥३१००॥

मन्दोदरी का नाटक

मंदोदरी आदि अठारह हजार । सहु मिल बोलैं मुंह थी गाल ॥३१०१॥

कोसै सब भंभोडैं बांह । हनुमान अहटाई जांहि ।।
सकल नारि धरती मैं मिलैं । केरा हनूमान को लेइ चलैं ।।३१०२।।

बसन फाडि लोचैं सिर केस । गई तिहां दशकंध नरेस ।।

हनुमान का सीता से निवेदन

सीता सौं बोलैं हनूवंत । तुम कछु मन मां धरो मति चिंत ।।३१०३।।

जो तुम कहो तो अब ही ले जाउं । अपणौं मन राखो चित ठाउं ।।
अन्न खावो जल पीवो मात । नमस्कार कीयो बहु भांति ।।३१०४।।

हनुमान द्वारा भोजन

इला नगर में कहै हनुवंत । करो रसोई व्यंजन बहुमंत ।।
किये पकवान सुगंधा घणां । छहरि रसोई उत्तिम बणां ।।३१०५।।

भात दाल उत्तम बहु घृत । प्राशुक जल सौं स्नान करंत ।।
श्री अरिहंत का सुमरण किया । एक पहर दिन कर उगिया ।।३१०६।।

मन में असी इच्छा धरी । कोई मुनीस्वर आवैं इस घडी ।।
प्रथम सुपात्र नैं द्युं दान । पाछैं हम करिहुं जलपांण ।।३१०७।।

पूरब जनम किया मैं पाप । तो इहु भयो मोहि संताप ।।
कैं मैं दान कुपात्रैं है दिया । कैं सुत मात बिछोहा किया ।।३१०८।।

सीता द्वारा आहार ग्रहण करना

सीता जी लीयो आहार । इला हणवंत जीम्या तिण बार ।।

सीता का चिन्तन

सीता चितै राम की बात । तीरथ करण पिया संग जात ।।३१०६।।

कैं मैं मुनिवर कियो अपमान । कैं जल पीयो अणछांण ।।
कैं मैं भोजन खायो राति । कैं जिन धरम न सुहात ।।३११०।।

श्री भगवंत भज्या बिण भाव । समकित चित्त न हुवो सुहाव ।।
कुगुरु कुदेवां की कीनी सेव । कुशास्त्र उर धार्या भेव ।।३१११।।
कंदमूल फल खाये घणे । भला शास्त्र मन धर ना सुणें ।।
परनिंदा कीनी अधिकाइ । तो इह उदय भया मुझ आइ ।।३११२।।

अश्रुपात चुवैं द्रग भरे । तबइ हनुवंत बीनती करै ।।
जैं तुम मात चलो मुझ साथ । पहुंचाऊं तुमनैं जिहां रघुनाथ ।।३११३।।

सीता के वचन

सीता कहै सुणो हणुमान । रामचन्द्र आवैं इस थांन ।।
तो मैं चलूं तिनां के संग । उणां बिणां चलणां नहीं रंग ।।३११४।।

हनुमान का प्रस्थान

सीताजी की आग्या पाइ । विदा भए तब हणवंत राय ।।
पुहप गिरिवर पर ठाढा भया । तहां बहुत आई हैं तिरिया ।।३११५।।
बन क्रीडा देखैं थी नारि । हणुवंत रूप देखिया अपार ।।
बाजैं बीण सुणावैं तांन । कोई कहै एही हणुमान ।।३११६।।

मन्दोदरी का रावण के पास जाना

मंदोदरि संगि गई सब तिरि । रावण सु पुकार त्यां करी ।।
हणुवंत तणउं कह्यो विरतांत । उठ्यो कोपि रावण सुणि बात ।।३११७।।

रावण का क्रोधित होकर युद्ध का आह्वान

सूर सुभटां कूं आज्ञा दई । वेगा मारो हणुवंत जई ।।
दौड्या बहुत सुभट तिण बार । हाथों में नांगी तलवार ।।३११८।।
गदा गुरज बरछी तीर कबांन । इणीं प्रकारैं घेर्यो हनुमांन ।।

हनुमान का युद्ध कौशल

लांगुली विद्या भली संभारि । ठौरि ठौरि के वृक्ष उखारि ।।३११९।।
मारे सुभट किये तिहां ढेर । उजाडि दिया उपवन चिहुं फेर ।।
सिला थंभ मिंदिर सब ढाहि । चौपटि किये तिहां ढेर उखारि ।।३१२०।।
सूरवीर झुझे तिह ठौर । कायर भाजि गये सब और ।।
हनुमांन बैठे तिन ठांम । जाके हिए राम का नाम ।।३१२१।।
रावण सुणुं सुभट परिहार । तब भेज्या बहुला असवार ।।
इंद्रजीत नैं मेघनाद । जाणैं सकल जुध अनैं वाद ।।३१२२।।
मारि मारि करि दौडे घणे । जइसैं जम प्राणन कूं हणे ।।
हनूमांन सनमुख भया आंण । मारई सिला करै घमसाण ।।३१२३।।
मैंगल को पकडै चिहुं पास । फैंकै ताहि घणे रहै ठांय ।।
तरु उपाडि कर मारै सीस । एक ही बार मरैं दस बीस ।।३१२४।।
सेनां झुझी राक्षस बंस । इन्द्रजीत मनमें करै संस ।।
हणवंत एक महा बलवंत । जिण मारे सगले सामंत ।।३१२५।।

इन्द्रजीत मेघनाद इम कहै । इन्द्रभूप हम ही तब गहै ।।
इह विध हम तैं कोई न लड्या । हणवंत उपरि दौवा कर्या ।।३१२६।।
छूटै सर गोला जिम मेह । धरती गगन उडी अति खेह ।।
गदा खडग की होवै मार । जित जित दीसै बानर बारि ।।३१२७।।
जाकूं पकडै लेई भभोर । लंका मां हुआ तब सोर ।।

इन्द्रजीत द्वारा हनुमान को पकड़ना

इन्द्रजीत विद्या संभार । नाग पास है इन्द्र का जाल ।।३१२८।।
वासौं बांध लिया हणवंत । मार्या घणां किया दुखवंत ।।
रावण पास आया हनुमान । कोप्या क्रोध बहुत मन आंन ।।३१२९।।
बांधि मुसक हथकडी डाल । गल मैं नींघ जडे तिहंकाल ।।
पांव मांहि बज्र सांकुली । मारे बहुविध हणवंत बली ।।३१३०।।

इन्द्रजीत द्वारा हनुमान का परिचय देना

इन्द्रजीत रावण सु कही । भुंमगोचरी का दूत है यही ।।
इण पहिली महेन्द्रपुर जाय । महेन्द्रसेन जीते तिहं ठांइ ।।३१३१।।
भेजा ताहि कने रामचन्द्र । गंधर्वसेन का मिट्या दंद ।।
मुनिवर का उपसर्ग निवार । भेज्या किषंधपुरी मझार ।।३१३२।।
बज्रकोटि लंका का तोडि । बज्रमुखी नै मार्या ठोडि ।।
लंकासुन्दरी आप विवाहि । बहुरि आया लंका मांहि ।।३१३३।।
सीता नैं खबर राम की दई । मंदोदरी आदि मान भंग भई ।।
पुहपक वन इन दिया उजाडि । ढाहे बहुत हाट बाजार ।।३१३४।।
मिंदर घणां मिलिया छार । सुरसूभट बहु डाले मार ।।

रावण का क्रोधित होना

फोड्या कुआ बाव तालाब । रावण कहै क्रोध के भाव ।।३१३५।।
मैं तोहि ऊपर राखै था मया । तू उठि रामचंद्र पै गया ।।
राम लक्ष्मण सौं कद की प्रीत । उनकौं मिल्या भया तू मित ।।३१३६।।
मेरा डर तुम कूं नही भया । मेरा गुण तू वीसर गया ।।
खरदूषण की तो कुं कन्या दई । देस मांहि तो कीरत भई ।।३१३७।।
बहुत देस दीने तुम सही । तै आपणे मन ग्रैसी गही ।।
कहां राम लक्ष्मण तापसी । भ्रमति भ्रमति उन पाई महीवसी ।।३१३८।।

उनका दूत भया है आण । तोइ न भई कोक की काण ।।
भई निलज्ज पणा है तेरा । जिय में कछु विवेक नहीं धरा ।।३१३६।।
पवनंजय का तू नांही पूत । काहू वरांक तैं उपज्या दूत ।।
जे तू होता उत्तम बंस । तो मांही मानता उपदेस ।।३१४०।।
अब तोकुं मार करूं निरजीव । चंद्रहास सुं काटूं ग्रीव ।।

हनुमान का उत्तर

हनुमंत बोल्यो निरभय बैन । तो पापी को होसी कुबैन ।।३१४१।।
अठारह हजार तेरैं थी अस्तरी । तैं काहे कूं सीता हरी ।।
तेरा मरण आया है सही । ओछी मति तैं मनमें धरी ।।३१४२।।
रत्नश्रवा कुल ओछा भया । राक्षसवंस कलंक तैं दिया ।।
तेरे कुल का हूं है नास । अब तु छोडि जीव की आस ।।३१४३।।
तेरा नहीं देखण का मुख । औंर आर क्या मानैं दुख ।।
रावण कोपि गह्या कर खडग । हणवंत को कियो उपसर्ग ।।३१४४।।
देखैं बहुत पुरुष अरु नारि । नंगा करि फेर्‌यों घर बार ।।
अपणां प्रभू नैं ज्यां दीधा पीठ । ताका मूल ए सब दीठ ।।३१४५।।
घर घर का रावडा बहु जुडैं । धारैं खेह सहु मूंठी भरैं ।।

हनुमान का मायावी विद्या द्वारा लंका दहन

हनूमान सब बंधन तोडि । विद्या कौं संभालि बहोडि ।।३१४६।।
लंगूर रूप तिहां सेना करी । बीजली सम पूंछ अगनि संभरी ।।
सगली लंका दई जलाय । सगला मंदिर दीए ढहाय ।।३१४७।।
चौपटि करि लंका का देस । चढि विमान हनूमान नरेस ।।
सीता सुण्यौ पकड्यो हनुमान । रोवै बहुविध करैं आयान ।।३१४८।।
इला वाहन कहै चिंता मति करौ । हनूमांन अपरं बल धरौ ।।
लंका कूं दहवट करि गया । सीता आसीरवाद यह दीया ।।३१४९।।
चिरंजीव हूं है हणमंत । सीता असीस कहै बहुमंत ।।
तिहूंलोक हूं जो तुझ नाम । लहियो सदा सुख विश्राम ।।३१५०।।

दूहा

हनूमान साका किया, पुन्यवंत बलवान ।।
वानर राव जस प्रगट्यो घणौं, कारिज कियो प्रमांन ।।३१५१।।

इति श्री पद्मपुराणे हनूमान सीता मिलन विधानकं

४८ वां विधानक

चौपई

हनुमान का पुनः राम के पास आकर पूरा वृत्तान्त कहना

हणुमान सेन्यां में मिल्या । फिरे छत्र ता ऊपर भला ।।
किषधपुरी में पहुंच्या जाइ । अपणें मंदिर बैठा आइ ।।३१५२।।

सुग्रीव आदि भूपति सब चले । हनूमान सेती सहु मिले ।।
लंका तणु सुण्यु विरतांत । सुग्रीव कहै रघुपति सौं बात ।।३१५३।।

बीती रयण उगोयो भाण । राम पास पहूंचे हनूमान ।।
नमस्कार करि करी डंडोत । तिहां भूपति खड़ा बहूत ।।३१५४।।

पूछें राम सीता कुसलात । हनूमान कहैं सब बात ।।
प्रमदा बन में सीता रहै । दूती बूल बचन तिहां कहै ।।३१५५।।

सीता अनपांणी नहीं रोच । नाहि निवाय करैं बहु सोच ।।
उसकै सदा रहै तुम ध्यांन । मनमें कछुवन आवै आन ।।३१५६।।

मैं उनकू खवाई रसोई । राति दिवस बीतैं इम रोइ ।।
सब दूती मैं दई बिडारि । रावण आगैं करी पुकार ।।३१५७।।

रावण तणे भेजी निस सैन । मैं लंका मैं कियो कुचैन ।।
तोडि बाग फोड्या सब गेह । लंका जाल करी सब खेह ।।३१५८।।
तुम सूं आइ कहा संदेस । मन आवै सो करो नरेस ।।

राम की चिन्ता

राम नयन सेती बहै नीर । जा हिरदै सीता की पीर ।।३१५९।।
धिग धिग भाई ऐसा जीवणां । हम जीवत सीता दुख घणा ।।
जे सीता का दुख करैं दूर । तो हम भली कहावैं सूर ।।३१६०।।

जिम केहरि दावानल मांहि । ताका बल चालै कछु नांहि ।।
ऐसी कठिन बणी अब आय । इण विध सोच करैं रघुराय ।।३१६१।।
लछमण कहै तो पहुंचो लंक । तो मन की पोवैं सब संक ।।
धन्य सुग्रीव धन्य हनुमान । इनु दई सीता सुधि आनि ।।३१६२।।

अब जो भावमंडल ह्वै संग । रावण तणो करैं मान भंग ।।
सुग्रीव सेती बोलैं रघुनाथ । भामंडल आवै हम साथ ।।३१६३।।

वाकूं हम ढिग लेहु बुलाय । कै हमने द्यो पंथ बताइ ।।
सायर तिर हम लंका जाइं । तुम इहां रहो अपणी ठाइं ।।३१६४।।

राजाओं द्वारा निवेदन

मिवनाद बोले भूपती । हनुमान कीनी यह गती ।।
उपाड वृक्ष ढाहे प्रासाद । अवर कियो रावण सूं वाद ।।३१६५।।

सूरवीर मारे बहु लोग । घरि घरि कियो लंका में सोग ।।
लंका वास करो इण खेह । कुवा वापी ढाहे सब सेह ।।३१६६।।

रावण मन में राखं बैर । सगलां कूं मारैगा घेर ।।
रावण ने पकडी अनीत । विसर गया धरम की रीत ।।३१६७।।

युद्ध की तैयारी

वासुं सब मिल करस्यां जुध । अवर न कछु विचारो बुधि ।।
चंद्रमरीच इम भणै नरेस । नृप एकठा भए सहु देस ।।३१६८।।

रामचंद्र का करो उपगार । रावण मारि मिलावो छार ।।
धनगति गज मुंन गति कुरकेत । भीम नल नील सुग्रीव समेत ।।३१३६।।

वज्रमूकरण अर भूपति घणे । सब का नाम कहां लग गिणें ।।
महेन्द्रसेन पवनंजय राय । प्रसन्न कीर्त्ति की अधिकाइ ।।३१७०।।

विद्याधर एकठे सहु भए । सेना जोडि राम संग गये ।।
असवनी सुदी पंचमी दिनेस । दीतवार को चले नरेस ।।३१७१।।

नक्षत्र कार्त्तिका मेष था लगन । अवर भए सभी सुह सुकन ।।
लक्ष्मी सिर गागर दही । बलै अगनि तिहां धूआं नहीं ।।३१७२।।

पीछें आवत मंद समीर । बोलै काक वृक्ष गुण धीर ।।
मुनिवर दूं देखे ले अन्न । तीसूं उपजै काया चैन ।।३१७३।।

लंका तणां गिरा कांगुरा । रावण चित तब चमक्या खरा ।।
घडी साध सुभ कीया पयाण । सेना जुडी दिनां उनमान ।।३१७४।।

राम लक्षण दोऊ चढे विमाण । हय गय रथ पायक नीसांन ।।
मैंगल कोरि लाख पचास । बहुत विद्याधर रघुपति पास ।।३१७५।।

वेलंधर परवत परि गया । समुद्र नाम राजा तिहां रह्या ।।
नल नें पकडि यह्यौ नरेन्द्र । आणि दिया वाको करि बन्द ।।३१७६।।

लाग्या रामचंद्र के पाय । छोडि दिया तबै रघुराय ।।
वेलंधरपुर इण ने ले जाय । कन्या च्यारि हरि नैं दई आय ।।३१७७।।

श्री कमला दूजी गुणमाल । सुश्री रतनचुला सुविसाल ।।
उहां तैं चले भये परभात । सुवेल परवत पहुंचे रघुनाथ ।।३१७८।।

सुषेण राय परि भेज्या नील। पकडिया तुरत न लागी ढील ॥
हंस दीप कीयो विश्राम। सब सेना उतरी तिरा ठांम ॥३१७९॥
जब लग भामंडल नहीं मिले। तब लग हंस द्वीप तैं न चले ॥
रही सेन सगली तिन ठौर। भूपति आय मिले सब ओर ॥३१८०॥

अडिल्ल

पूरब पुन्य उदै बहुत सेना जुडी
जीत भई मग चलत ही साथी पुरी ॥
चरण नये सब आय भूप बंदे घणां
दिन दिन अधिक प्रताप बढै चऊ गुणां ॥३१८१॥

इति श्री पद्मपुराणे राम लंकापुरी प्रस्थान विधानकं

४९ वां विधानक

चौपई

रावण का चिन्तन

रावण ऐसी पाई सुधि। क्रोधवंत होई सोचै दसकंध ॥
अजोध्या नृप भूमिगोचरी। हम ऊपर आवै डर नहीं करी ॥३१८२॥
देखो इनहू लगाऊं हाथ। मेरे लोग सब मिलिया साथ ॥
यह देखो संसारी रीत। जिणकौं मैं जाणै था मित्त ॥३१८३॥
सेवग मोसौं बैरी भए। ऐसा कर्म उनां नैं किये ॥
रामचंद्र किषधपुर राखि। सुग्रीव मेरी अपकीरत भाष ॥३१८४॥
हनूमान अवर नरपति मिलें। मेरा उदय न चाहैं भले ॥
उनको समझा मैं आपणां। एसहु किये उनु का उपणां ॥३१८५॥
जे तपसी सौं मिलते नहीं। तो आए सकते नहीं ॥
ए ल्याये उनकूं इस ठौर। एती सेन्यां उन साथैं जोरि ॥३१८६॥
ऐसा निडर नहीं कोई और। ताथी मांची इण ठां रौर ॥
देख जु इनसौं ऐसी करूं। पकडि लेय जममंदिर धरूं ॥३१८७॥
मेरा भय कछु चित्त न धर्‌या चित्त। अपणा नहीं विचार्‌या मित्त ॥
परजा डरपै लंका मांझि। करै सोच निस वासर सांझ ॥३१८८॥

युद्ध की तैयार

रावण के सोलह सहस्र भूप। मुकुटबंध ते दिपैं अनूप ॥
मारिच मगदंत अमीचंद। हस्त प्रहस्त अने असफंद ॥३१८९॥

राजा भणे सभा में खडे । एक एक तैं अतिबल भरे ॥
रावण कै बाजैं नीसांन । रहे सेनो सबद सुंण कान ॥३१६०॥

सोरठा

मनि मनि आज दिनेस, करं काज जो प्रभु तणों ॥
आनंदीया नरेस, सबद सुनत रणभेरि को ॥३१६१॥

चौपई

ओझाओं का रावण को पुनः समझाना

ओभा सुभट जुडे सब आय । कुंभकरण भभीषण राय ॥
इन्द्रजीत बोले कर जोडि । उज्जल कुल मति लगावो खोडि ॥३१६२॥
अब लौं जस निर्मल चहुं देस । परत्रिय चोरी सुनो नरेस ॥
चढै अपलोक कछु किये अनीत । समझो प्रभू धरम की रीत ॥३१६३॥
वेद पुराण सुणी इह बात । परनारी है विष की जात ॥
खाय हलाहल इक भव मर । परदारा तैं भव भव दुख भरै ॥३१६४॥
सीता रामचंद्र कूं देहु । निर्भय बैठा राज करेहु ॥
अठारह सहस्र हतैं तुम नारि । रूपवंत शशि की उणहारि ॥३१६५॥
कहा एक सीता बापडी । ता कारण एह अडी आपडी ॥

रावण का पुनः क्रोधित होना

सुणि रावण कोपियो बहुत । इन्द्रजीत क्यों बरपै पूत ॥३१६६॥
अस्त्री है चिंतामणि रत्न । जो आ पावै काहू जतन ॥
हाथ चढी किम दीजे छोडि । सूर सुभट को लागै खोडि ॥३१६७॥
ऐसा भय किसका मैं धरूं । जे हूं अपणी टेक तैं टरूं ॥
जो तुम जुध करवे सौं डरो । जाय कहां छिपकै दिन भरो ॥३१६८॥

बिभीषण का इन्द्रजीत से वचन

भभीषण इन्द्रजीत सौं कही । तुम सम कोई दुरजन नहीं ॥
तू नैं इसे सुणाये वैन । या के मनकूं भयो अचैन ॥३१६९॥
भली बात याहे लागै बुरी । आई याके मरण की घडी ॥
राम लछमण दोऊ बलवंत । उनका सेवग है हनुमंत ॥३२००॥
सुग्रीव और विद्याधर घणे । भामंडल पराक्रमी सुणे ॥
दिन दिन सेना उन संग बधै । पल में उनके कारज सधै ॥३२०१॥

इनें अपणा नहीं आण्या मर्णं । कीए जाय सीता का तर्णं ॥

रावण का विभीषण पर धावा बोलना

उठ्यो कोप रावण सुणि बात । चन्द्रहास ऊपरि धरि हाथ ॥३२०२॥
भभीषण कूं मारण निमित्त । असी सोटि विचारी चित्त ॥
भभीषण कूं तब चढ्यो विरोध । गह्या थंभ पाथर का सोध ॥३२०३॥
दोऊ वीर क्रोध कै भाय । कुंभकरण बोल्या समझाय ॥
भभीषण सुं कहै तु धरि जाहु । तब लग क्रोध घटै मन मांहि ॥३२०४॥
सीतल वचन रावण ते कहै । भभीषण लंका में नहीं रहै ॥
मात पिता बहु पायें पड़ै । सगला सज्जन अरज करै ॥३२०५॥

विभीषण का राम के पास आना

तीस अछोहणी दल लिया साथ । चल्यो सर्णं जिहां रघुनाथ ॥
तीन सहस लिया संग नारि । और सकल छोड्या परिवार ॥३२०६॥
हंस दीप है जिहां श्री रामचंद्र । गयो भभीषण को सब दुंद ॥
सागर बंसी भभीषण कु देख । असी समझ करैं मन प्रेष ॥३२०७॥
रावण भेज्या है जुध निमित्त । हनुमान आदि संभल्या सामंत ॥
गहि हथियार उभा सबै तिहां । आगन्या होय तो अब मारैं इहां ॥३२०८॥
वज्रावर्त्त धनुष गहि राम । समुद्रावर्त्तं लक्षमण गहि ताम ॥
भभीषण सेना बाहिर रही । आप आय पोल्या सौं कही ॥३२०९॥

विभीषण का द्वारपाल से निवेदन

भभीषण आय खडा है वार । मेरा जाय कहो नमस्कार ॥
आग्या होय तो दरशन करै । सेवग भाइ वीनती करै ॥३२१०॥
करी वीनती दूं कर जोडि । भभीषण ऊभा है तुम पौलि ॥

मन्त्रियों का परामर्श

आग्या होय तो देखै नर्णं । मंत्री लागे मतो कर्णं ॥३२११॥
रावण तनो भभीषण वीर । कछु परपंच आया तुम तीर ॥
अब इहु जो मांडेगो राडि । आवायो मति सभा मझार ॥३२१२॥
मति सागर दूजा मंतरी । उणी इक बुधि उपाई खरी ॥
रावण भभीषण भयो वइर । दूती इसा कह गई सबेर ॥३२१३॥
तुमारी सर्णं भभीषण आव । कृपा करो तो दर्शन पाइ ॥
भभीषण रामचंद्र कुं देखि । लक्षमण तणु रूप अति प्रेष ॥३२१४॥

विभीषण द्वारा राम का दर्शन

रामचंद्र का देख स्वरूप । बंदे चरण भभीषण रूप ।।
राम कहैं आवो लंकेस । तोकुं दिया लंका का देस ।।३२१५।।

भभीषण मन में भयो आनंद । मेरे तुमही देव जिणंद ।।
कहो सकल किम लडिया भ्रात । होवैं क्रोध कर्म की बात ।।३२१६।।

गिरभो भ्राता थे वे दोइ । कंपापुरि जाणैं सब कोइ ।।
सूरज देव राज सु करंत । मतिबली पटराणी गुणवंत ।।३२१७।।

सुगुपति मुनि भाष्यो धर्म । लीयो व्रत उण जाण्यो मर्म ।।
गिरगोभूत जाय था कहीं । इनैं रत्न लिखमी चहु लही ।।३२१८।।

आवत देखे लोग बहुतं । ढांक मही लिखमी संयुक्त ।।
फिरि वे आए घरि आपणैं । उहां अवरैं की अवरैं बणैं ।।३२१६।।

कौसंबी नगरी के मध्य । बहुधन सेठ कुपदा मध्य ।।
अहदेव महादेव दोइ पूत । बहुधन मूंवा आव पहूंत ।।३२२०।।

ए दोन्युं उदिम कू चल्या । वे रत्न लखमी पाया भला ।।
लखमी घर लाया आपणैं । वे दोई जाई धरती घणैं ।।३२२१।।

दोन्यूं लडैं न मानैं हार । गिरि गोमूत सूं भई रारि ।।
गोमूत कूं मारैं तिन ठोर । अशुभ कर्म तैं हुवा भौर ।।३२२२।।

अहदेव महादेव ल्याया रतन । गिरितैं पहिचान्या सब जतन ।।
सुणी बात मन में पछिताइ । उठै लहरि पावक कै लाग ।।३२२३।।

मैं क्युं मारया अपनां वीर । अइसैं समझि न धारैं धीर ।।
तातैं करम इह करतूति । लोभैं हणैं पिता नैं पुति ।।३२२४।।
सुणी बात भाज्या संदेह । हंसद्वीप दिन आठ रहेइ ।।

सेना के साथ लंका द्वीप में पहुंचना

छ्योढ सहस क्षोहणी दल जुड्या । चार सहस रावण कैं पड्या ।।३२२५।।

भामंडल साथ क्षोहणी सहस । अष्ट दिवस रहे द्वीप हंस ।।
बाजा बजाइ लंका में गए । ए सबद रावण कैं भए ।।३२२६।।

सोरठा

रावण सकल बुलाये लोग । अैसा बण्यां लिहां संजोग ।।
सूर सुभट सब इकठे भये । बांनई धारी भूपति नए ।।३२२७।।

रावण खोट्या कुद, अंतरिगति सोच्या नहि ।।
छोड धरम का मूल, सज्जन तैं दुरजन भया ।।३२२८।।

इति श्री पद्मपुराणे भभीषण राम समीप आगमन विधानकं
५० वां विधानकं

चौपई

अक्षोहिणी संख्या

श्रेणिक नृप जोडे दोउ हाथ । किरपा करि भाषो जिन नाथ ।।
अक्षोहिणी गिनती किस भांति । मोकूं समझावो विरतांत ।।३२२९।।
श्री सरवज्ञ के उत्तम बैन । सुणते सब के मन चैन ।।
गोतम स्वामी करैं बखान । बारह सभा सुणैं धरि कान ।।३२३०।।
अष्टप्रकारी सैन्यां संग । च्यारि च्यारि इक इक के अंग ।।
पति हाथी घोडा ले रथ । पायक और सुभट बहुथ ।।३२३१।।
हाथी एक पयदल पांच । तिगुनैं एक एकतैं बांच ।।
ऐसी विधतैं गिणती चढै । इस लेखे आठ लौं बढै ।।३२३२।।

अथ अक्षोहिणी कहै छै । पति १ सेना २ मुख ३ अनीक ४ वाहनी ५ चमू ६ चक्र ७ दंड ८ ये आठ प्रकार की सैना कही । नवमी अक्षोहिणी कहजे । नवघोडा ९ अर तीन रथ ३ तीन हाथी ३ पनरह पायक १५ ए च्यार प्रकार सेनां का भेद छै ।। हिवै मुख कहैं छै । हाथी ९ रथ ९ घोड़ा २७ पयदल ८१ पयादा १३५ ए अनीक हुई । अथ वाहनी कहैं छैं । गज ८१ रथ ८१ घोड़ा २४३ इक्यासीय दस च्यार सै पांच । ए वाहनी कहैजे । चमू कहैं छैं । दोय सैं तियालीस २४३ हाथी रथ २४३ सात सैं गुणतीस ७२९ घोडा बारा से पनरा १२१५ पयादा ए चमूं कहैजे । विसधनी कहै छै । रथ ७२९ सात सैं गुणतीस हाथी ७२९ सात सैं गुणतीस । घोडा २१८७ इकबीस सै सत्यासी । पायक छत्तीस सैं पैंतालीस ३६४५ । हिवई दंड कहै छै । इकबीस सै सत्यासी २१८७ हाथी । इकबीस सै सत्यासी २१८७ रथ ।

घोडा पैंसठ सौ इकसठ ६५६१ । प्यादा नवसौ पैंतीस । अर दस हजार हुवै ए दंडक कहेजे । अक्षोहणी कहै छै । गज इकबीस हजार । आठ सं सिहत्तर रथ । पैंसठ हजार छः सै दस घोडा । एक लाख नौ हजार तीनसै पचास पैदल । एक अक्षोहणी कहे जे । प्रथम पति १ सेनापति २ गुलम ३ वाहिनी ४ पंचम सति । छठी प्रतिनाच ६ । सातमी चमुं ७ । अनीकनी ८ मने दस गुनी भई ।]

दोनों दलों के सामर्थ्य की चर्चा

इतने तैं अक्षोहिनी इक होय । इस विध समझो गुनीजन लोय ।।
दोउं धां दल हुआ इक ठोर । मता करैं दोन्यु फोजा सोर ।।३२३३।।

कोइक कहै रावण दल घणां । रामचंद संग थोडा जना ।।
राक्षस बंसी है बलवंत । बानर बंसी किम होइ करंत ।।३२३४।।

जे राख्यस बानर कुं भखैं । औसें लोक आपस में बकैं ।।
कोई कहै बली हनुमान । लंका कूं ढाही उन आंन ।।३२३५।।

सब लोगन कूं दीनी मार । बन उपवन कर दिया उजार ।।
सनमुख कोई जुध न करि सकैं । इसही विध राष्यस संसकैं ।।३२३६।।

कोई कहै रावन अति बली । कुंभकरण की कीरत भली ।।
इन्द्रजीत मेघनाद बलवंत । इन्द्र सूं भी जीत्या तंत ।।३२३७।।

रामचंद्र जीतैं किस भांत । रावण का बल कह्या न जात ।।
कोई कहै ए दोन्यू वीर । दंडक बन में कोई न तीर ।।३२३८।।

खरदूषण सुं लक्षमण लड्या । सैन्यां सुधी परलय कर्या ।।
रामचन्द्र पै बजावर्त्त । लक्षमण कनै समुद्रावर्त्त ।।३२३९।।

रामचन्द्र लछमण सु पुनीत । रावण करीं पाप की रीत ।।
जिहां धरम तिहां ह्वै जय । रावण का होवैगा क्षय ।।३२४०।।

ऐसैं आपस मैं करैं सोच । अन्य वस्तु की भूली रूच ।।
कोण मरैं कोण जीवत बचैं । को व्यर्थ बात मैं पचैं ।।३२४१।।

धरम मार्ग किया सुध मूल । रात दिवस मन किया अडोल ।।
जे कोई छोडि जाइ संग्राम । दिक्षा ले करि आतम कांम ।।३२४२।।

तो होवै लोक में अपलोक । कातर कहै ताकूं सब लोक ।।
औसी प्राणि बणी है कठिन । तांको कछु न होवै जतन ।।३२४३।।

इह भवसागर में जीव । भ्रमैं च्यार गति गाढी नींव ।।
धरम दया तैं उतरैं पार । जो कोई सहै संयम का भार ।।३२४४।।

दूहा

आरत रौद्र निवार करि, धरम सुकल धरि ध्यान ।।
आतम सौं लव ल्याइकैं, तो पावै निरवाण ।।३२४५।।

इति श्री पद्मपुराणे उभय बल मांन विधानकं

५१ वां विधानक

चौपई

युद्ध के लिये सैनिकों का प्रस्थान

रावण नृप इम आज्ञा दई । साजो सैन भूप सज भई ।।
रामचंद्र सौं करियो जुध । सब कूं भई मोह की बुधि ।।३२४६।।

अपने अपने गेह मंझार । करैं आलिंगन सब नर नारि ।।
पुत्र पौत्रादि सकल परिवार । लपटैं कंठ अनैं करै पुकार ।।३२४७।।
सौंपी देह स्वामी के काज । अब जो रहै तो पूरी लाज ।।
जे जीवांगा तो मिलि हैं आय । उत्तम क्षमा करि निकसे राय ।।३२४८।।
रोवैं कुटुंब सब बारंबार । उन कूं व्याप्या मोहि अपार ।।
ते कछु जनम सेवग का जान । तजि कुटुंब देवैं निज प्रांन ।।३२४६।।
करैं बीनती रोवैं अस्तरी । जद तुम जीत फिरो तिण घरी ।।
जब हम तुमतैं हुवै मिलाप । तुम मुझ होइ संताप ।।३२५०।।
अपणां तजों तिण बार । तुम बिन सगलो जगत उजाड ।।
कोई नहीं बिवाही नारि । ते तेहीं समझैं सुख की बार ।।३२५१।।
मोह फंद मैं बांधी दुनी । असी कठिन सबसौं बनी ।।
कोई आभर्ण करि असमांन । सुधरे बागे पहरे भांन ।।३२५२।।
सब ही नैं बांधे हथियार । अपणा अपणां रूप संवार ।।
पूज्या पहलां देव जिणंद । सूरवीर मन करैं आनंद ।।३२५३।।
धन्य दिवस सही है आज । सारैं स्वामि धरम का काज ।।
कोई कहै किस सीता हरैं । ता कारण इतने बल जुडे ।।३२५४।।
कुण कुण मरि हैं रण के मांझ । रावण मांही मघरम की भांझ ।।
सीता को जो देई पठाइ । तो कां जुध होता इण बार ।।३२५५।।
अब हम जाई दिक्षा लेहु । छोडि सब संसारनि एहु ।।
कातर कहैं लोग सब कोइ । ए बिचार उनके मन होइ ।।३२५६।।
रावण के बाजैं नीसान । निकले सकल लोग तजि थान ।।
हस्त प्रहस्त अगाऊ चले । तिणां के संग सुभट बहु मिले ।।३२५७।।
मारीच स्यंध जान भूपती । स्वयंभू प्रथोत्तम उज्जल मती ।।
पृथ्वी बल चंद्राक अवर चंद्रसुक । नरपति बहुत अवर असुक ।।३२५८।।
कुंभकर्ण अनैं इन्द्रजीत । मेघनाद अति महा पुनीत ।।
अढाई कोडि कवर असवार । सोमैं जिसा देव उणिहार ।।३२५९।।
रतनश्रवा अरु मालवान । रावण चाल्यो गज पलांण ।।
केई भूमिर केई बिमांन । छाई किरण जाणुं लोपैं भांण ।।३२६०।।
होवै कोलाहल सबद न सुणैं । उडी धूल अंधियारो बणैं ।।
पचास लाख रावण की डोर । हस्ती मातैं उभै पोर ।।३२६१।।

दूहा

रावण की सेन्या घणी, तिसको नांही अंत ।।
एक एक रथी सरस रावण अति बलवंत ।।३२६२।।

इति श्री पद्मपुराणे हनुमान लंका प्रस्थान विधानकं

५२ वां विधानक

चौपई

राम की सेना

रामचंद्र अब साजी सैन । कीयो गवन महूरत जैन ।।
नल अरु नील अगाऊ चले । सूर सुभट लीने संग भले ।।३२६३।।

हनुमान जांबूनंद समान । जैमित्र चंद्राभ बलवांन ।।
चरधन कुमर रतन महेन्द्र । भामंडल बहु अपर नरेन्द्र ।।३२६४।।

विद रथ प्रति कंठ महाबल । सूरज उदय सरव प्रिय प्रदल ।।
वेल प्रिय सरव सार्दूलबुध । सर्वोत्रएल सरव बुध ।।३२६५।।

निव निष्ठ अव संत्रास । विघन सुदन नटवर पास ।।
पापी लोल महामंडल । संग्राम चपल का बहु बल ।।३२६६।।

परम धीर प्रस्तार दिनवांन । भगदत्त द्रुपद पूर्ण चंद समान ।।
विधुसागर निससागर भूप । असकेद पादप चंद्र सरूप ।।३२६७।।

इंद्रोवधि और गोतर बास । सकट पौन बज्रकरण पास ।।
बलसील सिंधोवर समेद । अचल साल जाणें सुभ भेद ।।३२६८।।

महाकाल अवर रविकाल । अंगतिलक सुसैन तरवाल ।।
भीम महाभीम रथ धरम । मनोहारि हर मुख बहु भरम ।।३२६९।।

धरमति सार अरु सूरजजटी । सिवभूषण अवर रतनजटी ।।
विराधित मनोहर खेम । नंद नंदनी विभत बाहून जो हेम ।।३२७०।।

बहुत भूप की सेना वणी । नामावली न जाये गिणी ।।
पचीस लाख हाथी की ओर । सुग्रीव साथ उभा नृप और ।।३२७१।।

भामंडल फिरावे छत्र । अभे लक्षमण महा विचित्र ।।
बाजा बाजैं होवैं सोर । अंगद अगाऊ हुवो तिण ठोर ।।३२७२।।

रावण के हस्त प्रहस्त योद्धाओं की हार

दोउं सेन्या सनमुख भई आय । हस्त प्रहस्त लडैं दोऊ राय ।।
उत नल नील लडैं अस्त्र बांधि । बदन जुध भयो बहु भांति ।।३२७३।।

हस्त प्रहस्त कैं लाग्या घाव । मूर्छा ऊभा सेनापति राव ।।
नल नील दोऊ जीत्या वीर । रामप्रताप अति साहस धीर ।।३२७४।।

श्री रघुवंस प्रताप, इनका बल लखतें धस्या ।।
रावण मन संताप, हस्त प्रहस्त दोन्युं मरया ।।३२७५।।

इति श्री पद्मपुराणे हस्त प्रहस्त बध विधानकं

५३ वां विधानक

चौपई

हस्त प्रहस्त कथा

श्रेणिक नृप पूछै कर जोडि । हस्त प्रहस्त की कथा बहोडि ।।
राक्षस बंसी के सेनापती । उनै हणे बहुते भूपती ।।३२७६।।

इन सनमुख कोई जीत न सकै । नल नील आगे किम भकै ।।
नल नील नें मारया ततक्षणे । इह अचिरज कछु कहत न बणे ।।३२७७।।

इनका भेद ब्योरा सुं कहो । इह संसय मो मन का गहो ।।
श्री जिन की वाणी तब हुई । बारह सभा सुणै सब कोइ ।।३२७८।।

श्री गौतम समभावैं भेद । सब संसय का हो विच्छेद ।।
कंस सुमत सोमर का नाम । इंद्र कपिल बाभण तिण ठांम ।।३२७९।।

करण खेती करम किसांण । ते नित करैं दया सुं दांण ।।
नित उठि दान सुपात्रैं देइ । पूजा रचना सदा करेइ ।३२८०।।

रागद्वेष इन कै मन नहीं । सोक पड्यां उपजाम्यां कहीं ।।
निरधा कुटुंब नयासिक दार । इन्द्र कपिल द्विज लेहु हकार ।।३२८१।।

मांगै दामनि उपज्या खेत । मारैं किसांण द्रव्य के हेत ।।
भोग भूमिहर खेत्रं जाइ । दोन्युं विप्र देवगति पाइ ।।३२८२।।

दोय पल्य की भुगती आव । उहां तैं लही स्वर्गगति ठांव ।।
निरधा कुटुंबन बन कै मांझ । दोनुं चले पड गई सांझ ।।३२८३।।

दोय पल्य की भुगती आव । उहां तैं लही स्वर्गगति ठांव ।।
निरधा कुटुंबन बन कै मांझ । दोनुं चले पड गई सांझ ।।३२८३।।

सीतकाल सुं दुखित भए । मरकरि सातमी नरकैं गये ।।
भरमे लख चौरासी जौनि । ते दुख वर्णं सकं कवि कौन ।।३२८४।।

दोऊं विप्र घर सुत भए । जनमत मात पिता मर गये ।।
दुख में दोउं सयाणा भए । संन्यासी पैं दिख्या लये ।।३२८५।।

पंचाग्नि साधै तप करै । काबडू जोग सदा ही धरै ।।
दोऊं हाथ उन ऊंचा किये । नख बढाइ मृगछाला लिये ।।३२८६।।

बढी जटा उरध्यांन मिथ्यात । भये देव दोऊ वे भ्रात ।।
दक्षिण उर विजयार्द्ध मेर । भ्ररंजय नगर वहु फेर ।।३२८७।।

वहन कुमार ग्रस्वनी ग्रस्तरी । वे दोउं देवां स्थिति धरी ।।
कंपिला सकार दूजा भसो करा । ग्रस्वनी राणी गर्भ ग्रवतरा ।।३२८८।।

रथनूपुर इन्द्र के पास । करता सेवा अधिक उल्हास ।।
इन्द्र कपिल द्विज नृप के संग । दुरजन दल को करता भंग ।।३२८९।।

इनके सनमुख कोई न धर्प । ए प्रधान रावण के तर्प ।।
इन्द्र कपिल वे स्वर्ग में गये । वहां से चयकरि सूर्यभट भए ।।३२९०।।

सुख मांही कीने बहु भोग । भये दिगम्बर साधो जोग ।।
बाईस सहैं परीसह गात । दया लाख चउरासी जात ।।३२९१।।

तेरह बिध चारित्र पालैं । काया तजि सुर भया विसाल ।।
उहां तैं चय किषदपुर आइ । सूरजरज के नल नील कहाइ ।।३२९२।।

पूरब भव के ए सनमंध । तातैं लिया वैर प्रतिबंध ।।
ग्यांनी वयर करै नहीं कोइ । रुद्र परिणाम खोटी गति होय ।।३२९३।।

रण ग्रन बैर टलै नहीं कहूं । जनम जनम बहुतै दुख सहूं ।।
जे राखैं दया सुभ भाव । उनका तीन लोक में नाम ।।३२९४।।

सर्वसेती उत्तम क्षमा करै । खोटे बंधन जिय मैं धरैं ।।
जित जावैं तित ग्रादर होइ । उसकी कीत्ति करैं सब कोइ ।।३२९५।।

सोरठा

पूरब भव, प्रतिबंध, भुगत्या बिन कैसें टलै ।।
इही कर्म सनबंध, या मांही एको तिल न सरैं ।।३२९६।।

इति श्री पद्मपुराणे हस्त प्रहस्त नल नील पूर्व भव वर्णनंम विधानकं

५४ वां विधानक

चौपई

दूसरे दिन का युद्ध

रावण सुणि सेनापति बात । उठ्या क्रोध सुभटां कै गात ।।
दोउं धां सेन्यां उठी परभात । करि सनान सुमरे जिण नात ।।३२९७।।

आभूषण पहरे निज अंग । सस्त्र बांधि चाल्या नृप संग ।।
रण की ठांम खडा दोउं आय । मारीच के सनमुख भये जाय ।।३२९८।।

घोडा से घोडा तब लडैं । मंगल सौं मंगल अति भिडैं ।।
रथ को रथ पर दिया हिया पेल । असे भिडैं ज्यौं खेलत हैं मल्ल ।।३२९९।।

दोउ थां बरखैं विद्या बाण । गोला गोली करैं घमसान ।।
मारैं खडग टूक हैं होइ । पीछा पाव न हटिहै कोई ।।३३००।।

मारैं गदा वज्र के समान । सेतपराजा भुझै बलवान ।।
सिंह कटी क्रोध करि लडै । बहुत लोग दोऊ थां कटैं ।।३३०१।।

अथक राय झुझ कैं पडा । उदै मद संसत्र अघन दल जुडा ।।
भई मार इततैं टलैं न सूर । क्रोध करि भट लडैं बल पूर ।।३३०२।।

सकनंदन पाप जुध करैं । पापनंदन झुझि करि पडैं ।।
रामचंद्र के झुझे लोग । रवि आ लोप्या करि के सोग ।।३३०३।।

भई रयण मिटियो संग्राम । सघलां ही पायो विश्राम ।।

तीसरे दिन का युद्ध

भयो दिवस उग्यो जग भान । दुहूंधां जुटधा सूरमा आन ।।३३०४।।

बर्षा बाण पडे चहुं ओर । जैसे पडैं मेह की डोर ।।
जुडा भूप छोडे जुरवांन । विसोलकुल के हरे परांन ।।३३०५।।

वानर बंसी अति भयभीत । राक्षस बंसी की भई जीत ।।
सुग्रीव आयो गज पलांण । अर्ज करैं आइ हनुमांन ।।३३०६।।

तुम अब ही बैठो इण ठाम । राक्षस बंस ऊपरि दोडूं मैं जाम ।।
हनुमांन माया केहरी । राक्षस बंसी की सुध बीसरी ।।३३०७।।

भाजैं जिम मंगल मदमयवंत । सुणैं सबद केहरि गरजंत ।।
तब कोप्या रावण बलवांन । भवर घणे विनती करै आंन ।।३३०८।।

तुम आगे सारैं हम कांम । हमारा देखो तुम संग्राम ।।
धाए तिहां भूपती घणे । पडी मार दुरजन बहु हणे ।।३३०९।।

हनुमान तबै गदा संभारि । घणां भूपति मारे डारि ।।
रावण की सेना चली भाग । तबै उसके हिरदै दोइ लाग ।।३३१०।।

कुंभकरण अनै संबुकुमार । चन्द्रक सादूंल दल भार ।।
जंबुमाली इन उदरी सुत बाल । महोदर तीन पुत्र सुविसाल ।।३३११।।

धाय पडे सब एकै बार । जंबूमाली कामक बान सौं मार ।।
तब झूझै रावण का पूत । कुंभकरण कोपिया बहुत ।।३३१२।।

मूर्छा बाण कुंभकर्ण छोडिया । सोइ गया सहु काया मरण ।।
देखे तबै तिहां नल नील । धाय पड्या ज्यौं उतरहै चील ।।३३१३।।

मारैं गदा तीर तरवार । भाज्या कुंभकरण तिण मार ।।
जीते रामचंद्र के बली । नल अरु नील सहु सेना दली ।।३३१४।।

रावण चढि दौडियो नरेन्द्र । इंद्रजीत बोलै बल वृन्द ।।
हमकूं आगन्या कीजे तात । देखो जुध करूं किहं भांति ।।३३१५।।

मनवांछित हूं कारज करूं । दुरजन दल जम मंदिर धरूं ।।
त्रैलोकसार हस्ती सुपलांन । इन्द्रजीत दौडे बलवान ।।३३१६।।

मेघनाद जंबूमाली चले । अस्त्रशस्त्र बहु कर लिये भले ।।
कुंभकरण अवर हनूमंत । सुग्रीव इन्द्रजीत सामंत ।।३३१७।।

मेघवाहन भामंडल लडैं । वज्रकरण विराधीत दोउ भिडैं ।।
ज्यौं घनहर वरषैं घनघोर । छुटैं सर गोली चिहूं ओर ।।३३१८।।

बरछी गदा चक्रों की मार । बाजैं लोह उडैं अंगार ।।
गज सेती गज टक्कर लेंहि । घोडा सौं घोडा अरभेंहि ।।३३१९।।

पयदल रथ तिहां झूझैं घणे । मनमैं हरष धरि जोधा बणे ।।
इन्द्रजीत राय सुग्रीव कहै भाइ । हमारा देस परगना खाइ ३३२०।।

हमारा डर तैं धरा न चित्त । समझैं नहीं आपणा वित्त ।।
देखि तोहि लगाउं हाथ । दूरि करौं देही तैं माथ ।।३३२१।।

सुग्रीव छोडे विद्या बांण । राक्षस दल कीया घलहांण ।।
इन्द्रजीत छोड्या मेघबांण । वरषै मेघ मुल्या अवसांण ।।३३२२।।

पडैं बीजली परलय करैं । पवन बांन सुग्रीव संभरैं ।।
उडैं पटल रांक्षस दल उडैं । रावण सुत क्रोध मन बढैं ।।३३२३।।

अंधकार बांण कूं छोडि । भया अंधेरा सुग्रीव की ओड ।।
नागपासनी विद्या संभार । लपटे सर्प मुरछा तिह बार ३३२४।।

सुग्रीव कौं नागपास सौं बांधि । मेघनाद एही विध सांधि ।।
भामंडल कुं इण ही भांति । करैं मूरछा सांस न गात ३३२५।।

कुंभकरण पकडे हणवंत । दोनूं भुजा भरि चाबैं दंत ।।
जंद फंद भऱ्यो हणुमांन । वा समये ना छुटे प्रान ।।३३२६।।

विभीषण का राम को परामर्श

भभीषण राम लक्षमण सौं कहै । तुमारे दल में सुभट न रहे ॥
तुम यातैं रहियो सावधान । सुग्रीव भामंडल कैं लाग्या बांन ॥३३२७॥

उनकी ल्याऊं लोथ उठाय । जो कोई बरिण आय उपाय ॥
अंगद सोच करै मन मांहि । सुग्रीव भामंडल रहै इहांहि ॥३३२८॥

कुंभकरण सौं हुवा जुध । बाकी मारग वाही सुध ॥
हनुमान छूटि करि गया । बहु उपाय अंगद नैं किया ॥३३२९॥

भभीषण आयो लोथ कुं लेन । इन्द्रजीत मेघनाद कहै बैन ॥
हम तो जीते हैं सब लोग । हमारी सरभर कुं कोंन जोग ॥३३३०॥

काका आए करवा जुध । या सनमुख किम लरिये मुध ॥
पुरषां परि किम करिए घाव । अब इहां चलैं नहीं कहूं दाव ॥३३३१॥

समझि ग्यांन भाग्या तिरण घरी । सुर्मास लोथ इनकी देखे परी ॥
भभीषण देखै इन ही को आइ । पडे मूर्छा मृतक की नांइ ॥३३३२॥

लक्षमण रामचंद्र सूं कहै । नल कोंश्रकुं विद्याधर गहै ॥
उनसौं जीत सकै नहीं कोइ । रावण सूं किरण परि जुध होइ ॥३३३३॥

रामचंद्र बोले सुरण वीर । अपणां मन तुम राखो धीर ॥
रावरण कुं मारैंगे ठांव । समर मांहि राखो तुम भाव ॥३३३४॥

देशभूषण कुलभूषण केवली । चितागति देव कही थी भली ॥
जब तोकुं हुवैगा काम । तुम चितारो आउंगा उस ही ठांम ॥३३३५॥

देवों द्वारा राम को विद्या प्रदान करना

रामचन्द्र पैं आए देव । नमस्कार करि कीनी सेव ॥
रामचन्द्र भाख्यौ विरतांत । सुर विद्या दीनी बहुभांति ॥३३३६॥

विद्या सिध करि कारज किया । दोय रथ विद्या सिध का दिया ॥
छत्र चमर मोतियन का हार । चितवत सेन्या होइ अपार ॥३३३७॥

मनवंछित कारज सब होइ । दुरजन जीत सकै नहि कोइ ॥
विद्या लई सकल सुख मूल । मन की चिंता गई तब भूल ॥३३३८॥

दूहा

जैन धरम सब तैं बडा, निसचल राखै चित्त ॥
संकट विकट उद्यान में, आइ मिलैं बहु मित्त ॥३३३९॥

इति श्री पद्मपुराणे विद्यासहाय विधानकं

५५ वां विधानक

चौपई

राम रावण द्वारा युद्ध की तैयारी

रामचन्द्र लक्षमण इह चित । पहरथा देव वस्त्र पवित्र ।।
चंद्रहास बांधा तरवार । आयुध सगले लिये संभार ।।३३४०।।

वज्रावर्त्त समंदरावर्त्त । लिये धनुष रणजीत के करत ।।
सिंघरथ ऊपर चढे रामचन्द्र । गरूड वाहन लक्ष्मण वृंद ।।३३४१।।
सेन्या चारू साथ जो लई । रवि की किरण उझिल भई ।।
कांपे तरवर कांपी मही । कंपे गिरिवर जलहर सही ।।३३४२।।

रामचन्द्र कोप्या भगवान । कौण कौण का जासैं परान ।।
रामचन्द्र सुमरिया जिरणंद । दोनूं सोहैं जिम सूरज चंद ।।३३४३।।

आकाश गामिनी विद्या संभार । रथ सुं फरस चली तिसबार ।।
वहै पवन लागै तन ब्याल । उतरयो विष चेतया भूपाल ।।३३४४।।

नाग फास के टूटे बंध । भया उजाला भाज्यौ अंध ।।
जैते पडे थे मूर्छावंत । बोल उठे नाम भगवंत ।।३३४५।।

राम लक्षमरण का दर्शन पाय । मन आश्चर्य भये सब राय ।।
राम लक्ष्मण थे भूमिगोचरी । किरण विध इनमे विद्या फुरी ।।३३४६।।

विद्या द्वारा मूर्छितों की मूर्छा दूर करना

आकाश गामिणी इन ही ने किया । जीवदान सब ही कुं दिया ।।
उठे सकल लोग भुवि पडे । विद्या लाभ सुंणि रहु जे घणे ।।३३४७।।
सुग्रीव भामंडल पूछैं सहुबात । चितागति सौं सनबंध किरण भांत ।।
रामचंद्र लक्षमण समभाय । देसभूषण कुलभूषण मुनिराय ।।३३४८।।
वंसलगिरि उपरि धरया आतमध्यांन । उनकूं उपसर्ग भयो तिरण थान ।।
हम उनका उपसर्ग निवार । केवलग्यान उपज्या तिरण बार ।।३३४९।।
आये सुरपति पूजा करी । चिंतागति मित्र भयो तिरण घरी ।।
दोन्युं मुनि का था इह तात । तपकरि भया देव की जात ३३५०।।
या सम अवर नहीं सुर कोइ । इन्द्र समान चिंतागति होय ।।
इन म्हारी स्तुति करी घणी । श्रैसी बात वासब भणी ।।३३५१।।
हूं सेवग थारो रघुपति । जब चितवो तब आवुं तित ।।
तब तुम मूर्छावंत होय पडे । चिंतागति ने चित मध्ये धरे ।।३३५२।।

आये देव लिए बिदा दई । ग्यौरो सुणि चिंता मिट गई ।।
सुभ अरु असुभ करम का जोग । सुभ कौं उदै करै बहु भोग ।।३३५३।।
असुभ करम तैं पावैं दुख । दोनूं सरभर दें दुख सुख ।।
धर्म जिनवता दूटैं पाप । पुन्यवंत का टलैं संताप ।।३३५४।।
संकट बिकट में परम सहाय । सुरपति नरपति सेवैं पाय ।।
धरम संमान सगो नहीं कोइ । धरम हि तैं बहु विध सुख होइ ।।३३५५।।

दूहा

धरम दान सबतैं बडा, यातैं भलो न और ।।
संसारी सुख भुक्त करि, फिर पावै सुर ठौर ।।३३५६।।

इति श्री पद्मपुराणे सुग्रीव भामंडल समाधान विधानकं

५६ वां विधानक

चौपई

दोनों ओर के योद्धाओं द्वारा युद्ध

इह प्रकार नृप रावण सुण्यां । आए आप राम लक्षमणा ।।
लंकापति हस्ती सुपलांण । चली सेन्यां बाजे नीसाण ।।३३५७।।
उत मारीच इत है सुग्रीव । वज्रमुख सारन जुध की नींव ।।
मिरस अवर जुटे सुक्रोध । मेघनाद विराधित ए जोध ।।३३५८।।
मेदयंत अंगद दोउ लडैं । कुंभकर्ण हणुमांन सूं भिडैं ।।
भभीषण देख्या रावण दृष्टि । क्रोध भई बोल्या अभिष्ट ३३५९।।
रै कपूत मूरख अग्यांन । भूमगोचरी का सेवग भया आन ।।
तो कुं अबही मारू ठोर । भ्राता जाणि दिया है छोडि ।।३३६०।।

भिभीषण रावण युद्ध

भभीषण कहै सुण रे पापिष्ठ । तैं तो करी पाप की दृष्टि ।।
सतवंती सीता कुं हरी । पाप पुन्य का भेद न धरी ।।३३६१।।
तेरी भई आयु बल धीण । तातैं बुधि है भई मलीन ।।
जे तू जीया चाहै भ्रात । रघु नें मिलाउं मां हरे संघात ।।३३६२।।
सीता देकर लागो पाई । तेरा प्रान मैं देउं छुडाइ ।।
इतनो सुणित रावण कोपिया । क्रोधवंत तब वे भया ।।३३६३।।
जैसा सुं तैसा वे जुटैं । पाछैं पांव न कोई हटै ।।
सनमुख भए भूपती घणें । उनके नांउ कहां लगि गिणें ।।३३६४।।

धनुष खैंचि करि मारे बाण । भभीषण कैं कंठ लाग्या बाण ।।
टूट्या धनुष भभीषण बच्या । बहु जुध दोउंवा मच्या ।।३३६५।।
बिजुली सम चिमकैं खड्ग । बाई रहा तिहां सगला सरग ।।
तिहां होवैं तीर तुपक की मार । बज्रधार सुं करैं संघार ।।३३६६।।
मारैं खड्ग मुंड गिर पड़ैं । तोउ न सुभट धरती पर पड़ैं ।।
[illegible] मुंड [illegible] अर्द्ध [illegible] । झूझैं बडा महा बलवंता ।।३३६७।।
स्रोणित की वैतरणी बही । पड़ी लोथ कहां रही नहीं मही ।।
हाथी घोडे झूझे घणे । परवत सम ढेर तिहां बणे ।।३३६८।।
पग धरवे कूं रहीयन ठौर । दोउ धां मांची बहु झोड़ि ।।
राम कुंभकरण सुं जुध । लक्षमण नैं इन्द्रजीत सूं विरुध ।।३३६९।।
दुहूंधां बांण पड़ैं ज्यों मेह । भाजिन कूदैं हनूं की देह ।।
लक्षमण इन्द्रजीत ढिग आय । झपटि रथ सौं पटके जाइ ।।३३७०।।
रावण की सेना भाजि कै चली । इन्द्रजीत संभाल्या बली ।।
रथपरि चढ्या बहुरि संभारि । सेन्यां सकल लई हुंकार ।।३३७१।।
धुवां बाण छोड्या इन्द्रजीत । लक्षमण सूर्यबाण मन चित ।।
छोडे बाण उजाला भया । अंधकार सगला मिट गया ।।३३७२।।
नागपासनी छोडी विद्या । गरुड बाण सें होई भिद्या ।।
वह विद्या लक्षमण ने गही । छोडी इन्द्रजीत सामही ।।३३७३।।
रावण का सुत मुर्छावंत । नाक फास सुं बांधि तुरन्त ।।
कुंभकर्ण रामचंद्र सुं लडैं । रथ समेत वह ऊंधा पडै ।।३३७४।।
रामचंद्र फिर रथ परि चढे । वा समए कोप अति बढे ।।
नाग फासि बांध्या कुंभकर्ण । मूर्छावंत प्राण का हर्ण ।।३३७५।।
लागे सर्प उनूं की देह । काटैं तिह वा प्राण हर लेह ।।
खैंचें देह दुख व्यापै घणां । ऐसा कष्ट उनौं कौं बण्यां ।।३३७६।।
भामंडल इन्द्रजीत ढिग आण । रथपरि डाल लिये बलवान ।।
विराधित कुंभकर्ण लिये उठाय । रथ परि लक्षमण लिया चढाय ।।३३७७।।

लक्ष्मण रावण युद्ध

बोले रावण सुणि लक्षमणां । तेरा भी आया है मरणां ।।
लक्षमण बोलैं रावण सुणौं । तो कुं अब पलही में हणौं ।।३३७८।।
दारुण जुध दोउधां होय । हारि न मानैं दुहूं में कोय ।।
महासक्ति मारी रावण ने ताणि । लक्षमण कैं उर लागी आणि ।।३३७९।।

गिरचा भूमि सांस तब थक्या । रामचंद्र रावण सौं जुटे ।।
अक्षावर्त्त क बाण जु छुटे । रामचंद्र रावण सौं जुटे ।।
घणीं बेर लग कीया जुध । रावण नैं मारि किये बेसुध ।।३३८०।।

गज के रथ सूं दीया डारि । सिंघों के रथ चढे संभारि ।।
उहां तैं फिरि रावण दिए डारि । मारि गदा तिहां तिह बार ।।३३८१।।

कोई न घाव रावण कैं हुहा । रामचंद्र तब ऐसा कहा ।।
अरे रावण तेरी उमर है घणी । तू छूटा हैं अबकी अणी ।।३३८२।।

लंका जाइ आश्रम गहीं । जे परि नगर लक्षण को रहौ ।।
तेरे टूक टूक जब करूं । तोकूं ले जम मंदिर धरूं ।।३३८३।।

रावण सब सेन्यां ले साथ । लंका पहुंच्या हरषित गात ।।
मैं लक्षमणां मारचा है सही । मोकूं कुछ चिता है नहीं ।।३३८४।।

जे रामचंद्र मुझसौं फिर लडैं । सातैं कछु कारिज ना सदैं ।।
भ्रात पुत्र की चिन्ता चित्त । देखौ यह संसार अनित्त ।।३३८५।।

दुख सुख जीव तणें संगि लग्या । ऐसा ग्यान उपशम जग्या ।।
करैं सोच ग्यान धरि चित । होणी टरैं न ऐसी स्थिति ।।३३८६।।

अडिल्ल

लक्षमण पड्या अचेत राम व्याकुल घणां ।।
रावण भए नचिंत क्योंकि दुरजन हणां ।।
ऐसा अवर न कोई तां हाथ रावण मरैं ।
देखो कर्म प्रभाव कहा ते कहा करैं । ३३८७।।

इति श्री पद्मपुराणे संग्राम विधानकं

५७ वां विधानक

चौपई

राम विलाप

रामचंद्र लक्षमण कैंपास । देख्या मृतक कहुं न सांस ।।
रघुपति देखरि खाइ पछाड । रोवैं पीटें बारंबार ।।३३८८।।

हाय भाइ हम कैसी बणी । मंत्री बात कहैं ये घणी ।।
जब हम छोडि अजोध्या चले । सब परिवार कहैं मिले ।।३३८९।।

लक्षमण कूं नीके राखियो । मनोहार वांणी भाखियो ।।
किस भांति नैं चलावो चित्त । लक्षमण कीज्यो भक्तैं हित्त ।।३३९०।।

मो कारण लक्ष्मण जीव दिया । अवर मोहरी बिछडी सिया ।।
किम दिखाऊं मुख आपणां । मोहि अपलोक चढ्या है घणां ।।३३९१।।

मैं देख्या भाई का मरण । अवर भया सीता का हरण ।।
काठ संकेल अगनि मैं जरूं । लक्ष्मण का कैसे दुख भरूं ।।३३९२।।

सहु राजन सूं रघुपति कहै । तुम हम संग बहुत दुख लहैं ।।
मेरा बहुत किया उपगार । पर उपगारी हो भूपाल ।।३३९३।।

बोले भूपति इण परि बात । जीवैगा लक्ष्मण तुम भ्रात ।।
इसका हम करि हैं उपचार । चउकस राखो चोकीदार ।।३३९४।।

दुरजन कोई सकै नहीं आइ । कोई उपाधि न करि है यहां आय ।।
दिसौं दिसा रखवाला रहो । उला पैला का आहट लहो ।।३३९५।।

राम जागियो नरपति चिहुं ओर । चौकीदार मिलो कर सोर ।।
तिण थांनक कोई पैठ न सकै । सहु जागियो इम जांण न सकै ।।३३९६।।

इति श्री पद्मपुराणे सप्तमो (?) रत्न विलाप विधानकं

५८ वां विधानक

चौपई

मन्दोदरी और सीता का विलाप

रावण मन में चिंता करै । कुंभकर्ण इन्द्रजीत दोउ मरे ।।
रोवै राणी मंदोदरी । सुवरण वाम तणी असतरी ।।३३९७।।

कैसें जीवां अइसे दुःख । अब सहु वाद उनूं बिण सुख ।।
असा दुष रावण के मना । सीता सुण्यो मुवो लक्ष्मणा ।।३३९८।।

रोवै लुंचै सिर के केस । राखै सदा राम सुं सनेह ।।
हम मरती तो टलतो पाप । मेरे कारण हुवो विलाप ।।३३९९।।

सीता तबै समझावै बैन । अपनां चित राखो तुम चैन ।।
लक्ष्मण का होवैगा जतन । असा दुख निवारै अतन ।।३४००।।

सीता समझि रही मुरझाय । अब सेनां मैं करैं उपाइ ।।

भामंडल और चन्द्रप्रति का आगमन

भामंडल जागियो नरेस । चंद्रप्रति नैं कियो प्रवेस ।।३४०१।।

पूछै भामंडल तू कूंण । किह कारण तैं कीयो गौण ।।
बोलै परदेसी दरसन निमित्त । मैं तो ध्यान धरया है चित्त ।।३४०२।।

भामंडल को है भूपति । लक्ष्मण कै बाण लाग्या सकति ।।
रामचंद्र बैठा उन पास । रघुपति तिण थां बहुत उदास ।।३४०३।।

चंद्रप्रति तब विनती करै । मैं हूं वैद्य कारज तुम सरै ॥
भामंडल इतनी सुणि बात । याकौं ले चाल्यो संघात ॥३४०४॥
खैडा माहि रोकै नहीं कोइ । इनका मनवांछित जो होइ ॥
रघुपति कौं उन करि डंडोत । नमस्कार फिर किया बहुत ॥३४०५॥
रामचंद्र पूछैं तिण बार । कहै है कौण तुम लार ॥
कहैं ए वैद्य गुणवंत । लक्ष्मण जतन करैं बहुभंत ॥३४०६॥
परदेसी कूं पूछैं राम । तू किततैं आये इण ठाम ॥

...द्य की जीवन कहानी

कहै विदेसी अपनूं भेद । विजयारध तहां विद्या भेद ॥३४०७॥
गीतपुर नगर समेइल राइ । सुप्रभा राणी रूप की काय ।
ताकै पुत्र चन्द्रप्रति भया । बल पौरिष मीं सोभै नया ॥३३०८॥
बेलंधर का सहस्रवीर्य पुत्र । चंद्रबाण मोरिया तुरंत ॥
मैं पड्या जाय अजोध्या मांहि । तिहां भर्थ भूप आए सांझ ॥३४०९॥
मोकूं देखि दया उन करी । गंधोदिक छिडक्या उण घडी ॥
उतरया दोष मोकूं भया चेत । उनां धरम सूं कीनु हेत ॥३४१०॥
मैं उठि भरत सूं विनती करी । इस विद्या हैगी गुण भरी ॥
इसका मोहि सुणावो भेद । भरत भूप भाष्यो सब भेद ॥३४११॥
महिन्द्र उदै रावण मेघ भूप । गुणसाला राणी बहु रूप ॥
वाकै गर्भ विसल्या भई । रूप लक्षण सोभै गुण मई ॥३४१२॥

...शल्या की कथा

जब वह कन्या करै सनांन । वह जल पहुंचै रोगी थान ॥
तिनका रोग तबही मिट जाइ । सकति बाण का दोष विलाइ ॥३४१३॥
अजोध्या मांहि रोगी थे घणे । वाही जल तैं नीके बणे ॥
तब तैं प्रगट भया वह नीर । गई सकल रोगी की पीर ॥३४१४॥
पूछै भरथ विसल्या परजाइ । वाका भव भाषो समझाय ॥
कवण पुन्य तैं पाई सिध । जिसके चरणोदक इह विध ॥३४१५॥
सकल रोग कूं परिहा करै । असे गुण चरणोदक धरै ॥
बोले मुनिवर ग्यांन विचार । क्षेत्र विदेह स्वर्ग अनुहारि ॥३४१६॥
पुंडरीकनी सीमंधर जिनंद । चक्रवर्त्ति त्रिभुवन आनंद ॥
चक्रधरा वाकै पटधनी । रूपलक्षण गुण सोभै घनी ॥३४१७॥

अनंगसेना ताकै पुत्तरी । दानादिक गुण में लावण्य भरी ।।
जोवन समैं पुनर्वस को दई । दोन्यां मां प्रीत अति भई ।।३४१८।।

एक दिवस अनंग कुसमा नारि । जोवत देखी दुरधरि तिह बार ।।
विजयार्द्ध का विद्याधर वीर । देखी त्रिया आया तिह तीर ।।३४१९।।

गही बांह विमाण बैठाइ । ले कै विजयार्द्ध कूं ले जाइ ।।
मंदिर मांहि भई पुकार । त्रिभुवन नंद सुणी तिहं बार ।।३४२०।।

भेजे सुभट सुता की खोज । सब परियण मां मांची रोज ।।
विद्याधर देख्या गमन आयास । अनंग सेना बैठी ता पास ।।३४२१।।

वह षेचर एह भूमिगोचरी । सकल लोग बोल्या तिण घडी ।।
रे रांक सुण हो दुर वीर । हमसूं जुध करै तो वीर ।।३४२२।।

पडी मार तीर तरवार । टूट्या रथ भाज्यो तिण बार ।।
वह कन्या रथतैं गिर पडी । पंचनाम सुमरण आखडी ।।३४२३।।

महा उद्यान भयानक ठोर । करै विलाप रुदन अतिघोर ।।
मात पिता का सुमरै नाम । मनुष न दीसै है तिण ठांम ।।३४२४।।

हाय कर्म तैं असी करी । भूख प्यास सों सुध वीसरी ।।
वहै विरयां कुण होइ सहाय । वहै विरयां कछु न बसाय ।।३४२५।।

दूहा

चक्रवर्ति की थी सुता, करती भोग विलास ।।
अशुभ कर्म के उदय से, पडी आय वन वास ।।३४२६।।

चौपई

वनवास के दुःख

तिहां स्यंघ चीता बहु व्याल । भयदायक रटैं बहु स्याल ।।
वन के भयदायक तिरजंच । पडै सीत वस्तर नहीं रंच ।।३४२७।।

असा दुख सों बीतैं काल । बन फल खाइ सुता भूपाल ।।
उन्हालै तपै सब मही । सीतल ठोर न पावै कहीं ।।३४२८।।

दुख में बीतैं आठु जांम । तिनहीं नहीं कभी विश्राम ।।
बरषा आगम बरसै मेह । सहै परीसा कोमल देह ।।३४२९।।

पवन चलै बरषा झकझोर । चमकै दामिन आइ घटा घनघोर ।।
छोडि आस संसारी भोग । मन बच काय लगाया जोग ।।३४३०।।

दोय हजार वर्ष तप किया । अन्न पाणी तजि संयम लिया ।।
भव्य तीन सु विद्याधर आइ । नमसकार करि लाग्या पाइ ।।३४३१।।

धन्य साध अैसा तप करैं । छह रुति का दुख मन नहीं धरैं ।।
चिदानन्द सौं ल्याया ध्यान । दया करैं राव ऊपर जांन ।।३४३२।।

वन में ए तप इण विध किया । जीव दया संयम व्रत लिया ।।
लखधदास कहै तुम चलो । त्रिभुवन आनंद पिता सुं मिलो ।।३४३३।।

अनंग सेना मन में समझाइ । मैं संन्यास कारया इण ठांव ।।
छोडे सब संसारी मोह । लखण दास समझाऊं तोह ।।३४३४।।

तब उठि गया भूपति सौं कही । अनंगसरा देही सब दही ।।
उण वन में लीयो सन्यास । छोडि दिये सब भोग विलास ।।३४३५।।

त्रिभुवन नंदन देखण निमित्त । आया वन में देखी बहुमंत ।।
अजगर भया दुखी का अंध । उन बहु करो पार को गंध ।।३४३६।।

तजी अनंगसरा तिहं घडी । देही छोडि स्वर्ग संचरी ।।
भुगति आव द्रोणमेंघ गेह । गुणसाला गर्भ विसल्या एह ।।३४३७।।

इण प्रकार की पाई रिध । चरण उदिक होवैं सब सिध ।।
त्रिभुवन नंद इह कारण देखि । उपज्यो संसार वैराग परेख ।।३४३८।।

जाण्यौं इह संसार सरूप । भ्रम्यो जीव धरि नाना रूप ।।
देही आदि सगो नहीं कोय । संपति तणां विछोहा होइ ।।३४३९।।

चारू गति भरम्यु चिदानंद । सुभ अरु असुभ तणे दोइ फंद ।।
कबहु रंक कबहु भुवनेस । जैसी करनी तैसा भेस ।।३४४०।।

मन वच काय लगाया ध्यांन । काटि कर्म पहुंच्या निरवाण ।।
बाईस सहस पुत्र समेत । ल्याया चिदानंद सौं हेत ।।३४४१।।

दुरिम मुनिवर के पास । दिष्या लई सुगति की आस ।।
तेरह विध चारित्र व्रत लिया । विधसु पंच महाव्रत किया ।।३४४२।।

तीनं रतन बरण्या दस दोइ । बाईस परीसह उन अंग होइ ।।
उसन काल गिर ऊपर तपैं । बरषा समैं रुख तलि छिपैं ।।३४४३।।

सियालै सरिता तट ध्यान । उपज्या उनकूं केवलग्यांन ।।
गए मुकति तिहां सिध अनंत । ज्योत ही ज्योत भई एकंत ।।३४४४।।

पुनवसु कै त्रिया का सोग । भए दिगंबर छांड्या भोग ।।
पंच महाव्रत पांचु सुमति । मन वच काया तीनूं गुपति ।।३४४५।।

बाईस परीसा सहै अंग । द्वादश अनुप्रेक्षा तह संग ।।
छह रुति के सुख दुख सहै सरीर । जाणैं षटकाय प्राणी की पीर ।।३४४६।।

दसौं दिसा ताके आभरण । श्री जिन बिना कोई नहीं सर्ण ।।
तप करि देह जाजरी करी । अंत समय ऐसी मन धरी ।।३४४७।।

जै मैं निर्मल भूपति भया । मो पै त्रिया बुरषी ले गया ।।
मेरे तप का एह फल व्हैज्यौ । मो सम बली न दूजा मा कहज्यो ।।३४४८।।

अनंगसरा सुं फिर सनबंध । हो जो ऐसा किया बहु धंध ।।
देही छोडि लही अमर विमाण । पायो स्वर्ग तीसरे थान ।।३४४९।।

प्राव भूगति दसरथ कै गेह । भए पुत्र लखमण की देह ।।
अजगर मरि भैंसा गति भया । हस्तनापुर जनम जु लिया ३४५०।।

वर्धमान वणिक तिहा रहै । विणज हेत देसांतर बहै ।।
भैंसा लादि अजोध्या गया । तहां महिष गल कुष्टी भया ।।३४५१।।

कीडा पडि सहै दुख घणे । पाप उदय तें ए फल बणे ।।
कोई बालक मारें ढेल । खैंचै पूंछ करें वे खेल ।।३४५२।।

इस दुख सेती भईसा मुवा । बजावर्त्त कुमार देवता हुआ ।।
रहै नरक में तिहां नारकी । उनूं कुं दुख करें मार की ।।३४५३।।

समझि कुबोध विचारि चित्त । मह्या महिष अजोध्या करि थित्त ।।
उन लोग मोकु दिया दुख । अब लेहुं बयर तो पाउं सुख ।।३४५४।।

उन छोडी कोई असी बयार । सर्व कुंभ या रोग तिण वार ।।
सगला दुखी भया पुरलोक । अजोध्या मैं प्रगट्या था रोग ।।३४५५।।

द्रोवण मेघ की विशल्या पुत्तरी । उसके चरणोदिक पीडा टरी ।।
वहु विशल्या लक्षमण की नारि । या तें होइ इनका उपगार ।।३४५६।।

दूहा

पूरब भव सब ही सुणै भाज्या सब संदेह ।।
जैसा कर्म कोई करै, तैसी गति पावेह ।।३४५७।।

इति श्री पद्मपुराणे विसल्या पूर्व भवांतर विधानकं

५६ वां विधानक

चौपई

हनुमान अंगद को अयोध्या भेजना

सुण्यां रामचन्द्र पर जाइ । हणुमंत अंगद अजोध्या पठाइ ।।
भामंडल कूं दीया साथ । विरियांन लागी इणकी जात ।।३४५८।।

भरत सोवैं था सज्या ठोर । ए पहुंचे भूपति की पोर ।।
बीण बजावैं गावै तान । रघुवंसी कुल का करैं बखान ।।३४५९।।

भरथ भूप सांभली ए बात । तजि निद्रा वस्तर पहिरे गात ।।
द्वारैं उभा देख्या तीन । महा सुघड बजावैं बीन ।।३४६०।।

तिनकुं पूछै भरत नरेस । तुम हो कवरण कहो संदेस ।।
कवरण काज आये तुम रयरण । सांचे मोहि सुणावो वयरण ।।३४६१।।

भामंडल का उत्तर

भामंडल बोले समझाय । राम लक्ष्मण डंडक वन रहे जाय ।।
सुरजहास खडग तिहां लिया । खरदूषन संबुक जिहां दहा ।।३४६२।।

रावरण सीता हर ले गया । बानर वंसी का मदद भया ।।
[1]हरि कै लाग्या सकती बांन । हरि के हर ले गए परारण ।।३४६३।।

देहु नीर संजीवन मूल । तो कछु होवै जीवन सूल ।।
इतनी सुरिण कोप्या भरत । सत्रुघन सुरिणर कोघ करंत ।।३४६४।।

ऐसा कया रावरण बलवान । सीता कुं ले गया निज थान ।।
मारूं रावरण कूं अब जाइ । वाही समय नीसान बजाय ।।३४६५।।

जागे सब नगरी के लोग । भरत कूं व्याप्या लक्ष्मरण सोग ।।
सुरिणवाजंत्र जान्यां सबै । अतिवीरज सुत आया तबै ।।३४६६।।

कै कोई दुरजन यहां आइ । आरण चढै वाजित्र बजाय ।।
भए एकठे नरपति घरणे । भरत सूं कहै उपाव किये बरणै ।।३४६७।।

जे तुम लंका पहुंचो राइ । तो इह रयरण बीत कै जाय ।।
लक्षमरण का होवैं काज । विसल्या भेजो इरण साथै आज ।।३४६८।।

कैकई गई मेघद्रघ के गेह । विसल्या सुण्यां लक्षमरण सुं नेह ।।
रोवै कन्या लग्या सुन बारण । या समै हुं पाऊं जाण ।।३४६९।।

तो लक्षमरण अब जीवैं सही । सूरज उदय कछु जतन नहीं ।।
सब मिल कियो यह विचार । भामंडल संग विसल्या लिए बार ।।३४७०।।

यासुं पवन फरस कै लाग । उसही घडी लक्षमरण उठि जाग ।।
असक्ति बारण भाज्या आकास । लक्षमरण कों भई जीने की आस ।।३४७१।।

पवनपुत्र पकड्यो वह बारण । बोली विद्या पूछै हनुमांन ।।
असक्ति बारण नैं छोडे प्रारण । पुण्यवंत सों चली न सयांन ।।३४७२।।

---

१. लक्ष्मरण

लक्ष्मण पुण्यवंत अति बली । विसल्या नारि सर्वगुण मिली ।।
मैं विद्या ऐसी असकति । मोकूं आणी सर्व जगत ।।३४७३।।

धरणेन्द्र ने ए विद्या दई । लक्ष्मण को जिहां आपदा भई ।।
बालि मुनीश्वर गिरि कैलास । वा समये असक्ति दिया तास ।।३४७४।।

मोकूं कोई सकै न टारि । जो मिल जतन करै संसार ।।
विशल्या पूरब भव तप करें । ऐसी रिध उस तपतैं फुरैं ।।३४७५।।

श्रावत सुणी विसल्या नारि । अगले भव का लक्षमण भरतार ।।
मैं भागी लक्षमण तजि देह । पुन्य बराबर अवर न एह ।।३४७६।।

विसल्या द्वारा मूर्छा दूर करना

विसल्या आइ लक्षमण के पास । केसर चन्दन लई सुवास ।।
रामचन्द्र कूं किया नमस्कार । लक्षमण तणी करी बहु सार ।।३४७७।।

कन्यां सहंस विसल्या साथ । सब मिल गावैं जस रघुनाथ ।।
ताल मृदंग बजावैं बीण । गावैं सकल नारि प्रवीण ।।३४७८।।

लक्षमण का होश में आना

लक्षमण तब उठे अंगराइ । मुख तैं सुमरे श्री जिनराइ ।।
बोले लक्षमण रावण कहां । मार मार सबद मुख तैं भण्या ।।३४७९।।

रामचन्द्र समझाई बात । असक्ति बाण लग्या तुम गात ।।
विसल्या मेघद्रवण की धिया । असक्ति बाण इने दूरि किया ।।३४८०।।

गाए अनंत बधाये बणे । मूर्छा तणे सब दूखण हणे ।।
चेत्या सब सेना के लोग । मूल्या तब परजा का सोग ।।३४८१।।

दूहा

बाईस परिषह उन सहे, चंडी च्यार कषाय ।।
असुभ करम सब टारि करि, भया नरायन राय ।।३४८२।।

इति श्री पद्मपुराणे विसल्या आगमनं विधानकं

६० वां विधानक

चौपई

रावण को मंत्रियों द्वारा समझाना

रावण सुनि लक्षमण उपचार । किये सचेत विसल्या नार ।।
सकती बाण तैं हुवा असकति । पुन्यवंत कुं कछु न लगत ।।३४८३।।

बैठि सभा बहु मंत्री बुलाई । पूछै माता लंका आइ ॥
मृगांक मंत्री बीनती करै । कहुं बात प्रभु हिरदै धरै ॥३४८४॥
रथंघर कै रथ श्री रामचन्द्र । ते जाणें विद्या के बंद ॥
गरुड वाहन लछमण कुमार । विसल्या जाणें विद्या सार ॥३४८५॥
जे तुम चाहो भुगत्यां राज । राक्षस बंसी राखो लाज ॥
सीता ले मिलो राम के संग । जो न होवई राज का भंग ॥३४८६॥
सदा रहै ज्यौं उन सौं प्रीत । छूटैं कुंभकर्ण इन्द्रजीत ॥

रावण का वक्तव्य

रावण कहै सुण मंतरी । भेज्यौ दूत उनपै इन घरी ॥३४८७॥
रूपवंत हुवै चतुर सुजाण । निरभय वचण सुणावैं जाण ॥
छुडावो कुंभकर्ण इन्द्रजीत । हम उनसौं करैं मंत्र की रीत ॥३४८८॥
मैं नहीं था करैं घमसान । चाल्या दूत सुघड सुजान ॥

रावण के दूत का राम के पास जाना

सुंण उपदेस राम पैं गया । सेन्यां देखि विचार इह किया ॥३४८९॥
धनकै है सेन्यां अति तुछ । रावण कैं है सब कुछ ॥
जाइ पौलि ठाडा भया दूत । रामचंद्र सेन्यां संजूत ॥३४९०॥
पहुंच्या त्वरति बुलाई बसीठ । स्वामी काज को देइ न पीठ ॥
रामचंद्र का दर्शन पाइ । नमस्कार करि ऊभा जाइ ॥३४९१॥
विनती करूं सुण हो रघुनाथ । कुंभकर्ण इन्द्रजीत थो भी साथ ॥
रावण सुं राखो सनमंध । इत उत तैं चूकै इह धंध ॥३४९२॥
प्रजा बचैं सब का दुख जाय । छोडो क्रोध धर्म के भाय ॥

राम का उत्तर

रामचंद्र बोलैं तिण बार । जो सीता भेजै हम द्वार ॥३४९३॥
भाई पुत्र उसका देउं छोडि । जब वह जीया चाहै बहोडि ॥

रावण के दूत का पुनः निवेदन

दूत कहै सांभलि राजान । रावण सम कोई नहीं आंन ॥३४९४॥
उन जीत्या है तीनूं खंड । सब भूपन पै लिया है दंड ॥
जीत्या इन्द्र दसौं दिगपाल । राक्षस बंसी बली भूपाल ॥३४९५॥
जैं तुम जीया चाहो राम । तो सीत का मति लेहु नाम ॥
छोडो कुंभकर्ण इन्द्रजीत । तो तुमसौं छूटै नही प्रीत ॥३४९६॥

हमारे कुल को लागै गाल । बोलै नहीं बचन संभाल ।।
सीता कुं दूजा कहे भरतार । लगै कलंक तिहुं लोक मझारि ।।३४९७।।

रामचंद्र जो ढील न करैं । रावण कूं हम परलय करैं ।।
लक्षमण भामंडल सूं कहै । दूत कु कछु दोष न लहै ।।३४९८।।

रावण के बचन कहे इस ठौर । याकूं कछू न लागै खोडि ।।
सिंह कोप हस्ती परि करै । मुसक परि कछु काज न धरै ।।३४९९।।

इह बसीठ उंदर सामान । ता परि कोपै स्यंघ क्या आंन ।।
इतनूं कहि मारै क्या पाप । जोग्या नीतैं समझै आप ।।३५००।।

वलि वृद्ध विप्र तापसी । जोगी जती शुद्र मानसी ।।
पशु आश्रित पंथी अस्तरी । इनै मारि भुगतैं गति बुरी ।।३५०१।।

दूत मारै का लागै दोष । सकल ही जीव दया कौं पोष ।।
जिहां दया तीहां धरम । अदया जाणहु पाप का मर्म ।।३५०२।।

भामंडल का घट गया क्रोध । लक्षमण नैं दीया प्रतिबोध ।।
सामंत दूत फिरि बोले बयन । समझो राम ज्युं पावो चैन ।।३५०३।।

तीन सहस्र विद्याधर सुता । ब्याही सकल सुख की लता ।।
जो विद्या तुम चाहो राम । मानुं नगर भलेरा गांम ।।३५०४।।

पुहपक विमान छत्र सुखपाल । हाथी घोडे मोती लाल ।।
अर्द्ध राज लंका का लेहु । सीता का हट छांडि देहु ।।३५०५।।

राम का प्रत्युत्तर

तब श्री रामचंद्र इम कहै । अरे मूढ तू विवेक न लहै ।।
रावण कै कोई मंत्री नांहि । भली बुधि समझावै ताहि ।।३५०६।।

नारी देकरि मुगतो राज । ते अपणो बिगाडै काज ।।
वातैं भली जांणु प्रतीत । वन मैं रहैं आतम सुं प्रीत ।।३५०७।।

फिरै पयादा वन फल खाइ । वा सम सुखी अवर न कहवाइ ।।
श्री जिन जी सूं लगावैं ध्यान । राखैं सदा आतम ग्यांन ।।३५०८।।

दूहा

राज काज जीया तजै, मुगतैं सब विध सुख ।।
धिग् जनम वा पुरुष को, कुलहै लगावैं दोष ।।३५०९।।
धक्का दीया दूत को, दिया सभा तैं काढि ।।
बचन न बोलैं समझ करि, तातैं व्यापैं गाढि ।।३५१०।।

चौपई

दूत का रावण के पास आना

गया दूत रावण कै पास । भाषी सकल बात परकास ।।
भामंडल बचन कह्या समझाइ । लछमण ने तब दिया छुडाइ ।।३५११।।

दूहा

वह तो हठ छोडै नहीं, तजै न सीता नारि ।।
धरम नीत जे तुम करो, बेग मिटावो रारि ।।३५१२।।

इति श्री पद्मपुराणे रावण दूत आगमन विधानकं

६१ वां विधानकं

चौपई

रावण द्वारा चैत्य वन्दना

रावण सुणें दूत के बैन । करै सोच मन भयो कुचैन ।।
कुंभकर्ण अने इन्द्रजीत । मेघनाद तीनूं भयभीत ।।३५१३।।

वे बंधे मैं भुगतूं राज । मेरा हुआ घना अकाज ।।
वे ठाडे गलहथै हाथ । सोगवंत करि नीचा माथ ।।३५१४।।

बहुत किया उनसों संग्राम । हारि न मानैं लक्षमण राम ।।
जांनो अब मुझ कैसी बनैं । निसचै वे प्राण मम हनैं ।।३५१५।।

असी विद्या साधूं कोइ । दुरजन सकै न सनमुख होइ ।।
बडी वेर उपज्यो चितग्यांन । सब राउं सांतिनाथ जिन थान ।।३५१६।।

मुनिसुव्रत स्वामी की सेव । करूं बिब बीसौं जिनदेव ।।
सहस्रकूट कंचन देहुरे । रतन बिब कंचन मों जडे ।।३५१७।।

देश देश चीठी पठवाइ । करो चैत्याले सगली सज्याइ ।।
पर्वत बन नगर अने गांम । भए देहुरे उत्तम ठांम ।।३५१८।।

पूजा प्रतिष्ठा करैं सब लोग । धरैं भाव करि तीनूं जोग ।।
मंदोदरी आदि अठारह सहस । पूजैं सब तिय उत्तम वंस ।।३५१९।।

धरम महातम हिए विचार । देव गुरु सास्त्र करैं मनुहारि ।।
पूजा दान करैं सब नित्त । दया धरम सों लगाया चित्त ।।३५२०।।

इति श्री पद्मपुराणे शांतिनाथ मुनिसुव्रत चैत्यालय विधानकं

६२ वां विधानक
चौपई

अस्टाहिनका महोत्सव

फागुन मास अस्टमी स्वेत । अठाई व्रत करैं धरि हेत ।।
नंदीश्वर दीप जिनेस्वर भवन । सुरपति करैं तिहां गवन ।।३५२१।।

अमराधिप पूजैं जिन देव । करैं नृत्य मन वच सुनेह ।।
कंचन कलस षीर जल लाव । ते ढालैं मस्तक भगवान ।।३५२२।।

रतनपुंज धरि पूजा करैं । जैं जैं सबद पाप कूं हरैं ।।
खेचर भूचर चैत्यालय भगवंत । रचना रचैं तिहां बहुभंत ।।३५२३।।

लगे चन्द्र वे सोभय ठोर । बाजंतर बाजैं तिहां सोर ।।
अष्ट द्रव्य सामग्री घणी । वांदरवाल की सोभावणी ।।३५२४।।

पंडित मुनी पढ़ैं जिनदेव । कहैं ग्यांन के सूक्ष्म भेद ।।
वर्त्त अठाई उत्तम ध्यान । करुणा अंग बखाणैं ग्यांन ।।३५२५।।

दूध दही रस घृत की धार । श्री जिन पूजा बारंबार ।।
दुहुंधा थोर करैं सब धर्म । जीव जंत करुणा का मर्म ।।३५२६।।

सब ही सूं छोडैं तिहां बैर । पुन्य काज लागे चहुं फेर ।।
चरचा करैं धरम की रुची । पालैं क्रिया बहुत ही सुची ।।३५२७।।

सामाईक करैं त्रिकाल । सावधान सब ही भुवाल ।।
आत्मा लिव ल्यावैं बहु भाइ । ढिकसूं स्तुति करैं सब राय ।।३५२८।।

दूहा

वर्त्त अठाई जे करैं, राखैं समकित सुध ।।
सो ही उत्तम जिन सही, करैं धर्म की बुध ।।३५२६।।

चौपई

शांतिनाथ मिंदर सु अनूप । पूजा करैं तिहां रावन भूप ।।
अष्टांग करैं नमस्कार । अस्तुति पढ़ै सु बारंबार ।।३५३०।।

मन में विचारैं अैसा भाव । जिहां लग बसैं नगर अन गांव ।।
आठ दिवस का पोसा लेहु । नित उठि दान सुपात्रां देहि ।।३५३१।।

जमदंड कुं इह आग्या भई । ढंढेरा फेरि दुहाई दई ।।
जे ते हैं उत्तम कुल लोग । आठ दिवस अठाई जोग ।।३५३२।।

आरंभ तजि करो दिढ धरम । आठ दिवस छोडो सब कर्म ।।
जा के घर में नाहीं अन्न । तिस कूं द्यो मुंहमांग्या अन्न ।।३५३३।।

मंडारह दीज्यो ताहि । जो कुछ चाहे सो द्यो वाहि ।।
सुणु सहु लोक भयो आनंद । पूजा रचै श्री देव जिनंद ।।३५३४।।
तीन काल पूजैं जिनदेव । सुणै सास्त्र गुरु की सारै सेव ।।
दांन सुपात्रां विधि सौं देइ । अठाई व्रत सफल कर लेहु ।।३५३५।।
जपै जाप राखैं चित ठौर । गहै मौन व्यापइ न है और ।।
कोइ चरचा कोइ आतम ध्यान । कोई कहै परम व्याख्यान ।।३५३६।।

रावण द्वारा विद्या सिद्धि का प्रयत्न

रावण चौबीस दिनां की टेक । सिध होवै तब विद्या एक ।।
जाकौं वह विद्या सिध भई । दरजन जीत सकै नहीं कोइ ।।३५३७।।
वे पूजैं स्वामी सांतिनाथ । रावण सुमरै जहां हाथ ।।
सिस न चलैं रहै मन धीर । जांणु बैठा वज्र सरीर ।।३५३८।।

दूहा

विद्या साधन कारणैं, दिढकर लाग्या ध्यान ।।
होनहार समझै नहीं, कहा होइती आंन ।।३५३९।।

इति श्री पद्मपुराणे रावण विद्या साधन विधानकं
६३ वां विधानक

अडिल्ल

सुणी इसी जब बात कहैं सब संजुत सूं ।।
उनतो लगया ध्यानक श्री श्री भगवंत सूं ।।
जो कोई आश्रम लेई पुरुष के मान कौं ।।
वह नहीं छोडै बांह धर्म की कांन कौं ।।३५४०।।

चोपई

व्रत साधना के कारण युद्ध बन्द होना

कैसी विध उसकौं दुख देई । उनतो कियो धरम सूं नेह ।।
वाकै करैं धरम की हांन । होइ पाप समझो धरि ध्यान ।।३५४१।।
जब हमसूं वह सनमुख लडै । तब हम भी उसमे जुध करैं ।।
धरम नीत सूं कीजे जुधि । पाप कर्म की छोडो बुधि ।।३५४२।।
वरत अठाई उसका सही । वाकौं दूषण है यह नहीं ।।
वानर बंसी कहई नरेस । तुमतो कहो धरम उपदेस ।।३५४३।।

जई बालक तो बिगडै काज । तो नहि लागै उनको लाज ।।
हम मारैं रावण कूं जाइ । ए आठ दिवस जाइ बिहाइ ।।३५४४।।
दूरणमती यह बिहाइ । आगौ पवन बैठि निहारण ।।
मकरध्वज राजा संतोप । रतिवर्द्धन छाया करि कोप ।।३५४५।।
वाताइण अरु सूरज उद्योत । महारथ पीतंकर बहु जोत ।।
नलनील भणौं नृप घणे । नांमावली कहां लग गिणे ।।३५४६।।
पहुंचे लंका संभले वे भूप । रखवाले करैं रावन रूप ।।
कोप्या सकल सूरवां घेर । मंदोदरी समझावैं तिण बेर ।।३५४७।।
लंकापति आगन्यां दई । हिंसा कर्म करो मति नई ।।
ए इस थांन धर्म की ठोर । झूझ कीये ते लागैं घोरि ।।३५४७।।
आग्या बिन कीजे नहीं जुध । ऐसैं कहि मंदोदरी बुधि ।।
सगलो मिल तोडी पोल कुंवाड । लंका मांहि पडी तब राडि ।।३५४९।।

बंदरों द्वारा लंका में उपद्रव करना

लंगुर निज विद्या संभार । वानर बारन घर घर बारि ।।
जाकूं पकडैं लोचैं गात । बालक अस्त्री डरपैं बहु भांति ।।३५५०।।
रावण की माला लई छीन । लुंचैं ताहि बहुत दुख दीन ।।
भाजे लोग कोट में धसे । लुटैं गांम वानर जु हंसैं ।।३५५१।।

क्षेत्रपाल द्वारा रक्षा

क्षेत्रपाल कोप्या तिण घडी । माया रूपी सैना करी ।।
मुंख बिकराल राता नयन । मुदगर हाथ मार मुख बयन ।।३५५२।।
कोई रूप स्यंध अरु सांप । अगनि रूप धरि देह संताप ।।
लांबी डाढि देह अस्थूल । पकडैं बिरछ उपाडैं मूल ।।३५५३।।
जनुं वृक्ष की कीनी है मार । वानर बंसी मानी हार ।।
भाजि छिपे भूल्या अवसान । छुट्या दुख लंका के थान ।।३५५४।।
बहुरउ विद्याधर संभार । मारे देव मनाई हार ।।
वे भाजे ए पीछा करैं । देखैं सकल अचंभा भरैं ।।३५५५।।
पूरणभद्र मणिभद्र खेत्रपाल । विद्याधर मारे भूपाल ।।
भाजे नरपति लंका छोडि । सूरवीर फिर लडैं बहुरि ।।३५५६।।
सनमुख भए विद्याधर भूप । ए हटैं नहीं क्रोध के रूप ।।
करैं देव बीजली पात । चलैं पग पवन हूठैं नहीं राति ।।३५५७।।

बरसै मेह मूसलाधार । भाजे विद्याधर कुंवार ।।
वे दोन्यु देवल मांझ गये । हाथ जोडि तिहां ठाढे भये ।।३५५८।।

वानर वंसी कुमर सब आइ । हमकू दुख दिया बहु भाइ ।।
श्री जिन सांतिनाथ के थान । रावण राय लगाया ध्यान ।।३५५९।।

सब परजा कूं उनों दुख दिया । जिन मंदिर में उपद्रव किया ।।
तुम भये हम करैं उपगार । बरजो तुम उनसौं इंण बार ।।३५६०।।

लक्षमण कहै रावण है चोर । सीता हर ल्याया इस ठौर ।।
साधै विद्या सु अजीत । एहै कवण धरम की रीत ।।३५६१।।

अब हम वहै सरभर हैं सही । जे वह विद्या पावैं नहीं ।।
तो हम पावैं सीता नारि । जई विद्या न हुवै अधिकार ।।३५६२।।

कारिज हमारा बिगडै सही । अवर सोच हमकुं कछू नहीं ।।
पापी कूं तुम भए सहाइ । हमारा दुख तुम चित्त न सुहाइ ।।३५६३।।

अइसा तुम कछु करो विचार । टरै ध्यांन पावैं नहीं पार ।।
कहैं देव हम बोलैं नांहि । परिजा दुख करिय न चाहि ।।३५६४।।

जासौं वयर तासु करो युध । अैसा वचन कहै गए सुर सुध ।।
सुणे वचन सब निरभय भये । मन संदेह सहु के गए ।।३५६५।।

दूहा

रावण साधैं ध्यान धरि, विद्या महा अजीत ।।
एक खोट वामैं बडो, प्रमदा मांहीं चित्त ।।३५६६।।

इति श्री पद्मपुराणे समदिष्टी देव प्रहार जईकीत्ति विधानकं
६४ वां विधानक

चौपई

अंगद का लंका में आकर वहां की स्थिति देखना

अंगद लंका देखण चल्या । किंधकांड गज साध्या भला ।।
चौरासी अह सोहै झूल । घंटा वादि सुहावण मूल ।।३५६७।।

ऊपर बणी अंबारी लाल । जिहां बैठा अंगद भूपाल ।।
सूर सुभट संग भूपति घणे । पयादा लोग न आवैं गिणे ।।३५६८।।

बादल मांहि जिम पुंनिम चंद । तिम गज ऊपर अंगद सुरेन्द्र ।।
लंका देखि नगर की गली । सोहि सोहि सोभा अति भली ।।३५६९।।

लाल मृदंग बजैं गुडगुणी । करैं नृत्य पातर रूवड़ी ॥
जिहां जिहां जिन के देहुरे । पूजा पढ़ैं पंडित सहु खरे ॥३५७०॥

बाजा बजैं सुहावरण रूप । तिहां कामिनी नारि अनूप ॥
अंगद कूं देखैं तिरण बार । धन्य नारि जिसका यह भरतार ॥३५७१॥

कोई कहै इह जननी धन्य । जिसकी कूंख भया उत्पन्न ॥
कोई कहैं बहन है धन्य । जिसका है यह बीर रवन्य ॥३५७२॥

सब मिलि नारि सराहैं रूप । नमस्कार करि फिरियो भूप ॥
लंका के गढ किया प्रवेश । चंद्रकांति मणि मिंदिर भेस ॥३५७३॥

मंदिर का बहुतं विसतार । जो भूलें सो लहै न द्वार ॥
इन्द्र नील मणि मंदिर और । रतन सफोटिक मिंदिर तिरण ठौर ॥३५७४॥

श्री भगवंत का है तिहां सथांन । अंगद नृप तिहां पहूंच्या आंन ॥
नमस्कार करि करी डंडोत । अस्तुति जिन की पढी बहोत ॥३५७५॥

तीन प्रदक्षिणा दई नरेंद्र । सांतिनाथ पूजिया जिनेन्द्र ।
रतनखंभ झलकाहिं रंग । [illegible] भंग ॥३५७६॥

बेदी मांही बनी अनूप । छत्री सोभैं अधिक सरूप ॥

ध्यानारूढ रावण को देखना

जिहां रावण था ध्यानारूढ । अंगद नैं तब पाया ढूंढ ॥३५७७॥

रे पापी पाखंडी नीच । धरया ध्यान कपट मन बीच ॥
ऐसा परपंच करै है झूठ । गही मौंन जैसा है ऊंट ॥३५७८॥

बिन बिवेक देही कों दहै । सत्य शील का भेद न लहै ॥
रावण चित्त डुलावै नहीं । करतैं जाप्य अंगद नें गही ॥३५७९॥

पुहप उठाय मारे मुंह माथ । पकडि झंझोडे दोनूं हाथ ॥
मंदोदरी आदि सकल रणवास । चोटी पकडि आनी उन पास ॥३५८०॥

करै आलिंगन मोडै बांह । रावण मूंह तैं बोलैं नांह ॥
सगली सखी पुकारैं घणी । करैं कहा अब ऐसी बणी ॥३५८१॥

तुम बैठां हमको दुख होइ । तुमकों बुरा कहै सब कोइ ॥
रावण का तिहां चित्त न टरै । तब अंगद मुख तैं उच्चरै ॥३५८२॥

रे रावण तैं सीता हरी । हूं ले जाऊं मंदोदरी ॥
जै तूं बली तो लेहु छुडाय । दासी करि हूं पिता की जाय ॥३५८३॥

मैं चाल्या जे तोहि दिखलाइ । मति कहियो ले गया चुराय ॥
रावण मुख तैं कछु न कहै । बिद्या का ध्यान जीय मैं रहै ॥३५८४॥

रावण द्वारा विद्या सिद्धि

चिहुं ओर उजियाला भया । विद्या पाइ सुख उपज्या नया ।।
बोलें विद्या प्रभु आगन्या देहु । जो मन हुवै सो कार्य करेहु ।।३५८५।।
रावण कहै लछमण कुं बांधि । मेरा इहि विधि कारज साधि ।।
बहुरूपिणी विद्या गुण धरों । रावण सौं बहु बिनती भरों ।।३५८६।।
आगन्या देहु प्रभुजी मोहि । कुंण खुटक हिरदा मां तोहि ।।
तब रावण बोलै तजि मौन । उठो वेग अब कीजे गौन ।।३५८७।।
बांधि आणु राम लक्ष्मणां । तो समझौं तो मैं गुण घणां ।।

विद्या का रावण से निवेदन

विद्या कहै लंकापति सुणु । दानव देव सकल मैं हणु ।।३५८८।।
चक्रधारी सूं कछु न बसाय । अवर सकल कौं बांधू जाय ।।
सांतिनाथ का दरसन पाय । दई प्रदक्षिणा नवण कराइ ।।३५८९।।

अडिल्ल

रावण नौल विचार बहुत मन में करै,
विद्या भई जु सिध गुण बहुला धरै ।।
जो मन इंछा बात सो यापैं है नहीं,
मो पैं विद्या बहुत एक ये भी सही ।।३५९०।।

इति श्री पद्मपुराणे बहुरूपिनी विद्या आगमन विधानकं

६५ वां विधानकं

चौपई

रावण का गमन

सब रणवास जु करैं पुकार । अंगद दुख दिया तिण बार ।।
तुम आगे ऐसी करी । तुमारि संक न मनमें धरी ।।३५९१।।
अंगद गांडु का कहा मित्त । उन कछु भय न आण्यां नहिं चित्त ।।
तुम नैं हमारी न आंनी दया । सब त्रिया कूं दुख दे गया ।।३५९२।।
रावण कोप कहै ए बैंन । मंदलो ध्यान धरो दिढ अइन ।।
जई किरोध करता वन मांहि । तो मोकुं विद्या फुरती नांहि ।।३५९३।।
वाकुं सुधि मरणे की भई । बेंदर बात उपाजाई नई ।।
बे तो सब ही हैं कीट समान । मारूं मौडक करूं घमसान ।।३५९४।।

सब त्रिया तणी करि मनुहार । पहर आभूषण किये श्रृंगार ॥
चल्या मेंहू बाजा बजवाइ । सुवरण चौका लिया मंगाइ ॥३५९५॥

धरम उतारं करं स्नान । तेल फुलेल उबटणा आन ॥
कंचन कलस गंगा का नीर । करई सेवा राणी तीर ॥३५९६॥

सांतिनाथ की पूजा करी । अष्ट द्रव्य सामग्री धरी ॥
बहुरि आय लीया आहार । पुष्पक विमांण परि हुवा असवार ॥३५९७॥

बहुरूपणी का अब देखूं बल । कैसी है या विद्या अटल ॥
जितनी थी विद्या की सइंन । सब गुंण देखे अपणे नयन ॥३५९८॥

कंपी धरती गिरि थरहरे । रामचंद्र का दल ऊपरे ॥

रावण के मंत्रियों द्वारा पुनः निवेदन

रावण के बोलें मंतरी । तुम पाई विद्या गुण भरी ॥३५९९॥
रामचंद्र लक्षमण हैं बली । सीता देहु ज्यौं होवें रली ॥

रावण द्वारा पश्चाताप

मोहि भई प्रांण्यां की लाज । मोहि नहीं सीता स्युं काज ॥३६००॥

जई फेरू तो मोहि लगं कलंक । सब कोई कहै इन मानी संक ॥
मोकूं उपजी बुधि कुबुधि । तुझि हरि लाया भूली सुधि ॥३६०१॥

मेरी म्याव थी जो इम ही लिखी । बैठि विमांण देखउ भू सखी ॥
पुष्पक विमान सीता बैठारिण । दिखलाया समला संसार ॥३६०२॥

धिग धिग धिग है मेरी बुधि । कछु नही करी धरम की सुधि ॥३६०३॥
परनारी मैं काहे हरी । अपनी कीरत कीनी बुरी ॥
जो मैं जटा पंखी के पास । छोडि आवता दंडक बनवास ॥३६०४॥

भभीषण समझावै था मोहि । मैं वापरि कीया अति छोह ॥
वाके मारण की मति करी । भाई बीछडि गया तिन घडी ॥३६०५॥
जे मैं मानता उस तणां बचन । तो किम होती ऐसी कठिन ॥
कुंभकर्ण अर्नै इन्द्रजीत । मेघनाद तीनूं भयभीत ॥३६०६॥

पडे बंदि मांरा सब जाइ । ए दुख मोपैं सह्यो न जाइ ॥
उत्तम कुल को कालम स्याइ । सीता कुं आंणी चुराइ ॥३६०७॥
सकल लोक निसदिन निंदा करें । जो सुणि है सो कहि है बुरें ॥
परनारी है जिसा भुवंग । भव भव दुख होवें जिय संग ॥३६०८॥

मैं समझैं था अमृत पाय । विष समान लागै मुझ दाह ।।
जई हूं देहुं राम नैं जाइ । तो सब हंसैं रंक अनैं राव ।।३६०६।।
उन अंगद मोसुं करी अति बुरी । बिगोया मोहि सब अस्तरी ।।

रावण का पुनः युद्ध करने का निश्चय

अंगद और मारूं सुग्रीव । दोनूं लारि करूं बिन जीव ।।
प्रभामंडल तम मंडित करूं । हनुमांन जम मंदिर भरूं ।।३६१०।।
चंद्रहास से सबकौं काटि । उनकूं भेजूं जम की बाटि ।।
देख जू अब मैं असी करूं । मारि सबन कूं परलय करूं ।।३६११।।

दूहा

समझि ग्यांन विह्वल भया, पहुंची आवजु पूर ।
धरम रीत जांणी नहीं, उन जु कुमाया कूर ।।३६१२।।

इति श्री पद्मपुराणे जुधनिश्चै कृत विधानकं

६६ वां विधानक

चौपई

रावण की दैनिक क्रिया

बीती रयण किया सु बिहांण । रावण उठि कीयो असनान ।।
पूजा करी देव भगवंत । बारबार सुमरै जिनयवंत ।।३६१३।।
भोजन करि भूषण सवारि । मात पिता की कीनी मनुहार ।।

दरबार हाल

सब कूं दीने कंचन थाल । स्यंघासन बैठा भुपाल ।।३६१४।।
तिहां भूपती ठाढे घणा । रावण सोचै मन आपणा ।।
कुंभकर्ण था मेरी बांह । इन्द्रजीत मेघनाद भी नांहि ।।३६१५।।
वे तीनूं रामचंद्र कै बंदि । उन बिन सगली सेना अंध ।।
हाथ गला थैं सोचै सोच । अम्रपाणी थी छोडी रुच ।।३६१६।।
देखैं तिहां सकल मंतरी । उनू बुधि उपजाई खरी ।।
मन की बात उनूं सब पाइ । कहै बीनती सबै समझाई ।।३६१७।।
तुम कुछ चिंता आणौं आपणौं । तुम संग नरपति ह्वैंगे घणैं ।।
विद्या एक एक तैं भली । पूजैंगी तुम मन की रली ।।३६१८।।
सुरबीर नहीं करैं बिचार । उठो बेग बांधो हथियार ।।
मंदोदरी झांखै झरोखा द्वार । कैसी आज्ञि करै करतार ।।३६१९।।

अपशकुन होना

रावण आवधसाला चल्या । तिहां सुगन खोट सहु मिल्या ।।
छंक सों छत्र पड्या भूमि । टूटी धुरि आया रथ भूमि ।।३६२०।।
आगैं होइ निकल्या मांजार । स्वान कान झाड्या तिन बार ।।
खोट सुगन रावण को भए । मंदोदरी सोचै निज हिये ।।३६२१।।

मन्दोदरी की चिन्ता

मंदोदरी पूछै निज मंतरीं । जे रावण टालैं असुभ घरी ।।
समझावो तुम मेरी बात । ज्यौं टलि जावैं गृही घात ।।३६१२।।

मन्त्री का उत्तर

बोलैं मंत्री माता सुणु । रावण समझै नबही तैं घणु ।।
वेदपुराण करै व्याख्यान । वा सम सुघड न दूजो जाण ।।३६२३।।
हम कछु कहैं तो मानैं बुरा । हमारे कहे काज कहा सरा ।।
जो तुम वा समझावो आप । तो इ हमन को मिटै सताप ।।३६२४।।
मंत्री पास सुणे उपदेस । गई जहां दसकंध नरेस ।।

मन्दोदरी द्वारा रावण को समझाना

हंस गमन सोहै मंदोदरी । बहुतैं संग सखीयां खरी ।।३६२५।।
जैसे गंग समुद्र कूं मिली । मंदोदरी इम पति पै चली ।।
जैसे सबहै कालिंदरी । तिम वे संग सोहे अस्तरी ।।३६२६।।
जैसे इन्द्र इन्द्राणी कै हेत । अइसी प्रीत इनांको होत ।।
आवत देखी रावण निज नारि । बांधे था कटिस्युं तरवार ।।३६२७।।
बोलै भूपति कारण कवन । काहे कूं तुम कीया गवन ।।
मंदोदरी बिनवै कर जोडि । मोकूं देहु सुहाग बहोड ।।३६३८।।
प्रभुजी मेरा मानों बयन । करो राज घर बैठा चइन ।।
रामचंद्र हैं सूर्य समान । तुम हो सब तारा समान ।।३६२६।।
कैसे लगैं भांन कूं डेल । बालक ज्यों करता होइ खेल ।।
वह हैं तीन लोक के ईस । उनसों करि न सकै कोई रीस ।।३६३०।।
सीतां उनकी देहु पठाइ । निरभय राज करो इण ठाइ ।।
परनारी है दुख की खांन । तासौं होइ धरम की हानि ।।३६३१।।
कुल खय होइ जाहि हैं प्रान । असैसी समझि विचार सुं ग्यांन ।।
सोक नदी अति ही गभींर । चिंता लहर ज्युं लागै तीर ।।३६३२।।

है कालिन्द्री अगम अथाह । बुडत बांह गही तुम नांहि ॥
उत्तम कुल ए राक्षस बंस । तुम इह किया पाप का अंस ॥३६३३॥

मैं कुल डोब्या परनारी काज । कीर्त्ति तुम खोई अकाज ॥
परनारी के भुगतण हार । ते क्षय भए है इस संसार ॥३६३४॥

अर्ककीर्त्ति जैसे क्षय गया । श्री विजय की नारी ले गया ॥
असनघोष अनै विजयसेन । श्री विजय के मन भया कुचैन ॥३६३५॥

उनूं अर्ककीर्त्ति कौं मारि । रूपणी त्रियां लई तिणवार ॥
ऐसी तुमकूं भई कुबुद्धि । अपणे जीव की करी न सुध ॥३६३६॥

सीता देहु रामकूं जाहि । निर्भय राज करो तुम राय ॥
कह्या हमारा करो तुरंत । ज्यों नगरी में होवै संत ॥३६३७॥

रावण का उत्तर

रावण कहै मंदोदरी सुणु । अर्ककीर्त्ति सम मो मति गिणों ॥
मैं जीते हैं सकल नरेस । इन्द्रभूप मान्यो आदेस ॥३६३८॥

मेरा बल है प्रगट तिहुं लोक । तू काई चितवै मन सोक ॥
कहां राम हैं भूमि गोचरी । जिसका भय तू चित्त में धरी ॥३६३९॥

उनकी सेना दहवट करूं । राम है बांधि बंदि मैं धरूं ॥
जे मैं आणी सीता नारि । फेर सकूं कैसे इण बार ॥३६४०॥

उत्तर प्रत्युत्तर

मंदोदरी सुणि धुण्यो माथ । मेरा बचन तुम मानुं नाथ ॥३६४१॥

कहां दीपक कहां सूरज कांति । तुम दीपक रवि हैं रघुनाथ ॥
भानु उदय तब दीपक जिसा । उनका बल आगैं तुम जिसा ॥३६४२॥

तुम काहे को होवो दुखी । सीता देइ तुम रहो सुखी ॥
रावण बोलै करि नीचो माथ । करै सोच बहुत है साथ ॥३६४३॥

जे पुरुष काहू का कर ग्रहै । तो क्यूं छोडै किसही के कहै ॥
मोहि भई प्रांणों की कांण । कैसे छोडूं अपणी आंणि ॥३६४४॥

मंदोदरी बिनवै सुणु नरेन्द्र । परनारी है पाप के फंद ॥
कीरत नासै अपजस होइ । पति परतीत करै नहीं कोइ ॥३६४५॥

फल इन्द्रायण अधिक स्वरूप । ऐसा परनारी का रूप ॥
देखत लागै सोभावंत । फरसत खात लगैं विष मंत ॥३६४६॥
जैसे मणि भुयंग सिर देख । जो कोई लोभ करै वह पेख ॥
डसै बियाल खाई तसु प्राण । वह मणि तब कोई भुगतै आण ॥३६४७॥

जे बांबी में डारै हाथ । निसचै हुवै प्राण का घात ॥
समझि बूझि भया अग्यांन । परनारी हरि करिते मांन ॥३६४८॥
जाइ नरक भुगतैं चिरकाल । छेदन भेदन दुख का साल ॥
ताती फुतली ल्यावैं अंग । ए फल लगैं सील के भंग ॥३६४९॥
जे कुलीन ते पालैं सील । तजैं सील जे कूलैं कुचैन ॥
सीता मो कूं मांगी देहु । तुम इह मेरा वचन करेहु ॥३६५०॥
जे तुम चाहो ही अति रूप । मैं हूं सबतैं महा स्वरूप ॥
जैसा कहो तैसा करूं भेष । वैक्रिया रूप करूं असेस ॥३६५१॥
सीतां नैं द्यो मेरे साथ । पहुंचाऊं जहैंने रघुनाथ ॥

रावण का कोधित होना

असी सुणि कोप्या दससीस । भृंह चढाई नयनही बीस ॥३६५२॥
तू मेरा अग्रे सूं जाह । रावण तबै इण विध रिसाह ॥
परपख्यां की अस्तुति करैं । मेरा भय जिव मैं न धरैं ॥३६५३॥
तेरैं कहा रामसूं काम । तो कूं जात है उनकी ठाम ॥

मन्दोदरी का पुनः निवेदन

मंदोदरी कहै फिर बैन । प्रीतम तुम राखो चित चैंन ॥३६५४॥
इतनां गुण सीता में कहा । ता कारण इतना हठ गह्या ॥
वह तो कोई इच्छै नांहि । अटल सील बरतै है तांहि ॥३६५५॥
उत्तम कुल जनक की धिया । महा सती राम की त्रिया ॥
जे कुल हीन तजैं ते सील । बिभचारी कुल छांडैं नीच ॥३६५६॥
बिना कारिज मरि है ए जीव । ए सब पाप चढैंगे तव ग्रीव ॥
पहिलां तजैं आपनी देह । तब परखारास्यूं किसा सनेह ॥३६५७॥
जिनकी तुमने सीता हरी । वै तोहि मारैंगे इस घडी ॥
सीख देत मानु तुम बुरा । तुम मरने कारन ही धरा ॥३६५८॥
विसन कुमार विक्रिया रिद्ध । टारा दुख थाका पुनि सिध ॥
बलि पैं मांगी पैंड जु तीन । तब बोल्या बांभण मति हीन ॥३६५९॥
छोटा भाग बांभण का सही । तीन पैंडि ही मांगी मही ॥
इतनी सुण तब थाई देह । मानषोत्तर पर्वत पग देह ॥३६६०॥
दूजा चरण सुदर्सन मेरु । तीजा पग कूं रह्या हेर ॥
तीजा चरण बलि कै हीए । देवां नैं संबोध तब दिये ॥३६६१॥

तुम हो जती दिगंबर भेस । समझयो ग्यान दया उपदेस ।।
तब मुनिवर कुं उपजी दया । वलि कूं छोडि बनवास लिया ।।३६६२।।
मूला मे दीजिये बताय । ग्यानी मूरख नहीं निभाइ ।।
सीता देहु ज्युं मिटै राड । मानुं बचन ज्युं न पड़ै धाड ।।३६६३।।
आगैं भए नारायण सात । प्रतिनारायण मारे इण भांत ।।
प्रथम त्रिविष्ठ विजई बलभद्र । अश्वग्रीव मारे कर चक्र ।।३६६४।।
सुप्रतिष्ठ अचल दूजा अवतार । तारक मार किया संघार ।।
स्वयंभू धर्म तीजे भए । मेडश्र उन हण्यां समए ।।३६६५।।
पुरुषोत्तम सुप्रभु चौथो बली । निसुंभ कीत्तिण चौथा दली ।।
पुरुषसिंह सुदरसन पंचमें । मेरकुमार जिम मंदिर हमें ।।३६६६।।
पुंडरीक नंद भए छठा । मदसूदन मारचा चक्र पडै ।।
दत्त नामा नारायण सातए । बल्लभ कौ मारया आतए ।।३६६७।।
अब है यह अष्टम अवतार । तुम प्रतिनारायण है इस बार ।।
नारायण का है इहै नियोग । प्रतिनारायण कैं कुन करैं विजोग ।।३६६८।।
तातैं मुझे व्यापै है इही । तुमकुं लछमण मारैगा सही ।।
तातैं विवकें बारंबार । अब जे सकें कलह कुं टारि ।।३६६९।।
अकारथ क्यूं दीजिये जीव । अब कछु करो धरम की नींव ।।
अणुव्रत पालो घर मांहि । सुख सौं बैठा सीतल छांहि ।।३६७०।।
छह दरसन विध स्यौं द्यो दान । सास्त्र सुणुं उ नित व्याख्यान ।।
अथ तेरह विध चारित्र जीतो । पंच इन्द्री सत्रु ।।३६७१।।
आठ कर्म जीतो तुम ईस । प्रकृति ते रहै एकसो अडतालीस ।।
भव जल तिर जावो सिव मध्य । अजर अमर तिहां पूरण रिद्ध ।।३६७२।।
उत्तम ग्यानी करै न पाप । सीता देहु राम कुं आप ।।
छुडावो कुंभकरण इंद्रजीत । मेघनाद छूटै इह रीत ।।३६७३।।

रावण का उत्तर

रावण सुणि इम उत्तर देइ । तुम ए बचन काहे कहेइ ।।
तोरी कुंख उपजे बलवंत । तू किम हो है भयवन्त ।।३६७४।।
मैं तो प्रतिनारायण नहीं । कौण नारायण है इस मही ।।
इंद्र भूप सम अवर न कोइ । वाकुं बस कीओ भ्रम खोइ ।।३६७५।।
ऐसे हैं ये कहा बराक । जिन कौ तुम मानों हो धाक ।।
मरण सुं कातर होइ सो डरै । सरस होइ सो बेगा मरै ।।३६७६।।

कहूं राम लक्षमण सूं जुध । अब मैं अवैरन समझुं बुध ।।
भई रयण अस्त भया भान । शशि की ज्योति उदय भई आन ।।३६७७।।

रावण की रात्रि

रावण अंतहपुर जाइ । भोग भुगत सों रमण विहाइ ।।
नगर लोग सब मानैं रली । कोई दुखी न सोभा भली ।।३६७८।।
घरि [illegible] भुगतैं [illegible] दुखि [illegible] देख [illegible] ।।
उज्जल सिज्या उजल वर्ण । सोभै जिहां चांद की किरण ।।३६७९।।
सुरगपुरी सुर करैं बिलास । बैठी नारि कंत के पास ।।
फूल सुगंध अरगजा ल्याइ । जिसकी बास मधुकर लुभाइ ।।३६८०।।
बीण बजावै गावैं तान । बोलैं बचन सुख की खान ।।
सखी विचक्षण डोलैं नाइ । पान खुवावें बीडी बणाइ ।।३६८१।।
चउका वण्यां विराजे दंत । सोहैं हीरा की सी भंत ।।
नावक कला जाणई विचित्र । सोहैं हाथ कमल के पत्र ।।३६८२।।
कामी कामनी मय मंत । बोलैं सबद कोकिला संत ।।
ते सुख किसपैं बरणे जाइ । जे बरणें तो पार न पाइ ।।३६८३।।
सुख सूं भुगते च्यारू जाम । करि सनान सुमरे जिन नांम ।।
पूजा करी निरंजन देव । भोजन भुंज विचारैं भेव ।।३६८४।।

युद्ध के लिये प्रस्थान

प्रभु की आज्ञा बजे निसांन । सुण्यां सबद डोहै बलवांन ।।
काहू कूं ब्यापै बालक मोह । रोवै नारी प्रभु भयो बिछोह ।।३६८५।।
आंसू नयन भरे सब नारि । जुध करण चाल्या भरतार ।।
कहैं कंत सुणुं बर आंन । हम खाए हुं प्रभु को धांन ।।३६८६।।
स्वामि काज को भरथा सरीर । करो काम मन राख्यो धीर ।।
करैं बेगि भूपति का काज । जैं जिधनां अब राखैं लाज ।।३६८७।।
जीवांगा तो मिलस्यां आइ । सहु कुटंब भेटया गल लाइ ।।
भया बिदा ने पलाण्यां तुरी । ऊंची चढि देखैं सब तिरी ।।३६८८।।
गए दूर सब दृष्टि न पडैं । मुरछावंत नारी गिर पडैं ।।
रावण की सेनां तब चली । भई भीड पावै नहीं गली ।।३६८९।।
देखैं अटा अटारी लोग । हय गय पायक सुभट मनोग ।।
भूपति सबै बडे सामंत । बानैं धारी चले बलवंत ।।३६९०।।

घोडा रथ भये सुखपाल । हस्ती पर रावण भूपाल ।।
दस सिर बीस भुजा सोभंत । के आकास गामी विद्यावंत ।।३६६१।।

भूमिगोचरी पृथ्वी पर चलैं । विद्याधर ऊंचे बहु भले ।।
लोप्या भानु न दीसै आकास । महासंघट सैना चिहुं पास ।।३६६२।।

दूहा

रावण की सेना चली, कंप्या सब संसार ।।
सूर सुभट जोधा घने, कहत न पावैं पार ३६६३।।

इति श्री पद्मपुराणे रणक्षोभ विधानकं

६७ वां विधानक

चौपई

मन्दोदरी से अन्तिम भेंट

मंदोदरी सुं रावण इम कहै । तू काहे चिंता चित गहै ।।
सुभटां साथ बण्‍यं है काम । जो जीवता बचें संग्राम ।।३६६४।।

फिर तोहि सेती होइ मिलाप । हौणी होइ टरैं नहीं आप ।।
बहु विध समझाई अस्तरी । विछडे कंत हिए गम भरी ।।३६६५।।

ऊंचे चढि देखी सब सैन । घरि अंगण जीवकुं कुचैन ।।
मैं समझाई रचि पचि हार । वचन न मान्यां मोहि भरतार ।।३६६६।।

अब के कहा बणावें दई । अठारह सहस सोच चित भई ।।
एक सहस मंगल मयमंत । रथसौं लगे अंजन गिर मंत ।।३६६७।।

छत्री कलस अति सोभा बणी । रतन जोति सी दमकैं घणी ।।
रावण बैठा रथ परि आइ । दससिर सोहैं बीस भुजाइ ।।३६६८।।

इन्द्र रथ सम रथ नहीं कोइ । ऐसी सुणी रघुवंसी बीर ।।

राम द्वारा युद्ध की तैयारी

रामचन्द्र केहरि रथ चढे । गरुड वाहन लछमन बढे ।।३६६६।।

सेना चली चतुर विध संघ । सुर सुभट मन उठैं तरंग ।।
इंद्ररथ रघुपति ने देखि । पूछैं इह का कहो परेखि ।।३७००।।

के परबत कैं कोई देस । कहीं न देख्या इसका भेस ।।
अंगद बोलैं जांबूनंद । इह रथ रावण विद्यावंत ।।३७०१।।

लक्ष्मण सुणि कोप्या बहु भाइ । आ सनमुख सेना ले धाइ ॥

दोनों की सेनाओं में युद्ध

इत उत सेना सनमुख भई । काढि खडग लडाई लई ॥३७०२॥
दंती अंजनगिर जिम जुटे । मद के माते चुवे पटे ॥
मारैं टक्कर टूटैं दंत । मस्तक फूटैं बहैं रकत्त ॥३७०३॥
छोडैं बरछी मारैं बाण । पैदल सब झूझैं घमसान ॥
किसही काढि लई तरवार । बाह पडे करि मारंमार ॥३७०४॥
तीर तुपक का लागैं घाव । सुरमा सभी लड़ैं तिह चाव ॥
तउब न मानैं दोउंवां हार । घायल घूमे रणह मझार ॥३७०५॥
रूंडमुंड परवत सा पड़े । रथ सुं रथ अस्व सुं अस्व भिडे ॥
दोउ धां झूझैं भूपत घणे । उनुं का नाम कहांलू गणे ॥३७०६॥
धनुष खैंचि तक मारैं बांण । बहुतूं का छुटै तिहां प्राण ॥
गध आदि भषै तिहां आइ । सुरनर किंनर देखैं आइ ॥३७०७॥
बांने धारी जोधा लरैं । उंनू के पीछे पांव न पड़ैं ॥
कातर भाजैं जे रण कूं देख । कोई न उबरैं अैसा लेख ॥३७०८॥
अैसी कठिन बणी चिहुं फेर । जित भाजै तित मारैं घेर ॥
बहरी संग बहरी जुटे । तिनका क्रोध बहुर्ने घटे ॥३७०९॥
मारैं गदा करैं चकचूर । चक्र मारतां झूझैं सूर ॥
बरछी मारैं लेइ उंचाई । कोई गहि कर देइ बगाई ॥३७१०॥
बाथौं बाथ लडैं बलवांन । स्रोणत बहै अति नदी समान ॥
छुटे हनूमंत उतै मारीच । घेरि लिया सेना के बीच ॥३७११॥
तब धाए अंगद सुग्रीव । संदुक कुंभ विक्रम रण सींव ॥
पडी मार रावण की सैंन । झूझे राक्षस भया कुचैंन ॥३७१२॥
चिहुं कोर धाए सामंत । टूटै खडग लोह बाजंत ॥
रावण देखे हारे लोग । आया आप जुध कै जोग ॥३७१३॥
रामचंद्र लक्ष्मण बलवंत । सन्मुख ए धाए पुन्यवंत ॥
पुन्य तैं होवै निज जीत । पापी मरैं महा भयभीत ॥३७१४॥
रावण रामचंद्र सौं कहै । अजहूं कछु सास रहै ॥
मारूं तोकुं वेग संवारि । लछमण बोलै बात विचार ॥३७१५॥
रे गंवार पापी तूं चोर । अबकै पकडि मारूं ठौर ॥
वज्रावर्त राम कर गह्या । लछमण समुद्रावर्त ले रह्या ॥३७१६॥

धनुष लीया रावण नैं ताणि । दाउ घां छुटैं विद्या बांण ॥
भभीषण मयमंत सुं जुध । बांध्या मैं नृपति बहु सुध ॥३७१७॥

दूहा

बहुत जुध दोउधां हुवो, कब लग करै बखाण ॥
सुर असुर गंधर्व सुं, सहू जीवनैं दीयै पराण ॥३७१८॥

इति श्री पद्मपुराणे रावण लक्ष्मण जुध विधानकं

६८ वां विधानक

चौपई

देवताओं द्वारा आकाश से युद्ध का अवलोकन करना

रावण लक्ष्मण दोउ लरैं । हम बिन जीते दोउं न टरैं ॥
सुर असुर किनर गंधर्व । देखैं जुध सराहैं सर्व ॥३७१९॥
वर्षे फूल होई जैकार । इतना अस प्रगट्या संगार ॥
चन्द्रवरधन की आठ पुत्री । बैठि विमांण आई सुंदरी ॥३७२०॥
देखे जुध पूछैं अपछरा । तुम हो कवण ध्यान क्यों धरया ॥
चन्द्रवरधन राजा की धिया । जा संगे बीवाही थी सिया ॥३७२१॥
तब हम लक्ष्मण कुं पिता दई । जैं लक्ष्मण जीतैं सब कही ॥
हमारे मन का कारज होइ । नातर हममैं जीवैं नहि कोइ ॥३७२२॥
इतनी सुणि देई असीस । लक्ष्मण जीवो बहुत बरीस ॥
उंचैं चित्त लक्ष्मण बली । आनंदे सब मनमें रली ॥३७२३॥
किनर दीया सिधारथ बांण । वह विद्या पाई तिह थान ॥

रावण द्वारा चिन्ता करना

रावण मनमें करै विचार । किमहि न मानैं लक्ष्मण हार ॥३७२४॥
विघन विनायक छोडे बाण । लक्ष्मण बाकी करै न काण
सब विद्या छोडी तिह नार । चले बांण ज्यौं घनहर धार ॥३७२५॥
बाण सकल निर्फल होइ गए । रावण सोच विचारैं हिए ॥
मेरी विद्या बांण अचूक । इह विरयां पराक्रम गए सूक ॥३७२६॥
बहुरूपणी विद्या सभालि । कोप चढे रावण भूपाल ॥
लक्ष्मण का अर्द्धबांण छोडि । एक मुंड रावण का तोडि ॥३७२७॥

अनेक रूप में रावण का लड़ना

टूट्या एक भया होइ दस ओरि । वीसतैं दूणी भुजा लिह दोर ॥
सुरजहास लक्ष्मण कर गह्या । काटै मुंड रकत लिहां बह्या ॥३७२८॥
ज्यौं ज्यौं काटैं त्यौं त्यौं बधैं । सहस्र मुंड भुज दूणां बढैं ॥
ज्यौं ज्यौं काटै भुजा अरु मुंड । लाख सीस भुज दोई लख दंड ॥३७२९॥

सकल भुजा आयुध को लिये । मार मार सबद मुख किये ॥
जिहां काटै तिहां चलै रकत । नंदी बहै डूबै सहु जंत ॥३७३०॥
परवत मुंड भुजा का भया । पड़ी लोथ पग जाई न दिया ॥
सोनत नंदी बहै तिहां लोथ । हाथी घोडे रथ भूर बहोत ॥३७३१॥
जैसे मगरमच्छ जल तिरैं । ऐसे लोथ रकत में फिरैं ॥
जेता रण झूझा दोउ सेन । तिनका कहि न सकै कोइ बैन ॥३७३२॥
रावण की सब सुध वीसरी । लक्षमण भुजा थकी तब हरी ॥

रावण द्वारा चक्र चलाना

रावण तबै संभाल्या चक्र । सुदर्शन नाम भयानक वक्र ॥३७३३॥
सहस्र देवता सेवा करैं । चक्र सुदर्शन बहु गुण धरैं ॥
रावण कै कर आया तिह घडी । रवि की ज्योति सब उन हरी ॥३७३४॥
विमक सकल भाज्या रण लोग । कौण कौण का होय वियोग ॥
जिहां चक्र चलैं सब दलैं । कोई न बचैं फिर जीवत मिलैं ॥३७३५॥

चक्र तेज तैं सहु जन डरैं । वा सनमुख कोई न उबरैं ॥
रामचंद्र लक्षमण सुग्रीव । भामंडल भभीषण नींव ॥३७३६॥

हनुमान सुभट थिर भए । कछु संक न मानैं हीये ॥
बोलैं रामचंद लक्षमणां । रे वरांक सोचै क्या मना ॥३७३७॥

छोडि चक्र करूं टूक । वज्रावर्त्त सूं हनूं अचूक ॥
कोप्या रावन चक्र फिराइ । छूट्या सुदर्शन मुख जाइ ॥३७३८॥

रामचन्द्र कर वज्रावर्त्त । लक्षमण कर समुंद्रावरत ॥
भभीषण संभाल्या त्रिसूल । चक्र फेर गमावैं मूल ॥३७३९॥

हनुमान उठाई गदा । सुग्रीव वज्र संभाल्या तदा ॥
चक्र नैं फोडि करैं चकचूर । ऐसा मता करैं सब सूर ॥३७४०॥

चन्द्ररस्म अर भूपति घणे । छलबल निपुण राम संग बणे ॥
सुदर्शन चक्र लक्षमण ढिग जाई । तीन प्रदक्षिणा दीनी आई ॥३७४१॥

लक्ष्मण द्वारा चक्र प्राप्त करना

लक्ष्मण कै वह बैठा हाथ । पुण्य सहाइ हुआ रघुनाथ ।।
पुन्य समान मगा नहीं कोइ । पुंन्य ही तैं जग में जस होइ ।।३७४२।।

पुंनि सहाय दुर्जन हीन । पुंन्य पावैं बुध्य प्रवीन ।।
पुण्य तैं भोग भुगतैं संसार । पुंन्य बडो त्रिभुवन आधार ।।३७४३।।

पुन्य तैं दुख दालिद्र जाइ । संकट विकट में पुन्य सहाइ ।।
जल थल महियल मैं भय टरैं । ठग ठाकुर न उपद्रव हरैं ।।३७४४।।

पुन्य तैं कंचन वरण सरीर । रोग सोग न व्यापै पीड ।।
सब जग सेवै भय नहि ताहि । पुन्य समान भला कछु नाहि ।।३७४५।।

पुन्य तैं पावैं धन सिध । पुन्य तैं पावैं सुर की रिध ।।
पुन्य तैं पावैं परिघण सुख । पुन्यवंत का भाजै दुख ।।३७४६।।

सोरठा

रघुबंसी सु पुनीत, चक्र सुदर्शन पाइया ।।
तब सब भए नचीत, पूरब भव के पुंन्य सु ।।३७४७।।

इति श्री पद्मपुराणे चक्रसुदर्शन लाभ विधानकं

६६ वां विधानक

चौपई

लक्षमण चक्र सुदर्शन पाय । आनंदे रघुबंसी राइ ।।

रावण का पश्चाताप

रावण बेर बेर पिछताइ । भुभी सब भेज्या इस ठाइ ।।३७४८।।

हय गय रथ अरथ भंडार । पुत्र मित्र संगी नहीं लार ।।
नारी लक्ष्मी आवैं फिर जाईं । जैसे बुंद बुंद जाइ विलाई ।।३७४९।।

हूं माया जाल मांहि पड्या । परनारी जाय करि हरया ।।
मैं माया तजि लेता जोग । तो क्यूं होता इतना सोग ।।३७५०।।

लक्ष्मी तज न सक्या अग्यांन । मोकुं छोडि गई सुविहान ।।
जे नर माया कै बस भए । धर्म विदारक स्वान ही हिए ।।३७५१।।

जनम अकारथ खोया आप । अहनिसां रावन करै विलाप ।।
अनंतवीर्य स्वामी के वचन । ते मैं देखे भेद भिन्न भिन्न ।।३७५२।।

कोटिसिला उठावै जाइ । चक्र सुदर्शन पावै आइ ।।
ते निसचै रावण कुं हणैं । हुआ परतक्ष श्री जिन भणैं ।।३७५३।।

राज मद में मैं हुआ अंध । बांध्या अशुभ कर्म का बंध ।।
धन जोबन सुपने की रिध । जाण्या वहुधन देखें सिध ।।३७५४।।

जो मूरख ते मोह वसि पडै । वे ज्यों भवसायर में गडै ।।
जे विषफल को देख लुभाइ । जाके भखें प्राण उड जाइ ।।३७५५।।

उस खायां इक भव ही मरैं । परत्रिया तैं भव भव दुख भरैं ।।

विभीषण द्वारा लक्ष्मण को परामर्श

रावण अपणी निंदा करैं । भभीषण सु लक्षमण उच्चरैं ।।३७५६।।
अवर नृपति जो मार्गे प्राण । ज्यों रावण राखैं हम जांण ।।
तो करो राज लंका का वही । जीव दान वाको द्यू सही ।।३७५७।।

रावण का क्रोधित होना

रावण सुणि अगनि जिम बली । रे लक्षमण क्या मन में लिलै ।।
मैं रावण हूं बली बलवान । जे तैं चक्र लह्या अब आंन ।।३७५८।।

चक्र पाया क्यू काज न सरैं । जैसे चक्र कुंभार का फिरैं ।।
चक्र फिराए होय न कछु । जैसे धन पकी फल तुच्छ ।।३७५९।।

वे मन मैं ही अति गरवन्त । क्षुद्र पुरुष गर्व बहुवन्त ।।
जे तू नारायण होता आज । मैं कहूं सोही करै तू काज ।।३७६०।।

इन्द्र सरीखा फेरै तू रूप । तो तूं सही नारायण भूप ।।
तू नारायण कैसे भया । दसरथ देस निकाला दिया ।।३७६१।।

वन वेहड सू भ्रमता फिरया । तब तैं कुछ कहुं न बल करया ।।
मैं बालकस्यौं बूढा भया । तब ते मैं प्राक्रम बहु किया ।।३७६२।।

मो पै है विद्या बल वही । हूं रावण जीती सब मही ।।
मोकूं तू जाणै है भलै । मो सूं कहा चक्र की चलै ।।३७६३।।

तू भरम्या है चक्र फिराइ । बरांक पुरखां एहै सभाय ।।
जितना तेरे संगी भूपाल । मारूं गदा घसै पाताल ।।३७६४।।

मैं रावण किस की करूं सेव । तुम कुं अब जिम मिंदिर देव ।।
निठुर वाक्य बोल्या बहुभांति । सकल सुण्यां राज रघुनाथ ।।३७६५।।

लक्ष्मण द्वारा चक्र से रावण का वध करना

लक्षमण कोप्या चक्र फिराई । छूट्या ज्यौं बीजली बाई ।।
रावण इन्द्रधनुष कर गह्या । अपणैं बल पौरष उमह्या ।।३७६६।।

चन्द्रहास खडग नीकाल । रोकै मार चक्र की चाल ।।
लाग्या चक्र रावण कै हीए । दोए खंड होइ प्राण उड गये ।।३७६७।।

जारणे पडे गिरि सुमेर । मोभ दंत गिरया रण खेर ।।
राक्षस बंसी रोवें भूप । सुग्रीव आदि सोग के रूप ।।३७६८।।
रोवैं सकल उपाडैं केस । देखैं सब रावण के भेस ।।
हा हा कार करें बहु सोर । रावण मृत्यु पडा तिरण ठौर ।।३७६९।।

दूहा

परनारी के कारणैं, रावण दीये प्राण ।।
इह तन अपणां खंडीए, समझो एह सुजांण ।।३७७०।।

इति श्री पद्मपुराणे दसग्रीव बध विधानकं

७० वां विधानक

चौपई

बिभीषण द्वारा भाई के मरण पर विलाप करना

भभीषण आया नाहीं और । रोवैं और नहुं यां लोग ।।
हाइ भाई ए तैंने क्या किया । मेरा कह्या तैं नहि माना हिया ।।३७७१।।
जो मोहि सेती भई कछु चूक । गही मौन रहे हो मूक ।।
किरपा करो सुणावो बयन । तो अब मोहि होय सुख चैन ।।३७७२।।
तुम बिन कैसे जीऊं वीर । तेरे दुख सों जलैं सरीर ।।
तुम बिन चले जात हैं प्रान । आइ मूर्छा मृतक समांन ।।३७७३।।
रामचन्द्र लक्ष्मण तब देख । भभीषण पडया मृतक के भेस ।।
वैद्य बुलाइ करैं उपचार । ऊषद दे करि बीजणां बयार ।।३७७४।।
बडी बार में भया सचेत । व्याप्या मोह भाइ के हेत ।।
रावण का तब पकडै हाथ । ले ले लावैं छाती साथ ।।३७७५।।
बार बार आलिंगन करै । हाय वीर तू अरथन मरै ।।
बहुरि भयो वह मूर्छावंत । जाणैं भया प्राण का अंत ।।३७७६।।
बहुत जतन सों भई संभार । अंतहैपुर पहुंची यह सार ।।

रावण की रानियों द्वारा विलाप करना

मंदोदरी रंभा चंद्रांन । चंद्रमन उरबसी प्रिय आंन ।।३७७७।।
मलीन रूपणी सीला रत्न । रत्नमाला रामोदरी बिला ।।
लक्ष्मी पदमा सु विसाल । रानी सहस सभी बेहाल ।।३७७८।।
पीटैं छाती कूटैं देह । सब मिल घालैं सिरमें षेह ।।
बिनवैं सब मिल रावण भोग । सब नगरी का रोवैं लोग ।।३७७९।।

हाय करम तैने कहा किया । बिधना भई महा दुख दिया ॥
कैसे जीवैं कंत के मुवौ । सब मिल पीटै अपना हियौ ॥३७८०॥

कोकिल सबद सुहावन बोल । सब परियणमांं मांची रोर ॥
सब आए जिहां रावण पड्या । देखें लोथ ज्यौं पर्वत गिरया ॥३७८१॥

ले ले हाथ लगावैं हिये । इन रावण बहुतें सुख दिये ॥
बहुत भांति के भुगते सुख । अब क्युं जीवैं कंत के दुख ॥३७८२॥

सब नारि आलिंगन करैं । अगण आई रावण का मरैं ॥
जे सीता कुं देता आंण । तो क्याजें थे तजता प्रांण ॥३७८३॥

भूमिगोचरी की अस्त्री हरी । परनारी ज्युं पैनी छुरी ॥
असी विध रावण का मरैं । करम अहारे किम टरैं ॥३७८४॥

रामचन्द्र लछमण तब आइ । समभावैं इनकुं बहु भाइ ॥
रावण का था यही नियोग । अब तुम तजो सकल निज सोग ॥३७८५॥

भावमंडल कहै उपदेस । सुणुं बचन भभीषण भुवनेस ॥
रावण रण में साका किया । रह्या खेत सनमुख जिय दिया ॥३७८६॥

ते बलवंत टेक सौं मरे । तिनका पावन रण में टरैं ॥
धन्य पुरुष जे राखें टेक । ते सहस्र में निकसै एक ॥३७८७॥

घणी होय मरैं पडि खाट । जनम अकारथ तिसका घाट ॥
इह रण था सुभटां की चोट । असा मरण न पावैं और ॥३७८८॥

धनि धनि ए रावण महाबली । जाकी जुधस्यौं पुजी रली ॥
चक्र चलावा भै चित्त न किया । ए दिढ रावण मनमें लिया ॥३७८९॥

सफल मरण ए तिन विध जान । असे हैं उत्तम परमाण ॥

श्रेष्ठ मरण

संग्राम माहि जे क्षत्री मरैं । कै तपकर संजम व्रत धरैं ॥३७९०॥

जीतैं आठ करम धरि ध्यान । ते उपजावैं केवलग्यान ॥
पावै अजर अमर पद ठांम । जुग जुग रहै उनुं का नाम ॥३७९१॥

ले संन्यास तजैं जे प्राण । समाधि मरण जग मैं ए जान ॥
असी विध सौं मरैं जो कोइ । ताका सब विधसें जस होइ ॥३७९२॥

असौं का किम करिये सोग । ऊनुं का हुठ बखानै लोग ॥
तीन लोक में अमर है आंन । बेद पुराण करैं है बखान ॥३७९३॥

वे नहीं मुवा सदा है अमर । अरिदम सा मुवा जान्यां समर ॥

अरिदम की कथा

अईसा कैसो गहे न्याई । जे वह मुवां जीव छिपाई ।।३७६४।।

अक्षयरपुर नगर हरदत्त भूप । लक्ष्मीवती राणी सुलरूप ।।
अरिदम पुत्र ताकै गर्भ भया । जोवन समैं उछाह अति थया ।।३७६५।।

वसुसुंदरी व्याही असतरी । रूप लछन गुण जोवन भरी ।।
राजा राणी भए वैराग । राजविभूत सकल साहिबी त्याग ।।३७६६।।

अरिदम पुत्र का राजा किया । आप जाइ संयम व्रत लिया ।।
अरिदम अधिक प्रतापी थया । भूप प्रताप सकल छिप गया ।।३७६७।।

सब पृथ्वी का जीत्या नरेस । मनाय आंण लीया सहु देस ।।
फिर आया अक्षरपुर नगर । हाट बाजार छाए तिहां समर ।।३७६८।।

घर घर बांधी बांदरवार । भया रहसि अति नगर मझार ।।
घरि घरि रली बधावा भए । परिग्रण में सुख उपजे नये ।।३७६९।।

बहुत आनंदस्यों आयो राय । रतनमुष्ठि भर डारत जाय ।।
राजा अंतहपुर में गयो । राणी सूं इम पुछि बोलियो ।।३८००।।

जो कछु नई बात तुम सुणी । अैसी हमस्यौं कहिये गुणी ।।
राणी कहे तुम सुणियो कंत । कीरतधर मुनिवर सु महंत ।।३८०१।।

इक दिन आए लेण आहार । भोजन पाय चल्या तिण बार ।।
मैं पूछ्या तुमारा परताप । कब आवैं प्रथिवीपति आप ।।३८०२।।

मुनि बोले जीतैगा सब मही । पण बाकी भारबल तुछ रही ।।
या दिन तैं चिंता है मोह । सुणु प्रभू समझाउं तोहि ।।३८०३।।

राजा सुणि कै गयो उद्यान । जहाँ बैठ्या मुनि आतम ध्यांन ।।
पूछै मुनि सूं तब ही नरेन्द्र । मेरे मन की कहो मुनिंद ।।३८०४।।

बोलैं मुनिंद पूछो तुम आय । रहे दिन सात जीवण के राव ।।
पूछैं नरपति कारण कौंण । समझावो स्वामी तजि मौन ।।३८०५।।

कहैं मुनीस्वर सुणी भुवाल । विद्युत पात सों तेरा काल ।।
सोचैं भूपति मुनि सुंण बात । करूं उपाव बचै जिव घात ।।३८०६।।

बुलाइ मंतरी मतो उपाइ । मुनि के वचन निरफल जाइ ।।
एक जतन सूं उबरो राइ । लोह की कोठी तुम करवाइ ।।३८०७।।

बाइ मांमैं राजा तुम पैठ । सांकल लगाय इवा हेठ ।।
वज्र सांकुल कढाइवां बांधि । डारैं दह में जिहां नीर अगाध ।।३८०८।।

जहां दामनी का नहीं प्रवेस । या प्रकार बीतस्यौं नरेस ।।
छह दिन बीत सातवां भया । इवैं पैठि द्रह भीतर गया ।।३८०६।।
नागांसु साकुला लगाइ । उठी घटा सहज कै भाइ ।।
घन घटा होइ संसार उजार । कडकी दामनी मारया तिणबार ।।३८१०
टूटा छवा राजा दोइ खंड । होनहार महा प्रचंड ।।
करम रेख किम मेटी जाय । होंणहार सौं कहा बसाय ।।३८११।।
राजा बीजली नें मारिया । उन मरणे का अति भय किया ।।
ऐसे का सोग करया न्याइ । रावण भूभा सामौं ध्याइ ।।३८१२।।
प्रीतंकर ने पाया राज । अरिदम मुवा सरया नहि काज ।।३८१३।।

दूहा

करयो सयाणप बहुत विध, मंत्र जंत्र अनें उपाइ।।
होंणहार टलनां नहीं, बहुत बणावो दाय ।।३८१४।।

इति श्री पद्मपुराणे अरिदम विधानकं

७१ वां विधानक

चौपई

रावण का दाह संस्कार करना

रामचंद्र लछमन संजुत्त । तिहां बैठा भूपती बहुत ।।
भभीषण ने बहुते समभाय । दहन क्रिया कीजे अब जाइ ।।३८१५।।
रावण तीन खंड का राव । जाका तिहूं लोक में नाव ।।
वेगी क्रिया तास की होइ । काया विगडन पावें सोइ ।।३८१६।।
जो मृतक कौ होई अबार । उपजै जीव वा देह मंझार ।।
ग्यानवंत ढील नही करैं । उठी वेग ज्यौं कारज सरैं ।।३८१७।।
सब मिल गए मंदोदरी पास । अठारह सहस जिहां त्रिया उदास ।।
सोगवंत बैठी सब नारि । देख राम नैं करैं पुकार ।।३८१८।।
नैनन नीर तहै असराल । रोवैं सगली खाइ पछार ।।
तब रघुपति समभावैं ताहि । भभीषण बीनवैं गहि बांह ।।३८१९।।
मंदोदरी बोली तब बात । दहन क्रिया कीज्यो भली भांति ।।
साज विमांण पदमसिर गए । चंदन अगर बहु विध लए ।।३८२०।।
पदम सरोवर अंदर आंन । चिता संवारी उत्तम थान ।।
बोले तबै श्री रामचन्द्र । कुंभकर्ण इन्द्रजीत हम बन्ध ।।३८२१।।

मेघनाद और मंदमय । क्याकुं अटके मानइ भये ।।
इनकूं अब तुम छोडो जाइ । दरसन करें पिता का आइ ।।३८२२।।

वानर बंसी बोले तब राइ । रावण तें वे बल अधिकाइ ।।
जे वह छूटें तो लें बैर । राक्षस बंसी मिल उनसौं फेर ।।३८२३।।

असा बल हम पें है नहीं । अब कैं उनसुं जीतें कहीं ।।
उनकूं मारि करो तुम षेह । दुरजन सूं अब कैसा नेह ।।३८२४।।

मारि मारि करि लीजे जीव । अब ही उनकी काटो ग्रीव ।।
रामचंद्र चित करुणा आइ । उनका पिता जलै इस ठांइ ।।३८२५।।

अब नहीं दरसन पावें तात । बहुरि देखेंगे किह भांति ।।
फिर बोले सेना के लोग । असानें किम छोडन जोग ।।३८२६।।

भावमंडल कहै छोडो उननैं । जैं तुम भय राखो नहि मनमें ।।
तुम मति कीज्यौं उनसों राडि । जब वे चतुर तो हम भी च्यार ।।३८२७।।

जो वे फिर भी हमसौं लडैं । तो हम भरोसा नाहीं करैं ।।
भावमंडल अर हनुमान । सुग्रीव अंगद चले बलवान ।।३८२८।।

वे च्यारू हैं बन के मांझि । महादुखी है दिवस न सांझि ।।
लोह पिंजरा चहुंघां सूल । ऊभा तिहां दुःख का मूल ।।३८२९।।

हाथ हथकडी पांव सांकुली । मन में सोच देह सब जली ।।
मन का छोड्या सब संदेह । राजभोग से तज दिया नेह ।।३८३०।।
अबकैं छूटैं तो तप करें । फेर नहीं भवसागर पडैं ।।
असा ऊनो किया था ध्यांन । भावमंडल तहां पहुंच्या आंन ।।३८३१।।

कैं रावन भुल्या संग्राम । तुमनैं कोकै लछमण राम ।।
दरसन करो पिता का आइ । खोलि पिंजरा अपने संग ल्याइ ।।३८३२।।

नीची दृष्टि गैवर की चाल । आवें ते च्यारूं भूवाल ।।

कुंभकर्ण एवं इन्द्रजीत को छोडना

रामचंद्र प्रति मांणे सर्व । गलत भया जोधां का गर्व ।।३८३३।।

कहै राम तोकूं द्यूं छोडि । जो तुम बैर न करो बहोडि ।।
बोले कुंभकर्ण इन्द्रजीत । हमतो छोडी संसारी रीत ।।३८३४।।

जब छूटैं तब दिख्या लेंहि । राजभोग जल अंजलि देंहि ।।
बेडी काडि छोडिया कुमार । रावण कीरिया करी संवार ।।३८३५।।

बहुतां नै उपज्यो वैराग । घर परिग्रह सगला सुख त्याग ।।
बहुतां ने मांड्यो संन्यास । अन्नपाणी तजि करै उपवास ।।३८३६।।

कोई भए संन्यासी रूप । कोई गए लंका में भूप ।।
अपणे जाइ कुटुंब वे मिले । घरि घरि कथा राम की चले ।।३८३७।।

अपर मध्य मुनि का संघ सहित आगमन

अपर मध्य मुनि लहर तरंग । छपन सहस्र मुनिवर ता संग ।।
रिधवंत असे वे साध । जिहां रहैं तिहां मिटैं उपाधि ।।३८३८।।

वैर भाव सब ही का टरैं । कोई नहीं उपद्रव करैं ।।
लंका में वे आया मुनी । च्यार ग्यांन का धारक गुनी ।।३८३९।।

कुसुमादि वन में धारहि जोग । देसान्तर तूं आया बहुलोग ।।
तपकिरात कंचन सम गात । सब कोई करैं मुनीस्वर जात ।।३८४०।।

असा मुनि तब करता गौन । तउ रावण नें हतता कौन ।।
जादे समैं रहै वे जती । तिहां कष्ट नहीं व्यापै रती ।।३८४१।।

मुनि को केवल ज्ञान की प्राप्ति

सर्व मही है स्वर्ग समान । दोइसै जोजन लौं परवान ।।
सुकलध्यान आतम ल्यो लाइ । केवलग्यान भया मुनिराइ ।।३८४२।।

अनंत सत स्वामी अरिहंत । भया जनम घातकी भगवंत ।।
इन्द्र धरणेंन्द्र बहुविध देव । जनम महोच्छव कीनी सेव ।।३८४३।।

मेरु सुदर्शन पांडु का सिला । श्री जिण का महोछव किया ।।
सहस्र अठोतर कंचन कुंभ । क्षीर समुद्र नीर भरि सुंभ ।।३८४४।।

कलस ढालि जय जय करी । तीन लोक में महिमा भरी ।।
श्री जिन जी जननी कौं दिये । सुरपति फिर सुरआलय गये ।।३८४५।।

धरणेन्द्र का आसन कंपित होना

आसण कंप्या तब धरणेन्द्र । अवधि विचार कियो आनंद ।।
त्रिकुटाचल लंका में थान । अपर मुनी कूं केवलग्यांन ।।३८४६।।

जय जय सब्द देवता करैं । बाजा बाजैं देव उच्चरैं ।।

राम द्वारा विचार करना

रामचन्द्र बाजें जब सुणे । तब भूपति सोचै मन घणे ।।३८४७।।

असा कवण बली इस ठांइ । जिसके बाजा बजैं इह भांइ ।।
रामचन्द्र लक्षमण सुग्रीव । भावमंडल अंगद गुण नींव ।।३८४८।।

नलनील कुंभकरण भूप । इन्द्रजीत मेघनाद अनूप ।।
लंका सौंप गए सब राय । जय जय धुनि सुणी तहां आइ ।।३८४९।।

राम का मुनि के पास जाना

सब मिल समझ्या इम राजान । मुनि नैं उपज्या केवल ग्यांन ।।
उतर भूप पयादे चले । ले पूजा सामग्री भले ।।३८५०।।
दे परदिक्षणा करी डंडोत । रघुपति पूछैं धरम बहोति ।।
च्यारूं गति भाष्या मुनि भेद । सुभ अर असुभ करम का खेद ।।३८५१।।
उत्तम किरिया संगी जीव । मध्यम अधर अगति की नींव ।।
आरत रौद्र ने नीची गति । सात विसन नरक की थिति ।।३८५२।।
धरम सुकल जीव का आधार । भवसागर तैं उतरैं पार ।।
इन्द्रजीत मेघनाद जोड दोइ हाथ । हमारा भव कहिए मुनिनाथ ।।३८५३।।
बोले मुनिवर ग्यांन विचार । सब जीवों का होइ आधार ।।

मुनि द्वारा पूर्व भवों का वर्णन

जंबूद्वीप भरत सुह खंड । कोसंबी नगरी तस मंड ।।३८५४।।
भवदत्त पंच सेठ के बाल । रूप लक्षन गुण अति सुविसाल ।।
सम्यक दृष्टि दोऊ बीर । सकल जीव की जाणैं पीर ।।३८५५।।
ग्यान समुद्र मुनि आगम भया । दोऊ बीर दरसन कूं गया ।।
पूछि क्रिया सरावग जती । कीया करिकैं कही सब भती ।।३८५६।।
सांभल धरम अणुव्रत लिया । मुनि के पास बैठ तप किया ।।
चंद्ररस्मि नगरी भूपाल । दरसन कूं आया ततकाल ।।३८५७।।
करि प्रदक्षिणा कहै नमोस्तु । धर्म वृद्धि बोले मुनिरस्तु ।।
नंद सेठ ता नगरी मांझ । पूजैं जी जिन वासर सांझ ।।३८५८।।
लक्ष्मी धणी महा धरमेष्ट । चलैं चाल जे सम्यक दृष्टि ।।
इन्द्रमुखी वाकी अस्तरी । जिनवाणी निस्चै मन धरी ।।३८५९।।
सेठ चल्या मुनिवर की जात । हय गय वाहन नाना भांति ।।
बहुत लोग आए संग सेठ । राजा विभव छिपी ता हेठ ।।३८६०।।
पचसम देख अचंभा करैं । नंद सेठ इतना बल धरैं ।।
राजा तैं अधिक परताप । अरज्यां चित्त बिसारी आप ।।३८६१।।
मेरे तप का एही निदान । पाउं जनम याके घर आन ।।
छोडी देह भया गर्भ आइ । इन्द्रमुखी सुख उपज्या काइ ।।३८६२।।

तप के महातम का परवेस । चन्द्ररश्मि भयानक रेस ।।
गिरे कोट के कांगरा भूमि । कांपी मही भाए भूम भूमि ।।३८६३।।
निमित्तग्यानी जोतिशी बुलाइ । इह निमित्त पूछें बलराइ ।।
कहैं जोतिगी जोतिग देखि । नंद पुत्र के ग्रहै विसेष ।।३८६४।।
दोई पुत्र भुगतैंगे राज । असे सकुन भए हैं आजि ।।
राजा सोच करि करैं विचार । होणी होइ सकैं को टारि ।।३८६५।।
जे उसका है यही निमित्त । तौ क्यों आणों विकलप चित्त ।।
राजा गरभ की चिंता करें । नवमास पूरा अवतरैं ।।३८६६।।
रतन वरधन जनमिया कुमार । बदन जोति शशि की उनहारी ।।
पाई बुद्धि अति भए सचेत । राजा सेव करैं बहु हेत ।।३८६७।।
रतन वरधन परतापी भया । पृथ्वी जीत अति ऊंचा थया ।।
सकल भूपति सेवैं पाइ । कर वंदन देवैं सब आय ।।३८६८।।
भवदत्त तीजे स्वर्ग विमान । इन मन मांहि विचारा ग्यान ।।
हम थे पुत्र सेठ के दोइ । पसचम जीव रतनवरधन होइ ।।३८६९।।
राजविभव में हुवा अंध । थाकै नहीं धरम का बंध ।।
भरमैगा बहु इस संसार । माया फंद में लहै न पार ।।३८७०।।
तातैं याहि सम्बोधूं जाइ । ज्यूं वह भवसागर में ना भरमाय ।।
असी चित धर आए देव । धारचा रूप दिगंबर भेव ।।३८७१।।
पोलिया जांण न देवैं ताहि । रतनवरधन रूप धरचा नरनांह ।।
राजसभा मांही सुर गया । पूछै नरपति अचरज भया ।।३८७२।।
सुर समझावे पिछली बात । हम तुम थे दोन्युं भ्रात ।।
तू पसचम हूं हो भवदत्त । माया मोह मैं हूबै मत्त ।।३८७३।।
अजहूं समझि जिम पावें पार । रतनवरधन कूं भई संसार ।।
तजे राज तप साध्या जाइ । नवग्रीवा परि पांई ठाइ ।।३८७४।।
उहां तैं चये ऊरवश नग्र । दोन्युं देवराज के कुंवर ।।
राज भुगत उपज्या वैराग । भए दिगंबर सब धन त्याग ।।३८७५।।
तप करि दसमें स्वर्ग विमान । मंदोदरी गर्भ भए सु आंन ।।
पसचम जीव भया इन्द्रजीत । भवदत्त मेघनाद इह रह रीत ।।३८७६।।
इन्द्रमुखी इच्छा इह धरी । ऐसा पुत्र भए सुभ घडी ।।
चन्द्ररसम सेठ अरनंद । भए जती भला गुरुवंदि ।।३८७७।।

तेरे तप का यह फल सही । तुम्हारा बहुरि गुरु होगा नाहीं ॥
इन्द्रमुखी मंदोदरी भयी । इह विभूत तब पाई नई ॥३८७८॥
सांभलि घरम दिगंबर भए । मंदोदरी पछताबा किये ॥
विधवा भयी पुत्र हुवा जती । कुंभकरण है इह भती ॥३८७९॥
अब हम दिन कैसे भरैं । बारह अनुप्रेक्षा चित धरैं ॥
मंदोदरी संग अठारह हजार । तीस सहस्र राणी परिवार ॥३८८०॥
आरजिका सहस्र अडतालि । दिक्षा ले सुमरया तिहूं लोकपाल ॥
चंद्रनखा आरजिका व्रत लिया । करैं तपस्या मन बच कया ॥३८८१॥
आतम ध्यान लगाया जोग । अवर बिसारचा सबला सोग ॥३८८२॥

दूहा

सुण्यां भवांतर पाछला, मन का मिटया भ्रमास ॥
राक्षस वंसी अतिबली, करैं मोक्ष की आस ॥३८८३॥

इति श्री पद्मपुराणे इन्द्रजीत मेघनाद भव निकमण विधानकं

७२ वां विधानक

अडिल्ल

राम लक्ष्मण का लंका में प्रवेश

रामचंद्र लक्ष्मण चलि लंका । सकल सेनां की मिट गई संका ॥
सेनां सकल भई इक ठौर । इन सम बली न दूजा और ॥३८८४॥
पचास लाख हाथी की डोर । हय गय रथ का नाहीं बोर ॥
हस्ती पर रामचन्द्र लक्ष्मण । सोहैं जैसे हेम रतन । ३८८५॥
चक्र सुदर्शन आगैं चरैं । जिसकी ज्योति तेज रवि हरैं ॥
भूपति भूप चले सब संग । सोमैं उनके भले तुरंग ॥३८८६॥
हाट बाजार छाए चउहटैं । देखैं नारि अटारी अटैं ॥
कोई भारि भरोखा तिरी । स्वर्ग लोक की सोभा धरी ॥३८८७॥
जके सके समाने घणे । जिहां तिहां सुं बराबर तणे ॥
विराधित सुग्रीव हनूमान । रथ बैठा अंगद बलवान ॥३८८८॥
नरपति अवर बहुत ही घणे । नामावली कहां लौं गिणे ॥
रतनवृष्ट करैं रामचन्द्र । दरसन देख्या होइ आनंद ॥३८८९॥
पहुंचे पोलि लंका के कोट । इनकी छवि भांति भया ओट ॥
रत्नावली सूं पूछी सीता बात । पुहप करण परवत विख्यात ॥३८९०॥

उह बन में इह सीता सती । सुग्रीया सेव करै बहु भती ॥
भावत देख्या श्री रामचन्द्र । रहसी सेवग भयो आनंद ॥३८९१॥
जैसें शशि पूनम की ज्योति । एक पति का है अति उद्योत ॥

सीता को बधाई

बांह पसार सुग्रिया कहै । श्री रामचंद्र का आगम लहै ॥३८९२॥
देखो सीता दृष्टि उघार । करो दरसन बेग भरतार ॥
सिर सीता कै जटा मलीन । दुरबल देह थणी अति खीन ॥३८९३॥
कंत बिछोह तज्या सिणगार । बहुत लगी काया सूं छार ॥
जाकै रामचन्द्र का ध्यान । महासती जगमें परधान ॥३८९४॥
पतिव्रता जनक की धिया । अपना मन सब बिध दृढ किया ॥
धनि सीता जे पालै सील । पंचइन्द्री विषय राखै कील ॥३८९५॥
अपणा पति नै जाणै सत्य । अवर भ्राता पिता सुत निरत्य ॥
सीता सत दिढ राख्या भला । निश्चै सैं तब रघुपति मिल्या ॥३८९६॥

राम सीता दर्शन

खोलि दृष्टि देख्यो रघुनाथ । नमस्कार करि जोडे हाथ ॥
ज्यूं जल पीवैं सूका खेत । फूलैं फलैं बहु होइ सचेत ॥३८९७॥
असैं सुखसों बधै शरीर । बिछोहा की भूल्या पीर ॥
भयो समागम देह संभार । लक्षमण आइ मिल्या तिणबार ॥३८९८॥
सीता कुं मसतक नवाइ । नया चरणन कूं लक्षमण राइ ॥
असीस दई सीता बहुभांति । बिछोहे की पुछी सब बात ॥३८९९॥
भामंडल बहन सूं मिल्या । सब परियण सुख मान्यां भला ॥
विराधित सुग्रीव अवर हनुमान । नलनील अवर अंगद भान ॥३९००॥
भूपति सकल करैं नमस्कार । दई भेट फूलों के हार ॥
कुंडल कर्ण मोती अति दिपैं । जिनकी जोति कान्ति रवि छिपैं ॥३९०१॥
राम लक्षमण ज्यों सूरज चंद । सोभैं दोन्युं अधिक आनंद ॥
इन्द्र इन्द्राणी की सी जोड । सीता राम सोभैं तिह ठौर ॥३९०२॥
चंद्र रोहिणी जोडी बणी । असी इनकी महिमा घणी ॥
सुखसों बीतैं बासर रयन । सकल प्रथी में हुआ चयन ॥३९०३॥

अडिल्ल

अशुभ करम सब टाल आइ शुभ करम भले,
दोउणां दल संघार सूरमा मलि भले ।।
सीता का सत फला जीत रघुपति भई,
रावण पाट्या कूडज जु कीरत सब गई ।।३६०४।।

इति श्री पद्मपुराणे सीता राम मिलाप विधानकं

७३ वां विधानक

चौपई

लंका की शोभा

लंका के मढ भ्यंतर चले । तिहां चैत्यालय देखे भले ।।
रतन समान लगे पाखांण । तिनकी ज्योति दिपै ज्यों भान ।।३६०५।।

सांतिनाथ जिन प्रतिमा तिहां । सहस्र कूट चैत्यालय जिहां ।।
दरसन कीया देव जिनंद । सीता के मनमें आनंद ।।३६०६।।

सब नरेस तिहां अस्तुति करैं । जै जै सबद सुणत मन भरैं ।।
परिक्रमा दीनी तिहां तीन । ताल पखावज बजावैं बीन ।।३६०७।।

सुरे दमामां नै करनाइ । झंझाल भेर बाजै तिहां ठांइ ।।
गुणीयन गावैं जिनपद भले । पढ़ैं स्तोत्र भूपति सब मिले ।।३६०८।।

सांतिनाथ देवनपति देव । इन्द्र धरणेन्द्र करैं सब सेव ।।
देइ मुक्ति तिहां निरभय थान । अजर अमर जिहां पूरण ग्यांन ।।३६०९।।

ऐसी वस्तु नहीं संसार । जिसकी पटंतर कहै वीचार ।।
दरसण अनंत नै ज्ञान अनंत । बलवीरज का नाही अन्त ।।३६१०।।

तारण तरण सांति जिन भये । भव्य जीव त्यारि मुकति को गये ।।
सब भूपति मिल पूजा करैं । सांतिनाथ पूजा मन धरैं ।।३६११।।

तिहां सुमाली अर माल्यवान । रतनश्रवा नरपति तिह थान ।।
गये भभीषण इनके पास । भूपति वे बैठा उदास ।।३६१२।।

मोह अंध तैं व्याकुल घणों । संसार रूप समझावैं इने ।।
चहुंगति मांहि अमर नहीं कोइ । जामण मरण सब ही को होइ ।।३६१३।।

इस विध हैं संसारी भोग । जैसे नदी नाव संयोग ।।
उतर गए पार बीछड गये सर्व । पुत्रकालित्र भूमि अर दर्व ।।३६१४।।

अडिल्ल

अशुभ करम सब टाल आइ शुभ करम भले,
दोउआं दल संघार सूरमा अति भले ॥
सीता का सत फला जीत रघुपति भई,
रावण धाड्या कुडज जु कीरत सब गई ॥३६०४॥

इति श्री पद्मपुराणे सीता राम मिलाप विधानकं
७३ वां विधानक

चौपई

लंका की शोभा

लंका के गढ भ्यंतर चले । तिहां चैत्यालय देखे भले ॥
रतन कंचन लगे पखाण । तिनकी ज्योति दिपै ज्यों भान ॥३६०५॥

सांतिनाथ जिन प्रतिमा तिहां । सहस्र कूट चैत्यालय जिहां ॥
दरसन कीया देव जिणंद । सीता के मनमैं आनंद ॥३६०६॥

सब नरेस तिहां अस्तुति करैं । जै जै सबद सुणत मन भरैं ॥
परिक्रमा दीनी तिहां तीन । ताल पखावज बजावैं बीन ॥३६०७॥

घुरै दमामा नै करनाइ । कंसाल भेर वाजै तिहां ठांइ ॥
गुणीयन गावैं जिनपद भले । पढै स्तोत्र भूपति सब मिले ॥३६०८॥

सांतिनाथ देवनपति देव । इन्द्र धरणेंन्द्र करैं सब सेव ॥
देइ मुक्ति तिहां निरभय थान । अजर अमर जिहां पूरण ग्यांन ॥३६०९॥

ऐसी वस्तु नहीं संसार । जिसकी पटंतर कहै वीचार ॥
दरसण अनंत नै ग्यान अनंत । बलवीरज का नाही अन्त ॥३६१०॥

तारण तरण सांति जिन भये । भव्य जीव त्यारि मुकति को गये ॥
सब भूपति मिल पूजा करैं । सांतिनाथ पूजा मन धरैं ॥३६११॥

तिहां सुमाली अर माल्यवान । रतनश्रवा नरपति तिह थान ॥
गये भभीषण इनके पास । भूपति वे बैठा उदास ॥३६१२॥

मोह अंध तैं व्याकुल घणें । संसार रूप समझावैं इनें ॥
चहुंगति मांहि अमर नहीं कोइ । जामण मरण सब ही को होइ ॥३६१३॥

इस विध है संसारी भोग । जैसे नदी नाव संयोग ॥
उतर गए पार जीछड गये सर्व । पुन्यकालिन भूमि अर दर्व ॥३६१४॥

जैसा विभव तैसा संताप । सूल थोडा बहुली आताप ।।
दीक्षा चिंता कबही ना मिटै । सोग किये काया बल घटै ।।३६१५।।

कबहुं पुत्र पिता कबहु हूँ पुत्र । कबहुं होइ मित्र कबहुं होइ सत्रु ।।
कबहुं भाई कबही ह्वै बहिन । भ्रमैं जीव मोह के जतन ।।३६१६।।

ग्यानी सोग तजैं इह भांति । इह चिंता छोडो दिन रात ।।
सुख दुख जाणैं एक समांन । हिरदै राखैं उत्तम ग्यांन ।।३६१७।।

राखैं सदा धर्म सों प्रीत । पुण्य पाप की जाणैं रीत ।।
चिंता कूं छांडो तुम मात । म्है सेवा करि हूं बहुभांति ।।३६१८।।

दे प्रतिबोध आणे निज गेह । रसोई करवाई बहु नेह ।।
विदेहा रावण पटधनी । ताकै संग सहेली घनी ।।३६१९।।

बइठे मिंदिर सांति जिणंद । सुमरण करैं देव गुरु वंदि ।।
रामचन्द्र लक्षमण नैं सिया । विदेहा कूं आदर बहु दीया ।।३६२०।।

छोडो सोग करो चित ठांव । हम सेवा करि हैं बहु भाइ ।।
तुम माता मन राखो चैन । करैं वीनती मधुरे बैंन ।।३६२१।।

विभीषण द्वारा राम का स्वागत

तिहां भभीषण आये पहुंच । ताकैं हिये धरम की रुचि ।।
दोइ कर जोडि वीनवै खरो । चलो प्रभू भोजन विध करो ।।३६२२।।

बाजा बाजे मन आनन्द । हस्ती परि चढे रामचन्द्र ।।
लक्षमन आदि भूपती सर्व । भभीषण हरखैं मन मैं जर्ब ।।३६२३।।

मेरा धन्य जनम है आजि । राम आए इतना दल साज ।।
मो परि कीपा करी जो आज । मेरं इहां आया भोजन काज ।।३६२४

महोछव सब नग्र में किये । सबही आनंदा निज हिये ।।
पदमप्रभू निज मंदिर गये । दरसन देखि अधिक सुख भए ।।३६२५।।

पूजा रचना बारंबार । सकल नरेस करैं नमस्कार ।।
रतन जडित कंचन के कलस । उत्तम नीर बास तिहां सरस ।।३६२६

उबटणां ल्याए बहुत सुबास । भ्रमर न छोडैं उनके पास ।।
हेम रतन की चउकी बणी । रतनजोति बिराजै अति घणी ।।३६२७

रामचन्द्र लछमन तिहां न्हाइ । मर्दन करैं मर्दनयां आइ ।।
सकल भूपति करि करि सनांन । पूजा कीनी श्री भगवांन ।।३६२८।।

विध व्यंजन

बहु पकवांन अर व्यंजन घने । भात दाल सामग्री मिले ।।
कनकरावाई सोवन थाल । बैठा जिमैं सब भूपाल ।।३६२९।।
निरमल जल सौं भारी भरी । पीवैं भूपति मानैं रली ।।
दूध दही जीमें सब भूप । षट्रस व्यंजन बणे अनूप ।।३६३०।।

बीड़ा माहि लेइ मुख सोधि । चोवा चंदन ल्यावैं सुगन्ध ।।
पहिरि भीणे वस्तर सुवास । सीतल पवन बींजणा ब्यांर ।।३६३१।।

भभीषण जस प्रगटै भया । सब सेनां कुं भोजन दिया ।।
मंत्री मंत्र करें सुविचार । राजदेहु अब पट बैठाइ ।।३६३२।।

कोई कहे अजोध्या धनी । तिहां पट्ट बैठा सोभा घणी ।।
कोई कहे लंका बडी ठाम । रावण तीन खंड का राव ।।३६३३।।

इणही ठांम दीजिए राज । मनवंछित सीभैं सब काज ।।
अष्टोत्तर कलस राम पै ढार । लक्षमण को टीका बैठार ।।३६३४।।

दिया राज लंका का सर्व । कंचन कोट लहे बहु अर्व ।।
लक्षमण विसल्या सूं करि ब्याह । सब मिल मंगल करैं उछाह ।।३६३५।।

एक था दसांग नगर को राव । रूपवती कन्या का नांव ।।
कुबेर ईस मार खिल भूप । कन्या कलसण माल सरूप ।।३६३६।।

उजेणी नगर सिंहोदर राव । वज्र किरण राजा तिह ठाइ ।।
भेजी कन्या बहु गुणवंत । ब्याहु लक्षमणा बलवंत ।।३६३७।।

जे थी रामचन्द्र की मांग । कियो विवाह दुःख सब त्याग ।।
जे नारी पूरब पुंनि कर बई । राम लक्षमण की नारी भई ।।३६३८।।

सुख में बीत गए बहु वर्ष । सब नगरी मानैं बहु हर्ष ।।

इन्द्रजीत एवं मेघनाद द्वारा निर्वाण प्राप्ति

इन्द्रजीत मेघनाद तप करैं । रिध पाय सब कूं परिहरैं ।।३६३९।।

मेघनाद नें केवलग्यांन । इन्द्रजीत धरि आतमध्यान ।।
टूटे चारि घातिया कर्म । उपज्या पंचम ग्यान सुधर्म ।।३६४०।।

विध अरियण तें गए सिवपंथ । मेघवर तीरथ ग्यांन समर्थ ।।
तुंगी गिर पर्वत कै थान । जंबू माली तप को ध्यान ।।३६४१।।

अहिमंदर पायो सुविमांण । सुख विलास में होइ विहांन ।।
अत्र कैं चउबीसी तप करै । एरंवत खेत्रइं जिम पद धरै ।।३६४२।।

अनंतबोध धर प्रथम जिनंद । मुगति रमणी सुख होइ आनंद ।।
कुंभकरण तप करैं बहुत । नरबदा नदी पर केवल हुंत ।।३९४३।।

सुरपति करैं महोछव तिहां । देही छांडि पहुंच्या सिव जिहां ।।
मई स्वामी मुनिवर तप करैं । पोदनापुर में ध्यान दिढ धरैं ।।३९४४।।

आकास गामिनी पाई रिध । सब तीरथ फरस्यां उन सिध ।।
तप करि गया पचमे स्वर्ग । भया देव मिटिया उपसर्ग ।।३९४५।।

मारीच मुनी तिहां साधैं जोग । करैं वंदना सबही लोग ।।
पाई रिध तप कै परसाद । रागद्वेष छंडे सब वाद ।।३९४६।।

गहैं बाईस परीसा धीर । असा तप साधैं बलबीर ।।
सीता सम सती नहि कोइ । अब कै भव गणधर पद होइ ।।३९४७।।

रावण होइ देव अरिहंत । वांणी भाखनी सिवपद संत ।।
इहां पूछै श्रेणिक कर जोडि । सीलवंत नारी भीऊर ।।३९४८।।

जे नारी उत्तम कुल बसी । पालैं सील ऊपमां चढी ।।
जिण नै दोऊ कुल की लाज । ते नहीं तजैं सील का काज ।।३९४९।।

जे विध ये पालैं हैं सील । मन गयंद नैं राखैं कील ।।
सीता किण कारण अधिकाइ । गणधर होइ मुकति को जाइ ।।३९५०।।

श्री भगवंत तब कहैं विचार । सीता महासती है नारि ।।
विपत्ति भई फिरि कंत के संग । अगम्यां किम ही करी न भंग ।।३९५१।।

रावण हरी परीसह सही । अपणां सत टाल्या यह नहीं ।।
ध्यान अंकुस सौं मन गयंद । बैराग्य भाव सौं राख्या बंद ।।३९५२।।

या का सत तैं जीत्या राम । मन वांछित सब सीधा काम ।।
जे मन वच पालै दृढ कोइ । ऊंची गति पावैं जिव सोइ ।।३९५३।।

लोक लाज सौं राखैं सत्त । निसचल रहै न उनका चित्त ।।
वे क्यों साकी सरभर करैं । जैसा भाव तइसी गति भरैं ।।३९५४।।

जैसी करणी तैसी ठांव । पावैं धरम नी सील सुहाव ।।
पंचदेसि राजथान का ग्राम । नोदर विप्र रहै तिस ठांव ।।३९५५।।

अभिमाना वाकी अस्तरी । असैं अगनि पवन तैं जरी ।।
द्विज कौं सदा देहि बहु दुख । कदे न राखैं घर में सुख ।।३९५६।।

रात दिवस कलह यें करैं । ब्राह्मण देखि असी दुख भरैं ।।
नोदर बांभण मान्यां अन्न । अभिमाना निकस गई बन्न ।।३९५७।।

पोदनापुर का रुद्र नरेस । थामनी उठि गई तिहां वेस ॥
पुहुप कर्ण नगर ना नाम । लवण प्रसाद राणि तिह ठाम ॥३६५८॥

हेमंकर पंडित तिहां गुणी । राजा कंदरप क्रीडा घणी ॥
लग्या पांव राजा के माथ । मनमैं सोच करैं नरनाथ ॥३६५९॥

भया परभाति काया करि सुध । बैठा पाट विचारी बुध ॥
भूपति बहुति सभा मैं आइ । नमस्कार करि लागे पाई ॥३६६०॥

पंडित गुणी भए परधान । राजा उनसौं पूछै ग्यांन ॥
राजा कै माथै त्यावै चोट । वासौं कहा कीजिये खोट ॥३६६१॥

मंत्री बोले सब सिरा बार । वाका चर्ण काटो भुपार ॥
हेमंकर द्विज बोल्या करि ग्यान । वेही चरन तुम उत्तम जांन ॥३६६२॥

दीजे वाहि भला आभरण । ऐसी बात सुणी उन कर्ण ॥
भये कोप सभा के लोग । इरण विध किम भाषी ये फोक ॥३६६३॥

विप्र ने कह्या भेद समझाय । बहुत विभूति दई तबै राइ ॥
मित्र जसा ब्राह्मणी एक । असांक द्विज मुंवो धरि टेक ॥३६६४॥

सिघइंद्र कवर अवर पुत्री । तिहां बंटसाल द्विज नैं थिति करी ॥
सीखी विद्या भए सुजान । सस्त्र सास्त्र सीखिउ परवांन ॥३६६५॥

राजा की पुत्री उन हरी । सिघइंद दोडथा सिहू घरी ॥
घेरचा द्विज तिहां हुवा जुध । सैनां की खोई सब सुध ॥३६६६॥

कन्यां जीत गया द्विज गेह । लवण प्रसाद नै छोडी देह ॥
विप्र भया नगरी का राव । सब भूपति में प्रगट्यो नाव ॥३६६७॥

सील रूपि श्रीवधन संजोग । पोदनपुर का भुगतै भोग ॥
राजा सुकेत वाधरपुर धणी । भूपति सूं वा भय व्यापी घणी ॥३६६८॥

सिघोद देवी ता मसतरी । श्रीवरधन की संका धरी ॥
रयण समय दंपति उठि भगे । पोदनापुर वन आइ न लगे ॥३६६९॥

तिहां भुयंग डस्यौ सिघ इंद । देवी राणी कै हुवा दुंद ॥
रोवै पीटै वन मैं वही । तिहां सहाय हुवा कोई नहीं ॥३६७०॥

मधु मुनिंद करैं तिहां तप । दयाभाव श्री जिनवर जप ॥
मुनि नैं सपरस आइ वियार । मृतक विष उतर भई संभार ॥३६७१॥

श्री मुनिवर कूं करी डंडोत । पूजा स्तुति करी बहुत ॥
बीती रयण उगीयो भाण । विनयदत्त पहुंच्यो तिहां आंण ॥ ३६७२॥

सुण्यां भेद रात का सेठ । अस्तुति करि उनकी ढिग बैठि ॥
श्री बरधन आया भूपाल । सिघ इंद सुं मिल्या तिह काल ॥३६७३॥

सील वृद्ध आया सूं मिली । क्रोध लहर दोनुं की टली ॥
श्रीवर्धन जोड़या दोउ हाथ । मेरा भव भाखो मुनिनाथ ॥३६७४॥

अवधि विचार करैं मघु मुनि । सोभापुर नगर प्रभी धणी ॥
भद्रसेन आचारिज तिहां । राजा धर्म सुणैं नित जिहां ॥३६७५॥

एक दिन चाल्या जती कै पास । मारग में आई खोटी बास ॥
दुर्गंध तैं भया जीव बुरा । राजा अपणां घर कुं मुड़ा ॥३६७६॥

एक नारी को असा दुख । देह बसाई गंधावैं मुख ॥
जिहां निकसैं ते गली बसाइ । अैसी नारी थई तिण ठाइ ॥३६७७॥

मुनि दरसन पाया तिण नारि । गया दुख बहु उतनी बार ॥
अमल राय सुणि अचरज करै । अणुव्रत गुरु पासैं धरैं ॥३६७८॥

आठ गांव आठ को राखि । राज विभूति पुत्र को भाखि ॥
दया दांन विचारैं ध्यांन । आउ पोकरि सौधर्म विमांन ॥३६७९॥

उहां तै चइ श्रीवरधन भए । सुणत भरम चरण कुं नए ॥
मित्रजसा पूछे परजाइ । इह मात हूं किह भाई ॥३६८०॥

विप्र नैं तब वे दिया सराफ । नगरी जलैं उदैं भयो पाप ॥
बहुते लोग क्रोध कौं पाइ । हुतासन में दियो विप्र जलाइ ॥३६८१॥

वह द्विज मर करि हुवा बरांमन । रसोई करै राजा कै दिन दिन ॥
एक दिन मुनि नृप कै घर आइ । भोजन निमित्त ऊभा मुनिराइ ॥३६८२॥

बरांमन मुनि कूं विष दिया । देही छोडि सुरपद पाइया ॥
विप्र मरि करि पहुंच्या नर्क । लख चौरासी रह्या गर्क ॥३६८३॥

मित्र जसा भई अस्तरी । असोघसरक कौ हुई पुत्री ॥
राजा पूछैं एह संदेह । पुरुष सौं नारी भई क्युं एह ॥३६८४॥

कहैं सुर्नीसुर सुणुं नरेस । अब तुम परतख देखो भेस ॥
राजा सुकांत राज में मुवां । भोजन पुत्र सेठ की अस्तरी हुवा ॥३६८५॥

अभिमानां प्रसाद लबध की असई । करवह की राणी तब भई ॥
मघु मुनि किया अंत संन्यास । ईसान स्वर्ग पद पाया वास ॥३६८६॥

जे कोई धरैं धरम सूं चित्त । निसचैं पावैं पंचम गति ॥
भवजल तिर जाई सिव मध्य । तिहां सासती पूरण रिध ॥३६८७॥

दूहा

धरम ध्यांन लव ल्याइ करि, धरैं ज संजिम भार ॥
चिहुं गति भ्यंतर ना रुलै, पावै सुख अपार ॥३६८८॥

इति श्री पद्मपुराणे मधु आख्यान विधानकं
७४ वां विधानक

चौपई

नारद मुनि का अयोध्या में आगमन

नगर अजोध्या उत्तम थान । भरथ प्रताप तपैं ज्युं भांन ॥
परजा सुखी दया चित धरणी । इन्द्रलोक की सोभा बरणी ॥३६८९॥
अपराजिता मिंदर सतखणे । पश्चाताप करे मन आपणें ॥
मेरी कुंख रामचन्द्र भए । जोबन समए वे उठि गये ॥३६९०॥
धरती पर धरते नहीं पांव । वन बेहड भ्रमैं दुःख के भाव ॥
पुत्रां नें देखूं किण भांति । अपराजिता रोवई मात ॥३६९१॥
अन नारी रोवैं ता संग । ज्यों घनहर बरसैं बहती गंगा ॥
नारद मुनी आए तिण घरी । नमस्कार असतुत बहु करी ॥३६९२॥
चउका दिया बैठणां आंण । बहुत कियो आदर सनमांन ॥
सीलवंत वे नारद मुणी । जटाजूट धारणी करि मुंनी ॥३६९३॥
कमंडल पींछी कर में लिये । भसम लगाइ तन धोती किये ॥

अपराजिता से प्रश्न

पूछें नारद कहो मो मात । सुकोसल का कुल उत्तम भांत ॥३६९४॥
राजा दसरथ की पटधणी । तुम किम हो किम अणमणी ॥
तब बोली अपराजिता माइ । नारद मुनी तुम थे किस ठांइ ॥३६९५॥
रामचन्द्र लक्ष्मण बनवास । तिस कारण हम रहां उदास ॥
धातकी खंड में पूर्व विदेह । सुरेन्द्रपुर नगर गया था एह ॥३६९६॥
त्रिलोक ईस जिन का अवतार । मिंदर मेरु सुरपति तिहां बार ॥
न्हाई करी जनम की रीत । हारि कलस उपजाई प्रीत ॥३६९७॥
इंद्र धरणेन्द्र आरती करैं । नर मानुष बहु सेवा करैं ॥
आभूषण पहराय कीए सिंगार । माता नें सौंप्या तिण बार ॥३६९८॥
तेईस बरष रह्या मैं तिहां । तुम्हारा भेद कछु मन मैं लह्या ॥

राम कथा

सर्व प्राण हित मुनि पै सुणी । रामचन्द्र की कथा उण भणी ।।३९९९।।
रामचन्द्र लक्षमण अरु सिया । दंडक वन में आश्रम लिया ।।
सीता कु रावण ले गया । रामचन्द्र लक्षमण नैं दुख भया ।।४०००।।
विराधित सुग्रीव राम सु मिल्या । रावण सु जुधा किया उनों भला ।।
लक्षमण लाग्या सकती बांण । हुवा मूरछा गए परांण ।।४००१।।
द्रोवणमेघ की विसल्या धिया । उवैं उपाव लक्षमण का किया ।।
सुणी बात अपराजिता माय । गिर गई भूमि मूर्छा खाइ ।।४००२।।
जे लक्षमण कै मारें सकति । कैसी हुई उनू की गती ।।
सीता का सुषमाल सरीर । वन बेहड तिहां अन्न न नीर ।।४००३।।
वन फल खाइ रहैं वन माहिं । बंदी बीच महादुख ताहि ।।
जाय पडे समुद्र मंझार । कैसे पाऊं उनकी सार ।।४००४।।
नारद मुनि बोले समझाई । लक्षमण जीया करैं उपाव ।।
बांध्या कुंभकरण इन्द्रजीत । मेघनाद नैं किया भयभीत ।।४००५।।
रावण नें मारी राज वे करैं । तुम मनमें चिंता मति धरैं ।।
अब मैं लंका गढ में जाइ । राम लक्षमण आणु इस ठांइ ।।४००६।।

नारद का लंका में आगमन

नारद चाल्यो बैठि विमांण । त्रिकुटाचल कुं कियो पयांन ।।
पदम सरोवर रावण की चिता । अंगद क्रीडा करैं सुख की लता ।।४००७।।
अंतहपुर अंगद के संग । खेलैं राणी मन उछरंग ।।
चउकस बैठे चौकीदार । नारद पूछै रावण सार ।।४००८।।
रखवाले कहैं सुणि रे अग्यांन । तू आकास से बैठा आन ।।
रावण कु मारया लक्षमण ठौर । रामचन्द्र सा बली न और ।।४००९।।
भाई किंकर लक्षमण सौं कही । अंगद ने तब हांसी गही ।।
तपसी कुं ल्यावो मो पास । देखैगा राम तब करैं उपहास ।।४०१०।।
हस्ती चढ अंगद सु नरेन्द्र । नारद कुं ले चाले करि बन्द ।।
धकाधकी सु किंकर गहिलिया । रामचन्द्र आगैं कर दिया ।।४०११।।

राम द्वारा नारद का स्वागत

रामचन्द्र नारद कुं देखि । आदर दिया ऋषीस्वर प्रेष ।।
नमसकार करि बैठाया पाट । नृपति सभा जुडी थी ठाट ।।४०१२।।
रामचन्द्र पूछैं कुसलात । मुनि जी कहो धरनी की बात ।।

नारद द्वारा अयोध्या वर्णन

नारद कथा अजोध्या कही । अपराजिता केकई दुख नहीं ॥४०१३॥
तुम कारण झूरैं दिन रयण । उनके मन को नाहीं चयन ॥
जो तुम उनकी सुध ना लेहु । प्राण तजैं जांणों निसंदेहु ॥४०१४॥
वेग चलो तुम मेरे संग । सोग वियोग सब होवै भंग ॥
रामचन्द्र लक्ष्मण सुणि बैन । व्याप्या मोह भरे दोउ नैन ॥४०१५॥
विराधित सुग्रीव अंगद हनुमान । इनको अस्तुति करी बखानि ॥
तुम कीया परमारथ कांम । तुमते रही हमारी मांम ॥४०१६॥
परदुख भंजन तुम भूपती । तुमसौं उरण हौं हां किम भती ॥
भावमंडल की अस्तुति करैं । तुम तैं ए सब कारज सरैं ॥४०१७॥
बहिन तणी मेट्या सब दुख । तुम प्रसाद हुआ सब सुख ॥
भभीषण सु बोले रघुनाथ । जे तुम आनि मिले हम साथ ॥४०१८॥
तो हम जीत्या लंका देस । हमारा तुम मान्या उपदेश ॥
अजोध्या को हम करि हैं गौंन । तुम उपगार सकैं कहि कौंन ॥४०१९॥
लंका राज हम तोकूं दिया । भभीषण बहुरि चरण कौं नया ॥
मेरी अरज सुणौं जगदीस । करो राज तुम बहुत बरीस ॥४०२०॥
हूं सेवग विनऊं कर जोडि । मात बुलावों इस ही ठौर ॥
हम पै राज सधै किण भांति । मैं सेवग सेऊं दिन राति ॥४०२१॥
रामचन्द्र बोलैं लक्ष्मण । जनम भौम देखण कौं मना ॥
फिर बोले भभीषण राइ । सोलह दिवस रहौ इस ठाइ ॥४०२२॥

अयोध्या में राम द्वारा दूत भेजना

भेज्या दूत अयोध्या नगर । सावधान होवैं जन सगर ॥
विद्याधर तिहां भेज्या दूत । अपराजिता आवत देखे दूत ॥४०२३॥
आए दूत भरत कैं पास । सुणी जीत मन भया हुलास ॥
बहोत दिया दूत को दान । आदर भाव किया सनमान ॥४०२४॥
अपराजिता केकई पै आन । सुणे बचन भया मन आनंद ॥
पीछे आवत देखी सैंन । बहुत हुवा नगरी में चैन ॥४०२५॥
रतन कंचन बरसै तिह घरी । सब अयोध्या कंचन सूं भरी ॥
भरत भूप यह आग्या दई । अयोध्या फेर समारो नई ॥४०२६॥

सकल गेह कंचन के किये । रतनजडित चित्रसाली किये ।।
विद्याधर आये सूत्रधार । ते मंदिर अति भले संभार ।।४०२७।।
जे जे द्रव्य हीरण था लोग । तिरण का मेटया सब ही सोग ।।
जे कोई नगर गये थे छोडि । उह दुनियां से प्राणि बहुरि ।।४०२८।।
बहुत लोग अन्न भी बसे । लंका तें यह अधिकी दिसैं ।।
राजामंदिर सब ही भला । देखत ही सब का मन खुला ।।४०२९।।
बारह जोजन लांबी मही । दस जोजन चोडाई सही ।।
नगरी का कंचन मई कोट । अन्य सहु मिट गई खउट ।।४०३०।।
श्रीजिन का चैत्याला कियो । आदिनाथ मंदिर तिहां भए ।।
दोई सहस्र थंभ की साल । सहस्र कूट सोभैं सुविसाल ।।४०३१।।
सहस्र थंभ की वेदी बणी । बंदरवाल मोती की घणीं ।।
सहस्र एक ध्वजा तिहां लगी । रतन जोति चहुंदिस जगी ।।४०३२।।
कमल सरोवर वापिका कूप । सीतल पवन सुहावन रूप ।।
अडतीस जोजन वन चहुं पास । फूलैं फलैं बहु वृक्ष सुवास ।।४०३३।।
सोलह दिन में संपदा सही । सुर नर देख अचंमैं रही ।।
रामचंद्र इह पाई सुष । चलरणे की कीरणी तब बुध ।।४०३४।।

दूहा

अजोध्या कंचन की बणी, रतन लग्या बहु भाइ ।।
अमर सुख व छोड करि, मोहे सुरपति आइ ।।४०३५।।

इति श्री पद्मपुराणे साकेत वरणनं विधानकं

७५ वां विधानक

चौपई

राम सीता का अयोध्या गमन

लंका राज भभीषण दिया । अजोध्या कूं पयाणा किया ।।
बइठि चले पुहपक विमांण । विद्याधर संग हैं बलवान ।।४०३६।।
त्रिकुटाचल लंकागढ छोडि । आई सोमैं है चिहुं ओर ।।

पुष्पक विमान से सीता को मार्ग का परिचय देना

मेरु सुदर्शन देख्यो सिया । पूछै कवण ए ठांम सोभया ।।४०३७।।
बोले राम सुदर्शन मेर । महोछा श्रीजिन जनमत वेर ।।
ए है जनम कल्याणक ठाम । इनका सुण्यां पुराणु नांम ।।४०३८।।

दंडक वन देख्यावै राम । तुम दसकंध हरी या ठाम ॥
उहां ते आइ देखी बहै नदी । चारण मुनी आए थे जटी ॥४०३६॥

भोजन दान दिया था उने । जटा पंखी पूरब भव सुने ॥
जटा पंखी इत सेती गह्या । रावण वां के प्राण कुं दह्या ॥४०४०॥

वंसगिर पर्वत देख्या वही । देसभूषण कुलभूषण सही ॥
उनुं का जब उपसर्ग निवार । केवल ग्यांन लह्या तिण बार ॥४०४१॥

बालखिल्य जिहां था भूप । कल्याण माला पुत्री सुस्वरूप ॥
रुद्र भूप धरै था [illegible] । [illegible] ॥४०४२॥

दशांग नगर वज्रकर्ण नरेस । तिहां मांय परदेसी भेस ॥
उन दीया था हम प्रतैं आहार । वाका दुःख चले थे टार ॥४०४३॥

अयोध्या दर्शन

आए तिहां अजोध्यापुरी । कंचन मंदिर सोभा अति खरी ॥
सीता पूछै इह नगरी कौंण । कनकमय दीसैं हैं जिहां भौंन ॥४०४४॥

लंका तैं दीसैं आगरी । बसैं सघन उत्तम जन भरी ॥
रामचंद्र बोले समझाइ । अजोध्या जनम भूमि यह ठांइ ॥४०४५॥

विद्याधरैं संवारी आंन । औसा कोई अवर न थांन ॥
आए जिहां बीस देहुरे । रिषभदेव सोभैं अति खरे ॥४०४६॥

उतरे भूमि जिनदरस निमित्त । भरत सत्रुघन आए पहुंत ॥
देखी सेन्या घणी विभूति । पुहपक विमांण सोभा संजुक्त ॥४०४७॥

राम लक्ष्मण भरत शत्रुघन मिलन

रामचंद्र लछमण कैं पाउ । भरथ सत्रुघन लाग्या धरि भाउ ॥
उनुं लगाया उननैं कंठ । छूटि गइ मन मांहिली गंठ ॥४०४८॥

मैंगल और लाख पचास । अस्व रथ पाइक बहु भास ॥
देखैं नारि पुरुष सब लोग । सब नगरी में मिट गया सोग ॥४०४९॥

पुहपक विमांण परिक्ष्यारूं वीर । सोभैं कनक वरण सरीर ॥
मोती माणक हीरा लाल । डालै रामचंद्र परि उछाल ॥४०५०॥

सीता सती बहु सोभै पास । जैसे पूनम ज्योति प्रकास ॥
विराधित कूं देखि लोग सब कहैं । चंद्रोदिक सुत इनैं संग रहैं ॥४०५१॥

जब खरदूषण सूं भई मार । तब विराधित किया उपगार ॥
दंडक वन तैं ले गए पाताल । रामलखण पहुंचाए हाल ॥४०५२॥

देख्या अंगद सुग्रीव हनूमांन । इन सुग्रीव सेनां सब आंन ।।
रामचन्द्र का कीया काज । राखी रघुवंस की लाज ।।४०५३।।

हनुमांन बल महिमा घणी । इसकी बात आगें भी सुणी ।।
भामंडल जनक का पूत । देव एक कीया वह घूत ।।४०५४।।

जनमत हीं सुर नैं इह हरघा । विजयाद्ध' गिरिपै गिर पड्या ।।
पुहुपावती नैं पाल्या याहि । पुन्यवंत पराक्रमी ताहि ।।४०५५।।

जितने राजा सेना साथ । जैसे इन्द्र देव की भाथ ।।
भाजंतर बाजैं बहु संग । ता सबद सुख पावैं अंग ।।४०५६।।

गावैं गुणि जन मधुरे बैयन । करैं राग होई सुख चैंन ।।
बिरदावली जाचक जन कहैं । नगर लोक थकित होइ रहैं ।।४०५७।।

अपराजिता अवर कैकया । सुप्रभा और सकल सुख भया ।।
सतखिण मिंदर बइठी जाइ । दरसन देखैं पुत्र का आइ ।।४०५८।।

निकट पौल आइया बिवाण । माता पुत्र सु' भया मिलाण ।।
चारू' माता के पद नए । भरे नयन तब उनके हिये ।।४०५९।।

कंठ लगाय परियण भेटिया । नए जनम ए अब आइया ।।
असुभ कर्म तैं भया वियोग । पुंन्य उदय तैं भया संजोग ।।४०६०।।

अडिल्ल

पुंनि मिलैं कुटुंब और सुख संपति घणी,
वृद्धि होइ परिवार जिती भावैं अणी ।।
चारो धरम सु' प्रीत रिध बहु पाइये ।
मध्य लोक सुख देखि मोक्षपुर जाइये ।।४०६१।।

इति श्री पद्मपुराणे श्री रामचन्द्र लछमण अयोध्या आगमन विधानकं
७६ वां विधानकं

चौपई

अयोध्या वैभव

दोइ कर जोडे श्रेणिक राइ । प्रभु जी कथा कहो समझाइ ।।
केती विभव राम कै भई । केती पृथ्वी साधी नई ।।४०६२।।

श्री जिन वाणी गहर गंभीर । सुणतै भाजैं प्राणी की पीर ।।
गौतम स्वामी ब्यौरा कहैं । सुणि श्रेणिक मन निश्चै गहै ।।४०६३।।

कनक कोट चतु:साला नाम । तीन कोट अयोध्या ठाम ।।
एक कोट नगर के फेर । दूजा कोट फिर भीतर घेर ।।४०६४।।

तीजा कोट सब ही तैं बडा । खातिका तीन निरमल जल भरया ।।
च्याऊं पोल बज्र किवाड । हस्ती पौल बनी मझधार ।।४०६५।।

जिन प्रतिमा की महिमा घणी । डालि कलस अति सोभा बणी ।।
रतनजोति सोभै चिहुं ओर । चंद्रमा बरणै घरणै सब ठौर ।।४०६६।।

बणी पूतली जिहां लूंजत । सोभै सब ठामै बहु भंत ।।
वृक्षावली का बरणं कटाव । उनूं को कहां लग बरणाव ।।४०६७।।

सभामंडल झरोखा सु अनूप । सुख सेज्या परि पोढे भूप ।।
बहु सुगंध पाटंबर तिहां । मानसथंभ बिराजै जिहां ।।४०६८।।

बइठे पट्ट फिरैं सिर छत्र । चमर ढुरैं गंगाजल जत्र ।।
सोलै सहस्र मुकट बंध राई । करैं सेव तेव मन बच काई ।।४०६९।।

बैजयंती सभा तिहां जुडी । बर्द्धमान मंदिर रिध बडी ।।
अनोपम गदा खडग कनकार । सूर जहां सुसोभै तरवार ।।४०७०।।

वज्रावर्त्त समुद्रावर्त्त । असा धनुष बहु सोभा धर्त्त ।।
उत्तम वस्त्र सोभै सब अंग । जरकं सुवसन बणे पचरंग ।।४०७१।।

पंचास लाख गउ की खीर । छपन लाख गउ लक्षमण बीर ।।
सत्तर कोटि नगर में आन । तीन खंड के भूपति जान ।।४०७२।।

सेव करैं नित सकल नरेस । नरपति खगपति मानैं आदेस ।।
चक्र सुदर्शन जोति अपार । प्रगटै तीनू लोक मझार ।।४०७३।।

च्याऊं बीर पट्ट बैठें नित्त । सकल सभा में उनूं का चित्त ।।
बन उपवन के फल अरु फूल । देखि ताहि पथि करि है भूल ।।४०७४।।

उछलै जल फिर उतरै भूमि । वृक्षावली तिहां रही झूमि ।।
मंदिर बणे सब रोस के भले । तिहां बैठि नृप मानैं रले ।।४०७५।।

आस पास पर्वत्त उतंग । निर्मल नीर बहै तिहां गंग ।।
गिरवर तैं इहै ऊंचा कोट । छिपै भानु उह गढ की ओट ।।४०७६।।

सुर्ग सुख तजि मोहे देव । अजोध्या इंद्र रघुपति सेव ।।
रामचंद्र की आगन्यां भई । धर्मसाला सब राखी नई ।।४०७७।।

पर्वत परि चैत्याला किये । नगर नगर जिन मंदिर भए ।।
अटूट भंडार घटै है नहीं । भोग्य भूमि सब है मही ।।४०७८।।

सीता की नगर में चर्चा

नगर नगर चर्चा इह चली । रामचंद्र कीनी नहीं भली ।।
सीता कूं रावन ले गया । सीता का सत कैसे रह्या ।।४०७९।।

रामचंद्र सा करै ए कर्म । कैसे रहै अन्य का धर्म ।।
जे नारी बाहिर पग देइ । ताहि सुभट कैसे घर मैं लेइ ।।४०८०।।

उत्तम कुल की पूरी लाज । पर घर भ्रमैं तिन सौं नहीं काज ।।
असी चरचा घर घर होइ । असुभ कर्म मति बांधो कोइ ।।४०८१।।

भरत के मन में वैराग्य

भरत सुण्यौं मन भया वैराग । सकल रिध सौ मेल्यौ लाग ।।
राजभोग विष समझ्या सबैं । सब ही विनासी जाणौं अबै ।।४०८२।।

जोवण जल बुदबुदा समांन । जरा व्यापैं तब थकैं परांन।।
पांचूं इन्द्री हुवैं क्षीण । पराक्रम थकैं देही होइ हीण ।।४०८३।।

तब कैसे पालैं चारित्र । चार कषाय जीव के सत्रु ।।
विषय सताइस सहु दुख के मूल । जे अग्यान मोह में भूल ।।४०८४।।

लोही मुत्र हाड आमिष । ताहि देखि जिय मानैं सुख ।।
काया कूंडी काचा पिंड । जिम कुंभार बणावै भंड ।।४०८५।।

एक घडी में होई छार । असे सूं कहा करै पियार ।।
मनुष्य जनम किस ही बिध लहै । संयम को निश्चय सौं गहै ।।४०८६।।

इहु विभूति संध्या उणहार । सोभी जात न लागै बार ।।
जैसे दावानल वन दहै । बडे वृक्ष पल में भस्म करि रहै ।।४०८७।।

सब वन भस्म करै वह आग । तउ न हारै पल पल जाग्य ।।
जेता ईंधन डारै ताहि । तो भी पावक तृपत न नाहि ।।४०८८।।

ऐसे भुगतैं सब जग मही । तो भी तृष्णा मिटती नहीं ।।
ज्यों समुद्र अति ही गंभीर । गंगा नदी मिल्या सब नीर ।।४०८९।।

समझैं नही समुद्र किह भांति । असे जीव मोह के नसात ।।
रागद्वेष छोडो करि ग्यांन । सुख दुख समझैं एक समान ।।४०९०।।

जैसे गंगाजल के पास । काक करै आमिष की आस ।।
मृतक परि बैठ चला जल मांहि । उठै लहर अगम अथाह ।।४०९१।।

समुद्र मांहि पहुंच्या वह काग । तिहां तैं निकसैं न मारग लाग ।।
देखैं उदक चिहुं दिसि ओर । उडने का पावै नहीं ठौर ।।४०९२।।

ऐसे जीव माया बस पडै । भवसागर में भ्रमता फिरै ।।
जैसे मींडक पंकज रुचि करै । तिहां भुयंग आय पकडै ।।४०९३।।

ऐसे लोभ वे जीव नैं दुःख । नर्क पहुचावै तिहां नहीं सुख ।।
इह विभूति सुपर्णै परिहार । अब हुं ल्यू संयम का भार ।।४०६४।।
करैं विचार भरथ भूपती । किण ही प्रकार होस्यु जती ।।
अब जैहूं संयम व्रत धरूं । सकल लोक मुज भाखै बुरू ।।४०६५।।
अब लूं राज अकेलै करा । रघु नैं देख जैन व्रत धरया ।।
कछु राखिये लोकाचार । कछु कीजिये जीव का आधार ।।४०६६।।
जैसें केहरि पिंजरा मांझ । इम भरथ विचारैं वासुर सांझ ।।

राम से भरत की प्रार्थना

रामचन्द्र सों बिनवै भरथ । आग्या द्यो तो लेहूं चारित्र ।।४०६७।।

राम का उत्तर

रामचंद्र समझावैं बात । तौ कूं राज दिया है तात ।।
हम आग्या देवे कूं कौन । तुमारे मिलन कूं किया था गौन ।।४०६८।।
करो राज परजा सुख देहु । चउथैं आश्रम दिख्या लेहु ।।
चक्र सुदर्शन तुम पै रहो । जो कुछ आग्या हमसू कहो ।।४०६९।।
छत्र धरावो अपने सीस । तुम हो सब पृथ्वी के ईस ।।
सत्रुघन चमर ढारैंगा खडा । लक्षमण मंत्री सब गुण बडा ।।४१००।।
तीन षंड का भुगतो राज । हमनैं नहीं राज सौं काज ।।
करैं वीनती भरत कर जोडि । कीया भोग कछु रही न खोडि ।।४१०१।।
स्वर्ग लोक सुख देखे घणे । तो भी आस न जाणै मणे ।।
इह विभूति विनसत नहीं वार । माया में भरि भ्रमैं संसारि ।।४१०२।।
ऊंच नीच गति भरमैं जीव । सुभ असुभ की बांधै नींव ।।
करो दान पालो रतन तीन । च्यार दान विध सौं द्यो नित्त ।।४१०३।।
दयाभाव सौं राखो चित्त । सुख दुख सम जाने मतिवंत ।।
समझावै मंत्री परवीन ।दया दान राखो मन चित्त ।।४१०४।।
कारिमो दीसैं परिवार । कोई न चलैं जीव की लार ।।
धरि चारित्र लहूं गति मोक्ष । तिहां सासता सुख संतोष ।।४१०५।।
स्यंघासन सौं उतरया भरथ । तब लक्षमण करैं है थुति ।।

भरत को पुनः राम के द्वारा समझाना

अब ही तुम मति छंडो राज । जोबन समै नहीं तप का काज ।।४१०६।।

वैराग भाव हम चित्त धरैं । हमारे संग तुम तप आचरैं ॥
केकइया माता बिललाइ । राणी रुदन करैं बहु भाय ॥४१०७॥

सीता अवर विसल्या आइ । सहु परिवार कहैं समझाइ ॥
कोमल काया लघु है बेस । महा कठिन मुनिवर का भेस ॥४१०८॥

षट रितु के दुख कैसे सहो । सज्या भूमि परीसा लहो ॥
नीरस भोजन बन का वास । किम छांडो तुम भोग विलास ॥४१०९॥

स्वर्ग लोक सम है यह रिद्ध । अन्य जनम किए देखी सिद्ध ॥
श्रावक धर्म पालो घरमांहि । परजा दान करो नित चाह ॥४११०॥

बाल समैं तप करणा नहीं । चउथै आश्रम विध्या कही ॥
वेग चलो अब करो सनान । हमारा वचन सुणु दे कान ॥४१११॥

पकडि बांह खैंचैं सहू अस्तरी । त्यावैं उबटणा सुगंध अति खरी ॥
करैं मल धोवैं सब अंग । भरत ध्यान हुआ नहीं भंग ॥४११२॥

पूजा करी श्री जिनदेव । सकल अस्तरी करैं ऊभी सेव ॥
त्रिलोकमंडण छूटो गयंद । तोडि बंधण करथा अति दुंद ॥४११३॥

पाडै हाट मंदिर अरु पौल । सब नगरी मां मांची रौर ॥
छूटैं सगन जंत्र अरु बाण । गज नहीं मानै कोई काण ॥४११४॥

उन्मत्त हाथी का अकस्मात आगमन

जिहां भरथ करैं पूजा ध्यान । मैंगल आया उनही थान ॥
व्याकुल हुई सब अस्तरी । भरथ भूप भय चित न धरी ॥४११५॥

रामचंद्र लक्षमण इह सुनी । उनकूं देखत हूं सब धुनी ॥
डारैं फांस हस्ती कूं घनी । मानैं नहीं क्रोध का धनी ॥४११६॥

देखि भरथ कूं हाथीनिया । नमस्कार तब बहु विध किया ॥
भरथ नरेस अचंभे भया । या का मद काहे तैं गया ॥४११७॥

जाती समरण भयो गयंद । पुरब भव का समझ्या बिंद ॥
ब्रह्मोत्तर सुरग सुरगति पाई । उहां तैं चइ राजा के आइ ॥४११८॥

दान देह कीया बहु मांन । तातैं हस्ती उपज्या आंन ॥
दीजे कछु दया के निमित्त । बड्याश्रत कीजे बहु मंत ॥४११९॥

सोरठा

जो कछु दीसे स्याम, तजो सकल अभिमान कूं ।।
पावइ निरभय थान, दया धरम सरधा धूं ।।४१२०।।

इति श्री पद्मपुराणे त्रिभुवन मंडल संक्षोभ विधानकं
७७ वां विधानक

चौपई

भरत का हाथी पर चढना

हाथी खड़ा भरम के ध्यांन । राम लक्ष्मण ढिग पहुंचे आन ।।
भूचर खेचर नरपति घने । चउधां फेर मनख इम भणें ।।४१२१।।

इहु दंती सब तैं मयमंत । कैसे भाव धरया इन संत ।।
भरत आइ चढे ता पीठ । सीता विसल्या आकमो दीठ ।।४१२२।।

एभी संग चढी तिण बार । अपनीं अपनी ठाम विचार ।।
डोली डोला अनैं चकडोल । रथ पालकीया बहुत अमोल ।।४१२३।।

सेना बहुत चली ता संग । पहिर आभूषण भले सुरंग ।।
कुसुम प्रमोद नंदन उणिहार । तिहाँ आए सगला परिवार ।।४१२४।।

उतर अंतहपुर सब गये । सगले लोग अचंभै भए ।।
इहु गैवर था महाबलीष्ट । ऊभा रह्या मौंन करी दिष्ट ।।४१२५।।

हाथी द्वारा तप साधना

बहु महावत आए पास । भला भलोदा दीज सुवास ।।
हाथी खावै न खोलै नयन । सेवग बोले मधुरे बैन ।।४१२६।।

आभूषण डारे सब डारि । गज नहीं देखै आंखि उघाडि ।।
माया मनै सथानिक खड़ा । खम्भा सकल सउंभ तिहां पडया ।।४१२७।।

जैसे खडा खंभ पाषान । तैसें मंगल ध्याया ध्यान ।।
उन की बात न पावैं कोइ । ए अचरज सब कैं मन होइ ।।४१२८।।

वैद्यक ग्रंथ संभाले वैद्य । अउखध ल्यावै मन में खेद ।।
विद्याधर जंत्र मंत्र बहु करैं । कुछ उपाय नहीं सुसरैं ।।४१२९।।

करैं जोतिगी ग्रह चाल । कोई कहै मारया है इन काल ।।
ऐसा गज पृथ्वी पै नहीं । ए रावण कै था पारोधन सही ।।४१३०।।

जो कोई कहै सो करै उपाव । कोई न जाणै उसका भाव ।।
अपनी अपनी सब ही कहैं । भोई बंदन कोई रहै ।।४१३१।।

दूहा

करैं जतन सब गुणीजन, वैद्यक ग्रंथ विचार ।।
मन की को जाणै नहीं, रहे सकल पचि हार ।।४१३२।।

इति श्री पद्मपुराणे त्रिभुवन अलंकार समाधान विधानकं

७८ वां विधानक

चौपई

देश भूषण कुलभूषण मुनि का आगमन

देशभूषण कुलभूषण केवली । अजोध्या आए पूजी रली ।।
महेन्द्र वन अति उत्तम थान । सोभै दोऊ चन्द्र अरु भान ।।४१३३।।

तीन लोक में प्रगटे मुनी । रामचन्द्र लक्षमण सहु सुनी ।।
रघुपति मन में भए उछाह । दरसन हित चाले नरनाह ।।४१३४।।

भरथ सत्रुघन चारों वीर । सोहै कंचन वरण सरीर ।।
त्रिभुवन अलंकार हस्ती पलांण । तिहां बाजैं आनंद निसांण ।।४१३५।।

सुग्रीव नील अंगद हनुमान । भूपति संग चले बलवान ।।
अपराजिता अर केकईया । सुप्रभा संग चाली बहु त्रिया ।।४१३६।।

सीता आदि चलीं बहु नारि । आवे लोक सकल परिवार ।।
पहुंचे वन तब उतरे भूमि । दर्शन पाय चरण कौं चूमि ।।४१३७।।

दई प्रदक्षणा करी डंडोत । कहो वाणी धरम उद्योत ।।
कैसी विध धरम जती का होइ । कैसे श्रावण पालैं सोइ ।।४१३८।।

केवलग्यानी ज्ञान अपार । कहैं धरम मुनि श्रावग आचार ।।
धरम समान सगा नहीं कोइ । धरमही तैं ऊंची गति होइ ।।४१३९।।

धरम सहाय जीव के संग । अन्यबि बरज्या रंग पतंग ।।
ऐसा है संसारी भोग । कबहु साता असाता जोग ।।४१४०।।

धरमहि सेती इन्द्र फणीन्द्र । चक्रवर्ति अर देव जिणंद ।।
ऊंची गति बहुरि निरवाण । पावै मोक्ष सासता थान ।।४१४१।।

लक्ष्मण द्वारा हाथी के सम्बन्ध में जानकारी चाहना

लछमण पूछें द्वै कर जोडि । हाथी की कथा कहिये बहोड ।।
किण कारण इण कीया दुंद । समता भई भरत कूं बंद ।।४१४२।।

केवल लोचन ग्यांन अगाध । पूजत हैं प्राणी के साध ।।
नगर अजोध्या नाभि नरेस । मरुदेई सरस्वती के भेस ।।४१४३।।

सरवारथ सिध रिषभ देवबास । छह महिना आगे परकास ।।
भई भोमि कनक सी सरव । रतनवृष्टि बरष्या बहु दर्व ।।४१४४।।

गरभ जनम कल्याणक भए । सुरपति खगपति सब ही नए ।।
वज्रवृषभनाराच संस्थान । प्रथम जिनेन्द्र महा बलवान ।।४१४५।।

लख तिरासी पूरव राज । पाछैं किये धरम का काज ।।
चार सहस्र भूपती साथ । आतम ध्यांन धरैं जिन नाथ ।।४१४६।।

जैसे सुदरसन अटल मेर । असैं तप साधैं मन घेर ।।
अनि भूप सहि सकैं न भूख । लगी त्रिषा मन लाग्या सूख ।।४१४७।।

तब वे मुनि करैं विचार । जई फिर जाउं नगर मझारि ।।
मारैं भरथ सहु नैं ठौर । तातैं मत हम थापैं और ।।४१४८।।

दरसन च्यारि निराले भए । उनने भेष निराले किये ।।
उनमें भ्रष्ट भया मारीच । ग्यानामृत तैं सब को सींच ।।४१४९।।

सुप्रभा राजा प्रहलना अस्तरी । ते भी बसैं अजोध्या पुरी ।।
पुत्र दोइ वाकैं गर्भ भए । सूर्य उदै चन्द्र उदै निरभये ।।४१५०।।

जब वे कुंवर जोबन के बैस । मारिच पास सुण्यो उपदेस ।।
संन्यासी का साधैं जोग । छोडि दिया संसारी भोग ।।४१५१।।

च्यारू गति भरम्या वे दोइ । कबहूं देव मनुष गति होइ ।।
कबहुं कि तिरजंच गति फिरैं । तप करि राज पुत्र अवतरैं ।।४१५२।।

हस्तनागपुर हरिपति भूप । मनोलता राणी सु स्वरूप ।।
तास गर्भ चन्द्रउदय जीव । कुलकर नाम धरम की नींव ।।४१५३।।

विश्वकर्म विप्र अगनिकुल नारि । सूरज उदय लिया अवतार ।।
सुरति रति नाम पुत्र का धरया । बेद पुराण विद्या सुं भरया ।।४१५४।।

हरपति राजा तपकूं गया । राजभार कुलकर कूं दिया ।।
सुरति रति प्रोहित भूपति हेत । संन्यासी महंत शिष्य सौं हेत ।।४१५५।।

पंचा अगनि साधैं बन मांहि । करैं तपस्या बहुत सांझ ।।
नरपति मुणि दरसन कुं चल्या । अभिनंदन मुनि देख्या भला ।।४१५६।।

तेरह विध चारित्र का धणी । मति श्रुत ध्यान अवधि उपनी ।।
मुनि देख्या वाकी ढिग जाय । नमस्कार करि लाग्या पाइ ।।४१५७।।

मुनि बोलैं राजा सु बैन । तापस निज देखूं तुम नैन ।।
जिहां तापसी साधैं ध्यान । जलैं सरप वा लकडे थान ।।४१५८।।

राजा गया ते लकडा निकाल । चीरघा ठूंठ निकल्या ब्याल ।।
जैन धरम की धरी परतीत । धन्य साध जे इन्द्री जीत ।।४१५९।।

पाखंडी जाण्यां सब भेष । निश्चै जैन धरम सुं प्रेम ।।
राजा चाहै दिक्षा लेई । सुरांत रति प्रोहित तब शिक्षा देइ ।।४१६०।।

तुम बालक अर संतति नांहि । संतति बिन दीक्षा नहीं कांहि ।।
जे बिन संतति तप को धरैं । मर करि जीव कुगति में पडैं ।।४१६१।।

जब वह पुत्र सु ईसरथ । सौंपो राज रिध सब गरथ ।।
अपणा कुल का करिये धरम । आनि भेष धरो मति भरम ।।४१६२।।

ज्यौं क्षीरकदम का पर्वत पुत्र । नारद सुं वाद किया बहुत्त ।।
वसू भूप कौं भेज्या नरक । ऐसा प्रोहित बरैं जो भडक ।।४१६३।।

श्रीमदा राणी सुणि बात । राजानैं समझावै बहुभांति ।।
नृप वाका मानैं नहीं कह्या । प्रोहित खोट हिया में गह्या ।।४१६४।।

राणी सौं विप्र कहै समझाय । राजा जैन धरम रुचि ल्याइ ।।
सीख हमारी सुणां न राय । मेरा जजमान हाथ तैं जाय ।।४१६५।।

विष देकरि मारैं इस घडी । राणी प्रोहित इह चित्त धरी ।।
विष देकरि तब मारया राव । राणी कुं कोढ चुवै सब ठाम ।।४१६६।।

प्रोहित सातवां नरक दुख पाय । महा दुःख सौं तिहां बिहाइ ।।
राजा स्वर्ग भरम्या जोन । अंत समय भए इक भौन ।।४१६७।।

मींडक मूसा मृग नैं मोर । कुकर गति दोन्युं इक ठौर ।।
ऊंच नीच गति भरम्या भाइ । प्रोहित जीव हाथी की काय ।।४१६८।।

राजा जीव मींडक जल बीच । हाथी नैं रौंघ्या तिहां कीच ।।
फिर मींडक उपज्या तिहं ठौर । कौवा खाय गया भी और ।।४१६९।।

मींडक जीव मूंस गति पाय । हाथी तैं बिलाव गति आय ॥
मूसा कुं बिलाव किया भक्ष । दोनूं उपज्या जल मैं मच्छ ॥४१७०॥

कुकडा मच्छ बिलाव नैं मूसा । धीवर ने गह्या जाल में धस्या ॥
उहां तैं मरि बांभण कैं गेह । राजग्रही नगर विप्र का एह ॥४१७१॥

बहु बाकैं सिध जउलका अस्तरी । अंतर सौं पुत्र जणे सुभ घडी ॥
प्रथम रमन दूजा विनोद । मात पिता ले पालैं गोद ॥४१७२॥

जोबन समैं विचारैं एह । रमन धरैं विद्या सुं नेह ॥
कुपढ मनुष पसू तें बुरे । जिन कछु भेद चित्त नहीं घरे ॥४१७३॥

पशु भला जो उठावें बोझ । मूरख जैसा जंगल रोझ ॥
गुनी होय तो समझैं ग्यान । कुपढ कहा जानैं पहचान ॥४१७४॥

गुण तैं राज सभा में काण । आदर भाव सदा सनमान ॥
गुण हीणां जैसे बिनु आंख । जैसे पंखी बिनू पांखि ॥४१७५॥

असी सोच वाणारसी गया । गुरु पैं जाय चरण कूं नया ॥
तिहां सिष्य पढैं थे घने । सेवा करैं उनूं ढिग भणे ॥४१७६॥

वै सिष्य भोजन देवैं याहि । रमन पढैं मन में उछाह ॥
च्यारूं वेद पढे मन ल्याइ । विद्या कला सीख्या बहु भाइ ॥४१७७॥

गुरु पं विदा होय करि चल्या । राजग्रही बन देख्या भला ॥
बर्षा भई घनहर घनघोर । बरषा भई बन नाच्या मोर ॥४१७८॥

भीजत चल्या रमण तिण बार । देख मढी इक बस्त्र उतार ॥
बस्त्र निचोड वह सूतो तिहां । स्यामा भावज आई जिहां ॥४१७९॥

विनोद त्रिया असोग दत्त सूं नेह । उनैं कीया वचन जक्ष कै गेह ॥
जब उठ स्यामा बन कूं गई । विनोद विप्र तरवार नांगी लई ॥४१८०॥

त्रीया पाछे जात्या लाग । असोगदत्त अग्रैं आवैं था जाग ॥
कोटवाल कै आया हाथ । बांध ससक वह ले गया साथ ॥४१८१॥

गई बांभणी मंड के बीच । रमन सोवैं था लागी मींच ॥
विनोद जाणैं यह इस का जार । खडग काढि तसु सीस उतार ॥४१८२॥

देह छांडि भैंसा भया अंध । दोनूं जले बयर सनमंध ॥
भये भील मृग गति पाइ । बनमैं रहै पापैं मए काइ ॥४१८३॥

नगर कंपिला राजा स्वयंभूत । बिमलनाथ दरसन हित भूत ॥
वे दोनु मृग आ खडे राय । जिन मंदिर राखे तिहां जाय ॥४१८४॥

अनपांणी वास तिहां हरया । सेवा करैं जतन सुं खरा ॥
समाधिमरण में त्यागी देह । विनोद जीव सेठ कै भया गेह ॥४१८५॥

नाम धनदत्त लक्ष्मी गेह अपार । बाइस कोडि जुडै दीनार ॥
रमन जीव लहि स्वर्ग विमांन । भए पुत्र धनदत्त के आन ॥४१८६॥

वारुणी नाम सेठ की धणी । यांणी जाकै पुत्र थिति बणी ॥
निमित्तग्यांनी पंडित बुलाइ । जनमपत्री लई लखाइ ॥४१८७॥

घडी मुहूर्त उत्तम बार । उपज्या बैराग तजै घर बार ॥
इतनी सुणी दंपती बात । पुत्र नैं बरजैं बाहर जात ॥४१८८॥

बन उपवन मंदिर संवराइ । खाणां पीवणां सेवा सार ॥
फूल पान उबटणां सनांन । आभूषण दे बहुला आंण ॥४१८९॥

ऐसी जुगत दिन बीते घणे । प्रभात समय सुपनां में सुणे ॥
अगले भव [illegible] ॥४१९०॥

भानु उदै बाजैंतर होई । जै जै सबद करैं सब कोइ ॥
श्रीधर मुंनि कौं केवल ग्यांन । ऐसी भूप नैं सुणी कान ॥४१९१॥

पंच भूमि तैं देखी भीर । पहुंच्या चाहै मुनिवर तीर ॥
तबै उतरैं था राइ का कुमार । डस्या भुयंगम खाइ पछाड ॥४१९२॥

मर करि स्वर्ग मां देवता भया । मनबांछित सुख भुगतैं नया ॥
चंद्रालपुर प्रकास यस भूप । माधई राणी महा सरूप ॥४१९३॥

उहां तैं चया भया जगदूत । पाई सरोध जोबन संजूत ॥
प्रकास जस नैं दिक्षा लई । राज विभूत जग दूत ने दई ॥४१९४॥

भोग मगन में बीतै काल । दुर्जन दुष्ट तणां सिर साल ॥
राजा कूं उपज्या बैराग । राज भोग कूं चाहै त्याग ॥४१९५॥

मंत्री समझावैं राजनीत । संतति बिना नहीं होय प्रतीत ॥
जब होइ पुत्र तब छंडो राज । पालो प्रजा धर्म सुं काज ॥४१९६॥
राजा कूं लागै बुरा सब कर्म । अणूव्रत पालै जिणवर धर्म ॥
राजभोग में छंडया प्राण । ईसान स्वर्ग पाया सुभ थान ॥४१९७॥
जंबू द्वीप क्षेत्र विदेह । अचल छत्री वालहदनी सूं नेह ॥
रतन संचय नगरी का नाम । ईसान स्वर्ग तैं चया तिह थान ॥४१९८॥

अभीराम पुत्र जनमीया कुमार । छहूं खंड रहसी या संसार ।।
जनम समये दीया बहु दांन । और बजे आनंद नीसान ।।४१९९।।

दिन दिन कुमर बढै जिम चंद । देख रूप सुख होइ आनंद ।।
जोबन समय बिवाही नारि । राजसुता वरी तीन हजार ।।४२००।।

भोग मांहि बरतैं दिन रयन । कुमर बिचारैं मनमें जयन ।।
स्वर्ग लोक सुख देखे घणे । तैभी जात न जाणे गिणे ।।४२०१।।

इह विभूति संसारी जरजरी । मगन हुवा पावै गति बुरी ।।
बैठा पट्ट तिहां रणवास । ग्यांन उदय हुवा परकास ।।४२०२।।

ए सुख समझैं जहर समान । जो कोई भखै ताहि जहर समान ।।
विष खाइ एक जु बार । विषय लंपटी भ्रमै संसार ।।४२०३।।

जोबन जात न लागैं बार । पड़ै जीव माया कै आधार ।।
पुण्य पापनैं जाणौं एक । जाके राखैं मन में टेक ।।४२०४।।

ऊंच नीच गति डोलैं हंस । उत्तम मध्यम पाए हंस ।।
पुण्य उदय पावैं बहु सुख । जब बिहडैं तब मानैं दुःख।।४२०५।।

रोग सोग चित आरत धरैं । फिरि फिरि जोनी संकट परैं ।।
अब मैं संयम व्रत कूं धरूं । जैन धरम निश्चय सूं करूं ।।४२०६।।

राणी सुणकर भई अबोल । ऐसे सुणे कंत के बोल ।।
पालैं व्रत तब राजिकुमार । एक अंतर लेइ अहार ।।४२०७।।

पाख महीनैं करैं पारणा । मंदिर देखैं जिहां सतपणा ।।
ऊभा जोग लगावैं ध्यान । देही दुर्बल कीनी जांन ।।४२०८।।

काल अनंत इन्द्रियां ने पोष । भरम्या जीव बिना संतोष ।।
तातैं देह दलौं इस भांति । सहूं परीसा अपना गात ।।४२०९।।

चउसठ सहस्र वर्ष तप किया । ब्रह्मोत्तर स्वर्ग पर बासा लिया ।।
धनदत्त सैठ काल को पाइ । लख चौरासी भरम्या जाइ ।।४२१०।।

पोदनापुर सकलार्क द्विज । महिणी नारि घर की हिज ।।
ता घरि अवतरया धनदत्त आइ । जोबन समये कर्म कमाइ ।।४२११।।

जूवा खेलैं सेवैं सात बिसन । मानैं बिष लेस्या अर किसन ।।
ब्राह्मण नैं सहू को दीये गाल । उनुं जब बेटा दियो निकाल ।।४२१२।।

मृदवत निकल्या देसांतर गया । गुरुसंगत विद्यारथी भया ॥
बसंत नगर मे विद्या पाइ । बहुर पोदनापुर में आइ ॥४२१३॥

ग्रीष्म रित तिषा अति लगी । विप्र गेह माता थी सगी ॥
तिहाँ आइके मांगै नीर । महिनी ब्राह्मणी आई तीर ॥४२१४॥

भरि झारी पाया जल ताइ । अवर चला नयनु परिवाह ॥
तब परदेसी पूछे वयन । तैं का माता भरे जल नैन ॥४२१५॥

कहै बंभणी मेरे था पूत । बाहिर नीकल्या दुःख बहुत ॥
जैं तैं देख्या ह्वैं तो कही । तो मोकु समझावो सही ॥४२१६॥

जब वह बोल्या मैं हूं तेरा पूत । अब हूं विद्या पढे बहुत ॥
सकताकं पिता महिणी माय । मिल्या पुत्र कंठ लगाय ॥४२१७॥

जिहां तिहां आदर होइ । जोतिग वैद्यक पूछैं सब कोइ ॥
बहुत दिना सुभमारग चले । अंत फेर खोटे मति गये ॥४२१८॥

सात विसन सेव्या दिन रात । धर्म छांडि कुहावैं कुजात ॥
वसंत अंगना वेस्या रित भया । वा संगति सगला गुण गया ॥४२१९॥

मात पिता का खोया दर्व । वाको बुरा कहैं हैं सर्व ॥
लज्यावंत होय देस ही तज्या । ससांक नग्र गया वह भज्या ॥४२२०॥

नंदवर्धन राजा के भंडार । चोरी निमित्त गए तिह बार ॥
भूप भता राणी सू करैं । प्रभात समय हम दिख्या धरैं ॥४२२१॥

असी चोवर सांभली बात । समझि ग्यांन कंप्या बहु गात ॥
इतनी विभव राय ने त्याग । मनस्यां धरा बहुत वैराग ॥४२२२॥

मैं जन्म्या मात पिता कै जाय । भिक्षा करि करि पोषी काय ॥
खोटे करम कमाये घणे । अब प्रायश्चित कहां लु गिणे ॥४२२३॥

मदमत्त गया ससांक मुनि पास । दिक्षा लई सुगति की आस ॥
गंग गिर पै परीसै सहै । गुण निधान मुनिवर तिहां रहै ॥४२२४॥

विद्या पढि समकित चित धरया । गुणनिधान केवल तप करया ॥
सुरपति नरपति पूजा करी । देखि विप्र जिन दिख्या धरी ॥४२२५॥

आचिरज भया सबां कै चित्त । कईसीं भयाकैं मन चिंति ॥
मास उपवासी त्यागैं ध्यान । ब्रह्मोत्तर पाया सु विमांण ॥४२२६॥

इन्द्र समां इनका प्रताप । सुख मां भूल गए संताप ।।
मदमत देव गए अग्वैल पूर । सुख में भया दुःख का मूर ।।४२२७।।

भरत के पूर्व भव

हा हा कार करैं बहु भांति । ए सुख छोडि अवै कहां जात ।।
माया मांभि भया लोक मध्य । समेद सिखर थानक है सिध्य ।।४२२८।।

हाथी उपज्या अति मयमंत । सहश्र जूथ मांहे गरजंत ।।
जइसै समुद्र गरजना करै । इह विध मंगल वन में फिरै ।।४२२९।।

जिहां सरवर देखै बहु भले । क्रीडा करै कमल तिहां खिले ।।
गंगातट पर पावै पीर । डरैं सकल देखैं इस वीर ।।४२३०।।

महा भयानक दीसै रूप । या सनमुख नहीं आवैं भूप ।।
जैसा बादल सजल बडा स्याम । ऐसा दंती मोहै उस ठाम ।।४२३१।।

पर्वत पर चूवैं भरना भरैं । भ्रमर गुंजार तिहां अति करैं ।।
तब रावण आया था जिहां । हाथी सब दल मारे तिहां ।।४२३२।।

रावण ने पकड्या उस बार । त्रिलोक मंडल सा नहीं संसार ।।
रामचन्द्र लछमण की जीत । रावण भुल्या हाथी भयभीत ।।४२३३।।

त्रिलोक कंटक त्रिलोक मंडल नाम । मइरापति सम इसका भाव ।।
भरथ तणुं मन भया वैराग । तब आए या सनमुख नाग ।।४२३४।।

जाती समरण उपज्या चित्त । गहै मौन होइ रहै अनित्त ।।
अभिराम देव स्वर्ग तैं चया । दसरथ के या सुत भया ।।४२३५।।

सोरठा

सुणि पिछला सनबंध, सकल सभा चकित भई ।।
समझे भेद अनंत, पूरब भव सब आपणे ।।४२३६।।

इति श्री पद्मपुराणे भरत त्रिलोक अलंकर भवकीर्तनं विधानकं

७६ वां विधानक

चौपई

भरत द्वारा वैराग्य लेना

भये अचंभय सगला लोग । रहे थकित जैसे साधैं जोग ।।
जाण्या सकल कर्म का बंध । बहुतैं तज्या मोह का फंद ।।४२३७।।

भरत भूपती है कर जोडि । नमस्कार कीया तबै बहोडि ।।
जीव भम्यौ चिरकाल अनंत । हींडत हींडत नहीं पायो अंत ।।४२३८।।

थके बहुत न लहै विसराम । ज्यौं पथिक भ्रमैं गामौं गाम ।।
शीतल छांह ढूंढै मन मांहीं । वाको कहीं पाइये नांहि ।।२३९।।

चहुंगति भ्रमत लह्यो नहीं पंथ । सुण्या नहीं जिणबाणी ग्रन्थ ।।
मिथ्या धर्म तैं लहीय न ठोडि । प्रभू बिन सरणा नाहीं और ।।४२४०।।

भवसागर अति अगम अथाह । सद्गुरु पकडैं बूडत बांह ।।
अजर अमर तहां पावै सौख्य । गुरु संगत तैं लहीए मोख्य ।।४२४१।।

आभूषण सब दीने डार । कुंडल सोभैं जोति अपार ।।
सहु उतारि कर लुंचे केस । मुनिवर भए दिगंबर भेस ।।४२४२।।

राजा सहस्र दीक्षा लई संग । केकई नंदन अहै जिन संग ।।

कैकयी का विलाप

हाइ पुत्र तैं कीनी बुरी । मेरी दया तूं हिय नहीं धरी ।।४२४३।।

जोबन समैं तजे भरतार । पुत्र लिया संयम का भार ।।
ए दुःख मैं कैसे करि सहूं । पुत्र बिना हूं कैसे रहूं ।।४२४४।।

मूर्च्छावंत भई केकईया । वैद्य उपाव घणा ही किया ।।
भई सचेत बहुरि बिलखाइ । रामलक्षण बोलें समझाय ।।४२४५।।

माता मति करो तुम बिलाप । हम सेवा तुम करिहैं आप ।।
भरथ जु कुल उधारण भए । सुभट बरत जिण रुषिसौं लए ।।४२४६।।

कैकयी का वैराग

पहले ही मन था वैराग । अब इन करण्या सकल ही त्याग ।।
केकईया मन आण्यां ग्यांन । धरम बिचार किया सुभ ध्यान ।।४२४७।।

पृथीमती आरजिका कैं पास । दिक्ष्या लही मुकति की आस ।।
तीन सै संग अनि असतरी । सत्य सील संयम सुं भरी ।।४२४८।।

आतम ध्यांन लगाया जोग । छंड्या सब संसारी भोग ।।
दया भाव सगलां पर नित्य । समकित सुं भया निश्चल चित्त ।।४२४९।।

दूहा

भरथो ध्यान भगवंत सुं, आतम सुं धरि प्रीत ।।
भरथ भूप ही बहुबली, करी धरम को रीत ।।४२५०।।

इति श्री पद्मपुराणे भरत केकइया निःक्रमण विधानकं
८० वां विधानक

चौपई

श्रेणिक राय करै प्रसन्न । कौण कौण संगति हुवा मौन ॥
कैसी कैसी पाई गाम । तिणका ब्यवर सुणाओ नाम ॥४२५१॥

वाणी एक तसु भेद अनेक । प्राणी करै व्याख्यान अनेक ॥
सिद्धार्थ रतनबरधन राय । अंबुवाहन जंबुनद धरि भाव ॥४२५२॥

सुसीमा नन्द आनंदकंद । सुमति महा विधि सेती चंद ॥
जनवल्लभ इंद्रध्वज सत्रवाहन । हरि सुमित्र धर्म बलवांन ॥४२५३॥

संपूरन नंद सुधन सांत । सहस्र स्वेतांबर भये इह भांत ॥
केई गये पंचमी गति । केई स्वर्ग लोक की थिति ॥४२५४॥

रामचन्द्र लक्ष्मण द्वारा दुःख प्रकट करना

रामचंद्र लखमण विललाइ । भरत बिना कछु चित्त न सुहाइ ॥
हा हा कार भए चिहुंओर । आभूषण सब डारे तोडि ॥४२५५॥

रुदन करैं फाडैं सब चीर । रुदन करैं बहु चलै जल नीर ॥
हाय भरथ हम आए क्यूं । हम भी तो संग दिख्या ल्यूं ॥४२५६॥

तुम बिन कैसे जीवैं वीर । तुम बिछुडे बहु पावैं पीर ॥
तब मंत्री समझावैं बैंन । सुणि बात चित राखो चैंन ॥४२५७॥

भरथ ने कीये उत्तम कर्म । रघुबंसी कुल उपज्या धर्म ॥
सब परिवार चढाई रती । आप करी मुकती की गती ॥४३५८॥

राम का राज्याभिषेक

करो राज अब ढालो कलस । परजा सुख पावैं ज्युं सरस ॥
राम करैं राज का काज । लक्ष्मण राज करो महाराज ॥४२५९॥

सब नरपति लक्ष्मण पै गये । नमसकार करि गढे भए ॥
प्रभुजी चलो करो तुम राज । पटाभिषेक करो तुम आजि ॥४२६०॥

लक्ष्मण चले सभा संयुक्त । बाजंतर बाजैंया बहुत ॥
आए रामचन्द्र के पास । दोऊ भ्राता मन उल्लास ॥४२६१॥

पट ऊपर बैठे दोउ वीर । रतन कनक कलस भरि नीर ॥
ढारे कलस एक सो आठ । पदम नरायण राज का पाट ॥४२६२॥

मुकुट छत्र पुहपन की माल । मोत्यं मुगताहल अनं लाल ॥
आभूषण पहेरैंण अनूप । तीन खंड का सेवैं भूप ॥४२६३॥
बँ बँ सबद करैं सब लोग । करैं कौतूहल अरि अति भोग ॥
सकल नारि सीता पैं गई । पट चौठाणि बधाई दई ॥४२६४॥
विसल्या कूं पटराणी किया । किषकपुर सुग्रीव ने लिया ॥
अनि नगर नल नील कुं दिया अवर राजा मांगी सोइ दिया ॥४२६५॥
लक्षमण विशल्या राम कैं सिवा । इनसौं बडी अवर न को तिया ॥
करैं राज इम भ्राता दोइ । नगर मे हर्ष मानैं सब कोइ ॥४२६६॥
लंका राज विभीषण दिया । कंकणपुर सुग्रीव ने लिया ॥
श्रीपुर नगर दिया हनुमान । किंनर नगर रतनजटी मान ॥४२६७॥
भामंडल रथनूपुर देस । भौमी अपनी लही नरेस ॥
जेते राजा थे उन पास । त्यां त्यां की सब पुंगी आस ॥४२६८॥

दूहा

असुभ करम को टाल करि, मिले कुटुंब नरेस ॥
मनवंछित सब सुख भए, पाया बहुला देस ॥४२६९॥

इति श्री पद्मपुराणे रामचंद्र लक्षमन पट्टाभिषेक विधानकं

८१ वां विधानक

चौपई

सत्रुघन को राज देने की इच्छा

राम शत्रुघन लिये बुलाइ । कहै वचन प्रभुजी समझाइ ॥
अरध राज प्रथवी का लेहु । देस भोग मनुष्य करेहु ॥४२७०॥
आनि देस के बंछत नरेस । तिहां तिहां थाप करूं महेस ॥
आणई मनमें करो विचार । जे मांगो ज के द्यं इणबार ॥४२७१॥

दूहा

पोदनापुर राजग्रही, पुरपट्टण बहु ठांम ॥
जो मन इच्छो सत्रुघन, कहो तिहां का नाम ॥४२७२॥

चौपई

सत्रुघन द्वारा मथुरा का राज्य चाहना

द्वै कर जोडि सत्रुघन कहै । मथुरा नगर मेरे मन रहै ॥
रामचंद्र कहते तिह बार । मथुरापति का है बल अपार ॥४२७३॥

रावण तणों जमाई बली । वापै बरछी कहिए भली ।।
एक चउदह सूं हर्णों सहंस । अनि भले हैं वापै सस्त्र ।।४२७४।।

बरछी कर की कारमें रहै । ऐसें गुण गरब तन गहै ।।
तुम तासों मति मांडो युद्ध । अवर देस मांडो तुम युद्ध ।।४२७५।।

सत्रुघन कहई सुनों रघुनाथ । कोई मति आवो मो साथ ।।
मेरी भुजा आवध समान । दशरथ पुत्र महा बलवांन ।।४२७६।।

जो तीडी दल अति संघट्ट । गरुड चलै सब जाई मट्ट ।।
ऐसा दल बल वाकैं जुड़्या । माऊं घेर वाहि ठां खरा ।।४२७७।।

रामचंद्र मनमें बहु दिया । मधुराय बिगार नहु कीया ।।
बिन अवगुन कैसे दुख देह । सबसों राखै धरम सनेह ।।४२७८।।

सत्रुघन सुन बीनती करै । आग्या प्रभु इन मन नहीं धरै ।।
ऐसा मधु है कहां बरांक । जाकी मानु इतनी धाक ।।४२७९।।

जैसे मधु सबा महेत । बार न लागै उसको गहेत ।।
घेर लेउं इस बिधि तुरंत । तो मैं सत्रुघन महंत ।।४२८०।।

राम लक्षमण दह आग्या दई । सेनां साथ घनी कर लई ।।
समुद्रावर्त्त धनुष को लिया । बाजंतर सबद बहु किया ।।४२८१।।

माता सुप्रभा पै गया । नमस्कार करि ठाढा भया ।।
आग्या द्यो माता जी मोहि । जीतुं दुरजन पाउं सोइ ।।४२८२।।

माता दीये आसिरवाद । होज्यो जीत भगवंत प्रसाद ।।

शत्रुघन द्वारा मथुरा पर चढ़ाई

चले सत्रुघन सेना जोडि । पहुंचे आय मथुरा की ठोर ।।४२८३।।

चहुंघां घेरि दमामा दिया । जईसें पंछी पिंजरा किया ।।
इह बिध घेरी च्याऊं ओर । सहु नगरी मां माची रोर ।।४२८४।।

मधुराजा सोचै मन मांहि । मो सम बली अवर कोउ नांहि ।।
घेरया मोहि सत्रुघन आइ । मंत्री मंत्र करै उन ठाय ।।४२८५।।

अचाणक घेरे मधुराई । करई विचार बईठतण ठाई ।।
जै उमडे दल मथुरा धणी । या कूं सजा लगावैं घणी ।।४२८६।।

कोई कहै रावण सा बली । रामचन्द्र सों कछु ना चली ।।
रावण मारि जीते सहु देस । इन समान कोई नहीं नरेस ।।४२८७।।

रामचन्द्र का छोटा बीर । याकों कौरण सके करि भीर ।।
जे सुख फेरि रामचन्द्र चढ़ें । एक एक का मुंह बहु रुडे ।।४२८८।।

के ते लक्कारें अपनें बार । जल भवका महा गुंण सार ।।
जीतें सत्रुघन के हार । भंसी जनूं कहीं गवार ।।४२८९।।

सत्रुघन भेजिया बसीठ । ठाम ठाम दोडिया बीठ ।।
दूत गए वे नगर मझार । जिहां सहर मथुरा का दरबार ।।४२९०।।

सत्रुघन पे आए दूत । पूछें नरपति भेद बहुत ।।
कुबेरछंद वन पूरब ओर । मधु भूपति अब है वा ठौर ।।४२९१।।

क्रीडा करत बीते दिन षष्ठ । वे सुख देखि भूले कष्ठ ।।
भंसा मैं घेरा वा ठांव । अवसर चूका बणै न दाव ।।४२९२।।

सत्रुघन धाया तोडि किवाड । वन बेहड घेरचा सब धाट ।।
तोडि अंध बेडी दई खोलि । दे असीस बोले सहु बोल ।।४२९३।।

तेरी जीत करें जगदीस । सब मिल प्राणि नमावें सीस ।।
अर्ध राज्य घेरचा सहु देस । कोटि बाहि कीया परवेस ।।४२९४।।

राजा मधु की भई संभार । बरछी रही गेहे मझार ।।
लोचै राजा मण आपनै । बीरज भी छोडचा नहीं बणै ।।४२९५।।

सेना मधु साथै जब जुरी । दोउयां मार जाण की पडी ।।
गोला गोली बरषैं ज्युं मेह । घाव लगैं सुभट की देह ।।४२९६।।

दूहा

हाथी सूं हाथी लरैं, रथ घोडे पायक्क ।।
मुंह फेरैं नहीं सूरमा, पाछां हटैं नहीं मग्ग ।।४२९७।।

पडी लोथ परबत जिसी, बाजै लाल सुरंग ।।
कायर भाजे देख रण, हींसै खडे तुरंग ।।४२९८।।

लोनांरण मधु सुत बली, धस्या मृगराज समान ।।
धनुष गह्या कर आपणां, सत्रुघन मारचा तान ।।४२९९।।

मल्लयुद्ध

गिरचा सत्रुघन रथ थकी, दूजा रथैं संभार ।।
मारी गदा कुमार कौं, रथ टूटचा तिण बार ।।४३००।।

फिर संभाल दोन्यू लडैं, जैसे लडैं जु मल्ल ।।
कोई हार न मानई, जोबन मंत अटल्ल ।।४३०१।।

लीना रण विद्या बान गहि, तोडे भुजा का दंड ।।
सत्रुघन लडण संभाल करि, लिए प्रांग जब छंड ।।४३०२।।

चौपई

झुझा कुमार मधु सुंदर तणा । पुत्र मोह तब व्याप्या घणा ।।
चढे कोप सनमुख ए आइ । सत्रुघन बोलिया रिसाइ ।।४३०३।।

मधु राजा जो तेरा नाम । करो बेग तुम सनमुख काम ।।
तो मैं बल है तो तुं आव । जममंदिर तोहि भेजों राव ।।४३०४।।

दोनों दल में माची रार । कायर सबहुं पडे पुकार ।।
विद्याबांन सुं छाया भानु । अंसे जुध महा भयवान ।।४३०५।।

महासुभट झुझे पडि ब्यार । कातर भाज गये तिणवार ।।
मधु सूदन सोचै मन मांहि । सत छंड्या पति रहनी नांहि ।।४३०६।।

एक दिन मरणा सही निदांन । काल रहै नहीं किस ही थांन ।।
तातैं सनमुख झूझां जाई । कोप्या भूप सांभटी आई ।।४३०७।।

गदा खडग करि गहे संभार । बांन छुटैं ज्यौं घनहर धार ।।

मधु राजा द्वारा युद्ध भूमि में वैराग्य

सत्रुघन मारी तरवार । मधुराजा घूमैं तिह बार ।।४३०८।।

आतमध्यान सु हिये विचार । भरमत फिरया जीव संसार ।।
समकित कबहि न आया चित्त । मिथ्या मोह भ्रम्या चहुं गति ।।४३०९।।

मनुष्य जनम धरि धर्म न किया । जनम अकारथ खोइ बार गया ।।
पुत्र कलित्र हय गय भंडार । इणमें यूं ही राच्या निरधार ।।४३१०।।

अष्ट भवों में माला फिरया । सात विसन सूं परचा करया ।।
संजम व्रत सूं करया न नेह । विष अभिलाष सुं पोषी देह ।।४३११।।

अचानक मरण भए है आज । अब कैसे होइ जीव का काज ।।
अन्न पान तजि लियो संन्यास । राज भोग की छोडी आस ।।४३१२।।

आरत रौद्र राग अरु द्वेष । धरम ध्यान मन मैं करि पेष ।।
उत्तम छिमा दसौं विध धर्म । दया भाव का जाण्यां मर्म ।।४३१३।।

कायोत्सर्ग धरयो न जोग । आभूषण अरु छोडे संजोग ।।
सत्रुघन आदि सकल भूपती । ऊभा देख्या मधुसूदन जती ।।४३१४।।

हस्ती सूं उतरा तिह घडी । नमस्कार बहु स्तुति करी ॥
जै जै सबद करैं सुर आइ । बरषै पुहप तहां मुनिराय ॥४३१५॥

देही छोडि गये सनत्कुमार । भया देव मधुवतनीधार ॥
मथुरा के पट सत्रुघन बैठि । पूजा दान जिन मंदिर पैठि ॥४३१६॥

नगर लोग भए सब सुखी । तिहां न दीसैं कोउ दुखी ॥४३१७॥

दूहा

मधुसूदन भूपति बली, धरया धरम दिढ चित्त ॥
संयम का परसाद तैं, भई स्वर्ग मां थित्त ॥४३१८॥

इति श्री पद्मपुराणे मधुसूदन विधानकं
८२ वां विधानक

चौपई

सत्रुघन राज मथुरा का करैं । सहु परिजा सुखस्यौं दिन टरैं ॥
विद्या सूल देव की संगि । उडि गई देव के आनैं भाग ॥४३१९॥

सत्रुघन राज मथुरा का करैं । सहु परिजा सुखस्यौं दिन टरैं ॥
सुर के आगैं करैं बखान । सत्रुघन हरे मधुसुदन प्राण ॥४३२०॥

राज लए मथुरा का छीन । वा आगैं मो गुन भए हीन ॥

मधु राजा के मित्रों द्वारा आक्रमण

सुण्यां देव मित्र मोहनां । वा समय मित्र कोप्या घनां ॥४३२१॥

असा कहा मानुष्य बलवंत । जिनैं मारया मेरया मित्त ॥
तब की धरती ऊपर उलट । लेस्यु बैर मित्र का पलट ॥४३२२॥

हां तैं चित गया पाताल । व्यंतर देव बुलाए तिह काल ॥
सेन्या जोडि चल्या तब देव । धरणेन्द्र नें पूछ्या तब भेव ॥४३२३॥

कहो चमर सुर अपनी बात । सेना जोडि कहां तुम जात ॥
चमर इन्द्र कहै समझाइ । मेरा मित्र मारया सत्रुघन राइ ॥
बैर लेण चाल्या इण घरी । वा निमित्त ए सेना जुडी ॥४३२४॥

धरणेन्द्र द्वारा समझाना

सुणि वचन बोल्या धरणेन्द्र । सत्रुघन लछमण रामचन्द्र ॥
तीन लोक के है जगदीस । उनसैं कुण करि सकै है रीस ॥४३२५॥

तुम रावण कुं दीये बांण । सगती उन आगे भई असगति ॥
लछमण तणी विसल्या नारि । वा आगैं सब मानैं हार ॥४३२६॥

उसका गंधउदक लागैं कोइ । सब की विद्या निर्फल होइ ॥
दोन्यू देव व्यंतरी और । ताहि देखि भाजी घर छोडि ॥४३२७॥

ताके अंग पवन लगि चलैं । सब निरोगी होइ पवन में मिलैं ॥
हमारी विद्या थासूं भई खीण । वे हैं महाबली परवीण ॥४३२८॥

जइ कलपसैं राम लछमण । तांकैं मोहि करैं बेजतन ॥
तैं मन मांहि विचारी बुरी । असी जीव में इच्छा धरी ॥४३२९॥

तब सूर बोलैं मैं हां देव । कहा मानुष जा का करैं भेव ॥
बांधु सागर अति गंभीर । सत्रुघन कहा असा बलबीर ॥४३३०॥

मध्य लोग मैं ल्याया सेन । विचारैं देव धरणेन्द्र के बैन ॥
भूमिगोचरी है बलवांन । या की परजा मानैं आंण ॥४३३१॥

परजा नैं ऊपर नहीं किया । सब ही का फूटा हिया ॥

प्रजा को दुख देना

पहली दुःख प्रजा कुं द्यूं । मधुसुदन का बैर हूं ल्यूं ॥४३३२॥

जुरि ताप पीडा फैलाइ । उछलैं कउवा जम आगैं बिललाइ ॥
मरैं लोग मिट गया भोग । व्याप्या दुणा सोग बिजोग ॥४३३३॥

सत्रुघन करैं बहुत उपाव । कछुवन चलै काल सौं दाव ॥
छोडि नगर अजोध्या गया । भाई मिले महा सुख भया ॥४३३४॥

सुप्रभा माता कै सनमुख । पुत्र बिछोहा मिल्या भूले दुख ॥
श्रीजिन भुवन इक समराइया । करी सांतक दान बहु दिया ॥४३३५॥

मनवांछित दान भला सनमांन । बजै तिहां आनंद निसांन ॥
सुणी जीत घरि घरि आनंद । सत्रुघन के मनमें दुखदुंद ॥४३३६॥

मैं मथुरा पाई थी भली । कवण करम तैं मोहि न मिली ॥
संपति मिल कर होय बिछोह । जाका दुखैं घणा अंदोह ॥४३३७॥

घर अंगणैं न सुहावैं ताहि । रात दिवस मथुरा की दाह ॥
मथुरा नगरी उत्तम खेत । इसकुं बंछैं सुर करि हेत ॥४३३८॥

इन्द्रपुरी तैं मथुरा सुभ ठौर । वा पटतर नगरी नहीं और ॥
पुंनि तैं लहीए असा थांन । मथुरा इन्द्र के लोक समांन ॥४३३९॥

दूहा

मथुरा नगर सुहावणां, असा अन्य न कोइ ।।
जिनां बहु पूरब पुंन्य कीए, ताहि परापति होइ ।।४३४०।।

इति श्री पद्मपुराणे मथुरा उपसर्ग विधानकं

८३ वां विधानक

चोपई

श्रेणिक राय करैं प्रसन । मथुरा सूं बहु लागा मन ।।
नगर अन्य बडे हैं अनेक । सत्रुघन किरिया क्यों अति टेक ।।४३४१।।

इतरा किम राखै वह सनेह । कहो प्रभु मो भाजै संदेह ।।
श्री जिनराय पिछला भव कहें । काहू मन संसा नहीं रहै ।।४३४२।।

मथुरा में जनमें देवकुमार । गदहा लादैं मांटी भार ।।
काल पाय सा छुठ करा । लागी अगनि तिहां जल मरया ।।४३४३।।

उहां तैं मरि भैंसा अवतरया । वहै बारमैं महिष पद धरया ।।
मातवें भव विप्र कै गेह । कुलधर नाम उत्तम गति देह ।।४३४४।।

अरिधा चरिधा संगत साथ । कीयर घणी सील विण बाद ।।
असकति राजा मथुरा धणी । ललिता राणी स्यौं ओडी बणी ।।४३४५।।

राजा गये साधने देस । ब्राह्मण खोलैं बंदी केम ।।
राणी देखैं झरोखा द्वार । बांभण देख्या रूप अपार ।।४३४६।।

टेर लीया ऊपरि बडि जोर । भोगे मनमांनी तिह ठोर ।।
घणां दिवस बीता इस भांति । मंदिर पैं आया नृप राति ।।४३४७।।

राणी प्रछन राख्यो द्विज । राय लख्यो मनमें अचिरज ।।
कहो राणी इह नर है कौण । किस विध आया मेरे भौन ।।४३४८।।

राणी त्रिया चरित्र विचार । राजा सौं कहै तिण बार ।।
इह भाज्या था बंदीखान । आइ घुस्या मंदिर कै थांन ।।४३४९।।

याके पीछै दौडे सुभट । इतनी कांण मुं रहे अटूट ।।
इह बोल्या जे छूटूं आजि । तो दीक्षित होउं मुनिराज ।।४३५०।।

मैं या प्रति छिपाया राज । छोडो याहि दिख्या ले जाय ।।
भूपति सुणि कीयो नमस्कार । छोडे विप्र उसही बार ।।४३५१।।

वैराग्य भावना

विप्र के मनमें आयो सांच । अब हूं जीतूं इन्द्री पांच ।।
इन्द्रिय विषय किये बहु स्वाद । संयम बिना जनम गयो बाद ।।४३५२।।

तृष्णा लोभ कदे घाटै नांहि । भरमत फिरथा चिहुं गति मांहि ।।
साध नाम सु ं उबरे प्रांन । करू ं तपस्या आतम ध्यांन ।।४३५३।।

कल्यांण मुनीसुर के ढिग गया । केस उतारि मुनीश्वर भया ।।
सहै परीसा बीस अनै दोइ । तप प्रसाद ऊंची गति होइ ।।४३५४।।

स्वर्ग तीसरे रतन विमान । करै भोग तिहां सुख निधान ।।
मथुरा पति तिहां चन्द्राभद्र । सुधा राणी महा विचित्र ।।४३५५।।

सूरज अमद राणी का भ्रात । मडलांत पुत्र भए आठ ।।
कनक प्रभा रांणी दूसरी । रूप लछन गुण लावन्य भरी ।।४३५६।।

कुलधर का जीव आए ता कु ंख । जनम्या पुत्र भए धन सुख ।।
रूपवंत रवि जेम प्रताप । रहसे दोनू ं माय अनै बाप ।।४३५७।

जनम समै दीया बहु दांन । सब ही का राख्या सनमान ।।
दिन दिन कुंवर बढै पल घडी । देखत नयन रली अति खरी ।।४३५८।।

सावथी नगरी का नाव । कल्पद्विज बसै तिह ठाव ।।
अंगक त्रिया विप्र कै गेह । दंपति करै सदा सुख सनेह ।।४३५९।।

अचल पुत्र ताकै गरभ भया । जोबनवंत सोभै बहु कया ।।
भूख मांहि सुत दीना काढि । तिलक वन मांहि विप्रसुत ताढि ।।४३६०।।

अचलकुंवर के आठों वीर । तीनू ं मामा के मन पीर ।।
इह तो एक ही दीसै बलवंत । निसचै राज लहैगा अंत ।।४३६१।।

इसके चाहै हण्यां परांन । कनक प्रभा सुणी इह कांन ।।
अचल पुत्र नहरी के साथ । मारथा चाहै पुत्र अनाथ ।।४३६२।।

जाहि पुत्र देसांतिर लेह । करो जाइ काहू की सेव ।।
दुरजन के संग फिरणां बुरा । तोहि उपदेस दिया मैं खरा ।।४३६३।।

इतनी सुणत भाजिया कुमार । वन में रुदन करै हा हा कार ।।
माप सोच करै द्विज तिहां घणी । कै कोई देव कै पंडित गुणी ।।४३६४।।

कै नृपति कै खगपति राय । पूछै कुमर विप्र जु आय ।।
कहो कुमर तू ं अपणा नाम । किह कारण आए इस ठाम ।।४३६५।।

सोनै बचन तब अचलकुमार । मोकू ं वन में दिया निकाल ।।
ता कारण रुदन करू ं वन मांझ । कैसी बितई इण ठां सांझ ।।४३६६।।

करै विप्र बात इह भाई । कोसंबी नगरी इंद्रदत्त राई ॥
मनोग कला वाके पटराणी । इन्द्रदत्ता पुत्री बहु गुणी ॥४३६७॥

विद्या गुंण अति ही प्रवीण । और सकल जाइणां नहीं हीण ॥
जो वाहि जीतैं ताहि वा वरै । नमंती कहा अचल बसि करै ॥४३६८॥

विसाख पंडित राजा कै द्वार । विद्या सीखैं राजकुमार ॥
अचल है रात पंडित बसक । राजकुमारी जीती अधिक ॥४३६९॥

सुख मैं दिन कछु बीते ताहि । अचल हुवा तिहां नर नांह ॥
आस पास जीते सब देस । मथुरा आइ कियो परवेस ॥४३७०॥

वाजंतर चंद्रभद्र ने सुणे । सब सामंत अगाऊ बणे ॥
राजा सुणी पुत्र की सुध । भए आनंद बिचारी बुध ॥४३७१॥

चंद्रभद्र दिगम्बर भया । मथुरा राज अचल कूं दिया ॥
आठौं भाई मामा तीन । ए सब जाइ भये आधीन ॥४३७२॥

आप बांभण आवी तब द्वार । पोल्या अटक करैं तिह बार ॥
राज सभा में नाचैं नट । विप्र सौं करैं पौजियां हठ ॥४३७३॥

राजा दृष्टि बांभण पर पडी । आयो बुलावो वाही घडी ॥
आभूषण नींका पहराइ । आप बराबरि राखै राय ॥४३७४॥

हय गय विभव दीनें बहुदेस । बहुतमया नित करैं नरेस ॥
सुखसौं राज बहु अनें किया । सावथी नगर विप्रकूं दिया ॥४३७५॥

जय समुद्र मुनिवर पैं गये । सांभलि धरम दिगंबर भये ॥
तेरह विध सौं चारित धरया । दया अंग दस विध तप करया ॥४३७६॥

आतम चित्त लगाया ध्यान । महेन्द्र स्वर्ग पाइया विमान ॥
चउथे स्वर्ग देवता भए । पूरण आव तिहां तैं चए ॥४३७७॥

अचल जीव सत्रुघन जान । आप कृतांत वक्र भया आन ॥
सेनापति सत्रुघन बली । जामैं धरम करम की गली ॥४३७८॥

कई जनम मथुरा में पाइ । मथुरा कूं चाहैं इह भाइ ॥
पुण्यवंत पूरव तप किया । ऊंची गति बहुतैं भव लिया ॥४३७९॥

सोरठा

पूरब भव का नेह, तातैं मोह किया घणां ॥
रूपवंत बल देह, फेर राज मथुरा लण्यां ॥४३८०॥

इति श्री पद्मपुराणे सत्रुघन पूर्व भव विधानकं
८४ वां विधानक

चौपई

मथुरा में सात मुनियों का आगमन

मथुरा आए मुनिवर सात । चारण मुनि ग्यानी विख्यात ।।
सुरमन श्रीमन श्रीनव जांणि । सरव सुंदर जीवानन्द वखांणि ।।४३८१।।

विनयलाल अवर जयमित्र । अष्ट करम जीते उन सत्रु ।।
श्रीनंदा राणी सुंदरी । जाकै पुत्र भए शुभ घडी ।।४३८२।।

प्रीतंकर मुनि केवलज्ञान । जै जै करैं देवता आन ।।
श्रीनंदराज धरम कुं सुण्या । पुत्र सहित दिगम्बर बन्या ।।४३८३।।

रथ देइ पुत्र बालक मास एक । थापे राज काज की टेक ।।
श्री नंदमुनि केवली भया । धरम प्रकास मुकति कौं गया ।।४३८४।।

ऐसा तुं तप करैंइ बहुत । सहै परिस्या बहु रुत ।।
इनकौं उपजी चारण रिध । पोदनापुर गये वे सातुं सिध ४३८५।।

ह्वां तै आये अजोध्या देस । अरहदत्त देखे मुनि भेस ।।
देखै सेठ मन करै विचार । रति चउमासै किया विहार ।।४३८६।।

ए काहे का है ए मुनी । चउमासा माडै रहैं दुनी ।।
वे मुनिश्रीजत जिन भौन । दरसन हेत किये थे गौन ।।४३८७।।

पंडित नई देखै चारण जती । आदर भाव किये बहु भंती ।।
अष्टांग मना सेठ अरहदत्त । सुंपो मुंनीसर चकत ।।४३८८।।

ऐसे साध आए मो गेह । मैं उनसौं कीया न सनेह ।।
अपणी निंदा बहुतैं करी । मेरे मनकुं आई बुरी ।।४३८९।।

कठिन पाप आपकौं किया । गदगद बोलैं उमडै हिया ।।
वे मुनिवर थे चारण जती । हिंसा करम न लागै रती ।।४३९०।।

धरती तैं अधर रहैं चरण । दरसन कीया ह्वं दुख हरण ।।
मैं साधां की निंदा करी । मोहि कुछ न भई सुध तिह घडी ।।४३९१।।

पर निंदा है पाप का मूल । उपजी कुमति भई सुध भूल ।।
अण जाण्यां नर करैं जे पाप । मनकुं रामकि करैं पश्चाताप ।।४३९२।।

पाप छोड करैं उपवास । तुटै पाप पुन्य की आस ।।
जहां साध सोइ उत्तम ठाम । उनकुं देख धरैं मन भाम ।।४३९३।।

मेरे घर तई मुनिवर फिरै । आदर भाव सभी वीसरै ।।
दानांतराय भई कुबुधि । तत्व रूप की करी न सुध ।।४३९४।।

दूहा

कोटि मिथ्याती दान दे, एक संजमी न समान ।।
अणुव्रती तासें बडा, महाव्रती परमांन ।।४३९५।।

तीर्थंकर सम को नहीं, जा घर लेइं आहार ।।
धन्य भाग उस जीव का, सब ही करैं मनुहार ।।४३९६।।

चौपई

इस विध च्यार मास पिछताई । करै पाप खयऊ समझाई ।।
दान देण की इच्छा नित्त । धरमध्यान सौं एकैं चित्त ।।४३९७।।

कातिग सुदि सातैं सुभवार । मुनिवर आये वनह मझार ।।
छह रुति के फल फूले घणे । भरे सरोवर निर्मल भरे ।।४३९८।।

अरहदत्त सुणि आया जिहां । बहुत लोग संग पहूंचे तिहां ।।
पंचवगयंद का नांही ओर । करैं महोछव जं जं सोर ।।४३९९।।

रामचंद्र लक्षमण सत्रुघन । भये आनंद सबन कै मन ।।
दरसन कूं आए तिण बार । नमस्कार करैं बारंबार ।।४४००।।

स्वामी हम परि क्रीपा करो । भोजन लेइ पुंन्य विस्तरो ।।

आहार विधि

मुनिवर बोले सुनो नरेस । जती न कहै भोजन उपदेस ।।४४०१।।

जे मुनि अपनी भोजन कहैं । पाप खोट अपने सिर गहैं ।।
मुनिवर उठैं आहार निमित्त । फासु भोजन लेय तुरंत ।।४४०२।।

छह रस का समझैं नहीं स्वाद । ऊंच नीच देखैं रह प्रसाद ।।
कर पात्र करि भोजन लेह । फिरि जोग वन ही मैं धरेह ।।४४०३।।

घरि घरि लोग नित करैं रसोइ । हारापेषण दाता होइ ।।
सत्रुघन पूछै जोडि हाथ । कहो धर्म मोसुं मुनिनाथ ।।४४०४।।

धरम जिनेस्वर कब लौं चलै । आगम कही सुणौ हम भले ।।

पंचम काल का प्रभाव

कहै मुणीस्वर सुणो नरींद । पंचम काल उपजैं न जिणंद ।।४४०५।।

अतिसय की होवैगी हांण । देव सहाइ होसी नहीं आंण ।।
उत्तम जन सेवई मिथ्यात । कुगुरु कुदेव की मानैं जात ।।४४०६।।

उत्तम कुल न करैंगा राज । नीच लोग भुगतैंगे राज ।।
जैंन धर्म की होवैगी हांण । मन वच काय मुनैं न बखांण ।।४४०७।।

माया धारी ह्वैगा जती । ते पावैंगा खोटी मती ।।
श्रावक होइगे निंदक धर्म । देव सास्त्र गुरु लहै न मर्म ।।४४०८।।

खोटा मत पोखैंगे घणां । मिथ्यावेद निसर्वं सौं सुणैं ।।
पुत्र पिता में होइ विरोध । भाई भाई करि करैंगे क्रोध ।।४४०९।।

एक भूखा एक भुगतैं सुख । कोई न पूछे दुखिया दुःख ।।
जई भाई कूं देइ उधार । दुरजन होइ लहै तिन बार ।।४४१०।।

क्रोध कषायी होइ हैं मुनी । श्रावग सेवा न करि हैं घनी ।।
जैन धर्म की होवै निन्दा । मिथ्यादृष्टी श्रावक चिन्त ।।४४११।।

कुगुरु कुदेव की महिमा होइ । खोटा वेद सुणैं सब कोइ ।।
बहोत लोग होइंगा दुखी । को को होइ है सुखी ।।४४१२।।

सत्रुघन बोलैं सुणों मुनीन्द्र । तुम कृपा तैं होई आनन्द ।।
तुम से साधक आवैं मो गेह । करचा क्रितारथ मिटै संदेह ।।४४१३।।

आशीर्वाद

सप्त मुनिस्वर बोलैं बैन । मथुरा राज करौ सुख चैंन ।।
घर घर पूजो प्रतिमा भगवंत । चैत्यालय कीज्यो बहुमंत ।।४४१४।।

पूजा अरिचा सूं मन ल्याइ । दुख संताप सब जाइ विलाय ।।
मुनिवर गए अवर ही थांन । नरपति आए अपणैं जांन ।।४४१५।।

रामचन्द्र की आगन्या पाइ । मथुरा चले सत्रुघन राइ ।।
मुनि थानक वंदे मुनिराइ । रामचन्द्र कैं पहुंचे आंन ।।४४१६।।

द्वारा पेषण कीए नरेस । चरणोदक लाए सुभ पेय ।।
विनयवंत होइ दीए दांन । उत्तम भोजन करि सनमांन ।।४४१७।।

अक्षय दान मुनि बोले बोल । घरि घरि चरचे रतन अमोल ।।
सत्रुघन मथुरा पहुंच्या वली । सकल प्रजा मति मांनी रली ।।४४१८।।

जिनवर भुवन किया उच्चंत । पंडित सेव करैं बहुमंत ।।
वेद सास्त्र होवै दिन राति । सुणैं लोग सुख मानैं गात ।।४४१९।।

घरि घरि पूजैं प्रतिमा लोग । रोग कष्ट भागियो वियोग ॥
सप्त रिष प्रतिमा चिहुं ओर । काहू कौं नहीं लागै खोडि ॥४४२०॥

नव जोजन मथुरा लंबाइ । जोजन तीन बसैं चौडाइ ॥
सर्व सुखि कोई नहीं हीण । पंडित सुघड बसैं परवीण ॥४४२१॥

स्वर्गपुरी तैं मथुरा भली । महा सुगंध विराजै गली ॥
राजा राज विचारैं नीत । सर्व सुं राखैं उत्तम प्रीत ॥४४२२॥

इन्द्र समान सत्रुघन राइ । बहुले भूपति सेवैं पाइ ॥
जिसका है रबि जेम प्रताप । भाजि गए सब दुख संताप ॥४४२३॥

दोहा

मथुरा नगर सुहावना, देवलोक समवास ॥
सर्व सुखी निवसैं तिहां, मानैं भोग विलास ॥४४२४॥

इति श्री पद्मपुराणे मथुरा उपसर्ग निवारण विधानकं
८५ वां विधानक

चौपई

दक्षिण श्रोड विजयारध मेर । रत्नपुर नगर बसै बहु फेर ॥
रतन असफंदन खेचर भूप । पूरणांतन राणी सु सुरूप ॥४४२५॥

मनोरमा पुत्री ता गेह । रूपवंत कंचन सी देह ॥
हरिमन पुत्र भये बलवंत । सेवा करैं बहुत सावंत ॥४४२६॥

कन्या जोबनवंती भई । नरपति सोच विचारैं मही ॥
मंत्रीयां सेती बोलैं बयन । ढूंढो नरपति देखो नयन ॥४४२७॥

उत्तम कुल लक्षण संजुक्त । कन्या तैं होइ गुण बहुत ॥
मूरिख पंडित देखि विचार । उत्तम कुल जो होइ कुमार ॥४४२८॥

अति पंडित बैरागी होइ । दिख्या लेई वहै देगी सोय ॥
महामूरिख होइ दुःख की खांन । कारज करै जाण पिछांण ॥४४२९॥

देस देस कूं भेजा दूत । नारिद रिष तिहां आइ पहूंत ॥
सब मिल उठि चरणां कूं नए । दरसण कीया कृतारथ भए ॥४४३०॥

कपड नग्र किया था गौंन । भाखो बात तजो मुख मौन ॥
बोलैं नारद सुणों नरेस । देखे पुर पट्टण बहु देस ॥४४३१॥

साधां का दरसन निमित्त । दीप अढाई मांहि भ्रमंत ॥
नृप पूछै नारद सूं बात । तुम देस देखे भली भांति ॥४४३२॥

राजकुमार कोई देख्यो आप । तास कन्या देहुं मिटै संताप ॥
नारद रिष बोले तिह बार । नगर अजोध्या स्वर्ग उनहार ॥४४३३॥

रामचंद्र का लक्षमण वीर । [illegible] कंचन शुभ शरीर ॥
बल पौरिष अकल उन पास । तिहुं खंड का भोग विलास ॥४४३४॥

भू खेचर सहु सेवैं ताहि । उन सम बली अवर कोई नांहि ॥
सगाई करो लक्षमण सुं राइ । उत्तम कुल रघुपति के भाई ॥४४३५॥

इतनी सुणि कोपिया नरेन्द्र । हमारा मारया है मन भाई बंध ॥
रावण उन मारया है ठौर । लंकागढ ढाह्या है तोडि ॥४४३६॥

उन कुं मारां तबैं हम जाई । अपणां जनम तब जाणां भाई ॥
बैरी सुं कैसा सनबंध । क्रोध चढे राजा मनि अंध ॥४४३७॥

धक्का दे नारद नैं दिया काढि । मान भंग रिष चिंता बाढि ॥
लिखाया लेख पट मनोरमा पेखि । दीये हाथ लक्षमण कुं देखि ॥४४३८॥

देव रूप नारायण कहै । इहैं पट रूप सरूप कहां है ॥
कैं किंनर कैं खेचर सुता । देखत उपजैं काम की लता ॥४४३९॥

इंद्राणी कैं पद्मावती । भोमि गउचरी नही इस भती ॥
बोलै नारिद गिर बैताढि । रत्नपुर नगर सबही तैं बाढि ॥४४४०॥

रतन असफंदन खेचर राय । हरिमन पुत्र क्रोध कै भाय ॥
मनोरमा पुत्री है गुणवंत । वे नरेस चित्त बैर भरत ॥४४४१॥

लीजे जुध करण का साज । मारो दुर्जन ज्यौं सीझै काज ॥
त्रिराषित कहैं प्रभु सुम सुणौ । सेना जोडि दोऊ को हणौं ॥४४४२॥

वे विद्याधर हैंगे घणें । उंनु सैं जुध अकेले न बणें ॥
देश देश का तेडो नरेस । राम लछमन चले रत्नपुर देस ॥४४४३॥

घेरया नग्र सुण्या रत्नरथ । हरिमन पुत्र बली समरत्थ ॥
जिहां लौं थे विद्याधर राव । एकठे भए महा क्रोध के भाव ॥४४४४॥

हम घाया चाहै थे सही । भूमिगोचरी आए आप ही ॥
अब हम रांखैं अपनी टेक । करो जुध सेना होइ एक ॥४४४५॥

राखैं पति पर्वत की आज । उन जीतैं लागैं कुल लाज ।।
दोउ धां सेना भई संग्राम । सर बरसैं ज्यु बरसइ घन ।।४४४६।।

गोली गोला मनैं हथनाल । सिला पड़ैं ज्यु परलै काल ।।
मारि मारि दोउंधा होइ । किन्नर देव देखइ सब कोइ ।।४४४७।।

हाथी घोड़ा पैदल लड़ैं । बहुत लोग दोउंघा भिडैं ।।
मारैं गदा बज्र की घात । बरछी खड़ग प्राण ले जात ।।४४४८।।

पड़ी लोथ परवत सी जान । सोनत बहै नदी तिहां असमान ।।
पड़ै लोथ गिरध उनहिं खाइ । ऊपर चणी चील मंडलाइ ।।४४४९।।

दूहा

भई जीत लक्ष्मण तणी, हारे विद्याधर भूप ।।
नारद रहैस्या वा समैं, देख जुध का रूप ।।४४५०।।

चौपई

विद्याधर भागे रण छोडि । वे भागैं ए मारैं दोडि ।।
नारद हंसि हंसि ताली देहि । सब मिल नीची मूंड करेय ।।४४५१।।

भागण कूं रही नही ठोडि । फेर संभाल करैं वे कोडि ।।
ज्यों केहरि तैं सारंग डरैं । इम लक्ष्मण तैं डर करि मरैं ।।४४५२।।

मनोरमां तिहां जुध कों देख । मनमैं धारयो ग्यान विसेष ।।
मेरे कारण इतने मुए । पसचात्ताप मन मांही किये ।।४४५३।।

बैठि बिमाण लखमण ढिग आय । फूलमाल घाली गल जाइ ।।
लखमण कूं हुआ संतोष । मिटया जुध भया मन पोष ।।४४५४।।

दंपति आई बनकी ठोर । सुणियो राय सुता का सोर ।।
मनोरमा लखमण सुं मिली । सब मिल कहि यह हूइ भली ।।४४५५।।

हम ढंढोला बहुला देस । लखमण महाबली भुवनेस ।।
मन की इच्छा पूरण भई । सबही की चिंता बुझ गई ।।४४५६।।

रत्नरथ नृप सहो परिवार । लखमण पास आए तिह बार ।।
सबही मिले भया सनबंध । छूटा असुभ करम का बंध ।।४४५७।।

रत्नरथ सेती नारद कहै । तो मैं गुण पराक्रम ना रहै ।।
तूं कहै था बचन असार । अब काहे तैं मानी हार ।।४४५८।।

रतन असफंद न बडले राई । तुम तो कोप्या रिष खाई ।।
मान भंग साध का किया । तो इह दुःख हमैं पाइया ।।४४५९।।

तुम कलपैं हम भया दुख । अब तुम कीया दोउं दला सुख ।।
करैं महोछब पुर में गए । मनोरमा वीवाही सुख भए ।।४४६०।।

भोग मगन में करैं उछाह । मनोरमा लछमन सा नाह ।।
पुन्य प्रसाद नैं जीडी भई । ते सुख सोभा जाई न गिणी ।।४४६१।।

बहो पकवान भोजन करे । कंचन थाल भरि अग्रे धरे ।।
षट्रस व्यंजन और बहु [illegible] नृपति मिलि जीमे भणे ।।४४६२।।

बीडा दिया हाथ ही हाथ । जितने लोग राम के साथ ।।
रहैसे सकल किया आनंद । बाजंतर बाजे सुख कंद ।।४४६३।।

अडिल्ल

पुण्य तणैं परसाद जीत सब ठां हुई ।।
साध्या सगला देस सबद जै जै हुई ।।
मानैं भूपति आंणि सुजस प्रगटया घण्यां ।।
रामचंद्र गुण अगम अपार जांइ किस पै गणा ।।४४६४।।

इति श्री पद्मपुराणे मनोरमा विवाह लाभ विधानकं

८६ वां विधानक

चौपई

रतनपुर सुख भुगत्या सब साथ । बहुत देस जीत्या रघुनाथ ।।
रवि नभ दीप्ति सोभित पुरी । मेघ स्वाम सिव मध नगरी ।।४४६५।।

गंधर्ववति अमरपुर दैस । लिषमीधर तसु नगर नरेस ।।
किनर गीत अमरपुर देस । लक्षमीधर तसु नगर नरेस ।।४४६६।।

श्रीगहभा सकत अरंजय जोतपुर । अवरघणां तिहां साध्या नगर ।।
ससिधा गंधारमल वेश । धनसिध सुथांन मनोभद्र नरेस ।।४४६७।।

श्री विजैकांतिपुर तिलक सथांन । बहुत भूप साधे बलवान ।।
विजयार्ध साध मनाई आंण । राम लखमण मनि राजान ।।४४६८।।

इहां श्रेणिक पूछै परसन्न । लवनांकुस की कहो उतपन्न ।।
राम लक्षमण कै केती अमतरी । केता पुत्र कुल वृद्धत करी ।।४४६९।।

राम लक्ष्मण का परिवार

जिनवाणी सुं संयम जाय। कहै भेद गोतम मुनि राइ ।।
सत्र सहैश्र लक्ष्मण कै नारि। रूपवंत ससि की उणिहार ।।४४७०।।

तामें आठ पाठ की धणी। गुण लछ्यण अति सोभा बणी ।।
विसल्या मेघद्रवण की सुता। प्रथम पटराणी सुख की लता ।।४४७१।।

रूपवंत अवर बनमाल। कल्यांण माला अरु रतनमाल ।।
जितपदमा सुखश्री मनोरमा। गुणलछ्यण सब ही सौ क्षमां ।।४४७२।।

अष्ट सहस्र राम के भोग। सोभै च्यारि पट्ट की थाम ।।
प्रथम सीता अरु पदमावती। रतिप्रभा श्रीदामा सोभावती ।।४४७३।।

लक्ष्मण कै पुत्र दोइ सै पचास। सात रतन की पूंगी आस ।।
चक्र सुदर्शन छत्र अरु गदा। धनुष खडग अर बरछीक धुजा ।।४४७४।।

श्रीधर विसल्या कै गर्भ लह्या। प्रथ्वी तिलक रूपवंत जनमिया ।।
मंगल कल्याण माला का पूत। विमलप्रभू पदमावती संयुक्त ।।४४७५।।

बनमाला का अरजन कुंव्य। जयवंती कै सुत कीर्त रंव्य ।।
मनोरमा संपूरण कीर्त्त। रतिमाला कै श्रीकेस उतपत्ति ।।४४७६।।

अन्य कुमार कहां लगि गिणों। नामावली कहां लौं भणों ।।
डयोढ कोडि उत्तम कुमार। च्यार वीर का वध्या परिवार ।।४४७७।।

पुन्य उदै ते वार्ध कुंव्य। करैं राज निकंटक रिध्य ।।
आन दिवस सुख में विहाइ। भोग भुगति मानैं तिहां राइ ।।४४७८।।

सोरठा

उदय भए जब पुंन्य, सुख संपति बाधी घनी ।।
अधिक प्रतापी भवन, जीत्या सब दुरजन अनी ।।४४७९।।

इति श्री पद्मपुराणे राम लक्ष्मण विभव विधानकं

८७ वां विधानक

चौपई

राजमहल

अति ऊंचे मंदिर रमणीक। कंचन रतन सहित रमणीक ।।
भले भले समराये चित्त। सौव्या लिए ठां बणी पवित्र ।।४४८०।।

सीता द्वारा स्वप्न दर्शन

कंचन पलंग पाट सुं बण्यां । रतन जोति सूं सोभै घणां ।।
पुहुप बिछाया पटंबर तलं । केसर भरया गींदवा भलं ।।४४८१।।

स्वेत बिसन तिस परै बिछाइ । महा सुगंध भ्रमर लोभाइ ।।
छिडके कुंमकुम मा संमारी ठोर । चंदन किवाड लग्या ता पोल ।।४४८२।।

तणे चंद्रवा मोती झालरी । अनेक प्रकार तिहां सोभै खरी ।।
तिण बस्त्रां की जोति अपार । सीता करै सोलह सिंगार ४४८३।।

आभरण चीर मोती का हार । संग सहेली रुण झणकार ।
पान फूल का डबा भरि धरैं । सीता सुपनां देखै खरे ।।४४८४।

रात पाछली घटिका च्यार । सुपिनां निध पाई तिह बार ।।
दोई केहरि गर्जंत देखे । सायर निर्मल प्रेषे ।।४४८५।।

देव विमांण आवता जाणि । जाणुं सुख मैं धसैं आण ।।
भए प्रात जागण की बेर । गावैं गुणीजन मधुरी टेर ।।४४८६।।

पंच सबद बाजैं तिह घडी । सीता जागी करै मनरली ।।
करि सनान सुमिरे जिननाथ । बहुत सखी उन लीनी साथ ।।४४८७।।

पति सौं जाइ बीनती करी । सुपनां फल भाखो मन धरी ।।
सुणि रघुपति समझावै बात । पुत्र दोइ होसी ससिजोत ।।४४८८।।

देव दोई तेरे गर्भ चए । निसचै समझि आपणैं हिये ।।
सीता कैं मन भए आनंद । पंचनाम सुमरया जिणंद ।।४४८९।।

रित बसंत दंपति सो प्रीत । घर घर गुणीयण गावैं गीत ।।
मंजरि अंब सकल बनराइ । कोकिल बचन अति चित्त सुहाइ ।।४४९०।।

पंछी सबद सुहावन बोलैं । कामी तिहां अति करैं किलोल ।।
दिन दिन बाधैं धरम पुनीत । उत्तम बसन धरि डालैं चित्त ।।४४९१।।

पुंन्य पाप का इनै विचार । पापी दलिद्री का इह बिकार ।।
गर्भ विषै लष्यण को चिह्न । जाणौं ते पंडित परवीन ।।४४९२।।

पापी जीव गर्भ में पडै । क्रोध प्रमाद देह दुख भरै ।।
खावै ठीकरी माटी मांस । पुण्य हीण का इह प्रकास ।।४४९३।।

सीता का दोहिला

पुन्यवंत के लष्यण जांण । उत्तम वस्त खावै नित पाण ।।
सब सौं राखै अधिक सनेह । दिन दिन जोति दिपै अति देह ।।४४९४।।

धरमध्यान सुं सुणै पुराण । नित उठि देई सुपात्रां दान ।।
सीता दुर्बल देखी राम । पूछी कहो चित्त का नाम ।।४४६५।।

सीता कहै मेरे मन दही । पूजा रचना करउ सब मही ।।
जिहां लग तीर्थ भने केवली । जिन मंदिर पूजा विध भली ।।४४६६।।

रामचन्द्र इम लक्षमण सुणी । देस देस कूं चिठी बणी ।।
जिहां लौं जिणथानक किवलास । संमेद सिखर चंपापुर वास ।।४४६७।।

कंपिला अवर वाणारसी नगर । जिनमंदिर समराउं सगर ।।
महेन्द्र बन नंदन बन साथ । मुनिसुव्रत मंदिर जिन नाथ ।।४४६८।।

सहसकूट चैत्यालय तिहां । और [illegible] जिहां ।।
इक इक सहंस खंभ चिहुं फेर । वेदी मांफ बणी बहु घेर ।।४४६६।।

राम लखमण कुटुंब समेत । गए महेन्द्रपुर पूजा हेत ।।
तिहां सरोवर निरमल नीर । छाया सीतल विहंगम तीर ।।४५००।।

हंस चकोर सारस बहु जीव । सबद पपीहा बोलै पीव ।।
बसतर उतारि करई सनान । अष्ट दरब सुं पूज्या भगवान ।।४५०१।।

दूध दही रस घृत की धार । श्री जिन कै गल घाले हार ।।
करी आरती ह्वण कराइ । बाजा बाजै गुणि गण गाइ ।।४५०२।।

दूहा

पूजा करि भगवंत की, देय सुपात्रां दान ।।
निसचै पावै परमपद, पहुंचै मोक्ष सुथान ।।४५०३।।

इति श्री पद्मपुराणे सीता दोहिला विधानकं

८८ वां विधानक

चौपई

पूजा करि फिर आये गेह । बहुत दान सनमान्या देह ।।
सुख में बीत गये दिन घणें । इंह जायगा कारण इक बणे ।।४५०४।।

सीता का नेत्र फड़कना

दष्यण आंखि फड़के सिया । पश्चाताप मनमें करै सिया ।।
करम उदै बन वेहड फिरी । बन माहैं तै रावण अपहरी ।।४५०५।।

सोग समुद्र में तब बहु पड़ी । बरस बरस सम बीती घडी ।।
वे दुख भुगत अब भया था चैन । क्यों फरकैं अब दष्यन नैन ।।४५०६।।

मनमन देखी कहै बीचार । असुभ करम को सकै न टार ।।
सुभ असुभ संगि लागा कर्म । आदि अनादि जीव कै भर्म ।।४५०७।।

जइसैं ससी का बधै प्रताप । पूनम ताईं पूरण आप ।।
अइसैं करमन का उदै हुवै । जैसैं ग्रहनैं ग्रहै फुवै ।।४५०८।।

पडिवा सेती कला हुवै हीण । असुभ कर्म करै आधीन ।।
दुख सुख लग्या जीव कै संग । तुम मनि करो अपना मन भंग ।।४५०९।।

गुणमाला बोली गुणवंत । वेद पुराण सुणो मन संत ।।
सीता मन चिंता मत करो । एता सोच कहा चित धरो ।।४५१०।।

तुम सबतैं पटराणी बडी । राम तुमनैं छांडि नहीं घडी ।।
रामचन्द्र जीवो चिरकाल । तुमकौं भय है किसका हाल ।।४५११।।

करो पूजा पुंनि सांतिक । पाप करम की मेटो लीक ।।
पुंनि दान तप काटैं व्याध । वैयावृत्त कीजिये साध ।।४५१२।।

दुख कलेस सब जाइ बिलाइ । ढील न कीजे देहु मंगाइ ।।
भद्रकलस सीता प्रधान । सब बिध जाणैं पूजा दान ।।४५१३।।

तहि बुलाइ आग्या इह दई । उत्तम वसत मंगाओ पई ।।
जो मन इच्छै ताकूं देइ । पूजा प्रतिष्ठा बहुत करेइ ।।४५१४।।

रोग कल्पना हो गई दूर । बढै पुंनि रिध भरि पुर ।।
सुणी बात मन हुवा हुलास । आनि सोज राखी उन पास ।।४५१५।।

जैसा कोई चाहै त्याग । तइसा दे जइसा को मांग ।।
सांतिक प्रतिष्ठा होइ दिन रयण । पंडित पढैं सुहावने बैन ।।४५१६।।

वेद पुराण सब ही ठां होइ । बहोत पुंनि खाटैं सब कोइ ।।
राम लछमण बैठा पट आइ । बहोत लोग मिले तहं ठाइ ।।४५१७।।

सोलह सहस मुकट बंध राइ । नमस्कार करि लाग्या पाइ ।।
पौंण छत्तीस ठाढी भई । ते सब नृप द्वार आगैं खडी ।।४५१८।।

रघुपति चितवैं प्रजा दसी । नीच लोग मिल मिल करि हंसी ।।
रामचन्द्र ने लिया बुलाइ । अपने अपने दुख कहो समझाइ ।।४५१९।।

विजय सूरज मध्य परवीन । वसकासव पींगल तीन ।।
राज सभा में ठाढे आइ । करि डंडोत नवण करि भाइ ।।४५२०।।

राम द्वारा प्रश्न पूछना

पूछैं राम कहो तुम सांच । किह कारण आये सब पंच ।।
सब मिल थकित रहे तिहां लोग । जिन पाषाण ध्यान धरि जोग ।।४५२१।।

निष्ट वयण कैसे करि कहैं । भय चित धरणां मूक होय रहैं ॥
राम कहैं चिंता मति करौ । कहो निसंक सब भय परिहरो ॥४५२१॥

प्रतिनिधियों का उत्तर

विजय सूरज बोलैं कर जोडि । प्रभा भणी लागी इह खोडि ॥
रूपवंत जोवन भरी नारि । निकसैं आग्या बिन भरतारि ॥४५२३॥

जिहां मन होवैं तिहां वह जाइ । वे कछु कंत कहैं तो रिसाइ ॥
तब उत्तर बोलैं असतरी । सीता रावण की हरी ॥४५२४॥

ते सीता रामचंद्र ने आणि । ता का सब विध राखै मान ॥
ऐसे हैं वे त्रिभुवन पती । तिणी मन में न आणी रती ॥४५२५॥

सीता को वे बोडा कहैं । जे मुख निकसैं सो ही कहैं ॥
सीता सती पतिव्रता असतरी । सील संयम सों सब विध खरी ॥४५२६॥

रावण सीलव्रत लीया । उनका सत सब विध राखीया ॥
सत्त सील इह विध रह्या सबै । उनकी रीत करैं ए सबै ॥४५२७॥

ऐसा हमें बताओ ग्यांन । तासों रहै सवां की बांन ॥
देस देस में हूवा इह सूल । परजा भई सर्व सुख मूल ॥४५२८॥

जिह विध बसैं होइ सुख चैन । तैसे समझावो प्रभु बैन ॥
रामचन्द्र सोचैं मन माहि । मेरे साथि देखैं दुख याहि ॥४५२६॥

राम की व्यथा

रावण दंडक बन में आइ । सीता कुं ले गया चुराइ ॥
वांनर बंसी भए सहाइ । उनकी संगति पहूंचे तिन ठांइ ॥४५३०॥

मारचा रावण सेनां घणी । सीता ले आए आपणी ॥
अब तो भई सुख की बार । कैसे घरि तैं देहुं निकार ॥४५३१॥

तजूं राज बन में करूं बास । तो भी होइ महा उपहास ॥
उत्तम कुल को चढै कलंक । किस विध तजैं मन की संक ॥४५३२॥

पराया मन की जाणैं कौन । बुरा कहै छत्तीसों पौण ॥
नारी महा दुःख की खानि । अपकीरत हो उनकै जांनि ॥४५३३॥

प्रतक्ष जानों कुगति कामनी । ऐसे चित्त विचारो घनी ॥
मोही चित्त चुरा ले जाहि । लख चौरासी जौनि भरमाइ ॥४५३४॥

सर पड्या मरै एक बार । नारी बिस मरै बारंबार ।।
जै ले नीकलिया त्रिय संग । तो अब भया मान का भंग ।।४५३५।।

बिभचारिणी करै कुकर्म । कुल की लाजइण कु ण धर्म ।।
सीता कू ले आया अहे । निर्भ का कीना सु कहै ।।४५३६।।

किस किस के मै मूंदू मुख । मोकू आइ बण्या है दुःख ।।
मेरे राज प्रजा सुख भरी । सीता राख्या अपजस धरी ।।४५३७।।

मैं जाणूं हूं सीता सती । इसकूं दोष न लागै रती ।।
राख्या चाहै लोकाचार । दोई बिध है निश्चै व्योहार ।।४५३८।।

राजा छोडै धरम की रीत । घटै मरजाद बधै बिपरीत ।।
राजा मुंह देखी प्रजा करै । सब का पाप अपने सिर धरै ।।४५३९।।

धरम बिचार कीजिये न्याव । अपणां पराया जाणैं समभाव ।।
बहु बिध सोच करैं रामचंद्र । कहा बिचार कीजिये दुंद ।।४५४०।।

दूहा

राजनीति रघुपति करी, कंछुधन आण्या मोह ।।
प्रजानै उन कारणई, सियास्यु किया बिछोह ।।४५४१।।

इति श्री पद्मपुराणे रामचन्द्र प्रजारिष्या बिधानकं

८९ वां बिधानक

चौपई

राम का कथन

रामचन्द्र बैठा पट आइ । निसंकत सौं कह्या बुलाइ ।।
बेग जाइ लखमण कु लाव । गया दूत नारायण ठांव ।।४५४२।।
नमस्कार करि ठाढा भया । राम वचन हरि सौं भाषिया ।।
लखमण उठि आया तिण साथ । बैठा निकट तिहां रघुनाथ ।।४५४३।।

रामचन्द्र भाष्यो बिरतांत । प्रजानें सकल भाष्यो बिरतांत ।।
घरि घरि नारि कुमारग गह्या । मनमें कुछ संका नवि रह्या ।।४५४४।।

सासु सुसरा कंत की जांण । कबहू न मानें उनूं की आंण ।।
मे पोख्या सीता का नेह । बिन सवारथ कलंक में देह ।।४५४५।।

जिसमें कुल को लागै लाज । तिसकूं राख्या बणै न काज ।।
अब लौं कुल को लग्या न दोष । पुरुषारथ करि पहुंचे मोक्ष ।।४५४६।।

कोई न हमारैं पापी हुआ । ए दूषण अब लाग्या नवा ।।
जे रावण ने सीता कूं हरी । तो इह विपत्ति हमको पड़ी ।।४५४७।।
सीता मत राख्या आपणां । परजा दोष लगावैं घणां ।।

लक्ष्मण का क्रोध

इतना लखमण सुणिया बैंन । चढ्या क्रोध राते करि नयन ।।४५४८।।
कैसी परजा कहा बरांक । वे तुमसे बोलैं इह वाक ।।
सब कु मारि मैं परलय करूं । जीभ काढि खाल भुस भरू ।।४५४९।।
सीता सती कूं इस विध कहैं । उनके मन संका नहीं रहै ।।
नृप की चरचा परजा करैं । ताकूं हाथ लगाउं खरैं ।।४५५०।।
अपना चित्त समझै नहीं आप । राज कथा को बोलें पाप ।।
सबकूं घेरि निकटैं दहै । फेर न असी मुख तैं कहै ।।४५५१।।
रामचन्द्र तब कहैं समझाइ । परजा सुख छांडिए राइ ।।
परजा तैं राजा सोभंत । बिण परजा कुण राय कहंत ।।४५५२।।
जिह विध दुख परजा का जाय । तैसा करिए भरत उपाइ ।।
बोले लखमण सुंण हो भ्रात । महासती है सीता मात ।।४५५३।।
वे हैं दुःख देख्या हम संग । सुख की बेर करो यह भंग ।।
परिजा है कुरडी समांन । हस्ती नैं जूं भोंकै स्वान ।।४५५४।।
हस्ती मन न आणैं ताहि । उनका कह्या असा नर नाह ।।
जे कोइ शशि पर नाखै धूल । वाही के सिर पडै अमूल ।।४५५५।।
अग्यांनी बोलैं अग्यांन । उनका वचन कहा परमांन ।।
सीता दयावंत बहुत । कोमल देह रूप संजुत्त ।।४५५६।।
गर्भवती किम दीजे काढि । दोई जीव सौं पावैं दुख बाढि ।।
रामचन्द्र बोलैं जगदीस । या कौं ले गया था दस सीस ।।४५५७।।

राम का निर्णय

ता कारन असी कहै न लोग । थिर नहीं इह संसारी भोग ।।
अपणी कीर्त्त को उह संसार । जे अपकीर्त्ति हुवै अपार ।।४५५८।।
हम सुम सा अपकीरत करैं । प्रथ्वी पर जस को फिर धरैं ।।
जैसी परजा तैसा राजा जिसी । जुग जुग चलै हमारी हंसी ।।४५५९।।
धरमनीत करूं हूं सही । मेरे बात मुंह देखी नहीं ।।
कृतांतवक्र तब लिये हंकार । रथि परि चढि दौडे असवार ।।४५६०।।

ऐसा घणी तास के साथ । देखैं लोग घुणें सब माथ ।।
किस पर कोप्या रघुपति आज । कृतांतवक्र आया दल साज ।।४५६१।।

नमस्कार करि ठाढा भया । रघुपति बचन मानि कर लिया ।।
सिंघनाद बन भयानक घणां । तिहां मानुष्य न कोई जणां ।।४५६२।।

सीता को करि आत्रा भाव । तिहां छोडि फिर ल्यावो भति ना ।।
कृतांतवक्र तब गया सीता द्वार । माता तीर्थ चलो मोहि लार ।।४५६३।।

सीता को यात्रा के बहाने से ले जाना

समेदशिखर तीरथ निर्वाण । पूजा करो जिनेस्वर थांन ।।
जैसा कर्म उदै होवै आय । तैसी तैसी देखै ठाइ ।।४५६४।।

रहस रली सूं सीता चली । सब कुटंब सूं तब ही मिली ।।
रथ परि चढि चली समेद । देखैं सकुन बिचारैं भेद ।।४५६५।।

सूका वृक्ष परि बैठे काग । चूंच मूंडपरि पटकण लाग ।।
देखे बुढिया मारग माहि । बाल ससोटैं बैसे छांह ।।४५६६।।

सकुंन बिचारई सीता तबै । हम तीरथ कारण कौ चलैं ।।
कहा सकुन करैगा मोहि । कछुवन मन धरया न रंच ।।४५६७।।

अग्रे देखैं पर्वत झरई । मानूं रुदन सब कोइ करई ।।
कहि खलखलाट जल बहै । देखि कंख तिहां आश्रम गहै ।।४५६८।।

महा गंग तिहां अगम अथाह । जलचर जीव सुखी बन मांहि ।।
तटपरि ऊंचे सोभैं रूख । सीतल पवन तैं भाजैं दुःख ।।४५६९।।

वनफल उत्तम लागैं घणे । निरमल नीर सोभा अति बणे ।।
गडगडाट सूं उछलैं नीर । देखत ताहि रहै नहीं धीर ।।४५७०।।

स्यंघ नाद गंगा पार अर्णां । तिहां नांहि काहू की सर्णां ।।
एक नाम भगवंत सहाइ । और न कोई है इस ठांइ ।।४५७१।।

कृतांत वक्र तिहां रोवैं आन । हाथ मुंड धरि सोचैं ग्यान ।।
सीता माता अति धर्मिष्ट । इनकौं फिरैं उदै हुवा कष्ट ।।४५७२।।

ऐसी महा भयानक ठौर । बन का जीव करैं तिहां सोर ।।
मैंने आग्या प्रभुजी की पाइ । सीता कुं ल्याया इस ठांइ ।।४५७३।।

कृतांतवक्र सौं सीता कहै । सूर वीर धीरज कौं धरैं ।।
जई तुं ढाडस डारै तोडि । तो हम मन दिढता रहै कोडि ।।४५७४।।

कृतांतवक्र का रहस्य खोलना

कृतांतवक्र तब विनती करै । सत्य वचन मुख तैं उच्चरैं ।।
प्रजा पुकारी रघुपति पास । हमारा नहीं नगर में वास ।।४५७५।।

घरि घरि नारि करैं विभचार । छोड्या सब लज्जा का भार ।।
जब बरजैं घर का भरतार । उत्तर देहैं सकल वे नार ।।४५७६।।

सीता रावण कैं घर रही । रामचन्द्र कुछ बात न कही ।।
फेरि आरिग पटराणी करी । तुम काय हमनें भाखो बुरी ।।४५७७।।

ऐसे पुरुष जे अंगीकरै । तुम तौ हूं हो हमारा चरित्र ।।
रामचन्द्र सुंणि प्रजा वईन । मन में सोच भया दुर्बल ।।४५७८।।

लखमण रह्या बहुत समझाय । इसका कह्या न मान्यां राइ ।।
मोहि बुलाइ आग्या इह दई । तब मोकूं चिंता इह भई ।।४५७९।।

कैसें छोडूं वन में सिया । कहैत सुणंता फाटै हिया ।।
वनसूं उत्तर कह्या न जाइ । तातैं तुमनें आणी इस ठांइ ।।४५८०।।

सीता का सन्देशा

बोलै सीता गदगद बोल । प्रजा रघुपति करो किलोल ।।
हमा इनूं की इहां लागि प्रीति । धन्य जीव जे होइ अभीत ।।४५८१।।

बहु सुख भुगते राज प्रसाद । यूंही जनम गमायो सब वाद ।।
धरम न चेत्या सुख की बेर । मानुष जनम कहा लहीए फेर ।।४५८२।।

जैसे कोई रतन को पाइ । फेरि समुद्र में दिया बहाइ ।।
बेर बेर कहां पावै रतन । जे कोई करै कोटि जतन ।।४५८३।।

असा रतन मानुष्य अवतार । तामें भले मूढ गमार ।।
करो धरम भवसागर तिरो । बहुरि न मोह फंद में पडो ।।४५८४।।

आई मूर्छा खाई पछाड । बडी बार में भई संभार ।।
फिर बोली सीता महासती । रामचन्द्र सूं कहज्यो बीनती ।।४५८५।।

परिजा नैं थे दुखि मत करो । दया समकित चित्त में धरो ।।
पूजा दान करो दिन रात । तुमारे समरण में इह भांति ।।४५८६।।

कृतांतवक्र तब रोवैं पुकार । अपने सिर लिया मैं भार ।।
सेवक का है जनम अकयथ । अपने बल होवै समरथ ।।४५८७।।

तो अपणौं मन मानी करैं । पाप अने पुंनि समझि चित धरैं ।।
पराधीन कछु बोल न सकैं । जिहां भेजै तिहां पल नहि टिकैं ।।४५८८।।

जैसी आग्या सोई होय । ताको वरज सकै नहीं कोइ ।।
जे मैं पराया भया आधीन । तो मैं करम कमाया आधीन ।।४५८९।।

सीता का वन में अकेलोपना

अपणी निंदा कीनी घणी । सकल बात सीता नैं सुणी ।।
सीता कहै सुन तू लोंहि । तेरा दोस हमनें कछु नांहि ।।४५९०।।

रथ तै पांव सीता तिहां धरया । कृतांत वक्र अयोध्या कुं फिरया ।।
बहुत सोच सीता मन करैं । धीरज मनमें कैसे धरैं ।।४५९१।।

महा भयानक वन की ठांव । तिहां नहीं माणस का नांव ।।
सिंघ गयंद तिहां अजगर घणे पसुं पंछी बोलत जब सुणे ।।४५९२।।

पग धरणें कुं नांही ठौर । भाखिण सूल कंटक और ।।
वे मंदिर पाटंबर सोज । रतनजोति सुख देखे चोज ।।४५९३।।

पान फूल सुगंध फुलेल । चोवा चंदन सौं करता खेल ।।
आठ सहस मेरे थी साथ । पटराणी थापी थी रघुनाथ ।।४५९४।।

हमारी आग्या मानैं थी सर्व । तीन खंड की लक्षमी दर्व ।।
असा कर्म उदय हुआ आय । ते सुख खोंसि भेजी इस ठाय ।।४५९५।।

कै मैं वच्छ विछोही गाय । कै मैं बाल विछोही माइ ।।
कै सरवर नैं विछोहा हंस । कै पर थो नीका राख्या अंस ।।४५९६।।

कै जिन भक्ति करी न मन ल्याय । कै जिनवांनी चित्त न सुहाइ ।।
मुनीस्वर सेवा कहीं नइ खरी । साधां की निंदा चित्त धरी ।।४५९७।।

अणछाण्यां जल पीया जाइ । कंद मूल भषे अथाह ।।
ओछा तप कर लिया अवतार । मोहि विछोह भया भरतार ।।४५९८।।

कुगुरु कुदेव कुसास्त्र पर चित्त । तायैं आइ भई इह विपत्त ।।
पंछी दिया पिंजरा मांहि । तायैं हुवा इह दुःख दाहि ।।४५९९।।

हाइ राम लक्षमण कहा किया । मोकूं देस निकाला दिया ।।
हाइ जनक भावमंडल वीर । या समैं कोई ना राखैं धीर ।।४६००।।

वज्रजंघ द्वारा सीता का विलाप सुनना

वज्रजंघ पुंडरीक का धणी । वाकै संग सेन्या है घणी ।।
हस्ती कारण बन में आइ । पकड्या गज बाजंत्र बजाइ ।।४६०१।।

सुण्या सबद सीता का रोज । भया अचंभैं देखैं खोज ।।
इह वन इसा भयानक रूप । देखैं सबद सुणैं बहु भूप ।।४६०२।।

कं इंद्राणी कं पदमावती । कं किनर कं विद्यावतती ।।
सब सेन्या कर गहै हथियार । तिहां नांगी चिमकै तरवार ।।४६०३।।

हय गय रथ किंकर ता संग । महाबली राजा वज्रजंघ ।।
असा वन भयानक अति घोर । मानुष्य न भाइ सकै कोई भौर ।।४६०४।।

दूहा

सुभ असुभ दोऊ करम, भपणी चली तिहां चाल ।।
भूपति नैं भिक्षु करैं, रंक नैं करैं निहाल ।।४६०५।।

इति श्री पद्मपुराणे सीता वनवास विलाप वज्रजंघ समागम विधानकं

६० वां विधानक

चौपई

सेना थकित रही वा ठांव । आगैं कोई धरैं न पांव ।।
सूर सुभट अग्रे होइ चले । धर्म कर्म समकिती भले ।।४६०६।।

उतरे भूमि सीता कू देख । माता कहौ तुम अपना भेष ।।
तुम हो कवरण कैसे वनमांहि । ऐसा दुख करो तुम कांहि ।।४६०७।।

सस्त्र देखि सीता भय करैं । भीड देखि मन में अति डरैं ।।
अरे वीर सब देहु डारि । आभूषण एही तू उतारी ।४६०८।।

मेरे नाम राम की आस । लेहु सकल छोडो मो पास ।।
बोलैं सुभट तुम भति करी । वज्रजंघ इहां नरपति खरो ।।४६०९।।

हाथी पकडन आया भूप । सम्यक्दृष्टी दया स्वरूप ।।
तीन रतन हैं वाके चित्त । जली भाव राखैं है नित्त ।।४६१०।।

यु ही आया वज्रजंघ भूपती । बहुत लोग राजा के संगती ।।
सीता नैं पूछियो नरेस । माता कहो आपना भेस ।।४६११।।

महागंगा तिहां बहै अपार । ताहि उतर कैसे भए पार ।।
ए वन महा भयानक बुरा । कारज कवरण पयाणा करा ।।४६१२।।

अपणा कहो सकल विरतांत । सांची बात सुणाबो मात ।।
पिछली बात कहो समझाइ । जनक सुता हूं मैं इस ठांय ।।४६१३।।

सीता द्वारा अपना परिचय देना

भावमंडल है मेरा भ्रात । विदेहा राणी है मुझ मात ।।
दसरथ है अजोध्या का राइ । च्यार पुत्र ताके अधिकार ।।४६१४।।

रामचन्द्र की मैं पटधनी । सुखपाई ऐसी गति बणी ।।
केइकेइ कुंवर दशरथ दिया । राम लखन आसा लिया ।।४६१५।।

भरथ सत्रुघन पाया राज । बहु विध प्रजा का सारैं काज ।।
हूं भी फिरी राम के साथ । दंडक वन में श्री रघुनाथ ।।४६१६।।

तिहां मारया संबूक कुमार । खरदूषण लडिया तिण बार ।।
रावण नें तिहां मोकूं हरी । वाकै सील की थी आंखडी ।।४६१७।।

अनंतवीरज पासैं लिया सील । गया लंक लागी नहीं ढील ।।
बिराधित सुग्रीव हनूमान । वानर बंसी अति बलवान ।।४६१८।।

राम लक्षमण है बिमान बैठाइ । लंका में पहुचे सब आइ ।।
रावण मारे लंका तोडि । तब मिलीया रघुनाथ बहोडि ।।४६१९।।

उहां ते आया अयोध्यापुरी । परजा ने चरचा इह करी ।।
रामचन्द्र ने इह चतुराई करी । फेरपट दिया सीता असतरी ४६२०।।

सीता कुं रावण ले गया । ईनां फेर घर वासा कीया ।।
उहां ऐसी चरचा मांहि । भरथ बैराग भयो मनमांहि ।।४६२१।।

दिख्या ले पाया निरवाण । बीते मोह दिन गर्भ का जान ।।
भए दोहला इछा यही । तीर्थ पंचकल्याणक सही ।।४६२२।।

करूं जात्रा पूजा घणी । सब सामग्री उत्तम बणी ।।
महेन्द्रवन पूज्या भगवंत । मुनिसोव्रत स्वामी अरिहन्त ।।४६२३।।

कैलास जात्रा पूजण जोग । पंचमेरु बंदना नियोग ।।
पुहपक बिमाण कीया संजुत । परजा निगर वा आय पहूंत ।।४६२४।।

करी पुकार राम पैं जाय । नारद बिगडै हैं सब ठांइ ।।
सब प्रताप सीता का कहै । कैसे हम नगरी में रहैं ।।४६२५।।

वज्रजंघ समझावै ग्यांन । तुम समझो हो वेद पुराण ।।
आरत ध्यांन तुम करो दूर । बारह अनुप्रेक्षा समझो मूर ।।४६२६।।

च्यार्यूं गति मांहि डोल्या हंस । कहीं नीच कहीं उत्तम बंस ।।
रोग सोग आरत में रह्या । भ्रमत भ्रमत विसराम न गह्या ।।४६२७।।

चारों गतियों के दुःख

सुभ नैं असुभ कर्म देव साथ । सुख दुख देखे नाना भांति ।।
देव हुआ सुख त्रिपता नहीं । छह महिना आव जब रही ।।४६२८।।

सब सुख भूल्या चिंता बीच । बहुत भ्रम्यां गति उत्तम नीच ।।
मानुष्य जनम भुगते बहु भोग । तिहां भया कुटंब का सोग ।।४६२९।।

रोगी रहै कहै नहीं सुख । पीडा चिंता व्यापैं दुःख ।
पाई गति पसु तिरजंच । तामें सुख पाया नहीं रंच ।।४६३०।।

खूंटै बांध्या हैं संताप । मरैं भूख तिस करैं संताप ।।
माछर डंस देह कूं लगैं । लज्या फिरैं निस बासर जगैं ।।४६३१।।

नरक गति दुख की तिहां खांनि ।छेदन भेदन सहै परांन ।।
सहै दुख यह बारंबार । भवसागर तैं तिरया न पार ।।४६३२।।

जनम जरामृत आसा डोरि । इनसौं कदे न भया विछोर ।।

बज्रजंघ का परिचय

इंद्रवंसी दुरि नवाह नरेस । भुगतै पुंडरीक का देस ।।४६३३।।

संबोधमती ताकैं पटनारि । तासु गर्भ लीया अवतार ।।
बज्रजंघ है मेरा नांव । धरम बहन का राखो भाव ।।४६३४।।

महा पुंनि पूरब भव किये । रामचंद्र से प्रभु तुम हिए ।।
असुभ कर्म तैं छोडे घने । ते सहु बाकि भोनु सुने ।।४६३५।।

अब रघुपति आवैंगे आप । तुमारा भेटैगा संताप ।।
तेरा गर्भ में जीव सुपुनीत । धरम उदै जाणी इह रीत ।।४६३६।।

तीरथ नाम करि तुम कूं काढि । रामचन्द्र मन चिंता बाढि ।।
तुम कूं हुवा धरम सहाइ । गज निमित्त मैं पहुंच्या आइ ।।४६३७।।

चलो बहन तुम मेरे गेह । दूरि करो मन का संदेह ।।
भावमंडल सम मोकूं जानि । सीता बैठाइ लई सु बिमान ।।४६३८।।

दूहा

बज्रजंघ भूपति बल धरया, धरम का बहो भाव ।।
सीता कूं बन माहि तैं, बहिन कहि ले आव ।।४६३९।।

इति श्री पद्मपुराणे सीता समास्वासन विधानकं

९१ वां विधानक

चौपई

सीता के साथ वज्रजंघ का आगमन

रतनजड़ित सोहे सुखपाल । मणि माणिक लागे बहु लाल ।।
पाटवर्ण पाटंबर बिछे । छत्री कलस मोती के गुथे ।।४६४०।।

सोहद मुखमल तणे गलेस । जणे पंचरंग के भेस ।।
तामें बैठ सी सीतां चली । डोला डोला ता संग मिली ।।४६४१।।

बहुत सखी था पाछैं हुई । ढिग ढिग गांव सब हरियल मही ।।
देस देस के नृपति आइ । नमस्कार करि ठाढे राइ ।।४६४२।।

पुंडरीक सुराष्ट देस तिहां । सहु कोई सुखिया जिहां ।।
धर्मष्ट सर्व बसैं तिहां लोग । पांनफूल सौं थाके भोग ।।४६४३।।

नगर बसै स्वर्ग अनुहार । जिसका बहुत बडा बिसतार ।।
बन उपवन बापिका कूप । सोभा कमलां तणी अनूंप ।।४६४४।।

हाट बाजार छाए सब ठौर । कंचन कलस धरे सिर पौर ।।
छांटी गलियों नीर सुबास । बेखैं नारि चढी आवास ।।४६४५।।

सीता आई नगर मझार । मंदिर में पहुंचे तिस बार ।।
बज्रजंघ की राणी आइ । लागी सहु सीता के पाय ।।४६४६।।

बज्रजंघ बहु स्तुति करै । आजि भाग धनि म्हारा करै ।।
सीता बहन आई हम द्वारि । सब मिल करो नणद की सार ।।४६४७।।

ज्यौं पीहर मैं रहै पूतरी । असे रहे सीता तिह पुरी ।।
सुख सौं बीतैं बासर रैन । पूजा दान करैं मन चैन ।।४६४८।।

कृतांतवक्र की व्यथा

कृतांतवक्र मारग के मांझ । रोवत ताहि पड़ गई सांझ ।।
हाइ हाइ करि रोवै रोज । सीता का पाऊं कित खोज ।।४६४९।।

महा भयानक बन भयभीत । छोडी तिहां महा विपरीत ।।
किण पसुव सीता कूं भख्या । वा बन में को करि है रिख्या ।।४६५०।।

आया रामचन्द्र कैं पास । नीचो मुंडी खडा उदास ।।
नैनां नीर बहै असराल । मानूं धुर्व मेघ की धार ।।४६५१।।

कठिन कठिन करि निकसै बात । बन में छोडी सीता मात ।।
महासती दई तुम निकारि । राजनीति करी नहीं विचार ।।४६५२।।

बन है भयानक गंगा पार । अजगर तिहा बडा बिसतार ।।
रहै स्यंघ तिहां खोह मझार । अरनां भैंसा सांड सीयार ।।४६५३।।

हसती भवं रीछ माराह । पड़ै धूप पावै नही छांह ॥
बे दुख कैसे सीता सहै । बहै तुमारे सरणं मैं रहै ॥४६५४॥

राम लक्ष्मण का रुदन

रामचन्द्र लखमण सुणि बैन । मूर्छा खाई पडे कुचैन ॥
हाइ हाय करि धरणी पडे । भोई बैदि जतन बहु करै ॥४६५५॥
तुम देख्यां बिन कैसी जीवों । बिन अपराध दुःख दिया नवां ॥
अब तोकूं कहां पाऊं सिया । महासती जनक की धिया ॥४६५६॥
वे सुख देखि लहे थे सुख । अब फिर पाए ऐसा दुःख ॥
कोमल वर्णन कोमल देह । दुख पशु का है तिहां गेह ॥४६५७॥
कटक घणा मारग नहीं चलै । तिहा सीता जीवत क्यों मिलै ॥
बन में दौ लगी है धरणि । असी कठिन तिहां उनकी बणी ॥४६५८॥
कै कोई पसु के डसै बीयाल । कै कोई भील ले गये बीयाल ॥
असा दुख सौं प्राणी सिया । अब मैं देस नीकाला दिया ॥४६५९॥
कहां पाऊं मैं सीता सती । मैं तो बुधि करी दुरमती ॥
रतनजटी जब सो सुध दई । हनूमांन तैं चिंता गई ॥४६६०॥
अब किसकों भेजों बन मांहि । ल्यावै खबर मिटै दुखदाह ॥
कृतांतवक्र तुम बोलो सांच । किण विध सहै दुःख की आंच ॥४६६१॥
सीता छोडी है कि नहीं । सत्य वचन भाखो तुम सही ॥
जैसैं कह्या कोष कै भाइ । तैं ले छोडी बन मे जाइ ॥४६६२॥
सीता बिन हूं तजूं परान । बेग मिलावो मोकूं आंन ॥
ज्यों ज्यों लहर हिया मैं उठाइ । त्यों त्यों रघुपति दुख अधिकाइ ॥४६६३॥
वस्त्र फाडि पघडी मुंड डारि । महीपति खाई तबं पछाडि ॥
लखमण खागया मूरछावंत । मानुं भए प्रान का अंत ॥४३६४॥
करैं बैद सीतल उपचार । तबै उनुहं कुं भई संभारि ॥
हा हा कर नित करत बिहाइ । परजा सकल दुःख कै भाइ ॥४६६५॥
घरि घरि रोवइ पीटइ लोग । घरि घरि करइ सीता का सोग ॥
नौ महीना सोग में गये । लखमण समझावै बिनती किए ॥४६६६॥
सीता सीलवंत सु पुनीत । तो थे राखै मननैं चित ॥
सील सहाई होय सब ठौर । पुन्य बराबर समा नहीं और ॥४६३७॥
जल थल महियल सील सहाइ । बन बेहड जिहां लागै लाइ ॥
परबल समुद्र विषम जो होइ । धरम सहाई कहैं सब कोइ ॥४६६८॥

मैं जाणु सीता मैं मुई। करो पुनि चिंता कछु नहीं ॥
भद्रकलस तब लिया बुलाइ। देहु दान सब को मन भाइ ॥४६६९॥
रामचंद्र राजसभा संभालि। मन तैं टरै न सीता सालि ॥
बहुत दिवस में भूले दुःख। राज भोग में मानैं सुख ॥४६७०॥

दूहा

प्रीतम बिछुडै दुख घणां, भूलैं नहीं दिन रयन ॥
सीता नैं वनवास दे, कैसे मानैं चैन ॥४६७१॥

इति श्री पद्मपुराणे राम विलाप विधानकं
९२ वां विधानक

सीता के पुत्र जन्म

चौपई

पूरण गर्भ भया नव मास। श्रावण सुदि पून्यु परगास ॥
श्रवण नक्षत्र उत्तम शुभवार। जुगल पुत्र जन्म्या तिह बार ॥४६७२॥
लवनांकुस मदनांकुस और। तातैं अधिक विराजैं ठौर ॥
जोतिगी पंडित जोतिग साध। भले मुहूर्त गुनां अगाध ॥४६७३॥
इन सम बली न होइ है आन। महापुनीत धरम की खांन ॥
वज्रजंघ अरु सब रणवास। सकल लोक अति करैं हुलास ॥४६७४॥
दांन मांन सब ही कूं दिया। घर घर रली बधावा किया ॥
परियण की आई सब नारि। सब मिल गावैं मंगलाचार ॥४६७५॥
करैं नृत्य गुनीजन सब आइ। गावैं ताल मृदंग बजाइ ॥
ढोल दमामा करनाद। बीण बांसुरी अनैं सहनाइ ॥४६७६॥
भांति भांति के बाजा बजैं। सुनत सबद मन सुख ऊपजैं ॥
बहुत नारि सीता कैं संगि। करैं सेव सुख पावैं अंग ॥४६७७॥

बालक्रीडा

निस बासर आग्या में चलैं। दोनुं बालक ससी में पलैं ॥
तेल उबटनों अरु असनांन। सोभैं दोन्यू चंद्र अरु भान ॥४६७८॥
पल पल घटिया बधैं कुमार। बदन जोति शशि की उणहार ॥
निकस्या दंत तारां की ज्योति। नख करांत की सोभा होत ॥४६७९॥
बालक लीला सीता देखि। भूल्यौ सोग इनांनैं पेखि ॥
कबहुं हंसै कबहुं करैं रोज। चलैं गुडलियां उपजै चोज ॥४६८०॥
उठैं लागि अंगुली गहि चलैं। गिरैं भूमि तैं सोभैं भलैं ॥
कबहूं जननी गोदी लिये। लपटैं कंठ महा सुख दिये ॥४६८१॥

पाले पोसे हुए सचेत । सब मिलि करैं उनौं सों हेत ॥
सिद्धारथ मुनि आगम हुआ । राजद्वार प्रवेस जदि हुवा ॥४६८२॥
सीता आइ पेखरण करया । नमस्कार करके तिहां खड़ा ॥
धरम वृद्धि मुनि बोले बोल । पट बैठा तिहां रत्न अमोल ॥४६८३॥
लेई अहार उठ्या मुनि ईस । अखैदान बोलै आसीस ॥
सीता सुं पुछ्या विरतांत । सुण्या भेद कांपे सब गात ॥४६८४॥
वे दुख सुणि उपजी मन दया । धरम उपदेस सीता कूं दिया ॥
दोउ पुत्र आये तिह बार । दरसन पाय कियो नमस्कार ॥४६८५॥
दोउं रूपवंत गुणवंत । सुंदर देह महा बलवंत ॥
कोमल चरण नख जोति अपार । खंड पयोधर सीलैं इकसार ॥४६८६॥
कटि केहरि हिरदा विसतार । भुजा अनोपम जोति अपार ॥
कर कोमल नख असेत । कंब ग्रीवा बज्र सहेत ॥४६८७॥
उष्ट कपोलों हीरा से दंत । मुंह कवांगा दे सोभावंत ॥
बदन जोति सोमै सिर केस । स्याम बरण सु विराजै भेस ॥४६८८॥
महा अटल सुदर्शन मेर । गुणगंभीर सागर कै फेर ॥
इनके गुण इनही ते थणे । तो मुख गोचर जाहि न गिणे ॥४६८९॥
जई सरस्वती आपण मुख कहै । सीता सुत गुण पार न लहै ॥
ऐसे बालक देखे उन मुनी । विद्या पढाइ किये बहु गुणी ॥४६९०॥

अध्ययन

एक बार गुरु देहि बताइ । वे फिरि पढि गुणावैं समझाइ ॥
विद्या पढि पारंगति भए । रवि सा तेज ससी किरण सम थए ॥४६९१॥
जिहां लौं थे राजा अरु रंक । इनछं सुणि मानैं सब संक ॥
बज्रजंघ कुं मिले सब आइ । करैं सेव सब मस्तक नाइ ॥४६९२॥
जिहां निकलै दोऊ कुमार । देख रूप मोहैं सब नारि ॥
इनकै चित्त धर्म का ध्यान । पाप न गहै मन अपनैं जान ॥४६९३॥
बेद पुराण सुनइ मन लाइ । मिथ्या मारग चित्त न सुहाइ ॥
सम्यक दर्शन सम्यक ग्यांन । चारित्र भेद के करैं बखान ॥४६९४॥
सब पर छांह धरम की करैं । राजनीति विध समझैं खरैं ॥
सस्त्र विद्या धनुष टंकार । बांण विद्या सीखे बहु सार ॥४६९५॥
दोउ वीर सब गुण संयुक्त । महासती सीता के पुत्र ॥
सोहई मुकट वस्त्र बरण अंग । बहुत कुमर करैं सेवा संग ॥४६९६॥

सीता देखि करै मन आणंद । जाणै दोऊ सूरज चंद ।।
पुण्यवंत ए दोऊ वीर । कंचन वरण सब वर्णो सरीर ।।४६९७।।
वज्रजंघ मन भया हुलास । मनोवांछित मन पुंगी आस ।।
सब भूपति में कीरति बढी । दिन दिन कला अति ही चढी ।।४६९८।।
निरभय राज करैं आपणा । पूजा दान मन लाया घणां ।।
दया अंग विधि पालैं भली । करैं राज मन मैं अति रली ।।४६९९

अडिल्ल

पुण्यवंत जित जाइ तिहां रिध हूं घणीं
सुख संपति अधिकार जीत पावैं अणी ।।
रहै धरम सु प्रीत कला दिन दिन बधे ।
लवनांकुश सुपुनीत क्रांति पल पल चढै ।।४७००।।

इति श्री पद्मपुराणे लवनांकुस उत्पत्ति भव विधानकं ९३ वां विधानकं

चौपई

लवनांकुश भए जोवन भेस । वज्रजंघ चितवै नरेस ।।
लक्ष्मीदेइ राणी सुर थांन । ससी चूला पुत्री गुणखान ।।४७०१।।
कन्या बत्तीस उनूं की साथ । लव कूं विवाह दई नरनाथ ।।
रहस रली सूं बीतैं द्योस । कुस कारण विचारैं अब होंस ।।४७०२।।
किस राजा पैं भेजा दूत । ताकैं पुत्री रूप संजूक्त ।।
मानै वचन ढील न करई । मेरा कह्या वेग सिर धरई ।।४७०३।।

कुस के लिये पृथ्वीधर के पास दूत भेजना

पृथ्वीवती नगरी का नाम । पृथ्वीधर है जिण ठां राव ।।
अमृतवती राणी सुन्दरी । कनकमाला वाकै पुत्तरी ।।४७०४।।
असी कन्या किसको वरैं । भेजो दूत कारज इह सरैं ।।
पठए दूत प्रथवीधर पास । गए वसीठ कन्या की आस ।।४७०५।।
नमस्कार सभा पइठ । निरमै वाक कहै अति धीठ ।।
वज्रजंघ घर भाणजे दोइ । रघुवंसी जाणैं सब कोइ ।।४७०६।।
लव को पुत्री दई आपणी । बत्तीस अवर राजा की घणी ।।
कनकमाला तुम कुस कूं देइ । मेरा वाकि हिए धरि लेहि ।।४७०७।।
भूपति सुणि कोपे तिण बार । अरे मूढ कहो बात संभारि ।।
वन वन फिरती आणी बहुन । अवर वा कुं धर्म के चिह्न ।।४७०८।।

पृथ्वी धर का कुपित होना

उसके जणे भाणिजे किये । जाति कुलीन विचारी हिए ।।
यूं ही कन्या दीन्ही ताहि । असा मूरख मैं तो नाहि ।।४७०६।।

तेरा दोस कबहू नहीं दूत । प्रभू के वाक्य कहै संयुक्त ।।
वर के जब इतना गुण होइ । तब कन्या पावैं वर सोइ ।।४७१०।।

उत्तम कुल उत्तम ही जात । सीलवंत धन होइ विख्यात ।।
रूपवंत अवर वेस परमांन । बल जोबन वैस सुभ थान ।।४७११।।

विद्या गुण लच्छण तिह जान । महासुभट सारे नरकान ।।
ताकूं दीजे कन्या सही । कर्मकलंकी नै देणी नहीं ।।४७१२।।

बोलै दूत राजा सो फेर । रामचंद सुत जांण्यो सुमेर ।।
सीता तणै गर्भ तैं भए । रघुवंसी सम अन्य न थए ।।४७१३।।

निरभय मन राख्यो आपणों । कन्या दे सुख पावो घणों ।।
क्रोधवंत बोलैं भूपतीं । तो मैं बुधि नहीं है रती ।।४७१४।।

राज सभा बोलजे सोच । बिन विवेक तेरा ह्वं लोच ।।
धका दिलाइ दीना है काढि । वंच्या दूत पडी थी गाढ ।।४७१५।।

बज्रजंघ नैं सुणाया भेद । भूपति के मन उपज्या खेद ।।
में तो मुखतैं वचन निकाल । मान्या नहीं प्रथवीधर भूपाल ।।४७१६।।

अन्य वचण सुनाया भेद । होई दोस अपणां लगांउलवेद ।।
सबके मन आवै संदेह । किर कारण उन करया न नेह ।।४७१७।।

लागै खोड सगाई फिरैं । अब हूं जाइ समझाउं खिरैं ।।
बज्रजंघ पृथ्वी ऊपर चढया । प्रथवीधर राजा सौं मिलया ।।४७१८।।

भगनी सुत मेरैं इह बली । रामचंद्र की कीरत है भली ।।
कन्या देहु बिलम्ब मति करो । मेरा वचन सत्य चित में धरो ।।४७१९।।

बोलैं प्रथईधर समझाइ । सीता में होता गुण राइ ।।
तो रामचंद्र क्यूं दई निकाल । तो में अकल नही भूपाल ।।४७२०।।

पहलीं भेज्या था तैं दूत । अब तुम ही आए पहुंत ।।
बिन विवेक तू है अग्यान । अपणी आप घटावै कांन ।।४७२१।।

वज्रजंघ एवं पृथ्वीधर में युद्ध

मान भंग हुवा बज्रजंघ । निकल्या कोप ज्यूं केहरी स्यंघ ।।
लूटया नगर मचाई रोर । देस परगने मारे ठौर ।।४७२२।।

विजयारथ था थाणेदार । सनमुख आन करी उन मार ।।
भूझ विजयारथ धरणी पड्या । ऐसा सबद प्रथीधर सुण खरा ।।४७२३।।

देस देस के बुलाए मित्त । सैनां जोडी जुध की रीत ।।
बज्रजंघ के पुत्र सुणी । उण भी सेना जोडी घणी ।।४७२४।।

लवकुश का युद्ध के लिये प्रस्थान

दोन्यु कुमर रहसि मन भया । करैं आज साका हम नया ।।
एते घने काहु कुं लोग । हम दोनूं उस सेना जोग ।।४७२५।।

सीता कहै तुम हो लघु बंस । रण में कैसे करो प्रवेस ।।
कहैं कुंवर हम स्यंघ समान । हस्ती भाजैं अति बलवान ।।४७२६।।

ए कीटक कहा सरभर करैं । खत्री रण में ते क्युं डरैं ।।
करि सनान पूजे जिनदेव । भोजन भक्ति करी गुरु सेव ।।४७४७।।

बागा पहरि बांधे हथियार । पंच नाम पढि बारंबार ।।
रथ परि चढे आप आपणे । आयुध संग लीने तहां घने ।।४७२८।।

बहुते संग चले सामंत । उलटैं प्रथवीधर बलवंत ।।
बज्रजंघ प्रथईधर लडैं । दोलधां बहोत सूरमां पडे ।।४७२९।।

बज्रजंघ दीए हटाइ । लवनांकुस तब आए धाइ ।।
जैसे स्यंघ सारंग कुं गहै । भाजैं पसु सुधि न रहै ।।४७३०।।

जैसे रूई आक की उडै । प्रथईधर की सेना मुडै ।।
पग धरणे कुं रही न ठौर । पडी लोथ भागैं रण छोडि ।।४७३१।।

प्रथईधर का कंपे गात । पोछैं दौडे दोनूं भ्रात ।।
तब लवनांकुस बोले बोल । चेत वचन अब का करैं मोल ।।४७३२।।

हमारा नाम धरैं था भंड । अब काईं छोडैं क्षत्री भुंड ।।
क्षत्रीकुल ह्वै पीठ न देइ । तू कलंक अपने सिर लेइ ।।४७३३।।

सनमुख आइ भुझ काइ न करैं । गर्व वयण अब का बीसरैं ।।
प्रथिवीधर छोडे हथियार । हाथ जोड ठाढा तिण बार ।।४७३४।।

तुम हो रामचंद्र के पूत । तुम प्राकर्म कोई न सकै पुहुंत ।।
मो परि क्रिपा करो कुमार । तुमसा बली न इण संसार ।।४७३५।।

दोइ कर जोडि करैं बीनती । बज्रजंघ मिलिया भूपती ।।
कनकमाला मदनांकुस को दई । मन की खुटक सगली मिट गयी ।।४७३६।।

लवकुश की विजय

बहुत विघन प्रथवी धग आन । देई भेंट राख्या सनमान ।।
भुगति भोग बीते बहुद्यौस । विदा भए चाले मन हौस ।।४७३७।।

एक सहस्र राजा ले साथ । विजय देस लौं भूपति बांधि ।।
पोदनापुर और बहु नग्र । राजा श्रणि मिले तिहां सग्र ।।४७३८।।

गिर कैलास उतारी सैन । नंदचारजीत भए सुख चैन ।
महागंग तैं उतरे पार । बहुत तर्ने कीया निरधार ।।४७३९।।

देश परगनां अने बहु गाम । साध्या घणां राजा के नाम ।।
उहां ते चले देस आपणे । नरपति साथ लिए निज घणे ।।४७४०।।

पुंडरीकनी रहि कोस सात । सतखणें बैठि सीता मात ।।
उडी धूल छाये आकास । पूछै सीता सखी जन पास ।।४७४१।।

वे कहैं कोई नरपति आइ । तातैं रज उडै बहु भाइ ।।
वज्रजंघ नैं पहुंची खबर । लवनांकुस मारे अति गबर ।।४७४२।।

जीत्या देस परगने घणें । बहुतराय सेना संग बणें ।।
सीता सुणी पुत्र की बात । उपज्या सुख अर हरषित गात ।।४७४३।।

वज्रजंघ आग्या इह दई । हाट बाजार छायो सब नई ।।
गली गली हुवा छिडकाव । कीया महोछव राख्या भाव ।।४७४४।।

सीता कूं किया नमस्कार । बज्रजंघ मिलिया तिण बार ।।
घरि घरि हुवा अति आनन्द । ए प्रतापी है ज्यों सूरज चंद ।।४७४५।।

निरभय करैं निकंटक राज । भई जीत मनबांछित काज ।।
बज्रजंघ का प्रगट्या प्रताप । सुख मांही भूल्या दुख संताप ।।४७४६।।

सीता रहैसी पुत्रां नैं देखि । मन संतोष्या लख्यण गुण पेखि ।।
सकल लोक परिजा अति सुखी । तिहपुर कोई है नहीं दुखी ।।४७४७।।

दूहा

पुण्य बडो तिहुं लोक में, धरम भाव धरि चित्त ।।
सततैं कीरत आगली, परमैं सुख अनंत ।।४७४८।।

इति श्री पद्मपुराणे लवनांकुश दिग्विजय विधानकं

९४ वां विधानक

चौपई

राम लखमण चित आंणी सिया । मोह उदय ते व्याकुल भया ।।
कृतांतवक्र को दे उपदेस । सीता सुध लेहु फिरो तुं प्रदेस ।।४७४९।।

कृतांतवक्र ए आज्ञा पाई । सिंहनाद वन हेरचा जाई ।।
पर्वत गुफा जोई सब ठाम । तिहां न कोई मानुष्य नाम ।।४७५०।।

नारद मुनि का आगमन

नारद मुनि आया पुंडरीक । सहु जगत में है प्रजिनीक ।।
वज्रजंघ लवनांकुस तिहां । नारद मुनि बैठा था जिहां ।।४७५१।।

देखा मुनि उठि ठाढा भए । नमस्कार करि आदर बहु दिये ।।
पट बैठाये नारद मुनि । सीलवंत नारद अति गुनी ।।४७५२।।

आगम करि कृतारथ किये । कवरण कवरण तीरथ में गए ।।
नारद मुनि कही सहु बात । जिह जिह कीनी तीरथ जात ।।४७५३।।

धरम सुरगाया पढ्या श्लोक । वर्गं समझाए तीनूं लोक ।।
वाणी सुणि सब करैं डडोत । आसीरवाद मुनि कहे बहोड ।।४७५४।।

रामचंद्र लक्षमण सा तेज । सदा बिराजो सुख की सेज ।।
दिन दिन कला तुम्हारी जोर । तो सम बली न दूजा और ।।४७५५।।

लवनांकुस बोलीया कुमार । असे हैं कुण बली अपार ।।
इस विध हमनैं असीस तुम दई । कवरण बंस उतपत्ति ते भई ।।४७५६।।

बिवरा सुं समझावो मोहि । हम यह बातें पूछूं तोहि ।।
नारद कहै सुणउ विरतांत । सुमेर अंत पहुंचै किह भांति ।।४७५७।।

रसना सहस्र होइ इकबार । राम लखमण गुण लहुं न पार ।।
जैसे सायर अगम अथाह । बालक कर पसारै बांह ।।४७५८।।

वह समुद्र सकै को पेर । रामचंद्र गुण असे फेर ।।
तीन लोक के वह जगदीस । सुर नर सकल नवावैं सीस ।।४७५९।।

राम नांम तैं तुटैं पाप । रोग बिजोग मिटै संताप ।।
इक्ष्वाक बंस कुल उत्तम आदि । धरम क्रिया सब ही तैं साधि ।।४७६०।।

दसरथ नृप प्रतापी खरा । च्यार पुत्र गुण लच्छण भरा ।।
रामचन्द्र प्रथम भी और । उनसों सकल विराजै ठौर ।।४७६१।।

लखमण से ती हैं बहु प्रीत । भरथ सत्रुघन हैं महा पुनीत ।।
कैकया कुंवर दसरथ दीया । अयोध्या नाथ भरथ कुं कीया ।।४७६२।।

सूरजहास लखमण तिहां पाइ । खरदूखण सुत मारा तिह ठांय ।।
अन चीते सुं कीनी चोट । संबुक हण्यां बिवेकी ओट ।।४७६३।।

रामलखण कूं दीये बनवास । सीता संग रही रनवास ॥
दंडक बन में आश्रम लिया । संबक कुंवर तिहां तप किया ॥४७६४॥

पसचात्ताप करैं मन मांहु । बिन अवगुण हत्या बिबेकी छांह ॥
बार बार रघुपति पछितांहि । होणहार मिटै किह भाइ ॥४७६५॥

खरदूषण मुणि कीनां जुध । रावण करी हरण की बुध ॥
सीता कूं रावण ले जाय । रावण मारि सीता ले आइ ॥४७६६॥

अजोध्या आए जीती सब मही । इन समान नरपति को नहीं ॥
करम सर्दं हुवा तिहां आंण । सीता काढि दई बन जांण ॥४७६७॥

मदनांकुस बोलैं तिह बार । किण अवगुण पर दई निकार ॥
नारद कहै सीता की कथा । आठ सहस्र मैं सीता समरथा ॥४७६८॥

जनक सुता सत सील की खांन । सीता सम कोई सती न आण ॥
परजा दोख लगाया आइ । सुणी बात जब रघुपति राइ ॥४७६९॥

ता कारण मै दीनी काढि । परजा कैं सिर दोष इह बाढ ॥
इण पाप तैं कहां निसतार । परजा गह्या पाप का भार ॥४७७०॥

दूहा

बिन अवगुण जे दोस दे, तेई मूढ अयान ॥
अंतकाल दुख भुगत करि, पावैं नरक निदांन ॥४७७१॥

चौपई

लवकुश की प्रतिक्रिया

मदनांकुस बोलीया कुमार । राम लखमण जे बुध अपार ॥
उनहूं करी न न्याव की रीत । तो इह बरगाइ है विपरीत ॥४७७२॥

अपणै घरका करचा न न्याव । उनकै घर का है खोटा भाव ॥
जिनकौं दई हमकौं असीस । बिन विवेक तूं है रिष ईस ॥४७७३॥

बोल्या नारद सभा मझार । रामचंद्र इह किया विचार ॥
परजा दोष लगाया घणां । बहुत भांति रघुपति नैं सुण्यां ॥४७७४॥

नारद का पुनः आगमन

निश्चै सीता का सत रह्या । लोकां झूठ बचन इह कह्या ॥
जे नही राखुं लोकाचार । तो अपकीरत होय संसार ॥४७७५॥

जुग जुग कथा हमारी चलैं । मोह कियो कोइ कहै नहि भलैं ॥
जे पृथ्वीपति महै कलंक । अवर कुमारग कहै निःसंक ॥४७७६॥

एक दिवस है मरण निदांन । तायें बुधि करीजै जांन ।।
उन सम दूजा नहीं है और । रामचन्द्र लखमण की जोर ।।४७७७।।

चक्र सुदर्शन उन्ह के साथ । तीन लोक में इहै नरनाथ ।।
उहां तैं उठि सीता के ग्रेह । नारद मुनी दिगम्बर देह ।।४७७८।।

दरसन देख कियो नमस्कार । सिधार्थ बैठा तिह बार ।।
पूछी सीता नारद सूं बात । किण किण तीरथ कीनी जात ।।४७७९।।

नारद बोलै तीरथ कथा । तब फिर बोलैं सिधारथा ।।
भरे नारद तुं कहि है मुनी । कलह करम करता फिरै घणि ।।४७८०।।

आपस में भिडावै आइ । तो कूं बहुत कलह सुहाइ ।।
नारद कहै हम क्या किया । सहज सुभाव उपद्रव किया ।।४७८१।।

मो कुं दूखण लागै कहा । सीता रोवै नयन जल बहा ।।
लवनांकुस सीता पैं गये । देख्या रुदन सोच मैं भए ।।४७८२।।

माता कहो तुम सांचे वयन । कारण कवन भरे तुम नयन ।।
जो कोई तुमसे बोलैं बुरे । ताकुं हाथ लगाउं खरे ।।४७८३।।

जीभ निकासुं हतौं पराण । जे कोई कहै कुवचन आन ।।
सीता कहै पुत्र तुम सुणौं । कंत विजोग दुःख उपज्यो घणौं ।।४७८४।।

पूछे कुंवर कहो तुम मात । हमारा कहाँ बसै है तात ।।
बिवरा सकल कहो समझाय । तो हमारा विकलप मिट जाय ।।४७८५।।

पिछली कथा कही तब सिया । बहोत भांति उझै है हीया ।।
जैसी कथा नारद पै सुनी । तैसी बात सीता सब भणी ।।४७८६।।

लवकुश द्वारा अयोध्या पर आक्रमण करने के लिये प्रस्थान

तबै उठ्या कुंवर रिस खाय । रामचंद्र चित दया न आय ।।
गर्भवती कूं दई निकाल । अबं बैर लेहुं पिता पैं जाइ ।।४७८७।।

घेर अजोध्या मांडू जुध । अब उनकी खोउं सब सुध ।।
सेन्या जोडि अजोध्या चले । सूर सुभट संग लीने भले ।।४७८८।।

एक सौ स्याठ जोजन का अंत । भले भले निकसे सावंत ।।
अयोध्या सीम पहुंते आंन । लूटे नगर बहुतेरा धान ।।४७८९।।

डेरा दीया नदी के पार । रघुपति ने पहुंचाई सार ।।
कोई आया बली नरेस । लूटै आस पास के देस ।।४७९०।।

लवकुश द्वारा युद्ध

जुध निमित्त उतरथा है आइ । याका दल बल कह्या न जाइ ।।
रामचन्द्र लक्षमण नैं सुण्यां । मनमें सोच किया अति घणां ।।४७६१।।

ऐसा कुण भूपति बलवंत । जिसका दल कहिए नहि अंत ।।
वे चढि आए अजोध्यापुरी । ल्याई उणु मरण की घडी ।।४७६२।।

देस देस को लेख पठाइ । भूचर खेचर लिया बुलाइ ।।
नारद लिया भावमंडल पै गया । सकल भेद ब्योरा सूं कह्या ।।४७६३।।

भावमंडल सुण सीता विजोग । मनमें बहुतैं व्याप्या सोग ।।
लवनांकुस का सुण्यां प्राक्रम । बहुता तणौं गुमायो भर्म ।।४७६४।।

नरपति घणां उनां के संग । अजोध्या पति किया मान भंग ।।
भावमंडल मन हरष अति किया । चढि विमान पुंहता जिहां सिया

।।४७६५।।

पुंडरीक नगरी मां जाइ । बहन भाई मिलिया सुख पाइ ।।
सगली बात कही समझाइ । कछु हर्ष कछु बिसमैं राइ ।।४७६६।।

सीता कौं बैठाइ विमान । गगन मार्ग पहुंचाई आंन ।।
सुर नर देखैं कौतिक आइ । दुहुं ठां सेन्या ऊडी जाइ ।।४७६७।।

दूहा

राम लक्षमन सुभट, सत्रुघन बलवान ।।
भूचर षेचर प्रथीपति, चढे बजाइ निसान ।।४७६८।।

चौपई

विराधित हिरन केस सुग्रीव । नल नील अंतक मुज मीच ।।
महीपति निकस्या उनु साथ । सिंघ गरुड बाहन रघुनाथ ।।४७६९।।

वज्रजंघ अरु भूपति घणे । मानै बारी अरो बणे ।।
पड़ी मार चक्र अरु बांन । रथतैं गिरे आप भगवान ।।४८००।।

फिर संभालि रथ ऊपरि चढे । महा क्रोधवंत मन बढे ।।
गोली मर ज्यौं मनहरं धार । दोउंवा सेन्या होइ संघार ।।४८०१।।

हाथी घोडे रथ सुखपाल । पड़ी लोथ भूमैं भूपाल ।।
पग धरणे कु रही न ठौर । स्रोणत सौं रण भरया बहोरि ।।४८०२।।

अडिल्ल

पडी लोथ परि लोथ गिरध चूंटैं घने ।।
कांपैं कातर लोग नाम भूझ का सुणैं ।।
लडैं क्षत्री लोग जाहि कुल लाज है ।
स्वामी धरम को चित करैं वे काज है ।।४८०३।।

चौपई

कहीं घायल घूमैं हैं घणे । कहीं सुभट भूझे हैं बणे ।।
घड सिर पडैं देह तैं छूटि । लुटहा लोग करैं हैं लूट ।।४८०४।।

ग्यारहे सहस्र राम के उमराव । लवनांकुस सौं धरि भाव ।।
पवन वेगि मिले हणवंत । अवर गए बहुते बलवंत ।।४८०५।।

सोरठा

देखो कलुका भाव, जीत्यां सु सब ही मिलैं ।।
मित्र बिछुडा सब जाइं, हारि जाणि बिछुडे सबैं ।।४८०६।।

इति श्री पद्मपुराणे लवनांकुस जुध विधानकं

९६ वां विधानक

चौपई

युद्ध वर्णन

रामचंद्र लवनांकुस लडे । मदनांकुस लछमन सु भिडे ।।
कृतांतवक्र लडै वज्रजंघ । लाग्या घाव विराधित संग ।।४८०७।।

तबैं रघुपति समुझावैं ताहि । क्षत्री रण छोडैं किछु नांहि ।।
मेरे रथ का हुवैं सारथी । धावैं बेग रचैं भारथी ।।४८०८।।

विराधित रामचंद्र रथ बैठि । धाए मारि मारि करि अइठि ।।
बज्रावर्त्त समुद्रावर्त्त । छोडैं ज्युं घनहर बरषंत ।।४८०९।।

उततैं छोडैं गोली बांण । प्रकास चक्र लखमण कर तांण ।।
उन सर छोड करी सब मार । उडया फिरै चक्र तिह बार ।।४८१०।।

चक्र सुदर्शन फेरि संभार । तामैं उठैं अगनि की झाल ।।
गडगडाट दांमनी उद्योत । दसौं दिसा सबकों भय होत ।।४८११।।

गहे धनुष कुमर निज हाथ । छूटैं बाण ज्यौं एकं साथ ।।
चक्र जाइ प्रकमा दई । पुन्यवंत कौं भय नहीं हुई ।।४८१२।।

फिर आया लछमन कर चक्र । मनमें सोचैं लछमन सक्र ।।
अनंतवीरज स्वामी ने कह्या । कोटि सिला उठावै जो इहा ।।४८१३।।

हूं नारायण त्रिखंडी ईस । मेरी कतरण सकै करि रीस ।।
भूचर खेचर दानव देव । सब मिलि करि हैं मेरी सेव ।।४८१४।।

उनका वचन न झूठा पडै । चक्रवत्ति कोई अवतरै ।।
तातैं चक्र करै नहीं घाव । अब हूं कहा करूं उपाव ।।४८१५।।

नारद द्वारा लवकुश का रहस्य खोलना

नारद सिधारथ दोउं आय । राम लक्षमण सूं कहैं समझाय ।।
ए दोन्युं सीता का पूत । बलपौरिष दोउं संयुक्त ।।४८१६।।

जब तुम सीता दई निकाल । बज्रजंघ आया भूपाल ।।
धरम बहिन करि वह ले गया । नगरी का लोग हरषित भया ।।४८१७।।

प्रसुति भई तिहां पुत्र दोउ जण्यां । जनम महोछव कीने घणां ।।
लवनांकुस दोनु बलवंत । इन सम अवर नहीं सांमंत ।।४८१८।।

रामचन्द्र लछमन ने सुणीं । अपणी निंद्या कीनी घणी ।।
हमकूं उपजी महा कुबुद्धि । करी न कछु न्याव की सुधि ।।४८१९।।

सीता कूं सतं हुवा सहाइ । वह पाप भया हमकूं आय ।।
सीता प्रतैं निकाला दिया । तो मान भंग हमारा भया ।।४८२०।।

एक दोख कुवया था नहीं । दूजा पाप अब हुवा सही ।।
जे भुझ थे ऐसे पूत । तो दुख होता हमैं बहूत ।।४८२१।।

ए थे देव कला के सिसु । गोत वावतई हुवा न सुख ।।
उतरे रथ ते सनमुख चले । दोन्युं पुत्र आइ कैं मिले ।।४८२२।।

लव कुश द्वारा पिता की वंदना

लगे चरण रघुपति के पुत्र । कंठां विलंबन लेय विचित्र ।।
धन्य दिवस आज की घडी । पिता पुत्र मिल्या हुंडी हूंडी ।।४८२३।।

विमाण चढी सीता इह देखि । मनमें आनन्द भए विसेष ।।
जाण्यां पुत्र महा सपूत । अपणैं मन हरखित बहुत ।।४८२४।।

दूहा

पुत्र प्राक्रमं कुं देख करि, सीता चित्त हुलास ।।
पुंडरीक फिर कैं गई, पुंगी मन की आस ।।४८२५।।

चौपई

लवकुश का अयोध्या आगमन

वज्रजंघ की अस्तुति करैं । वाका गुण रघुपति विसतरैं ।।
दयावंत धरम का अंस । तुमते रहै हमारा वंस ।।४८२६।।

जे तुम आय वन के माझ । सीता कुं भय व्याप्या नांहि ।।
सीता की तुम कीनी सेव । उनका सत रख्या इन भेव ।।४८२७।।

वइठे चढि पुहपक विमांण । रामचंद्र लखमण बलवान ।।
लवनांकुस आगैं आरूड । रूपवंत लघ्यण गुण गूढ ।।४८२८।।

छाया नगर गली सब झाडि । छिडक्या नीर गली सब बाडि ।।
घरि घरि बांधी बंदरवाल । घर घर देखण समही नारि ।।४८२६।।

बाल वृध्य सब आये लोग । देख रूप भूले सब सोग ।।
कोई नारि सराहै रूप । इन पटतर कोई नांही भूप ।।४८३०।।

धन्य सीता जाकै गर्भ ए भए । दोनूं स्वर्ग लोक तैं चए ।।
कोई देख रही मुरझाइ । सिथल भई लहु ताकी काइ ।।४८३१।।

सिरतैं पडैं भूमि पर चीर । रही न ऊनूं की सुधि सरीर ।।
छूटी लटि कटि ऊपर आइ । मानू लगे भूयंगम सिराइ ।।४८३२।।

स्यांम केस अति सोभा वणी । खुले होए दोडी तहां घणी ।।
वे अपने मन निरमें जांहि । देखैं लोग हंसैं सब तांहि ।।४८३३।।

सब के मन कुमरों का ध्यांन । भूलि गई सब ही अवसान ।।
हारह मेल मोती के छडे । तेभी टूटि भोमि परि पडे ।।४८३४।।

आभरण की सब सुधि बीसरी । व्याकुल भई पुर की अस्तरी ।।
उनूं के मन कुछ आवैं नहीं । सगली नारि थकित होय रहीं ।।४८३५।।

ज्यों पतंग पीपक सूं नेह । देखे लोइ होमैं सब देह ।।
दीपक कैं कछु नाहीं राग । जलैं पतंग ता सेती लाग ।।४८३६।।

रतनवृष्टि अति करैं कुमार । आनंद भयो सगलैं संसार ।।
रहस रली सुं दिवस विहाइ । पूजा करैं जिनेस्वर राइ ।।४८३७।।

दूहा

पिता पुत्र सों जब मिले, हुआ अधिक हुल्लास ।।
चैन भयो सब नगर में, पूजी मन की आस ।।४८३८।।

इति श्री पद्मपुराणे लवनांकुस अयोध्या आगमन विधानकं

६७ वां विधानक

चौपई

राज सभा बैठिया नरेस । मंत्री कहै समझ उपदेस ।।
लवनांकुस तो मिल्या कुमार । सीता नैं आणो इंह वार ।।४८३६।।

राम का चिंतन

रामचन्द्र चिंतवै तिण बार । सीता सती गुण लष्यण सार ।।
परिजा यु ही दूषण दिया । ता कारण हम काढी सिया ।।४८४०।।
अब जे सीता आंणौ फेर । वहै लोग अैसे भी टेर ।।
तो होवै फिर नई उपाधि । कीजे कारज मन विच साधि ।।४८४१।।
जे फेर प्रजा को होवै दुःख । कारन कवण हमारा सुख ।।
चंद्रउदर विराधित हणुमांन । सुग्रीव नल नील प्रधान ।।४८४२।।
रतनजटी आदिक भूपती । तिनू विचारी उज्जवल मती ।।
देस देस कूं लेख पठाइ । भूचर षेचर लेहीं बुलाइ ।।४८४३।।
करों प्रतिष्टा श्री जिनदेव । दानमांन जिन गुरु की सेव ।।
सकल शिष्ट कौं द्यो जिमणार । सीता भी आणउं तिहं बार ।।४८४४।।
सब सुं पूछैं मंत्र विचार । सीता सत प्रगटै संसार ।।
तब सीता कुं आंणो गेह । सब के मन का मिटै संदेह ।।४८४५।।
भेज्या दूत सकल ही ठांइ । चीठी देखि चले सब राइ ।।
नरपति तब वहां आए घणे । सहु परिवार मनोहर बणे ।।४८४६।।
उतरे निकट अजोध्या आइ । सगली भूमि हुई छिड़काय ।।
सब को भोजन दे रघुपति । कीए सनांन बहोत तिह भती ।।४८४७।।
पंचामृता जीमवै भूप । सोंधा तंबोल बहुत अनूप ।।
उत्तम गंगा जी का नीर । प्रासुक संवार कलस भरि नीर ।।४८४८।।
कनक कटोरे पिवैं नरिंद । बैठी सभा तिहां पंकति बंद ।।
भावमंडल विराधित हनुवंत । भभीषण सुग्रीव सामंत ।।४८४९।।

सीता को लेने के लिये भेजना

नल नील चन्द्रउदर राइ । रतनजटी रघुपति गाइ ।।
पुहपक विमांण दिया इन संग । अन्य भूप भेज्या वज्रजंघ ।।४८५०।।
पुंडरीक में पहुंचे जाइ । सीता कै सब लागे पाइ ।।
दैनांनैं देख सीता गहभरी । विद्याधर बहु अस्तुति करी ।।४८५१।।
चलो माता तुम हमारे साथ । तुम कारण भेज्या रघुनाथ ।।
सीता कहै परजा ही सुखी । हम कारण मति होवो दुखी ।।४८५२।।

उन प्रसाद हम सुख में रहै । उनुके लोग बुरे सब कहै ।।
तायैं रहैं हम याही ठांइ । सुख सौं राज करो रघुराइ ।।४८५३।।

फिर बोले विद्याधर बैन । करैं प्रतिष्ठा पूजा जैन ।।
ता कारण आए सब लोग । चलो बेग श्री जिन जोग ।।४८५४।।

सीता का आगमन

सीता चढी पहुपक विमांन । आई अजोध्या जब सोध्या भान ।।
भई रयण तब आश्रम लिया । महेन्द्र बन में वासा किया ।।४८५५।।

बीती निस रवि कीयो प्रकास । देखी अजोध्या सुख का बास ।।
सीता संग सहैली घणी । झोला डोली बहु विध बणी ।।४८५६।।

रथ पालकी अवर चकडोल । गज मयमंत चले झकझोरि ।।
बाजै तिहां आनंद निसान । तास सबद सुख उपजत कांन ।।४८५७।।

बंभन बहुत वेद धनि करैं । भाट विरद सुंण के मन हरैं ।।
सब त्रिय आई दरस निमित्त । भई भीड गलिये बहुभंत ।।४८५८।।

नमस्कार करैं सब कोइ । जै जै सबद दसौं दिस होइ ।।
सुर नर किंनर जय जय करैं । पुहप वृष्टि प्रथिवी पर परें ।।४८५९।।

रतन वृष्टि वारैं सीता सती । पहुंची तिहां बैठे रघुपती ।।
सब मिल उठ करी डंडोत । लोगां अस्तुति करी बहोत ।।४८६०।।

रामचंद्र की भ्रकुटी कठोर । स्यंघनाद बन आये छोर ।।
तिहं बन देखि डरैं सब कोइ । निसचै मरणा बईठां होइ ।।४८६१।।

ए तूह वनतैं जीवत फिरी । असे बन दिष्या नहीं धरी ।।
जै मै याही भेजी बुलाइ । याकै चित्त भ्रमर सब आइ ।।४८६२।।

उठी दौडि उन ही के संग । परजा में होवै मान भंग ।।
सीता सों बोलैं रामचन्द्र । जे हम करी रावण सौं दुंद ।।४८६३।।

तेरे कारण किया संग्राम । रावण नैं पहुंचाया जम धांम ।।
जो मैं जाणता असी वात । प्रजा दोष कहै इह भांति ।।४८६४।।

तो क्यों करता पाप की छाप । इतना दोष लिया मैं आप ।।
रण मैं मारे इतने लोग । घर घर व्याप्या सोग विजोग ।।४८६५।।

जितनैं दोहू घां भुझ्या जीव । असा दोष लीया मैं पीव ।।
असा दुख सौं आंणी सिया जाइ । जग मैं यह चरचा चली इह भाइ
।।४८६६।।

तो हम तोकूं दई नीकाल । मेरे मन उपज्या इह साल ।।
सीता कहै सुनुं पति प्रान । मेरे सदा तुम्हारा ध्यान ।।४८६७।।

तुम हो तीन खंड का धनी । न्याव नूं कीया एक हक रती ।।
जई घर का कर सको नहीं न्याव । औरें का करिहो किह भाव ।।४८६८।।

गरभवती काढी वनवास । आरत ध्यान में जीव का नास ।।
मरकरि भ्रमती नीची गती । तुम को होती पाप की थिति ।।४८६९।।

तीन जीव का होता दुख । तुम को होती नहीं गति मोक्ष ।।
बिन विवेक तुम ग्रैसी करी । जीव दया चित्त नहीं धरी ।।४८७०।।

फिर कर बोलें रघुपति बैंन । लेहु दिव्य हम देखैं नैंन ।।
जो मैं तेरा सांच पती जूं । परजा देखैं तदि मैं नहि खिजूं ।।४८७१।।

अग्नि परीक्षा

सीता कहै लेहुं दिव्य पांच । अब तुम देखो मेरा सांच ।।
खाऊं हलाहल ताता लोह । तराजू बीच तिष्ठावो मोह ।।४८७२।।

जो मैं सत तो मैं सरभर रहूं । देखो प्रत्यक्ष सील अस लहूं ।।
रचो चिता दावानल देहु । ता मैं मेरा परचा लेहु ।।४८७३।।

जो मैं सती न व्यापैं आग । जो कछु दोष तो प्राण ही त्याग ।।
रघुपति कहै चिता हूं रचो । जीवत हू पैठें जाणों सचो ।।४८७४।।

सुणीं लोग कंपे बहु भाइ । रामचन्द्र तैं कछु न बसाइ ।।
जे अंगारा तन कौं छुवई । दाभै तुरंत प्राणनि गवई ।।४८७५।।

महा भयानक ज्वाला चुरी । जिनमां बचौ न एको घडी ।।
अगन मांहि भसम होइ जाइ । ग्रैसी कहि कर सब पछताइ ।।४८७६।।

सिद्धार्थ बोलियो नरिन्द्र । म्हारी बात सुणौं रामचन्द्र ।।
मैं तप किया वर्ष बहु सहस । पंचमेर तीरथ जिन ग्रैस ।।४८७७।।

ग्रकतम चैत्यालय जिन गेह । करी तपस्या मन बच देह ।।
जो कछु हुवै सीता में कलंक । ए सब जाणि निर्मूल निसंक ।।४८७८।।

ग्रैसी नारद ने भी कही । रामचन्द्र मन बैठी नहीं ।।
सीता का सत महा अटल । जैसे है सुमेर अचल ।।४८७९।।

जो सुमेर धसि जाइ पाताल । सीता का सत खोटी चाल ।।
रवि का तेज भी होई हीन । सीता का सत होई नही खीन ।।४८८०।।

रामचन्द्र ते आए भोज । खोदो वन में तुम होवा होइ ।।
राम हुकम ते वन में गए । खोदें धरती मन अचिरज गए ।।४८८१।।

राजनि हठ को मेटै कोण । वरज सकै को चलती पौन ।।
अगनि कुंड कौं खोदें भूमि । सब नगरी में मांची धूम ।।४८८२।।

महेन्द्र उदय वन में मुनि एक । सरव भूषन सुधरम की टेक ।।
तीन रतन हैं वाकै सत्य । आतमध्यांन दया सुचित्त ।।४८८३।।

दस लच्छण गुण ताकै सत्य । मास उपवास पारणा थित्ति ।।
विद्युतवतक व्यंतरी आइ । मुनि कूं दुख दिया बहु भाइ ।।४८८४।।

इहां श्रेणिक नैं प्रश्न किया । किम उपसर्ग जख्यणी नैं दिया ।।
श्री जिनवांणी अगम अथाह । मिटै सकल हिरदा की दाह ।।४८८५।।

पूरब दिसा गुंज पुर नग्र । सिंघ वक्रम राजा बल अगर ।।
श्री देई अस्तरी सम्यक दिष्ट । धरम करम करि महा श्रेष्ठ ।।४८८६।।

सरव भूषण ताथैं उत्पन्न । रूपवन्त सोहै लच्छन्न ।।
जोवन समैं ते कुमार । आठ सहस्र विवाही उत्तम नारि ।।४८८७।।

कर्णा मंडला पट की धणी । रूप लच्छण गुण लावन्य बणी ।।
संगि सहेली बइठी पासि । देख्या चित्र सिराहुई तासि ।।४८८८।।

कर में पट चित्र का गहै । वारंबार सराहना कहै ।
हम सिखर का था सिख्यारूप । सबतैं पुरुष है वह अनूप ।।४८८९।।

एक सखी ऐसा विध हसी । तेरै मन ए ही जुरत बसी ।।
हेम सिखर सौं संगम करि जाहि । असी सुणि राणी मुसकाइ ।।४८९०।।

राजा कानि पड़ी इह बात । क्रोधवंत हुवा बहु भांत ।।
खोटी चरचा एक में करैं । पर पुरुष की इच्छा धरैं ।।४८९१।।

विभचारिणी समझी मनमांहि । गहा खडग सौं मारूं जांहि ।।
तिय परि कहा उठाऊं हाथ । स्वारथ रूपी है सब साथ ।।४८९२।।

झूठे सुख में राच्या जीव । इह कुटंब सब दुख की नींव ।।
तजि कुटंब विभव सब त्याग । सरव भूषण उपज्या वैराग ।।४८९३।।

लोंचे केस दिगम्बर भेस । हुवा जती गुरु के उपदेस ।।
वा इह विध तप आतम जोइ । क्रिया चौरासी इह विध होइ ।।४८९४।।

करि विहार अजोध्या आइ । करैं तपस्या मन वच काइ ।।
करण मंडला राणी सुण पाइ । रोवै पीटैं बहुत रिसाइ ।।४८६५।।

मैं उनकी कछु करी न सोच । उनौं बिचारी मन मैं पोच ।।
अब मैं या परि तजौं पराण । आरत रुद्र भरयो उन ध्यान ।।४८९६।।

अन पांणी बिन छोडी देह । भई यक्षिणी यक्ष के गेह ।।
तब मन मांही अवधि विचार । सर्व भूषण की मैं थी नारि ।।४८९७।।

बिन अवगुण मुझ दूषण ल्याइ । यह तप करैं अजोध्या जाइ ।।
अब मैं उनसौं माडूं औरु । बंधन भेजी बांध्या मुनि पैर ।।४८९८।।

यक्षिणी द्वारा मुनि पर उपसर्ग

जब मुनि चाल्या लेण अहार । बंधण छूट गए तिण बार ।।
जखणी कु तब उपज्या क्रोध । ल्याई अगनि तिहां बणी न सोध ।।४८९९।।

अंतराइ मुनि फिर करि चल्या । मास उपवासी पारणा टल्या ।।
बहुरि उठ्या आहार निमित्त । आंधी चली मारगे थकित्त ।।४९००।।

कांटे मारग मांहि बिछाइ । पग चरणों कु मांही ठांहि ।।
वाही ठांम थाप्या मुनि जोग । नगर मांहि तैं आवैं लोग ।।४९०१।।

व्यंतरी गई सेठ भंडार । अहेडा दे थैली तिहा डारि ।।
प्रभात भया तब खोजैं सेठ । थैली पडी साध पग हेठ ।।४९०२।।

आए सकल अचंभै होइ । भली बात भाखै नहीं कोइ ।।
कोई कहै जो होता चोर । तो क्यूं ठाडा रहै इस ठौर ।।४९०३।।

ध्यानारूढ खडा मुनिराज । कुतो बांध्यो गलां सु आय ।।
भविजन आवैं मुनिवर जात । टालि उपसर्ग पखाल्या गात ।।४९०४।।

पूजा करी भोजन जिमाइ । नगर में मुनि ने गए पहुंचाय ।।
व्यंतरी रतन हार चुराइ । मुनि कै गले गयो पहराय ।।४९०५।।

राजा सुणी राज की मार । देख्या साध कै गले मझार ।।
इसकौं देखि यह चरचा करैं । जती के भेष यह चोर फिरैं ।।४९०६।।

आगैं फोडे थे सेठ भंडार । अब इनै हरया रतन का हार ।।
तबै मंत्री समझावैं बैन । इनतो मरत बरया है जैन ।।४९०७।।

जे इच्छा चोरी की धरैं । तो क्यूं प्रगट राखै गलैं ।।
समझ वचन अपने घर गए । व्यंतरी चिहन करैं नए नए ।।४९०८।।

करि श्रृंगार आभूषण भले । हाव भाव मुकताहल गलैं ।।
ताल मृदंग बजावैं बीण । नयन कपलाई जीते मईन ।।४६०६।।

गावैं सरस प्राण हर लेइ । आतमध्यान न चित्त डुलेइ ।।
नाचैं गावैं मधुरी तान । सुनत वचन हर लेई प्रान ।।४६१०।।

मन वच काया खड़ा अडोल । आपै नहीं हिया मैं बोल ।।
तब वह जष्यणी नागी भई । करैं आलिंगन बहु विध भई ।।४६११।।

अपणां ध्यान न छोडें जती । बिलखी भई यक्षिणी पती ।।
मुख भयानक रूप विकराल । अपाभारग देह की लाल ।।४६१२।।

केई अजगर केई सांप । लपट दौडि देहीं संताप ।।
कोई रूप व्याघ्र का करैं । गज का रूप महा भय धरैं ।।४६१३।।

निसंकित किया मन दृढ गात । व्यंतरी दिया उपसर्ग बहु भांति ।।
महामुनीश्वर आतम ध्यान । तब ही उपज्या केवल ग्यांन ।।४६१४।।

जै जै सबद दसौं दिस सोर । सुरपति नरपति आए कर जोडि ।।
छाये रहे बिमांण आकास । देख्या इन्द्र अगनि धूम प्रगास ।।४६१५।।

ताकैं ढिग है सीता खडी । अगनि काय निकसै तिहां बुरी ।।
ईसान इन्द्र पूछैं बिरतांत । इह अचिरज देख्या इस भांति ।।४६१६।।

देखैं कुंड देवता खरे । तिहां कोई धीरज नहीं धरै ।।
एह याकी ढिग ठाढी कौन । भाखो बात तो मुख मौन ।।४६१७।।

सौधर्म इन्द्र कहै समझाइ । इह सीता पटरागी रघुराइ ।।
सत की महिमा सुरपति करै । वाहि विपत्ति ऐसी विध परै ।।४६१८।।

इह सीता सतवंती खरी । असुभ करम तैं विपत इहै पडी ।।
इसके भाव ताणैं केवली । पूछैं जाइ समझ विध भली ।।४६१९।।

दूहा

सुर नर खग सब आइया, अगनि कुंड जिह थान ।।
देखि ताहि सोचत सबै, मुनि कौं पूछैं आन ।।४६२०।।

इति श्री पद्मपुराणे सर्वभूषण केवल उत्पन्न विधानकं

९८ वां विधानक

चौपई

राम द्वारा पश्चाताप करना

रामचन्द्र नैं देखी चिता । सीता जलैं तो लागै हत्या ।।
पड़ी आदि तिहां सूक्षम जीव । भया घृम पाप की नींव ।।४६२१।।

खोटी बात मुख तें मैं कही । ऐसी कदे हुई थी नहीं ।।
कठिन पइजमैं बाधी आज । जे परमेसुर राखै लाज ।।४६२२।।

दौड़ बेग यह बिछड़ी सिया । बहुरि मिलाप विधाता किया ।।
अब यह जलैं चिता में जाइ । फेरि नहीं सीता किह भाइ ।।४६२३।।

पहिलैं पडूं चिता में आप । मेरा राख्या न जाय विलाप ।।
ज्वाला कठिन जोजन की फेर । सीता खड़ी ज्यों परबत मेर ।।४६२४।।

पंचनाम हिरदै संभाल । जिन श्रीजी सुमरै तिहकाल ।।
सरब भूषण को करो नमस्कार । मन बच काय सत रहै हमार ।।४६२५।।

अग्नि परीक्षा में सफलता

अगनि मांझ तैं जो ऊबरूं । झूठ कहूं तो तिरणां परि जलूं ।।
पंचनाम पढि चिता में पडी । सीतल भई अगनि तिह घडी ।।४६२६।।

उमड्या जल धरती पं फिरै । बहै लोग धीरज नहीं धरै ।।
विद्याधर गमध्या आकाश । चहुंधां लोग बहै बहु त्रास ।।४६२७।।

सीता का गुण सुमरै लोग । हम सीता कुं किया वियोग ।।
झूठे वचन लगाया दोष । कैसे हम पावां संतोष ।।४६२८।।

सीता सुमरण चित्त में आन । उबरै सकल सीता कै ध्यान ।।
निघट्या नीर भया सुख चैन । कहैं सकल अस्तुति के बैंन ।।४६२९।।

जिहां थी आग त्रिकुंड की ठौर । बण्या सरोवर बैठक और ।।
फूले कमल भंवर गुंजाहि । भले बिरख तिहां सीतल छांह ।।४६३०।।
कंचन पाल सरोवर बणी । हंस चकोर तिहां सारस घणी ।।
जलचर जीव पंखी हैं तिहां । रतन स्यंघासन सीता जिहां ।।४६३१।।

जै जै सबद देवता करैं । पुहपवृष्टि बहुत हीं पड़ै ।।
लवनांकुस सरवर में धंसे । मन आनंद दोनूं हंसै ।।४६३२।।
नया जनम माता का भया । जल के बीच गए जिहां सिया ।।
नमस्कार करि लागे पाय । सीता भेटीं हिए लगाय ।।४६३३।।

सीता कौं जल तैं बाहिर आंन । दई बिठाइ स्यंघासन थान ।।
सत की कांति छवि सोभा घणी । कनक सलाक अगनि में बणी ।।४६३४।।

सब ही का संसय मिट गया । जै जै सबद सब ही ने किया ।।
रामचन्द्र बहु अस्तुति करैं । धन्य सीता औसा सत धरै ।।४६३५।।

तेरी सार न जाणी मूढ । तुमको देस दिया अगूढ ।।
तुमारे गुण की लही न सार । तुमनैं घरि तैं दई निकार ।।४६३६।।

असुभ करम जब उदै हुआ । सुख में दुःख इक व्याप्या लिया ।।
अब अपणां मन राखो ठौर । तुमने दुःख न होइ बहोरि ।।४६३७।।

आठ सहस्र में सीता बडी । तुमारे सत की कीरत बढी ।।
सब मिल सेव तुमारी करैं । चालो ग्रह मन संसा टरै ।।४६३८।।

मेर सुदरसन तीरथ जात । बिजयारध पर्वत बहुत भांत ।।
गिरि सम्मेद कपिलापुरी । चंपापुर बाणारस नगरी ।।४६३९।।

जिन जिन बन विपत्ति में फिरे । अब वे सुख में देखुं खरे ।।
लंका देखो अवर सब द्वीप । बसे नगर जे समुद्र समीप ।।४६४०।।

हमने दुख तुमकौं बहु दिया । छिमा करो हम पर तुम सिया ।।
राज भोग भुगतो सब सुख । अब सब टल्या तुमारा दुःख ।।४६४१।।

सीता का उत्तर

सीता कहै धिग यह संसार । धिग जाणौं त्रिया अवतार ।।
राज सुख धिग अर्थ भंडार । करूं तपस्या ज्यूं पाऊं पार ।।४६४२।।

त्रिया जनम फेर नहीं होइ । करूं ध्यान आतमा सुध होइ ।।
लोंच केस बसतर दीनां डारि । प्रथीमती आरजका आर ।।४६४३।।

सकलभूषण का दरसन पाइ । करै तपस्या मन बच काइ ।।
रामचन्द्र ने खाइ पछाड । भई मूर्छा घणी भई संभार ।।४६४४।।

ओषध वैद जतन बहु करैं । सीतली बीजणां ऊपर फिरैं ।।
बावन चंदन सुं छांटैं काइ । बडी बेर में चेतया राइ ।।४६४५।।

हाइ हाइ रोवैं रघुराइ । गए सकल भूषण की ठांइ ।।
देई प्रदक्षणा करि नमोस्तु । धर्म वृध्य कही मुनि अस्तु ।।४६४६।।

ज्यों सुदरसन मेरु के पास । जंबु वृक्ष सोहै अति उचास ।।
तैसे रामचन्द्र तिहां बणे । बारह सभा लोग तिहां घणे ।।४६४७।।

लखमण सत्रुघन बैठा तिहां । लवनांकुस मदनांकुस जिहां ।।
अभय निदांन जोरैं हाथ । प्रकासो धर्म श्री मुनिनाथ ।।४६४८।।

सप्त तत्व के सूक्ष्म भेद । सब संसय का होवै खेद ।।
सदगुरु बचन सुणैं मन ल्याइ । ते निश्चै पंचम गति जाय ।।४६४६।।

सोरठा

मुनिवर ग्यांन अनन्त, दरसन ग्यांन चारित्र सौं ।।
कहत न आवैं अन्त, बांणी भेद समझावणी ।।४६५०।।

सायर अगम अथाह, ताहि कवण विध तिर सकैं ।।
ज्यूं अंजुलि भरि बांह, ताही किम सरभर करैं ।।४६५१।।

चौपई

दरसन ग्यांन चारित्र संजुक्त । प्रलभ बाल कहणे की सक्ति ।।
श्रुतग्यानी कहैं वेद बिचार । ते कहा जाणैं कहैं निरधार ।।४६५२।।

मैं मति थोडा करूं बखाण । अणुमात्र मैं भाखुं ग्यांन ।।
जीव तत्व सब सौंज अनूप । एक सिध एक संसारी रूप ।।४६५३।।

अजर अमर सिद्धालैं सिध । भ्रमैं जीव संसारी विविध ।।
स्वरग मध्य पातालैं बास । चहुंगति भ्रम्या न पुंजी आस ।।४६५४।।

क्षेत्र काल भाव तप होइ । समकित सौं दिढ राखै कोइ ।।
संगति साध लहैं तब ग्यांन । ते जीव पावैं निरवांन ।।४६५५।।

करैं धरम पावैं गति देव । मध्यलोक मानुष्य सुख एव ।।
तिरजंच जोनि मैं दुख धरण मूल । पापैं लहैं नर्क असूल ।।४६५६।।

नरकों के दुख वर्णन

सप्त विसन का सेवण हार । सात नरक दुख सहै अपार ।।
रत्न शर्करा बालुक पंक अरु धूम । तम महातम ए सातौं भूमि ।।४६५७।।

हुंडक देह काया बहु बडी । भूख पियास सीत उसन बडी ।।
मुख का छिद्र हैं सुई समान । दुख का अंत न जानुं समान ।।४६५८।।

ज्वारी चोर का काटैं हाथ । परदारा ताती पुतली साथ ।।
सुरा पांन कुं तातो रांग । आखेटक का काटैं आंग ।।४६५६।।

वैतरणी ताता है जिहां । डासैं पकडैं उनु नैं जिहां ।।
मांस अहारी मुख ताता प्यंड । छेदन भेदन कीजिए खंडो खंड ।।४६६०।।

केई ऊपर आरा धरैं । चीरैं देह टूक दोइ करैं ।।
बहुरि हुवै देह की देह । मारैं मुदगर कीजे खेह ।।४६६१।।
पारा जिम समटैं खंड फेर । पाप्या नैं रासई घेर ।।
जिहि जीव का खाया मांस । तिण कारण वे पावैं त्रास ।।४६६२।।
निस भोजन अणगालो नीर । ईहां न जाणैं कैसी पीर ।।
मिथ्यानी कुं ऐसी गती । जिनबांणी कुं न धारैं चिती ।।४६६३।।
देवसास्त्र गुरु निसचै नहीं । ताहि नरक गति आवै सही ।।
जे दुख मैं वरणों समझाइ । ताका पार न पाया जाइ ।।४६६४।।

दूहा

उपसम वेदक खाइका, समकित विध है तीन ।।
जे मनमें निसचै धरै, ते जाणौं परवीन ।।४६६५।।

चौपई

जाकैं है समकित दिढ चित्त । ते गति खोटी भ्रमैं न नित ।।
लहैं मुकति समकित परसाद । समकित बिना करणी सब बाद
।।४६६६।।
अंडज पोतज गर्भ उतपत्ति । स्वेतज सनमूर्छन उपजत्त ।।
पुदगल जानु ए विध धीर । अहारक तैजस कारमन सरीर ।।४६६७।।
संख्यात परदेसी अवर असंख्यात । अनंत प्रदेसी जीव की जाति ।।
अष्ट अंग ग्यांन का भेद । पंच खरे तीन खोटे रेद ।।४६६८।।
मतिश्रुत अवधि मनपरजय भनी । पंचम ग्यांन कह्यो केवली ।।
चक्षु अचक्षु अवधि ए ग्यांन । दरसन मन परजय केवल प्रमांन ।।४६६९।।
कुमति कुश्रुति खोटी अवधी । करैं दुर आतमा कुं सोधि ।।
मध्यलोक में अढाई द्वीप । अवर समुंद्रह इहै समीप ।।४६७०।।

द्वीप समुद्र वर्णन

जंबुद्वीप जोजन इक लाख । लवण उदधि चउधां पास ।।
जिह मैं बडा सुदर्शन मेर । षट् कुलाचल तिग वहु फेर ।।४६७१।।
हिमवन महा हिमवन नील । विजयारध परवत असथूल अमील ।।
सीता नदी सीतोदा और । चउदह नदी निकसी गिरि फोड ।।४६७२।।
क्षेत्र भरत अैरावत होइ । इस विध क्षेत्र दसों दिस सोइ ।।
घटैं बढैं तिहां व्यापै काल । एक सो साठ खेत्र सुविसाल ।।४६७३।।

सदा सासता है वह खेत । दीप अढाई मांहि समेत ।।
धातकी पुष्करार्ध दुगणां जांण । मानुखोत्र लगि पुरुष प्रवांन ।।४६७४।।
तामैं व्यंतर किन्नर बसैं । किंपुरुष महागंधर्व दिसैं ।।
यक्ष राक्षस भूत पिचास । जोति पटल जोतीस्वर सांच ।।४६७५।।
नवग्रह नक्षत्र सतावीस । सोलह स्वर्ग सागर बाईस ।।
सौधर्म ईसान सानत्कुमार । महिंद्र ब्रह्म ब्रह्मोत्तर सार ।।४६७६।।
लांतव कापिष्ट शुक्र महाशुक्र । सतार सहस्त्रार सह शुक्र ।।
आनत प्रानत आरन अच्युत । सोलग स्वर्ग कहे गये भगवंत ।।४६७७।।
ताके ऊपर नव ग्रैवेयक । उस परि पंच अनुत्तरे ।।
विजय विजयंती जयंत । अपराजित सरवारथ सिद्धि निवसंत ।।४६७८।।
मुगति क्षेत्र है ताके अंत । तिण ठां पहुंचा सिद्ध अनंत ।।
रामचन्द्र कीया परसन्न । मुगति भेद समझावो भिन्न ।।४६७९।।
मिटै संदेह संसय की पीर । अजर अमर नहीं व्यापै ईर ।।
दरसन ग्यांन का नाहीं छोड । सदा सरवदा नहि है विछोड ।।४६८०।।
संसारी कुं कहै न सुख । सुभ असुभ तैं सुख मनैं दुःख ।।
शुभ संजोग तैं सुख का मूल । माया मोह में रहिया भूल ।।४६८१।।
भया विछोह सब सुख विसरया । रोग सोग आरत में भरया ।।
ए सुख जाणों दुःख समांन । मोक्ष सुख का अंत न आन ।।४६८२।।

सुख की तरतमता

सबतैं सुखी जानौं प्रथीपति । उनतैं सुखिया है चक्रवति ।।
किन्नर देव हैं इनतैं सुखी । जोतगी के सुख बहुतैं बकी ।।४६८३।।
इन्द्र धरणेन्द्र सम ही तैं बाधि । सरवारथसिध सुख अगाध ।।
सबतैं बड़ा मोक्ष का सुख । तिहां न व्यापै कबही दुःख ।।४६८४।।
तैं सुख किस पैं बरणे जांहि । असी वसतु मही पर नांहि ।।
रामचन्द्र कीया नमस्कार । मोष्य पंथ किम उतरे पार ।।४६८५।।
सरवभूषण बोल्या केवली । जिन धरम वांणी सबतैं भली ।।

तत्व वर्णन

सप्त तत्त्व षट द्रव्य बखांन । नो पदार्थ नैं दरसन ग्यांन ।।४६८६।।
पंचकाय लेश्या हैं षष्ट । द्वादश अनुप्रेष्या जू श्रेष्ठ ।।
दयाधरम दस विध स्यौं करै । सोलह कारण का व्रत धरै ।।४६८७।।

सम्यक्त सु' पाले चारित्र । ते मुनि कहिए सदा पवित्र ।।
जोतैं जोति मिलैं जब प्राइ । तब वह भया निरंजन राई ।।४९८८।।

सम्यक बिना करें इह तपं । ग्यान कहै कै सुमरें बहू जपं ।।
मिथ्या सौं ल्यावैं वे चित्त । उनको होवै नरक की थित्ति ।।४९८९।।

प्रातम ग्यान दीपक की जोइ । पावैं सुगति सिव तब होइ ।।
करम सकल हो जावें दूरि । रहै ग्यान नित प्रति भरि पूरि ।।४९९०।।

दूहा

जे जीव दृढ समकित धरैं, मिथ्या धरम निवार ।।
निसचै पावैं परमपद, भुगतैं सुख अपार ।।४९९१।।

चोपई

जीव तत्व संसारी दोइ । भव्य अभव्य उभय विध होइ ।।
अभव्य तपस्या करैं अनेक । काया कष्ट बिना विवेक ।।४९९२।।

जै पावैं नवग्रीवक थांन । बहुरि भ्रमैं भवसायर आन ।।
मुकति न जाय पावई निगोद । अभव्य न सीझै पचरहै प्रमोद ।।४९९३।।

भव्य जीव समकित दिढ धरैं । ले चारित्र भवसायर तिरैं ।।
लहै मुक तिहां सुख निधान । दरसन तहाँ अनंत बल ज्ञान ।।४९९४।।

पुदगल है बीजा तत्त्व । कासन मध्य होइ सब थित्ति ।।
दया भाव पूजा संजुत्त । मानव देह बिना न होइ मुक्ति ।।४९९५।।

प्राश्रव होइ करम इह भांति । ज्यौं सरवर में नीर बहात ।।
बांधै पाल बधं तिहां नीर । बरसैं घनहर गहर गंभीर ।।४९९६।।

संवर पंचम तत्त्व का भेद । पालई कोडि करैइ जब छेद ।।
बधता नीर सकल बह जाइ । जो कछु पहिले रहै ता ठांइ ।।४९९७।।

निर्जरा तत्व षष्ठमां जान । सुकैं नीर जब भान तपै आन ।।
ऐसैं करम निर्जरा होइ । मोख तत्व सातवां सोइ ।।४९९८।।

रामचन्द्र सुणि बोलै बैंन । सबतैं उत्तम समझो जैंन ।।
सकल बात को मिट्यो संदेह । झूठी माया जांणी एह ।।४९९९।।

जीव का सगा न संगी कोइ । धर्म सहाई जीव कौं होइ ।।
राज विभूति तजौं सब नारि । मोया लछमन मोह अपार ।।५०००।।

जिसकी माया न छूटै घडी । कैसे दिख्या पालौं खरी ।।
सकल भूषण बोलैं सुविचार । तुम हो मुक्तिगामी भवतार ।।५००१।।

कोई दिन तुम भुगतो राज । पाछै करो आतम काज ।।
उपजै केवल पावै मुकति । सुर नर सकल करैंगे भगति ।।५००२।।

इतनी सबकै निसचै भई । सेवा रामचंद्र मन दई ।।
सब काहु जाण्यां जगदीस । सुर नर सकल करैंगे भगति ।।५००३।।

अडिल्ल

श्री रामचंद्र सुनि धरम महिमा करी
जैन धरम सुं चित्त रहै पल पल घडी ।।
करई सेव सब लोग श्री रघुनाथ की
साधैं तप वन मांहि सुता जनक राय की ।।५००४।।

इति श्री पद्मपुराणे सीता दिख्या राम धरम श्रवण विधानकं

६६ वां विधानक

चौपई

विभीषण द्वारा प्रश्न

भभीषण बोलै दोई कर जोडि । कहो धरम वाणी अब होडि ।।
मेरे मनका मिटै संदेह । राम लछमण कुं घणां सनेह ।।५००५।।

किण कारण पाया वनवास । दंडक वनमें रहै निरास ।।
रावण पाई विद्या घनी । च्यार भेद ग्यानी अर गुनी ।।५००६।।

विद्याधर सेवैं सब आइ । तीन खंड के रावण राइ ।।
जा सनमुख जीत्या नहीं कोइ । चंद्र आदि मान भंग होइ ।।५००७।।

ज्ञानवंत जाणै राजनीत । परनारी परि डोल्या चित्त ।।
सीता कौं हरि लंका गया । ताथैं बहुत उपद्रव भया ।।५००८।।

लक्ष्मण कै करि रावण मुआ । पहिला बंध चोख्या नवा ।।
सीता पतिव्रता असतरी । इह कौं सदा विपति में परी ।।५००९।।

किह कारण चरचा करी लोग । राजि भोग में भए विजोग ।।
इनके भव भाखो समझाइ । मेरै मनका संसय जाइ ।।५०१०।।

सर्वभूषण द्वारा विस्तृत वर्णन

सर्वभूषण बोले भगवान । बारह सभा सुणैं दे कान ।।
जंबूद्वीप मई खेत्रवि भरत । दख्यण कोड नगरी समकित ।।५०११।।

भैंरदत्त सेठ बसे तस मधि । सुनंदा असतरी महा सुबुधि ।।
ताकै गरभ भए दो पूत । रूप लख्यण सोभा बहुत ।।५०१२।।

प्रथम धनदत्त दूजा वसुदत्त । जगबल एक प्रोहित सोहंत ।।
सागरदत्त वणिक तिहां बसै । कनकप्रभा कामिनी संग रसै ।।५०१३।।

गुणवंती ताकै पुत्तरी । रूपवंत ल्यावण्य गुणभरी ।।
जोवनवंती गुणवंती भई । पिता जाइ धनदत्त नैं दई ।।५०१४।।

तिलक करि श्रीफल दे गोद । ढोलंग्या करो हुवा मोद ।।
श्रीकांत नाम वणिक तिहां वसै । जाकै दीनार बारह कोडि लसै ।।५०१५।।

उनकै मन तब बैठी बुरी । धनदत्त सुं सगाई क्युं करी ।।
असी नारि सोभै मो गेह । माता सुंणि पुत्र को नेह ।।५०१६।।

धीरज मों समझावै बात । चिंता सों बहु हुवै दुखी गात ।।
अब मैं जाइ करि करूं उपाव । राखि पुत्र अपणां मन ठांव ।।५०१७।।

माता वचन सुणि छोड्या सोच । सागरदत्त घरि श्राय पहुंत ।।
कनकप्रभा सुं जाइ करि मिली । मनकी बात प्रगासी भली ।।५०१८।।

कहां नयदत्त कहां धनदत्त । वाका घर श्राया सुम चित्त ।।
कन्या दीज्यै इसा नैं जांइ । मेरै लखमी की अधिकाइ ।।५०१९।।

द्वादस कोड़ि दीनार घर मांहि । मेरी सरभर कोई नांहि ।।
फेर सगाई अपनी लेहु । मेरा पुत्र नैं कन्या देहु ।।५०२०।।

रतनप्रभा सुणि मन ललचाइ । कहै कंत नैं और ही दिखाइ ।।
श्रीकांत है महा बलवंत । रूप लछ्यण महा सोभावंत ।।५०२१।।

सब तैं सुखी लक्ष्मी का धणी । वाहि देहु कन्या आपणी ।।
धनदत्त सेती लेहु छुडाइ । बोली असे धरणी इह भाइ ।।५०२२।।

वसुदत्त सुंणि कोप्या बहु भांत । क्रोध चढे मसलै दोउ हाथ ।।
श्रीकांत खोटी बुधि लाग । चाहै धनदत्त की मांग ।।५०२३।।

जगबल सेती मता बिचार । गह्या खडग छिज्या तिह बार ।।
अरध समय अंधियारी रयन । वसुदत्त चल्या कपि राते नैन ।।५०२४।।

नील बरण के वसतर साजि । जतन किया वैरी कैं काज ।।
श्रीकांत की पहुंच्या पौल । सोवत लह्या बगीचै ठौरि ।।५०२५।।

वसुदत्त नैं तब सोच्या ग्यान । अणचिंत्या का हणुं पराण ।।
श्रीकांति सों जणाई सार । तो मैं बल अधिक तो संभार ।।५०२६।।

मो सु' सूं करि जुध अपार । श्री कांति कर गही तरवार ।।
दोनु' भुम्या एकण ठांव । भए मृग बंध्याचल भाव ।।५०२७।।

सागरदत्त सु'णि इह बात । रत्नप्रभा समभाई इह भांत ।।
इह कन्या धनदत्त कू' दई । तेहैं उपाधि उठाई नई ।।५०२८।।

ता कारण तैं' श्रुतनी करी । वाके प्राण गए इह घरी ।।
धनदत्त को दे कन्या विवाह । कीए मंगलाचार उछाह ।।५०२९।।

लिख्या लगन साधी सुभ घडी । विवाहि दई गुणावंती तिह घडी ।।
बीता दिन बहुतैं इह भेस । चरचा करैं लोग इह देस ।।५०३०।।

इनका विवाह अभाग्या भया । वसुदत्त जीव एण कारण गया ।।
असी चरचा सु'णी धनदत्त । वैराग भाव धरयो उन चित्त ।।५०३१।।
धिग विवाह धिग यह असतरी । ता कारण विपत्ति मोहि पडी ।।
तज्या देस वन मारग गह्यौ । वन में रहै का या दुख सह्यौ ।।५०३२।।

गुणवंती छोडी घर मांझ । कंत बिना झुरै दिन सांझ ।।
मिथ्या धरम निसचैं मन धरैं । जैन धरम की निंदा करैं ।।५०३३।।

मरि करि भ्रमैं मृगनी जाइ । विंध्याचल में पाई ठांइ ।।
जिहां थे मृग दोन्यु' इस भेर । हिरनी देख लई घना घेर ।।५०३४।।

दूजा मृग दउड्या पाछैं ताहि । दोनूं मरि करि हूवा बाराहि ।।
उहां तैं मरि हाथी दोई भए । भैंसे सांड की पीधीता धए ।।५०३५।।

बहुर सीयाल भ्रमैं जौन । वैर बंध लाग्या इह गौन ।।
वह धनदत्त फिरैं वन बीच । बिना नीर तीरषा भए मीच ।।५०३६।।

भई रयण तिहां देख्या साध । गहै मौन जिन धरम आराध ।।
उनके कमंडल परिदिष्ट करी । जल पीवण की इछ्या की घरी ।।५०३७।।
मुनिवर अवधि विचारै ग्यांन । इह है भवि जीव इस थांन ।।
या कौं दीजे दया संबोध । करुणा भाव पुजैं इहै शोध ।।५०३८।।
मौन छोडि बोलैं तब जती । निस भोजन तैं खोटी गती ।।
जल पीवत होवई पाप । चहुं गति में' सहै संताप ।।५०३९।।
अपणैं हाथ हम जलनं देह । तेरा मन इच्छै तो लेहू ।।
धनदत्त के मन निसचै भई । अनपांणी निस आखडी लई ।।५०४०।।
देहि छांडि सौधर्म विमान । महा रिधवंत सब मैं' प्रवांन ।।
मुगति भाव श्रेष्ठपूर नगर । मेर सेठ नौमी सुरगर ।।५०४१।।

धारणी नाम थी पटधरणी । सीलवंत सोभागु वणी ।।
पदमपुत्र जसके गरभ भया । देव जीव सुख दाई थया ।।५०४२।।

निसतर छाया परमेष्ठ । श्री दत्ताराणी सम्यगदृष्टि ।।
प्रजा सुखी दुखी कोई नांहि । सघन गेह तिहां शीतल छांह ।।८०४३।।

पदमरुचि [illegible] असव[illegible] । वृष[illegible] देख्या [illegible] तिह [illegible]
अंत कांडवे थी पड्या बिललाइ । वाहि देखि उपजी दया आइ ।।५०४४।।

उत्तर भूमि वाकैं ढिग गया । पांच नाम श्रवण में दिया ।।
श्रीदत्ता गर्भ उपज्यो सो आइ । वृषभध्वज पुत्र कंचन सम काइ ।।५०४५।।

जनम समैं दीया बहु दान । सब ही का राख्या सनमान ।।
दिन दिन कुमर बधै सुख मांहि । सात बरस का हुवा नरनाह ।।५०४६।।

जिह वन में मुवा था बहैल । वा वन निकस्या करण सहैल ।।
देखि भूमि भव सुमरण लई । उतरा तिहां पिछली सुध थई ।।५०४७।।

हूं था वृषभ मरया या परंथा । पंचनाम किण ही कह्या खरा ।।
वहै प्रसाद राजा सुत भया । अब सुमरण चित में थया ।।५०४८।।

जेहूं मरता यूं ही परा । ग्रैंसा जनम कहां तैं धरया ।।
अब जे उसकूं देखूं आजि । देहिं सकल वाहि कूं राज ।।५०४९।।

राज कुंवर इहै आज्ञा दई । चैत्यालय नींव दिवाबो सही ।।
कोस एकलौं देहुरा करया । तिहां चितराम बहुत विध धरया ।।५०५०।।

भांति भांति के चित्र संवारि । वेद पुराण लिखाए तिह बार ।।
जिन चौईसौं बिंब कराइ । वृषभ की सूरत पौलि लिखाइ ।।५०५१।।

तिहां रखवाले राखे घणे । दुष्ट मिथ्यादृष्टि कूं हणे ।।
पदमरुचि सेठ आया देहुरे । सहस्रकूट ध्वजा फर हुरे ।।५०५२।।

देखी पौलि वृषभ का रूप । पिछली सूरत संभालि स्वरूप ।।
ध्यान लगाइ रह्या तिहां सेठ । किंकर गया राजा कै ढिठ ।।५०५३।।

कही बात ब्यौरा सुं जाइ । आया कुंवर जिण मंदिर ठांइ ।।
पदमरुचि देख्या राजकुमार । रहे थकित होइ इतनी बार ।।५०५४।।

तब पूछै वृषभध्वज राइ । तू कहा देख रह्या रिझाइ ।।
कहै सेठ पिछला विरतांत । सुनकरि आणंदा बहु भांति ।।५०५५।।

धन्य पदम रुचि तेरी बुद्धि । तातैं पाई मैं यह रिद्ध ।।
तुम प्रसाद मैं यह गति लही । जो मन इच्छै सो ह्वै सही ।।५०५६।।

निसनक्षा नैं दिष्या लई । राजविभूति वृषभध्वज नैं दई ।।
वृषभध्वज पदम रुचि । भुगतैं राज कर मन सुचि ।।५०५७।।

पहली बारी धरम की साइ । सुख भुगतैं सब मन भाइ ।।
वृषभध्वज राज करया बहु वर्ष । समाधिमरण कीयों बहु हर्ष ।।५०५८।।

ईसान स्वर्ग पति हुवा देव । भुगतैं सुख किंनर करैं सेव ।।
पदमरुचि धरम के ध्यान । ईसान स्वर्ग में पाया विमांन ।।५०५९।।

विजयारध पच्छिम विदेह । नंदावत नगरी उत्तम गेह ।।
नंदीस्वर तिहां भूपती । कमलप्रभा राणी शुभ मती ।।५०६०।।

पदमरुचि जीव गरभ अवतरया । नयणानंद नाम तिहां धरया ।।
नंदीस्वर धरि संयम भार । नयनानंद नैं राज दिया तिह बार ।।५०६१।।

बहुत दिवस उन कियो राज । तप करि आप संभारया काज ।।
महेन्द्र स्वर्ग पाया सुख ठाम । उहां तैं चया खेमांकर गांम ।।५०६२।।

मेरु सुदरसन विमल वाहन भूप । पदमावती राणी सस्वरूप ।।
श्रीचन्द्र जनमियां कुमार । पिता नैं सौंप्या सब संसार ।।५०६३।।

विमलवाहन लिया संयम योग । श्रीचंद तिहां भोगवै भोग ।।
समाधिगुपति मुनि आगम भया । ताकै संगि सिष्य तप किया ।।५०६४।।

वनमें करै तपस्या घणी । इनकी सूरत नगर में सुणी ।।
चले लोग बहु मुनि कीं जात । बाजंतर बाजैं बहु भांति ।।५०६५।।

राजा जब बाजंतर सुण्या । मनमें सोच किया तब घणां ।।
नहीं कोई तीरथ नहीं कोइ परब । तिहां चली परजा यह सरब ।।५०६६।।

किंकिर आइ जणाई सार । मुनिवर आए वन है मझार ।।
दरसन कौं परजा इह चली । भूपति सुणि उपजी मन रली ।।५०६७।।

मुनि के पास जाना

उतरि स्यंघासण करी डंडोत । नरपति चल्या तब लोग बहोत ।।
दरसनं पाइ परदक्षनां दई । नमस्कार करि पूजा भई ।।५०६८।।

पूछै धरम जोडि दोइ हाथ । वांणी कहो श्री मुनिनाथ ।।
मुनि समाधि कहै बखांन । च्यार वेद के उत्तम ग्यान ।।५०६९।।

प्रथमांनुजोग प्रथमही जांन । करणानजोग दूसरा बखांण ।।
चरणांनजोग द्रव्यानजोग । इणके भेद सुणैं सब लोग ।।५०७०।।

नव विध है इणां का भेद । अक्षेपनी प्रछिनपनी पुंन भेद ।।
निछेपनी निछेप का संवेदनी । संसाभिवेद निरवेदनी ।।५०७१।।

पुंन भोगवं राग कारनी । जती सरावग विध सब भणी ।।
राजा सुणत भयो वैराग । राज विभूत कुटंब सब त्याग ।।५०७२।।

धुरतकांत पुत्र को राज । आप किया दिगंबर साज ।।
समाधिगुपत मुनिवर ढिग जाई । दिक्षा लइ मन वच काइ ।।५०७३।।

तपस्वी जीवन

दया भाव आतम सुं चित्त । सूक्षम बादर त्रस थावर थित ।।
सब जीव जाणैं आप समान । क्रोध लोभ तजि माया मांन ।।५०७४।।

मास उपवास पारणां एक । कबही च्यार मास की टेक ।।
दान अदत्ता भूल न लेइ । उदंड बिहार इह विध सों करेइ ।।५०७५।।

कायोत्सर्ग पदमासन जोग । पूजा करें सकल तिहां लोग ।।
रहै मौनि निसवासर तिहां । धरम हेत कबही कछु कहां ।।५०७६।।

मुनि वाणी जीव का आधार । भव्य सुणं ते उतरैं पार ।।
मिथ्यादृष्टी के हिये न सांच । सेवै विषइंद्री सब पांच ।।५०७७।।

सकल विषय छंडी मुनिराज । संसारी सुख मन न सुहात ।।
आप तिरें त्यारें बहु जीव । असा साधु धरम की नींव ।।५०७८।।

सहस अठारहै अंग समेत । सील व्रत पालैं करि हेत ।।
त्रिण समान परिग्रह है नहीं । दसौं दिसा अंबर है सही ।।५०७९।।

सुमति पांच अरु तीन गुपति सही । बारह व्रत विध सुं पालैं वही ।।
सहै परीसा बीस अरु दोइ । बारह अभ्यंतर तप जोइ ।।५०८०।।

पडरासी किरिया कौं करैं । अठाईस मूल गुन धरैं ।।
समकित सौं निश्चौ है । चित्त अनुप्रेक्षा सु विचारैं नित्त ।।५०८१।।

सीयालै सरवर की पाल । पडै सीत तिहां महा विकराल ।।
ऊनालै परबत पर जोग । छोडि सकल जालि का भोग ।।५०८२।।

बरखा काल वृक्ष तल खरे । तिहां दौ च्यार मास नहीं टरैं ।।
मछर डांस अति डसैं बयाल । निरभय निचित मन की चाल ।।५०८३।।

देही छोडि ब्रह्म सु विमांन । भया इन्द्र महा बलवांन ।।
दस सागर की पूरण आय । ते सुख किस पैं वरण्यां जाई ।।५०८४।।

मृनाल कुंड नगर का नांव । विजयसेन राजा तिहं ठांव ।।
रतनचूला ताकै असतरी । वज्रकुमर जनम्या सुभ घडी ।।५०८५।।

हेमवती परनाई नारि । स्वयंभ पुत्र जनमीया कुमार ॥
श्रीभूत पुरोहित दयावंत । स्वस्तमती स्त्री महागुनवंत ॥५०८६॥

मृगनी जीव भ्रमी बहु जौनि । भई हथनी गंगातट गौन ॥
कर्दम माहि हथनी थकी । उहां तैं बाहर निकल नहीं सकी ॥५०८७॥

व्याकुल भई मरण के भाव । तरंगवेग विद्याधर नाम ॥
आकासगामनी गया था जात । याहि देखि करणा भई गात ॥५०८८॥

उतरि भूमि पढ़े नवकार । सरणां दए च्यार परकार ॥
हथनी मरि प्रोहित के ग्रेह । पुत्री भई सकोमल देह ॥५०८९॥

हुई बुध भई संभाल । मुनीस्वर देखि हंसी बहु बाल ॥
पिता कहैं उसनै समझाइ । ए मुनीस्वर ममता नहीं काए ॥५०९०॥

इनकूं हंस्या होय बहु पाप । भव भव सहै दुःख संताप ॥
ऐसी सुणी पिता की बात । मनमें ग्यांन धरया बहु भांत ॥५०९१॥

सुण्या धरम जिन मारग गह्या । दिढ सेती समकित बहु लह्या ॥
कन्या भई विवाहन जोग । रच्या स्वयंवर आए लोग ॥५०९२॥

स्वयंभु कुंवर इह इछ्या धरै । जे कन्या मुझ कौं ही वरै ॥
प्रोहित कहै कन्या जाकुं देव । सम्यक्त करै जिणेस्वर सेव ॥५०९३॥

संभ कुंवर मिथ्याती घणां । प्रोहित सोची चित्त आपणां ॥
इह राजा मैं सरणैं बसूं । जे इह कन्या यवरै वेस्यूं ॥५०९४॥

या सेती मुझ बांधै बैर । अब छिन मांहि करूं कछु फेर ॥
मंडप दूरि करया तिह बार । सब कुंवर मन बैर अपार ॥५०९५॥

इक दिन मारया प्रोहित श्रीभूत । छोडे प्राण सम्यक्त संजुत्त ॥
सहुोत्तर पाइया विमाण । उह सम सुखी न दूजा जान ॥५०९६॥

वेदावती प्रोहित की सुता । व्यापी ताहि काम की लता ॥
वेदावती करै तब सोच । संभकुमर सौं वांछै रुचि ॥५०९७॥

सुपनां में भुगतै बहु भोग । जागी तबै उसे व्याप्या सोग ॥
धिग धिग ए पांच इन्द्री के सुख । व्यसण भ्यंतर फिर होवै दुःख ॥५०९८॥

मो कुं तो उपजी थी कुबुधि । विषया मिलाय बगाया चित्त ॥
अपणां मन बहुत ही भिष्ट । धरो ध्यांन जिन समकित दिष्ट ॥५०९९॥

आरजका हरिकांता के पास । दिक्ष्या लई सुगति की आस ।।
करैं तपस्या वन में जाइ । मास उपवास पारणां कुं आइ ।।५१००।।

तपकरि देह जोजरी करी । समाधि मरण कीया तिंह घडी ।।
पहुंची अछ्योत्तर कैं थान । देवंगना भई सुजान ।।५१०१।।

संभु कुंवर सुरण करैं विजोग । वेगवती का व्याप्या सोग ।।
अंत समझ करि सोच्या ग्यांन । दिष्या लई जती ढिग आन ।।५१०२।।

स्वयंजे कौं कीया सरब का राव । प्रभासकुंद भया तिहां नाउ ।।
प्रभासकुंद कौं दीया राज । पिता किया दिगंबर साज ।।५१०३।।

प्रभासकुंद राजा अति बली । प्रजा सुखी मानैं सब रली ।।
एक दिन विचित्र सेन मुनि पास । सुणियो धरम कुगति को नास ।।५१०४।।

छोडया राज भोग संसार । दिक्षा लई संयम का भार ।।
तेरह विध सौं चारित्र धरया । छठे मास पारणां करया ।।५१०५।।

इह विध सौं करैं तपस्या आप । जनम जनम का टूटैं पाप ।।
राग दोष तजि आतमध्यांन । ग्रीषम रुति परवत पर आन ।।५१०६।।

सिला ढूंढ ऊपर तपैं सूर । चार मास तपैं इहु विध पूर ।।
बरखा काल रूख तल जाइ । तीन काल तप सौं मन ल्याइ ।।५१०७।।

मांछर चूंटें देही दहैं । बेलि लपट देही से रहैं ।।
सीयालै हेमांचल ठौर । गंगातट सीत को जोर ।।५१०८।।

बहुत बरस ऐसा तप किया । कनक प्रभा खेचर आइया ।।
समेद सिखर जावैं था जात । ताहि देख चित्या इह भांत ।।५१०९।।

धन्य इन्है खेचर गमन आयास । जो मन चलैं तो पुरैं आस ।।
जहां मन करैं तिहां इह जाइ । धन्य है विद्याधर एह राइ ।।५११०।।

मेरे तप का एह फल होइ । मो सा बली न दूजा कोइ ।।
तीन खंड का पाऊं राज । विद्या फैरैं करौं मन काज ।।५१११।।

देही छोडि शांति कुमार । रतनश्रवा घर लियो अवतार ।।
केकसी गरभ दसानन भया । पाछैं रावण नाम इह थया ।।५११२।।

धनदत्त जीव भयो रामचन्द्र । वसुदत्त लछमन बली अनंद ।।
वृसभध्वज भया सुग्रीव । जगवली ते भभीषण जीव ।।५११३।।

विभीषण का पुनः प्रश्न करना

गुणवान भामंडल देह । गुनवती भई जनक के गेह ।।५११४।।
भभीषण बोलैं दुई कर जोडि । बालि तणां भव भगो बहोडि ।।५११५।।

किम रावण सों भयो विरुद्ध । करी तपस्या उन किन ही बुध ।।
क्यूं रावण उठाया कैलास । तिण ठां भया मान का नास ।।५११६।।

उनका भव व्यवरा सु कहो । इह मो मन का संसय दहो ।।
विंदारण बन में एकेक मृग । इह मांहि सदा उपसर्ग ।।५११७।।

सामायिक करै था एक मुनी । उन मृगने धरम निसचै सुनी ।।
देही तजि भै रावत खेत्र । बृहत राजा सिव ती मोहत्र ।।५११८।।

मेघदत्त है मृग का जीव । भया पुत्र धरम की नींव ।।
विरक्त होय करि भया सचेत । जिनवाणी सूं ल्याया हेत ।।५११६।।

अणुव्रत पालैं वे घर मांहि । रागद्वेष मनमें कछु नांहि ।।
समाधिमरण सों छोडी देह । ईसान स्वर्ग देव कै ग्रेह ।।५१२०।।

पुरब विदेह विजयवंती देस । कोकिला नयर कांत सौम नरेस ।।
रतनाखी राणी गरभ आई । ईसान स्वर्ग सें चये तिह ठाइ ।।५१२१।।

सुप्रभ नामक भया कुमार । रूप लक्षण गुण महा अपार ।।
जोवनवंत भए जु कुमार । पिता ने राज दयो तिह बार ।।५१२२।।

आप तात दिख्या लई जाइ । करैं राज ते सुप्रभ राइ ।।
एक दिवस मुनि पासैं गया । सुण्या धरम संयम व्रत लिया ।।५१२३।।

तेरह बिध पालैं चारित्र । रागदोष जीते दोइ सत्र ।।
बाईस परीस्या सहे बहु बरस । आतमध्यान धरया बहु रहस ।।५१२४।।

तप करि गया सरवारथसिद्ध । तिहां ग्यांन की पूरी रिध ।।
चरचा मांहि तिहां बीतैं घडी । सकल ग्यांन रिध पूरण जुरी ।।५१२५।।

उहां तैं चया किपद सैं ग्रेह । बालि पुत्र कंचन सम देह ।।
तिसकै सदा निरंजन ध्यान । चित मांहैं कछु न आवै आन ।।५१२६।।

रावन सों तब हुवा वाद । दया निमित्त छोडे विष वाद ।।
गिरि कैलास कियो तप जाइ । रावण तिण थाणक सूं आइ ।।५१२७।।

चक्या बिमाण कोप के भाइ । कैलास परवत लिया उठाइ ।।
मुनिवर समझ्या ग्यांन सौं देखि । दयाभाव अंतरगति पेखि ।।५१२८।।

बहुत साध गिर ऊपर रहैं । इह पापी सगला नैं दहैं ।।
चैत्यालय ते श्री जिनदेव । उनकी दया विचारैं भेव ।।५१२९।।

पदम अंगुष्ट सेती गिरदाव । धरयो मेर पातालैं जाँवि ।।
दशानन चिघारयो तिहां । सकल साथ सौं रुदन करै जिहां ।।५१३०।।

मुनिवर कैं मन आई दया । पग उठाइ ऊंचा कर लिया ।।
रावण मान भंग तब भया । नमस्कार बालि कुं किया ।।५१३१।।

मन वैराग भया तिह बार । उभा छोडया सब परिवार ।।
तब धरणेन्द्र विचारैं ग्यांन । यह प्रतिनारायण उपज्या आन ।।५१३२।।

इनका है असा नियोग । भुगतैं तीन खंड का भोग ।।
जैं इह दिक्षया ले धरि ध्यान । त्रेसठ सिलाका होवैं दान ।।५१३३।।

धरणेन्द्र तब समोध्या ताहि । सक्ती बाण दे दीया ताहि ।।
ताहि समोधि दीया सक्ती । फेर संभाल्या मुगत्या जुक्ती ।।५१३४।।

तीन खंड जीत्या सब देस । लंका आय करै सुखसेस ।।
करम उदै ते भूमिगोचरी । उनै आई लंका स्थिति करी ।।५१३५।।

मारया रावन लीया बैर । जीत्या तीन खंड सब गैर ।।
सतपुर नगर पुनरबसु राइ । भूमिगोचरी बली अधिकाइ ।।५१३६।।

चक्रवर्ति की सुता विवाही । विद्याधर ले भाज्या ताही ।।
उन नारी तप बहु दिन किया । छातपुर पति पुनर्वसु की त्रिया ।।५१३७।।

पुनर्वसु कुं भये बहु सोग । राज छोड करि लीया जोग ।।
करी तपस्या आतम ध्यान । अंत समय बांध्या निदांन ।।५१३८।।

मैं बलहीन तो त्रिया ले गया । वा कारण बहुतैं दुख भया ।।
मेरे तप का इह फल होइ । मो सा बली न दूजा कोइ ।।५१३९।।

पुनर्वसु का जीव लक्षमण हुआ । या के करसैं रावण मुवा ।।
वेगवती मुनि निंदा करी । झूठा वचन कह्या तिन घडी । ५१४०।।

मुनि नैं कही सील भंग किया । मिथ्याती यूं मनमें वारिया ।।
उदय भया यह करम अपूठ । समकित ये माना सब झूठ ।।५१४१।।

वेगवती असी अगयांन । मुनि को दोख लगाया जान ।।
पाछैं समझि विचरी चित्त । पसचाताप करै वह नित्त ।।५१४२।।

मैं मूर्ख मुनि नैं लगाया दोष । कुमति ग्यांन का हुवा पोष ।।
अब इह पाप टरै किह भांति । मैं यूं ही दुःख दिया मुनि नाथ ।।५१४३।।

रिष निंदा है सब तैं बुरी । पाप पोट अपणें सिर धरी ।।
कठिन करम मैं किया अथाह । ऐसा दोष मिटै किह भाइ ।।५१४४।।

समभि जैन की दिख्या लई । तप करि फिर उत्तम गति भई ।।
पूरब करम उदय भया आइ । पाया कष्ट असुभ के भाइ ।।५१४५।।

सीता सती दिढ राख्या सत । फिर पावैगी पंचम गत्ति ।।५१४६।।

कवित्त

पर निंदा नहीं करें साथ जस ही कूं जाए हीं ।।
मिथ्या बचन नहीं जुगै, ताहि उत्तम जन मानही ।।५१४७।।

सील संयम दिढ्ढ धरै, दया करै मन ल्याइ ।।
परकारज परमारथी, मोक्ष पंथ सो लहाइ ।।५१४८।।

इति श्री पद्मपुराणे सरदार रामचंद्र पूरब भव वरननं विधानकं

१०० वां विधानक

अडिल्ल

सकल सभा मुनि पास भवांतर सब सुने ।
जनम जनम के भेद, सकल भूषण भने ।।
वैराग्य भाव भया लोग, नांम किहां लौं गिनई ।
रवि का होत उद्योत, अंधकारैं हनैं ।।५१४९।।

तिमिर जु गया सब भाजि, किरण रवि की जगी ।
घर बाहर उद्योत, अंधकार कहीं है नहीं ।।
तम जु गया सब भाजि, किरण रवि की जगी ।
घर बाहर उद्योत, सबैं सोभण लगी ।।५१५०।।

जे दिष्टांत प्रवीण तिनइं आणीं भली ।
परिहाजे जे अंधासुति हींण उनौं कं चित मिली ।।५१५१।।

कुलीस वक भवांतर बूझि । ब्योरा सुणि अंतरगति सूझि ।।
मन वैराग धरा बहु भांति । रामचंद्र सौं जोडे हाथ ।।५१५२।।

जीव भ्रम्या चहुंगति में आदि । समकित बिना जनम सब बाद ।।
भ्रमत भ्रमत नहीं पायी अंत । अब हुं थक्या सकती नहीं हुंत ।।५१५३।।

धरम वृक्ष की पाई छांह । तिह ठां बैठि मिटाऊं दाह ।।
दिख्या लेहूं रिषी के पास । गुरु संगति पूजै मन आस ।।५१५४।।

रामचंद्र बोलै समभाइ । तूं सुखिया कोमल है काइ ।।
सेज पटंबर फूलां भरी । भूमि सोंन कबहू नहीं करी ।।५१५५।।

पंचामृत लेता हो अहार । इस गोरस बहु सौंज संभार ।।
पल पल होई तुम्हारी सार । कैसे लेहू संजम भार ।।५१५६।।

जैन धरम की क्रिया कठिन । कैसें पलैं तुमारा जतन ।।
भूमि सोवणां निरस अहार । बाईस परीसह दुःख अपार ।।५१५७।।

घरि घरि भोजन लेहु उदंड । राव रंक कबहू भेद न मंड ।।
हम भी दिख्या ले हैं जाइ । हमारे संग होज्यौ रिखराइ ।।५१५८।।

कृतांतवक्र बोलै भूपती । एही वार मैं होउं जती ।।
फिर बोले आपण रघुनाथ । कब जावौ तब हमारे साथ ।।५१५९।।

लहै देवगति किसही सुरग । संभाल कीजियो मिटर वरग ।।
जौ मैं माया मांहि भुलाव । तुम संबोध ज्यौं मित्र सुभाव ।।५१६०।।

तब दिक्षा ले मैं भी तिरूं । बहुरि न भवसागर में पडू ।।
कृतांतवक्र कौं आग्या दई । सब ममता मन तैं मिट गई ।।५१६१।।

दूहा

कृतांत वक्र तब सोरसोग, मस्तक सुचिक्कम निकांस ।।
बहुतों ने दिख्या धरी, ध्यान मंत विख्यात ।।५१६२।।

चौपई

सीता के संगी आरजिका घनी, अधिक प्रताप बिराजे घणी ।।
सत अनै वस्त्र थिपै सब देह । रामचंद्र मन उपजा नेह ।।५१६३।।

रहे ध्यान धरि करैं विचार । मो संग डोली सब संसार ।।
लोगां कारण मैं दई निकार । तिह तै हुवा दुःख अपार ।।५१६४।।

अति कोमल सीता की देह । बनमें जोग लिया तजि गेह ।।
जे सई उत्तम सिज्या छोडि । पाट पटंबर सिज्या सौडि ।।५१६५।।

पान फूल कोमल आहार । सखी सहेली करतीं सार ।।
राग रंग पखावज बीन । कथा कहानी कहैं प्रवीण ।।५१६६।।

पूर्व कथा

तब सउवती थी सीता तहां । तब आईसा वन में लग गह्या ॥
वन में सिंह गरजनां करें । हसती चिंघाड़ें सब ही डरें ॥५१६७॥

सरस निरस मास के पाख । पर घर भोजन मुखतैं नहीं भाख ॥
वे दुख कैसे सीता सहे । बेर बेर रघुपति इम कहैं ॥५१६८॥

सरप सियाल भयानक घणे । ऐसे सबद जब सीता सुणैं ॥
कैसे जीवेगी उस ठौर । चउदह आठ परीसह सहै और ॥५१६९॥

संसार स्वरूप का किया विचार । रामचन्द्र समझे तिह बार ॥
धन्य सीता [illegible] । [illegible] दरसन को करया ॥५१७०॥

लखमण किया चरण कौं आई । सीता गुण बरणैं सुभाई ॥
धन्य सीता राख्या दिढ सत्त । अपवाद आया लोकों कै चित्त ॥५१७१॥

जे जल लेता विध्या जाई । रहता संदेह हर कै मन राई ॥
अगनि कुंडतैं जलहर भया । सब के मन का संसय गया ॥५१७२॥

दोनुं कुल की राखी लाज । आप किया आतम का काज ॥
पूरब भव पूज्या जिन देव । तो निसचै कीनी जिन सेव ॥५१७३॥

एक भवंतर पावै मोक्ष । बहुरि लहैगा देवतां सुख ॥
लवनांकुस करें नमस्कार । दई प्रक्रमा बारंबार ॥५१७४॥

भूपति सकल करें डंडोत । असतुति बोलैं लोग बहुत ॥
सब ही फेर नगर को चले । हय गय रथ पायक बहु मिले ॥५१७५॥

नर नारी देखैं बहु भाइ । बहुत सखी ऐसे समुझाइ ॥
ऐसी विभव सीतां गई छोडि । सहै परीसह वन की बोडि ॥६१६६॥

जैन धरम का दुरधर जोग । स्वरग लोक सम छांडे भोग ॥
कोई कहै धन्य रामचन्द्र । परजा कारण सह्या सब दुंद ॥५१७७॥

मोह तजि सीता दई काढि । विछोहा तन सह्या है गाढि ॥
कोई कहै सीता करी बुरी । पुत्र जणती ममता नैं करी ॥५१७८॥

मन में धरया न उनका मोह । पल में सब ही का किया विछोह ॥
ए बालक उपजे उस कुंख । खीर पिलाई पुत्र नैं पोखि ॥५१७९॥

ते माया दई सबै बिसारि । बैठी वन में तिहां उजाडि ॥
कोई कहै इह लीं सनमंध । घर परियण सब जाण्यां धंध ॥५१८०॥

तातैं धरि दिक्षा का भेष । बारहै विध तप करै असेष ।।
भव जल तिर तैं पाई मोक्ष । जनम जरा के टूटैं दोख ।।५१८१।।

रामचन्द्र मन्दिर मां गए । राजसभा में बैठत भए ।।
राणी सब अंतहपुर आइ । पूजा दान करैं बहु भाइ ।।५१८२।।

सोरठा

ल्याए आतम ध्यान, मोह माया सब परिहरी ।।
सीता सब त्याग, सुन्दर [illegible] ।।५१८३।।

इति श्री पद्मपुराणे सीता प्रवृज्या विधानकं

१०१ वां विधानक

चौपई

सीता की पूर्व कथा

श्रेणिक नृप कर जोडे हाथ । फेर धरम सुणावो नाथ ।।
लवनांकुस गरभ स्थिति करी । ते मुझ सकल सुणावो चरी ।।५१८४।।

स्यंघनाद वन भय की ठौर । तिहां सीता कुं आए छोडि ।।
महा विलाप सीता नै किया । कवण करम तैं ए दुख भया ।।५१८५।।

सिद्धारथसौं बहुत हित हुवा । कै पहिला कैं सनबन्ध नवा ।।
सिद्धारथ बहु विद्या पढाई । तै सब कहिए ससंय जाई ।।५१८६।।

श्री जिन की बानी सब हुई । भव आताप सगली बुझ गई ।।
गौतम स्वामी निरणय भणैं । सभा मध्य श्रेणिक भी सुणै ।।५१८७।।

जंबुद्वीप में क्षेत्र विदेह । किकदा नगर बसै बहु गेह ।।
रतिवरधन राजा सुपुनीत । सुदरसना रांणि सुपुनीत ।।५१८८।।

वाकै गरभ पुत्र दोई भए । प्रीतंकर हीतंकर सुख किए ।।
दिन दिन बढैं सयाने होई । कुल मंडण बालक ए होई ।।५१८९।।

सरब गुपति राजा मंतरी । राज विभूति तिहां अति जुडी ।।
बीजावल प्रधान की तिरी । उसकै मन उपजी मति बुरी ।।५१९०।।

रतिवरधन सूं संगम करौं । अपणौं जनम तब जाणउं खरौ ।।
राजा वन क्रीडा कौं चला । सरब गुपति मंदिर हितो भला ।।५१९१।।

ता मंदिर तलैं बैठा आइ । बीजावली उझकी झरोखै जाइ ।।
दोन्हुं की हुई दिष्टि च्यार । मुख सौं बोली पाप व्यौहार ।।५१९२।।

सीता की पूर्व कथा

राजा सुनि समझावै वईन । परजा कुं देखुं भरि नैन ।।
जैसे पिता देखै पुत्तरी । असी दिष्ट राख जे खरी ।।५१६३।।

जे राजा लुं करै अधरम । कुल कलंक लगावै बहु जनम ।।
तुम्हारा सेवक की नारि । मुख सौं कहिए बात संभारि ।।५१६४।।

बीजावली मनमें पिछताइ । मै कांइ बचन कह्या इहं भाइ ।।
मांन भंग हुवा इह घडी । अपणे मन बहु चिंता करी ।।५१६५।।

सरवगुपति अपणें घरि जाई । त्रिया बचन बोलै समझाई ।।
मैं ने आज सुणी है इक बात । तेरा कांम भ्रस्ट होया परभात ।।५१६६।।

राजा तौ परि कोप्या घणां । असा दुख तोकुं आइकै बण्यां ।।
सुणि प्रधांन अति करै विलाप । मन में चिंता अति ही व्याप ।।५१६७।।

राजमंदिर में देहु आगि । चहुंधां मलै न छुटै भागि ।।
रयण समै वे कीनां दहन । राजा जाग्या देखी अगनि ।।५१६८।।

निकस्या भूप सुरंग दुवार । दोनूं सीना संग कुमार ।।
सुदरसनां राणी अगनि में जली । भाजण कों नहीं रही गली ।।५१६९।।

रतनबरधन कासी मैं गया । सरवगुपति राजा तिहां भया ।।
कासिप राय कासी का धनी । बल पौरिष ग्यानी गुन गनी ।।५२००।।

सरवगुपति नैं भेजा दूत । मेरी आगन्यां मांनि बहुत ।।
इतनी सुणि तब कोप्या राव । रतनबरधन उन मारया ठांव ।।५२०१।।

जो सेवक ठाकुर को हणें । एह अनीत कहो कैसे बनें ।।
अब जू इन्हें लगाऊं हाथ । फेर न बिगारै काहु साथ ।।५२०२।।

कहा बरांक सरवगुपति । जिह की आगन्यां आणां निती ।।
जीवत पकडी हणुं पराण । धका दिवाया दूत है जांण ।।५२०३।।

दुत गया सरवगुपती पास । कासी बचन कहै सब भास ।।
असी सुणि सेन्यां कुं जोडि । कासी राय पैं कीनी दौडि ।।५२०४।।

घेरया नगरी नीसांन बजाय । सुणे सबद तिहां कासिप राइ ।।
उन भी सेना लई हकार । सूर सुभट धाए तिह बार ।।५२०५।।

दंडबरधन रतनबरधन कों देखि । कासिपराय कह्या परेखि ।।
सुणि राजा मन भयो आनन्द । देख्या प्रत्यख चरणन कुं बंदि ।।५२०६।।

पूर्व कथा

अस्तुति करि सेवा बहु भांति । भयो चैन नगरी मां सांति ।।
सर्व सुवर्ण रतनबरधन बली । मिले सकल पुजी मन रली ।।५२०७।।

सरवगुपति बांध्या तिह घरी । आया राय किकदा पुरी ।।
पट बैठाइ रहे सब लोग । सुखसौं रहइ भूल्या सब सोग ।।५२०८।।

राजा करुणा चित्त बिचार । सरवगुपति छोड्या तिह बार ।।
सेवा सौं तब कीया दूरि । पापी पाप कमाया भर पुरि ।।५२०९।।

भविदत्त मुनि दरसन पाई । सुण्या परम रति बरधन राई ।।
प्रीतंकर हितंकर कौं दीया राज । आप लिया दिगंबर साज ।।५२१०।।

सरवगुपति भी दिक्षा लई । बीजावली मुई राघ्यसी भई ।।
मनमें कुबुधि बिचारी नई । बैर भाव उपजावैं सही ।।५२११।।

राय कीया मेरा मान भंग । सरवगुपति तप करैं वा संग ।।
दोनुं मुनि पर किया विरोध । आंधी मेह दुःख का शोध ।।५२१२।।

बहु उपसर्ग दोन्यू मुनि सह्या । केवलग्यान वा समैं लह्या ।।
गए मुकति जैं जैं ध्वनि हुई । पंचमगति पाई मुनि दुई ।।५२१३।।

सुदरसनां जल मुंइ तिह बार । पुत्र मोह की करी संभार ।।
वे दोन्युं मेरे गरभ भए । दुह विरयां से बिछुड क्यों गए ।।५२१४।।

एक बेर मिलज्यो फिर आंन । अंत समय राख्या इह ध्यान ।।
प्रीतंकर हेमंकर भूप । विमल मुनीस्वर देख स्वरूप ।।५२१५।।

नमस्कार करि पूछ्या धरम । दोन्युं भए जती के करम ।।
करै तपस्या बारह विध । चारित्र साधैं तेरह मन सुध ।।५२१६।।

बीस दोइ परीसा सहैं । नवग्रीवेक पाई उनि जहैं ।।
कासिप देस वामदेव नरेस । गुणां अस्तरी धरम के भेस ।।५२१७।।

वसुदेव वासद पुत्र दोइ भए । जोबन समय बिवाह करि दए ।।
वसुदेव कैं विस्वा अस्तरी । वासिट के प्रीयगणा गुण भरी ।।५२१८।।

श्रीदत्त मुनीं कूं दिया अहार । पाया भोग भूमि अवतार ।।
तीन पल्य की भुगती आव । इसान स्वर्ग परि पाया ठांव ।।५२१९।।

उहां तैं चए रतन बरधन के ग्रेह प्रीतंकर हितंकर एह ।।
वे पहुंच्या नवग्रैवक बिमांन । उहां तैं चया सीता गरभ आय ।।५२२०।।

पूरव भव छोटी थी माई । वातैं दुख पाया गरभ आई ।।
मास बिछोहा सो इहां भया । वह बंध भ्रंक इहाँ ऊ गया ।।५२२१।।

सुदरशना जीव भ्रमी बहुंगति । सदा धरम ध्यान सुं हिति ।।
तपकरि अस्त्री लिंग कीना भंग । करि करणी सुगुरु गुरु संग ।।५२२२।।

उसका जीव सिधारथ भया । वह सनबंध इन सूं थया ।।
ए ही करम का सरबंध । निसचै सेयं देव जिनंद ।।५२२३।।

सोरठा

भव भव किया जु पुन्य, समकित सौं मन दिढ रह्या ।।
लवनांकुस बलवन्त, रघुबंसी जग में तिलक ।।५२२४।।

इति श्री पद्मपुराणे लवनांकुस पूरवभव विधानकं

१०२ वां विधानक

चौपई

सकल भूषण कीरत सब देस । सुरनर पूजा करैं नरेस ।।
बहुजन भए जती के भाव । जपैं घणां जिण जी का नांव ।।५२२५।।

किणही सरावक का व्रत लिया । सरब जीवां की पालैं दया ।।
पूजा दांन करैं सब कोइ । घरि घरि कथा सीतां की होई ।।५२२६।।

धनि सीता अइसा तप करैं । मोह माया सब सुख परिहरैं ।।
आठ दिवस कबही इक मास । राग दोष का कीया नास ।।५२२७।।

ऊंच नीच लखैं नहीं गेह । सरस निरस भोजन कूं लेह ।।
लोही मांस गया सब सूख । क्रोध लोभ साधी तिस भूख ।।५२२८।।

तप की जोति दिपैं सब गात । जैसे ससि पूनम की कांति ।।
जरजरा भई मुरझाई बदन । जैसे काष्ट फूतली के तन ।।५२२६।

बासठ बरस तपस्या करी । तेंतीस दिन तपस्या में टरी ।।
छोडि काय लह्या अच्युत विमान । भया प्रति इंद्र लह्या सुख थान
।।५२३०।।

बीस दोइ सागर की ठांन । तप करि पाई एती आव ।।
राम कथा सब पूरण भई । श्रीजिन कथा कहैं इहां नई ।।५२३१।।

स्वर्ग सोलह प्रद्युमन अरु संबु । कृष्ण गेह उपज्या कुल थंभ ।।
बाईस सागर चउसठ सहस्र । उपजे भुगति आव हरिवंस ।।५२३२।।

श्रेणिक पूछें दुं कर जोडि । जिनवांणी का नांही ओड ।।
जितने भेद सुणे धरि कांन । तिरपत न हुवे सुणे पुराण ।।५२३३।।

एक एक तैं वाणी सरस । जे सुणिए बहुतेरा बरस ।।
तउब न जावें जीव अघाइ । प्रद्युम्न संबु के कहै परजाइ ।।५२३४।।

प्रद्युम्न संबुकुमार के पूर्व भव

सालिग्राम नित्योदय राइ । सोमदेव बांभण तिह ठाइ ।।
अगनिला के भए दोइ पुत्र । अगनिभूत दूजा वायभूत ।।५२३५।।

विद्या पढि भए परवीन । इन अग्रे पंडित सब हीन ।।
वेद पुराण कहैं मुख पाठ । राखैं घणी गर्भ की गांठ ।।५२३६।।

इन समान न पंडित और । ऐसा देस देस में सौर ।।
नंदिवरधन मुनिवर महा मुंनी । वाकैं संग शिष्य बहु सुनी ।।५२३७।।

वन में जोग लिया उन आय । आगम सुण्या नित्योदय राइ ।।
उतर स्यंघासन वाही दिसा । करि डंडोत मनमां बहु हंसा ।।५२३८।।

सकल लोग संगति बहु चल्या । वाजंतर जिहां बाजैं भला ।।
भई भीड वे द्विज के बाल । इनके मन संसय का साल ।।५२३६।।

नांही पर्व नांही त्यौहार । इतनां कहां जाहि इकधार ।।
सुणी बात वण आये जती । दरसण कूं चाल्या भूपती ।।५२४०।।

सकल लोग जावें वा निमित्त । जोग ध्यांन तिहां महा महंत ।।
इतनी सुणि वे उठे रिसाइ । वे क्या हैं हम सू अधिकाइ ।।५२४१।।

हम सूं कवण है पूजनीक । मूरख चलें हैं गडरिया लीक ।।
अब हम करि हैं उनि सौं वाद । जे हम से जीतैं वे बाद ।।५२४२।।

तो हम जाणैं उनका ग्यान । नांतर ए सब लोग अग्यान ।।
दोनूं विप्र गए बन मांहि । ध्यानारूढ़ दिखे तिण ठांहि ।।५२४३।।

संबुकुमर मुनीस्वर एक । जिसके हीए जिनेस्वर टेक ।।
मुनि की ढिग दोउं विप्र जाइ । कहि कहां ते आए इस ठाइ ।।५२४४।।

बोलैं जती सहज के भाइ । आय पहुंचे याही ठांइ ।।
पूछैं मुनी तुम कहां ते आए । आगम कहो सकल समझाइ ।।५२४५।।

दोनयुं हंसे विप्र के पुत्र । भई भई बुधि महा विचित्र ।।
देखि प्रत्यक्ष होइ अग्यान · सालिग्राम हमारा थांन ।।५२४६।।

मुनिवर बोले अपनो गति कहो । कवरण परजाइ तैं इह गति लहो ॥
असी सुणि भए चिक होइ । गति अगति की जाणैं नहीं कोइ ॥५२४७॥

वेद पुराण में की होइ बात । कहै सकल बांको जिरतांत ॥
हमको अवधिग्यान एह नाहिं । गति आगति समझावैं ताहि ॥५२४८॥

मुनिवर बोले मोपैं तुम सुणौं । तुमके भव सब ही मैं भणौं ॥
मगध देस सालिग्राम समीप । भरत क्षेत्र तिहां जंबूद्वीप ॥५२४९॥

कर्म करि हैं बाह्य करि सांन । जो तिरण गया धरती बन थांन ॥
घडी च्यार सेती घर आइ । भोजन किया दिवस में जाइ ॥५२५०॥

तिहां घनरह् बरखा घनघोर । सात दिनां बन माड्या जोर ॥
भूखे सियाल थे तिहां दोइ । सात दिवस भूखे दुखी होइ ॥५२५१॥

व्रत चाम की भीजी तिहां । भखी शृंगाल मरण ते लहा ॥
उठी सूल दोन्यु मर गये । सोमदेव के सुत दोउ भए ॥५२५२॥

उन किसाण तिहां सुष लहो । देख अल मन विस्मय भई ॥
देखे मुए दोइ सियाल । लियं उठाइ उचेडी खाल ॥५२५३॥

वहि द्विज सुवा पाइ कै काल । पिता पुत्र के उपज्या बाल ॥
अष्ट वर्ष का हुवा पुत्र । देखी खाल स्याल संजुक्त ॥५२५४॥

भव सुमरण विप्र कुं भई । मेरी प्रसूति पुत्र घर भई ॥
कैसे कहूं पुत्र कूं तात । बहु सौं किह विध कहिए मात ॥५२५५॥

ऐसी समझि रह्या दोउ मूक । मुख तैं बचन न बोलैं चूक ॥
अगनिभूत वायुभूत दोऊ बीर । गये तुरन्त सरवैं तीर ॥५२५६॥

देखी खाल टंकी तिह ठांव । समझि सांच होए धरि भाव ॥
गूंगे से सब कही मन कीं बात । मिटैं भेद सब ही इह भांत ॥५२५७॥

उठि प्रमुखि साध पैं गया । नमस्कार करि ठाढा भया ॥
मुनिवर सकल कही समझाय । अपने मन में मनि पिछताइ ॥५२५८॥

आदि अनादि चिहु गति बीच । कबहीं उत्तम कबही नीच ॥
नटवा भेष धरया बहु जौंन । लख चौरासी मैं कीया गौंन ॥५२५९॥

पिता होइ पुत्र का पुत्र । माता होइ घरणी संजुक्त ॥
नारी तैं जननी उतपन्न । कब ही होई भाई बहन ॥५२६०॥

कबही अरि अरु कब ही मित्र । कबही माता होइ कलित्र ॥
कबही राजा कबही रंक । कबही ठाकुर सेव निसंक ॥५२६१॥

कबही धारैं देव स्वरूप । कबही दुखिया महा कुरूप ॥
कबही कामदेव उणिहार । कबही कुष्टी रोग अपार ॥५२६२॥

जैसे फिरैं रहट की घडी । कबही रीती कबही भरी ॥
असी सुणि सब संसय गया । अष्टांग नमस्कार तब किया ॥५२६३॥

प्रभुजी मोकूं दिख्या देहु । मोहू पकडि हूं व्रत ग्रह लेहु ॥
मुनिवर कहैं फेरि घरि जाइ । आगन्यां मांगि कुटंब पै आइ ॥५२६४॥

तबै दिख्या देनी तुम्हें सही । विन आगन्या तपस्या नहीं कही ॥
प्रभुजी आए आपणे गेह । सकल सभा का मिटया संदेह ॥५२६५॥

केई समझि धरैं चारित्र । किनही लीया श्रावक व्रत ॥
जिहां तिहां कथा इहै चलै । दोन्युं विप्र मनमें जलैं ॥५२६६॥

स्याल जोनि तैं वे विप्र भए । अकाम निर्जरा पंडित भए ॥
इतनी जात कहा है देव । जाणैं नहीं धरम का भेव ॥५२६७॥

ब्राह्मण देव कहा और स्वरूप । अगनि देव कहैं नर भूप ॥
कैसे भए देव एहु जीव । करैं कर्म पाप की नींव ॥५२६८ ।

ब्रह्म सौं परमातम चिह्न । संयम क्रिया की विध किन्न ॥
ए पापी होमैं अगिणत जीव । करैं वृत्त पाप की नींव ॥५२६९॥

कंद मूल फल लेहु अहार । पुंन्य पाप को नहीं विचार ॥
निस भोजन अण छाण्यो नीर । दया भेद जाणें नहीं पीर ॥५२७० ।

सर्प देव कैसें करि होइ । जिसके डस्या न जीवैं कोइ ॥
अगनि दया करै नहीं काई । जो कछु पडै भस्म होइ जाई ॥५२७१॥

मूरख पुरुष नैं देवता कहैं । ग्यान भाव का भेद न लहैं ॥
विप्र वही जो पालैं दया । धन्य साध जो इह विध तप किया ॥५२७२॥

पूरब भव की जाणें बात । उनसैं अवर न उत्तिम जात ॥
राजा रंक सकल ही लोग । असतुति करैं जे साधै जोग ॥५२७३॥

विप्र के मन भया विरोध । निस आए धरि चित्त विरोध ॥
काढि खडग दोनूं इक बार । बहुरि करैं धरम बिचार ॥५२७४॥

प्रद्युम्न एवं संबुकुमार के पूर्व भव

विप्र संन्यासी तपेसुरी । अतीत अनागत लघु अस्तरी ॥
इनकै मारयां उपजै पाप । भव भव सहै दुःख संताप ॥५२७५॥
जइ तेरा मनमें है बैर । पहिलै तु हमकु मारि करि ढेर ॥
दऊ न डरैं न मारैं आंहि । दोनुं जनके अङग सब आंहि ॥५२७६॥
बांध्या यक्ष दोनुं बांका हाथ । उभा द्विज बैठा मुनिनाथ ॥
प्रभात समै जागे सब सेठ । लघु वृद्ध बंदना चाल्या पेठ ॥५२७७॥
नमस्कार करि पूरा करी । वा मुनि पैं सब ही की दिष्ठ पडी ॥
अगनभूत वायुभूत विप्र । हाथ जोडि कर नागेस पुत्र ॥५२७८॥
ऊंचे कर दोन्युं का बंध । उभा इम दोन्यु द्विज अंध ॥
सती जती बैठा सुभ्रडोल । गहि मौन बोलैं नहि बोल ॥५२७९॥
जे आवैं ते गारी देह । रे पापी कीन्हीं कहा एह ॥
मुनिवर बैठे वन में आनि । इनकैं चित्त निरंजन ध्यान ॥५२८०॥
किसही सु नहि करते मोख । सब ही नै दई मारग मोष्य ॥
मुनिवर कूं तुम दीना दुःख । तैसा अब देखउ परतष्य ॥५२८१॥
बहुत लजाए बांभण दोइ । धिग धिग कहै जगत सब कोइ ॥
सोमदेव अगनला माई । मुनिवर कै वे लाग्या पाई ॥५२८२॥
स्वामि नमुं हूं दोउ कर जोडि । हमनें दिखणां द्यो इनहैं छोडि ॥
पुत्र भीख दीजे करि मया । तुम प्रभु पालो हो अति दया ॥५२८३॥
मुनि बोलैं दंपति सौं बात । हमारैं नहीं क्रोध की जात ॥
विनती करैं जष्य सौं घणी । प्रतिरिगति जष्य ऐसी सुणी ॥५२८४॥
कहै जष्य ए पापी दुष्ट । इनां दीया है साधनइ दुःख ॥
जैसा सुं बोलै तैसा सुणैं । जैसा बावै तैसा लुणै ॥५२८५॥
ज्यौं दरपण मां देखै कोइ । जैसा चितै तैसा होइ ॥
जे मुख को टेढा करि देखें । तैसा ही तामैं दरसन लेखैं ॥५२८६॥
जे देखई सुधा करि बदन । तैसा तामें है दरसन ॥
ए हैं पापी महा अग्यान । इनै न छोडूं अपनें जान ॥५२८७॥
मुनिवर बात जष्य सूं कहैं । सुष्यम बादर करुणा चित गहैं ॥
ए दोन्यूं पंचेन्द्रिय जीव । छोडो वेगि इनकी ग्रीव ॥५२८८॥
जीव दया कारण व्रत करैं । हिंसा तैं निस बासर डरैं ॥
उनमें रहैं परीसह सहैं । ते कैसें जीवां नै दहैं ॥५२८९॥

अतिरिक्त छोडो तुम यक्ष । इन दोन्युं सो न करो क्रुध ।।
विप्र छोडि दिया तिण बार । उनों विप्र कुं कराया नमस्कार ।।५२६०।।

तबै अणुव्रत विप्र कू दिया । जैनधर्म निसचै सूं किया ।।
धरम पुराण कहैं मन ल्याइ । खोटी किया विप्र दई बिहाइ ।।५२६१।।

जीव दया के पालैं भेद । असुभ करम का कीया छेद ।।
सोमदेव अगनिला व्रत गह्या । उनपै व्रत न जावै सह्या ।।५२६२।।

मरि करि भ्रम्या बहुत संसार । दोन्युं विप्र स्वरग लिह बार ।।
सुगति आव अजोध्यापुरी । सुभदर दत्त राजा रिध जुरी ।।५२६३।।

धारणी राणी कै गरभ आइ । पूरणप्रभ मानभद्र जाइ ।।
पाई बुद्ध सयाणें भए । राजा कै इहै उपजी हिए ।।५२६४।।

उन दोन्यूं कौं दीयो राज । आपण किया धरम का काज ।।
बहुत दिनां भुगते सब देस । मुनिवर बन किया प्रवेस ।।५२६५।।

मुनि नरेन्द्र दरसन कुं चले । चिंडाल पास कुकरी गले ।।
उनकौं देख अपनां नेह । भेट्या चाहैं उनसों देह ।।५२६६।।

मन में सोच करैं बहु भाइ । चलैं पूछिये मुनिवर जाइ ।।
गये साध पै करि डंडोत । राजा पूछी बात बहुत ।।५२६७।।

स्वामी एक अचंभा सुणौ । इनहै देखि मोह ऊपज्यो घणुं ।।
कवणएकवरण हम जात । ए प्रतष्य चिंडालहै पांति ।।५२६८।।

जिह के छिप्यां लीजिए सुचि । तासुं होय मिलण की रुचि ।।
बोले ईह सोमदेव विप्र । अगनिलाए ए सुनी अचिप्र ।।५२६९।।

पूरब भव का माता पिता । ता कारण मोह की लता ।।
एक मास रही है आव । चंडाल कुकरी संन्यास लिह भाव ।।५३००।।

काल पाइ नंदीसुर द्वीप । दोन्यां भए देव सु समीप ।।
दोई भूपति लई धरमणां । जैन धरम विध पालैं घणा ।।५३०१।।

देही छोडि सौधरम बिमांण । तिहां तैं चए अयोध्या थांन ।।
हेमनाभ राजा कई गेह । अमरावती राणी रूप की देह ।।५३०२।।

ताकैं जा अति प्रतापी भए । हेमप्रभ संयम व्रत लिए ।।
राजभार मधु कीट नैं दिया । आप गुरु ढिग संयम लिया ।।५३०३।।

राजा मधु अति प्रतापी भए। नाम सुंणत अरि उठि गए ॥
सर्व नृपति मानैं तिह आण। ए भुमिपरि रविचंद्र समाण ॥५३०४॥

राजा भीम न मानैं संक। जसकै गढ अति विकट निहंक ॥
तिह कारण राजा मधु चला। बीरसेन मारग में मिल्या ॥५३०५॥

निग्रोध नगर में करि सनमान। बहुत भेट आगैं धरी आंन ॥
चन्द्राभा बीरसैन की अस्तरी। रूपवंत लावण्य गुण भरी ॥५३०६॥

उभकी आइ झरोखं द्वारि। झांई देखी नीर मंझारि ॥
राजा भया मूरछावंत। जाणैं भए प्राण का अंत ॥५३०७॥

चेत्यो राजा करै विचार। फिरतो आई करूं उपचार ॥
भीम राजा से मांड्या खेत। बांध्या तुरंत जुध के हेत ॥५३०८॥

आया तुरंत अजोध्या देस। चंद्राभा मन खुटक नरेस ॥
देस देस को लेख पठाइ। सब कुटंब नृप नृपति बुलाय ॥५३०९॥

आए सकल देस के भूप। जीमण दीया महा अनूप ॥
काहूं कुं अस्व रथ दिया सिरपाव। किहूं कूं गज परगने गांव ॥५३१०॥

सबकों दिया जिस्या परवांनि। सो कुटुंब का राख्या मांन ॥
बीरसेन सों अैसी कही। तुम भी जाओ अपनी मही ॥५३११॥

कछु आभरण संवरंगा अभी। विदा करस्यां चंद्राभा तभी ॥
बीरसेन नें किया पयांन। मधु राजा चन्द्राभा आन ॥५३१२॥

मंसहपुर पटराणी थापि। राजा मनमें विचारया पाप ॥
भोग भुगति सौं बीतैं काल। राजा तजी धरम की लाज ॥५३१३॥

जे रखवाला चन्द्रा पास। ते सब भाजे होइ निरास ॥
बीरसेन कूं इह सुध भई। चन्द्राभा छीन उनुं नैं लई ॥५३१४॥

बीरसेन बहुत बिललाइ। बलवंत सो कछु न बसाइ ॥
इह प्रथवीपति जाकै है देस। इह अधीन इह बडा नरेश ॥५३१५॥

छाडी राज फिरै विकराल। ब्याप्या होए नारी का साल ॥
बनमें फिरै अधिक बिललाइ। वाकै चित्त कबहु न बसाइ ॥५३१६॥

करैं पुकार सिर गिर फिरै भूमि। ऐसी महा मचावै धूमि ॥
चन्द्राभा ऊंचा सूं देखि। कंत फिरै इहै अैसे भेस ॥५३१७॥
बेर बेर राणी पिछताइ। मांहरै दुःख फिरै इन भांइ ॥
राय भिष्ट हो डोलै मही। इसकै कोई सहाई नहीं ॥५३१८॥

मो कारण असी गति फिरै । पिछतावै राणी हिए भरै ।।
भ्रमत फिरै कारज सरै नांहि । मंजिम प्रिय दिष्ट परया कांहि
।।५३१६।।

नमस्कार करि पूछै धरम । सुणे भेद लागै बिन मरम ।।
दिष्या लई संन्यासी पास । पंचाग्नि साधै बनवास ।।५३२०।।

देही छांडि लही गति देव । इह राजा सुख विलसै एव ।।
झरोखै बैठा राजा आइ । कोटवाल आया तिह ठाइ ।।५३२१।।

एक मरद पकरया परनारि । हाथ बांध आण्या तिह बार ।।
राजा सुणी किया इह न्याव । इह को हुणौं चोर की ठांव ।।५३२२।।

फिर असा न करै कोई कांम । खोवै धरम लजावै गांव ।।
तबै राणी चंद्राभा कह्या । राजा जी तुम भेद न लह्या ।।५३२३।।

इनुं कहा भवै विगार । जिनौं को मारि करो हो छार ।।
इनको बहुत दीजिये दान । निरभै करो ज्युं मनभांत ।।५३२४।।

इनौं की पूजा करणां न्याइ । कहा चूक भई इनतैं राय ।।
राजा कहै सुण राणी बात । तेरी मति भिष्ट भई इह भांति ।।५३२५।।

अन्याई की तू पूजा कहै । दान दिलावै भेद न लहै ।।
अन्यायी है यह महा पापिष्ट । इनको दीजे महान कष्ट ।।५३२६।।

जितना हुवै पुन्य विसतार । भूलि न करै कोई बिगार ।।
चन्द्राभा समझावै बैन । अपना वचन परिखो करि नैन ।।५३२७।।

कहो तैं मो करि आंनी ब्याह । मुझ बिन व्याकुल है मेरो नाह ।।
जो राजा खोटा हुवै आप । तिसकी प्रजा करै अति पाप ।।५३२८।।

त्रिया बचन सुणि भई संभालि । सत्य वचन समझे भूपाल ।।
हाइ हाइ कर मींडै आप । मैंने कियो प्रथी को पाप ।।५३२९।।

मो सरिखा करम ए करैं । पृथिवी परि को अपजस धरै ।।
उज्जल कुल लागो कालौंस । अब हूं धोऊं कइसी रोस ।।५३३०।

मो कूं भई पाप की बुधि । भूली राजनीति की सुधि ।।
कठिन पाप कैसे होवै दूरि । ताहि न होवै ऊखध मूल ।।५३३१।।

मन वैराग धरयो अति सोच । राज भोग सौं छोडी रोच ।।
सहस्र भव वन उत्तम मही । सिद्ध पदम मुनि आए सही ।।५३३२।।

राजा सुनि मुनिवर ढिग गया । नमस्कार करि ठाढा भया ।।
करै बीनती मस्तक नाय । पाप करम मैं किया अथाह ।।५३३३।।

कैसे टरै पाप का दोष । गुरु संगति से लहिन मोक्ष ।।
मुनिवर कहैं ग्यान बहु भाइ । राजा भेद सुर्णे मन लाइ ।।५३३४।।

कुलवर्धन कूं राजा किया । आप आइ संयम व्रत लिया ।।
कीटभ नैं भी दीक्षा धरी । करैं तपस्या दोउ मिल खरी ।।५३३५।।

सूरज तपैं परवत की सिला । काया तपैं पसीना चल्या ।।
बहैं पाप देह तैं छूंड । ग्यानामृत की पीवैं बूंदि ।।५३३६।।

वर्षा मैं तरु तलि खरैं । मूसलधार मेह की पडै ।।
मांछर डांस तनमैं लगैं । बयाल आइ आइ कैं लगैं ।।५३३७।।

सीयालै सरवर की पाल । पडै तुसार चलै बहु ब्यार ।।
षटरित मांहि परीस्या सहैं । बाईस विध कही है त्यूं तन दहैं ।।५३३८।।

ऐसा तप करि करी है देह । अच्युत स्वर्ग इन्द्र पद एह ।।
उनकी प्रति इन्द्र सीता जीव । तहकाल चिर सुख की नींव ।।५३३९।।

मधुकीटभ अच्युत विमांन । तिहां तैं चए द्वारामती आन ।।
दोऊं भए कृष्ण घरि आय । रूपवंत बल सोभैं काय ।।५३४०।।

मधु का जीव भया पद्युमन । रुकमरण नैं गर्भ पाईज जंन ।।
कीटभ हुआ संबु कुमार । जांबवती उर लिया अवतार ।।५३४१।।

दूहा

कथा कही परदुमन की, श्री जिनवर समभाइ ।।
श्री गौतम विधि सौं भणी, सुणी सु श्रेणिक राइ ।।५३४२।।

जो सुणैं हैं एह पुरांण, ते निसचै समकित गहैं ।।
पावैं अमर बिमाण, दया अंग मनमां रहे ।।५३४३।।

इति श्री पद्मपुराणे मधु कीटक भव विधानकं

१०३ वां विधानक

चौपई

कंचनपुर तिहां कंचन रथ । सुरेन्द्र इन्द्र गुन करि समरथ ।।
दोइ कन्या ताकै घर सुता । रूप लख्यण गुंण करि सोभिता ।।५३४४।।

स्वयंवर रच्या बुलाये राइ । देस प्रदेस बसीठ पठाइ ॥
नृपति आये कांचन पुरी । सहु भूपति की सोभा जुरी ॥५३४५॥

रथ परि बैठी दोन्यु पुत्तरी । जगतिपति कंचुकी मति खरी ॥
सबहन का नाम कंचुकी कहै । कन्या दृष्ट न कोई लहै ॥५३४६॥

विद्याधर देखिया नरेस । भूमिगोचरिया दिस कियो प्रवेस ॥
राजा सकल अचंभा करैं । अब इस कन्या किस कुं बरै ॥५३४७॥

कन्या कै चितां हि आवै कोइ । मान भंग सब नृपति होइ ॥
लवनांकुस देखिया कुमार । फूलमाल गल डारे हार ॥५३४८॥

जै जै कार करैं सहु लोग । लखमरण कै सुत मान्या सोग ॥
आठ पुत्र तिरण सै पंचास । भए कोप मन धरैं उदास ॥५३४९॥

लवनांकुस हम तैं क्या भले । घाली माल इनां कै गले ॥
हम मांडैगे इनसे राडि । नृपति सब मिल करैं बिभाड ॥५३५०॥

इनकैं होए गांठ यह पडी । कैसे छूटैं इह यस घडी ॥
आठ भूप की कन्या आठ । वे माला ले बरठी दे गांठ ॥५३५१॥

आठुं कैं गले घाली माल । इनके [illegible] ॥
मंदाप्रगति लवन नैं व्याहि । ससांकचक्रा मदनांकुस नांहि ॥५३५२॥

आठ ब्याह आठुं कुं भए । अधिक सुख उपज्या उंन हीए ॥
लवनांकुस को आठों देखि । बहुरि मनमां करैं परेखि ॥५३५३॥

हम तो है नारायरण पुत्र । तीन खंड मां रह्यो न सत्रु ॥
रावरण मारया हमारे पिता । जीत्या सकल देस पुर जिता ॥५३५४॥

तीन सै अठावन हम बीर । महाबली अर साहस धीर ॥
जो कछु है सो हमारा दल । हम समान किसका है बल ॥५३३५॥

मान भंग हमारा किया । उंनैं ब्याह लवनांकुस लिया ॥
जे ए हमसैं मांडै जुध । मार गुमांवां इनकी सुध ॥५३५६॥

रूपमती सुत कहै विचार । तुमारी हांसी हुवै संसार ॥
तुम तीनसै अठावन वीर । ए कन्या थी दो सरीर ॥५३५७॥

कैसे होता तुम सौं काज । कैसी रहै तुमां कुल लाज ॥
राम लखमरण है बहु प्रीत । दुख सुख भुगतैं एकैं रीत ॥५३५८॥

जैसे तुम तैसे ये भ्रात। छंडो क्रोध करो मन सांत ॥
सुख संसार सदा नहीं थिर। सागर बंध रहै नहीं चिर ॥५३५६॥

एकण दिवस होई विणास। ता थै करो मुगति की आस ॥
मुकति वधु सुख सदा अचल। श्री जिनवाणी रहै अटल ॥५३६०॥

समकित सौं निश्चै तप करो। वेग जाई अमर पद धरो ॥
बहुत भांत समझायो ग्यान। सबकों भयो धरम सौं ध्यान ॥५३६१॥

लखमण की आग्या कु गए। हाथ जोडि थाडे दोऊ भए ॥
आदि अनादि भ्रम्यु सहु तित। समकित बिना न पाई गति ॥५३६२॥

भ्रम्यौं लख चौरासी जौंनि। चिहुंगति मांही कीनु गौन ॥
रोग सोग आरत मां फिरथा। श्री जिन वाक्य न चित मां धरथा
॥५३६३॥

अब दिख्या ले साधे जोग। जनम जरा का मेटै रोग ॥
लखमण बोलै सुणो हो कुमार। जैन धरम खांडे की धार ॥५३६४॥

तुम बालक भरि जोवन बैस। कैसे सधै जती का भेस ॥
भुगत्या नहीं सुख संसार। नऊल तुम व्याही है नारि ॥५३६५॥

उनहि छोडि जई दिख्या लेहु। उनके सूल तुम कहा करेहु ॥
जई तुम उनका गहो संताप। तो तुमको होवई बहु पाप ॥५३६६॥

इह है भोग मुगत की बेर। चउथै आश्रम संयम फेर ॥
ए सुख छांडि लीजिए न जोग। जोवन समय भोगवो भोग ॥५३६७॥

अणुव्रत सरावग का लेहू। पूजा दान सुपात्रां देहु ॥
च्यारू विध के दीजे दांन। वैयाबरत सब का सनमांन ॥५३६८॥

बोलै कुमर सुणु तुम तात। भ्रमे लक्ष चउरासी जात ॥
संपय विभव बहुत परवार। भव भव बोझ सहे नहि पार ॥५३६९॥

जम की पासि पडै जब हंस। होइ सहाई धरम का अंस ॥
स्वारथ रूपी सब संसार। पुद्गल आदि न कोई लार ॥५३७०॥

पुन्य पापनै एकै कर जान। इनतैं फिर मुगतैं इह प्रान ॥
तप करि कैं पावै निरवान। अमै नहीं भवसागर प्रांन ॥५३७१॥

महाबल मुनिवर ढिग जाइ। दिख्या लही मन बच काइ ॥
आतमध्यान लगाया जोग। छोड दिये संसारी भोग ॥५३७२॥

दूहा

धरयो ध्यान चिद्रूप सौं, दया भाव करि चित्त ।।
लखमण के सुत अतिबली, कियो धरम सुं हित ।।५३७३।।

इति श्री पद्मपुराणे लखमण पुत्र निष्क्रमण विधानकं

१०४ वां विधानक

चौपई

भावमंडल नैं चेत्या धरम । सकल जनम बांधिया कुकर्म ।।
जब रांवण सुं कियो संग्राम । बहुत लोग मारे तिह ठाम ।।५३७४।।

अपर देस कूं बांधे घणे । दुरजन दुष्ट बहुत ही हणे ।।
पांचु इन्द्री सुख किये अथाह । मानुष जनम दियो यूं ही गमाइ ।।५३७५।।

आतम काज समार न सक्या । मोह फंध माया बस थक्या ।।
अब जे छोडुं राज विभूत । हय गय वाहण विभव संयुक्त ।।५३७६।।

ए नारी किन्नर उणिहार । कोमल अंग कमल सुकुमार ।।
सदा सुख सों बीतें घडी । मो बिन छिह रित जाइं बुरी ।।५३७७।।

बारह मास किम सह संताप । मुझ बिन मरैं करैं विललाप ।।
इनां की कल्पना लागे माहि । किस विध इनसुं करूं बिछोह ।।५३७८।।

कोई कोई भूपति बलवान । मानैं नहीं हमारी आंन ।।
साधूं सबकूं संसा करि दूर । तबैं दिक्षा लेहूं भर पूर ।।५३७९।।

असी विध मन सोचैं घनी । इह जागें इक कारण बण्यां ।।
मोतैं था सत खणां आवास । बिजली पडी प्राण का नास ।।५३८०।।

मन मां चितवैं था कछु और । मरण चिरया हुवा इण ठौर ।।
जिण नहीं ढील धरम की करी । तिसका मन की पुंजी रली ।।५३८१।।

धरम करण कौं करैं विचार । सोचि सोचि जे राखैं टारि ।।
जनम अकारथ यूंही खोइ । अवसर चूकैं कबहुं न होइ ।।५३८२।।

धरम काज कीजिए तुरंत । पावैं सुख अरु मोख्य लहंत ।।
सोच करंत जे व्यापै काल । फेर पडैं माया के जाल ।।५३८३।।

चित चेतन सौं ल्यावैं प्रीत । धन्य धन्य पुरुष अतीत ।।
आप तिरैं अवरां नैं त्यार । फेर न बहुरि भरमैं संसार ।।५३८४।।

दूहा

धरम बिलंब न कीजिए, करियें पहुंच समान ।।
मन वांछित सुख भोगवैं, बहुरि लहैं निरवांन ।।५३८५।।

इति श्री पद्मपुराणे भामंडल परलोक गमन विधानकं

१०५ वां विधानकं

चौपई

हनुमान की तपस्या वर्णन

लखमण सम अन्य न कोई भूप । बल पौरिख अरु महा स्वरूप ।।
रामचन्द्र सेती अति प्रीत । जाणें सकल धरम की रीत ।।५३८६।।

उनालै भुगतै सुख घणे । सीतल मनोहर जल सु बणे ।।
ऊंचा मंदिर अति उत्तंग । महा सुगंध फूल सुरंग ।।५३८७।।

झरनां तैं तिहां निकस नीर । उछलै जल सुख हुवै सरीर ।।
गोझर ढांढी छाई छान । ईं मांफिक सुख भुगतै हनुमान ।।५३८८।।

बहुरि विचार करैं मनमांहि । यह संसार भरयो दुख मांहि ।।
पुत्र कलित्र सब लिये बुलाई । उनसौं बात कही समझाइ ।।५३८९।।
इह संसार बिजली उद्योत । फिर छिन में अंधियारा होत ।।
हम तुमसौं ईहां लग थी प्रीत । अब हम जाइ हो रहां अतीत ।।५३९०।।

इनका चित्त निहचल थंभ । रोवैं परिजन लोग कुटंब ।।
चढि सुखपाल चैति बन गए । राजा प्रजा परियण संग थए ।।५३९१।।

सेनां सकल भई उठि संग । बाजा बाजैं ताल मृदंग ।।
धरम रतन मुनिवर पै जाइ । नमस्कार करि बोलै राइ ।।५३९२।।

स्वामी मोकूं दिख्या देहु । बांह पकडि अपनी संग लेहु ।।
विद्युतगति सुत नैं दे राज । सौंपी सब परियण की लाज ।।५३९३।।

मुकट उतारि सबै शृंगार । बसतरि फाडि दिए तिह डालि ।।
लौंचे केस दिगंबर रूप । सात सै पंचास अवर संगि भूप ।।५३९४।।

करैं तपस्या मन वच काइ । आतमध्यान धरैं मन लाइ ।।
तेरह बिध सौं चारित्रै धरया । बारह व्रत द्वादस तप करया ।।५३९५।।

समकित अष्ट अंग संजुक्त । अष्ट अंग धरि ग्यांन बहुत्त ।।
अनप्रेंष्या का प्रेष्यन करैं । ग्यांन खडग करमैं ले धरैं ।।५३९६।।

दस लक्षण गुंण चक्र संभार । सब ग्रायध तिहां दिए डारि ।।
ग्रष्ट करम से मांडे युध । सहै परीसा बाईस सुध ।।५३९७।।

छठे महीने लेई ग्राहार । मन बच काई दृढ ग्रपार ।।
ग्रातम चिदानंद सौं ध्यान । केवल ग्यान लहै हनुमान ।।५३९८।।

करि विहार फिरे बहु देस । भव्य जीव कूं दे उपदेस ।।
श्रीमती लक्ष्मी ग्रह भणी । बंधमती ग्रारजिका सुं भणी ।।५३९९।।

दिष्या देहु हम कूं ग्राजि । हम भी करैं ग्रातमा काज ।।
सब ही मिले संयम व्रत लिया । निश्चल ध्यान निरंजन किया ।।५४००।।

देहीं तैं ममता राखी नहीं । जिनकै चित्त समकित है सही ।।
हनोंमान प्रतिबोधे घणे । ग्रष्ट करम ग्ररि सब हणे ।।५४०१।।

हनूमान पंचम गति लही । जोति मां जोति समाही सही ।।
मुकति बध सुख उत्तम थान । दरसन बल वीरज बहु ग्यान ।।५४०२।।

दूहा

कथा सुनैं हणुमांन की, करै दया सुं ग्रांन ।।
देवलोक सुख भुगति करि, पावैं ते निरवांण ।।५४०३।।

इति श्री पद्मपुराणे हनुमांन निर्वाण विधानकं

१०६ वां विधानक

चौपई

रामचंद्र जब ग्रैसो सुणी । हनूमांन छोडी सब दुनी ।।
भया मुनी दिगंबर भेस । करै ग्रति काया कलेस ।।५४०४।।

ग्रबर चेती कुबरां की बात । रघुबर सोचैं इह विरतांत ।।
रे रे भई मूरख छोडे राज । काया कष्ट सहै बिन काज ।।५४०५।।

वेधत ग्रसुभ करम का भाव । राज छोडि भिक्षा सैं चाव ।।
ए सुख छांडि परीसा सहैं । ग्रैसे बहुरि कहां सुख लहैं ।।५४०६।।

मूरिख लंघण करि करि मरैं । पूरब पापन के कहां टरैं ।।
निंदा करी हणुं की घणी । इन्द्रलोक मैं चरचा इह बणी ।।५४०७।।

सौधर्म इन्द्र की सभा तिहां जुडी । सकल विभूत तिहां सोभै खरी ।।
पुरांण कहै इन्द्र जिहां सौधर्म । सिद्धांत बाणी समभावैं धर्म ।।५४०८।।

सप्त तत्व षट् द्रव्य बखांन । नव पदारथ कहे सुर ग्यांन ।।
सुणें देव सब अस्तुति करें । प्रभु ए भेद कब कवण पै पढ़ें ।।५४०६।।

मनुष्य बिना न तपस्या होइ । देव धरम करि सकें न कोइ ।।
पूजा देव करण समरथ । जैन धरम बिन सबै अकथ ।।५४१०।।

अरिहंत देव सम अन्य न देव । और धरम जनम का भेव ।।
मिथ्याती सास्त्र जे कहै । उसके बचन न चित्त में गहै ।।५४११।।

वकता सरोता नरकैं जाइ । तिहां को नाहि दया सु भाव ।।
श्री जिनवाणी जीवन मूल । समकित कौं छोडो जिन भूल ।।५४१२।।

देव एक बुलाइ समाइ । मध्यलोक मैं जनमैं जाइ ।।
तिहां माया में होइ अचेत । कैसे पलै धरम सों हेत ।।५४१३।।

राम लखमण ब्रह्मलोक तैं चए । ते माया में मयमत्त भए ।।
रामचन्द्र लखमण सौं प्रीत । पल नहीं बिछडै असी रीत ।।५४१४।।

मोह के बसि दोनूं है घणे । एक च अष्ट करम कु हनैं ।।
प्रीति न छोडैं किस ही भांति । यूं ही इनकी अब विहात ।।५४१५।।

दूहा

भोग भुगत माने रली, दियो धरम बिसराइ ।।
दया बिहूंणा मानवी, किम न पावै भव पार ।।५४१६।।

इति श्री पद्मपुराणे संकर सुर संकर कथा विधानकं

१०७ वां विधानक

चौपई

रतन चूल अर तमचूल । दोनूं देव अग्याष का मूल ।।
एता कह्या उना का मोह । पल नहीं होवै उनका बिछोह ।।५४१७।।

इन्द्र बात नैं आणी हिये । दोन्यूं चाहैं परचा लिये ।।
मध्य लोक आया दोउ देव । कहै इक देखें इनका भेव ।।५४१८।।

रामचन्दर कै मन्दिर गए । जुगल देवता परपंच किये ।।
मायामई एक परपंच रच्या । मंदिर में रुदन मचाया सचा ।।५४१९।।

राम राम करि रोवैं नारि । पीटैं सिर मां डारैं छारि ।।
पोलिये रुदन सुण्यां तिह बार । दोड्या आया लखमण द्वार ।।५४२०।।

मंत्री आगैं पीटैं सीस । रामचंद्र मुवा जगदीस ।।
मंत्री नैं खाई पछाड । रोवैं पीटैं सब संसार ।।५४२१।।

लखमण आगैं पटकी पाग । रामचंद्र सुणी देही त्याग ।।
सुण लखमण का फाटा हीया । हाइ हाइ करिनैं मृतक भया ।।५४२२।।

राम बिना मैं कैसे जीऊं । हा हा करि प्राण दे देहुं ।।
धाइ करि उठ्या देखूं हूं राम । पड्या मूरछा हुई तिह ठांम ।।५४२३।।

मंत्री रोवैं ढोलई वाव । गए परांन जीव का न नांव ।।
सत्रहसै सहस्र रोवैं अस्तरी । हाइ हाइ करि धरणी पडी ।।५४२४।।

कोई पकडि उठावैं बांह । कोई इक सबद सुणावो नाह ।।
कोई लपट दई कंठ लगाइ । कोई करैं बीजणा बाइ ।।५४२५।।

कोई पग हलावै आइ । कोई देखें मुख की रताइ ।।
मृतक देखि सकल बिलखाइं । तब वे दोई देव बिलखांइ ।।५४२६।।

हम उपाया नउतन पाप । ए ता जीव करैं बिललाप ।।
नारायण की हत्या लई । हम एह उपाधि इनकों मुई ।।५४२७।।

हांसी करता हुवा नास । लखमण नैं उपजी अति त्रास ।।
हम सैं हुई महा कुबुधि । इतना किया मांणि विरुध ।।५४२८।।

ऐसा पाप टरैगा किसैं । दोन्यां देवां कै दुख मन बसैं ।।
इन्द्र बचन उन किया प्रतीत । पाप पोट निज सिर धरीत ।।५४२९।।

रामचन्द्र सुणी इह बात । लखमण मुवा तुमारा भ्रात ।।
हाइ हाइ रुदन करैं श्रीराम । राणी रुदन करैं ले नाम ।।५४३०।।

मंदिर में पडी देखी लोथ । बासों लपटे बोथां बोथ ।।
पग देखैं अर सीले हाथ । ग्रीव न टिकै ढरैं तिहां माथ ।।५४३१।।

पगडी पटकी बस्तर फाडि । भ्राता भ्राता करैं पुकार ।।
मोह उदय तें हुवा अन्ध । बोलो वेग ज्यौं जीऊं मैं बंध ।।५४३२।।

खाइ पछाडि मेलैं सिर धूल । रुदन सु पीटैं सुध सब भूल ।।
बडी बेर चित पाया ग्यांन । हम मोह माया में डुब्या जान ।।५४३४।।

मोह मांहि भ्रमें चिहु गति । करैं तपस्या पावैं स्थिति ।।
रामचंद्र पै आग्या मांगि । महेन्द्र वन के मारग लागि ।।५४३५।।

अमृतस्वर मुनिवर पैं जाइ । नमस्कार करि लागे पाइ ।।
स्वामी हम परि क्रिपा करो । भव सागर से हम है ले तिरो ।।५४३६।।

दिष्या ले बैठे गुरु पासि । पूर्जै तिहां मनोरथ भास ।।
रामचंद्र थे बड़ा श्रेष्ठ । सीता भामंडल कुमर भ्रष्ट ।।५४३७।।

हनुमान लखमण अब मुवे । बिछड़े सकल अचंभे भए ।।
बहु विभूति इन्द्र सम भई । एक दिवस में सब घिर गई ।।५४३८।।

इह संसार जु रंग पतंग । सब रंगिये महा सुरंग ।।
उतरतां बार न लागै ताहि । तब इसका कहा पतियाय ।।५४३९।।

तासूं बहुत लगावे रुचि । भूलि गई अगली सब सुचि ।।५४४०।।

दूहा

राज किया तिहुं षंड का, भुगत्या सुख अपार ।।
पुन्य विभव सब खिरगई, जात न लागी बार ।।५४४१।।

इति श्री पद्मपुराणे रूनकांकुस दीक्षा विधानकं

१०८ वां विधानक

चौपई

लक्ष्मण की मृत्यु पर राम का विलाप

रामचंद्र देखै निरतांह । पीत बरण देखे सब काइ ।।
किहु कारण रूठा इह भ्रात । मुख सौं कबहु न बोलै बात ।।५४४२।।

अन्य दिवस मोहि आवत देखि । आदर करता पटाभिषेक ।।
मेरे साथ बहुत दुख सहे । दंडक बन मांहीं जब हम रहे ।।५४४३।।

रावण मारे मेरे काज । रघुवंसी की राषी लाज ।।
तुम बिना कैसे जीउं आप । कैसे इह मेटो संताप ।।५४४४।।

सुकोमल देह टटोलै राम । सीता मोह व्याप्या इस ठांम ।।
बचन न बोलै होइ रह्या मूक । मोसों कहा भई अब चूक ।।५४४५।।

उठि लखमण तु लेहु संभालि । लवनांकुस वन गये कुमार ।।
दिक्षा कारण वन में गये । फेरो उनकूं जती न भए ।।५४४६।।

जब वह जाय कर लेसी जोग । तब हुवैगा मन कूं सोग ।।
वे बालक बहु कोमल अंग । कैसे पालैं दिष्या गुरु संग ।।५४४७।।

उनां की वय है भोग विलास । रहई उनों वन माहि आवास ।।
अब तुम उठ करि ल्यावो फेरि । रामचंद्र बोले बहु बेरि ।।५४४८।।

उडिगया हंस वह मृतक पडे । राम विवेकी मोह मां नडे ।।
मुवा मानुष कैसे बोलै बोल । माया के बसि हुआ भोल ।।५४४९।।

भई रयण सिज्या बिछवाइ । लखमण कूं तब लिया उठाइ ।।
सिज्या परि पोढाए जाय । सोवैं अपने कंठ लगाय ।।५४५०।।

काहू कूं निकट न आव न देहि । बहुतैं राम करैं सनेह ।।
इह सेज्या न्यारी है ठौर । तिहां आई सकै नहीं और ।।५४५१।।

मो से कहो मनका सब भेद । तो होवैं संसय का छेद ।।
ऐसी विधि बीती सर्वरी । भया प्रभात पाछिली घरी ।।५४५२।।

पांच नाम कहि उठो संभारि । भूपति खडे तुम्हारे द्वार ।।
पहराए सब वस्त्र संभारि । राजा सकल करैं नमस्कार ।।५४५३।।

तेरे ऊपर जाउं उठो बीर । तुम बिन जलै है मेरा सरीर ।।
रामचन्द्र सोचैं बहु भांत । पीतबरण दीसै किरात ।।५४५४।।

उठै मोह बहुत बिललाइं । पहिले मैं मरता जगि काइ ।।
तेरा दुःख हूं कैसे सहूं । बिना लषमण कहो कैसे रहूं ।।५४५५।।

दूहा

बाल संघाती चीछडे, उठै मगन की झाल ।।
मोह माया के उदय तैं, मिटै नहीं जग जाल ।।५४५६।।

इति श्री पद्मपुराणे लखमण मृत रामचंद्र विलाप विधानकं

१०६ वां विधानक

चौपई

विद्याधर लखमण मरत सुणी । सब ही नैं तब मुंडी धुणी ।।
हा हा कार हुवै सब ठौर । देस देस में माची रौड ।।५४५७।।

भभीषण आदि सकल नरेस । सुग्रीव ससांक वलक दुप के भेस ।।
जिह लग छै विद्याधर भूप । अजोध्या गए रुदन के रूप ।।५४५८।।

रामचंद्र कूं करैं नमस्कार । रोवैं पीटैं खाइ पछाड ।।
पगडी पटकैं फाडैं चीर । सबके हिए लखमण की पीर ।।५४५९।।

रामचन्द्र रोवैं करैं पुकार । रोवैं पीटैं खाइ पछाड ।।
उठो बीर हमसूं तुम बोल । मन की घुंडी वेग तुम खोल ।।५४६०।।

जै मुझतैं कुछ हुआ बिगाड । छिमा करो तुम अब की बार ।।
तब राजा समझावैं घनें । एता मोह कीए नहीं बनै ।।५४६१।।

जीव जाइ पावैं गति और । तुम क्या करो रोग सौं सोर ।।
रुदन किये लछमण जो फिरैं । सब मिल यतन बहु विध करैं ।।५४६२।।

दहन क्रिया तुम करो याहि । इहै न जीवै किस ही उपाय ।।
ऐसी सुणि कोप्यो रघुवंस । अब ही काटू सब के सीस ।।५४६३।।
मोसों लखमण मुंहै रूठ । याहि मुवा कहैं बोलैं झूठ ।।
भभीषण बोलैं समझाइ । ए मूरिख कहा जानैं राइ ।।५४६४।।

लखमण पडया मूरछावंत । तासौं कहैं प्राण भए अंत ।।
याकु औषधि करि हूं भली । ऐसी सुण मन चिंता दली ।।५४६५।।
घटै विरोध भया सत भाव । भभीषण बोलैं तब राव ।।
च्यारू गति में एह सुभाव । काल न छोडै किस ही ठाव ।।५४६६।।

तीर्थंकर अनै चक्रवत्ति । नारायण प्रतिनारायण सत्ति ।।
बलभद्र अनई कामदेव । रुद्र काल बसि हुवई एव ।।५४६७।।
सायर बंध सुरों की थाव । व्यापै काल न छोडै ठांव ।।
मनुष्य पसू नरक गति दलै । काल चक्र सब ही पै चलै ।।५४६८।।

काहू की न दया चित आइ । बालक वृद्ध तरुण को खाइ ।।
सोवत रोवत जागत खात । गावत नाचत चित्त से कात ।।५४६९।।

जल परवत गुफा मुंए रहै । इन्द्रह की सरणागति गहै ।।
तोउ न छोडै काल भटल । सकल खड्या देखैं तिहां दल ।।५४७०।।

मात पिता सज्जन नें कुटुंब । कोई न सकै काल को थंभ ।।
पुरुष थे सा कठै गए । समय पाइ काल बस भए ।।५४७१।।
इहै कछु नई भई है नांहि । कीजे एती मोह की दाह ।।
मोह करम बैरी बलवान । घन्य साध जिन जीत्या जान ।।५५७२।।

भरमै जीव मोह के काज । कबही रंक कबही होवैं राज ।।
बिन समकित जो कुगति ही घणी । आदि अनादि जाइ न भणी ।।५४७३।।

कवण कवण गति का परिवार । छोडे बहुत न पाया पार ।।
ज्यौं बुदबुद जल उपजै समै । ऐसे सब जीव गति भमै ।।५४७४ ।

जब लग हंस तब लग प्रीत । जीव बिना पुदगल भय भीत ।।
वासुं कहा कीजिए नेह । कीजिए लदा तरन सुं गेह ।।५४७५।।
धरम जीव का करैं आधार । मोष नगर पहुंचावन हार ।।
लखमण काया कीजिये दहन । या का सकल मृतक है चिहन ।।५४७६।।
इतनी सुण्यां फिर कोप्या राम । बैरी मित्र न होइ निदान ।।
भाई का अब सांधु बैर । रांवण का बदला लहैं फेर ।।५४७७।।

जीवै लखमण मेरा भ्रात । इसका कहै जलावो गात ।।
दुरजन वचन क्यु मानु आज । माहि नहीं काहु सूं काज ।।५४७८।।

अब बोलैं तुम छोडो क्रोध । तुमारा देखिया मैं समोध ।।
लखमण कूं तुम मृतक कहो । मोह राम रमत कछु लहो ।।५४७९।।

दूहा

जांणि बूझि सुध वीसरी, मोह करम के भाव ।।
मुवां कूं जीवत कहैं, लिया फिरैं इस ठांव ।।५४८०।।

इति श्री पद्मपुराणे भभीषण संसार परिष्या विधानकं
११० वां विधानक

चौपई

राम का तीव्र मोह

सुग्रीव आइ करी बीनती । मृतक देह में जीव न रती ।।
माया में ज्युं रहे भुलाइ । कहो क्यु चिता संवारैं जाइ ।।५४८१।।

दहन क्रिया लखमण की करो । राज विभूत फिर संभरो ।।
ऐसा सुणि कोप्या रामचंद्र । दहन करो तुमारो कुटुंब ।।५४८२।।

मेरा भाई रूसि कै रह्या । तासुं मुवा सब मिल कै कह्या ।।
लखमण उठो सुणु दे कान । कैसा बोल बोलैं अग्यान ।।५४८३।।

चलो कहीं रहिए वनमांहि । हमसों तब कोई कहै कछु नांहि ।।
खोटा वचन कहैं सब लोग । मन कुं कछु उपजावैं विजोग ।।५४८४।।

बांधि पोट कांधा परि डारि । मारग गहियो तहां उजाडि ।।
मनमें किया अति उपाव । सनांन करो तुम लखमण राव ।।५४८५।।

दूहा

चउका ऊपरि बैठाणा करि, किया उबटणां गात ।।
सनान कराया मृतक कुं, रघुपति अपनैं हाथ ।।५४८६।।

चौपई

वस्त्र पहराए उज्जल वरण । अवर भले साजे आभरण ।।
पंचामृत सैं थाल भराइ । विनय करि बोलैं रघुराइ ।।५४८७।।

करैं ग्रास लखमण मुख देइ । यह मृतक कैसे करि लेइ ।।
मुख परिषालैं विनवैं घणा । लखमण मानौ मेरा भणा ।।५४८८।।

तुम बिन अन पांणी नहीं खावजे । मेरा बचन किम नहीं मानजे ॥
भले भले गंधर्व बुलावजे । ताल मृदंग बांसरी बजावजे ॥५४८९॥

सब मिल गावैं एक ही बार । जे लखमण सुणैं संभार ॥
गावैं गुणी जन बाजैं जंत्र । कैसे बोलै मृतक तंत्र ॥५४९०॥

बहुरि लिया कांधा परि आप । षष्ट मास अति सहैं संताप ॥
षेचर भूचर डोलैं चिहुं पास । राम न छोडैं लखमण आस ॥५४९१॥

खरदूषण का संबुकुमार । च्यार रतन सुत बली अपार ॥
बज्रमाली राक्षस वंस । लखमण का जान्यां उड गई हंस ॥५४९२॥

रामचंद्र कुं व्याकुल सुन्यां । इनु सत्रु खडदूषण हुण्यां ॥
काढि दिये थे अलंका आइ । विराधित नै पहुचाए जाइ ॥५४९३॥

रावण सा इनुं मारचा बली । सबकी मांनै मरदन गली ॥
आया अबै हमारा दाव । अजोध्या जाइ बिठावैं गाव ॥५४९४॥

च्यार रतन और माली बज्र । सेन्यां ले सब धाए सस्त्र ॥
घेरी अजोध्या मारू बजाइ । चेत्या सुभट संभाल्या राइ ॥५४९५॥

अयोध्या पर आक्रमण

रामचंद्र सौं जणाई सार । दुरजन चढि आये तुम द्वार ॥
तुम पट बैठो हम करि हैं जुध । रामचंद्र कुं आई सुध ॥५४९६॥

कंधा भोली लखमण कुं लीए । जुध उपाव बहु विध किये ॥
बज्रावर्त्त गह्या टंकार । हूल और सस्त्र लीये संभार ॥५४९७॥

दोउ घां मांडचा सुभटां खेत । झूझैं स्वामि धरम के हेत ॥
दारुण जुध दोउवां हुवा । पीछै पांव धरैं नहीं कुवा ॥५४९८॥

जटा पंखी स्वर्ग विमान । उन मन मांहि बिचारचा ग्यान ॥
मेरा प्रभु राम लखमण । उनु की आय बनी है कठिन ॥५४९९॥

अब इस बिरियां करूं सहाय । कुलांतवक जीव तिहूं ठाइ ॥
जटा देव सौं पूछी बात । अब तुम मध्य लोक कुं जात ॥५५००॥

देव रूप जटायु द्वारा सहायता

जटा देव पिछली कही कथा । दोनूं अवधि बिचारी जथा ॥
रामप्रसाद सुगत्यां बहु सुख । व्याप्या अंत मोह का दुख ॥५५०१॥

जाइ संबोधे इतनी बार । दोन्यु देव आए रणह मंझार ॥
जटा देव सेन्यां में दोडि । दुरजन के दल मांची रोर ॥५५०२॥

जिहां तिहां परबत दिखलाइ। भाज न पावैं सबै डराइ॥
पाथर पड़ैं जिम बरसै मेह। सुध न रही दुष्टां की देह॥५५०३॥
निकसण कुं पावै नहीं गली। महा संकट सेन्यां तिह मिली॥
असा दल कहीं देख्या नांहि। रामचन्द्र गति का नहीं थाह॥५५०४॥
हमारी महा हीन है बुधि। रामचंद सौं मांड्या जुध॥
भभीषण मनैं करै था हमैं। बिन मान्या अभी मानैं रमैं॥५५०५॥
ए ईश्वर इनकी बडी कला। हमारा इनसौं कबहुं न चला॥
अब जे निकसण पावैं आज। दिख्या ले साधैं धरम का काज॥५५०६॥
जटा देव दया मन आव। धरम द्वार देखे छंडै राइ॥
चार रक्ष बज्रमाली नरेस। दोन्युं भए दिगम्बर भेस॥५५०७॥
रतनवेग मुनिवर पै जाइ। दिक्षा लई करि मन वच काइ॥
सहे परीस्या बीस अर दोइ। महा मुनीस्वर जिह विध होइ॥५५०८॥
जटा देव साध्यां कुं देखि। नमस्कार उन किया परेख॥
धन्य जती जे साधैं जोग। तजैं सकल माया का भोग॥५५०९॥

कृतांतवक्र द्वारा राम को समझाने के लिये माया रचना

कृतांत सुर अन्य जटा देव। इनुं रच्या माया का भेव॥
मारग मांहि कछु सूकी डाल। क्यारी रची अति ही सुविशाल॥५५१०॥
कुवा उलीचैं सींचैं नीर। बाडि बनावैं वाकै तीर॥
रखवाली करैं बहु भांति। बरजैं सब कुं भीतर जात॥५५११॥
रामचंद्र देख्या यह सूल। रे मूरख तुम काहे भूल॥
सूकी लकडी किम ह्वै पडी। ते एती क्युं करी जपडी॥५५१२॥
बिन कारज एता दुख सहै। सूकी डाल ए फल कहां गहै॥
तबैं माली नैं उत्तर दिया। तुम कां मृतक कांधै लिया॥५५१३॥
इह जीवैं तो इह उपजै सही। सूकी डाल ए भी फल गही॥
इतनी सुण कोप्या रामचन्द्र। वन में भी हम कुं दुख दुंद॥५५१४॥
ता कारण बसती कुं त्याग। इहां भी हमकुं कुवचन लाग॥
कहां मारूं माली सिरं चोट। असा बचन कह्या इन खोट॥५५१५॥
मेरा वीर रूठ करि रह्या। मृतक कहै इन भेद न लह्या॥
हौ लछमण सुणौं इह बात। माली बचन कहै इह भांति॥५५१६॥
उठौ वेगि लगाऊं हाथ। असी कहै न काहू साथ॥
तब मैं क्यारी सब ढाहि। आगे चल्या रघुपति राइ॥५५१७॥

अन्य जु देख्या तेली एक । पीलै रेत न करै बिवेक ।।
राम पूछै तेली सूं भेद । काहे करै रेती सुं षेद ।।५५१८।।

रेत मांझ तेल क्यू लहे । आप पचै न बैलकूं दहै ।।
बोला तेली सुणुं तुम राम । जै जीवै यह मृतक इस ठांम ।।५५१९।।

रेत मांझ भी निकसै तेल । मृतक जीवै तो सही ए पेल ।।
असी सुणि बोले रघुनाथ । ई गंवार तेली तु कुजाति ५५२०।।

मूठे कूं कहे तू है मुवा । अपने जीव का डर नहिं हुवा ।।
कहा मारूं तेली पर षड्ग । कई नूं तोडि किया उपसग्ग ।।५५२१।।

आगे देख्या कौतक अवर । मटकी नीर बिलोवै तिह ठौर ।।
गुवाल भी बोले रघुनाथ । जल में माखण निकसै किह साथ ।।५५२२।।

कहै अहीर मृतक जे जीयई मुवा । तो जल मांहि घडि सनहूवै ।।
कहै किसाण जे जीवै मुवा । तो दह कमल हुवै नवा ।।५५२३।।

क्रोधवंत तब होइ कै चल्या । जटा देव कौतिक किया भला ।।
मृतक एक लीया धरि कंध । रुदन करै मोह में अंध ।।५५२४।।

रामचन्द्र नैं दिष्या ताहि । समझावै वाकूं नरनाह ।।
एतो मोह करै किम मूढ । मुवा न जीवै महा अगूढ ।।५५२५।।

जै लखमण भी पावै प्राण । इह फिर जीवै तेरा जांन ।।
जे राजा जीवावै मुवा । तो ए भी जीव पावैगा नवा । ५५२६।।

छह महिने वाकूं गए बीत । ज्यों लखमण त्यों या की रीत ।।

राम को वास्तविक ज्ञान प्राप्त होना

असी सुण चेत्या रामचन्द्र । तोडया तुरत मोह का फंद ।।५५२७।।

ज्यौं असोग वृक्ष कूं पाय । जोग बिजोग सकल वह जाइ ।।
त्रिषा सैं व्याप्या पीवै नीर । मिटै सकल त्रिषा की पीर ।।५५२८।।

जैसे श्री जिनवाणी सुणें । भव्य जीव पावै सुख घणें ।।
ज्यों बटोही कों बन मांहि । सीतल पावै वृक्ष की छांह ।।५५२९।।

जैसे तपसी पावै मोष्य । जनम जरा के टूटै दोष ।।
मोह दसा सबही बुझ गई । उपज्या ग्यांन चेतना भई ।।५५३०।।

मिहुं अभावै जीव बहु जौंन । थिरन रह्या किया तिह गौन ।।
मात पिता सुजन परिवार । कीया भव में मोह अपार ।।५५३१।।

कोई नहीं जीव का सगा । शुभ अर अशुभ कर्म संग लग्या ।।
सुभ साता तैं पावै सुख । असुभ उदय तैं पावै दुख ।।५५३२।।

मुवा न जीवै किस ही भांति । मैं क्यूं दुख किया दिन रात ।।
विकलप चुक्या भया संतोष । ग्यांन लहर सूं काया पोष ।।५५३३।।

तिहां देव करी बादली । पवन सुवास चली तिहां भली ।।
नांनी बूंद मेह की बुठी । देवांगनां चरणन कूं नठी ।।५५३४।।

गावैं गीत सुहावना बोल । ताल मृदंग बजावैं ढोल ।।
रामचंद्र गुण गावैं आन । महा सुकंठ सुहावनां तान ।।५५३५।।

दोनूं सुर तिहां अस्तुति करैं । तबै रघुनाथ पूछै उन खरैं ।।
तुम हो कवण कहो सांची बात । रूप अरूप विराजै कांति ।।५५३६।।

कहैं देव हम तुम्हारे भगत । जटा पंखी मैं पाई सुर गति ।।
जब रावण नैं सीता हरी । तब मैं अपणी बल बहु करी ।।५५३७।।

उन मुन नैं डारिया रोड । तुम ही सुनाए पंचनाम बहोडि ।।
तुम प्रसाद मैं हुवा देव । सुख में कबहुं जाण्यां भेव ।।५५३८।।

सीता की सुध बीसर गया । तुम कारिज मै कबहुं न किया ।।
तुम व्याकुल लखमण कै काज । तब मुझ आसण कांप्यो आज ।।५५३९।।

इह कृतांतवक्र का जीव । सकल भूषण पै सुनी धरम की नींव ।।
तुम वचन कीया था एह । जे तुम लहो देव की देह ।।५५४०।।

हम माया में रहैं भुलाइ । वा समैं हमैं समोधियो आइ ।।
जटा देव जब तुम पै चल्या । तब हम सौं मारग में मिल्या ।।५५४१।।

हम भी सुणि आये तुम पास । अब तुम करो सुगति की आस ।।
विद्याधर अनैं भूमिगोचरीं । सगली सभा राम ढिग जुडी ।।५५४२।।

सत्रुघन सुं बोलैं राम । मध्य लोग की भुगतो ठाम ।।
राज विभूति दई सब तोहि । उत्तम खिमां कीजिए मोहि ।।५५४३।।

सत्रुघन विनवै तिण बार । तुम प्रसाद भुगत्या संसार ।।
राज भोग मैं किया अथाह । तुम कौं छोडि कहां हम जाय ।।५५४४।।

हम भी करैं तपस्या संग । राज भोग जिम रंग पतंग ।।
तप करि साधैं आतम ग्यांन । बहुरि न भ्रमैं भवसायर आंन ।।५५४५।।

राम सत्रुघन चिंता इह धरी । सकल सभा मिल अस्तुति करी ।।
धन्य राम त्रिभुवन पति राइ । धरम ध्यान यूं मन दिढ ल्याई ।।५५४६।।

सोरठा

मन में धरइ वैराग, राज रिध सब परिहरी ॥
दया भाव सुं राग, धर्म प्रीत राखो खरी ॥५५४७॥

इति श्री पद्मपुराणे लछमण संस्कार मित्र देव आगमन विधानकं

१११ वां विधानक

चौपई

सत्रुघन के सांभलि बैंन । रामचन्द्र सुख हुवा चैंन ॥
धन्य सत्रुघन तेरी बुधि । समकित सुं नैं राखो सुधि ॥५५४८॥

अनंग लवन लवन का पूत । दीर्घीं सगली राज विभूति ॥
पट बिठाइ करि ढाले कलस । अनंग लवन सबही में सरस ॥५५४९॥

परजा की रक्षा बहु करं । दया दान चित बहु विध धरं ॥
दुरजन दुष्ट नवैं छिन मैं । सिगरां कै सुख उपज्यो हिये ॥५५५०॥

भरथ चक्र नें छंड्या राज । असा रामचन्द्र नें किए काज ॥
संभूषण भभीषण का पूत । दीयों लंका राज विभूत ॥५५५१॥

राजनीति सब जाणैं भली । प्रजा सुखी मन मानैं रली ॥
मदगम सुत अंगद का बली । सुग्रीव राज सौंप्या विध भली ॥५५५२॥

वेईराग भाव तब भयो नरेस । चाहै भया दिगंबर भेस ॥
अरहैदास सेठ पं गए । सेठ महोत्सव बहु विध किए ॥५५५३॥

पूछैं सेठ से रावजी बात । गरु बतावो उत्तम जात ॥
सेठ कहैं सुव्रत हैं मुनी । चारण रिध नाहि ऊपनी ॥५५५४॥

मुनिसुव्रत स्वामी का बंस । महामुनी धरम का अंस ॥
असी सुणि मुनिवर पैं चले । अष्ट द्रव्य जे उत्तम भले ॥५५५५॥

पूजा कारण चले भूपाल । सैनां सकल चली तिह काल ॥
बन मैं मुनी का दरसन पाइ । उतरे भूमि सरब ही राइ ॥५५५६॥

करि डंडोत चरण कूं नए । देइ परिक्रमा ठाढे भए ॥
अस्तुति करि बोलियो नरेन्द्र । ठाढे भए साध को वृन्द ॥५५५७॥

स्वामी हम कूं देहु चारित्र । जीतें मोह कर्म के सत्र ॥
राजा सहस सोलह संग और । सत्ताईस सहस्र तिय संग और ॥५५५८॥

राम द्वारा मुनी दीक्षा होना

मुनिवर का पाया उपदेस । रघुपति भए दिगंबर भेस ।।
राज दोष तजि साधै जोग । छांडे सकल जालि का भोग ।।५५५९।।

श्रीमती पास अर्जिका भई । बाईस विध सौं परिस्या सही ।।
अवधिग्यांन रघुपति को भया । धर्म उपदेस घणां नैं दिया ।।५५६०।।

सौ बरषां लगि रहे कुमार । तीन सै जन्म पिता की लार ।।
चारि सहस्र बरष मुनि साध । ग्यारह सहस्र पांच सौ अडसठि बाधि
।।५५६१।।

इतना राज करया मन ल्याइ । पचीस बरस में केवल उपाइ ।।
एक सहस्र नैं बारह बरष । करी तपस्या मन में हरष ।।५५६२।।

खोटा खरा समभि तन भेद । मिथ्यातम का किया विछेद ।।
धरमरीत समभावैं ग्यांन । मिथ्या मानैं जे अग्यान ।।५५६३।।

जैन धरम की निंदा करैं । ते मिथ्याती नरका पडैं ।।
बहु सुनैं समकित पद गह्या । प्रानी का संसा नहीं रह्या ।।५५६४।।

सोरठा

सरब आउषो सत्रहै हजार, अनैं पांच बरष ।।
रामचंद्र जगदीश, प्रतिबोधे भविजन घणे ।।
धरया ध्यान इह ईस, ते महिमां कहो लग गिणे ।।५५६५।।

इति श्री पद्मपुराणे श्रीराम निःक्रमण विधानकं

११२ वां विधानक

चौपई

राम की तपस्या

आतम ध्यान करैं रामचन्द्र । वाणी सुंणत होई आनंद ।।
इनके गुण अति अगम अपार । राम नाम त्रिभुवन आधार ।।५५६६।।

रसना कोटिक करैं बखान । उनके गुण का अंत न आंन ।।
इन्द्र धरणेन्द्र जे अस्तुति करैं । ते नहीं वोड अंत निसरैं ।।५५६७।।

छठैं अहिनै निमित्त आहार । नंदस्तल नगरी के मझार ।।
रवि की जोतिम का परताप । महा मुनीस्वर सोभैं आप ।।५५६८।।

ईरज्या समिति सौं गजगति चाल । मांनौं मेर सुदरसन हाल ।।
सोभैं कंचन वरण सरीर । उमडे लोग भई अति भीर ।।५५६९।।

देखें रूप सराहैं दुनी । इनकी महिमा जाइ न गिनी ॥
कैं सुरपति कैं कोई देव । ग्यांनवंत ते समझैं जीव ॥५५७०॥

श्री रामचंद्र आए मुनिराइ । अहार निमित्त पहुंचे इस ठांइ ॥
घर घर द्वारा पेषण होइ । खेत्र सुध करें सब कोइ ॥५५७१॥

उत्तम वस्तु र सोधैं सुध । सब कैं दान देण की बुध ॥
सब ही वंछें असा भाव । धन्य वहै जीमैं जिह ठाम ॥५५७२॥

नग्री में हुवा बहु सोर । छूटा हाथी बंधन तोडि ॥
दाहे फोडे हाट पटूणा ठांइ । घोडा छूटा तोडि हिणहिणाइ ॥५५७३॥

कोलाहल सुणि प्रतिनंदी भूप । निकस झरोखा देखैं भूप ॥
मुनि कौं देखि कहै इण भाइ । भेज्या किंकर लेहु बुलाय ॥५५७४॥

दोरा घणां आए मुनि पास । नमस्कार करि विनती भास ॥
दोइ कर जोडि बीनवैं खरे । हम पर प्रभुजी क्रिया जो करें ॥५५७५॥

हमारा राजा पासि तुम चलो । भोजन लेहु धरम में मिलो ॥
उनां नैं जाण्यां मुनी का भेद । अंतराय भया मुनी कुं खेद ॥५५७६॥

फिर आया वन में धार्या जोग । पसचाताप करैं सब लोग ॥
अब कैं बे मुनि आवैं फेरि । विध सौं भोजन द्यां इह बेर ॥५५७७॥

मुनि कूं भई अंतराइ, भूपति विधि समझैं नहीं ॥
फिर आए वन ठांइ, लिव ल्याए चिद्रूप सौं ॥५५७८॥

इति श्री पद्मपुराणे गोपुरसौं छोभ विधानकं

११३ वां विधानक

चौपई

राम की तपस्या

पष्टमास अर गह्यौ संन्यास । एक बरष पीछैं ए आस ॥
जे वन में पाऊं आहार । भोजन कूं इच्छौ तिह बार ॥५५७९॥

नगर मांहि नैं कबहु जांहि । असा मन राख्या उछाह ॥
प्रतिनंद राई प्रभावती भरतारी । उनु सोच असी विध करी ॥५५८०॥

अबकै दंड आवै इहां मुनी । दांन देय करि सेवा घनी ॥
नंदन बहुरि सरोवर वन माझि । दंपति गए क्रीडा कुं सांझि ॥५५८१॥

करी रसोई उत्तम भली । बहु पकवान मौज बहु मिली ॥
महासुगंध मनोहर बने । हरिष हरिष बडे कीए घने ॥५५८२॥

षटरस व्यंजन प्रासुक नीर । भात दाल और उजली खीर ॥
रामचन्द्र उठिया मुनीन्द्र । राजा राणी भयो आनंद ॥५५८३॥

विधि सौं द्वारा पेषण किया । चरण धोइ गंधोदक लिया ॥
नैयाहस सौं दीया दान । मुखसौं बोल्या सुभ भगवान ॥५५८४॥

भई दुदुभी किनर गीत । रतनवृष्टि पुहुपन की रीत ॥
जै जै कार देवता करैं । धन्य धन्य वचन मुख ही धरैं ॥५५८५॥

वनमें फिर कर लाग्या ध्यान । राजा कै चित समकित आंन ॥
बहुतां नैं समकित व्रत लिया । । सब ही के मन आई दया ॥५५८६॥

दांन सुपात्रह दीजे सही । अरचा चरचा पूज करेइ ॥
बहुतों नैं छंड्या मिथ्यात । मुनिसुव्रत सेवैं दिन रात ॥५५८७॥

रामचंद्र दें धरम उपदेस । मानैं राव रंक उपदेस ॥
अणुव्रत दरसण ग्यान आचार । उतरैं भवसागर तैं पार ॥५५८८॥

मुनिवर ध्यांन गंभीर, कहै धरम समझाइ करि ॥
पावैं है पर पीर, रामचंद्र मुनिवर बली ॥५५८९॥

चौपई

नासा दृष्टि आतम ध्यान । बारह तप द्वादस व्रत जानि ॥
तेरह विध सौं चारित्र भरा । समकित सौं दिढ राखैं खरा ॥५५९०॥

पंच महाव्रत पांच सुमति । मन वच काया तीनुं गुपति ॥
संका रहित रह्या वन मांझ । करैं सामायिक वासर सांझि ॥५५९१॥

चउदह आठ परीसा सहैं । राग द्वेष सुं परहा रहैं ॥
च्यार कषाइ करी सब दूर । क्रोध मान माया कुं चूर ॥५५९२॥

अठाईस मूल गुण पाल । तोड्या मोह करम का जाल ॥
पंचइन्द्री की रोकी चाल । छांडि दिया माया जंजाल ॥५५९३॥

आरत रुद्र दुई ध्यान हैं बुरे । ते प्रभु नैं सब परिहरे ॥
धरम सुकल सों ल्याया चित्त । सुकल ध्यान की जांणी थित्त ॥५५९४॥

षट लेस्या का करचा विचार । कुस्न नील कापोतं टारि ।।
पत पद्म महाध्यांन चित चढ्या । शुक्ल ध्यांन बहु विध चित पढ्या
।।५५६५।।

छह रति सहैं परीसा घणी । धरम सुणावें संबोधि गुणी ।।
करि बिहार फिरे बहु देस । बहुतां नें दियो धरम उपदेस ।।५५६६।।

भूषर खेचर दानव देव । निस दिन करैं राम की सेव ।।
कोटिसिला पहुंचे रामचन्द्र । नमस्कार करि ताकूं वंदि ।।५५६७।।

सिध सुमरण करि बैठे तिहां । धरम ध्यान आतम गुण लिहां ।।
क्षिपक श्रेणी आतमगुण लहांन । ऐसी विधि सौ ल्याया ध्यांन ।।५५६८।।

स्वयंप्रभू अच्युत विमांन । उनै अवधि धरि समझया ग्यांन ।।
पूरब भव का किया विचार । मैं थी सीतां स्त्री अवतार ।।५५६९।।

रामचन्द्र लछमण दोउ वीर । नारायण बलभद्र सरीर ।।

सीता के जीव सीतेन्द्र का राम के पास आगमन

मैं पटराणी राम भरतार । दुख सुख देख्या सारौ लार ।।५६००।।

लछमण मुवा अधोगति गया । रामचन्द्र व्याकुल अतिभया ।।
समझि जैन की दिष्या लई । राज विभूति सब तैं तजि दई ।।५६०१।।

द्वादस गुणस्थान करी स्थिति । अबं डुलाउं उसका चित्त ।।
ए थे भाई दोन्यूं बली । रामचंद्र बांधी स्थिति भली ।।५६०२।।

इहु ले मोष्य बहु भुगते नरग । उहां भोगमैं महा उपसरग ।।
इननैं जाण्यां संसार स्वरूप । दिक्षा धरी दिगंबर रूप ।।५६०३।।

जई तै पटालु कछूं ग्रसत । भुगताउं संसारी वसत ।।
नंदीस्वर की कराउं जात । लछमण नैं काढूं किह भांत ।।५६०४।।

ऐसी समझि उतरया सीतेन्द्र । कोटिसिला जहां रामचन्द्र ।।
बहुत देव आए ता संग । बरखैं ग्रसि ही फूल सुरंग ।।५६०५।।

मंदा पवन पटल जल धणाई । झमकैं मेह दमघ कूं हणेद ।।
छह रितु के फूले फूल । सीतल छांह सुख का मूल ।।५६०६।।

पंछी सगला करैं किलोल । सबद सुहावन मधुरे बोल ।।
मोरद ग्रांब कोइल धुनि करैं । सुवा पढ़ै जिनवाणी खरैं ।।५६०७।।

सुर सीतां का रूप बणाइ । हंस गमन सोभा बहु पाइ ।।
रामचंद्र के सनमुख आइ । कहैक बोलो रघुपति राइ ।।५६०८।।

तुम कु सब बन ढूंढत फिरी । अब हम भई महा सुभ घडी ।।
मैं दरसन अब तुम्हारा लह्या । चरण छांडि अब जाऊं किहां ।।५६०६।।

मैं मान्या नहीं तुम्हारा बचन । करी तपस्या बन मैं कठिन ।।
मो परि प्रभू होइ क्रिपावंत । अजोध्या चलि सुख करो अनंत ।।५६१०।।

तुम्हारी आग्या राखूं सीस । छांडो तप भुगतो सुख ईस ।।
करो राज भोग संसार । तपके किए देह सब छार ।।५६११।।

छीजैं काया घटै स्वरूप । हम सीता नारी अन्य नै स्वरूप ।।
चालो गेह भोग सब साज । काया सैं कष्ट सहो बेकाज ।।५६१२।।

मैं बन में साधै थी तप । श्री जिन ध्यान करै थी जप ।।
विद्याधर की कन्या आइ । मोसूं कही बात समझाइ ।।५६१३।।

जोबनवंत क्यूं दीक्षा लेइ । पंच इन्द्रीं नैं क्यूं दुख देइ ।।
आतम कष्ट किया बहु दोष । जोबन बैस कीजिए पोष ।।५६१४।।

वृद्ध अवस्था लीजिए जोग । अब हरष कीजिए भोग ।।
तूं फिर आवैं राम के पास । हम हैं कन्या इह मन आस ।।५६१५।।

तुम पटराणी हम सेवा करैं । रामचन्द्र सौं सब सुख भरैं ।।
वे भी तुम पै आवैं अन्तरी । तब साची जाणुंगे खरी ।।५६१६।।

देवांगना एक सहस्र । बालक बैस रूप की हंस ।।
सोलह सबै कीए श्रृंगार । आभरण सबै सोभैं इकसार ।।५६१७।।

स्यो भणोट उतरी अपछरा । सबद सुहावन रस सुं भरया ।।
कोकिल कंठ कहैं मुख बीन । रूपवंत अति दीरघ नैन ।।५६१८।।

बहुराग छतीस रागनी । सोलह कला संपूरन बनीं ।।
ताल मृदंग बजावैं बीन । करैं नृत्य बोलैं आधीन ।।५६१६।।

राजभोग तजि बैठे आंन । ए सुख छांडि कहा होइ अग्यांन ।।
चलो प्रभू हमारे संग । सुख भुगतो दुख का करो अंत ।।५६२०।।

इन्द्री मोस्या होइ हैं पाप । ए सुख छांडि सहो संताप ।।
यह है भोग भुगत की बैस । मानूं तुम हमारा उपदेस ।।५६२१।।

बहुतैं भाव दिखावैं खरी । नाचै सरस महा गुण भरी ।।
बांह उठावैं जंभाई लेह । पग अंगुष्ठ भूमि परि देह ।।५६२२।।

उछल पडी गहैं द्रुम डोर । लोडैं फूल सोभैं रंग सार ।।
सिर तैं वस्त्र धरिन परि पडैं । गावैं नाचैं भय नहीं धरैं ।।५६२३।।

मीठा वचन कठोलु हास । उनकूं नहीं संसारी भास ॥
सुकुल ध्यान सूं ल्याया चित्त । अनुप्रेष्या कुं सरधैं नित्त ॥५६२४॥

ग्याठ तीन तोडी परकित्त । च्यार करम सूं छुट्या हित्त ॥
महा सुदि पिछली निस रही । दोइ घडी तैं अधिकी नहीं ॥५६२५॥

केवलग्यांन लबधि तिह बार । दसों दिसा भयो जय जय कार ॥
निरमल दीसैं दस हूं दिसा । दरसन किया मिटै है संसा ॥५६२६॥

इन्द्र आसण कंप्या तिह घडी । अवधि विचार बनती करी ॥
उतरी हेठैं डंडवत किया । धनदत्त कुमार कूं आग्या दिया ॥५६२७॥

कंचन मही रची तिह ठौर । जै जै कार करी सुर और ५६२८॥

दूहा

इन्द्र धरणेन्द्र किन्नर सहित किया महोत्सव आइ ॥
अष्ट द्रव्य सूं पूज करि, बारह सभा रचाइ ॥५६२९॥

व्यंतर देव सेवा करइ, नरपति खगपति और ।
वाणी सुणि सब सुख लहैं, पाप बंध का छोर ॥५६३०॥

चौपई

सीत इन्द्र अवर सब देव । विनवैं सकल दीनता भेव ॥
हमनैं महा उपाया पाप । तुमकूं छल बल दए संताप ॥५६३१॥

तुमारा चित्त सुदर्शन मेर । ऐसा कवण सकै तिह फेर ॥
हम परि क्षमा करहुं जगदीस । बारंबार नवावैं सीस ॥५६३२॥

केवल वाणी अगम अथाह । उपजैं पुन्नि मिटै सब दाह ॥
सबकूं संसय होवै दूर । प्रांणी का है जीवन मूर ॥५६३३॥

रवि कै उदै तिमिर मिट जाइ । वाणी सुणत मिथ्यात पलाइ ॥
उपजी बुध धरम कै सुनैं । निहचै अष्ट करम कूं हनैं ॥५१३४॥

केवलि वचन अपार, बानी सुनि निहचै धरैं ॥
सुख भुगतैं संसार, बहुरि जाइ मुकति बरैं ॥५६३५॥

इति श्री पद्मपुराणे पद्मस्य केवलज्ञान प्राप्ति विधानकं

११४ वां विधानक

चौपई

सीतेन्द्र लक्ष्मण चित आंन । वह राखें था मेरा मांन ॥
सेव हमारी कीनी घणी । उसकी महिमा जाइ न गिणी ॥५६३६॥

नरक बालुका भूमि तीसरी । ताकी गति अैसी स्थिति पडी ॥
अब मैं वाकूं काढूं जाइ । अैसे देव विचारूं भाइ ॥५६३७॥

मानुषोत्र पर्वत कै निकट । तिहां बहुते मारग विकट ॥
घस्या देश बालुका ठांव । राख्य संरूप है संबुक नाम ॥५६३८॥

लखमण कूं देवैं बहु त्रास । मारैं मुदगर प्रांण का नास ॥
फिर कर विषर होइ इह देह । पल पल मारि करैं इह खेद ॥५६३९॥

पारा ज्यूं बिखरै फिर जुडै । मार मार सबद बहु करै ॥
जे जुझे थे रावण संग । भारत रुद्र में तज्या था अंग ॥५६४०॥

ते थी सकल भया इक ठौर । भुगतैं दुख करैं अति घोर ॥
छेदन भेदन मुदगर मार । सहैं वेदना अगम अपार ॥५६४१॥

भोजन रयण मांस जो खाई । मद मधु सुरापांन ज्यूं अचाइ ॥
ऊंबर नैं कठुंबर भखैं । ताता थंड लोह दे फकैं ॥५६४२॥

होट चीर ठोसैं हैं प्यंड । ऊपर तैं ठोकैं हैं डंड ॥
ताती रांग डालैं मुख मांहि । सुरा पान का ए फल आंहि ॥५६४३॥

करैं अखेट हनैं बहु जीव । सुलां रोप्य दुख की नीव ॥
छेदन भेदन बारंबार । उभारी चोर का काटे हाथ ॥५६४४॥

परनारि वेस्या सुं रत्त । लोह फूतली कीजे जकत ॥
जोर मिलावैं वेही जुडैं । सात विसन का ए दुख भरैं ॥५६४५॥

वैतरणी में दीजे डारि । मच्छ कच्छ लें काया फाडि ॥
कोई रूप सिंघ कोई स्वान । भखैं देह दुख पावैं प्रान ॥५६४६॥

जिसका था तिसको कुछ वरैं । देह परीस्या उनकूं धरैं ॥
सीतेन्द्र लक्ष्मण कु जांनि । संबुक नैं समझाया ग्यान ॥५६४७॥

भारत रुद्र लेती इह गत्ति । अजहु मूढ न चेत्यो चित्त ॥
देख नारकी भय चित करेइ । इहतो देव कांति बहु लहेइ ॥५६४८॥

सुरनं देख हूं गए सांत । पूछै संबुक देव कूं बात ॥
अमर छोडि आए तिहां घणे । वाको देव सरण आपणे ॥५६४९॥

पूर्व कथा

सीतेन्द्र बोलै समझाई । हूं सीता हूं लखमण राई ॥
रामचंद्र की थी पटधणी । दंडक वन की प्रापति बनी ॥५६५०॥

तिहां तप साधै संबुक कुमार । लखमण नें मारिया प्रचुकार ॥
भया जुध खरदूषण साथ । मोहि हरी लंका के नाथ ॥५६५१॥

रामचंद्र लखमण सुधपाई । संग्राम किया रावण सुं आई ॥
रावण मारचा मोहि आणी जीत । उदय भई करम की रीत ॥५६५२॥

घरतैं मोहि दई निकास । भय दिव्य दीया जीवन की आस ॥
तप करि अच्युत स्वर्ग विमान । जैन धरम की मांनी आंनि ॥५६५३॥

जैन विना नहीं लहिए मुक्ति । लखमण भया मोह की शक्ति ॥
कारण पाइ तिहां थी मरचा । छह मासा लग राम लिये फिरचा ॥५६५४॥

कृतांतवक्र अनै सुर जटा । उनही संबोध्या मोह तब घटा ॥

बालुका पृथ्वी में रावण, लक्ष्मण एवं संबुकुमार को कष्ट

रामचंद्र नैं दिष्या लई । केवल लबधि ग्यांन की भई ॥५६५५॥

असी सुणत अचंभा भया । दया भाव कौं मन भया ॥
रावण लखमण संबुकुमार । तीनुं बालुका भूंम मझार ॥५६५६॥

इनसुं देव कहै समझाइ । तुम दुख दूर करो ले जाइ ॥
लखमण कुं जब लिया उठाइ । देही बिखर गई तिह ठाइ ॥५६५७॥

बहु विध जतन किया तिह ठांई । पावै नहीं उनुंका जीव उपाई ॥
ज्यौं दरपण में झांई देखि । हाथ न आवै किस ही भेष ॥५६५८॥

असी भांति नारकी देह । दीसै प्रतिख ऊपजै सनेह ॥
हाथ लगायां बिखरी पडै । नरक मांहि परस्पर भिडैं ॥५६५९॥

बेर बेर दुख पावै घणां । रावण लखमण इह विध भणां ॥
हम तो बांध्या करम अथाह । भुगत्या बिन न छूटा जाइ ॥५६६०॥

अब कै करम भुगत्यां ही बणै । असी तुम पासैं हम सुणैं ॥
बहुरि न आवै असी गति । इहां सुं गी कब लहैं मुगति ॥५६६१॥

देव कहै समकित मन धरो । भुगति करम इक भव तै करउ ॥
तप करि पहुंचोगे निरवाण । बहुरि न भ्रमैं चतुरगति आंन ॥५६६२॥

समकित बिन बीत्यो बहुकाल । कबहुं न सूझा माया जाल ॥
बिन निसचै डोल्या बहु जौनि । क्याऊं गति में कीयो गौंन ॥५६६३॥

रोग सोग बहु पीडा सही। जैन धर्म सौ प्रीत न गही ॥
जे बहु करैं दान तप जाप। समकित बिना न टूटैं पाप ॥५६६४॥

अब राखो निराचल चित्त। केवल वाणी मानौं नित्त ॥
ऐसी सुणि वे अस्तुति करी। धन्य सीतेन्द्र दया चित धरी ॥५६६५॥

हम तो समोध्या दया निमित्त। निराचल रख्या इक समकित ॥
बैठि विमांण चल्या आकास। अच्युत स्वर्ग जिहां था वास ॥५६६६॥

नरक देखि भया भयभीत। हीयो धड़कै कांपै चित्त ॥
ऐसे दुख भुगते कई बार। हींडित जीव न पायो पार ॥५६६७॥

राज केवली राम के पास आगमन

श्री रामचन्द्र कूं केवलज्ञान। चले अमर सुणि परम बखान ॥
तारन तरन श्री रामचन्द्र। दरसन देखत होइ आनन्द ॥५६६८॥

सीतेन्द्र के संग सुर घने। किनर गंधर्व बहुतैं बने ॥
कंसाल ताल बाजैं बांसुरी। बीणा मृदंग की सोभा खरी ॥५६६९॥

करैं नृत्य गावैं बहु गीत। रामचन्द्र गुण सुमरण चित ॥
आगे देव महोच्छा कारण। समोसरण देख्या दुख हरण ॥५६७०॥

समवसरण

बारह सभा बैठी तिह ठौर। निरमल दीसैं च्यारूं ओर ॥
वन की सोभा अति रमणीक। फूले फलैं दे दीसैं नीक ॥५६७१॥

जाणों भूमि रतन मणि खरी। ऐसी जुगति देवतां करी ॥
देई प्रक्रमा सिष्टाचार। अस्तुति पढ़ैं वे बारंबार ॥५६७२॥

तुम सम राम अवर नहीं बली। मोह करम की प्रगति दली ॥
ग्यांन खड़ग सौं करम बस किये। उत्तम ध्यांन विचारया हिये ॥५६७३॥

परिसह पवन तैं पाप उडाइ। ऐसे तप साध्या मुनिराइ ॥
सुकल ध्यान सौं केवल पाइ। भव जल पडे लगे ढिग आइ ॥५६७४॥

जो तुम पाया मारग मोख्य। हमपं संगि अपणां ज्यो सौख्य ॥
हमारी थी तुम परि बहु मया। पहुंचाओ मुक्ति करो अब दया ॥५६७५॥

रामचंद्र इमि वांणी कहैं। जिनवाणी जे मन बस गहैं ॥
तब कोई पावैं सरग मुक्ति। तेरह विध सौं धरैं चारित्र ॥५६७६॥

जब लग क्रोध रु माया मान। लोभ काम तैं भ्रम अग्यांन ॥
पाथर कौं हीया तल राखि। जमणी तिरया चाहै धरि कांधि ॥५६७७॥

ऐसी हैं ये च्यार कषाय । ज्यौं पाषाण सौं तिरयो न जाइ ।।
पाथर संग तिरया है कोइ । तारण समकित रथ ना होइ ।।५६७८।।

तजि कषाय तिरै संसार । छोडि देई सिर तैं सब भार ।।५६७९।।

लखण गुण के मारग जोइ । राग दोष छोडै ए सोइ ।।
पंच महाव्रत समिति पांच । मन वच काया निसचै सांच ।।५६८०।।

छह रति सहै परीसहा अंग । समकित नै दिढ राखै संग ।।
सम्यक दरसन ग्यांन चरित्र । इह विध होवै जीव पवित्र ।।५६८१।।

प्रश्न करना

भव जल पडै जाइ सिव मध्य । जोति ही जोति मिलिया विध्य ।।
सीता इन्द्र किया परसन्न । इह संदेह है मेरे मन्न ।।५६८२।।

राजा दसरथ जनक नै कनक । अपराजिता [illegible] ।
लवनांकुस का सबै वृतांत । इनकी गति भई किण भांति ।।५६८३।।

भावमंडल कैसी गति लही । इह चिंता मेरे चित रही ।।

राम की वाणी

श्री रामचंद्र की वाणी हुई । भव्य जीव सुणौं सब कोई ।।५६८४।।

राजा दसरथ आणत विमांण । जनक कनक भी वाही ठाण ।।
अपराजिता केकसी केकइया । सुप्रभास वैं देवगति पया ।।५६८५।।

वहां तैं अवतरी आर्यन्त पुर । एका भव मुकति मैं जुरि ।।
भावमंडल तणी सुंण कथा । भोग भूमि तणां नै दीपता ।।५६८६।।

भोग भूमि का भोगवै सुख । उनकूं ए करती नहीं दुख ।।
सीतेन्द्र पूछै वे कर जोडि । भावमंडल की कहो बहोडि ।।५६८७।।

कुरु भोग भूमि कवण पुन्य लही । उनै तपस्या कीनी नहीं ।।
रामचन्द्र बोलैं भगवान । भावमंडल का कहै बखांन ।।५६८८।।

नगर अजोध्या सेठ कुंभपति । मकरी त्रिया सेती बहु हित ।।
काम वज्रांक दोन्युं पुत्र । ज्युं ससि की अति कान्ति ।।५६८९।।

भोग भुगति दिन बीता घणे । भया वैराग कुंभपति मणे ।।
अमृतसेग मुनिवर ढिग आइ । दिक्षा लई मन वच करि काइ ।।५६९०।।

मकरी सुन कैं तब वैराग । इन भी सकल परिग्रह त्याग ।।
अरथ द्रव्य पुत्रां नैं दिया । इन भी जाइ जैन व्रत लिया ।।५६९१।।

अशोग तिलक वन मैं धरि जोग । छोडि दिया संसारी भोग ।।
ये दोनूं जे सेठ के पूत । सुख मैं थे लखमी संजुक्त ।।५६९२।।

इक दिन मात पिता चित आंन । दोनु गए तिहां उद्यान ।।
अमृतसोग मुनि को देख । नमस्कार करि पूछै भेख ।।५६६३।।

हमारे मात पिता किस ठांव । कहो प्रभू तिह है हम जांव ।।
मुनिवर नैं वे दिये बताइ । ये भी भए दिगम्बर राइ ।।५६६४।।

करैं तपस्या आतम ध्यांन । गुरु आउषो पूरी जांन ।।
नवग्रीव पाइया विमांन । सिवक किया ता मकर का ध्यांन ।।५६६५।।

पंचास जोजन रेत की मही । तिहां मनुष काई दीसै नहीं ।।
पडै धूप धरती बहु तपै । रूख नहीं तिहां छाया छिपै ।।५६६६।।

असे मारग निकते साध । देख्या वृक्ष बेर सु बांध ।।
वाकी छाया बइठे जाइ । भावमंडल यहां निकस्या आइ ।।५६६७।।

देख जती तिहां थवया बिमांण । उतरि भूमि पग लाग्या आन ।।
मुनिवर कूं दीया आहार । मारग सगला भला संवार ।।५६६८।।

वइयाव्रत किया बहु भांति । मुनिवर गये जिनेस्वर जात ।।
भावमंडल अंतहपुर जाइ । मांन मालिनी गुणहराइ ।।५६६९।।

सोवैं थे सप्त खणैं गेह । दामनी आत सों छोडी देह ।।
दंपति जीव दस्यनी ओड । भोग भूमि की पाई ठोड ।।५७००।।

तीन पल्य की आव प्रमांण । तीन के साका कीया जांण ।।
आंवला सम तैं लेइ अहार । बहुर सुरगगति लेइ अवतार ।।५७०१।।

उहां तैं चए फेरि तप करैं । तब दोनूं सिव मग पग धरैं ।।
सुपात्र दान फल हूवा सहाइ । तातैं दान देहु मन ल्याइ ।।५७०२।।

लवनांकुस पंचम गति लहैं । प्रानी का संसा नहीं रहै ।।
सीता देव पूछै कर जोडि । रावण लक्ष्मण की कहो बहोडि ।।५७०३।।

किस विध इनका कारज सरैं । ये कद भव सायर तैं तिरैं ।।
रामचन्द्र कहैं केवल बचन । बालुका भूमि रावण लछमन ।।५७०४।।

सागर सात भुगतैंगे राज । उहां तैं निकसि पूरब क्षेत्र की ठांव ।।
हरिक्षेत्र विजयावती नगर । सुनंदा सेठ धरम का अगर ।।५७०५।।

रोहिणी नाम साह की अस्तरी । सील संयम सो सोभै खरी ।।
दोनूं उसकै लें अवतार । अरहदास तसु प्रथम कुमार ।।५७०६।।

रिषभदास दूजा हुवौ पुत्र । दोनु' गुण लख्यण संजुक्त ॥
अणुव्रत पालैं वे दिन रात । सीलवंत सोभा की कान्ति ॥५७०७॥

सुख सेती तिहां आय विहाइ । सुर सौधरम अमर की काय ॥
सागर एक आयु बल पूर । या ही देस चवैं दोऊ सूर ॥५७०८॥

कुमार कीरति तिहां भूपती । लषमी राणी के गरभ थिति ॥
जयकीरति जय प्रभु भी होइ । रूप कान्ति करि सोमैं दोइ ॥५७०९॥

अणोव्रत करि धरम सों ध्यान । ह्वां तैं पावैं लांतव सुर थान ॥
स्वर्ग लोक के भुगतैं भोग । भूलि गये पिछला सब सोग ॥५७१०॥

सीतेन्द्र अजोध्या में चवै । चक्रवर्त्त छह षंड भोगवैं ॥
दोनु' देवपुत्र हुए आइ । इन्द्ररथ अंभोदरथ राइ ॥५७११॥

सर्वरतन रथ दिष्या लेइ । राज भार पुत्र को देई ॥
तपकरि पावैं विजयवंत वास । इन्द्र अंभोद दिक्षा गुरु पास ॥५७१२॥

सोलह कारण का व्रत पाल । विजय अंत पहुंचैं तिह बार ॥
उहां तैं चय रावण को जीव । ह्वं अर्हंत भरत जंबूद्वीप ॥५७१३॥

सरबरतन गणधर होइ । धरम उपदेस सुणैं सब कोइ ॥
जाइ मुकति तिहां सुख अनंत । फिर पूछैं सीतेन्द्र महंत ॥५७१४॥

लक्ष्मण के प्रति जिज्ञासा

कहां उपजैं लखमण महान । पुष्करार्द्ध द्वीप चवै थान ॥
सद भूपति पुत्र नगर कै गेह । दोई पदइ माइ धरि देह ॥५७१५॥

चक्रवर्त्ति हुवौ अरिहंत । पावै भव सागर का अंत ॥
सात बरष बीतैं जब जाइ । हम भी लहैं मुगति पद ठांइ ॥५७१६॥

सीतेन्द्र कीया नमसकार । गये फेर सुर अपने द्वार ॥
ह्वांति फिर आये सब देव । कुरु भोग भूमि का देख्या भेव ॥५७१७॥

भामंडल ते वह सुर मिल्या । पिछला सनबंध सुणा था भला ॥
देव गया फिर अपनैं थान । रामचन्द्र सिद्धन कै ध्यान ॥५७१८॥

पचीस बरस लौं सुमरे सिध । पहुंचे प्रभू मुगति की रिध ॥
चतुरनिकाय आये सब देव । जय जय सबद दुंदुभी भेव ॥५७१९॥

पुष्प वृष्टि भई तिहां घणी । निर्वाण कल्याणक सोभा बणी ॥
अष्टद्रव्य सूं पूजा करी । पढे मंत्र जिनवाणी खरी ॥५७२०॥

सीतोदेन्द्र सुमरैं धरि चित्त । गुणानुवाद सौं ल्याये हित्त ।।
पूजा करि पहुंचे सुर लोक । अस्तुति भई तीनूं लोक ।।५७२१।।

पद्मपुराण के स्वाध्याय का महात्म्य

रामचंद गुण समुद्र गंभीर । सुमरण किया मिटै सब पीर ।।
अनुभाग्रक किया बखान । रामचन्द्र का पदमपुराण ।।५७२२।।

जे कोई सुणें उठि परभात । सुखसेती बीतैं दिन रात ।।
धनी होई सुणें बलवान । जिहां तिहां कहिये जसवान ।।५७२३।।

दुरजन दुष्ट लगैं सब पाइ । कोई न सनमुख जीतै आइ ।।
सब परि उसकी होवै जीत । जाणैं सकल जुध की रीत ।।५७२४।।

जे कोई सुणैं धरम के काज । पावैं तीन लोक का राज ।।
धरम ध्यान सुं पाप न रहै । केवल ग्यांन जीव यह लहै ।।५७२५।।

धरम प्रकास जिहां जाइ निरवांण । भ्रमैं नहीं भवसागर आंन ।।
दुखी दलिद्री नर जे सुणैं । बढैं लछि सुख पावै घणे ।।५७२६।।

नारि विहुंणा जे नर होइ । मन वांछित फल पावै सोइ ।।
पुत्र हेत जौ सुणें पुरांण । सुख सम्पति पावैं असमान ।।५७२७।।

प्रथवी परि प्रगटै जस घणां । रोग कलेस जाइ सब हणां ।।
करम उदै ते व्यापैं दुख । राम सुमरि पावैं सब सुख ।।५७२८।।

जे पापी सुणि निंदा करैं । ते जीव घोर नरक में पड़ैं ।।
मिथ्याती प्रतीत नैं चित्त । सरधा नहीं धरम सुं हित ।।५७२९।।

जे समकिती सुणैं पुराण । पावैं गति देव निरवांण ।।
श्रेणिक नृप सांभलि इह भेद । सब संसय का हुवा छेद ।।५७३०।।

सकल सभा मन भयो संतोष । बहुत प्राणी या पाई मोष्य ।।
श्री जिनवाणी का नांही अंत । वचन एक भेद बहु भंत ।।५७३१।।

गौतम स्वामी कह्यौ अरथाई । अमृत वांनी सबैं सुहाइ ।।
सरब भूत सुणि हिये विचार । अवधि ग्यांनी समझे निरधार ।।५७३२।।

अनसेन भूरति केवली । मुख पाठ सुन भाखी भली ।।
क्रिनांतसेन नैं लिख्या इह ग्रंथ । कोडि सिलोक संपूरण अर्थ ।।५७३३।।

अवरानैं पुराण लिख पढैं । जिसके सुणैं धरम हित बढैं ।।
उनका सिष्य रुबदन मुनि भया । इन्द्रसेन मुनि नैं पद दिया ।।५७३४।।

अरहसेन भये सु मुनिंद । लक्ष्मनसेन ज्यों प्रथिवी चंद ।।
जिन जोड्या श्लोक सहस ज्यो स्पाठ । वरण्यो बहु तिहां पूजा पाठ
।।५७३५।।

रवि षेणाचार्य द्वारा पद्मपुराण की रचना

रविषेन किया अठारह सहस्र । सुणे भव्य जीव सो बाधैं वंस ।।
होई पुन्य उत्तम गति लहैं । भव भव दुख दालिद्र न रहैं ।।५७३६।।

अथवा लहै अमर पद थांन । कारण पाय लहै निरवांण ।।
मिथ्याती जे धरम का दुष्ट । उनकु सदा रहै बहु कष्ट ।।५७३७।।

जिनवाणी तैं भाजै दूरि । तिण नैं होवै दुख भर पूरि ।।
दालिद्र सदा न छोडै संग । इष्ट वियोग अनिष्ट प्रसंग ।।५७३८।।

मन की इच्छा कदे न होइ । आदर भाव करै नहीं कोइ ।।
तिसकु कोई न महिमा होइ । जिहां तिहां महिमा जलेभा लेइ ।।५७३९।।

कलह करम सौं बीतैं घडी । खोटी बुधि नहीं बीसरी ।।
रात दिवस में आरत ध्यान । पावै अंत नरक गति थांन ।।५७४०।।

भव्य जीव सुणीं धरि रुचि । सदा हुवै उत्तम गति सुचि ।।
सीलव्रत पालै बहु भाइ । काटि करम ऊंची गति जाइ ।।५७४१।।

असैं जांणि चलैं मग सुधि । धरम होइ बाढै अति बुधि ।।
कुमति कलेस सकल मिट जाइ । राम नाम तसु होइ सहाइ ।।५७४२।।

सहस्र एक अरु दोईसैं बरस । छह महीने बीते कछु सरस ।।
महावीर निरवाण कल्याण । इह अंतर है रच्या पुराण ।।५७४३।।

रविषेण नाम मुनिवर निरग्रन्थ । पदमपुराण रच्या सुभ ग्रन्थ ।।
तिसके सुण्या होइ बहु रिध । कारण पाइ पद पावैं सिद्ध ।।५७४४।।

चलैं देस नाम जो लेइ । ताको मनवंछित फल देइ ।।
जैसे रवि का होइ प्रकास । होवै अंधकार का नास ।।५७४५।।

पद्मपुराण पढने की महिमा

असा है यह पदम चरित्र । मिथ्या मोह मिटै सब सत्र ।।
पढैं पढावैं कहैं बखांन । पावैं स्वर्गं देव बिमांन ।।५७४६।।

समकित सेती पढ़ै अर सुणै । निसचै अष्ट करम कूं हणै ।।
केवलग्यान होइ उतपत्ति । पावै निश्चै पंचम गति ।।५७४७।।

जिस समै वर्णन होइ पुराण । सुख विलास और सदा कल्याण ।।
मनवांछित फल पावै भणै । ते प्रांनी सब निसचै सुणै ।।५७४८।।

दूहा

पदमपुराण कूं जे पढैं, बांच सुणावै और ।।
तिहूं लोक का सुख लहैं, पावैं निरभय ठौर ।।५७४९।।

११५ वां विधानक

चौपई

काष्ठा संघ पट्टावली

काष्ठा संघी माथुर गच्छ । पहुकर गण में निरमल पक्ष ।।
महा निरग्रंथ आचारज सोह । छांड्या सकल जाति का मोह ।।५७५०।।

तेरह विध चारित्र का धणी । कांम क्रोध नहीं माया मणी ।।
महा तपस्वी आतम ध्यांन । दयावंत बहु निरमल ग्यांन ।।५७५१।।

जिहां है उत्तम छिमां आदि । छोड़ैं पांच इन्द्री का स्वाद ।।
रूप निरंजन ल्याया चित्त । अठाईस मूल गुण नित्त ।।५७५२।।

चौरसी क्रिया संजुक्ति । जे क्षाइक समकित सौं रत्ति ।।
कहैं ग्यांन के सूक्षम भेद । वाणी सुणत मिथ्यात का छेद ।।५७५३।।

ग्रोहै निकट प्रभु ठाढे जोग । करैं वंदना सब ही लोग ।।
अग्रवाल श्रावक प्रतिबोध । त्रेपन क्रिया बताई सोध ।।५७५४।।

पंच अणुव्रत सिख्या च्यारि । गुणव्रत तीन कहे उर धारि ।।
बारह व्रत बारह तप कहे । भवि जीव सुणि चित में गहे ।।५७५५।।

मिथ्या धर्म कियो तिरां दूरि । जैन धरम प्रकास्या पुरि ।।
विध सौं दान देइ सब कोई । सासत्र भेद सुणि समकित होइ ।।५७५६।।

दस लाच्छणी बताया धरम । तीन रत्न का जाण्यां मरम ।।
व्रत विधांन समझाई रीत । पूजा रचना करैं सुचित ।।५७५७।।

श्री जिन के कीए देहुरे । चउबीस बिंब रचना सुं ख्ररे ।।
चउविध दान दे वित्त समांन । चउथडीया अणुथमी प्रमांन ।।५७५८।।

जीव दया पालै बहुभांति । भोजन नीर विवरजित राति ।।
दीपग ग्यांन जाण्य सब हिए । बहुत संबोधे श्रावग कीये ।।५७५६।।

दिल्ली मंडल का मुनिराय । जिसके पट्ट भया बहु ठांइ ।।
धरम उपदेस घणां कुं भया । पूजा प्रतिष्ठा जामैं नया ।।५७६०।।

पंडित पटधारी मुनि भए । ग्यांनवंत करुणां उर थए ।
मलयकोत्ति मुनिवर गुणवंत । तिनकैं हिए ध्यांन भगवंत ।।५७६१।।

गुणकीर्त्ति अर गुणभद्रसेन । गुंणावाद प्रकासैं जैन ।।
भान कीरति महिमां अति घणी । विद्यावंत तपस्वी मुनि ।।५७६२।।

कुंवरसेन भट्टारक जती । क्रिया श्रेष्ठ हैं उज्जल मती ।।
उनकैं पट सुभचन्द्र सुसेन । धरमवखांन सुणावै बैंन ।।५७६३।।

मूल संघ भट्टारक प्रशस्ति

श्री मूलसंघ सरस्वती गछ । रतनकीरत मुनि धरम का पछ ।।
तारण तरण ग्यांन गंभीर । जाणैं सहु प्राणी की पीर ।।५७६४।।

तप संयम तैं आतमध्यान । धरम जिनेस्वर कहैं बखान ।।
छूटैं मिथ्या उपजैं ग्यांन । जे निसचैं धरि मनमैं आंन ।।५७६५।।

गुरु के वचन सुणि निसचैं धरैं । ते जीव भवसागर तिरैं ।।
श्री रत्नकीर्त्ति तज्या संसार । पहुंचे स्वर्गलोक तिह बार ।।५७६६।।

उनकैं पट्ट रामचन्द्र मुनी । आचारिज पंडित बहु गुनी ।।
कहैं ग्यांन के सूक्ष्म अंग । ईं बुद्धि उनके प्रसंग ।।५७६७।।

महा मुनीस्वर उत्तम बुधि । कहैं धरम जिन वाणी सुधि ।।
जिसकैं हिए होइ समकित । सरधा करैं धरम में नित्त ।।५७६८।।

श्री रामचन्द्र का सुणैं पुराण । सुख संपति पावैं कल्यांण ।।
धरम दया पालैं मन लाइ । ते जीव मोक्ष पुरी मां जाइ ।।५७६६।।

दूहा

पदम पुराण पूरन भया, रविषेणा की बुधि ।।
जे निहचैं धरिकैं सुणैं, पावैं समकित सुधि ।।५७७०।।

इति श्री पद्मपुराणे सभाचंद्र कृत सपूरनंम् ।। संवत १८ सै ५६ आषाढ वदि १४ वार सोमवासरे लिखितं पंडित मोतीराम लिखायतं साह जी गंगाराम जी की बहू जाति बोहर्या मालपुरा का उतराध सराई का वत में पंडित मोतीरामेन बांचे । ग्रंथ संख्या हजार ११ रुपया ७ दीया लिखानां का । शुभं भवतु

नामानुक्रमणिका

(पद्मपुराण में प्रमुख महापुरुषों के नाम पचासों बार आये हैं—जिनमें राम, सीता, लक्ष्मण, भरत, हनुमान, सुग्रीव, रावण, विभीषण, मंदोदरी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं इसलिए ऐसे नामों के यहां पूरे पृष्ठ अंकित नहीं किये हैं)।

अग्निकेतु २४६, २५२
अग्रवाल ४६०
अचयराय २५२
अजोध्या १८, २७, १०५
अग्निवेग १२६
अग्रोहा ४६०
अजितनाथ १, ४१, ४६ २५६
अयोध्या १०६, १७७, १८०, २०३, २१६, २२०, २२५, २४०, २६६, २६६, ३५८, ३६०, ३६२, ४८७।
अढाई द्वीप १५
अलिनगर ३७६
अतिवीर्य १३१, १३२, १३५, १३७, २३४, २३८, २३९।
अतेन्द्र राजा ५४
अनन्तरथ १७६
अनुराधा ६४
अनंगसेना ३१५
अंजनी १३८, १३९, १४०, १४२, १४४
अंजन नगर २७२
अपराजिता १, १७६, १८४
अभयमाला ३६
अतिगति १००
अतिमयूष ४५
अतिवीरज २४६, २५२, २५३
अनन्तनाथ १, ४६
अनरण २४६
अनोकसा २०८
अंगद १००, २६५, २६६ ३२७
अंजना १४५, १४६, १४६, १५८, १५६, १६०
अंधक कुमार ६२, ६३, ६५
अंबराज ७६
अभिचन्द १६

अभिनन्दन १, ४६, १०५
अमरप्रभ ५८, ५६
अमर राक्षस ५१, ५२, ५३
अमितगति १५१
अमीचन्द २६६
अमृतवती ४१२
अंबप्रभा १७६
अर ४३
अरजपुर १२६
अरहनाथ १
अरिदमन १३८
अरननदेस १५१
अमर मजसेन ४६
अस्वनवेग ५२ ६२, ६४, ६५
अहिलादपुर २७३
आदित्यपुर ६३, ६४, १३८, १५७
अर्समाल ३६
अमरवती २८२
अमरसागर १३८
अमितमती १७६
अमृतप्रभा १७६
अमृत स्वरित २४४
अम्बरपुर ३४४
अरजन ३६५
अरहदास ४१, ४२
अरहसेन ४८६
अरिदम ३४४
अलका ७६
असफंद २६७
अश्व ध्वज ३८
अच्छरज ६६, ६६, ६०, ६२
अक्षररज
आवितजस ३३

आ, इ, उ

आदिनाथ १, १०६, १७०, १६८, २५६
आदिपुराण ११४
आभमती ४५
इतरकरण २३०
इन्द्रकपुर २१२
इन्द्रजीत १२, ८१, १२४, १२५, १३८, १६२, २६६ आदि
इन्द्रमलि ५८
इन्द्रविद ५८
उतपलमति ४०
उदयाचल राजा ५२
उदितमुदित २४५, २४६
उद्योतपुर ७०
आदिनाथ मन्दिर २६१
आनंदमाला १२६, १३०
आवीसता ५७
इन्द्रप्रभु ७२, ७३, ६१, १२३, १२४, १२६, १३१
इन्द्रकुमार ६८, ६६
इन्द्रसेन ४८८
इन्द्रमनु ५८
इन्द्ररेखा ३८
उजोणी नगर/उजेणी २२०, २२१, ३५४
उदयपुर ८७, ८८
उदित ५२
उवपाद १३४

क, ख, ग

कनकजटी २६४
कनकमाला ४१२
कनकप्रभा ११५, ४३६
कंकणपुर ३७९
कपिकेतु ५९
कमलप्रभा ४३९
कंपिलानगर ८५, १८५, ३७३, ३९७
कांचनपुर ७०
काष्ठासंघ ४९०
कीर्तिधर १७३, १७९, ३४४
किंधपुर ५९, ६५, ९२
किंपलपुर १००, २६५, २८७, २९४, ३७९
कुंडलपुर ५, ६
कुंथनाथ १, ४६
कुम्भकरण १२, १४, ७२, ८१, ८२, ९३, १२४, १३५, १३७, १६८, १८०, ३०१ आदि
कुसागर नगर १६८
कुश ४१०
केतुमती १४८ १५१, १५७, १५८
कैकई १७९, २०१, २१४, २१५, २२० आदि
कौसांबी १६४, २२८, २९४
कौसलनगर १७९
कृष्णनारायण ४७
खरदूषण ९०, १०१, २५९, २६०, २६३, ३०१
गगनचन्द ९५
कनकपुर ६६, १३८
कनकावली ६६, ७०
कनकोदरी १५१, १५२, १५३
कंचनगढ ४४
कपिल विप्र २३०
कमलोत्सवा २४७
कल्याणमाला २२७, २९५
करणकु कपुर ६५
कासी देश ६१
कीर्तमती १७१
कीर्तिधवल ५३, ५५, ५६, ५७
किंकिधपुर ५७, ६१, ६३, ६६, ६७, ७६, ९३
कुवडपुर २२८
कुंडलमंडल १८, २०८
कुंदनपुर २२२
कुंभपुर ८१
कुसमावती ३५
कुरुजांगल देस २३
कुंवरसेन ४९१
कुसुमपुर २७५
केतुमुख २००
कैलास ७७, ९६, ९८
कैकसी ७१, ७२, ७४, ७६
कौकसी ७१
कृतांतवक्र ४०१
क्लिशांतसेन ४८८
क्षेमंकर २९[illegible]
क्षेमांजलपुर २९०
गंधर्वसेन २८३

गंधारी नगरी २१२
गुणभद्रसेन ४६१
गुणसेन १३०, १३१
गुणसागर १७२
गुणकीर्ति ४६१
गुणवती ५८
गौतम स्वामी १०, १३८, १६४, ३६३

च, छ, ज

चक्रपाल ४०
चखमान १५
चन्द्रगति १६५, १६७, १६८
चन्द्रनखा ७२, ७८, ६३, २५८, २५६, २६७,३५०
चन्द्रमती ६८
चन्द्रान १६
चपलवेग १६६
चित्रा ११७
चित्रांगद १००
चूडामणी १७१
जगसेन ४८८
जमना २२२
जंबूद्वीप ३, १४, ७५, १६४
जयसिंह ६४
जरासिंध ४७
जसाखी १६
जसोधर ४३
जांबूनद २७४, ३०२
जितसत्रु ३८
जैचन्द्रा ८७
जोधपुर २७३
चखभान १५
चंदरभान १५
चन्द्रदधि ६४
चन्द्रप्रति ३१६
चन्द्रप्रभु १, ४६
चन्द्ररेखा १०२
चन्द्राननी ४३
चम्पापुर १६७, २००, २६६, ३६५
चित्ररथ २४६
चित्रोत्सवा १८, १८६
चेलणा ४
जनक राजा १७०, १८०, १८६, १६०, १६२, २०१, २०७
जयकीर्ति ४३
जयसेन ४७
जमा ४३
जसोमती १६६
जसोभद्र २१२
जितपदमा २४१, ३६५
जीतंधर ४७
जैमित्र ३०३
जोधपुरि ५५

त, थ, द, ध, न

तडतकेस ६१
तमचूल ४६५
तडितमाला ८१
तारा राणी २५६

तिलकराइ १७६
तिलकेसर ४०
त्रिकुट राजा ५८
त्रिकुटाचल ४४, ६२, २५८, २८६
त्रिगुप्ति २५२
त्रिदसेज ३८
त्रिविष्ट ४७
त्रिसला ५, ८
धुलभद्र ४६
दंडकवन २५६, २५४
दंडकराजा २५१
दंतपुर गाम ५०
दंतीपुर १४१, १५७
दमंतवती २७२
दसनगर २७३
दशांगपुर २२३, २५४
दशरथ १७६, १८७, १८१, १८२, १९०, १९१, १९२ आदि
दशानन ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ८०, ८३, ९० आदि
दसपुत्र १६६
दिल्ली ४६१
दुरबुद्धि ३७
दुरमुख २००
देवराक्षस ५३
देश भूषण २४३, २४६, ३६६
दैत्यराय ४३
कुल भूषण
दैतनाथ ७७
द्विविष्ट ४७
द्रिढरथ ३०३
धनदत्त ८४, २७२, ४३६, ४४२
धनवाहन १५१
धरणी २७२
धरणीधर ३८
धरणेन्द्र २२, ६८
धर्मनाथ १, ४६
धातकी द्वीप ११७
धारणा २१२
धारणी २१२, ४६८
धूमकेतु ३५
धूमसेन १८७
ध्रोतपुर ८१, १००
नघ्रप्रभा २७०
नघुष १७७
नदमित्र ४७
नंद १६
नंदघोष २१२
नंदनगर २३४
नंदवरधन २१२
नंदीस्वर ४३६
नंदीनाक ५३
नमि १, १२, ४६
नमिनाथ
नमिविनमि ३४, २५६
नरसेर ७०
नल ३०३
नलनील ४६, ९२, ९४, ९५, १८०, ३०३
नागकुमार ४६
नलकूबड ११९, १२०, १२२
नागदत्त २४८
नाभस तिलक ९३

नाभिराय १६, २०, ११४
निरघात राजा ६७, ७८
निर्वाणघोष १७२
नेत्रतसकर २२६
नेमिदत्त ३५, ३६, ३७, ३८
नारद १०६, १०७, ११०, ११२, ११३, १८०, १६४, ३५८
नीलंजना २१
नेमनाथ १, ४६

प, ब, भ, म

पद्मनाभ ३८, १८५
पद्म ४७
पद्मगुल्म ४३८
पद्मनी नगर २४४
पद्मावती ८०, ३६५
परिच्छत ५७
परबत १०८, १०६, ११०
पातळल लंका ६४
पंचमेरू १५
पुंडरीक ४२, ४७, ४०४
पुरीन्द्र १७१
पुष्कलावती देश ४२
पुष्पवती २०८
पुहुप नगर ७८
पोदनपुर २१, २७, ३८, ५२, १८७, ३५६
पृथ्वीदेवी २२७
पृथ्वीमती ४१२
प्रतिष्ट १५
प्रद्युमन ४५
प्रसनचंद
प्रहसित १५७, १५८
प्रसन्नकीर्ति २८१
प्रतिबती ६६
पद्मप्रभु १, ४६
पद्मपुराण ४८६, ४६०, ४६२
पद्मोत्तर ५४, ५२
पद्माक नगर ४२
पंचाणी ६६
परषित १०७
पवनंजय १३६, १४१, १४२, १४३, १४४, १४५ आदि
पार्श्वनाथ १, ४६
पुष्पदन्त १, ४६
पूर्व विदेह ३५८
पुष्कर गण ४६०
पुहुपोत्तर ५४, ५५
पुरणघन ४४, ४१, ४०
पौमादेवी १३८
पृथ्वीतिलक ३६५
पृथ्वीधर २३२, २३५, २४०, ४१२
प्रतिचन्द्र ६२
प्रतिसुरज १५८, १५६ १६०
प्रभामुख २००
प्रहलाद राय १३८, १३६, १४१, १४३, १५०, १५७, १५८, १५६
प्रसन्नसेनजित १६
प्रीतंकर राजा ६६

प्रीतंकर देव ६६
बज्रकंठ ५७
बसन्तमाला १४५, १४७, १४८, १५०, १५३, १५५, १५६, १७५
ब्रह्मदत्त ३६, ४७
बालखिल्य २२७, २२८
बाहुबल २१, ४५
ब्राह्मी १४
भद्रदत्त १५७
भंगमाला २८२
भरत १६, २१, २२, २६ से २६, ३१, ४५, १८५ आदि
भरत क्षेत्र १५८
भानकीरति ४६१
भानुकुमार ६३
भीम ३३, ४७, ४६, ५०
भीमपुर ७८
भीममती १७६
भोज २००
मगदत्त २६६
मघवा ४७
मतिसागर २६८
मदनमाला ८१
मधुराय ३८०
मनोलता ३७०
मनोदया १७१, १७२
मंगल ३६५
मन्दोदरी ७७, ७६, ८१, ६३, ६४, १०५, २६७, २८६, २८६, ३२२ आदि
म्लेच्छ खंड १६२
प्रीतिवर्धन मुनि २२१
बंधुमती ८७
बसंततिलका १४०
बसंथलपुर २४२
ब्रह्मभान ५७
बालि ६३
बाहुबलि २०, २२, २७, २८, २६, ३०, ३४, ४६, २५६
भद्रसाल वन ५७
भभीषण ७२, ६३, १२२, १२३, १३७, १८० आदि
भरतखंड ३, १६४
भागीरथ ४६, ५०
भानराक्षस ५२, ५३
भामंडल १६५, १६६, २०६, २०७, २७८, २६४
भीमप्रभ ५३
भोगवती ६६
भोमरदेव ४३
मगध ३
मतिवर्धन २४४
मथुरा ११५, ३७६, ३८४
मधुपुरी ११७
मधुव ११६
मनोरमा ३६१, ३६३, ३६५
मंगला ४०
मंगलावती १७६
माथुरगच्छ ४६०
मरूत ११०, ११५
मल्लिनाथ १, ४६
महाघोष ४३

मरुदेव १६
मलयकीर्ति ४६१
महादेव २६६
महावीर ४८६
महेन्द्रपुर १४७, १४८, २८७, २६२
मातुंड ४३
मानषोत्तर ५०
मालव २२०, २२१
मालिवान ६६, ७०, ७१, ६२
मारीच २६६, ३०२
मिरगावती ५७
मुनिचन्द्र १२८
मूलसंघ ४६१
मेकलानदी २२७
मेघनाद ८१, १२४, १३८, १६२,
२६५, ३०१
मेघरथपुर ७०
मेरमेघ ६६
मोहनमती १८
मृगांकपुर १५१
मृगाक्षदमन ६६
मरुदेवी १६, १७, १६
महषमती १०१, १७६
महाराक्षस ४५, ५०, ५२
महेन्द्र ३३, १२८, १३६,१४१
महेन्द्रसेन १५०, १४८, २६२, २८१
माधवी ५८, ११६
मांडलगढ़ ४६२
माल्यवान १२४
माली ६६, ६८, ७०
मिथिलापुर १६३, १६४, १६६
मुखश्री २६५
मुनिसुव्रत १, ४६, १५४, १६६, १८०,
२२१, २२२
मेघगिरि ७६
मेघपुरी ५४, ६३
मेघमाहन ४१, ४२, ४४, ४५, ४८
मेरदत्तसेठ ४३६
पं० मोतीराम ४५२
मृनालकुंड ४४०
मृगावती १६६

य, र, ल, व

यज्ञदत्त २७२
रतनकीरत ४६१
रतनचूला ४४०
रतनमाला ६२, २६५
रतनवीर्य ३४
रतनश्रवा ७१, ७४, ७८, ६३
रतनपुर ५४, ३४१
रतनमाली ३४, २१२
रघुनाथ २६४
रतनचूल राजा १५४, ४६५
रतनजटी २६४, २६६, २७३, २८८
रतनदीप १४३, १६१
रतनसंचयपुर ४३
रत्नावली १८८
रतनरथ २४६
रतिप्रभा २६५

रथनूपुर २१, ६७, ६९, ९१, १२२, १२६, १३१, १८१, २०६, २०८, २०८, ३७९
राजगृही ३
रामचन्द्र २, १२, ४७, १९१, १८५, १९२, १९३, १९४, १९८ आदि
रामावली ९३
राक्षसपुर २७३
रूपवंती ३९५
रिषभदेव ३०,२२, ४५, ४६
रुक्मीवती ३४४
लक्ष्मीमती १५२, १५३
लंका ४४, ६५, ७७, ११५ आदि
लव ४१०
लोकपाल ७०
लोभदत्त १३३, १३४, १३५
वज्रकिरण २२१, २२२, २२४, ३५४
वज्रजंघ ३४, ४०४, ४०५, ४०७
वज्रधर ४१
वज्रभान ३४
वज्रलोचन २१२
वज्रसिल ६३
वज्रामृत ३४
वभीषण १४, ७९, ७१, ९१
वर्द्धमान १, ४६
वसुदत्त ४३६, ४४२
वासुपूज्य १, ४६, ५४
वसुभूत २४६
वसोट १४३
रविमन्त्र ५८
(आचार्य) रविषेण ३, ४८९, ४९२
राजगिर ११०, १११, ११५
राजलदे २७२
रामचन्द्र मुनि ४९१
रावण १२, १४, २७, ७२, ७९, ९८, ९९ १००, १०२ आदि
रुद्रभूत २८८
रिषभ कुमार १९४
रेवानदी २५४
लक्ष्मण १२, ४७, १८५, १९३ २०१, २०६, २१७, आदि
लक्ष्मनसेन ४८९
लंकासुन्दरी २९२, २८४
लवणोदधि १४
लोकसुन्दरी २०१, २०२
लोहाचार्य ४९०
वज्रकुमार ४४०
वज्रदरज ९३
वज्रबाहु ३४, १७१
वज्रमुख २८४
वज्रसालगढ १२२, १२३
वज्रहंस ९३
वनमाला ११८, १६४, १६५, १६७, २२२ २३१, ३९५
वरुण ७०, १४३, १९३
वसंतमाला १५९
वसुदेव ४६
वसुधा २१२
वसु राजा १०६, १०९
वंसगिरि २५०

वंसस्थल २४६
वासकेत १७०
विजयसिंघ ६२, ६३, ६४
विजया ३६
विजयार्द्ध १४, २२, ४५, ५३. ५४, ६२
६८, ७०, ७५, ८५, ६३, १२२, १२८,
१३६, १५१ १६६, १६०
विटसुग्रीव २७१, २८२
विद्युतगति ४६३
विद्युतप्रभा २८२
विद्युतवाहु ६५
विवरभदेस ६७
विनमि २२
विपुलाचल ६
विमल १५
विमलनाथ ४६, १५६, ३७३, ३६५,
विमलारागी २४६
विसल्या ३१४, ४१६, ३२०, ३६५
वीर ६, ८
वेगवती ६३, ८७, ४४४
वेलंधर ३१४
व्योमराजा ६६
वैश्रवन ८३, ८४
व्रह्मरुचि ११०, १११
वृहतकेस २०६
वाणारसी ३७२, ३६७
विचित्रमाला १७६
विजयसेन १७२, ४४०
विजयराज ४६, ३६४
विजयसागर ४०
विदग्ध देस २०८
विद्युतदृढ ३४, ३८
विद्युलता २१२
विद्युतवेग ५६, ६०
विनयदत्त २७५
विप्रारागी ८५
विभ्रमधर १७६
विमलावति १७०
विमलवाहन ४३६
विराधित १४, २६३, २६४, २७०
विस्वानल ४७
वीरकसेठ १६४, १६६
वेदावती ४४१
वेसपुर १३८
व्योमविद ७१
वेश्रवा ७२
वृषभध्वज ४३८, ४४२
वृषभसेन २५

स ष श ह

सगर ४०, ४२, ४५, ४६,५०
सत्रुघन १८५
संखनगर ४१
सखदनमुनि ४८८
सत्यघोष ३५, ३६, ३७
सनमित्र १५
सनतकुमार ४६, ४७
सभाचन्द ३, ४६२

समाधिगुप्ति ४३९
सम्पूर्णकीर्ति ३१५
समेदगिरि सम्मेद शिखर ५०, ८९, २४५, २९७, ४०२
संभूषण ४७५
सरस्वती ८१
सर्वभूषणमुनि ४२८
सहदेव्या १७३
सहस्रवीर्य ३१४
सहस्रकिरण १०५
सहस्ररश्मि १०२
स्वर्गभव ४७
स्वस्तिमती १०६
सागरघोष २४६
सागरपुरी २७३
शांतिनाथ ३५२
साधुदत्त २४९
साहसगति १००
सिद्धारथ ५, ६
सिंहध्वज ८५
शीतलनाथ १, ४६, १६७
सीमंकर १५
सीमंधर १५
सुकच्छ १५१
सुकीर्ति ३९५
सुकेत २५२
सुप्रसदत्त ६१
सुभरसना १९०
सुन्दरमन १७१
समेइलराइ ३१४
संभवनाथ १, ४६
संबूक १४,२५६
संसावली ९०
सर्वभूतिमुनि २०५, २११
ससाक नगर ४५
सहस्रभुग ४
सहस्रार ६५, ६९, १२९
सहस्रनयन ४१, ४२, ४७
स्वयंप्रभनगर ८१
स्वयंभूरमण १४
संकग्राम ६५
सागरदत्त ४३९
सातवाहन १०३
सावत्थी ६९
सिंघसेन १७७, १७८, १७९
सिंहजटी ३०६
सिंहोदर ३२१ ,३२२, ३२३ ३२४ ३२५, ३५४
सीता १४, १९१, १९४, १९५, २०२, २०६ आदि
सुकेस ६१, ५५, ६६
सुग्रीव ९२, ९३, ९४, ९६, १००, २६५, २६९ आदि
सुदर्शनमेरु १५, ४६, ४७, ३६१
सुनंदा १९
सुन्दरी २०

सुपास १
सुप्रभा ४५, ५३, १८५, ३१४
सुप्रभारानी २०६, २०४
सुभौमचक्री ४७
सुमतिनाथ १, ४६
सुमनारानी १३८
सुमालिबाल ६८
सुमित्र १६८
सुमेरपुर २७३
सुरगतिपुर ६२
सुरदंतपुर ७७
सुरेन्द्र १७२
सुलोचन ४०
सूरप्रभ २४६
सोमप्रभ ३४, २५२
सामशर्मा ३५
सोभावती ५८
स्योवास १७७, १७६
शांतिनाथ ४६, ३२७
श्रवन मुनि ६५
श्रीकंठ ५४, ५५, ५६, ५७
श्रीकांत ४३६
श्रीचन्द्रा ५६
श्रीदेवी ६६
श्रीधरी २२२
श्रीपुर २७७, २८१
श्रीभूत २७७, ४४१
श्रीमाली १२३, १२४
श्रीवच्छराजा ४६
श्रेयान्स २३
षड्दूसन १४
सुप्रतिष्ठ १०६
सुप्रभराय २४६
सुनकल्प ४६१
सुमंगला ६३
सुमति १६५
सुमाली ६६, ६८, ६६, ७०, ७६, ८१,
८४ ६२
सुमित्रा १८४
सूरज ६६, ८७, ८८, ३६६
सूरजरज ६६, ७६, ६०, ६२, १६६
सुराष्ट्र ४०८
सुरेन्द्रपुर ३५१
सुलोचना नग्र २४०
सूरज कमला ६६
सोमिला २५२
सोदामनि १३८
सोभापुर ३५७
शत्रुघ्न २१६, २८०, २३४
शांतिनाथ मन्दिर ३३३
मुनि श्रुतसागर ५०, ५१
श्रीकांता १०६
श्रीकेस ३६५
श्रीदामा ३६५
श्रीधर ४६, ५३, ३६५
श्रीप्रभा ५२, ५६, ७०, १०५,
६५, ६४, २४६
श्रीमाला ६२, ६४, ६५, ६६
श्रेयान्स ४६, ५६
श्रेणिक ४, ५, १२, १३, १४,
५४, ६२, १३७, १६४,
२५६, ३६३

क्षेमंकर १५
क्षेमंधर १५
हथनापुर २३, १७१
हनुमान १४, ४६, १३७, १५६, १५१, १६१, १६७ आदि
हरदत्त ३४४
हरिमन ३९१
हरियाल १००
हरिवाहन ११६, ११७, २००
हरिपुर १६६, २७३
हरिषेण चक्रवर्ती ८५
हरिषेण ४७, ८८, ८९
हस्तिनागपुर ३७०
हस्त प्रहस्त २९६, ३०२ २९६
हिलवंत महाजन ५२
हंसद्वीप २९९
हिरण्यनाभि १३८
हुलासन १००
हेमपुर नगर ६६
हेमचूल १७९
हेमावती ७७
हेमप्रभ १८२
हृदयवेगा १३८
हेमांगल १००, ११५
क्षेमकरण २४३
क्षीरकदम १२६

शुद्धाशुद्धि-पत्र

पृष्ठ संख्या	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ	विशेष
७७	—	षष्ठ संधि	विधानक समाप्ति पर जोड़ें
१००	नवम विधानक	अष्टम विधानक	
१०६	दसम ,,	नवम ,,	
११३	नारन पर उपसर्ग	नारद पर उपसर्ग	
१२६	१३ वां विधानक	११ वां विधानक	
१३१	१४ वां ,,	१२ वां ,,	
१३७	१५ वां ,,	१३ वां ,,	
१४६	१६ वां ,,	१४ वां ,,	
१५६	१७ वां ,,	१५ वां ,,	
१६१	१८ वां ,,	१६ वां ,,	
१६४	१९ वां ,,	१७ वां ,,	
१७४	२० वां ,,	१८ वां ,,	
१८०	२१ वां ,,	१९ वां ,,	
१८१	२२ वां ,	२० वां ,,	
१८४	२३ वां ,,	२१ वां ,,	
२६९	सुग्रीव ,,	सुग्रीव ,,	
२३१	२६२४	३६२४	
३५१	दलन	मिलन	
४००	कनथ	कथन	